गणदेवता

['चण्डीमण्डप' एव 'पचग्राम']

*

मूल-कृति
ताराशकर वन्द्योपाध्याय

हिन्दी रूपान्तर हसकुमार तिवारी



भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

ष्ट्रभारती ११
ोकोदय ग्रन्थमाला ग्रन्थांक २५८
सम्पादक एव नियामक
लक्ष्मीचन्द्र जैन

'प्रस्तुति

दिल्लीमें, ११ मई, १९६७ को जब घोषणा हुई कि भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित साहित्य-पुरस्कार योजनाके अन्तर्गत गठित प्रवर परिषद्ने श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्यायकी कृति 'गणदेवता'को सन १९२५ से १९५९ के बीच प्रकाशित समूचे भारतीय साहित्यमें सर्वश्रेष्ठ माना है और एक लाख रुपयेके पुरस्कारसे सम्मानित किया है, तो जहाँ देशके साहित्यकारोंको इस बातसे प्रसन्नता हुई कि श्री ताराशंकर वंद्योपाध्याय निस्सन्देह पुरस्कारके अधिकारी हैं, वहाँ बंगला साहित्यसे सामान्य परिचय रखनेवालोंको इस बातसे कौतूहल हुआ कि तारा बाबूकी जिन कृतियोंको बंगला साहित्यकी श्रेष्ठ कृतियोंके रूपमें अन्य माध्यमों-द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है उनमें 'गणदेवता'का नाम क्यों नहीं? और, इस सर्वोच्च अखिल भारतीय पुरस्कारके लिए 'गणदेवता' श्रेष्ठतमके रूपमें कैसे चुना गया?

श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्यायके समूचे कृतित्वका पुनर्मूल्यांकन करनेके उपरान्त अब प्रायः सभी सहमत हैं कि 'गणदेवता'का चुनाव पुरस्कारकी अखिल भारतीय भूमिकाके सर्वथा अनुरूप ही हुआ है। इस निर्वाचनका श्रेय मुख्यतः बंगला भाषा परामर्श समितिके सदस्योंको है जिन्होंने प्रवर परिषदके विचारार्थ 'गणदेवता'की संस्तुति की।

'गणदेवता'का यह हिन्दी संस्करण बंगलामें प्रकाशित कृतिसे इस दृष्टिसे विशेष है कि बंगलामें 'गणदेवता'के शीर्षकसे समूचा उपन्यास एक जिल्दमें अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ।' बंगलामें यह कृति दो पुस्तकोंके रूपमें प्रकाशित है 'गणदेवता' तथा 'पंचग्राम', यद्यपि 'पंचग्राम'में 'गणदेवता'की कथा अप्रसारित है।

भारतीय साहित्यमें श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्यायकी प्रतिष्ठाका चरम बिन्दु यह है कि वह बंकिमचन्द्र, शरत्चन्द्र और रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी शृंखलामें आते हैं। तारा बाबूकी साहित्यिक उपलब्धि अमर है। इनका मार्ग अपना निजी है, साधना

राष्ट्रभारती ११
लोकोदय ग्रन्थमाला ग्रन्थांक २५८
सम्पादक एवं नियामक
लक्ष्मीचन्द्र जैन



Lokodaya Series Title No 258

GANADEVATA
(Novel)

TARASHANKAR BANDYOPADHYAYA

Bharatiya Jnanpith
Publication

First Edition 1967

Price Rs 16 00



भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

प्रधान कार्यालय
९ अलीपुर पार्क प्लेस कलकत्ता २७

प्रकाशन कार्यालय
दुर्गाकुण्ड मार्ग वाराणसी ५

विक्रय-केन्द्र
३६२०/२१, नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली ६

प्रथम संस्करण १९६७

सन्मति मु

प्रस्तुति

दिल्लीमें, ११ मई, १९६७ को जब घोषणा हुई कि भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रवर्तित साहित्य-पुरस्कार योजनाके अन्तर्गत गठित प्रवर परिषद्ने श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्यायकी कृति 'गणदेवता'को सन् १९२५ से १९५९ के बीच प्रकाशित समूचे भारतीय साहित्यमें सर्वश्रेष्ठ माना है और एक लाख रुपयेके पुरस्कारसे सम्मानित किया है, तो जहाँ देशके साहित्यकारोंको इस बातसे प्रसन्नता हुई कि श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्याय निस्सन्देह पुरस्कारके अधिकारी हैं, वहाँ बंगला साहित्यसे सामान्य परिचय रखनेवालोंको इस बातसे कौतूहल हुआ कि तारा बाबूकी जिन कृतियोंको बंगला साहित्यकी श्रेष्ठ कृतियोंके रूपमें अन्य माध्यमों-द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है उनमें 'गणदेवता'का नाम क्यों नहीं ? और, इस सर्वोच्च अखिल भारतीय पुरस्कारके लिए 'गणदेवता' श्रेष्ठतमके रूपमें कैसे चुना गया ?

श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्यायके समूचे कृतित्वका पुनर्मूल्यांकन करनेके उपरान्त अब प्रायः सभी सहमत हैं कि 'गणदेवता'का चुनाव पुरस्कारकी अखिल भारतीय भूमिकाके सर्वथा अनुरूप ही हुआ है। इस निर्वाचनका श्रेय मुख्यतः बंगला भाषा परामर्श समितिके सदस्योंको है जिन्होंने प्रवर परिषद्के विचारार्थ 'गणदेवता'की संस्तुति की।

'गणदेवता'का यह हिन्दी संस्करण बंगलामें प्रकाशित कृतिसे इस दृष्टिसे विशेष है कि बंगलामें 'गणदेवता'के शीर्षकसे समूचा उपन्यास एक जिल्दमें अभी-तक प्रकाशित नहीं हुआ। बंगलामें यह कृति दो पुस्तकोंके रूपमें प्रकाशित है 'गणदेवता' तथा 'पंचग्राम', यद्यपि 'पंचग्राम'में 'गणदेवता'की कथा अग्र-सारित है।

भारतीय साहित्यमें श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्यायकी प्रतिष्ठाका चरम बिन्दु यह है कि वह बंकिमचन्द्र, शरतचन्द्र और रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी शृंखलामें आते हैं। तारा बाबूकी साहित्यिक उपलब्धि अमर है। इसका मार्ग अपना निजी है, साधना

अन्त प्रेरित, और जीवन-दृष्टि स्वय प्राप्त। शरतचन्द्र मध्यवित्त भद्रलोकोंको संवेदनाके सवाहक थे। उनका उद्देश्य था समाजको वह दृष्टि देना जो पतितों और चरित्रहीनोंके उदात्त मानवीय पक्षको उद्घाटित करती है। श्री ताराशकर ने साहित्यकी अछूती और दुगम पगडण्डियोंपर साहसके साथ पग रखे हैं। श्री ताराशकरने जिस शहरी और देहाती मध्यवित्त समाजको चित्रित किया ह, वह उनका अपना सहवर्ती समाज ह—उनके अपने जमानेकी समस्याओंसे ग्रस्त, अपने युगसे प्रभावित और अपने युगका निर्माण करता हुआ, नयी लीकें डालता हुआ, तथा पुरानी लीकोंको पालनेमें टूटता हुआ।

तारा बाबूकी कृतियोंमें जीवनके अनेक आयाम अदले-बदले हैं। वह पहुँचे हैं समाजके अछूते अचलोंम, निम्नवर्गोंम सुख-दुखके ठोस सघर्षमें, दानवी मानवों और दैवी प्रकृतिके आदिम लोकम। जो उन्होंने देखा, बाष्पाकुल नेत्रोंसे नहीं, कल्पना भावनाओंके उद्दाम वेगोंसे बहते हुए नहीं, प्रकृतिस्थ होकर, यथार्थको स्वीकृति देकर, परम्पराके श्रेयको मान देकर, नयके प्रेयको अपनत्व देकर।

'गणदेवता' भारतीय नवजागरण कालका महाकाव्य है। इसमें जीवनके सांस्कृतिक पक्षकी परम्परा और नये प्रभावोंका केन्द्र ह 'चण्डीमण्डप'—माँ कालीकी पूजास्थली। और जीवनके राजनतिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिवतन विघटन, पुनगठनकी कथाका आधार ह 'पचग्राम'—मनुकी व्यवस्थाके अनुसार पाँच ग्रामोंकी इकाई जो सामाजिक जीवनके सभी पक्षों और सभी आवश्यकताओंकी पूर्तिके साधन उपलब्ध करती ह। महाकाव्यकी-सी भूमिका के अनुरूप ही 'गणदेवता' की कथाका उदय और विस्तार हुआ ह जिसमें पुरानी सामाजिक अथ व्यवस्थाका विघटन, नयी उद्योग व्यवस्थाकी स्थापना और इस उलटफेरमें जीवन मूल्योंकी नयी तुलापर असाधारण व्यक्तियोंका साधारणीकरण, जो फिर भी अपने चरित्रकी महत्तामें असाधारण रहते ह। इसी पृष्ठभूमिमें देशकी स्वतन्त्रताके लिए सघर्ष और बलिदानकी कथा अत्याचारों और अत्याचारियोंसे टक्कर लेनेका दुदम साहस—बडे विलक्षण और मार्मिक चरित्र अवतरित हुए सब।

साधारण और असाधारणकी क्रिया प्रतिक्रिया, एक ही मानवके उदात्त और अनुदात्त पक्षोंका यथाथ चित्रण—और सर्वोपरि जीवनसत्यके अनुसधानका प्रमाणीकृत प्रतिफल—इस सबके परिप्रेक्ष्यमें 'गणदेवता' असन्दिग्ध रूपसे उच्च कोटिके सजनात्मक कृतित्वसे अलकृत ह।

मूल बंगलामें 'गणदेवता' सर्वप्रथम १९४२ में प्रकाशित हुआ था। तबसे दस या बारह संस्करण इसके हो चुके हैं। उपन्यासका कथानक, इसके चरित्र, उनकी समस्या भावनाएँ, और उनके आवेग-संवेग नितान्त स्वाभाविकताके साथ इस मूलभूत वास्तविकताको रेखांकित करते हैं कि सर्जनात्मक साहित्यिक रचना, यो देशके किसी भी भागसे सम्बद्ध हो, वह प्रतिबिम्बित समूचे देशको करती है। देशकी अंतरात्मा यथार्थतः अविभाज्य है, भले ही वह अभिव्यक्ति देशकी अनेक भाषाओंमें-से किसी एकमें ग्रहण करे। और यही तो भारतीय ज्ञानपीठकी मूल-दृष्टि है और उसके द्वारा प्रवर्तित इस पुरस्कारकी प्रेरणा भावना।

प्रसन्नताकी बात है कि 'गणदेवता'के इस हिंदी रूपान्तरका प्रकाशन उद्घाटन १५ दिसम्बर १९६७को पुरस्कार समर्पण-समारोहके अवसरपर हो रहा है। गतवर्ष जब महाकवि जी० शंकर कुरुपको पुरस्कार समर्पित किया गया था उस अवसरपर भारतीय ज्ञानपीठने पुरस्कृत कृति 'ओटक्कुषल'का हिंदी अनुवाद 'बाँसुरी' शीर्षकसे प्रस्तुत किया था। इन प्रकाशनोंने भारतीय ज्ञानपीठ की 'राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला'को एक नया गौरव दिया है।

यह अनुवाद श्री हंसकुमार तिवारीने प्रस्तुत किया है। बंगलाके देहाती मुहावरेकी यथार्थ हिंदी पर्याय देनेमें वह विशेष रूपसे कुशल हैं, क्योंकि देहाती जीवनसे वह सम्पृक्त रहे हैं। अनुवादमें हिंदीकी बँधी-बँधाई गठनसे हटकर यदि कुछ विचित्र-सा लगे तो उसे अनुवादक द्वारा मूलकी भंगिमाको व्यक्त करनेका प्रयोग माना जाये।

— लक्ष्मीचन्द्र जैन
संयोजक-सम्पादक
लोकोदय ग्रन्थमाला

कलकत्ता
दीपावली १९६७

दो शब्द

'गणदेवता' उपन्यास वर्ष १९६६ में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कारसे सम्मानित हुआ है। भारतीय ज्ञानपीठके प्रयत्नसे ही इसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो रहा है।

'गणदेवता' का प्रकाशन सर्वप्रथम सन् १९४२ में हुआ था जिसके प्रथम खण्डका नाम है 'गणदेवता (चण्डीमण्डप)'। इसका दूसरा खण्ड 'पंचग्राम' सन १९४४ में प्रकाशित हुआ। वास्तवमें इन दोनों खण्डोंको मिलाकर ही एक सम्पूर्ण रचना बनती है। इस प्रकार 'चण्डीमण्डप' और 'पंचग्राम', इन दो खण्डोंका संयुक्त नाम 'गणदेवता' है। बंगलामें दोनों खण्ड दो पुस्तकोंके रूपमें प्रकाशित है। भारतीय ज्ञानपीठने इन दोनोंको एकत्र कर 'गणदेवता' नामसे हिन्दीमें प्रकाशित किया है।

'गणदेवता' का रचना-काल १९४१ '४२ है। इस समय भारतवर्ष परोक्षमें युद्ध क्रान्त था और प्रत्यक्षमें विदेशी शासनकी शृंखलाओंसे मुक्तिके लिए संघर्षरत। यही वेदना उसके अन्तःकरणको क्षत विक्षत किये थी। उसी उत्ताप और ज्वालाके कुछ चिह्न इस उपन्यासमें भी आ गये हैं, ऐसा मैं सोचता हूँ।

'गणदेवता' बंगालके ग्रामजीवनपर आधारित एक ग्रामभित्तिक उपन्यास है। कृषिपर निर्भरशील ग्राम्यजीवनकी शताब्दियोंकी सामाजिक परम्परा किस प्रकार पाश्चात्य औद्योगिक क्रान्तिके फलस्वरूप यन्त्र-सभ्यताके संघातसे धीरे धीरे अस्त-व्यस्त होने लगी थी, यही इस उपन्यासमें दिखाया गया है।

कृषि-निर्भर ग्राम्यजीवन जिन सामाजिक परम्पराओंपर टिका हुआ था उनका रूप सम्भवतया संसारके कृषि-निर्भर, यन्त्र-सभ्यतासे अछूते ग्राम्यजीवनमें सर्वत्र एक ही है। किन्तु 'पंजाब-सिन्ध-गुजरात-मराठा द्राविड-उत्कल-बंग' को अपनेमें समेटे इस विशाल देश भारतकी सामाजिक परम्पराके साथ एक और तत्त्व भी गुम्फित था जिसे अनुशासन कहा जा सकता है। यह अनुशासन नीति का अनुसरण करता है, और न्याय तथा अन्यायके बोधको लेकर सदा स्पष्ट या अस्पष्ट रूपसे जीवनमें सब कहीं सब क्षेत्रोंमें किसी-न किसी प्रकार अपनेको प्रयुक्त करना चाहता है। सम्पूर्ण सामाजिक परम्पराकी आधार भूमि यह बोध ही था। इस बोधके परिणामस्वरूप प्राकृतिक विभिन्नताके रहते भी आभ्यन्तरिक तथा बाह्य जीवनमें सारे भारतके ग्राम जीवनको एक आश्चर्यमयी एकताकी वाणी प्राप्त होती है।

इसीलिए, बंगालके ग्राम-जीवनका जो चित्र इस उपन्यासका आधार है वह केवल बंगालका होनेपर भी उसमें सम्पूर्ण भारतके ग्राम-जीवनका न्यूनाधिक प्रतिबिम्ब मिलेगा। बंगालके गाँवका खेतिहर-महाजन श्रीहरि घोष, संघर्षरत आदर्शवादी युवक देबू घोष, अथवा जीविकाहीन भूमिहीन अनिरुद्ध लुहार केवल बंगालके ही निवासी नहीं हैं इनमें भारतके उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम—सब दिशाओंके भिन्न भिन्न राज्योंके ग्रामीण मनुष्योंका चेहरा खोजनेपर प्रतिबिम्बित मिल जायेगा। बंगालके श्रीहरि देबू या अनिरुद्धने दूसरे प्रान्तोंमें जाकर सिर्फ नाम ही बदला है, पेशे और चरित्रमें वे लोग भिन्न नहीं हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ उसकी अध्यक्षा माननीया श्रीमती रमा जैन, तथा मन्त्री श्रीयुत लक्ष्मीचन्द्र जैनको मैं इस पुस्तकका आग्रह और यत्नसे प्रकाशन करनेके लिए धन्यवाद अर्पित करता हूँ तथा प्रतिष्ठित अनुवादक श्री हंसकुमार तिवारीको भी अनुवाद कार्यके लिए धन्यवाद देता हूँ।

२१ जुलाई १९६७
टाला पार्क कलकत्ता–२

ताराशंकर बन्द्योपाध्याय

चण्डीमण्डप

एक

कारण मामूली सा था। मामूली-से ही कारणसे एक विपर्यय हो गया। बस्तीके लुहार अनिरुद्ध कमकार और बढ़ई गिरीश सूत्रधरने नदीके उस पार बाजार में अपनी-अपनी दूकान कर ली थी। तड़के ही उठकर चल दिया करते और लौटते रातके दस बजे। लिहाजा गाँववालोंकी असुविधाओंका अन्त नहीं था। इस बार खेतीके समय उन्हें क्या-क्या मुसीबतें उठानी पड़ी, यह वही जानते हैं। हलका फाल पजाने और पहियाम हाल बँधवानेके लिए खेतिहराका कठिनाईकी पूछिए मत। गिरीश बढ़ईके यहाँ पिछले फागुन चैतसे ही गाँववालोंके बबूलके कुन्दोंका ढेर लगा पड़ा था, लेकिन आज तक उन्हें नये हल नहीं मिले।

इसी बातको लेकर अनिरुद्ध और गिरीशके खिलाफ लोगोंके असन्तोषका सीमा नहीं थी। लेकिन खेतीके समय इसके लिए पंच-पंचायत करनेकी फुरसत किसीको नहीं मिली। जरूरतका तकाजा था, लिहाजा मीठी बातोंमें ही उनसे काम निकाला गया। रात रहते ही अनिरुद्धके दरवाजेपर जा बैठे और उसे राजी-टोककर लोगोंने अपना अपना काम करा लिया, ज्यादा जरूरी हुआ तो फाल लिए, हाल और गाड़ीका पहिया ढुलकाते हुए लोग उसके पास बाजार तक भी दौड़े। चार मीलका फासला—मगर अकेले मयूराक्षी नदी ही बीस कामके बराबर थी। बरसातमें नावसे पार करनेमें पूरा डेढ़ घण्टा लग जाना। सूखे समयमें गाड़ीके पहियेका बालूपर आठ मील तक ठेलते हुए ले जाना आसान काम न था। थोड़ा घूमकर जानेसे नदीपर रेलका पुल है, मगर लाइनके पास-वाला रास्ता इतना ऊँचा और सँकरा है कि पहियेको लुढ़काकर ले जाना मुश्किल है।

खेतीका समय निकल गया। फसल पक गया। अब हँसिया चाहिए। लोहा इस्पात लेकर लुहार ही सदा हँसिया बना दिया करता था, पुराने हँसिय-पर धार चढ़ा दिया करता, बढ़ई लगा दिया करता था मूठ। मगर लुहार-बढ़ई दोनोंकी एक ही रफ्तार थी। जो किसी तरह अनिरुद्धके यहाँसे पार हो गया, वह गिरीशके यहाँ झूलता रहा। सो हार-थार कर गाँववालोंने पंचायत बुलाया। एक नहीं, आसपासके दो गाँवोंके लोग जुटे और एक शाम दिन अनिरुद्ध तथा

गिरीशको हाजिर होनेकी खबर भिजवायी। पचायत गाँवके शिव थानके सार्वजनिक चण्डीमण्डपम बठी। चण्डीमण्डपमे मयूरदवर शिव ह, पास ही ह ग्रामदेवी माता भग्नकालीकी वदी। काली-मन्दिर जितनी भी बार बना, टूट टूट गया। इसीलिए कालीका नाम पडा भग्नकाली। चण्डीमण्डप भी बहुत ही पुराना ह। उसके छप्परकी ठाटको मानो अजर अमर करनेके लिए हाथी सूँड बडदल, तीरसगा—सब प्रकारकी लकडियासे बनवाया गया था। नीचेकी जमीन भी सनातन नियमसे माटीकी थी। इसी चण्डीमण्डपम दरी-चटाई बिछाकर पचायत बठी।

गिरीश और अनिरुद्ध भी आये आखिर। दोनो समयपर पहुँचे। बठकमें दो गाँवोंके जान-मान लोग जमा हुए थे। हरीश मण्डल, भवेश पाल, मुकुन्द घोष, कालिदास मण्डल, नटवर पाल—ये सबके सब बजनी लाग थे, गाँवके मातबर लगाग। पासकी बस्तीके द्वारका चौधरी भी आये थे। ये एक विशिष्ट और प्रवीण व्यक्ति थे इलाकेमे इनका अच्छा मान था। आचार-व्यवहार और सूझ-बूझके लिए सबकी श्रद्धाके पात्र थ। आज भी लोग कहा करते—आखिर ह बडे खानदानके यह भी तो देखना ह। चौधरीके पुरख कभी इन दो गाँवोंके जमींदार थे आज अवश्य ये एक सम्पन्न किसान ही गिने जाते ह। दूकानदार वृन्दावन पाल—वह भी सम्पन्न आदमी। मध्यवित्त अवस्थाका कम उम्रका खेतिहर गोपेन पाल राखाल मण्डल रामनारायण घोष—ये सब भी हाजिर हुए थे। इस बस्तीका एकमात्र ब्राह्मण बाशिन्दा हरेन्द्र घोषाल, उस बस्तीका निशि मुखर्जी पियारी बनर्जी—ये सब भी एक ओर बठे थे।

मजलिसक लगभग बीचम जमकर बठा था छिरू पाल—यह जगह उसने खुद ली थी आकर। छिरू यानी श्रीहरि पाल ही इस बस्तीका नया धनी था। इस हलकेमें जो गिने-चुने धनी ह दौलतम छिरू उनम-स किसीस भी कम नही—ऐसा ही अनुमान था लोगोका। बडा-सा चेहरा, स्वभावस अलग और बडा ही खूँखार आदमी। दौलतके लिए जो सम्मान समाज किसीको देता ह वह सम्मान ठीक उसी कारणसे छिरूका नहीं था। अभद्र क्रोधी, गँवार दुश्चरित्र धनी छिरू पालको लोग मन-ही मन घृणा करते बाहरस डरते हुए भी धनक अनुरूप सम्मान उसका कोई नही करता। छिरूका इस बातका क्षोभ था कि लोग उसका सम्मान नहीं करते इसलिए वह सबपर खीझा रहता। वह जबरन यह सम्मान पानक लिए कमर कसे तयार रहता। इसीलिए जब भी ऐसी कोई सामाजिक बठक होती, वह बठकके ठीक बीचम जमकर बठ जाता।

एक ओर मजबूत लम्बा-तगडा सावला-सा युवक निरा नि स्पृह-सा एक ओर खम्भेसे लगकर खडा था। यह था देवनाथ घोष—इसी बस्तीके सदगोप खेतिहरका बेटा। अवश्य देवनाथ खुद खेती नही करता, वह स्थानीय यूनियन बोर्डके फ्री प्राइमरी स्कूलका अध्यापक था। आनेकी वैसी इच्छा न रहते हुए भी वह आया था उसे पता था कि अनिरुद्धका यह जो अन्याय है, उस अन्यायकी जड कहा है। उसकी यह नि स्पृहता इसीलिए थी कि जिस बैठकमें छिरू पाल-जैसा आदमी मालाके मनका-जैसा प्रधान बना बैठा हो, उस बैठक-पर उसे आस्था नही। इसीलिए वह मौन उपेक्षासे एक ओर खम्भेसे सटकर खडा था। बैठकमें आये नहीं थे तो केवल दो जने उस गाँवके कृपण महाजन स्वर्गीय राखाहरी चक्रवर्तीका दत्तक पुत्र हेलाराम चटर्जी और गाँवका डॉक्टर जगन्नाथ घोष। गाँवका चौकीदार भूपाल लुहार भी मौजूद था। आसपास गाँवके बच्चे शोरगुल कर रहे थे एकबारगी एक किनारे गाँवके हरिजन किसान भी खडे थे। गाँवके मजदूर खेतिहर दरअसल यही लोग है असुविधाओंका प्राय बारह आना तो इन्हींको भोगना पडता।

अनिरुद्ध और गिरीश आकर मजलिसमें बैठे। साफ-सुथरे, फिट फ्राट। शहरी फैशनकी स्पष्ट छाप। दोनो सिगरेट पीते आ रहे थे। सभासे कुछ दूर उधर ही सिगरेट फेंक दोनो आकर बैठ गये।

यात्राकी शुरुआत अनिरुद्धने की। बैठते ही एक बार चेहरेका अच्छी तरहसे हाथसे पोछ लिया और कहा, "जी हा। तो क्या कहना है कहिए। हम लोग मेहनत मशक्कत करके रोजी कमाते है। आजकी यह बेला हमारी नाहक मारी गयी।"

उसके कहनेके ढग और सुरसे सब लोग जरा चकित हो उठे। प्रवीणोंने खखारकर अपना-अपना गला साफ कर लिया। कम उम्रवालोंमें एक आग-सी उठी। छिरू उर्फ श्रीहरि बोल उठा "मारी गयी समझते हो तो आनेकी ही क्या जरूरत थी?"

बोलनेके लिए हरेन्द्र घोषाल अक्सर कर रहा था उसने कहा, "तो झगडा क्या है चाहो तो जा सकते हो तुम लोग। कोई पकडकर तो लाया नही, बाँधकर भी नहीं रखा है।"

अब हरीश मण्डलने कहा, "तुम लोग चुप रहो। सुनो जब बुलाहट हुई है तो आना तो पडेगा ही। तुम लोग आये हो अच्छा बात है, बहुत अच्छा किया है। अब दोनो तरफकी बात होगी। हमें जो कहना है हम कहेंगे—जवाब जो देना हो तुम लोग देना। फिर विचार होगा। ऐसी जल्दी करनेसे कैसे

चलेगा ?"

गिरीश बाला, "मतलब, कि बात हम लोगोंके हा बारमें ह," अनिरुद्धने कहा, "हम लोगाने अदाज लगाया था। खैर, क्या कहना ह आप लोगाको, कहिए। हम अपना जवाब देंगे। लेकिन एक बात है, आप सब लोग जब एक हो गये ह तो इसका विचार कौन करगा ? नालिश जब आपकी मरजी है, सब आप वसे विचार करेंगे, हम यह नही समझ पा रहे ह।"

द्वारका चौधरी एकाएक गला साफ करनेके लिए जोरसे साँस उठा—यह उनके बोलनका पूर्वाभास था। उस आवाजने सब चौधरीकी तरफ देखने लगे। चौधरीके चेहरे और भगिमामें खासियत थी। गोरा रग, धपधप सफेद मछ—बठकमें वह विशिष्ट सा होकर बठा था। अब उनने जबान खोली, "सुनो अनिरुद्ध, कुछ खयाल मत करना भया म एक बात कहूँ। शुरू ही तुम लोगोकी बातचीतके ढगसे लगता ह कि तुम लोग विवाद करनेके लिए तयार होकर आये हो। मगर यह तो अच्छी बात नही भया। बठो, स्थिर होकर बठो।"

अनिरुद्धने गरदन झुकाकर विनयके साथ कहा, ठीक ह कहिए।"

हरीश मण्डलने ही शुरू किया। कहा सुनो भया, खोलकर सब कहूँ तो पूरा महाभारत सुनाना होगा। सक्षेपमें ही कहूँ तुम दोनाने शहरमें अपना कारोबार शुरू किया है। ठीक ही किया ह। जहाँ दो पसे मिलगे, आदमी वही जायेगा। सो जाओ। लेकिन यहाँ एकबारगी सब समट लो और हम कन्धेपर सामान उठाये नदी पार करके वह दो कोस रास्ता दौडा करें यह तो नही होनेका भया। इस बार तुम दोनाने क्या गत बनायी ह हमारी, खुद ही माथ देखो जरा।"

अनिरुद्ध बोला, 'जी हाँ असुविधा तो कुछ जरूर हुई ह आप लोगोंको।'

छिरू यानी श्रीहरि पाल गरज उठा— कुछ ? कुछ क्या कहते हो ? पता ह, खेतमें पानी रहते हुए भी धनि पाल नहीं पकाया जा सका इसलिए खेती बन्द रखनी पडी ह ? आखिर जमीन तो तुम्हारी भी ह एक बार खेतका चक्कर काटकर देख तो आओ जरा कि किस कदर पटपटी घास उग आयी ह। अच्छे फालकी कमीसे जोतते वक्त तब भी जड नही उखडी घासकी। वक्तपर चारा लिये धानरे लिए हाजिर हो जाओगे और जरूरतके समय शहरमें जाकर बठ रहोगे—ऐसा करनेसे कम चलेगा।'

हरेन्द्रने तुरत हामी भरी—' बिल्कुल वाजिब।

सारी मजलिस लगभग एक स्वरमें बोल उठी— बिल्कुल।"

अनिरुद्ध अब जरा सप्रतिभ हो सँभलकर बठा और बोला, "यही शिकायत

ह न आप लोगोंकी ? अब हमारी सुनिए। मैं आप सबका फाल पजा देता हूँ, पहियामें हाल चढाता हूँ, हँसियाम धार कर देता हूँ, बदलेमे आप हल पीछे मुझे कच्ची पाँच सोली[1] धान देते ह। गिरीश सूत्रधर "

छिरू पालने टोका—"गिरीशसे तुम्हें क्या मतलब ?"

लेकिन छिरू अपनी बात पूरी नही कर सका। द्वारका चौधरीने कहा, "श्रीहरि, अनिरुद्धने कुछ बेजा नही कहा। बात उन दोनोंकी एक ही है। कोई एक ही कहे तो कोई हर्ज नही।"

छिरू चुप हो गया। अनिरुद्धने थोडा भरोसा पाकर कहा चौधरीजीके रहे बिना क्या मजलिसकी शोभा होती ह ! वाजिब बात कहे कौन ?"

"तुम जो कह रहे थे, कहा अनिरुद्ध !"

"जी ! मुझे यानी लुहारको हल पीछे पाँच सोली और बढईको हल पीछे चार सोली धान मिलता ह। हम इसीपर आजतक काम भी करते आये है। लेकिन आपसे बता दूँ अपना पावना हम प्राय पाते नही ह।"

नही पाते हो ?"

"जी नही।"

गिरीशने भी कहा 'जी नही। प्राय सभी लोग कुछ-न-कुछ बाकी रख लेते है। कहते ह, बादमें ले जाना या कि अगले साल ले लेना। और वह बाकी हमें फिर कभी नही मिलता।"

छिरू साप-जसा फुफकार उठा—"नही मिलता ? किसने नही दिया ह सुनूँ जरा ? केवल कह देनेसे तो नही होगा। नाम बताना पडेगा। कहो किसके यहाँ बाकी ह ?"

मारे गुस्सेके बिजलीकी तेजीसे गरदन घुमा श्रीहरिकी ओर ताककर अनिरुद्धने कहा, "किसके यहा ? नाम बताना पडेगा ? ठीक ह तुम्हारे यहाँ बाकी ह।"

"मेरे यहाँ ?"

"जा हा तुम्हारे यहा। दो सालसे दिया ह धान तुमने ?"

'और मने जो तुम्हें हण्डनोटपर रुपया दिया ह। उसम कै रुपया चुकाया ह तुमने, कहो तो ? मने नही दिया है—भरी सभामें इतनी बडी बात कह दी।'

"लेकिन उसका कुछ हिसाब किताब तो होगा आखिर। धानकी कीमतकी उसपर वसूली तो लिखनी होगी कि नही ? आप ही कहें चौधरीजी मण्डलजी

---

१ एक सोला अर्थात् बीस सेर।

घगरह भी तो हू कहें।'

चौधरीने कहा सुनो। चुप रहो जरा। भैया श्रीहरि, हैण्डनोटकी पीठपर वसूली लिख देना। और सुनो अनिरुद्ध जिन जिनके पास तुम लोगोंका बाकी है उनकी एक फिहरिस्त बनाकर हरीश मण्डरजीको दे दो। बटकम इसके लिए चार बन्ना ठीक रही। वही लोग तुम्हारा बकाया वसूल करा देंगे। और सुनो गाँवमें भी रामकाजका कुछ सिलसिला रखो। जसे कामकाज किया करते थे, किया करो।"

करीब सभी लोगोंने इस बातपर हामी भरी। लेकिन अनिरुद्ध और गिरीश चुप रहे। हाव भावसे भी हाँ-नाका कोई लक्षण नहीं प्रकट किया।

अब दवनापने जबान खोली। बूढ़े चौधरीका यह फसला उसे अच्छा लगा। उसे अनिरुद्ध और गिरीशके बकायेकी बात मालूम थी इसलिए पहले उसे लगा कि पचायत उन दोनोंपर जुल्म कर रही है। वरना वह गाँवकी समाज शृंखलाको कायम रखनेका हिमायती है। खासकर चौधरीने जो छिद्र जसे आदमीके अन्याय का विचार करके जो व्यवस्था फसलेमें की उसमे दवू खुश हुआ। उसे लगा कि अनिरुद्ध और गिरीशको अब थकना चाहिए। बोला अनिरुद्ध भैया अब तो तुम्हें आपत्ति नहीं करनी चाहिए।"

चौधरीने पूछा अनिरुद्ध ?

जी।

'क्या कहते हो, कहो ?

अनिरुद्धने हाथ जोड़कर कहा, 'जी हमें तो आप लोग माफ ही करें। हम लोगोंसे अब नहीं बनता।'

बठकमें असन्तोषकी हलचल हुई।

'क्यों ?

'न हो सकनेकी वजह ?'

नहीं बनता कहनेसे कसे चल सकता है ?'

'ठट्ठा है ?'

आखिर बरतोंसे बसते नहीं हो क्या ?'

चौधरीने अपना लम्बा हाथ उठाकर इशारा किया—खामोश, खामोश।

हरीशने खीजकर कहा अरे तुम ठहरकर चुप तो रहो। हम लोग अभी मरे नहीं हैं।

हरेन्द्र घोषाल नौजवान है। मट्रिक पास। वह जोरसे चिल्ला उठा, 'ए लो! साइलेन्स-साइलेन्स!

अंतमें द्वारका चौधरी उठ खड़ा हुआ। उसके उठनेका लाभ हुआ। चौधरीने कहा, "हो-हल्लामें तो कुछ होने हवानेका नहीं। ठीक तो है, अनिरुद्ध बताये कि उससे क्या नहीं बनेगा। उसे कहने तो दो।'

सब चुप हो गये। चौधरी बैठ गया और बोला, 'अनिरुद्ध, केवल 'नहीं बनेगा' कहनेसे तो काम नहीं चलेगा भैया। क्या नहीं बनेगा यह बताओ। पीढ़ियोंसे तुम करते आये हो। आज ना कहनेसे गाँवकी क्या व्यवस्था होगी?'

देवनाथ बोला, 'यह अनिरुद्ध और गिरीशका अन्याय है, महा अन्याय!'

हरीशने कहा, "तुम्हारे पुरखे महाग्रामके बाशिन्दे थे। इस गाँवमें लुहार नहीं था इसलिए तुम्हारे दादाको यहाँ लाकर बसाया गया था—यह तो तुमने भी सुना है। अब ना कहनेसे कैसे चल सकता है?'

अनिरुद्ध बोला, "मण्डल चाचा, तो सुनिए। और आप विचार कीजिए चौधरीजी। सोच देखिए कि इस गाँवमें पहले कितना हल था। कितने घरोंका हल उठ गया, यह देखिए। या समझिए कि गुसाईं श्रीनिवास महेन्द्र—मैंने लेखा लगाकर देखा है—मेरे देखते देखते ग्यारह हल यहाँके उठ गये। जमीन जा रही कंकनाके बाबुओंके पास। कंकनामें अलगसे लुहार हैं। हम लोगोंको उन ग्यारह घरोंका पावना अब नहीं मिलता। फिर यह सोचिए कि खेतीके सिवा तो हम हल फालका गाड़ीका काम करते थे। और समय गाँवमें घर-द्वार बनता था। हम काँटी-कब्जा बनाते थे कुदाल कुल्हाड़ी गढ़ते थे—गाँववाले हमसे खरीदा करते थे। अब ये सब चीजें गाँववाले बाजारसे लेते हैं। चूँकि सस्ती मिलती हैं, इसलिए लेते हैं। यह गिरीश गाड़ी बनाता था किवाड़ बनाता था। छप्परकी ठाट बनानेके लिए लोग इसीको बुलाते थे। अब बाहरसे सस्ता मिस्त्री बुलाकर काम कराया जाता है। तिसपर यह भी सोचिए कि धान सवा डेढ़ रुपया मन है और दूसरी चीजें महँगी हैं। आप ही कहिए, ऐसेमें एक इसीके भरोसे हम पड़े रहें, तो कैसे चले? जब घर गिरस्ती बसायी है तो लोगोंके मुँहमें दो दाने तो देने ही पड़ेंगे। और फिर आजकलका हालचाल वैसा नहीं।"

छिरू अबतक मन-ही-मन भाँज रहा था। मौका मिलते ही बीचमें टोक दिया, 'बेशक आजकल पॉलिश किये हुए जूते चाहिए लम्बा कुरता, सिगरेट चाहिए स्त्रीके लिए, सेमीज, बॉडिस—

"देखो छिरू, तुम जरा हिसाबसे बातें करो—"अनिरुद्धने इस बार तीखे स्वरमें प्रतिवाद किया।

छिरूने दो एक बार हिल डुलकर कहा "हिसाब मेरा किया-कराया है रे। पचीस रुपये नौ आने तीन पैसे। मूल दस रुपये, सूद पन्द्रह रुपये नौ आने तीन

पैसे। जो चाहे तो खुद जोड़कर देख ले। गुभङ्करी जानता है न?"

यह हिसाब हैण्डनोटमें बनाया था। अनिरुद्ध कुछ क्षण ठक-सा रहा, फिर बैठकके सभी लोगोंको एक बार ताककर देखा। सभाके सभी लोग इस आकस्मिक अप्रत्याशित रूढ़ व्यवहारसे स्तब्ध हो गये थे। अनिरुद्ध उठ खड़ा हुआ।

छिरू डपट उठा 'जा कहाँ रहे हो?"

अनिरुद्धने इसकी परवा न की। चला गया।

चौधरीने इतनी देरके बाद कहा "श्रीहरि!"

छिरू बोला, आप मुझे आँखें मत दिखाइए चौधरीजी। आपने मुझे दो तीन बार रोक दिया है मैं चुप हो गया हूँ। लेकिन अब मैं बरदाश्त नहीं करूँगा।"

चौधरीने अपनी चादर कन्धेपर रखी और बाँसकी लाठी उठाकर उठ खड़ा हुआ। कहा "तो मैं चलता हूँ। ब्राह्मणोंको प्रणाम—आप सबको नमस्कार।"

इतनेमें बस्तीका पातूलाल मोची हाथ जोड़े आगे बढ़ आया। बोला, "चौधरीजी जरा मेरा इन्साफ कर देना होगा।"

बैठकसे बाहर निकल आनेका उपक्रम करते हुए चौधरीने कहा, 'ये सभी लोग हैं अपनी रसम कहो भैया।"

'चौधरीजी!'

चौधरीने देखा अनिरुद्ध लौट आया है।

'आपको जरा देर रुकना होगा चौधरीजी! छिरू पालके रुपये मैं ले आया हूँ—आप लोगोंके अपने सामने मेरा हैण्डनोट वापस दिला देना होगा।"

बैठकमें मौजूद सभी लोगोंने चौधरीजीको रुकनेका आग्रह किया। लेकिन उसने नहीं ही माना धीरे धीरे सभासे बाहर हो गया।

अनिरुद्धने पंचायतके सामने पचीस रुपये दस आने रख दिये। कहा, "छिरू पाल मेरा हैण्डनोट ला दो।"

और जब हैण्डनोट वापस मिल गया, तो कहा "बाकी एक पैसा लौटानेकी जरूरत नहीं। पान खा लेना उसका! आओ भैया गिरीश चलें।'

हरीशने कहा, अरे, तुम लोग तो चल दिये! जिनके लिए पंचायत बुलायी गयी—'

अनिरुद्धने कहा "जी! हम लोगोंसे अब काम न होगा। जवाब देता हूँ। और जो पंचायत छिरू पालपर शासन नहीं कर सकती उस पंचायतको हम नहीं मानते।'

वे दोनों तेजीसे निकल गये। बैठक टूट गयी।

दूसरे ही दिन सुबह खबर मिली, अनिरुद्धके दो बीघे खेतका कुल अधपका धान किसीने या किन्हीं लोगोंने काटकर गायब कर दिया है।

दो

उजड़े खेतकी मेंड़पर खड़े होकर अनिरुद्धने थिर आँखों जरा दूर देखा। निष्फल क्रोधसे अपनी लोहा पीटनेवाली हथेलियोंको मुट्ठी बाँधकर उसने शिकंजे-जैसा सख्त कर लिया। बड़ी ही तेजीसे घर लौटा और अपने अधमैली कुर्तेको खींचकर पहनते हुए दरवाजेकी तरफ बढ़ा।

अनिरुद्धकी पत्नीका नाम है पद्ममणि—कदकी लम्बी, जवान और काली। नुकीली नाक खिंची हुई बड़ी-बड़ी आँखें। उसे रूप चाहे न हो श्री है। शरीरमें काफी क्षमता। सबेरा उगनेसे डूबने तक काम करती। और वैसी ही पक्की सांसारिक बुद्धिवाली। अनिरुद्धको इस ढंगसे बाहर जाते देख वह उससे भी तेजीसे चलकर आगे जा खड़ी हुई। बोली, "जा कहाँ रहे हो ?"

अनिरुद्धने सख्त निगाहों ताककर कहा, "तू क्या पीछे लग गयी ! कहीं जा रहा हूँ तुझे क्या मतलब ?"

हँसकर पद्मने कहा, "पीछे कहाँ लगी हूँ, सामने आकर खड़ी हुई हूँ। खोज-पूछसे मतलब मुझे है। तुम मारपीट करनेके लिए नहीं जा सकते।"

अनिरुद्धने कहा, "मारपीट करने नहीं जा रहा हूँ, थानेपर जा रहा हूँ। रास्ता छोड़ दे।"

"थाना ? " पद्मकी आवाजमें उद्वेग झलका।

"हाँ, थाना। साला छिरूके नाम डायरी लिखवाऊँगा।"

गुस्सेसे अनिरुद्धकी आवाज काँपा करती थी। पद्मने थिर भावसे गरदन हिलाकर कहा, "नहीं। बात सही ही है, फिर भी छिरू मण्डलने तुम्हारा धान चुराया है—इस बातपर इस इलाकेमें यकीन कौन करेगा ?"

लेकिन अनिरुद्धकी दशा उस समय ऐसी सलाह सुनने-जैसी न थी। वह पद्मको ठेलकर हटाते हुए निकल जाना चाहने लगा।

अनिरुद्धका अनुमान बिलकुल सही था। धान श्रीहरि पालने ही काट लिया था।

लेकिन जो कुछ पद्मने कहा, वह भी कठोर सत्य था।। धनीको चोर साबित करना सहज काम नहीं, श्रीहरि धनी है।

इस इलाकेमें पास-पास तीन गाँव हैं—कालीपुर, शिवपुर और कंकना। तीनोंमें छिरू पालके धनकी बड़ी शोहरत है। सरकारी कागजोंमें कालीपुर और शिवपुर दो अलग-अलग गाँवके हिसाबसे जमींदारोंके अधीन अलग मौजे जरूर हैं मगर वास्तवमें दोनों एक ही गाँव हैं। महज एक तालाबके इस पार—उस पार। श्रीहरि इसी कालीपुरमें रहता है। इन दोनों गाँवोंमें श्रीहरिके बराबरका दूसरा आदमी नहीं। शिवपुरमें हेला चटर्जीके पास रुपया और अनाज काफी है मगर लोग कहते श्रीहरिके पास सोनेकी ईंटें हैं—रुपयोंकी तो बात ही क्या! कोस भरके फासलेपर कंकना है यह अवश्य बहुत समृद्ध गाँव है। वहाँके मुखर्जी लोगोंके पास लाखों लाख रुपये हैं। इलाकेके लगभग सभी गाँव उन्हींके पेटमें समा गये। महाजनसे धीरे धीरे वे प्रतापी बलशाली जमींदार होते जा रहे थे। शिवपुर और कालीपुर भी धीरे धीरे उनके ग्रासके खिंचावसे साँप-सी लपलपाती जीभकी ओर बढ़ते आ रहे थे। लेकिन श्रीहरि पालकी धाक वहाँ भी है। मयूराक्षी नदीके उस पार आधे शहर-सा बाजार है—रेलवे जंक्शन। वहाँ बहुतेरे अमीर मारवाड़ियोंकी गद्दियाँ हैं चावलकी दस बारह मिलें, तेल-कल दो एक, आटेकी एक चक्की। श्रीहरिको वहाँके सभी लोग पाल बाबू' कहा करते। इस इलाकेका थाना उसी जंक्शन शहरमें है।

पद्मका कहना गलत न था—कंकना या जंक्शन शहरका कोई भी इस बातपर विश्वास नहीं करेगा। लेकिन शिव-कालीपुरका कोई भी इस बातपर अविश्वास नहीं करता कि छिरू बड़ा भयंकर आदमी है। संसारमें ऐसा कोई काम ही नहीं जो वह नहीं कर सकता। अनिरुद्धका धान काट लेना महज उससे बदला चुकाना ही नहीं है बल्कि चोरी भी उसका अन्यतम उद्देश्य है—यह भी शिव-कालीपुरके बूढ़े-बच्चे विश्वास करते हैं। लेकिन खुलकर यह बात कहनेकी हिम्मत किसीमें न थी।

विशाल था शरीर श्रीहरिका—मोटा नहीं। मेदाधिक्य जरा भी नहीं। बाँस-जैसी मोटी था हाथ-पाँवकी हड्डी और उसपर चढ़ी सख्त पेशियाँ। दो प्रकाण्ड पंजे, विशाल माथा, बड़ी-बड़ी आँखें, कान तक फटा हुआ मुँह, घुँघराले बाल। ऐसा विशाल शरीर होते हुए भी वह बिना आवाजके तेज चल सकता था। दूसरेकी बँसविट्टीका बाँस रातों रात काटकर अपने बाखरमें डाल लेता। काटनेमें आवाज न हो इसलिए आरीसे बाँस काटता। फँदा-जाल

डालकर पराये पोखरकी मछलियां पकड़कर अपना तालाब भर लेता। अपने घरकी दीवारको हर साल बरसातमें खुद कुदाल चलाकर गिरा देता और नयी दीवार उठाते वक्त दूसरेकी थोड़ी-सी जमीन या रास्ता दबा लेता। उससे ज्यादा कुछ बोलचाल कोई नहीं करता, लेकिन किसी खास आदमीकी जमीन दबा लेता तो प्रतिवाद किये बिना उपाय नहीं था। ऐसेमें छिरू कुदाल तानकर डट जाता। बिना दांतवाले मुँहसे जाने क्या बोलता कि समझमें नहीं आता। लगता कि कोई पशु गरज रहा है। महज ४४ सालकी उमरमें ही उसके दांत जाते रहे, यौन-व्याधिसे सारे दांत गिर गये। हरिजनोंके टोलेमें जब सारी मरद सूरतें शराबके नशेमें चूर होती, तो वह दबे पांवों वहां शिकारकी टोहमें पठता। बहुत बार लोगोंने उसका पीछा किया मगर वह निशाचर हिंसक पशु-सा दौड़ लगाता। यह रहा श्रीहरि घोष उर्फ छिरू पाल या छिरू मण्डल।

अनिरुद्ध छिरूको खूब पहचानता था, फिर भी पत्नीकी बातका विचार करना तो दूर, उसे ठेलकर हटाते हुए बाहर रास्तेपर उतर पड़ा। पद्म बुद्धिमती थी। उसने न तो गुस्सा किया, न मान। फिर आवाज दी, "अजी ओ, सुनो सुनो, लौटो।" खूब धीमेसे हँसकर कहा, "पीछेसे रोक रही हूँ, सुनो।"

अबकी छेड़े हुए गेहुँअन-सा अनिरुद्ध बिगड़कर पलटा।

पद्मने हँसकर कहा "थोड़ा-सा पानी पी लो, तब जाओ।" लौटकर अनिरुद्धने जोरसे उसके गालपर एक तमाचा जड़ दिया—"और टोकेगी पीछेसे ?"

पदमका माथा झनझना उठा। लोहा पीटनेवाला हाथ अनिरुद्धका—वह चोट बड़ी कठिन था। 'बाप रे' कहती हुई हथेलीसे मुँह ढँककर पदम बैठ गयी।

अब अनिरुद्ध अप्रतिभ हो गया। साथ ही उसे जरा डर भी लगा। जहां तहां तमाचा पड़ जानेसे तो लोग मर भी जाते हैं! घबराकर उसने आवाज दी, "पदम, पद्म बहू!"

पदमका शरीर थरथर कांप रहा था, वह फफक-फफककर रो रही थी।

अनिरुद्ध बोला, 'यह ले बाबा, ले, कुरता उतार देता हूँ, अब थाना नहीं जाऊँगा। उठ। रो मत ऐ पदम!" मुँह ढके उसके हाथको खींचते हुए कहा, 'पदम!' पदमने मुँहपर से हाथ हटा लिये और खिलखिलाकर हँस पड़ी। मुँह ढँककर वह रो नहीं रही थी, चुपचाप हँस रही थी। पदममें गजबकी ताकत थी और फिर अनिरुद्धका तमाचा मुक्का खानेकी आदी भी हो चुकी थी। एक तमाचेसे क्या होना था उसका!

लेकिन अनिरुद्धके पौरुषको शायद चोट लगी—वह गुम-सुम हो गया। पद्म थोड़ा-सा गुड़ और एक बहुत बड़े कटोरेमें फरवी तथा एक लोटा पानी लाकर

रखती हुई बोली, "छिरू मण्डलको मुजरिम बनाकर तुम जो इजहार करोगे, गाँवका कौन आदमी तुम्हारी तरफसे गवाही देगा, कहो तो ? कलसे तो गाँवके सारे लोग तुम्हारे खिलाफ हो गये हैं।"

कल शामके बाद फिर बैठक बैठी थी। 'पंचायतको हम नहीं मानते'—अनिरुद्धका यह कहना लगातार चल गया था। अनिरुद्ध और गिरीशके खिलाफ जमींदारके पास नालिश करनेकी तय पा गयी थी।

यह बात अनिरुद्धको याद आयी, मगर फिर भी मन नहीं माना।

तीन

खूब अच्छी तरहसे चिलम चढ़ाकर हुक्केका पानी बदलकर पद्म पतिका खाना खत्म होनेकी राह देख रही थी। अनिरुद्धका भोजन समाप्त होते ही हाथ धुलाकर उसने उसे हुक्का थमा दिया और कहा 'पियो।' अनिरुद्धने मजेसे दम लगाया। नाक मुँहसे गलगलाकर धुआँ निकाला तो पद्म बोली, 'गुस्सा अब कुछ शान्त हुआ हो तो मेरी बातको जरा सोच देखो।'

'गुस्सा ? —अनिरुद्धने नजर उठाकर देखा, उसके दोनों होंठ थर थर काँप रहे थे— मेरा यह गुस्सा भुसकी आग है, जनम भर नहीं बुझेगी। दो बीघा खेतका धान ''

अपनी बात वह पूरी न कर सका। पद्मकी बड़ी-बड़ी आँखें भी सबतक घुटे आँसुओंसे डबडबा आयी थीं। देखते-ही-देखते टप-टप दो एक बूँद आँसू टपक पड़े।

अनिरुद्धने कहा 'रो क्या रही है तू ? दो बीघा जमीनका धान गया, जाने दे। अरे बाबा मैं तो हूँ! फिर देख तो जरा मैं करता क्या हूँ!'

आँखें पोंछते हुए पद्मने कहा, मगर थाना पुलिस मत करना तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ मैं। वे ऐसे लोग हैं कि साँप होकर काटते हैं और ओझा बनकर झाड़ते भी हैं। मेरे मनमें डरती हुई। बाबूजीने एकको पहचान लिया। मगर पुलिसने उसे छुआ तक नहीं बाकि बाबूजीके मुट्ठी-मुट्ठी रुपये खर्च हो गये। घर भरकी परेशानी। कभी दरोगा आता तो कभी निसपिट्टर तो कभी साहब—और देते रहो इजहार। उसके बाद कुछ लोगोंको पकड़ा, उनको चालानने

लिए औरता तकको जेहलकी दौड धूप। इसके सिवा गाली गलौज, भला-बुरा तो ह ही।"

"हूँ।"—चिंतित-सा हुक्केम कई दम लगाकर अनिरुद्धने कहा, "मगर इसका कोई किनारा तो करना ही होगा। आज दो बीघेका धान ही ले गया, कल तालाबकी मछलियाँ मार लेगा, परसों घरमें—"

"अरे अनो भाई हो?" —अनिरुद्धकी बात खत्म होनेके पहले ही गिरीश पुकारते हुए अन्दर आ गया। आधा घूँघट खीचकर जूठे बरतन उठा पदम घाटकी ओर चली गयी।

एक लम्बा निश्वास फेंकते हुए अनिरुद्धने कहा, "दो बीघेका धान बिल्कुल काट लिया एक बाल तक नही बचा।"

गिरीशने भी लम्बा निश्वास छोडकर कहा, 'हा, सुना।"

"थानेमे रपट लिखानेकी सोची, मगर वह मना कर रही ह। कहती हैं, लोग इस बातपर विश्वास क्या करने लगे कि छिरू पाल्ने ही चोरी की हैं। मेरी ओरसे गावका कोई गवाही भी न देगा।'

"हा। कल शाम शायद फिर चण्डीमण्डपमें बठक हुई थी। हम लोगोने गाव वालोका क्या अपमान किया ह। जमीन्दारके पास नालिश करेंगे लोग।"

होठका एक हिस्सा टेढा करके अनिरुद्ध बोल उठा, "अरे जा, जमीदार! ठिलुआ करेगा जमीदार मेरा!"

गिरीशको बात जँची नही। उसने कहा, "मगर हम यही क्या कहें? जमीदारके भी तो विचार ह, वही फसला करें न!"

अनिरुद्धने बार-बार गरदन हिलाकर अस्वीकार करते हुए कहा, "उहुँ, खाक इन्साफ करेगा! खुद जमींदारने ही तीन सालसे धान नही दिया ह। तुम नही जानते देखना वह उन्हीं लोगोकी हाँ म हाँ मिलायेगा।"

उदास-सा हो गिरीश बोला, "मुझे चार सालमे नही मिला।"

अनिरुद्धने कहा, 'दमो भया, जब मुँह खोलकर मने कह दिया कि नहीं करूँगा तो अब मेरा मरा बाप आकर भी मुझसे नही करा सकता। अब मेरे नसीबमें चाहे जो भी लिखा हो! रही बात तुम्हारी तुम ठीकसे सोच लो अभी भी।"

गिरीश बोला 'इसके लिए तुम निश्चिन्त रहो। जबतक तुम नही मेटमाट करते म भी नही करूँगा।"

खुश होकर अनिरुद्धने चिलम उसके हाथमें दी। उँगलियोकी भाँजमें चिलम रखकर कश लगाते हुए गिरीशने कहा, "इधर समेला भी आखिरी हो गया ह! हम दोनो ही नही ह बन्धु! इन्साफ करे तो जमीदार कितनोका

करेगा! नाई, धोबी, दाई चौकीदार, पाल्की मल्लाह, बैहार जोतनेवाला—सब अकड बैठे हैं, उतने धानपर हम काम नहीं कर सकेंगे। तारा नाई तो आज ही घरके सामने अर्जुन पेडके नीचे ईंट डालकर बैठ गया है—पैसा ले आ, हजामत बनवा।"

चिलम झाडकर नये सिरसे तम्बाकू भरते हुए अनिरुद्धने कहा, "अच्छा! पैसे गोला गाठमें, मोआ खाओ। हम तुम्हारे बिराने थोड़े ही हैं।"

गिरीशकी बातचीतमें पण्डिताई दिखानेका ज्यादा ढंग रहता है। आदत हो गयी है उसकी। वह बोला, 'यह बात हुई। पहलेका समय कुछ और था। सस्तेका जमाना था, उस समय धानपर काम करके चल जाता था। हम करते थे। अब अगर न चलता हो '

बाहर रास्तेपर साइकिलकी टुनटुन घण्टी बजी। और साथ ही-साथ आवाज आयी— अनिरुद्ध!

डॉक्टर जगन्नाथ घोष।

अनिरुद्ध और गिरीश दोनों जने बाहर निकले। नाटे कदका मोटा-सोटा आदमी—बाबरी बाल। वह साइकिल पकड़े खड़ा था।

डाक्टरी उसने कहींसे पढ़-सुनकर नहीं पास की थी। चिकित्सा विद्या उसकी पुश्तैनी थी—तीन पुश्तसे। दादा कविराज थे बाप और चाचा कविराज और डॉक्टर दोनों थे। जगन्नाथ सिर्फ डॉक्टर था हाँ कभी-कभी दो-एक मुष्टियोगका प्रयोग करता था। उससे झटपट लाभ भी होता था। गाँवके सभी लोग उसे दिखाया करते, मगर पैसा जल्दी कोई नहीं देता। डॉक्टरको इसपर ज्यादा एतराज़ नहीं। बुलाते ही आता उधारपर उधार देता। दूसरे गाँवोंमें भी गुणसे उसका नाम-यश था, सो उसी आमदनीसे गुजारा चलता। कभी साग भात और कभी जिसे कहते हैं एक अन्न पचास व्यंजन! जब जैसी आमदनी। कभी बाप लोग धनवान् और प्रतिष्ठित थे। धनियाके गाँव कंकनामें भी उनका खासा सम्मान था किन्तु कंकनाके ही लखपती मुकर्जी परिवारका हजारका ऋण धीरे धीरे चार हजार हो गया और घोषोंकी सारी जायदाद हड़प बैठा। जायदाद और तबके सम्मानित बूढ़ोंके गुजर जानेसे उनकी मान मर्यादा भी चली गयी। जगन्नाथके लाख इलाज और दवाकी मदद करनेपर भी वह मर्यादा नहीं लौटी। वह किसीको रियायत नहीं करता—ऊँचे गलेसे कड़ी भाषामें कहता—सबके सब चोर हैं—जानवर। कुछ छिपकर नहीं सामने ही कहता। लोगोंकी छोटी-सी भूलका भी वह बड़ा कठोर प्रतिवाद करता।

अनिरुद्ध और गिरीशके बाहर निकलते ही डॉक्टरने बिना किसी भूमिकाके

कहा, "थानेमें डायरी लिखा दी ?"

अनिरुद्धने कहा "जी नहीं तो !"

"नहीं तो क्या ? जा डायरी लिखा आ।"

"जी, सभी मना कर रहे हैं। कहते हैं छिरू पालने चोरी की है, भला इस बातपर कौन विश्वास करेगा ?'

'क्या ? उस सालेके पास रुपया है इसलिए ?'

'यही तो सोच रहा हूँ डॉक्टर बाबू !'

तीखे व्यंग्यकी हँसी हँसकर जगन्नाथने कहा, फिर भी इस दुनियामें जिसके पास रुपया है वही साधु है और सारे गरीब बेचारे असाधु हैं, क्या ? किसने कही यह बात ?'

अनिरुद्ध चुप रह गया। घरके अन्दर बरतनोंकी खन-खन हो रही थी। पद्म लौट आयी थी सब सुन रही थी। जवाब गिरीशने दिया, "डायरी लिखाकर भी क्या होगा डाक्टर बाबू वह रुपया देकर तुरत दरोगाका मुँह बन्द कर देगा। और थानेके जमादारसे छिरूकी खूब पटती भी है। साथ ही पीने-खाने हैं। और "

डाक्टर बोले 'मालूम है मुझे। लेकिन दरोगा रुपया लेगा तो उसके ऊपर भी तो बाप है। बापका भी बाप। दरोगा घूस ले तो पुलिस-साहब है मजिस्ट्रेट है उसके ऊपर कमिश्नर है फिर छोटा लाट, छोटे लाटपर बड़ा लाट।'

अनिरुद्धने कहा, 'सो तो है डाक्टर बाबू, लेकिन घरकी औरतका इजहार लिखाना करना पड़ेगा मैं उस हंगामेकी सोच रहा हूँ।"

"औरतका इजहार ?" डाक्टर अचरजमें पड़ गया। "खेतमें धानकी चोरी हुई है, इसमें औरतको क्या इजहार देना पड़ेगा ? किसने कहा तुमसे ? अंधेर-नगरी है क्या ?"

अनिरुद्ध तुरत खड़ा हो गया—"तो ठीक है मैं अभी ही जा रहा हूँ।"

साइकिलपर सवार होकर डॉक्टरने कहा, 'तू बेफिकर जा। मैं शामको आऊँगा। यह मत कहना कि चोरी करनेके लिए धान काट लिया है। कहना कि गुस्सेमें मेरा नुकसान करनेके लिए चोरी की है।"

अनिरुद्ध फिर घरमें अन्दर नहीं गया कि कहीं पद्म फिर न बाधा दे। वह डॉक्टरकी साइकिलके साथ-साथ हो चलने लगा। गिरीशसे बोला, 'भई गिरीश जरा लुहारसालेकी कुंजी तो माँग लाओ।

जंक्शन शहरकी दुकानकी कुंजी गिरीशके अन्दर आकर माँगनेकी जरूरत

नही पडी। दरवाजेकी आडमे आकर बुजी श्रमसे उसके सामने गिर पडी। गिरीश झुककर उसे उठाने लगा। पद्मने दरवाजेके पाससे झाँककर देखा कि डॉक्टर और अनिरुद्ध काफी दूर निकल गये है। आधा घूँघट काढकर वह सामने आकर बोली "जरा पुकारो ना उन्हें।"

नजर उठाकर एक बार उसे और एक बार अनिरुद्धकी ओर देखकर गिरीश बोला, "पाछेसे पुकारनेपर वह बिगड उठेगा।"

'सो तो उठेगा। लेकिन भात ? भात कौन ले जायगा ? आज क्या खाना खाना नही होगा ?

होता यह है कि गिरीश और अनिरुद्ध सवेर ही उस पार चले जाते है, जलक पहले ही उनकी रसोई बन जाती है और जाते समय वह साथ ले जाते है। उसी खानेपर उनका दिन कटता है। गिरीशने कहा, मुझे दे दो। मै ही लेता जाऊँगा।"

घरमे पदम अकेली ही है। दो साल पहले सासके मरनके बादसे ही, तमाम दिन उसे अकेले बिताना पडता है। खुद वह बाँझ है। आराम ऐसी हालतमें एक मजेका काम रहता है—टोलेमे घूमना। लेकिन पद्मका स्वभाव है मकडी-जसा। दिन भर वह अपनी गृहस्थीका ही जाल बुनती रहती है। धान उडद धूपम डालती है और उठाती है मिट्टी और चुनी हुई इटाम चौतरा बनाती है राखसे मले हुए बरतनाका मैल पोंछती है, सर्दीकी बिस्तर-कथरोका नये सिरसे तहियाती है। इनके सिवा दनदिन काम—गुहाल साफ करना, चारा काटना उपले पाथना—तीन-चार बार घर बुहारना तो है ही।

आज उसे कोई काम करनेकी इच्छा न हुई। वह पिछवाडेके घाटपर जाकर पाँव पसारकर बैठ गयी। अनिरुद्धको जो खाना जानम मना किया हसते हुए मजाक करके उसे शान्त करनेकी कोशिश की वह मन्ज इसलिए कि आगे अशान्ति न हो। मगर दो बीघा खतके धानके लिए भी उसके दुखकी सीमा नही थी। वह खुद भी मन-ही मन छिरू पालको भला-बुरा कहने लगी— अधे होग, अध होगे वे हाथमें काढ फूटगा, सरबस नाश आयेगा—भीख माँगकर पट पालेंगे।

अचानक कहीं जोरोका शोरगुल होना सुनाई पडा। पद्मने कान लगाकर सुना। लगा गोलमाल माचा-टालेमें हो रहा है। कोई कडे ही तेज स्वरमें भद्दी गालियाँ देते हुए चिल्ला रहा है। पद्मको मानो उसीकी छूत लग गयी। उसने

भी जोर-जोरसे मुहल्ले भरको जताते हुए गाली-शाप देना शुरू कर दिया।

—"दो-दो बेटे छटपटाकर मरेंगे, एक ही बिस्तरपर, एक साथ। मेरे धानके चावलमे हैजा होगा। निरवंस होगे, निरवंस। आप मरेंगे नहीं, अन्धे होंगे, दोनों आखें फूटेंगी, हाथमे कोढ फूटेगा। जो कुछ है सब चला जायेगा, उड जायेगा। गली-गली भीख मागते फिरेंगे। "

वह छिरू पालका नाम ले-लेकर गाली शाप दे रही थी। एकाएक उसकी नजर पडी पिछवाडेके पोखरेके उस पार खडा छिरू पाल हँसते हुए उसकी गालियोंका मजा ले रहा है। छिरू भी पानू मोचीको मार-पीटकर अभी ही लौटा था। मोची-टोलेका वह ही हल्ला उसीके विक्रमका नतीजा था। वहाँसे लौटते हुए वह अनिरुद्धकी स्त्रीका गाली गलौज सुनकर खडा-खडा हँस रहा था। उस हँसीमें एक क्रूर प्रवृत्तिकी प्रेरणा या ताडना भी थी। उसे देखकर पदम घरके अन्दर चली गयी। छिरूके मनमें आया कि उछलकर उसके घरमें ही घुस जाये। लेकिन दिनकी रोशनीका बडा डर था उसे धडकते कलेजेसे उसे दुविधा हो रही थी। अचानक पदमकी आवाज सुन उसने फिरसे पलटकर देखा, लेकिन जाने किस चीजकी चमकती चौंध सी उसकी आखोंमें आयी और उसने आँखें फेर ली।

"हूँ। —धार जाचनेके लिए एक चोटमें दो वकर काटकर मेरा काम बना गये है वीर-बहादुर। लहूका दाग तक न धोया और रख लिया। अब मैं झामेसे रगड रगडकर धोती रहूँ।"

पदमके हाथमे एक दाव था, जो धूपसे झलमला रहा था। उसीकी छटासे छिरू पालने आँखें फेर ली थी। वह झट घरकी ओर चल पडा। पदमके चेहरे-पर कौतुककी हँसी फूट उठी।



चार

गावमे निकलते ही पंचग्रामकी विशाल बहार। छह मील लम्बी चार मील चौडी। कंकना कुसुमपुर, महाग्राम, शिवकालीपुर और देखुडियाका सिमाना। बहारके दक्खिन पूरब-पच्छिम बहती है मयूराक्षी नदी। उसके तटकी यह बहार गजबकी उपजाऊ है। उसमें भी शिवकालीपुरके सिमानेकी जमीन शायद सबसे ज्यादा। उतने ही हिस्सेका नाम है अमरकुण्डा बहार। शिवपुरकी जमीनका परिमाण इधर बहुत कम है, वहाँकी ज्यादा जमीन उत्तरकी तरफ है। कालीपुरके

खेत ज्यादातर गाँवके दक्खिन और पूरबमें ही हैं। शिवकालीपुर नामके हो दो गाँव है, इन दोनोंके बीच महज एक तालाबका व्यवधान है। गाँव कालीपुर ही बड़ा है, उसीमें लोगोंकी संख्या ज्यादा है। श्री हरि, देबू आदि सभी वहीं रहते हैं।

शिवपुर गाँव बहुत पहले एक छोटा सा टोला था। तब, यानी आजसे लगभग अस्सी-नब्बे साल पहले, वहाँ एक विचित्र वर्गके लोग बसते थे। अपनेको वे लोग 'देवलचापी' कहते थे। वे लोग स्वयं खेती नहीं करते थे। शिवकालीपुर के बूढ़े शिवकी सेवा-पूजाका भार उन्हींपर था। अब उस वर्गका कोई भी नहीं रह गया है। ज्यादातर लोग मर खप गये। यहाँसे पाँचेक कोस दूरके रत्नेश्वर और आठ कोसके फासलेपर जलेश्वर गाँवमें उसी नामके दो शिव हैं जिनके सेवायत वंशानुक्रमसे अपनी जातिगोष्ठीके लोगोंके साथ वे रह रहे हैं। चूँकि शिवके भक्त देवलोंकी आबादी थी, इसलिए टोलेका नाम शिवपुर था। उनके चले जानेके बाद कालीपुरके चौधरियोंने गाँवके जमींदारी हक खरीद लिये और शिवपुरमें ही आ बसे। भाई-बन्धु और प्रजासे दूर रहनेके लिए ही उन्होंने यह बन्दोबस्त किया था। चौधरी लोगोंने ही शिवपुरको एक अलग मौजा बनाया था। उन लोगोंकी अवनतिसे फिर शिवपुर बुझ-सा आया है।

कहते हैं—उत्तर पश्चिमवाले बहारमें लक्ष्मी नहीं बसती। गाँवके दक्खिन पूरबके जिस हिस्सेमें खेती होती है, उसपर शायद उनकी अपार दया है। कमसे कम बड़े-बूढ़े तो यही कहते हैं। उत्तर और पश्चिमकी बहार गाँवसे ऊँची है। ज्यादातर दक्खिन और पूरबकी ओर वह ढालवा ही होती चली गयी है। लिहाजा जो जमीन दक्खिन पूरबकी तरफ है, गाँवका सारा पानी उन्हींमें गिरता है। गाँवके पानीकी उपजाऊ शक्ति काफी होती है। इसके सिवा गाँवके पोखरा के पानीको [illegible] हीं लाना सुविधा मिलती है। यही कारण है कि शिवपुर और कालीपुर गाँवके पास पास होनेके बावजूद दोनोंकी जमीनके मूल्य और महत्त्वमें बड़ा फर्क है। इसलिए कालीपुरके लोगोंका गुमान शिवपुरके लोग बहुत बरदाश्त करते हैं। शिवपुरके चौधरी लोग कभी उनके जमींदार थे, उस समय कालीपुरको शिवपुरका मालिकाना सहना पड़ा है। आज कालीपुरका जो अहंकार है, बहुत हद तक वह इसकी भी प्रतिक्रिया है।

द्वारका चौधरी उसी खानदानका है। चौधरी लोगोंकी समृद्धि बहुत पहले-की बात है। द्वारका चौधरीके एक पुश्त पहले ही सम्मान-समृद्धिका भण्डार रीत चुका। चौधरियोंकी आभिजात्यका कोई मान भी नहीं। वे बातें अब वह भूल चुका है। इस इलाकेके खेतिहरोंसे वह समानताके भावसे मिलता-जुलता है। साथ

बठकर तमाखू पीता है, सुख-दु खकी बातें करता है। लेकिन चौधरीकी बातचीत-के ढग और सुरमें कुछ स्वतत्रता ह। चौधरी बोलता बहुत कम ह और जो भी बोलता ह, वह—बहुत धीमे और धीरजसे। कोई प्रतिवाद करता तो चौधरी फिर उसका प्रतिवाद नही करता। कभी प्रतिवादीकी बात सक्षेपमें मान भी लेता कभी चुप लगा जाता और कभी बल्का तरह सभासे उठकर चला आता। मतलब कि अपने अवस्यातरमें चौधरी शात भावसे ही जीवन बिताता आ रहा ह।

बूढा द्वारका चौधरी सबेरे ही छाता लगाये, हाथम बासकी लाठी लिये कालीपुरके दक्खिनकी बेहारके खेतोंमें रबी फसलकी जुगत देखनेको निकला था। कालीपुरकी जमींदारीका हक्क न होते हुए भी मोटी जोत अभीतक थी। कालीपुरके दक्खिनमें ही ह अमरकुण्डा बहार। यहाकी फसल कभी मरती नही—सूखा नही पडता कभी। बहारके ऊपर झरनोंके दो बडे कुण्ड ह। एक गहरे लाल-धुधले कुण्डसे नालेकी राह लगातार पानी बहता रहता ह। कुण्ड सदा लबालब भरा रहता ह। कभी नही सूखता। अमरकुण्डा बहारके माथेके ये दोना कुण्ड मानो धरती माताकी छातीसे बहनेवाली दूधकी धारा हो। पानीकी कमी होनेपर बाध बाधकर लोग जिधर चाहते ह, पानी ले जाते ह।

अगहन आते ही हेमन्ती धान पकने लगा, हरा रग पीला होने लगा। अमरकुण्डा बहारके एक छोरसे दूसरे तक, नदीके किनारे तक, धानके हरे-पीले मिले-जुले रगकी निखरी हुई अपूर्व शोभा। धानके प्राचुर्यसे खेतोंकी मेड तक नहीं दिखाई देती कहीं। केवल झरनके दोना ओरके टेढे मेढे बाधको ऊपर ताडके पेड आंका-बांकी पातमें आसमानकी ओर सिर उठाये खडे रहते है। हेमन्तकी सुनहली धूपमें बहार झलमला रही थी। आसमानमें आज भी शरदकी नीलिमा का आभास था। अभीतक धूलका उडना शुरू नहा हुआ। दूर फसलके पार—खेतोंके अतमें नदीके बाधपर सरपतका हरा जगल एक लम्बी हरी दीवार-सा दृश्य था। सिरपर चूना पुते कार्निस-जैसा सफेद फूलोका समृद्ध समारोह

कालीपुरके पश्चिममें सम्भ्रात धनियोंका गाव कनना, वन रेखाके माथेपर सफेद लाल-पीले पक्के मकानोंका ऊपरी हिस्सा दिख रहा था। बिल्कुल खुले मैदानमें स्कूल, अस्पताल, बाबुओंका नाटकघर साफ-साफ दिखाई पड रहा था। कुछ दिनसे बाबुओंने रुपयेमें एक पैसा धमादा बाँध दिया था, रुपया देते समय ही लोगोंको वह भी देना पडता। उन्हीं रुपयोंसे पर्व त्योहारके मौकेपर मुक्ता-

काशी नाटक[1] होते। चौधरीने निश्वास छोड़ा, लम्बा निश्वास। सालभर उस डेढ़ सौ रुपया धर्मादा देना पड़ता था। अमरकुण्डाके बहारमें अभी भी पानी था। इस पानीमें बेहद मछलियाँ होती हैं। मेड़को काटकर पानीके बहावके मुँह-पर टोकरी लगाकर हाड़ी-बाउरी, डोम और मोची औरतें मछली पकड़ रही थीं। बहुत-से लोग खेतोंमें भी घूम रहे थे, जो दिख नहीं रहे थे—केवल धानके पौधोंको चीरकर एक चलती हुई लकीर दिखाई पड़ रही थी जैसे कम गहरे पानीके अन्दरसे मछलीके चले जानेपर पानीके ऊपर एक रेखा खिंच गयी हो। कुछ लोग अपने गाय-गोरुओंके लिए और कुछ लोग बेचकर दो पैसा कमानेके लिए घास काट रहे थे।

अमरकुण्डा बहारके ठीक बीचोबीच एक साफ सुथरी मेड़पर-से जाने आनेका रास्ता। 'साफ सुथरा'से मतलब कि एक आदमी उसपर मजेमें चल सकता है, दो जने थोड़ा कष्टसे। इसी रास्तेसे गाँवके मवेशी चरनेके लिए नदी किनारे जाते हैं। इन दिनों उनके मुँहमें रस्सीका जाल बाँध दिया जाता है कि धान न खा सकें। प्रौढ़ चौधरी जरा निराशाकी हँसी हँसा—इन मवेशियोंके मुँहसे जाल खोलने लायक चरागाह भी न रहा अब।

बाँधके उस पार नदीके चौरपर रबीकी खेतीकी धूम पड़ गयी थी। खेतिहरोंके लिए अवश्य दूसरा उपाय भी न था। अमरकुण्डा बहारकी आधीसे अधिक जमीन कलकत्तेके विभिन्न बाबुओंके कब्जेमें आ चुकी थी। बहुतेरे खेतिहरोंकी जमीन रह ही नहीं गयी थी। उन्हीं लोगोंने पहले नदी किनारेके गोचरमें रबीकी फसल लगाना शुरू कर दिया था। बादमें तो देखा-देखी जन सबने शुरू कर दिया। चौरकी जमीन बेशक बहुत उपजाऊ थी। तमाम बरसात पानीमें डूबे रहनेकी वजहसे भारी मिट्टी जमते जमते मानो सोना हो जाती है। वही सोना पौधोंका शालिग्राम बन जाता। गेहूँ और सरसों बहुत होता सबसे ज्यादा होता चना। उस चौरका नाम ही चनाकुण्ड था। वैसे आजकल आलूकी खेतीका रिवाज ही ज्यादा चल पड़ा था। काफी बड़ा-बड़ा और बहुत ज्यादा आलू उपजता। नदीके उस पार जंक्शनमें आलूका बाजार भी खासा था। कलकत्तेसे महाजन लोग यहीं आलू खरीदनेके लिए आया करते थे। इन कुछ महीनोंके लिए इनमें-से कोई-कोई आढ़त खोले बैठा रहता। आलू बिका नहीं कि रुपया आया। जो बड़े खेतिहर हैं, उन्हें पचास पचास रुपयेका उधार भी मिलता। सबके चलते चौधरीको भी गोचर तोड़कर आलू-गेहूँ बोनेकी सलाह करनी पड़ रही

१ बिना परदेके खेला जानेवाला नाटक।

थी। चारों तरफ़ खड़ी फ़सलके बीच केवल उसके गोचरमें मवेशी चराना नहीं चल सकता। अबूझ-अबोल पशु कब अचानक फ़सलपर टूट पड़ेंगे, इसका भी भला क्या ठिकाना! फिर यह भी तो था कि अमरकुण्डाकी अच्छी बाँगर जमीनमें रबीकी फ़सल असम्भव-सी हो उठी थी। कंकनाके बाबुओंके सारे खेत पड़े रहते हैं, वे रबी-फ़सलका झमेला नहीं झेलना चाहते, न ही खाद-खलीपर रुपया लगानेको तैयार थे। लिहाजा धान काट लेनेके बादसे उनकी जमीन पड़ी ही रहती। जैसे अधिकांश जमीनमें खेती होनेपर पास ही पड़ी थोड़ी-सी परती जमीनमें गाय-गोरू चराना मुश्किल होता है, वैसे ही अधिकांश जमीन परती पड़ी हो, तो वहाँपर थोड़ी-सी जमीनमें खेती करना भी कठिन होता है। गाय-बकरीको तो फिर भी रोका जा सकता है, लेकिन आदमी और बन्दरसे पार पाना मुश्किल है। खाकर ही खतम कर देंगे सब।

उफ़, कैसा काल-युद्ध किया अँगरेज़ोंने जर्मनसे। सब बण्टाढार कर दिया। दुख-दुर्दशा तो सदा होती है लेकिन इस युद्धके बाद जैसी हुई वैसी कभी नहीं हुई। एक जोड़ा धोतीकी क़ीमत छह-सात रुपये दवाकी क़ीमत तो आग ही हो गया—कपड़ा और रुई इनका दाम चौगुना बढ़ गया। धान-चावलकी क़ीमत भी लगभग दुगना बढ़ी लेकिन कपड़ेकी बढ़ी तीन गुना। जमीनका दाम भी दुगना हो गया। दाम जो बढ़ा सो इन अभागे मूर्खोंने अपने खेत कंकनाके बाबुओंके पेटमें डाल दिये। अब आज अफ़सोस करनेसे भला क्या होगा। जायें, जहन्नुममें जायें अभागे। ओह वही सन् १९१४ में शुरू हुई लड़ाई और ख़तम हुई सन् '१८ में। आज सन् '२२ है, मगर फिर भी आग नहीं बुझी बाज़ारकी। कंकनाके बाबू लोग मुट्ठा-मुट्ठी धूल सोनेके भाव बेचकर ढेर रुपये ला रहे हैं और काफ़ी दाम देकर कालीपुरकी जमीन ख़रीद रहे हैं। धूल नहीं तो और क्या! मिट्टी काटनेसे कोयला निकलता है वही कोयला बेचकर तो पैसा आता है। जिस कोयलेकी दर तीन आने चौदह पैसे थी उसी कोयलेका दाम हो गया चौदह आना मन। मरको मारे शाह मदार! इस महँगाईमें पंचायत करके यूनियन बोर्डने टैक्स बढ़ा दिया। पंच बनकर बाबू लोग बन गये कर्ता-धर्ता और तुम सब अब देते रहो टैक्स। टैक्स-वसूलीकी क्या धूम है—चौकीदार-दफ़ादार साथ लिये बग़लमें बही दबाये दुगाई मिसिर जैसे लाट साहब हों।

चौधरी सहसा ही ठिठक गया। कोई ज़ोरसे रो रहा है न? लाठीको बग़लमें दबाया और जैसे धूप बचा रहा हो, माथेपर हाथकी आड़ करके इधर-उधर देखने वह पीछे मुड़कर खड़ा हो गया। हाँ पीछे ही तो—गाँवके कुछ लोग आ रहे हैं, उन्हींमेंसे कोई स्त्री रो रही है जो दिखाई नहीं पड़ती। सामने आ

रहे पुष्पकी आड़में पड़ गयी है वह। हाय हाय, गेहूँअन साँपकी तरह वह आदमी औरतको झोंटा पकड़कर पीट रहा है। चौधरीने यहींसे शोर मचाया, "अरे रे, ऐ!"

पता नहीं उन लोगोंने यह सुना भी या नहीं। लेकिन वह औरत चुप हो गयी, मरदने भी उसे छोड़ दिया। चौधरी जरा देर उधर देखता हुआ खड़ा रहा फिर चल पड़ा। लोग नीच और क्षुद्र होते गये हैं! लाज शरम अब-लौट इह कभी न आयेगी। कम्बख्तको पता नहीं कि औरतका झोंटा पकड़नेसे शक्ति छीजती है। रावण-जैसा आदमी जिसके दस सिर, बीस हाथ थे एक लाख लड़के और एक सौ लाख पोते थे वह रावण भी सीताका झोंटा पकड़नेमें निरवंस हो गया!

चौधरी बाँधके करीब पहुँचा। पीछेसे पाँवकी आहट सुन मुड़कर देखा, पातू मोची जंगली सूअर-जैसा हुन् हुन् करता दौड़ता चला आ रहा है। उससे कुछ ही दूर पीछे एक औरत दौड़ी आ रही है। शायद पातूकी स्त्री है। वह अभी भी रो रही है और रह रहकर आँख पोंछ रही है। चौधरी जरा शंकित हो उठा। जिस ढंगसे पातू आ रहा है उसके लिए रास्ता छोड़ दे—और दूसरा कोई उपाय नहीं है। क्योंकि उससे आगे चल सके ऐसी ताकत तो चौधरीमें थी नहीं। लेकिन पातूने खुद ही अपनी राह बना ली। वह बगलके खेतमें उतर गया और धानके बीचसे चलने लगा। अचानक वह ठिठका और चौधरीको प्रणाम करके बोला 'जरा देख लीजिए चौधरीजी देखिए!'

पातूकी तरफ ताककर चौधरी सिहर उठा। माथेपर ताजा चोट थी, सारा चेहरा लहू-लुहान हो रहा था।

'ओ! बाप रे! खून कर डाला!' पातूकी स्त्री जोरसे रो पड़ी।

'ऐ!' पातू गरजा— 'फिर शोर मचाने लगी?'

पातूकी स्त्रीकी आवाज तुरत धीमी पड़ गयी। वह चुपचाप रोने लगी, 'देखिए जरा गरीबकी क्या गत कर दी है! आप लोग ही इसका इंसाफ करें।'

पातूने उलटकर अपनी पीठ दिखायी। कहा 'जरा पीठ देख लीजिए।' उसकी पीठपर बेरहम मारसे उग आयी लम्बी लकीरें खूनसे दगदगा रही थीं। लकीर भी एक दो नहीं सारी पीठ चोटके निशानोंसे छलनी हो रही थी।

अकपट ममता और सहानुभूतिसे चौधरी विचलित हो उठा। आवेग विगलित स्वरमें ही बोला 'हाय यह किसने किया रे पातू?'

'जी, उसी छिरू पालने।' मारे गुस्सेके भनभनाता हुआ, सवालसे पहले

ही पातूने जवाब दिया, "न बोल न चाल, और आते ही रस्सीकी मारसे क्या हाल कर दिया, देखिए।" उसने फिरसे अपनी छलनी हुई पीठको चौधरीकी ओर फेर दिया। उसके बाद फिर सामने घूमकर बोला, "जब रस्सी थाम ली तो एक फराठेसे कपाल ही फोड दिया।"

छिरू पाल—श्रीहरि घाप? यकीन न करनेकी कोई बात ही नहीं थी। उफ बडी निदयतासे पीटा है। चौधरीकी आखोंमें अचानक पानी आ गया। कभी-कभी परायी दु ख-दुदशासे आदमी इतना विचलित होता है कि वह अपने सुख-दु खसे पर पीडितके [illegible]राको मानो अपने देह मनसे प्रत्यक्ष अनुभव करता है। ऐसी ही दशामें पहुँचकर चौधरी गीली आखों पातूको देखता रहा उसके पोपले मुँहके शिथिल होंठ अजीब ढगसे थर थर कापने लगे।

पातूने कहा, "म तभी मण्डलके पास गया। मगर किसीने चूँ तक न की। समरथको सौ खून माफ होता है न!"

पातूकी स्त्री भी धीरे धीरे रोती हुई कहने लगी, "उस कलमुहेके लिए बाबू "

पातूने डाटा—"ऐ, फिर घन घन करती है।"

चौधरीने अपनेको सँभालकर पूछा, 'आखिर इस बेरहमीसे उसने मारा क्यो? तुमने ऐसा क्या कसूर किया था कि "

बीचम ही पातूने शिकायत करते हुए कहा, "उस दिन चण्डीमण्डपकी बठकमें जो म कह रहा था वह तो सुना नही, उठकर चले गये थे। मुझे गाव भरके लोगोंके लिए नाधा जोता जुटाना पडता है लेकिन उसके बदले कुछ भी नही मिलता। जब लुहारने आवाज़ उठायी तो मने भी कहा कि अब मुझसे भी काम न होगा। कल पालका मजूरा नाधा जोता लेने आया था मालिकको। मैने कह दिया, जाकर पसा ले आओ। बस, कहना भर था कि आज आया और, न कुछ कहना न सुनना, बस रस्सी लेकर मारना शुरू कर दिया।'

चौधरी चुप रहा। पातूकी स्त्री बार बार गरदन हिलाकर बिलखती हुई बोली, 'नही बाबूजी, नही—"

पातूने उसकी बातको ढँकते हुए कहा, "आखिर मेरा गुजारा कसे हो? इसका कुछ सुधार न करके आप लोग इसी तरह मारेंगे?"

चौधरीने खखारकर गलेको साफ़ करते हुए कहा, "श्रीहरिने तुम्हें इस तरहसे मारकर बडा अन्याय किया है, कसूर किया है, यह बात हज़ार बार, लाख बार सच है। लेकिन नाधा जोतनेकी बात तुम्हें नही मालूम भया। गावमें मर्यादाका जो ममान है, तुम लोग उसका लाभ लेते हो। बदलेमे नाधा-जोता देना पडता है

सबको। ऐसा ही नियम ह। मवेशी मरते ह तो तुम उनका चमडा लेते हो, हड्डी बेचते हो ।" माँस ले जानेकी बात चौधरी घृणासे न कह सका।

पातू अचम्भेमें आ गया—"मवेशियाके मसानके बदले ?"

'हाँ। तुम्हारे बडे-बूढे तो रहे नहो उन्हें सब पता था।"

'महज इसीलिए नहीं बाबूजी वह कलमुँहा पापी ।" पातूकीपत्नी बोली।

अबकी पातूने भी कहा जी सिफ नाघा-जोताकी ही तो बात नहीं। आप भले लोग अगर हमारे घरकी औरतोपर नजर डालें, तो हम कहाँ जायें, आप ही बतायें ?'

धमपरायण बूढे चौधरीके मुँहसे निकल पडा—"हरे राम! हरे राम! राधाकृष्ण! राधाकृष्ण!"

पातूने कहा जी राम राम नही चौधरीजी। मेरी बहन दुरगी जरा शतान ह। शादी कर दी, मगर सुसरालम भाग आयी ह। बस यह छिरू पाल उसीपर आँख गडाये ह। कोई बहाना बनाकर टालेम आ जाता ह और घरके अदर बठता ह। और मेरी मा—उस हरामजादीको तो आप जानते ही ह। उसका शुरूमे आखिर तक एक ही तरहसे बीता ह। वह छिरूको निठलाती ह फुसफुस करती ह। घरमें आखिर मेरी भी घरनी ह। मैंने अपनी बीबी, माँ और दुरगी का एकाध थपेडा लगाया था। उसे भी कहा था और खूब कसकर हो कहा था कि चौधरीजी जाति बिरादरी मेरी निन्दा करते ह आप यहाँ मत आया करें। असली चिढ तो इसकी थी।'

चौधरीके दोनो हाथ लागे और छातीम अटके थे। कानमे उगली डालनेका उपाय नही था। घृणासे थूक फेंककर मुह फेरते हुए कहा, 'हाय राम, अब रहने दो पातू रहने दो। सबरे पहर ये सब बातें मुझे मत सुनाओ। म कर भी क्या सकता हूँ। राधे राधे।'

लेकिन पातू नाराज हो गया। कुछ बोले बिना वह हनहनाते हुए आगे बढ गया। उसके पीछे-पीछे उसकी स्त्री भी दौडने लगी। पतिके चुप होनेका लाभ उठाकर उसने फिर शुरू किया— और हरामजादा बनती कसी ह! भाईके दुःखम बठी रो रही ह 'हाय राम म क्या करू ?

पातू बिजलीकी गतिसे पलटा। उसकी स्त्री डरसे अस्फुट चीत्कार कर उठी— एँ।'

पातू झुँझलाकर बोला, 'तू मत चीख बाबा। तुझसे कुछ नही कह रहा, तू चुप हो जा। और धक्का देकर स्त्रीको हटाते हुए वह लौट रहे चौधरी के सामने आ खडा हुआ। कहा = अच्छा चौधरीजी अलीपुरके रहमत शेखन

कचनामें रमेंदर चटर्जीके साथ मवेशी ममानको दखल किया है, उसका आप लोग क्या कर रहे है ?"

चकित होकर चौधरीने कहा—"ऐं ?"

'जी हाँ। हम सब उसके सिवाय और किसीको चमडा नही दे सकते। वह कहता है, जमींदारने हमें अधिकार दे दिया है। खाल छुडानेकी मजूरी और नमकका दाम—बस, इससे दो चार आना भी ज्यादा वह नही देता, जबकि चमडेका दाम इस समय आग हो रहा है।"

पानूकी ओर ताककर चौधरीने पूछा, "यह सच है ?" और पानू बोला— "जी। गलत हो तो पचास जूता कबूल। नाक मलूँगा।"

"तो—' चौधरीने गरदन हिलाकर कहा—"तो तुम हजार बार कह सकते हो अपनी बात। गाववालाको तुम्हें पैसा देना ही पडेगा। लेकिन जमीदारके गुमाश्तेसे पूछा है ?'

पानूने कहा, "गुमाश्ता क्या, मै खुद जमीन्दारके ही पास जाऊँगा। डाक्टर घोषने तो थाने जानेको कहा है, मगर थाना क्या, पहले जमीदारके ही पास जाऊँगा। दोना बाताका फैसला हो जाय। देखूँ जमीन्दार क्या कहता है।"

वह फिर लौटा और मेडवाली सीधी राहको छोडकर दक्खिनकी तरफकी एक मेड पकडकर कचनाकी ओर चल पडा। बूढा चौधरी ठुकठुक करके मन्दिर चौरकी तरफ चला। नदी पारके जक्शनके कारखानाकी चिमनियां अब साफ झलकने लगी थी। चौधरी अब पार तक आ पहुँचा। हक्का-बक्का हो गया बुड्ढा। सब तो सब, रमेन्द्र चटर्जी अन्तमे चमडा बेचकर धनी बनेगा! छि छि, ब्राह्मणका लडका है!

पाँच

कहानीमें ऐसा सुना जाता है कि कुम्भ भाईके मामलेमें यमदूत रामके बदले श्यामको ले जाता है, श्यामके बदले आकर पकड लेता है रामको। उनका अनुकरण करते हुए ही बातको जरा बढाकर आदमी दखल बुद्धिके नाते रामके दाव करनेपर भी श्यामका ही लेकर खीचतान करता है। पुलिस भी आदमी है, इसलिए इस मामलेमें भी वह अपवाद नही है। दूसरे

ही दिन पुलिसकी जाँच-पड़ताल हो गयी। अनिरुद्धने तो छिरू पालपर सन्देह करके नालिश की थी, लेकिन पुलिसने आकर बहार जोतनेवाले सतीश बाउरीके घरकी खानातलाशी ली और तहस-नहस करके उसे खींच लायी। घण्टा उसमें पूछताछ करके उसके नाकों दम कर दिया और अन्तमें उसे छोड़ भी दिया। हाँ छिरू पालके घरके खलिहानको भी एक बार घूम घामकर देखा पुलिसने—लेकिन वहाँ दो बीघा ज़मीनके अधपके धानका एक तिनका भी न मिला।

पुलिस आकर गाँवके चण्डीमण्डपम ही बैठी थी। गाँवके मुखिया मातबर लोग भी चन्द्रमण्डलके नक्षत्र-सभासदोंकी तरह उसके चारों तरफ घिरकर बैठे जित-से फुसफुसाकर आपसमें बातें कर रहे थे। छिरू पाल पुलिसके बहुत करीब बैठा था—गम्भीर भावसे। कान तक फैले हुए उसके मुख गह्वरके पासके दोनों जबड़े सख्त होकर ऊँचे हो आये थे। अनिरुद्ध सामने बैठा सिर झुकाये कितना क्या सोच रहा था। जाँच खतम करके पुलिस उठी अनिरुद्ध भी उठा। बिना देखे भी वह साफ अनुभव कर रहा था कि सारे गाँवके लोग हिंसा भरी तीखी निगाहोंसे उसे देख रहे हैं। अप्रत्यक्ष यन्त्रणा सही जाती है, निष्पाप होकर आदमीको सहना भी पड़ता है। लेकिन उसका भावी इंगित मनुष्यके लिए असह्य होता है। वह पुलिसके पीछे पीछे ही चला आया।

पुलिसके जाते ही चण्डीमण्डपम बड़ा ही हल्ला शुरू हो गया। उपस्थित लोगोंमें से हरेक अपनी अपनी कहने लगा, जब यह लगा कि कोई किसीकी नहीं सुन रहा है तो हरेकने अपनी आवाज़ भरसक ऊँची कर दी। यह सच है कि सद्गोप सम्प्रदायका कोई भी श्रीहरि घोषको अच्छी नज़रसे नहीं देखता, किन्तु अनिरुद्ध लुहारने पुलिसको खबर देकर उसके घरकी तलाशी करवा दी, घरमें सिपाहियोंको घुसा दिया तो इस अपमानको सम्प्रदायगत मानकर वे उत्तेजित हो उठे। खास करके उस दिन इसलिए कि अनिरुद्धने समाजकी उपेक्षा की, उस उद्धत अपराधकी नींवपर घटी घटना भारी बड़ी हो गयी।

देवनाथ घोषकी आवाज़ जैसी तीखी थी उतनी ही ऊँची थी। गाँवके सारे शोरगुलके ऊपर उसकी आवाज़ सुनाई पड़ती थी। खतिहराके घरोंमें वह अति क्रम हो मानो। देवनाथ तेज बुद्धिका युवक है। अपने छात्र जीवनमें वह तेज विद्यार्थी रहा है। लेकिन पैसोंकी कमी और घरकी प्रतिकूल परिस्थितिसे उसे प्रवेशिकामें ही पढ़ना छोड़ना पड़ा। तभी वह गाँवकी ही पाठशालामें अध्यापकी करता है। उसने ग्राम जीवनकी व्यवस्था शृंखलाके बहुत-से तथ्य कौतूहलसे छान बीन करके जाने हैं। वह कह रहा था लुहार बढ़ई नाई—ये सब काम न करनेकी कहें तो यह नहीं हो सकता। उन्हें तो काम करना ही पड़ेगा।"

श्रीहरि वैसे ही गम्भीर होकर दाँतपर दाँत दबाये बैठा था। बात यहाँ-तक आयेगी, वह यह नहीं सोच पाया था। और उधर श्रीहरिके खलिहानमें सूखनेके लिए फैलाये गये धानको पाँवमें उलटते-पलटते हुए श्रीहरिकी माँ अनिरुद्धको भद्दी गालियाँ बक रही थी, आक्रोशसे कठोर शाप दे रही थी।

उत्कण्ठित दृष्टिसे राहकी ओर ताकती हुई पद्म दरवाजेपर ही खड़ी थी। थाना-पुलिसका उसे बड़ा डर लगता। छिरूकी माँकी भद्दी गाली और कठोर शाप यहाँसे साफ सुनाई पड़ रहा था। पद्म भी एक ही बकवासी है—गाली सराप वह भी बहुत जानती है, वह किसीका नाम लिये बिना ही उसकी अवस्थासे मिलाते हुए ऐसे सराप दे सकती है कि जिसे देती है, शब्दवेधी बाणकी तरह उस व्यक्तिके ठीक कलेजेमें जाकर बिंध जाता है। लेकिन आज ऐसी उत्कण्ठामें गाली-सराप उसकी जबानपर नहीं आ रहा था। इतनेमें अनिरुद्ध आया और घरके अन्दर गया। उसे देखकर गहरे आश्वासके साथ उसने एक लम्बी साँस फेंकी। दूसरे ही क्षण आँख मुँहको दमकाकर बोली, "सुनते हो, अब मैं भी गाली-गलौज करूँगी।"

अनिरुद्धकी हालत ठीक जाम्बकी धूप जैसी अनुत्तप्त, स्थिर और सख्त थी। वैसा रूखे गलेसे कहा 'न, गाली देनेकी जरूरत नहीं। अन्दर चल।'

पद्म अन्दर जाते जाते बोली 'अन्दर क्या जाऊँ, तुम तो निरञ्जन हो बैठे हो—गालियाँ सुनाई नहीं पड़ता तुम्हें ?"

"तो फिर तू भी गाली दे, गला फाड़कर चिल्ला जाकर।"

पद्म भुनभुनाती हुई भण्डार घरमें जाकर तेल ले आयी। बोली, "सुन नहीं रहे हो, क्या दुर्दशा कर रही है मेरी ?" पद्मके कोई बाल-बच्चा न था। इसीलिए छिरूकी माँ अनिरुद्धका मौन मनाती हुई पदमके लिए भविष्यमें घणित पत्नीका गन्दा उल्लेख करती हुई सब सराप रही थी। पदमने तेलकी कटोरी बगलमें रखी। पतिका एक हाथ खींचकर उसमें तेल लगाने लगी। लम्बा और सख्त हाथ। आगकी आँचसे सारे रोएँ जलकर मुड़े हुए दानों-सरीखे रूखे हो गये थे। सिर्फ हाथ ही नहीं, हाथ-पाँव-छाती—यानी सामनेका सारे ही पुट्ठे भिलावा रगड़ा जला हुआ था। तेल मलते हुए पद्म बोली, "बाप रे, हाथ है यह कि जैसे काठ।"

अनिरुद्धने इसपर कान नहीं दिया। कहा, 'मेरी गुप्तीको निकालकर जरा अच्छी तरहसे साफ करके रखना तो।"

पद्म पतिके चेहरेकी तरफ ताकती हुई बोली, "ठीक है मैंने उसे पहले ही साफ़ करके धार चढ़ाकर रखा है, अपने गलेमें मारकर किसी दिन दो टुकड़े होकर पड़ी रहूँगी मैं।"

"क्या ?"

"तुम खून फसाद करके फाँसी चढ़ोगे और मैं क्या हाँडीका भाग डोमकी दुगत भोगनेके लिए जिन्दा रहूँगी ?

अनिरुद्धने बातका कोई जवाब नहीं दिया। केवल हुँ हुँ कहा। यानी पद्मके हाँडीका भाग डोमकी दुर्गतकी सम्भावनाको उसने सोचकर नहीं देखा, वरना छिरूको घायल करके जेल जाने या उसका खून करके फाँसी चढ़नेमें अभी उसे कोई खास आपत्ति नहीं थी।

मैंने मना किया कि थाना पुलिस न करो। पर तुमने तो सुना ही नहीं। आखिर हुआ क्या ? क्या किया पुलिसने ? केवल गाववालोंसे झगड़ा बढ़ गया। और जब कहती हूँ कि मैं गाली दूँगी तो बाघकी तरह गुर्रा उठते हो, 'न, गाली मत दे।"

घुटे क्रोधसे अनिरुद्ध खीजकर असहिष्णु हो उठा था। लेकिन कोई बड़ी बात कहनेकी न तो हिम्मत हुई उसे, न इच्छा ही। यों पद्मके लिए उसे बड़ी सावधानीसे चलना पड़ता। महज मामूली-सी बातपर वह निरी बच्चा-सी मान करके सिर पीटकर, रो धोकर अनरथ कर बैठती और कभी वो जस बड़ी-बूढ़ियाँ घरारती लड़कियाँ रूठना झगड़ना सहती है वह हँसती हुई अनिरुद्धकी ज्यादतीका सह लेता। अनिरुद्धसे पिटकर भी वह उसी क्षण खिलखिलाकर हँस पड़ता। यह कब किधर जायगी अनिरुद्ध बहुत-कुछ समझ सकता है। आजकी बातमें लाट्टा सुर फूट रहा था। यह समझकर, खीझके बावजूद अन्तमें अनिरुद्ध ने अपनेको रोक लिया। उसने कुछ न कहा। तेल लगाये हुए अपने परका खोंच कर पूछा अँगोछा कहाँ है ?'

लेकिन पद्म तो रूठी थी। वह कुछ बोली नहीं, बिजलीकी गतिसे मुँह उठाकर अजीब निगाहसे पतिकी ओर ताका और तुरन्त तेलकी कटोरी उठाकर चली गयी।

खीझसे भवें तानकर अनिरुद्धने कहा, जरा समयका भी तो खयाल किया होता ? छोह कहाँ गयी, देख जरा। तीन बज रहा है।'

गम्भीर हँसकर चकित दृष्टिसे आँगनकी छाहको गौरसे देखकर पद्म अँगोछा लाकर अनिरुद्धको देते हुए बोली बैठो। मैं पानी ला देती हूँ घर हो रहा लो।"

अँगोछेको कन्धेपर डालकर वह बोला, 'इसमें तो देर हो जायेगा पद्म।

मैं गया नहीं कि आया। पनडोडी सी डुबकी लगाकर लौट आऊँगा। तू खाना परस।" और वह जल्दीसे निकल गया।

खाना परसने वह गयी तो रसोईघरकी जंजीरपर हाथ रखकर ठिठक गयी। दाल-तरकारी सब तो बर्फ हो गयी। बाबूको रुचेगी क्या! बाबू नहीं, नवाब! जितनी आमदनी, उतना खरच! अवश्य लुहार, कुम्हार, नाई सुनारकी खर्चेके लिए सभमें बदनामी है मगर अनिरुद्ध जैसा शाह-खर्च पदमने किसीको नहीं देखा। नदी-पारमें लुहारखाना करनेके बाद तो खरचकी सनक और बढ़ गयी है। रुपये सेरकी हिल्सा मछली इस गाँवमें किसने खायी है? खाना गरम न रहे तो नवाब छूकर ही उठ जायेगा। पिछवाड़ेकी गड़हीके किनारे पद्मने क्वारके आरम्भमें ही प्यातके कुछ पौधे लगा दिये थे, वे काफी फलकर बड़े हो गये थे। उसका हरा साग भून दूँ तो कैसा रहे? वह खिड़कीकी ओर बढ़ी ही थी कि उसे लगा, दरवाजेके पास कोई खड़ा है। उसके सफेद कपड़ेका कुछ हिस्सा दिखाई दे रहा था। वह सिहर उठी। उसे छिरू पालकी घरवाली घिनौनी हँसी याद आयी। वह दो एक डग पीछे हटकर खड़ी हो गयी। पूछा, "कौन? कौन खड़ा है?"

आवाज पाकर आगन्तुक चकित गतिसे अन्दर आ गया। पदमको भरोसा हुआ। वह मरद नहीं, औरत थी। लेकिन दूसरे ही क्षण वह दंग रह गयी यह तो छिरू पालकी बीवी है। तीस-बत्तीससे ज्यादाकी उम्र न होगी। कभी सुन्दरी रही थी, अब असमयमें बुढ़ापा आ जानेसे टूट-सी गयी थी। उसकी आखोंमें करुण निवेदन था। बिना भूमिकाके वह दोनों हाथ जोड़कर पद्मसे बोली, 'बहन, लुहार-बहू!"

पद्म कुछ भी न कह सकी। छिरू पालकी स्त्रीको वह खूब अच्छी तरह जानती थी। उतनी अच्छी औरत कम ही होती है। वह कैसे बड़े और भले घर की बेटी है यह भी मालूम था उसे। उसे कितना दुःख है, इसे भी उसने अपनी आँखों देखा है कानों सुना है। छिरू पालको उसने इस पीटते भी देखा है, और छिरूकी माँका गाली गलौज तो यह रोज सुन ही रही है।

छिरूकी स्त्री करीब आयी और जरा झुककर बोली 'मैं तुम्हारे पाँव पकड़ने आयी हूँ बहन।"

पद्म झट पीछे हट गयी—"ना-ना-ना। यह क्या है!'

"बहन, मेरे बेटाको गालियाँ न दो जिसने ऐसा किया है, उसे गाली दो, मैं उसको क्या कहूँ।"

छिरू पालके सात बच्चोंमेंसे केवल दो बच रहे थे। वे भी गुप्त रोगके

जहरसे जर्जर थे—एक बीमार, दूसरा लगभग पंगु।

बच्चावाली स्त्रियोंमें बाकी पदमको एक ईर्ष्या सी है, अवचेतनागत। लेकिन इस वक्त उसकी वह जलन भी गायब हो गयी थी। वह एक दीर्घ निश्वास फेंककर रह गयी।

छिरू पालकी स्त्रीने कहा "तुम लोगोंका बहुत ही नुकसान किया है। खेतिहरकी बेटी हूँ—मैं समझती हूँ। तुम ये रुपये रख लो बहन।" यह कहकर स्तब्ध-सी पद्मके हाथोंमें उसने दस दसके दो नोट दिये और बोली "मैं छिपकर आयी हूँ बहन पता चले तो मेरी गरदन न बचेगी। अब चलती हूँ।" कहकर वह तेजीसे लौट गयी। जाते-जाते दरवाजेके पास वह खड़ी हुई और पलटकर हाथ जोड़ते हुए कहा "मेरे दाना बेटाका कोई कसूर नहीं है बहन, मैं हाथ जोड़ती हूँ।" और तुरंत वह पिछले दरवाजेके उस पार ओझल हो गयी। पदम बेबस और निस्पन्द-सी खड़ी रह गयी।

कुछ ही देर बाद पासमें होते हुए कोलाहलकी चोटसे उसकी वह स्तम्भित दशा दूर हुई। शायद फिर कोई बखेड़ा हुआ। सारे कोलाहलके ऊपर एक आदमी का गला सुनाई पड़ रहा था। पदम उत्कण्ठित हो उठी अनिरुद्ध तो नहीं? न न वह नहीं है। तो? छिरू पाल? पदमने कान लगाकर सुना। न, आवाज छिरू पालकी भी नहीं है। फिर? वह तेजीसे बाहरी दरवाजेके सामने रास्तेपर जा खड़ी हुई। जब उसने साफ समझा कि यह गला गाँवके एकमात्र ब्राह्मण हरेन्द्र घोषालका है तब वह निश्चिन्त हुई। चेहरेपर थोड़ी व्यंग हँसी भी झलकी। हरेन्द्र घोषालका दिमाग कुछ गड़बड़ है इसमें सन्देह नहीं। गाँवके हर किसीसे होड़ लगाना उसके लिए जरूरी है। छिरू पालने साइकिल खरीदी, तो उसने साइकिल और ग्रामोफोन खरीद लिया जमीन गिरवी रखकर। एक बार मजाकमें ही छिरू पालने यह बात उड़ा दी कि मैं घोड़ा खरीदूँगा तो अपनी शान बचानेके लिए हरेन्द्र घोषालने भी अपनी मंशा जाहिर की कि छिरू पाल घोड़ा खरीदेगा तो मैं हाथी खरीदूँगा। पता नहीं आज उसके सर कौन-सी सनक सवार है! मगर रास्तेमें कोई था भी नहीं कि कुछ पूछे।

ठीक इसी वक्त अनिरुद्ध आता दिखाई पड़ा। करीब आकर अनिरुद्ध पद्म की ओर देखकर जोरसे हँस पड़ा। पद्म बोली, 'हाय राम, हँस क्यों रहे हो?'

हँसते-हँसते अनिरुद्ध प्रायः लोटपोट हो गया।

"अरे, बात बताकर तो कोई हँसता है। आखिर इतना शोरगुल काहेका है? हुआ क्या? हारो ठाकुर चिल्ला क्यों रहा है?"

"ठाकुरको बडे बेमौके फँसाया है। आधी हजामत बना दी है उसके बाद—" बडी मुश्किलसे हँसी रोककर अनिरुद्धने बात पूरी करनी चाही—"तारा हजाम ..." मगर जोरोंकी हँसीसे फिर उसकी बात बन्द हो गयी।

कपडा बदलकर जब वह खाने बैठा, तो किसी तरह अपनी बात पूरी की—"उनकी देखा देखी तारा हजामने भी कह दिया है, धानके बदले तमाम साल सारे गावकी हजामत मुझसे न बनेगी। जिसके जोत-जमीन नही है उससे धान नही मिलता। और जिन्हें है, उनमें-से भी सभी नही देते। लिहाजा धानके बदले उसने नक्दका कारबार शुरू किया है। हारो ठाकुर हजामत बनवाने गया था और ताराने पैसे मागे थे। थोडी बकझकके बाद आखिर पैसा देनेका वादा करके हारो ठाकुर हजामत बनवाने बैठा।'

अनिरुद्धने आगे कहा 'एक तो हजाम यो ही धूर्त, तिसपर तारा हजाम। आधी हजामत बनाकर बोला, ठाकुर, कहा है पैसे? हारोने कहा, कल दूँगा। यह कहना था कि किसमत समेटकर तारा अन्दर चला गया। बोला, बाकी हजामत कल बना दूँगा। बस शोरगुल गाली गलौज इसी बातका है—हिन्दी, फारसी, अँगरेजी। गावके लोग फिर मिले रहे हैं इसके लिए। " प्रबल कौतुकसे अनिरुद्ध फिर हँस उठा। हँसीके आवेगसे उसके मुँहका भात छिटककर सामने तमाम फैल गया।

पद्मको कुछ सफाईकी सनक है। बात यह खलनेवाली थी लेकिन आज वह कुछ भी न बोली। अनिरुद्धके इतना हँसनेपर भी वह जरा न हँसी। अचानक अनिरुद्धने जब यह देखा तो गहरे विस्मयसे पद्मकी ओर ताकते हुए उसने पूछा, 'आज तुझे हुआ क्या है, बता तो सही।'

लम्बा निःश्वास छोडकर वह बोली, 'छिरू पालकी स्त्री घरसे छिपकर यहाँ आयी थी।'

'कौन?' आश्चर्यचकित होकर अनिरुद्धने पूछा।

"अजी, छिरू पालकी स्त्री। ' उसके बाद पद्मने सब कहा और खूँटमें बँधे दोनो नोट दिखाये।

अनिरुद्ध चुप हो रहा।

अनिरुद्धने कुछ न कहा तो पद्मने एक लम्बी उसास ली— अहा मा बाप जी।"

अनिरुद्ध कुछ देर और ठक मा रहा। एकाएक थटककर उठ बैठा मानो

अपनेको खीचकर उठाया हो। बोला, "बाप रे, दुनियाका काम बाकी पड़ा है। खा पीकर अभी डेढ कोस दौड़ना है।"

पदमने कुछ कहा नही। हाथ मुँह धोकर थोडी-सी सौंफ सुपारी मुँहमे डाल, बीडी सुलगाकर हँसते हुए अनिरुद्धने कहा "एक नोट दे तो मुझे।"

भवें सिकोडकर पदमने उसकी ओर देखा। अनिरुद्धने और भी हँसते हुए कहा "पाच रुपयेका लोहा इस्पात लेना होगा। मालके छिरूको रुपया देनेके लिए गाहकके रुपये खर्च कर दिये है, और—"

पदम कुछ बोली नही। एक नोट उसने अनिरुद्धके सामने फेंक दिया।

नोटको उठाते हुए अनिरुद्ध बोला "इसमेसे मैं सिर्फ एक रुपयेसे फूटी पाई ज्यादा नही खर्च करूँगा। तू ही बता कितने दिनोसे नहा पा है?"

पदम तो भी कुछ न बोली। सहसा मानो अनिरुद्धसे उसका मन विरूप हो उठा हो।

छह

हारो घोषालकी आधी हजामत बाकी छोड़नेमे तारा हजामकी रसिकता जितनी भी प्रकट हुई हो, गावके लोगोने हारा घोषालका वह अर्द्धनारीश्वर रूप देखकर पहले हँसते हुए बातको जितना ही हास्ययुक्त क्यो न बनाया हो, उसकी प्रतिक्रिया उतनी ही पचीदा तौरपर गम्भीर हो उठी।

हरीश मण्डल बुजुर्ग ठहरा, उसमे समझ बूझ भी है। उसीने पहले कहा "हँसो मत तुम लोग। यह हँसनेकी बात नही है। इस बार यह भी सोचा है तुम लोगोने कि गावकी हालत क्या हुई है?"

हँसीके आवेगको जरा शान्त करके सब हरीशकी तरफ ताकने लगे। हरीशने गम्भीर होकर कहा "घोर अराजकता है यह।"

भवेश पाल—छिरूका चाचा—आदमी स्थूल है, मगर बुद्धिका मान है उसे। वह भी गम्भीर होकर बोला "बेशक।"

रतनाथ हँसी मजाकमें साथ देनेवाला आदमी नही है, उसने मामलेका अनुमान किया और बोला "मगर इसे आप लोग रोक कैसे सकते है? गाँवमें मेल भी है सबमें? लुहार बढ़ईवाली पचायतमें छिरूने द्वारिका चौधरीका अप

मान किया। चौधरी उठकर चला गया। जगन डॉक्टर तो आये उल्टे उसने अनिरुद्धको उकसा दिया।"

भवेशने दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए कहा "हरिनाम सत्य है। कल्यु सब एक जाति यवन होंगे। यह कुछ झूठ थोड़े ही है भया। इसी तरह धरम सब जायेगा।"

हरीशने कहा "मालूम है, लुटनो दाईने क्या कहा? मेरी पतोहूके यह पूरा समय चल रहा है। इसलिए मैंने कहला भेजा था कि रात बिरात अगर और कहीं जाना हो तो बताकर जाना। इसपर उसने कहा खैर, मैं आऊँगी तो लेकिन बिदाई नकद देनी होगी।"

गहरी चिंतामें विभोर होकर भवेशने कहा, 'हूँ।'

हरीश बोला, "कहावत है गजाके बिना राज्य नाश। बात झूठी नहीं है। अपना जो जमींदार है उसका ना होना-न होना बराबर है।'

देवनाथने कहा "जमींदारको छोड़िए। जमींदार बुरा ही कम है? यह काम जमींदारका तो है नहीं है आप लोगोंका। आप लोग जरा जमकर कर लो पंचायत। सिर झुकाकर सबको आना पड़ेगा। कम नहीं कोई आयेगा ठठ्ठा है। आफत विपद् नहीं है? सब क्या लोहम सिर बाँधकर घर गिरस्ती करते हैं। पहले चौधरीको बुलाइए जगन डाक्टरको बुलाइए। घर सँभालिए। उसके बाद लुहार, बढ़ई मोची, दाइ, धोबी, नाई—इन सबको बुलाइए और सही विचार कीजिए।"

हरीशने सबकी ओर देखकर कहा, "देवनाथ ठीक ही कह रहा है। क्या खयाल है?'

भवेशने कहा, 'हाँ ठीक है।'

नटवर बोला, 'तो यही कीजिए।"

देवनाथके उत्साहका सीमा न रहा। उसने कहा, "आज ही शामको मिलिए। मैं जगन ठीक किए देता हूँ भूस्वामी चालीस बरसकी राशनी देता हूँ, सबका खबर भी कर लेता हूँ। क्या राय है?'

हरीशने फिर सबकी ओर देखकर पूछा, "क्या कहते हैं कहिए?"

"ठीक है। लेकिन तम्बाकू और आगका भी इन्तजाम रखना।"

बहुत दिनोंके बाद रामनाम झनझनाकर चण्डीमण्डप फिरसे गाँवकी बैठक से जम उठा। ताम मार पहले भी यह इसी तरह रोज शामको जगमगा उठता था। विचार हुआ करता, संकीर्तन होता, शतरंज चौपड़ भी चलता। यह

चण्डीमण्डप गावके सलाह मशविरेका केन्द्र था। गावमें किसीके यहाँ कुटुम्ब अतिथि आता तो उसे यहीं बठाया जाता। क्रिया-कर्म, अन्नप्राशन, विवाह, श्राद्ध—सब कुछ यहीं होता था। धूल और कालकी गतिसे लगभग मिटी हुई वसुधाराकी लकीरें आज भी शिवमंदिरकी दीवार और चण्डीमण्डपके पायेमें दिखाई पडती ह। उस समय गावमें निजी बैठक या बाहरी कमरा किसीके पास न था। जगन डाक्टरके पुरखे—जगनके दादाने तो कविराज होकर बाहरी कमरे या बठकखानेकी शुरुआत की थी। शुरूमें वह भी चण्डीमण्डपमें बठकर ही रोगियोंको दवा करता था। उसके बाद माली हालत बदलनेके कारण भी और कुछ कहा-सुनी जमींदारके गुमाश्तेसे भी हो गयी थी, इस लिए भी, कविराजने दवाखाना और बठका वहाँसे हटाकर पान-तम्बाकूकी इफरातसे अपने घर मजलिस जमाकर यहाकी बठकको उखाड दिया था। उसके बाद एक एक करके बहुतोंके घरमें बाहरी कमरेका चलन हुआ। और उनके कारण गाँवमें बहुत सी बठकें जम गयी। कोई अकेले ही रोशनी जलाकर सामनेके अँधेरेको ताकता हुआ चुप बठा रहता। लेकिन फिलहाल जगन डॉक्टर के यहाँकी मजलिस ही ज्यादा जमती। जगनके रूखे ढगके बावजूद रोगी वहाँ जाते। कुछ और भी लोग जाते—अर्द्ध साप्ताहिक पत्रसे खबर सुननेकी उन्माद से। इतनी विरूपता होते हुए भी देवनाथ घोष जाया करता। वही जोर जोरसे अखबार पढ़ता, लोग सुनते। असहयोग आन्दोलन खत्म हुआ, स्वराज पार्टीकी गरमा गरम बातों और समालोचनाओंसे अखबारके स्तम्भ भरे होते। सुननेवालोंके मनमें चौंध जगती, बुझी हुई-सी गतिवाले ग्रामीणोंके लहूमें मानो एक गरम सिहरन-सी होती।

आज देवनाथ ही सबसे कह रहा था। मजलिसका जमानेवाला वही था। बठक शुरू होनेसे पहलेसे ही उसने खूब जमा रखा था। चण्डीमण्डपके बाहर देवस्थलके अँगनाका पुराना मौलसिरी पेड़ गावका षष्ठीथान था। षष्ठी कहकर लोग उसीकी पूजा करते। वहींपर एक मोटी सूखी डाल जलाकर आग सुलगायी गया था। उस आगके चारों ओर गावके कुछ हरिजन बठे थे। द्वारका चौधरी, जगन डाक्टर छिरू पाल तथा और दो चार जने अभी आये नहीं थे।

चारों ओर बत्तियोंवाले झाडकी रोशनीमें चण्डीमण्डपके ऊपरकी ओर ताक कर भगवान कहा जो भी कहो, पर यह खूब रहा है।"

हरीशने भी एक बार चारों तरफ देखकर कहा, लेकिन अब, एक बार इसकी मरम्मत कराना जरूरी है।' और उसने प्रशंसा करते हुए कहा, "जरा

बनावट तो देखो। ओह, रुकड़ी कैसी है।'

देवनाथने कहा यह दलम लिखा क्या है, मालूम है? 'यावच्चन्द्रार्क मेदिनी।' यानी जबतक सूरज, चांद और पृथ्वी रहेगी, तबतक यह रहेगा।'

'सो रहेगा भया। वाह! क्या सूत्र बना है।' भवेश पाल नाहक ही उच्छ्वसित और पुलकित हो उठा।

ठीक इसी समय लाठी ठुकठुकाते हुए द्वारका चौधरीने आकर कहा, "आह, ताकीद तो बड़ी कड़ी पहुँची।'

देवनाथ व्यस्त होकर उठा, जगन डाक्टर और छिन्को बुलानेके लिए फिर दो लोग भेजा। लेकिन जगन डाक्टर नहीं आया। उसने साफ कहला दिया, मुझे समय नहीं है। आँखोंपर ऐनक लगाये वह शायद अखबार पढ़ रहा था। छिन्न भी नहीं आया, उसे बुखार आया है। मगर उसने कहला भेजा है कि पांच जन जो करेंगे, उसीमें मेरी राय है।

छिन्की इस विनयसे देवनाथ चकित रह गया।

छिन्का बात यह निहायत अस्वाभाविक था। विनय तो छिन्को छू भी नहीं गयी। बुखार भी नहीं आया उसे। वह मारे क्रोधके, गढ़ेके भीतर अजगर जैसे चोट खाकर चक्कर काटता है, अपने मनमें ही ऐंठ रहा था। अपने घरके अन्दर बरामदेमें उँकड़ूँ बैठा बड़े हुक्केसे लगातार दम लगाता जा रहा था और अपलक किन्तु सूनी नजरसे आँगनके एक बिन्दुको एकटक देख रहा था। उसके दिमागमें बहुत-सी बातें चक्कर काट रही थीं।

"घरमें आग लगा दूँ तो कैसा रहे?" मन बार-बार चंचल हो उठता।

दूसरे ही क्षण लगता—न! जरा-सी उत्तेजनामें ऐसा कुछ कर बैठनेमें, हो सकता है—"थाय" फिर ऐसे ही झमेलेमें पड़ना पड़े। आज ही जमादारको पचास रुपये देने पड़े। इसके लिए माँ अभीतक बुदबुदाती हुई गाली दे रही है।—मर जा तू मर! इतना गुस्सा है तुझे। जरा भी सब्र नहीं! मूरख चांडाल कहींका! मेरे पचास रुपये निकल गये! तू मेरे कलेजेपर बाँस-बोआई कर दे, जूता जाऊँ मैं!

श्रीहरि उसपर कान नहीं दे रहा था। और दिन होता तो अबतक वह बुढ़ियाका झोंटा पकड़कर आँगनमें पटक देता और बेरहमीसे पीटना शुरू कर देता। लेकिन आज वह बदला चुकानेकी चिन्तामें खो गया है।

अनिरुद्ध रातको नौ-दस बजे उस पारसे लौटता है। अँधेरेमें अचानक हमला—न! साथमें गिरीश बढ़ई भी रहता है! लेकिन दानाको घायल करना भी क्या कठिन है! मेरा दोस्त गरहि भी तो खुशी-खुशी मेरी मदद करेगा।

उसी क्षण वह काँप उठा। कहीं पकड़ा गया तो फाँसी हो जायेगी। उसका यह काँपना इतना स्पष्ट था कि कमजोर नजरवाली उसकी बुढ़िया माँ तकने देख लिया। वह गाली देने लगी— मर जा मुँहजला! नन्हें-नादान-सा चौंकता है!'

श्रीहरिने बड़ी सख्त निगाहसे एक बार माकी तरफ देखा, फिर नजर फेरकर हुक्केपरसे चिलम उतारता हुआ बोला—ऐ! सुनती है! जरा चिलम ताजा कर दे।"

यह उसने अपनी स्त्रीसे कहा। उसकी स्त्री रसोईमें भातकी हाँडीको देखती हुई बैठी थी। पास ही रोशनीमें बड़ा लड़का किताब खोलकर एकटक अपने बापको देख रहा था। दुबला शरीर, दसेक सालका होगा, गलेमें तावीजों का दाम—बड़ी-बड़ी आँखोंकी अजीब स्थिर मूक दृष्टिसे अपने चिंतित बापकी हर हरकतपर गौर कर रहा था। श्रीहरिका छोटा लड़का पंगु सा और गूँगा है। वह भी एक ओर बैठा था। मुँहकी टपकती हुई लारसे छाती भीग रही थी। बड़ा लड़का आया और चिलम ले गया। श्रीहरिने एक बार लड़केकी तरफ देखा। अजीब है लड़का। उसको मार खाकर भी रोता नहीं एकटक देखता रह जाता है उसकी वजहसे अब उसकी माँको भी पीटना कठिन हो गया है। माँका वह सब अगोर रखता है। पीटनेपर जानवर-जैसा खूँखार हो उठता है। उस रोज श्रीहरि जब अपनी स्त्रीको पीट रहा था तो उसने उसकी पीठपर मूड़ गड़ा दी थी। लड़केसे अपनी नजर हटाकर श्रीहरिने स्त्रीको देखा। सूखा-सा शरीर मुखड़ा चूल्हेकी आगकी आभासे लाल हो उठा था। चमड़ेसे लिपटा कंकाल-सा ढाँचा! श्रीहरिने नजर हटा ली।

—हाँ। एक तरीका और है! अनिरुद्ध जब घरमें नहीं रहे तो दीवार फाँदकर घरमें...। श्रीहरिका कलेजा आराम महसूसने लगा। लेकिन लम्बी तगड़ी उस लुहारिनका वह गड़ासा बड़ा तेज है। उसकी नजर ठण्डी लेकिन बड़ी खूँखार है। उस रोज धूपमें छिटकती हुई दाँवकी चमचम छिटकी आँखें चौंधिया गयी थी।

और फिर दुर्गा देखनेमें लुहारिनसे कहीं अच्छी है। जवानीका उभार भी है। रंगकी गोरी और मौज मजेमें खनकती, लेकिन वह बहुतोंके काम आ चुकी है इसलिए उसका अब उतना आकर्षण नहीं रहा छिरुवा। दुर्गाके बड़े भाई

पानूने ज़मीदारोंके पास छिद्दूके नाम नालिश की है। ज़रा भोंदूकी मज़ाल तो देखो! छिद्दूके चेहरेपर उपहासकी व्यंग्य हँसी फूटी। ज़मीदारके बेटेकी सोनेकी करधनी उसके पास गिरवी है। एकाएक श्रीहरि उठ खड़ा हुआ।

श्रीहरिकी स्त्री चिलम भरकर दे गयी। चिलम श्रीहरिका जँची नहीं। दीवारकी कीलमें टँगे कुरतेसे बीड़ा दियासलाई निकालकर वह निकल पड़ा। अँधेरी गलियोंसे होता हुआ वह हरिजन टोलेके पास पहुँचा।

ज़ोरोंका शोर हो रहा था। टोलेके एक छोरपर बहुत दिनोंका पुराना मौलसिरीका पेड़ है वहीं है धर्मराज-स्थान। वहीं रात साँझको उनकी बैठक बैठती। गाना बजाना होता, धातू गीतका अभ्यास चलता और कभी कभी लड़ाई झगड़ा भी होता। आज झगड़ा हो रहा था। श्रीहरि एक पेड़की आड़में खड़ा हो गया और कान लगाकर सुनने लगा।

पानू जोशमें चिल्ला रहा था। दुर्गाका तेज गला सुनाई पड़ रहा था—"भात देनेका भतार नहीं, मुसका मारनेका गुसाईं! भया बन रहे हैं मेरे, भया! तू मारेगा क्या मुझे? मेरे जो जीमें आयेगा वही करूँगी मैं। मेरे पास हज़ार जने आयेंगे, तुझे क्या? तेरा कौन-सा भात खाती हूँ मैं?"

दुर्गाकी माँ भी चीख रही थी। श्रीहरि हँसा—"आग लगाने वालीके लिए चर रहा है।

श्रीहरि पेड़की आड़से निकला और चुपचाप दुर्गाके टोलेकी तरफ बढ़ा। टोला सुनसान था। सभी लोग मौलसिरीके नीचे जा जमे थे। श्रीहरि छिपकर दुर्गाके घरमें घुस गया। घरके सामने एक छोटा-सा आँगन, दो ओर दो कमरे—चहारदीवारी नदारद। एक कमरा दुर्गा और उसकी माँका, दूसरा पानूका। श्रीहरिकी पैनी नज़र पानूके कमरेपर था। वह हताश हुआ। दरवाज़ा बन्द था। बरामदा भी सूना पड़ा था।

एक कुत्ता अचानक भूँकता हुआ भाग गया। शायद वह कब्से चमरेके पास आया था। श्रीहरि मन-ही मन हँसा। एक बार सुलगायी और बारामदेमें उसे पूरी तरह छिपाकर पीते हुए बाहर निकला। पता नहीं, दुर्गाका कबतक इन्तज़ार करना पड़े। फिर आकर गाछकी आड़में खड़ा हो गया।

उधर झगड़ा धीरे धीरे बढ़ता ही गया। श्रीहरिने फिर एक बीड़ी सुलगायी। कुछ देर बाद वह पेड़की आड़से निकला, और जलती हुई बीड़ी पानूके छप्परपर फेंक तेज़ीसे अपने घरकी ओर चला गया। उधर चण्डीमण्डपमें ज़ोरोंकी बहस हो रही थी। श्रीहरि फिर हँसा।

कुछ ही देरमें गाँवके ऊपरका अँधेरा आसमान लाल आनासे भयावना हो

उठा। आकाशके तारे गायब हो गये। चिनगारियाँ उड़-उड़कर ऊपर जाकर बुझने लगीं। रह रहकर पटाखोंकी तरह जलते हुए बाँस आवाजके साथ छिटककर बगीचेमें बिखरने लगे। आग! आग! भयभीत चीत्कार—स्त्री-बच्चोंके रोनेकी आवाजसे शून्यलोककी वायुतरंग मुखर और भारी हो उठी।

पल भरमें ही हरिजनोंका और फिर चण्डीमण्डपकी मजलिस टूट गयी।

सात

अकेले पातूका नहीं, पातूके घरकी आगने फैलकर हरिजन टोलेके सारे घरोंको ही स्वाहा कर दिया। बीचमें बड़े-बड़े पाटाके होनेकी वजहसे दो-तीन घर बच गये। बाकी सारेके सारे बहुत थोड़े ही समयमें राख हो गये। मापके जैसे छोटे और कम ऊँचे घर, बाँसोंकी टाट, ऊपर फूसकी हल्की छौनी। कार्तिकके शुरूमें ही बारिश न होनेके कारण धूपसे व बारूद-जैसे हो रहे थे, आगके छूते ही दहक गये। गाँवके बहुतेरे लोग दौड़ आये, खासकर लड़कोंकी जमात। कोशिश भी उन्होंने भरसक की, लेकिन चूँकि पानी भरनेका साधन नहीं था और जलती हुई सँकरी गलियोंमें खड़े होनेकी जगह नहीं थी, इसलिए कुछ कर नहीं सके। उनका मुखिया था जगन डाक्टर। आग लगनेके समय सेनापतिकी तरह चीखकर आदेश निर्देश देते-देते उसने अपना गला इस कदर चौपट कर लिया था कि आग बुझते-बुझते उसका गला बिल्कुल बैठ गया।

रातमें उन सबको चण्डीमण्डपमें आकर सोनेकी इजाजत दी गयी। किन्तु वे भी गजबके आदमी थे—अपने उन जले हुए मकानोंकी माया छोड़कर वे नहीं आये। तमाम रात वहीं किसी प्रकारसे जगह बनाकर हेमन्तकी मर्ममें खुले आसमानके नीचे बितायी। बच्चे अवश्य सो गये, औरतें गीत सा गुनगुनाकर रोयीं और मरद आपसमें एक दूसरेको दोष देकर अपनी करनीकी शेखी बघारते हुए जले घरकी आगमें चिलम भरकर पीते रहे। लगभग सभी घरोंमें दो एक गाय-बैल, दो चार बकरियाँ हैं, आग लगनेपर लोगोंने उनको खोल दिया था। वे सब किधर-कहाँ चले गये—इस रातमें खोजनेका भी उपाय नहीं था। बत्तख मुर्गे भी थे, उनमेंसे कुछ जल गये। देखनेकी गुंजाइश न थी, लेकिन गन्धसे अन्दाज लग रहा था। जो भागकर बच गये थे, वे इस बीच लौट आये और

अपने अपने मालिकके पास डने फुलाकर सिकुडकर बठ गये। कुछ मिट्टी और दो चार कासा-पीतलके बरतन, फटे कपडोंमें सिली फटी चिटी बन्दूगार कथरियाँ और तकिय, चटाई, मछली मारनेकी पनुही, दो चार कपड—इनमें से कुछ तो जल गये और कुछ राखमें दब गये। जो जितना निकाल पाया था उसे समटे अपने परिवारके घेरेके बीच मानो सबने मिलकर अपनी छातीसे घेरकर रखा था। रातके आखिरी पहरमें सर्दी तेज हो जानेसे सिकुडकर कुछ दरके लिए थकावटकी नीरवतामें वे सोये पडे थे।

सवेरा होने हा जमकर औरतें फिर एक बार शोक प्रकट करनेके लिए रोने लगी। किरण छिटकते ही कमर बांधकर औरत मद मिलकर टोकरीसे उठा उठाकर राखको घूरेमें फेंकते हुए घर द्वार साफ करने लगे। जली लकडीको एक ओर सहेजने लगे—राखके ढेरमें जिसके जो बरतन दबे पड़े थे उन्हें निकालकर अलग रखा। ये सारे काम अभ्यस्त ह उन्हें। घरकी ऐसी दुघटनाएँ उनपर प्राय घटा करती ह। जोरोंकी बारिश होनेसे घरकी जजर छीनी गिर जाती ह। जोरोंका बाँध टूट जानेपर बाढका पानी टालका हुआ देता ह और इनके घर धँस जाते ह। कभी-कभी जलानेके लिए बटोरते हुए सूखे पत्तोकी ढेरीमें जलती हुई बीडीका टुकडा फेंककर गोसे खुद ही आग लगा लेते हैं। दुघटनाके बाद गिरस्तीकी यह शिक्षा उन्ह परम्परासे मिलती रही ह। घर द्वारकी सफाईके बाद भोजनकी समस्या। रातका बासी भात ही उनका सुबहका भोजन होता ह। छोटे बच्चोंको फरवा देते ह। लेकिन भात या फरवी सब कुछ बरबाद हो गया था। बच्चे इतनी ही देरमें रोने चिल्लाने लग थे। लेकिन कोई उपाय नही था। किसी किसी मान तो उनकी पीठपर मुक्का धमाका जमा दिया।— रामसने पटमें जगे आग लगी हो। मर मर जा!

मालिकके यहाँ जाना होगा, तब भोजनका व्यवस्था होगी। ऐसे मौकोंपर मालिक सदा उनकी सहायता करते ह। इस टोलके लगभग सभी खेतिहरोंके यहाँ मजूरी करते ह। या तो बँधा हुआ सालाना वेतन या उपजका हिस्सा मिलता ह। कोई-कोई दाना जून भोजन या उसी हिसाबसे साल भरका धान लेते हैं। छोटे लडके सारे भात खाकर चार धानियोंपर चरवाही करते ह। उनमे कुछ बड लडक आठ आनेसे एक रुपया तक माहवार पाते ह। उन्हें धान भी ज्यादा मिलता ह। बयस्क लोग उपजका एक तिहाईपर खेतोंमें मजदूरी करते हैं। मालिक खेतोंसे दिया अनाज देकर इनकी गिरस्ती चला देते ह और फसल तयार होनेपर उनके हिस्सेके धान सूद समेत काट लेते ह। सूदकी दर होती ह मन पीछे पचीस या तीस। जिस साल सूखा होता ह और कर्ज अदा नहीं

हो पाता तो असल सूद जोड़कर फिर उसका सूद चलता है। इस तरीकेमें उन्हें कोई अन्याय नहीं लगता बल्कि जीमें कृतज्ञताका भाव ही रखते हैं। आपद विपदमें मालिक मदद कर देते हैं यही उनकी बहुत बड़ी दया है। मालिककी उसी दयाके भरोसे वे भोजनकी चिन्तामें उतने व्याकुल नहीं हो रहे थे। औरतें भी मालिकके घर साँझ विहान बरतन बासन करती, झाड़ू बुहारू करती। उनके मालिकाने भी कुछ मिलेगा। इनके सिवा थोड़ा-बहुत दूधका बकाया है। लेकिन वह बकाया गाँवमें नहीं है। खेतिहरके गाँवमें घर घर दूध होता है। हरिजन लोग अपना दूध कंकना गाँवमें ले जाकर बेचते हैं। वहीं उपले भी बिकते हैं।

लेकिन पातूको इस सबपर भरोसा नहीं था। वह जातका बजनिया या मोची है। सेवकाईमें उसे कुछ ज़मीन मिली है। उसका काम है गाँवके सरकारी शिव मन्दिर, कालीमन्दिर और बगलके गाँवके चण्डीमण्डपमें रोज ढाक बजाना। उसीके लिए सालमें देवोत्तर जायदादका कुछ धान वह दादाके ज़मानेसे ही पाता है। गुन्ने दो बैल थे उसके। उनसे वह कंकनाके बाबूकी कुछ ज़मीन बटाईमें जोतता-खाता। इसके सिवा मरे हुए मवेशीकी खाल बेचा करता था। सुख दुखमें वही लोग दो चार रुपयोंका उधार देते थे। लेकिन हालमें ज़मींदारने उसकी भी बन्दोबस्ती कर दी लिहाज़ा यह आमदनी उसकी बहुत घट गयी थी। मेहनत मजूरी यानी मेहनतानेमें तीन चार आनेसे पाई भी ज़्यादा नहीं मिलती। इसी बातपर चमटोलालोंसे मनमुटाव हुआ है। अब भला वे क्या मदद करने लगे? बटाईमें जिस भले आदमीकी ज़मीन वह जोतता है, वह कुछ दे सकता है। मगर कागज लिखवाये बिना नहीं। वह भी झमेलेका काम है। लिखा-पढ़ीमें पातूको बड़ा डर लगता है। कहीं नालिश करके घर दखल कर बैठे तो कहाँ जाये बेचारा? दुनियामें जायदाद कहनेको बस यही मकान ही है।

मन ही मन यह सब सोचते हुए पातू जल्दी जल्दी राख जमा कर रहा था। पिछले सालमें उस रोज पिटकर उसके मनमें जो उत्तेजना जगी थी वह दिन ब दिन बढ़ ही रही था। उसी उत्तेजनामें उस रोज अमरकुण्ड बहारमें द्वारिका चौधरीसे उसने छिरू और अपनी बहन दुर्गाके बुरे सम्बन्धकी बात कह दी थी। उसके लिए कल साँझको जात भाइयोंकी सभामें उसे बड़ा अपमानित होना पड़ा। उसी बातपर लोगोंने उससे पूछा भी था कि "तुमने तो खुद अपने ही मुँहसे इस कलंककी बातको चौधरीजीसे कहा है। कहा है या नहीं कहा?"

हाँ कहा है।

फिर क्या नहीं तुम जातसे निकाले जाओगे?

इसके पहले पातूको यह बात याद नहीं आयी थी। वह चौंक उठा था।

कुछ देर चुप रहकर वह हनहनाता हुआ घर गया और चाटा पकड़कर दुर्गाको मजलिसमें खींच लाया। ढकेलकर उसे गिरा दिया और कहा, "वह बात इस हरामजादी छिनालसे पूछो। म इसमें अलग हूँ।"

दुगाके पीछे-पीछे उसकी मा भी चीखती चिल्लाती हुई आयी थी, सबके पीछे पातूकी बिलैया जसी बहू भी रोती हुई आयी। उसके बाद तो गन्दी बातो का ताता लग गया। दुगाने जोरदार गलेसे टोलेकी हर औरतकी कुकीर्तिका छिपा इतिहास जाहिर करते हुए पातूके मुँहपर घोषणा की—"घर मेरा ह। मने अपनी कमाइसे बनाया ह। म जिसे चाहूँगी, वही मेरे घर आयेगा। तेरा क्या ? इसमें तेरा क्या ? तू क्या मुझे खिलाता ह या कि कभी खिलायेगा ? तू अपनी बीबीको तो सँभाल।"

पातूने उसे दो चार थपेड़े और जमाये। पातूकी स्त्रीने घूँघटके अन्दरसे ननदको गाली देना शुरू कर दिया था। मजलिस गरम हो उठी। उत्तेजित शोर हाथा-पाईपर शायद पहुँच ही रहा था कि आग जल उठी उधर

दो दिनोंकी उत्तेजना, तिसपर आग लगनेसे बेघर होनेके असीम दुःखने उसे मुखर ज्वालामुखी-सा कर दिया था। वह चुपचाप ही काम कर रहा था कि इतनेमें उसकी स्त्रीका रुलाई कानोंमें पहुँची। अपनी गाय-बकरियोंको पासके खजूर-तलेके खूँटोंमें बाँधकर बत्तखोंको बगलके तालाबमें छोड़कर अब वह पतिको मदद देने आयी थी। बटोरी हुई राखको टोकरीमें भर भरकर वह घूरपर फेंकने लगी। पातू खूँख्वार जानवर-सा दाँत निकालकर गरज उठा सुन, यह ऊँ ऊँ करके तू रो मत कहे देता हूँ मारकर हड्डी तोड़ दूँगा।"

घर जल जानेके दुःखमें और सारा रात तकलीफ उठानेमें पातूकी स्त्रीका भी मिजाज ठीक नहीं था। वह बन बिलारी सी फाँस कर उठी— क्या मेरी हड्डी क्या तोड़ेगा तू सुनूँ तो जरा। कहावत भी तो ह कि दरबारमें हार और बीबीको मार। अपनी छिनाल बहनका कुछ कहनेकी जुरत नहीं ह—"

पातूसे और बरदाश्त नहीं हुआ। वह शेरकी तरह उछला। स्त्रीको जमीन पर पटककर उसकी छातीपर बैठ गया और गला दबाने लगा।

पातूके घरके ठीक सामने, आगनके उस किनारे दुगा और उसकी माँका घर था। वे लोग भी घरकी राखकी सफाई कर रही थीं। पातूकी स्त्रीका चहना सुनकर दुगा चोट खानेके लिए फन फाड़े हुए साँपिन सी पलटकर खड़ी हो गयी थी, लेकिन पातूको सजा देते देखकर उसने कुछ नहीं कहा। पुरखिनकी तरह भाईसे बोली—"हाँ बीबीको जरा सँभाल सिरपर मत चढ़ा।'

ठीक इस समय जगन डॉक्टरकी बैठी हुई आवाज सुनायी पड़ी—"अरे

हाँ-हाँ ! छोड दे हरामजादा बजनिया, मर जायेगी वह ।"

यों कहते-कहते डाक्टरने जाकर पातूका बाल खींचा। पातूने स्त्रीको छोड़ दिया और हाँफते हुए कहा "जरा इस हरामजादीकी करतूत देखिए घरमें आग-वाग लगाकर—"

"पानी पानी ला। जल्दी। हरामजादा, गँवार कहाँका।" जगन घुटना गाड़कर बैठ गया। पातूकी स्त्री बेहोश पड़ी थी। डाक्टरने नब्ज देखी।

पातूको अब दया हुई। उसने झुककर स्त्रीका मुँह देखा और अचानक फफककर रो पड़ा—'अरे हाय मैंने वहूको मार डाला।'

साथ ही साथ पातूकी माँ चीख उठी, "हाय हाय क्या किया रे।" डॉक्टर ने कहा "अबे, पानी जल्दी ला।'

दौड़कर दुर्गा पानी ले आयी। बैठकर उसने वहूका सिर अपनी गोदीमें लिया और उसकी छाती सहलाने लगी। डाक्टर लगातार पानीके छींटे देने लगा। साथ ही दुर्गा उसके मुँहमें मुँह रखकर फूँक मारने लगी।

लेकिन फूँकना नहीं पड़ा। वहूने लम्बी उसाँस लेकर आप ही आँख खोल दी। कुछ देर बाद वह उठ बैठी और रोने लगी— मुझपर अब किसीको ममता करनेकी जरूरत नहीं। दुनियामें मेरा कोई नहीं है। गला बैठ गया था, आवाज नहीं निकल रही थी फिर भी वह जी जानसे चीखने लगी।

कितने घर जले हैं, गिनकर जगन डाक्टरने नोटबुकमें लिख लिया। कितने आदमी इस आफतके शिकार हुए यह भी लिखा। रिपोर्ट अखबारमें भेजनी थी। इस बीच मजिस्ट्रेट साहबको भेजनेके लिए उसने दरख्वास्त तैयार कर ली था। उसने आस-पासके चार पाँच गाँवोंसे माँगकर पुआल, बाँस पुराने कपड़े चावल रुपये जुटानेके लिए एक सहायता समिति बनानेकी भी सोची थी। डाक्टरने सबको बुलाकर कहा तुम लोग अपने अपने खेतिहर मालिकके पास जाओ। जाकर उनसे कहो कि हम कोई दास, दस आदमी पुआरी, पाँच-सात जिनकी खुराक-पोशाक। इसके सिवा जो कुछ भी लगेगा—मैंने जावकर मैं जुगाता हूँ। मजिस्ट्रेट साहबको एक दरख्वास्त देनी पड़ेगी। मैं लिख लियाकर रखूँगा। नामका सब कोई उसपर अँगूठेका निशान बना देना।'

सभी चुप रह गये। मजिस्ट्रेटके नामसे भड़क गये। साहबोंको ये लोग सजा करनेवाला ही जानते हैं। सिपाही दरोगाके बड़े साहब वाले मजिस्ट्रेटके नामसे ही डर जाते हैं। उनके पास दरख्वास्त भेजकर जाने फिर कौन-सा बखेड़ा खड़ा हो।

जगनने पूछा, "मने जो कहा—समझा तुम लोगाने ?"

सनोग बारीने कहा, "जी हा, साहबके पास "

"हा, साहबके पास।"

'फिर न जाने कौन सा बखेडा हो!'

"बखेडा कसा ? वे जिल्के मालिक ह। प्रजाके सुख-दु खकी जिम्मेदारी ह उनपर। दु खकी खबर पानेपर उन्ह मदद देनी ही पडेगी।"

जी वो "

"वो फिर क्या ?"

"जी, पुलिस-दरोगा, थाना-वाना खीच-तान-कैफियत पूछिए मत, हजार हगामा।

डाक्टर अब बिगड उठा। उसकी बातका प्रतिवाद करनेसे वह बिगड उठता ह। फिर लाव-मवाद यहाने मजिस्ट्रेटके सम्पकम आनेकी उस बडी लालसा थी। यूनियन बोडका मेम्बर होनेको आकाक्षा बहुत दिनाकी ह उसकी न कवल मान मयादाके लिए बल्कि दश-सेवाकी भी आकाक्षा थी। लेकिन यूनियन बोडकी मेम्बरी क्कनाके बाबुओन ही दखल कर रखी थी। यूनियनके मारे ही गांवम क्कनाके बाबुआकी जमीन्दारी थी। पिछली बार जगन चुनावम खडा हुआ था। उस महज तीन वोट मिले। सरकारसे मनोनीत मेम्बर होना भी क्कनाके बाबूलोगाकी ही बपौती-सा था। साहब-सूबा उन्ही लोगाको पहचानते ह, उनका आना-जाना क्कना तक ही ह। सदस्य मनोनयनके समय उनकी दरख्वास्तें हा मजूर हा जाती ह। इसीलिए ऐसे एक परहित-व्रतने यहाने साहबस भेंट करनकी इच्छा जगनको बहुत पहलेस ह और वह परम काम्य ह। अपने उस सकल्पमे पूरा होनम बाधा दखकर जगन चिढ गया। कहा, सा फिर मरा। सड सडकर मरा, हरामजाद बेवकूफ।"

अर हुआ क्या डाक्टर साहब ? कहते हुए ऐन वक्तपर वहा द्वारिका चौधरी पीछेसे पेड पौधाकी आडस डाक्टरके सामने आ खडा हुआ। इन लोगाकी इस आकस्मिक विपदाम सहानुभूति दिखानेके लिए वह आया था। यह उसके पुरखाका चलाया हुआ कतव्य था। उस कतव्यका वह आज भी भरसक निबाहता था। इस व्यवस्थाम दयाकी ही प्रधानता ह मगर कुछ प्रेम भी ह।"

चौधरीका दखकर डॉक्टरने कहा कम्बख्ताकी बेवकूफी ता देखिए। कह रहा हूँ कि मजिस्ट्रेट साहबके पास एक दरख्वास्त द दो वो कहते ह कि थाना पुलिस-दरोगा—बडा बखेडा ह।"

चौधरीने कहा, 'इसके लिए साहब-सूबाका क्या जरूरत ह भया! गांवके

ही पाच जनाम देनका काम चल जायेगा । म इसमें म हरेकका दो गण्डा पुवाल और पाँच बाँस दूँगा । ऐसी तरहसे "

डाक्टरने इसके आगे नहा सुना । उसने तजीम चलना शुरू कर दिया । जाते-जाते कह गया आना फिर कभी मेरे पास ।' कुछ दूर चले जानेके बाद रुककर चिल्लाया, 'कल रात कौन वहाँ था रे ? कल रात ?"

चौधरीने जरा सोचकर कहा लेकिन दरख्वास्त देनेमें ही क्या हर्ज है भया सतीश ? डॉक्टर तो कह ही रहा ह, और साहबकी कृपा अगर हो जाये तो तुम लोगोंका ही भला होगा । जाना डाक्टरके पास ।"

सतीश बोला, भाई हगामा तो नही होगा चौधरी बाबा ! हमें उसीका डर ह ।'

डर काहेका ? हगामा होनेका तो कुछ लगता नही ह । न कोई हगामा नही होगा । चौधरीने कहा ।

तीसरे पहर सब लोग डाक्टरके पास पहुँचे । आया नही केवल तो एक पातू ।

डॉक्टर खुश हो उठा था । उसने अच्छी तरहसे सबको देख लिया और पूछा पातू कहाँ ह पातू ?'

सतीशने कहा— जी वह नही आयगा । उसने कहा ह कि अब वह इस गावमे ही नही रहेगा ।"

"गाँवमें ही नही रहेगा ? क्या इतना गुस्सा किसलिए ?'

'वह तो सरकार वही जाने । वह नदी पार जक्शनमे रहेगा । कहता ह, जहाँ मजूरी करेगा वही रोटी मिलेगी ।

'और ल्योत्तरकी जमीन ?

छोड़ देगा । कहता है, उसमे पेट नही भरता तो लेकर क्या करना ! बड आदमीकी बात छोड़िए आप । पातू बजनिया बड़ा आदमी ह—वकील बालिस्टर ।

अहा वही हो । वह बड़ा आदमी हो । तुम्हारे मुँहमे फूल चन्दन ।"

सबके पीछे दुर्गा थी । वही काम कर उठी । उसके बाद बोली "वह अगर गाँव छोडकर चला ही जाये तो लोगोका क्या ? वह वकील बालिस्टर—सात-सत्रह किसलिए ? वह चला ही जाये तो भला तो तुम्ही लोगोका होगा । इस जोतका तुम्हे मोटा हिस्सा मिल सकेगा ।'

डॉक्टर जगनने डाँट बताया—"ठहर, ठहर दुर्गा ।"

"क्यों ठहरूँ किसलिए ? इतना बात ही क्या ! —मुँह फेरकर वह अपने घरकी तरफ चल पड़ी ।

"अरी ओ दुर्गा ! अँगूठेका निशान बना जा।"

"नहीं बनाऊँगी।"

"तो समझ ले कि सरकारी रुपयेमें-से कुछ भी न मिलेगा तुझे।" अबकी वह मुड़ी और मुँह बिदकाकर बोली "मैं ठप्पा देने नहीं आयी थी। देहमें दम रहते भीख क्या माँगने लगी। छि !" मुड़कर वह फिर अपनी राह चल पड़ी।

रास्तेमें बाँसकी झाड़ियोंसे घिरा पानीका पोखरा पड़ता है। वहाँ पहुँची तो देखा, छिरू पाल छिपा खड़ा है। दुर्गाने हँसकर दोनों पैसे दिखाते हुए कहा—"रुपया चाहिए—रुपया ! घर बनाना है ! समझा ?"

श्रीहरिने उसपर ध्यान न दिया। पूछा "यह दरख्वास्त क्या पढ़ रही है ?"

"मजिस्ट्रेटके पास। घर जल गये हैं इसीलिए।"

"साले डॉक्टर मुखोको दोषी बनाकर दरख्वास्त दे रहे हैं क्या ? सालेको !" श्रीहरिका चेहरा भयानक हो उठा।

दुर्गाने गम्भीर होकर पैनी निगाहसे छिरूको देखा। वह अपराधीको पहचान गया— आग तुमने ही तो लगायी है।"

"किसने कहा ? देखा है तुमने ?"

"हाँ, जरूर देखा है।"

"चुप ! जितना माँग रही है उतना ही रुपया दूँगा।"

दुर्गाने जवाब नहीं दिया। होंठ बिचकाकर अजीब तरहसे छिरूको ताककर चली गयी। पापके मुँहसे हँसकर छिरू अपनी राह लगा।

आठ

दुर्गा देखनेमें सुन्दर और सुडौल है। उसके शरीरका रंग तक गोरा है जो उसकी स्वजातिके लिए जितना दुर्लभ है उतना ही आकस्मिक। इसके सिवा उसके रूपमें ऐसी एक सहज मादकता है जो साधारणतः आदमीके मनको मुग्ध करती है—बरबस खींचती है।

पाठक सुन चुके हैं, द्वारिका चौधरीसे कहा था कि मेरी माँ हरामजादोंका बाप जानती ही है! उस दुष्टाकी आदत नहीं गयी। दुर्गाके रूपका यह

आकस्मिकता उसकी माँके उसी स्वभावका जीता जागता प्रमाण है।

इस स्वभावको दबानेके लिए कोई सजा या उसे बदलनेके लिए किसी आदर्शका संस्कार इन सबके समाजमें नहीं है। थामी बहुत ऐसी उच्छृंखलता तो पति तक देखकर भी नहीं देखते। खासकरके उस उच्छृंखलताके अगर ऊँची जातका कोई पैसेवाला आदमी सम्बन्धित हो। लेकिन दुर्गाकी उच्छृंखलता तो उस हद को भी पार कर गयी थी। वह एक ही स्वच्छाचारिणी थी—ऊँच नीचको किसी भी सीमाको लाँघनेमें उसे हिचक न थी। आधी रातको वह कंकनाके जमींदारके विलास भवनमें जाती। यूनियन बोर्डके अध्यक्षको वह जानती थी। लोग कहते दारोगा हाकिम भी उसके अजाने नहीं। एक दिन जिला-परिषदके उपाध्यक्ष श्री मुखर्जीसे गहरी रातमें परिचय कर आयी। दफादार उसके साथ-साथ पहरेदार बनकर गया था। दुर्गाको इसका अभिमान होता, अपनेको वह अपनी जातिके और लोगोंमें श्रेष्ठ मानती। अपने यौवन को वह छिपाती नहीं। उसके इस स्वभावके लिए लोग उसकी माँको ही जिम्मेदार ठहराते—कि शायद माने ही बेटीको पतिसे छुड़वाकर यह रास्ता दिखाया है। लेकिन वास्तवमें इस बातकी जिम्मेदार उसकी माँ नहीं थी। दुर्गाका ब्याह ककनामें हुआ था। उसकी सास वहाँके किसी बाबूके घर झाड़ूदारनी थी। एक दिन सास बीमार पड़ी तो दुर्गा एवजमें काम करने गयी। घरका काम-काज जब हुआ तो बाबूके नौकरने बगीचेका घर बुहारनेके लिए अचानक करके उसे एक कमरेमें दाखिल कर दिया। इस कमरेमें बाबू थे। घबरा कर दुर्गा दरवाजेकी ओर लौटी। अरे! दरवाजा तो बाहरसे बन्द है।

घण्टे भर बाद वह घर लौटी। कपड़ेकी खूँटमें पाँच रुपयेका एक नोट बँधा था। इसके पहलेसे और साथ ही बाबूकी दुर्लभ कृपा तथा पैसा पानेके आनन्दसे वह सीधे बहीसे अपनी माँके पास भगे भाग आयी थी। सारा किस्सा सुननेके बाद उसकी माँकी आँखोंमें एक अजीब दृष्टि फूट उठी थी—मानो उसकी आँखोंके सामने सहसा एक प्रशस्त रास्ता झलक आया। उसने अपनी बेटीको वही रास्ता दिखा दिया। उसके बादसे तो दुर्गा उसी रास्ते चलती आयी है।

छिरू पालका दुर्गाका निरा व्यावसायिक नाता था। उसके लिए दुर्गाके मनमें स्नेह और करुणा कभी न थी। आज छिरू पालके प्रति उसके मनमें बेहद घृणा और क्रोध हो आया। पातुसे उसका जितना ही झगड़ा क्यों न रहा हो, जात भाइयोंको कितना ही गिरा हुआ क्यों न सोचती रही हो, आज उनके लिए उसने ममताका अनुभव किया। वह सारे रास्ते यही सोचती आयी थी

कि छिम्को शराबमें यदि जहर मिला दे तो क्या हो ?

'डॉक्टरने क्या कहा, बेचेगा गाय ?'—सवाल दुर्गाको भान किया। चिन्तामें डूबती उतराती वह कब घर पहुँच गयी था, ख्याल ही न था।

अकचकाकर दुर्गाने कहा, "नहीं।"

'नहीं बेचेगा ?"

"मैंने पूछा नहीं।"

"हाय राम, तो फिर तू गयी क्या करने ?'

दुर्गाने सिर्फ एक बार टेढ़ी और तीखी निगाहोंसे माकी तरफ देखा। कोई जवाब नहीं दिया।

मा अपनी बेटीकी देहकी कमाईपर जी रही है—उसकी तीखी नजर देखकर वह सकुचाकर चुप रह गयी। जरा देर बाद वह फिर बोली, 'सवेरे हमदू शेख आया था।"

दुर्गाने इसको भी जवाब नहीं दिया। मौन फिर कहा, 'वह फिर आयेगा। अभी धर्मराजतल्लेमें नागामें बनिया रहा है।'

अब दुर्गा बोली, 'क्या ? जरूरत क्या है ? मैं गाय-बकरी नहीं बेचूँगी।'

दुर्गाके बहुत-सी बकरियाँ थीं, कुछ गायें भी थीं और एक बछड़ा भी था। अगल-बगलकी खबर पाकर शेख आज ही दौड़ा आया था। यहाँ वह गाय-बकरियाँ खरीदा करता था, जरूरत पड़नेपर चार-आठ आने लेकर दो चार रुपये तक पेशगी भी देता था। बादमें गाय-बकरी लेकर सूद समेत वसूल हो जाता था। आज भी वह गाय-बकरियाँ ही खरीदने आया था। बिना किसीका पेशगी भी देता। इसका बेटी बिपन टोलेके लोगोंपर आयी, लोगोंकी इस जरूरतकी घरमें हमदू रुपये कर्ज लेकर आया। दुर्गाके बछड़ेके लिए उसने बहुत बार फरमाइश की थी, दुर्गाने बेचा नहीं। आज वह फिर उसी मतलबसे आ पहुँचा, बल्कि दुर्गाकी माँको चार आने पैसे भी दिये। पच्छिमकी ओर मुँह करके वादा भी किया कि सौदा हो जानेपर और चार आने देगा। बेटीकी बात माको जरा भी अच्छी न लगी। जरा भुनभुनाती-सी बोली, 'बेचोगी नहीं तो घर कैसे चलेगा, सुनूँ तो जरा ?'

'तेरा बाप पैसे देगा, समझ गयी, हरामजादी ! मैं जलाऊ चूड़ा बेचूँगी सालकी।' दुर्गाने गहने भी गढ़ाये थे दो चार मामूली चाँदीके मामूली-से थे, मगर उनमें उसके लिए अपने मायार थे।

दुर्गाकी माँ अब बाप-सा भयंकर उठनेवाली हुई। मगर दुर्गा उससे डरनेवाली न थी। उसने पूछा, "हमदू शेखसे कै आने लिये ? क्या समझती है कि

मैं कुछ नहीं समझती। मैं धान चावलका भात नहीं खाती—क्यों?"

माँके क्रोधका बारूद फटने-फटनेको होकर बिखर गया। वह अचानक रोने लगी—"मेरे पेटकी बच्ची होकर तूने मुझे इतनी बड़ी बात कह दी!" वह बोली।

दुर्गाने परवा न की। कहा 'रहने दे, बहुत हुआ! अभी यह तो बता कि भैया कहाँ गया? भाभी कहाँ गयी?'

माँ रोती गयी दुर्गाके सवालका जवाब उसीमें था—"मेरे घरमें आग लग जाये तो अच्छा। पत्थर मारना चाहिए मेरे कलेजेमें। जीते जी मुझे जला-जलाके मारा। जैसा बेटा वैसी ही बेटी! बेटी चोर कहती है और बेटा तो दुनियासे बाहर ही है! सब लोगोंने ताड़का पत्ता काट-काटकर अपना घर छाया है और मेरा बेटा गाँव छोड़कर चला। मरे वह, मरे अगहनकी सर्दीमें सन्निपातसे मरे।"

बड़ी रुलाईमें दुर्गाने कहा 'मैं पूछती हूँ रसोई-पानी भी करेगी कि रो-रोकर रोती ही रहेगी। भूखा मरना है कि नहीं?'

"नहीं बाबा, अब भूखा मरना नहीं है। उससे तो फाँसी लगाकर मरना ठीक है मेरे लिए।"—माँ और जोरसे रोने लगी।

दुर्गा कुछ बोली नहीं। अन्दरसे लाकर गाय बाँधनेवाला पगहा उसने माँके पास डाल दिया—फाँसी लगानेके लिए। और उसके बाद वह गाँवकी राहमें निकल गयी।

हरिजन-टोलेकी बैठकका स्थान—धर्मराजका बकुलतला। बहुत दिनोंका पुराना पेड़—डाल-पत्तोंमें काफी फैला हुआ। पेड़का धड़ बहुत आगे झुका है। बहुत पहले किसी प्रचण्ड आँधीसे उखड़-सा गया था और तबसे लगभग गिरी हुई हालतमें ही आज तक जिन्दा है। इस तरह गिरी हुई हालतमें शायद ही कहीं किसीने पेड़ देखा हो? यह धर्मराजकी अनोखी महिमा ही है और क्या! पेड़के नीचे मिट्टीके घोड़ोंका ढेर है। मन्नत मानकर लोग धर्मराजको घोड़ा दे जाते हैं। आस-पासकी छाँह भरी जगह खूब साफ-सुथरी है। टोलेका हर कोई रोज सवेरे वहाँ गोबरका एक गोला बना जाता है लीपकर। वे सारे गोल आकार एक हो गये हैं और इसी बहाने सारी ही जगह लिपा-लिपायी हो गयी है। वहाँ बैठकर हमदू शेख गाय-बकरियोंका मोल-भाव कर रहा था लोगोंसे। कुछ हटकर पाँच-सात बकरियाँ और दो गायें बँधी थीं। यह सब खरीदी जा चुकी थीं।

टोलेकी सब सूरतें जगन डाक्टरके यहाँ गयी थीं। हाटका कारबार औरतोंके

चल रहा था। औरतोंमें कोई उसकी मौसी थी तो कोई फूफा कोई चाची और कोई भाभी। वह एक गस्सीका दर दस्तूर कर रहा था, किसी बाउरी भाभी। वह रहा था—"तू ही बता भाभी, इसमें भी क्या है। सिर्फ चमड़ा और हड्डियाँ ही ता है। पाच सेर भी ता गोश्त नहीं निकलेगा। बहुत निकलेगा ता तीनेक सेर। मैं सवा रुपये दे रहा हूँ क्या बेजा द रहा हूँ। और भी पाच जने ता है। वही कहें। और फिर ऐसे वक्त लेता कौन है! गऊ तुमे हैं अभी कि औरा-का।'—कहते-कहते उसने आवाज दी—'अरी ओ दुर्गा दीदी? जरा सुन ता ले। तेरे यहा पाच बार गया मैं। सुन!"

दुर्गा आगकी खोजमें चली थी। दूरसे ही बोली, मैं नहीं बेचूँगी।"

'अरे बाबा, न बेचेगी न सही। बचनेको नहीं कहता हूँ। सुन तो जा।'

"क्या कहना है, कहो? दुर्गा करीब आयी।

"अरे बाप रे, दीदी तो बिल्कुल घोड़ेपर सवार है!"

हा, लौटकर रसोई करनी है। क्या कहना है कहो?

म तो तेरे ही कामकी कह रहा हूँ। पूछता हूँ, टीनसे घर छाओगी? मेरी जानमें सस्ता टीन है।"

'टीन?"

'हाँ री। बिल्कुल नया। कलवार बेचेगा, लोगी। एकबारगी निश्चिन्त हो जाओगी। सोच देखो। कुल चालीस पचास रुपये।'

दुर्गाने कुछ क्षण सोचा। मनकी आखोंसे देखा, छप्परपर टिन। धूपकी रोशनीमें चाँदीसे चमक रहा है। लेकिन तुरत अपनेको जब्त करके उसने कहा, ऊँहूँ न!"

'तेरे पास रुपये न हों तो मुझे बादमें दे देना। छह महीने, साल भर बाद।"

दुर्गाने हँसते हुए गरदन हिलाकर कहा, 'ऊँहूँ। उस बाउरीसे तुम हाथ धो लो हमदू भाई। इसे मैं अभी दो साल तक नहीं बेचूँगी। —और बदनको झकझोरकर वह चली गयी।

आगे लेकर घर लौट तो देखा, पगहा ज्यों-का-त्यों पड़ा है, मानो उसे छुआ

१ एक जाति।

नही ह। चूल्हा सुलगाकर यह पानूमे बहस कर रही ह। ताडके पत्तोके दो बड-बडे बाय आँगनमे पटककर हाँफते हुए वह गुस्सेमें शेरकी तरह माँको ताक रहा ह। पानूकी बहू लकडा-काठी बटोरकर जमा कर रही ह। रसाई चढायगी।

दुगान बिना भूमिका बाधे ही कहा 'भौजो रसाई नही बनानी पडगा। म बना रहा हू साथ ही खायेंगे सब।'

पानूने दुगाकी ओर मुडकर कहा, जरा दख ल दुरगो, माको जबान दख ल। जो मुँहमे आ रहा ह वही बके जा रही हैं। अच्छा नही होगा, मैं कह दता हूँ।''

''तो म हा क्या करूँ बता? अबतक मुझसे ही उलझ रही था। माँ ह पेटम रखा ह। भगा नही सकते खून भा नही कर सकते।'

तरा बात बिल्कुल सही ह। मगर इस गावम कौन-स मुखके लिए रहूँ, तू ही बता?

तो क्या सच ही तू गाव छाड देगा? पुश्तनी घर भूल जायेगा?'

पानू कुछ दर चुप रहा। फिर बोला तभी ता दख इतनी दर करके भा यह ताडके पत्ते काट लाया हू दुरगो! नही तो दोपहरको जक्शनके कारखानम नौकरा और घर ठीक कर आया था।'

वह दोना हाथ फलाकर उसाम सिर गाडकर नीचे दखने लगा। दुगान कहा उठ। वह दख मर वास ह वहा उन्हें ऊपर चढा और ताडका पत्ता डालकर बाहर हाल ढँक द। तू ऊपर जा मैं और भौजी सब चढा दती ह। बाप दादोका घर छाडकर कोई जाता ह भला!''

एक उसास लकर पानू उठा। दुगाने आचलको कसकर कमरम बाँधा और बाली 'अर वहो सतीश! सतीश बाउरी। वह कम्बरत डॉक्टरका कहता था कि—पानू बर्जनिया बडा आदमी ह—वकील-बारिस्टर। सा मने सा कह दिया—अहा, तरे मुँहम फूल चन्दन पड। बाला 'बडा आदमी ह। गाव छाडकर चला जायेगा। चला जायेगा तो घर द्वार तुम लागाका दान द जायेगा। तुम लोग भोगना!'

खिलखिल-सी भाग ताजा पानूकी स्त्री मिहनत खूब कर सकता ह। छोटे व तेजीम लट्टूकी तरह घुमाती रहती ह। वह इसी बीच बाँसाको आँगनम खच लायी थी।

सार टाल्का जलानेकी नायन श्रीहरिकी नहीं थी। लेकिन जब स्वाहा हो ही गया तो उसका भी अफसोस उसे नहीं हुआ। जो गया तो ठीक ही हुआ। बीच-बीचमें ऐसा विपर्यय हुए बिना ये छोटे लोग नवते नहीं—बम्बगना-का दिमाग ऊंचा होता जा रहा था। हाथकी मारसे कुछ नहीं होता, भातकी मार चाहिए। याना जीविका छीननेसे आदमी झुकता है। बाघ-जैसे जानवरको पिंजड़ेमें डालकर भूखा रखके आदमी पालतू बनाता है।

इन बातोंमें उसका गुरु था दुर्गापुरका स्वनामधन्य त्रिपुरा सिंह। दुर्गापुर यहासे दस कोस दूर होगा। श्रीहरिकी ननिहाल वहीं है। उसका नाना त्रिपुरा सिंहकी खेती-बारीकी देखभाल करता था। बचपनमें श्रीहरि अपने ननिहाल जाता था। उस समय उसने त्रिपुरा सिंहको देखा था। लम्बी-तगडी देह जातिका राजपूत। शुरूमें त्रिपुरा सिंह एक मामूली आदमी था। कुछ बीघा जमीन ही कुल जायदाद थी उसकी। उस जमीनमें वह राक्षसकी तरह परिश्रम करता था। साथ ही वह जमींदारके यहाँ भी काम करता। तम्बाकूका व्यापार करता था। हाथमें लाठी और माथेपर तम्बाकूका बोझा लिये वह एक गाँवसे दूसरे गाँव जाया करता था। इस तरह धीरे-धीरे महाजनी शुरू की। उस महाजनीसे पहले तो अच्छा जोतदार और अन्तमें जमींदारकी जमींदारीका कुछ हिस्सा खरीदकर छोटा-मोटा जमींदार बन बैठा था। त्रिपुरा सिंहकी दाढ़ी बड़ी शानदार था। उसका गलमुच्छा बाजकर मूँछ ऐंठते हुए कहता—श्रीहरिने अपने नानासे सुना है—'मैंने इस गाँवको तीन बार जलाया, तब जाकर इन धर्मावतारोंने मेरा लोहा माना।

हा-हा-हा हँसते हुए त्रिपुरा सिंह कहता, जब-जब घर जला, सालोंने कर्ज लिया। जो कर्जसे पहली बार पंजेमें नहीं आया वह दूसरी बारमें आया जो दूसरी बार भी नहीं आये वे तीसरी बार आकर घुस गये।' ये बातें कहनेमें सिंहका जरा भी हिचक नहीं होती थी। कहता बड़े-बड़े जमींदारोंकी टिप्पन-जनमपत्री ले आओ, देखो कि सबने यही किया है। मेरे दादा रतनगढ़के उसी शानसे पार हुआ करते थे। इसीसे बाबुओंका पैसा था। सीता नगरके चटर्जी बाबुओंने अभी अभी उस रोज तक इस तरह निबाहा है।

त्रिपुरा सिंहने जो बातें अपनी जवानी नहीं सुनायी या इतिहासका जो हिस्सा उसके मुँहसे सुनना श्रीहरिको नसीब नहीं हुआ, वह उस उसके नानाने

सुनाया। रातमे खा पी चुकनेके बाद तम्बाकू पीते हुए बीते दिनोंकी बातें नाती को सुनाया करता था—"त्रिपुरा सिंहकी नाक्की कहानी तो रूपकथा-सा ह। उसकी जमीनके पास ही वहुवल्लभ पाल्की थाडी-सी जमीन थी—दसेक कट्ठा। उस जमीनके लिए उसने एक सौ रुपया तक देना चाहा था। लेकिन वहुवल्लभ की दुर्गति कहिए, या माया, उसने हर्गिज न दी। वर्षा बीतते-बीतते एक दिन रात अकेले कुदाली चलाकर सिंहने दोनो खेताको ऐसे आकार प्रकारका कर दिया कि खुद बहुवल्लभ भी नही बता सका कि लम्बाइ चौडाईम उसकी जमीन के चारो कोने कहा थे। वहुवल्लभने नालिश की या। मुकदमेंम वह हार ता गया ही, ऊपरसे यह भी हुआ कि कई रोज वाद जब उसकी जवान बीवी पानी लाने घाट गयी तो लौटी नही। रास्तेमें सांझके धुँधल्केम काई उसके मुँहम कपडा ठूँस कर उठा भागा।"

बूढा धीरे धीरे कहता, अब वह औरत बूढी हा गयी ह। सिंहजाक यहा दाईका काम करती ह। इस तरहकी सिंहजीक यहा एक नही, पाच-सात दाइयाँ हं।'

त्रिपुरा सिंहकी सूझ बूझ और दूरदर्शिताके लिए बढेकी श्रद्धाका अन्त नही था। कहता सिंहजी लक्ष्मीवन्त ह। विषय-बुद्धि भी उनकी वसी ही ह। जमीदारके यहाँ काम करते कराते ही उन्होने समझ लिया था कि इस घरकी अब वह बात नही। लाट दाखिल करनेकी रकम आती ह महलम। लेकिन दाखिल करनेका समय निकल जाता। सो त्रिपुरा सिंहने स्वय उधार देना शुरू किया। जब भी जरूरत पडी उन्होने ना नही कहा कभी अपने पास नही होता तो आठ आने सूदपर लाकर रुपये सकडके हिसाबसे अपने बाबुओंको दिया। उसके बाद सूद मूल सब जोडकर हण्डनोट बदलकर अन्तम जब धर दबाया तो बाबुओंकी जमीदारी ही हाथ आ गयी। क्षण जन्मा लक्ष्मीवन्त आदमी '—कहकर उसने मालिकको प्रणाम किया।

श्रीहरिका बाप सफल सद्गृहस्थ था। एडी चाटीका पसीना एक करके उसने परती जमीनका बढिया खेत बनाया था। श्रम और सयमस उसने अपने आगनको धानकी मारियाम एक मनोरम श्रीभवन बना दिया था। बापके गुजर जानेके बाद जब दौलत श्रीहरिके हाथो आयी तो उस अपने नानाके स्वनामधन्य मालिक त्रिपुरा सिंहकी याद आयी। मन-ही मन उसीको आदश मानकर उसने जिन्दगीका सफर शुरू किया। मेहनतम वह कतई कोताही नही करता, फसल भी खूब होती। मगर उस फसलको वह अपने बापकी तरह सिर्फ सहेजकर नही रखता, सूदपर उधार दिया करता। सकडे पचीससे पचास

तक सूद। एक मन उधार दिया तो साल के आखिरमें सवा या डेढ़ मन वसूला। यह श्रीहरिका कोई जुल्म जरूर नहीं था, सूदकी यही दर चालू है। चूँकि आम तौरसे यही दर थी। इसलिए उधार लेनेवाले इस ज्यादा नहीं समझते बल्कि मौकेपर देनेके कारण महाजनके अनुगृहीत होते। यह नहीं कि लोग श्रीहरिकी खातिर नहीं करते असलमें जितनी होनी है श्रीहरि उसे काफी नहीं समझता। उसे एसा महसूस होता है कि उस मौलिक श्रद्धाकी आड़में लोग उससे डाह करते हैं उसकी बरबादी चाहते हैं। इसीलिए कभी-कभी उसके जीमें आता कि सारे गाँवको फूँककर लोगोंको मसहाग बना दे। राह चलते हुए जगन डाक्टर-जैसे दुश्मनके घरपर नजर पड़ते ही बिजलीकी तरह उसकी वह इच्छा कौंध जाती। लेकिन त्रिपुरा सिंह-जैसा भयंकर साहस उसमें नहीं। न ही वह जमाना है। त्रिपुरा सिंह अपनी जो इच्छा पूरी कर लेना था जमानेके लिहाजसे श्रीहरिको अपनी वह इच्छा दफन करनी पड़ती। इसके सिवा श्रीहरिका अन्याय-बोध समयके अंतरके अनुसार त्रिपुरा सिंहसे कुछ ज्यादा था।

चूँकि त्रिपुरा सिंहसे उसका अन्याय-बोध ज्यादा था इसीलिए वह रातवाली घटनाके लिए अपने ही मनमें तरह-तरहकी सफाई दे रहा था। बड़ी देर तक बैठ रहनेके बाद वह उठा और उस रास्ते हुए टालेकी तरफ चला। लेकिन जाते-जाते भी कई बार पलटा। अजीब सनसनाहट-सी हो रही थी उसके भीतर। अंतमें अपने चरवाहेके घर जानेकी सोच वह आगे बढ़ा। भला चरवाहा—ऐसी आफतके समय उसकी खोज लेना फर्ज था। उसे कुछ कह ऐसा मसाला मिल गया आप ही-आप वह आरम्भ बड़बड़ा उठा—"। " "शायद जो भी उसे कुछ कहता, मन-ही-मन उसने उसे पहले ही डपट दिया। इस तरह दरअसल उसने अपने मनमें उठे हुए बड़े सवालको ओट बनायी।

चरवाहा अपने मालिकसे यमकी तरह डरता था। छिपके वहाँ जाकर पैर होते ही उसने समझा कि आज चूँकि नहीं गया हूँ इसलिए वह उसकी गरदन पकड़ने आया है। बेचारा लड़का रो उठा—"जी, घर जल गया है इसलिए "

जले हुए टालेकी हालत अपनी आँखों देखनेके बाद मन-ही-मन श्रीहरिको भी थोड़ी-सी लज्जा आयी। उसने स्नेहसे उस लड़केसे कहा, "तू रो क्यों रहा है? तेरे ऊपर तो कोई जान नहीं। किया क्या जाये? आखिर किसीने आग लगा तो नहीं दी है!"

चरवाहे बालकके बापने कहा, "लगा कौन देगा सरकार और लगायेगा भी क्या? हमने किसीका क्या बिगाड़ा है कि कोई हमारे घरमें आग लगायेगा।"

सुनाया। रातम खा-पी चुकनेके बाद तम्बाकू पीते हुए बीते दिनाकी बातें नाती का सुनाया करता था—"त्रिपुरा सिहकी शक्तिकी कहानी तो रूपकथा-सी ह। उसकी जमीनके पास ही बहुवल्लभ पाऊकी थोडी-सी जमीन थी—दमक कट्ठा। उस जमीनके लिए उसने एक सौ रुपया तक देना चाहा था। लेकिन बहुवल्लभ की दुर्गति कहिए, या माया, उसने हर्गिज न ली। वर्षा बीतते-बीतते एक दिन रात अकेले कुदाली चलाकर सिहने दोनों खेतोंको ऐसे आकार प्रकारका कर दिया कि खुद बहुवल्लभ भी नहीं बता सका कि लम्बाई चौडाईम उसकी जमीन के चारो कोने कहाँ थे। बहुवल्लभने नालिश की थी। मुकदमेमें वह हार तो गया ही, ऊपरसे यह भी हुआ कि कई रोज बाद जब उसकी जवान बीवी पानी लाने घाट गयी तो लौटी नहीं। रास्तेमें सामके धुधलकेम कोई उसके मुँहम कपडा ठूँस कर उठा भागा।'

बूढा धीरे धीरे कहता, 'अब वह औरत बूढी हो गयी ह। सिहजीक यहा दाईका काम करती ह। इस तरहकी सिहजीक यहा एक नहीं, पाच-सात दाइयाँ ह।'

त्रिपुरा सिहकी सूझ बूझ और दूरदर्शिताक लिए बूढेकी श्रद्धाका अन्त नहीं था। कहता सिहजी लक्ष्मीवन्त ह। विषय-बुद्धि भी उनकी वसी ही ह! जमींदारके यहा काम करते कराते ही उन्होंने समझ लिया था कि इस घरकी अब वह बात नहीं। लाट दाखिल करनेकी रकम आता ह महलम। लेकिन दाखिल करनेका समय निकल जाता। सो त्रिपुरा सिहने स्वय उधार देना शुरू किया। जब भी जरूरत पडी उन्होंने ना नहीं कहा जभी अपने पास नहीं होता तो आठ आन सूदपर लाकर रुपये सकडे हिसाबसे अपने बाबुओंको दिया। उसक बाद सूद मूल सब जोडकर हण्डनोट बदलकर अन्तम जब घर दबाया तो बाबुओंकी जमींदारी हा हाथ आ गयी। क्षण जन्मा लक्ष्मीवन्त आदमी —कहकर उसने मालिककी प्रणाम किया।

श्राहरिका बाप सफल खेतिहर था। एडा चाटीका जमीनो गन्न करके उसने परती जमीनका बढिया खेत बनाया था। श्रम और सयमसे उसने अपन आँगनका धानकी मारियाम एक मनोरम श्रीभवन बना दिया था। बापके गुजर जानक बाद जब दौलत श्रीहरिक हाथ आयी तो उसे अपन नानाके स्वनामधन्य मालिक त्रिपुरा सिहकी याद आयी। मन-ही मन उसीको आदर्श मानकर उसने जिन्दगीका सफर शुरू किया। मेहनतमें वह कमी नहीं करता फसल भी खूब होती। मगर उस फसलको वह अपने बापकी तरह सिर्फ सहेजकर नहीं रखता सूदपर उधार दिया करता। सकड पचीससे पचास

' श्रीहरि चुपचाप जले हुए घरोंकी ओर ताक रहा था। चरवाहे बालकके बापने कहा, "छोटे लोगोंका काम, सूखी पतईमें आग पकड़ गयी होगी—और क्या।'

"सुन। जितना पुआल लग मेरे यहांसे ले आ। लकड़ी बाँस भी ले लेना—छौनी कर ले।" फिर उस लड़केसे कहा, "मेरे यहांसे दस मर चावल ले आ जाकर। बल्कि कल धान भी ले लेना—समझा ?"

लड़केका बाप एक प्रकारसे श्रीहरिके पैरोंपर लोट गया।

इस बीच और भी दो एक जने आ खड़े हुए थे। एकने हाथ जोड़कर कहा, "जी, थोड़ा-बहुत करके हम भी अगर धान देते "

धान ?'

'जी। उसके बिना तो भूखा मरनेकी नौबत होगी।'

'हां, आज हर घरको पाँच सेरके हिसाबसे चावल दे देता हूँ। थोड़ा-बहुत धान भी दूँगा, लेकिन कल। धानका दिन कल है। और "

"जी '

"सबको दस गण्डा पुआल दूँगा। टोलेमें सबको कह देना।'

'जय हो! आपकी जय जयकार हो। दूध पूतसे फलें आप।'—श्रीहरिकी उदारतासे अभिभूत होकर वह आदमी दौड़कर मुहल्लेमें गया। यह खबर हर किसीको देनेके लिए वह छटपटा उठा।

श्रीहरिके स्नेही उदारतासे जिस प्रकार ये गरीब और अपढ़ लोग अभिभूत हो उठे, उसी प्रकार श्रीहरि भी उनकी निश्छल कृतज्ञतासे अभिभूत हो उठा। सहज मामूली-से दानके बारेमें एक पलमें व सब पैरोंपर झुक गये। श्रीहरिको खास तौरसे यह लगा कि जो अपराध मने गया रातमें किया है वह मानो उन्हीं लोगोंकी गीली आँखोंकी अश्रुधारामें देखते-ही-देखते बिलकुल धुल गया। भावके आवेगमें श्रीहरिका भी गला रुँध आया था। उसने कहा आ जाना मेरे पास। धान चावल पुआल ले जाना।' वह बहुत-कुछ हल्का और निर्मल मन लेकर घर लौटा।

घर लौटते हुए उसने बहुत-बहुत कल्पनाएं कीं गरीबोंके सिवाय अभावमें लोगोंको आखिर कष्ट ही होता है। पीनेके पानीके लिए औरतोंको नदी तक जाना पड़ता है। इज्जतके नाते जो नहीं जाती उन्हें पोखरका गन्दा और बदबूवाला पानी पीना पड़ता है। मैं एक कुआँ खुदवा दूं

गाँवकी पाठशालाके मकानके लिए पिछली बार घर घरकी खाक छानी लेकिन पाँच रुपया भी चन्दा नहीं मिला। मैं मकानके लिए पाठशालाका

पचास रुपया दूँगा।

और भी बहुत-कुछ। गाँवके रास्तेको मिट्टी डलवाकर पक्का बनवा दूँगा। चण्डीमण्डपके माटी फर्शको सीमेण्टका बनवाकर अपना नाम खुदवा दूँगा, जैसा कि कननाके चण्डीमण्डपके संगमरमरको फर्शपर वहाँके बाबुओंका नाम खुदा है।

उसके मनकी आखोंमें आया कि इसके बाद गांवके लोग सम्मानके साथ कृतज्ञ होकर उसे नमस्कार करते हुए रास्ता छोड़ देंगे।

आज श्रीहरिके हृदयमें नयी अभिज्ञताके कारण अजाने पड़े बीजके अंकुर-सा एक नया मन जाग उठा। ऐसी ही कल्पनाएँ करते हुए गाँवके मैदानमें कुछ देर घूम घामकर जब वह घर लौटा तो दिन प्राय बीत चुका था। देखा, अपराधीकी तरह दरवाजेपर गरीब लोग आकर खड़े हैं। और उसकी माँ कठोर भाषामें गाली गलौज कर रही है। गाली गलौज सिर्फ उन अभागोंको ही नहीं बल्कि श्रीहरिको भी देनेमें वह कंजूसी नहीं कर रही थी। श्रीहरि खीझकर ही घरके अन्दर गया। उसे देखकर माँ और जल उठी और बकने लगी, "अरे ओ अभागे, मैं पूछती हूँ—तू दाता कब बनने हो गया? दरवाजेपर टिड्डीका यह दल खड़ा है। कहता हूँ"

श्रीहरिके मनमें स्वभावका बड़ा निष्ठुर ढंग है। ऐसी स्थितिमें वह चीखता चिल्लाता नहीं—चुपचाप बड़ी भयानक शक्ल बनाकर मनुष्य या पशुको स्थिर भावसे सताता है। श्रीहरि जब ऐसा ही रूप बनाकर आगे बढ़ा तो उसकी माँ पिछले दरवाजेसे भाग गयी।

श्रीहरिने खुद ही सबको चावल दिया और कहा, 'धान और पुआल कल लेना।' और यह भी कहा कि—माकी बातोंका कुछ ख्याल मत करना, समझे।"

एकने उसके पाँवोंकी धूल ली। कहा, 'जी, ऐसा भी हो सकता है भला?" और, जहाँतक उसे बुद्धि थी मजाकसे उस बातको महज मामूली बना देनेके ख्यालसे बोला 'माँ तो अपनी पगली माँ है। नाराज हुई तो डर नहीं।'

श्रीहरिने कोई जवाब नहीं दिया। वह सोच रहा था—यह हरामजादी माँ ही कुछ नहीं करने देगी। अपनी आजकी परिकल्पनाको साकार करनेमें इतने रुपये खर्च करनेमें यह हरामजादी जरूर कोई-न-कोई बखेड़ा खड़ा कर देगी। काठके सन्दूककी पूजी वहीं आज तक जतनसे रखे हुए है। वहाँ रुपये निकालने गया कि आफत होगी। मगर रुपयेकी वैसी कोई फिक्र नहीं है। दो-एक बड़े कर्जदारोंसे सूद भर ले लेनेसे ही काम चल जायेगा। हाँ हाँ, वही करना होगा।

आजकी यह मामूली-सी घटना बरगदके एक नन्हें बीजसे तुलना करने लायक है। उस छोटेसे बीजमें एक विशाल पेड़की सम्भावना छिपी है। उसी सम्भावनाकी शुरुआतमें ही श्रीहरि मानो अपने अबतकके छूटे हुए अन्धकार और बदबू भरे जीवन सौधके हर कमरेमें—देहकी हर गाँठमें—हर जोड़में एक अजीब स्पन्दनका अनुभव करने लगा। वह सौध मानो फटकर चौकोर हो जायेगा।

दस

यूनियन बोर्डका मुहर लगा हुआ एक परचा लिये भूपाल चौकीदार जा रहा था, उसके आगे-आगे ढोंढी पीटता जा रहा था पातू।

"एक हफ्तेके अन्दर आषाढ़ और क्वार—इन दो किस्तोंका बाकी लगान जमा न कर देनेपर जुर्माना सहित ज्यादा टैक्स वजरिए कुर्कके वसूल किया जायेगा"

जगन डॉक्टर सुनकर आग हो गया। बोला, 'क्या? क्या किया जायेगा?'

भूपालने डरते हुए कागज उसकी ओर बढ़ा दिया, 'जी देखिए न!"

जगनने सख्त नजरसे भूपालकी ओर ताकते हुए कहा, "सरकारी वरदी पहनकर माथा नवाना भी भूल गया तू तो!"

अप्रतिभ हो भूपालने जल्दी जल्दी जगनके पैरोंकी धूल अपने माथेमें लगाकर कहा 'जी, भला यह भी भूल सकता हूँ! आप ही लोग तो माई-बाप हैं!"

पातू बोला, 'और क्या!"

नोटिस देखकर जगन गरज उठा 'ठठ्ठा है! यह कोई बपौती जमींदारी है! लोगोंका फ़सल खेतोंमें ही खड़ा रही और बाबुओंने कुर्कीकी नोटिस निकाल दी! सरकारने लोगोंको उजाड़कर रकम वसूलनेके लिए कहा है? मैं आज ही दरख्वास्त देता हूँ।'

भूपालने हाथ जोड़कर कहा 'हुजूर, हम लोग नौकर ठहरे, जो कहा"

'हाँ तुम लोगोंका क्या कसूर है? तुम लोग क्या कर सकते हो? पीटो ढोंढी।

पातूने ढोलपर लाठीसे चोट मारते हुए कहा 'डॉक्टर बाबू, बाईस

तारीखको नवान्न है।"

"नवान्न ? बाईसको ?"

"जी हाँ।"

"यह तू और सबको बता। गाववालोंसे मेरा कोई नाता नहीं। मैं जब चाहूँगा, नवान्न करूँगा।"

पानूने और कुछ नहीं कहा। आगे बढ़ा। डाक्टर क्रोधके मारे थर-थर कांपते हुए उसकी ओर ताककर बोला, "अरे ऐ पानू, सुन!"

"जी!" वह मुड़कर खड़ा हो गया।

"उस रोज तू दरख्वास्तपर अँगूठेका निशान लगाने नहीं आया ? बहुत बड़ा आदमी हो गया है क्या ? शहरमें मकान बनायेगा, मैंने सुना, तू गाव छोड़ रहा है ?"

खीसे पानूकी भवें सिकुड़ गयी। लेकिन जवाब नहीं दिया उसने। डाक्टर अन्दरसे दरख्वास्त निकाल लाया और स्नेहसे आदेश देते हुए बोला, "ले लगा दे निशान। तेरे ही लिए मैंने अभीतक दरख्वास्त नहीं भेजी।"

पानूने बिना ना-नू किये अँगूठेका छाप लगा दी। उस रोज वह आया नहीं। दिन भर गाव छोड़नेका सकल्प करता रहा, जक्शन बाजार तक घूम आया। बात तो वह सामयिक जोशोखरोश की थी। आज भी घड़ी भर पहले उसने डाक्टरकी बातपर भवें सिकोड़ी, सो भी डॉक्टरकी बातोंकी रुखाईके कारण। वरना मदद या भीख लेनेमें उसे कोई एतराज नहीं। उसने कृतज्ञताके साथ ही अँगूठेकी छाप लगायी। छाप लगाकर अँगूठेकी स्याही माथेमें पोछते और एहसान जताते हुए बोला, "डाक्टर बाबूकी तरह गरीबोंका उपकार कोई नहीं करता।" डॉक्टरके जूतेका धूल उँगलीकी नोकपर लेकर उसने मुँह और माथेपर लगा ली। भूपाल चौकीदारने भी उसी तरह किया।

डाक्टर कुछ सोच रहा था। सोचकर दो एक बार गरदन हिलाकर बोला, "रुक जा जरा। एक छाप और लगा दे।"

"जी ?" पानूने डरकर पूछा। यानी दोबारा क्या ? अँगूठेके निशानसे बहुत डरते हैं ये।

'मैं इस टैक्स असायेसरके खिलाफ दरख्वास्त दूँगा। तुम लोगोंका घर स्वाहा हो गया, किसानोंको अन्न खानेमें ही लगी है। ऐसी हालतमें कुर्कीकी धमकी! आखिर यह क्या लुटेरोंका मुल्क है!'

इस बार पानूका चेहरा डरसे सूख गया। यूनियन बोर्डके हाकिमोंके खिलाफ दरख्वास्त! उसने भूपाल चौकीदारकी तरफ देखा। वह भी मुश्किलमें पड़ गया

था। डाक्टरने ताकीद की, "लगा, निशान लगा।"

"जी नहीं। यह मुझसे नहीं होगा।" यह कहकर पानू तेजीसे चल पड़ा। उसके पीछे पीछे भागकर भूपालकी भी जानमें जान आयी। भूपाल सोचने लगा—'परसीडेण्ट' को खबर कर देनी चाहिए, नहीं तो यह शुबहा होगा कि इस साजिशमें मेरा भी हाथ है।

डॉक्टर बेहद नाराज होकर भागते हुए पानू और भूपालकी ओर देखता रहा। कुछ ही क्षणोंमें वह उबल पड़ा— 'हरामजादोंकी जात! जा तुम लोगोंकी भलाई कर यह गया है।" डाक्टर दरख्वास्तको फाड़ डालनेपर आमादा हो गया।

"फाड़ो मत डॉक्टर, मत फाड़ो। —पाठशालाके गुरु देवूने मना किया। उसने करीबसे ही सब कुछ देखा था। ऐसे मामलोंमें उसकी आंतरिक सहानुभूति थी।

देवू घोष जरा अजीब किस्मका आदमी है। वह गांवके पचास एक होते हुए भी जैसे सबसे अलग रहता। उसका मतामत भी आम लोगोंमें अलग है। अपनी दुर्दशा दूर करनेके लिए वह मददकी भीख मांगनेका हामी नहीं। अनिरुद्ध और छिरुको सीख देनेके लिए वह जमींदारकी शरण लेनेका हिमायती नहीं, लेकिन पंचायत बुलानेमें वह अगुआ है। तो भी आज उसने जगन डॉक्टरको दरख्वास्त फाड़नेसे मना किया।

डॉक्टरने कहा फाड़नेसे मना कर रहे हो? उन कम्बख्तोंकी भलाइ करनेको कहते हो? उनकी सारी करनी तो तुमने देखी।

देवूने हँसकर कहा सो तो देखा मगर उनपर बिगड़कर भी क्या करोगे बोलो! तुम दरख्वास्त दो मैं भी दस्तखत करता हूँ औरोंसे भी करवा देता हूँ।'

डॉक्टरने पण्डितको बीड़ी दियासलाई दी। कहा बैठो! उसके बाद घरकी ओर मुँह करके आवाज दी— मीनू दो प्याला चाय "

मीनू डॉक्टरकी लड़की है।

डॉक्टरने फिर कहना शुरू किया 'लोग सोचते क्या हैं जानते हो पण्डित? सोचते हैं कि इसमें मेरा कोई स्वार्थ है। जोर जुल्मका प्रतिकार होनेसे बचेंगे सभी, लेकिन राजा हो जाऊंगा मैं।

देवूने बीड़ी सुलगायी। दियासलाई डाक्टरको देते हुए जरा हँसकर कहा, "स्वार्थ तो है डॉक्टर!"

'स्वार्थ!' डॉक्टरने तीखी किन्तु अचरज भरी आँखोंसे देवूको

ओर निहारा।

दनू सुलगायी हुई बीड़ीकी आगपर नज़र रखकर हँसते हँसते ही महज भावसे बोला, 'स्वार्थ तो है ही! दस लोगोंके बीच तुम्हारा मान होगा, दो दिनके बाद यूनियन बोर्डके मेम्बर भी हो सकते हो—स्वार्थ नहीं है? मेरा तो अपना खयाल है स्वार्थके बिना आदमी दुनियामें टिक ही नहीं सकता।'

डॉक्टरकी पेशानीपर शिकन पड़ गये। बोला, "यह भी अगर स्वार्थ ही है तो साधु-सन्यासी जो भगवान्‌का भजन करते हैं, उसमें भी स्वार्थ है। तब तो वशिष्ठ और बुद्धदेव भी स्वार्थी हैं।"

"स्वार्थको लेकर अर्थमें न लो तो यह जरूर सच है। आखिर परमार्थका भी तो अर्थ है!' दनूने हँसते हुए कहा।

डाक्टरने कहा, 'यूनियन बोर्डका मेम्बर मैं होना चाहता हूँ। जरूर होना चाहता हूँ। मगर यह इनकी सेवा करनेके लिए होना चाहता हूँ। परलोक-वैराग्य और जप-तपमें मेरा विश्वास नहीं। छिरू पालका ही दवा जारी करेगा और घर बैठे जप-तप करेगा, धूमधामसे काली-पूजा करेगा, ऐसे धरम-करमको मैं लात मारता हूँ।'

इसके बाद डॉक्टरने एक लम्बा भाषण शुरू कर दिया—दुनियामें जीवोंको धन्य कौन नहीं करना चाहता? कोई जप-तपसे ईश्वरको पाकर धन्य करना चाहता है, कोई लोक-सेवासे धन्य होना चाहता है, आदि आदि। भाषणके जवाबमें दनू घोष भाषण दे सकता था, लेकिन उसने दिया नहीं। सिर्फ इतना-भर कहा कि 'इनका उपकार करना चाहते हो, यह बड़ी अच्छी बात है डाक्टर! लेकिन गाँवके लोगोंको तुम छोटा क्यों समझते हो? आज तुमने कह दिया कि गाँववालोंके साथ मैं नाता नहीं करूँगा। कई दिन पहले गाँवमें दो-दो सभाएँ हुईं, मगर तो तुम नहीं गये, उल्टे तुमने लुहारको उकसा दिया।'

'हरगिज नहीं। गाँववालोंके खिलाफ मैंने शिकायत नहीं उठायी है। अनिरुद्धका धान काट लिया, इसलिए मैंने उस छिरूपर नालिश करनेको कहा है, बस।'

'अच्छा मान लिया। पंचायतमें क्यों नहीं गये?'

"पंचायत! जिस पंचायतमें रुपयोंके जोरपर छिरू पालकी पूछ है, वहाँ मैं नहीं जाता।'

'उसकी वह पूछ तुम खतम कर दो। वहीं जाकर अपने जोरसे खतम करो। या घर बैठे रहनेसे तो वह और बढ़ जायेगा।'

जगन अबकी चुप रह गया।

"अच्छा, यह बताओ गाववालोंके साथ नवाज़ क्यों नही करोगे तुम ?"

डाक्टर अब सयमित हो गया था। ज़रा देर बाद बोला, "नही करूँगा—ऐसी प्रतिज्ञा तो नही की है मने।"

दवून खुश होकर कहा, "यह हुई बात! दस मिलकर काम करो तो हार-जीतकी बात नही। जो भी करो, सब एक होकर करो। फिर देखोगे कि तीन हो दिनम सब दुरुस्त! अनिरुद्ध लुहार गिरीश बर्ई, तारा हजाम, पातू मोची यहातक कि छिरूको भी नाक रगडवाकर छोड़ूगा। इसके बिना हजार दरख्वास्त करनेपर भी कोई लाभ न होगा डाक्टर! दुनियामें अकेले तो बाघ और सिंह रहते हैं मनुष्य नही।'

डाक्टर बोला, बहुत खूब! मुझे कोई एतराज़ नही। लेकिन एक होनेके मानें सब काममें एक होना होगा। गाँवको जब गरज पड़े तो जगन डॉक्टर और देबू घोष और यूनियन बोर्डके वोटका समय आये तो कंकनाके बाबू और छिरू पाल'

दवूने ठाककर कहा, अबकी तीन नम्बर वार्डसे हम तुम खडे होंगे। तब तो होगा ?

देवनाथ घोष—देबू पण्डित जरा स्वतन्त्र सा आदमी है। अपनी विद्या-बुद्धिपर उसे अगाध विश्वास है। उसकी इस बुद्धिके मामलेमें चेतनाके साथ थोड़ी कल्पना थोड़ा-सा स्वार्थ मिला हुआ है। विद्या भी कैसी खास क्या है मगर देबू उसीकी दिन रात चर्चा करता है। खोज खोजकर वह किताबें जुटाता और पढ़ता है, समाचार पत्रोंमें एक एक बातकी खबर रखता है। फिर महाग्रामके न्यायरत्न महाशयका पोता विश्वनाथ एम० ए० का छात्र है और उसका घनिष्ठ मित्र। वह उसे ढेरो किताबें ही ला लाकर नही देता बातचीतमें भी कितनी कितनी नयी बातें बता जाता है। इन्ही सब कारणोसे उसे थोड़ा अहकार भी है। गाँवमें अपने बराबरका विद्वान उसे दूसरा तो नजर नही आता! उसके मुकाबले जगन डॉक्टर तक कम पढ़ा लिखा है। जगन कंकनाके हाईस्कूलमें फोर्थ क्लास तक पढ़ा, उसके बाद पढ़ना छोड़कर उसने बापके पास डॉक्टरी सीखी। देबू फर्स्ट क्लास तक पढ़ा है। पढ़ने लिखनेमें वह अच्छा ही था पढ़ता तो मैट्रिक पास करता अच्छी ही तरह पास करता—इस बातको कंकनाके मास्टर आज भी कबूल करते है। और देबूका तो खयाल है यदि पढ़नेका मौका मिलता तो वह स्कॉलरशिप के साथ पास करता। उसके बाद आई० ए०, बी० ए०।

उसकी कल्पना दूर-दूर तक उड़ान भरती। वह मजिस्ट्रेट तक हो सकता है—उसने कम वह तो ऐसा ही समझता है। और उसने लम्बी साँस ली अपनी बदनसीबीपर।

अचानक बापकी मृत्यु हो गयी। खेती बारी, घर गृहस्थी देखनेवाला दूसरा आदमी नहीं था घरमें। उसकी माँ बस्तीकी दूसरी औरतोंकी तरह बाहरमें घूमा करे, लोगोंके घरदारी तरह लन्ती फिरे, देवूकी कल्पनामें यह भी असह्य हो गया था और बापके मरनेपर घरकी हालत डूबने-डूबने-जैसी हो गयी। पास एक कौड़ी नहीं, घरमें धानका दाना नहीं। ऊपरसे लोगोंका देना हो गया था। इसीसे पढ़ाई छोड़कर वह गृहस्थीमें लग गया। लेकिन सन्तुष्ट होकर नहीं, मनमें उसके सदा ही एक असन्तोष जमा रहता जो आज तक बना है। कुछ साल पहले जब स्वायत्त शासनके कानूनके अन्तर्गत गाँवके स्कूलको भार डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और यूनियन बोर्डने ले लिया तो खेती-बारी छोड़कर उसने वहाँ मास्टरी कर ली। वेतन बारह रुपये माहवार। खेती बटाईपर लगा दी। लोगोंने अब 'पण्डितजी' कहना शुरू किया और थोड़ा सम्मान भी देने लगे मगर देवूको उससे भी तृप्ति न हुई।

उसका खयाल है, गाँवका श्रेष्ठ व्यक्ति है वह। उसे ही श्रेष्ठ व्यक्तिका सम्मान मिलना चाहिए। जगन्के शिशु-सन्तुरु जिस प्रकार लतरोंके कठिन जालको फाड़कर सत्तम ऊँचा सिर उठाना चाहते हैं उसी प्रकार उद्धत पराक्रमसे आज तक वह गाँववालोंसे लड़ता आया है। लेकिन वह अकेले ही अखण्ड आलोकका भागी होनेके लिए ऊपर नहीं उठना चाहता, नीचेकी लतरोंके उसीके सहारे, उसीके साथ ज्योतिके राज्यके अभियानका आकाशकी ओर चलें, यह है उसकी आकांक्षा। छिरू पालकी दौलत और उसकी पशुतासे वह अन्तरसे घृणा करता है। जगनका दिखाऊ देश प्रेम और आभिजात्यका दम्भ उसके लिए जैसा हास्यास्पद है वैसा ही असह्य भी। हरीश मण्डलके परम्परागत पंचके दावको भी वह नहीं मानना चाहता। भवेश और मुकुन्द उसके बड़प्पनसे पण्डिताईकी बात करते हैं यह भी उसे बरदाश्त नहीं।

देवूके मनमें यह उष्मा बेशक अहेतुक या मन्त्र अहम ही नहीं उपजी है। अपने गाँवको वह प्राणोंसे प्यार करता है। उस वह अपनी आँखोंके सामने दिन दिन अवनतिका आर रुख देख रहा है पैसे और लाठीकी ताकतसे छिरू मनमाना कर रहा है। और सिर्फ छिरू ही क्या, गाँवका कोई भी किसीको नहीं मानता। सामाजिक आचार-व्यवहार सब भस्म हो चला है। गाँवमें कोई मरता है तो उसकी लाश निकलनेमें मुश्किल पड़ती है सामाजिक भोजमें

गरीब अमीरका एक ही पंक्तिमें भेद दिखाई पड़ता है। लुहार, बढ़ई, बजनियेने काम छोड़ दिया है, दाई-नाऊ सनातन नियमोंको तोड़नेपर उतारू हैं। जिसे महज पाँच रुपयेकी मासिक आय है वह दम खच करके बाबू बन बैठा है। कर्जसे खेत बिकता जा रहा है, मगर तो भी शौकीनीका कपड़ा जरूरी है, घर घरमें लालटेन चाहिए ही। छोकरोंकी जेबमें बीडी-माचिस पहुँच रही है, जबकभी शहरमें गये तो दो एक पैसेकी सिगरेट खरीदे बिना नहीं मानते। तम्बाकू और चक्मककी गायब हो रही है। जिनमें इन सबके प्रतिकारकी जुरत नहीं है वे प्रधान क्या होना चाहते हैं? किस बूतेपर? ऐसे प्रश्न जिनका सिर दर्द बन रहते हैं दयू उन्हीं लोगोंमेंसे है।

पाठशालामें लड़कोंको पढ़ाते-पढ़ाते देवू इस तरहकी बातें बहुत कुछ सोचता। गाँवके अन्य लोगोंसे बहुत हद तक अपनेको अलग रखते हुए अपने भाव औरोंके आगे रखता साथ ही-साथ अपने व्यक्तित्वको प्रतिष्ठित करनेकी भी अथक चेष्टा करता है। इसका कोई सामान्य अवसर भी वह हाथसे जाने न देता।

इसीलिए जब जगन डॉक्टरने यूनियन बोर्डके खिलाफ आवाज उठायी तो उसके आभिजात्यके दम्भसे नफरत करनेके बावजूद उससे मिलनेमें उसे हिचक नहीं हुई।

देवनाथ और जगनने एक साथ मिलकर उत्साहपूर्वक काम शुरू कर दिया। दरख्वास्त भेज दी गयी। दोनोंने मिलजुलकर नवान्नके दिन एक उत्सवका भी आयोजन किया। गाँवके चण्डीमण्डपमें मनसा भसान का गीत होगा। इस गीतके दलको इधर बिहुलाका दल कहते हैं। बाउरियोंकी एक पार्टी थी। उसीको ठीक किया गया। चन्दा चावल वसूला गया और उसीसे पार्टीवालोंके लिए शराबका इन्तजाम किया गया। इतनेसे ही वे लोग बेहद खुश थे। 'भासान गान' के इन्तजामका एक खास मतलब और भी था। रविवारके दिन छिरू पालके यहाँ अन्नपूर्णाकी पूजा होती है और उसी बहाने सारे गाँवके मार भी लोग वहाँ जुट जाते हैं। तम्बाकू पीते हैं गपशप होती है ढोल[1] बजाकर थोड़ा-बहुत कीर्तन गान है। इस बार छिरूने शायद कुछ विशेष आयोजन किया है। रातको लोगोंका खिलाने पिलानेका इन्तजाम और एक यात्रा पार्टी को भी शायद बयाना दे रखा है। छिरूकी भाँति शाली मजलिसमें कमसे कम रुन दो रुपयोंका पता चला है। गाँवके लोग जिसमें छिरूके यहाँ न जायें, देवू और जगनने इसीलिए यह सब प्रबन्ध किया था। गाँवको सघबद्ध करनेकी

१ मृदंग जैसा एक खास बाजा।

कोशिशकी यह पहली भूमिका थी उनकी।

खेतिहरोंके गाँवमें नवान्नकी धूम ज्यादा होती है यही वास्तवमें एक सार्वजनिक उत्सव है। खेतीकी असली फसल, अगहनी धान, पक चुका था। अब कटनी शुरू होनेको थी। कातिक 'संक्रात' को मंगल मनाकर ढाई मुट्ठी धान काटकर लक्ष्मीपूजा की जा चुकी थी। आज अब उसी धानके चावलसे तरह-तरहकी चीजें तैयार करके देव और पितरलोकको भोग दिया जायगा। साथ ही घर घर धान लक्ष्मीकी पूजा होगी। गाँवके तमाम बच्चे आज सवेरे ही नहा चुके हैं। अगहनके तीसरे ही हफ्तेमें सर्दी खाँसी हो आयी, फिर भी नवान्नकी उमंगमें लड़के पोखर पानीको खूँद कर ही निकले। अभी वे चण्डीमण्डपके प्रांगण में धूपमें खड़े होकर लँगड़े पुरोहितके, हड्डियोंके ढाँचे-सरीखे घोड़ेके पीछे हो-हल्ला मचानेमें मशगूल थे। बूढ़े शिव और भग्न कालीका भोग लगे बिना नवान्न नहीं होगा। कुमारी किशोरी लड़कियाँ पीठपर गीले केश पसारे नये कटोरेमें नया चावल, चीनी दूध, केला, ईखकी टिकली, अदरख और मूलीके टुकड़े सजाकर दक्षिणा सहित मन्दिरके बरामदेमें रख रही थी। अधिकतर तो दक्षिणामें चार पैसे ही रख रही थी, कोई कोई दो पैसे और कोई एक ही पैसा। दो चार लड़कियाने दो-दो आने भी रखे। जिनके यहाँ कुमारी लड़कियाँ नहीं हैं वहाँसे बूढ़ी-बूढ़िया भोगकी सामग्री लेकर आ रही थी। गाँवका पुरोहित लँगड़ा चक्रवर्ती, सामग्री ले-लेकर ठाकुरके सामने रख रहा था और दक्षिणाको अण्टीमें लगाता जाता था। बीच बीचमें उन लड़कोंको डाँट भी बता रहा था—"ऐ! अबे ओ लटने! बड़े बदमाश हैं ये तो। अरे, घोड़ेके पीछे मत जा, कहीं झाड़ दी एक दुलत्ती तो आँत निकल आयेगी।"

यानी घोड़ेकी दुलत्तीसे प्लीहा फट जायेगा। लँगड़ा चक्रवर्ती इसी घोड़ेपर गाँव-गाँव यजमानी करता फिरता है। लौटते वक्त घोड़ेकी पीठपर वह खुद होता है और उसके माथेपर होता है चावल-केलेका बोझा। घोड़ा काफी होशियार है चक्रवर्ती बिना लगाम थामे दोनों हाथों सिरके बोझको सहारा देकर मजेमें चलता है। हाँ, इतना जरूर है कि चाहे तो वह अपना पाँव जमीनपर भी टेक सकता है। धरतीसे ज्यादा-से-ज्यादा एक ही फुट ऊँचे उसके पाँव लटकते रहते हैं।

लड़कोंमेंसे कितने ही दूरसे ढेलेपर ढेला मारकर घोड़ेको तंग कर रहे थे। कुछ जो जरा साहसी थे वे सण्टी लेकर उस पीछेसे मार रहे थे। चक्रवर्ती बेहद खफा हो गया। मगर उसे कोई उपाय न सूझा। लड़के जैसे उसकी बातपर कान ही नहीं देंगे, इस तरह सब तुले हुए थे। एक प्रौढ़ा विधवा भोगकी सामग्री लिये आयी और उसीने पुरोहितका उपाय कर दिया। बोली "अरे, तुम सबने

मिलकर उस घोड़ेको छुआ है ? मरेछ कहींके ! जाओ, सब फिरसे नहाओ।"

पुरोहितने कहा 'जरा इन लड़कोंकी करनी देखो। दुलत्ती झाड़ेगा तो 'पिलहा' फाड़ डालेगा। तब दोष मढ़ा जायेगा मेरे मत्थे।"

लेकिन विधवाने उसकी बात नहीं मानी। कहा, "तुम भी क्या कहते हो पुरोहितजी, बकरी-सा घोड़ा है वह क्या 'पिलहा' फाड़ डालेगा ? तुम्हारी भी बात खूब होती है ! बच्चोंको क्या कहूँ आचार विचार तो भई तुम्ह भी नहीं है। सामनेके दोनों पैर बाँधकर छोड़ देते हो और यह दुनिया भरका जूठा, जूठे पत्तल, गोबर और गन्दगी रौंदता फिरता रहता है। उस रोज क्या देखती हूँ कि हमारे यहाँके नये पोखरके बाँधपर—राम राम कहते हुए भी जी मिचलाता है—घास चर रहा है ! और तुम हो कि उसी घोड़ेपर आकर ठाकुर पूजा करते हो !"

पुरोहितने कहा गंगाजल छिड़कता हूँ फूआ गंगाजल ! रोज साँझको घर लौटनेपर पहले गंगाजल छिड़कता हूँ फिर बाँधता हूँ उसे। और मैं तो गंगाजल का स्पर्श करता ही हूँ।"

"यह सब झूठ कहते हो तुम।

'भगवान् कसम ! जनेऊ छूकर कहता हूँ। गंगाजल छिड़के बिना हरगिज घरमें नहीं जाता। बाहर खड़ा माटीम पर टापता रहेगा और हिनहिनाता रहेगा।'

फूआ जाने क्या कहने जा रही थी कि हड़बड़ाकर जरा आगे हट पलट कर खड़ी हुई—'कौन है री ? देखो जरा हनहनाती चली आ रही है।'—पीछेसे किसीकी लम्बी कायाका माथा अपने पाँवपर पड़ते ही छू जानके भयसे झट हटकर उसने पूछा 'कौन है ?'

कोई बहू थी। लम्बी-सी। घूँघटम ढका चेहरा। उसने जवाब नहीं दिया। भोग-सामग्री चुपचाप पुरोहितके सामने रख दी।

'आ, लुहार-बहू हो ! मन सोचा जाने कौन है !" फूआने कहा।

ठीक इसी समय डॉक्टर और गुरुजी आ पहुँचे। देबू गुरुजीने कहा 'पुरोहित जी आप अनिरुद्ध लुहारकी पूजा गाँवके साथ न करें, हमलोग यह न होने देंगे।

जगन और देबू इसी मौक़ेकी ताकमें कहीं पास ही खड़े थे। पद्मको चण्डी मण्डप आते देख वे भी तुरत आ पहुँचे।

पुरोहित कुछ देर देबूके मुँहकी ओर ताकता रहा। फिर बोला—"यह कैसी बात है ! पूजा गाँवके साथ नहीं तो और कब होगी ?"

हम यह नहीं जानते। लुहार खुद जैसा समझेगा करेगा। जब उसने गाँवके नियमको तोड़ा है तो हम उस गाँवके क्रिया-कर्ममें साथ क्यों दें ?

पदम उसी तरह घूँघट काढे स्थिर खड़ा रही। उसमें ज़रा भी चंचलता नहीं थी। पुरोहितने उसकी ओर ताकते हुए बिल्कुल निरुपाय-जैसा होकर कहा, 'तो मैं क्या करूँ बिटिया!'

देवनाथने पद्मसे कहा "तुम भोग लौटा ले जाओ। अनिरुद्धसे कह देना कि गाँववालोंने भोग नहीं चढ़ाने दिया।'

पदम धीरे धीरे चली गयी, मगर पूजाका पात्र उठाकर नहीं ले गयी। पात्र और दक्षिणाके पैसे वहीं पड़े रहे।

तब पुरोहितने कहा, 'अरी! पूजाका पात्र तो लेती जाओ बिटिया!"

देवूने फिर कहा 'रहने दीजिए। लुहार तो अभी आयेगा ही। हाँ, जो भी हो, आज कोई निपटारा हो ही जायेगा!"—देवूके मनके कोनेमें अनिरुद्धके लिए अभीतक थोड़ी-सी सहानुभूति थी। अनिरुद्ध उसका सहपाठी है और फिर गलती भी सिर्फ उसीकी नहीं है और न ही उसने पहले अन्याय किया है। पहले अन्याय तो गाँववालोंने ही किया है। यह बात भी उसके मनमें काँटेकी तरह टीस रही थी।

पुरोहितने मामलेको ठीकसे समझा नहीं था और वास्तवमें समझनेकी उसे कभी ज़रूरत भी न थी। फिलहाल एक घरकी पूजा-सामग्री छूट रही है उसके लिए विशेष चिन्ताकी बात नहीं थी। उसकी भवें सिकुड़ गयीं, बोला, "अरे भई डॉक्टर और गुरुजी "

जगनने बीचमें ही टोककर सख्त आदमीके ढंगसे कहा, गिरीश बढ़ई और तारा हजामकी भी पूजा नहीं होगी पुरोहितजी!—यह आपसे कहे देता हूँ। हममें से कोई-न-कोई अन्त तक रहेंगे ज़रूर, हो सकता है तबतक मैं न रहूँ इसीलिए पहलेसे कह देता हूँ।"

ठीक इसी समय छिरू पालने आकर पुकारा, 'पुरोहितजी!'

छिरू गरदकी धोती और रेशमी चादर पहन रखी थी। भावभंगीसे वह आज कुछ और ही दिखाई दे रहा था।

व्यस्त होकर पुरोहितने कहा 'बस, आया भैया! बहुत लगेगा तो आधा घण्टा। और भई गुरुजी, डॉक्टर ये लोग क्या नहीं आ रहे हैं?'

गम्भीर होकर जगन डॉक्टरने कहा इतना जल्दबाज़ी करनेसे तो होगा नहीं पुरोहितजी आ रहे हैं सब। एक एक करके सभी आ रहे हैं। एक जजमानके लिए दूसरेका परेशान करना तो अच्छा नहीं होता।'

छिरू बोला, 'ठीक है, ठीक है। दूसरा काम करके ही आइए। मैं एक बार तकाज़ा किये जा रहा हूँ।' छिरूने अपने बदसूरत चेहरेको भरसक कोमल और

नम्र बनाते हुए कहा, "डाक्टर, कृपा करके आइएगा जरूर। दवू, तुम भाई जरा देखभाल कर देना आकर "

उसकी बात पूरी भी न हो पायी थी कि अनिरुद्धकी गरजसे सारा चण्डी मण्डप अचानक चौंक उठा

"कौन है ? कौन है ? किसके दस सिर हुए हैं ? किस नवाब-बादशाहने मेरी पूजा बन्द की है, सुनूं तो जरा ?

अनिरुद्धने रौद्र रूप धारण कर रखा था।

चक्रवर्ती हक्का-बक्का हो गया। देवनाथ सीधा खड़ा हो गया और जगन डॉक्टर बुजुर्गोंकी तरह दिलासा देते हुए थोड़ा आगे बढ़ा, लेकिन छिरू जहाँका तहाँ स्थिर ही खड़ा रहा।

डॉक्टर बोला, ठहरो, चिल्लाओ मत अनिरुद्ध।'

व्यंग्य और घृणा भरी एक नजर छिरू पालपर फेंककर डॉक्टर तब सबपर डालते अनिरुद्धने मन्दिरके बरामदेसे खम्भेके छोड़ हुए पूजा-पात्रको उठा लिया और उसे दोनों हाथों थोड़ा ऊपर उठाकर मानो देवताको दिखाते हुए कहने लगा, 'हे शिवजी महाराज हे काली मैया आओ और विचार करो, तुम्हीं लोग विचार करो।' —और इतना कहकर वह पलटा।

डाक्टरकी आँखोंसे मानो चिनगारी छूट रही थी, लेकिन अनिरुद्धको पकड़कर उसे दण्ड देनेका कोई उपाय नहीं था।

किन्तु थोड़ा आगे जाकर अनिरुद्ध लौटा और दक्षिणावाले पेड़ प्रणाम करते हुए एकाएक ध्यान जानेपर उसे दिखाई पड़ा कि दवू और जगन डॉक्टरके पास ही तख्तपर छिरू पाल खड़ा है। छिरूको देखते ही उसका गुस्सा पल भरमें जैसे पागलपनमें बदल गया। वह चीख उठा बड़केके माथेपर मैं झाड़ू मारता हूँ विद्वानके माथेपर झाड़ू मारता हूँ। मैं किसी मालको नहीं मानता। देखता हूँ कोई साला मेरा क्या कर लेता है।

लमहे भरके लिए वह छिरूकी तरफ मुड़कर छाती फुलाकर खड़ा हो गया। जैसे द्वन्द्व-युद्धके लिए ललकार रहा हो।

लँगड़ा पुरोहित और पूजा कोई दुर्घटना हो जानेकी आशंकासे काँप उठे। इतनेपर तो छिरू पालको बाघकी तरह अनिरुद्धपर टूट पड़ना चाहिए था। लेकिन आश्चर्य कि उसने अनिरुद्धसे हँसकर कहा मुझे माहेश्वरी इसमें लपेट रहे हो अनिरुद्ध मैं इन बातोंमें नहीं हूँ। मैं तो पुरोहितजीको बुलानेके लिए आया था।'

अनिरुद्ध अब वहाँ नहीं रुका। जिस तरह हनहनाते हुए वह आया था,

उसी तरह चला गया। जाते-जाते भी कहता गया—"म सब सालोंको जानता हूँ। धमात्मा ह ! हूँ ! रातो रात धमात्मा बन गये ह सब !"

छिरू अटूट धीरजके साथ चुपचाप चण्डामण्डपस उतरकर घरकी आर चल पडा। वास्तवमें छिरूके चरित्रकी यही एक विशेषता ह। जब वह अपने इष्टको स्मरण करता ह धरम-करम या पूजा-पाठमें लगा रहता ह उस समय वह कुछ और ही हो जाता ह ! उस दिन वह किसामे विराध नही करता, किसीकी बुराई नही करता इस दुनियाके सब कुछस अलग एक दूसरी ही दुनियाका आदमी बन जाता ह। बस भी आज सारे हिंदू समाजका जीवन ही एस दो भागोंमें बँट गया ह। कम जावन और धम जावन बिल्कुल अलग अलग दो बातें ह—दानोम जसे काई सम्बन्ध हा नही। दवताकी याद करत हुए जिसकी आँखोंमें आँसू बह जाता ह, वहा आदमी पूजाक तुरत बाद आँखें पोछते हुए विषयक आमनपर बठकर जाल फरब करने लगता ह। केवल हिन्दू-समाजम ही क्या ? दुनियाक सभी देशा सभी समाजाम जीवनकी धारा क्रमावश एसे ही दो हिस्सा में बँट गयी ह। दुनियाकी बात रहने दीजिए, छिरूके ही जीवनमें यह विभाजन बडा साफ ह—काफी स्पष्ट ह। आजका छिरू और ही ह—यह छिरू व्यभिचारा, पाखण्डा छिरूक प्रचण्ड भारकी ठेलकर दवताकी पूजाके समय कस प्रकट हो जाता ह यह एक अजीब बात ह। पाखण्डा छिरूको अन्याय या पापकी काई परवा नही और दवपूजक छिरूका भी पाप काटनेकी कोई हाजत नही। ह केवल परलाक पानके लिए एक निष्ठा भरी तपस्या —निश्चल विश्वास ! दिन और रातक समान परस्पर विराधी इन दा छिरूआका कभा आमना-सामना नही होना, मगर कोई विराध भा नहा ह। फिर भा छिरूक दिन, मतलब कि जीवनका प्रकाश भरा हिस्सा सदैव छिना-सा ह उसकी आयु बडी छाटी हाती ह ! छिरूक व्यवहारम आज कुछ और भी नयापन था। उसका आजकी बातें न केवल मीठा थी, बल्कि अभिजात जना जैसी थी, भद्र और साधु। पिछले दवपूजक छिरूस आजका दवपूजक छिरू और भी अलग था, और भी नया !

कुछ हा दर बाद चण्डीमण्डपके रास्तेमें बाउरा, डाम माचियोंके झुण्डक झुण्ड औरत-मद पाँत बाँधकर जान कहा जा रहे थे। किसाक हाथमें थाला, किसीक मिट्टीका कुण्डा और किसाके कोइ और बरतन-भाण्ड। जगन डाक्टरने पूछा, 'तुम लाग जा कहाँ रहे हो ?"

'जा घोष बाबूक यहाँ! अन्नपूर्णाका प्रसाद पानेक लिए बुलाया ह।'

'किसने ? यह घाष कौन ? छिरू ? यह छिरू घाष कबस हा गया !'

कई भद्दी भद्दा गालियाँ दकर डाक्टरने छिरूक लिए कहा, "जो, वाह र

साधु ! दखता हूँ वडा भला वन बठा ह !"

देवू स्तब्ध हाकर सोच रहा था।

ग्यारह

उक्त घटनाक कुछ दिना बाद दवू स्तब्ध होकर बहुत-सी बातें सोच रहा था। गावकी पाठशाला चण्डीमण्डपमें ही चलती ह। पाठशालाकी स्थापनाक बादसे ही चण्डीमण्डप उसका निश्चित स्थान ह। यह बात बहुत पहलकी ह। उन दिना न डिस्ट्रिक्ट बोड था, न युनियन बाड। पाठशाला गाँवकी थी गाँवके लोगोकी। लोग पण्डितजाको महीनम सीधा दते और लडक बच्च चण्डी मण्डपम पढते। उन दिना कालो और शिवका राज पूजा होती थी और वहा पुजारी पाठशालाका पण्डित होता था। बादम पता नही पुजाराकी देवात्तर जमीन कमे और कहा गायब हो गयी ! लाग तो कहत ह कि जमादारक पहलक किसी गुमाश्तेने नाममात्रकी लगानपर बन्दोबस्त लेकर अपनी जोतम मिला ली थी। उसने मिलाया भी इस चालाकीसे था कि उद्धारका अब काई उपाय नही था। यहाँतक कि निशान किये खेताका काटकर इस सूरतस बदल दिया कि उस जाकर निकालना भी कठिन ह। उसक बाद भी बहुत दिना तक एक ब्राह्मण गाँवकी पुराहिताई दव-सवा आर पाठशालाक सहारे यहा रहा था। दो एक साल पहले वह भी चल जानेको विवश हुआ। शिक्षा विभागक नय नियमक अनुसार अयाग्यताके कारण उस बखास्त करक नया प्रबन्ध किया गया। बहरहाल पाठशालाका भार तीन सालसे द पर ह।

कभी दवू भी इसी पाठशालाके पुराहित-पण्डितस पढा ह। एक आरपण्डित पूजा करता हाता—जयन्ती मगला काली—और अचानक मन्त्रका पढना बन्द करके चीख उठता ए अर ऐ चण्डी तेरह पचे पचहत्तर नही, पसठ। तेरह छके अठहत्तर ! हाँ !

यह अनिरुद्ध भी तब उसके साथ पढता था। पण्डित उससे कहा करता, 'इस दगाके लाहसे किसना काम नही हाता ह बट ! अनिरुद्ध, तुम विलायत जाओ। वहाँ कल-कारखानाका कारोबार ह सुई-आलपीन बनता ह लोहस। विलायती पण्डितक सिवा तुम्हें पढ़ाना किसीक बसका नही।"

छिरू देवूका रिश्तेदार है। भतीजा लगता है। मगर उम्रमें काफी बड़ा है। पहले छिरू देवूसे कई दरजा ऊँचा था। अन्तमें एक एक दरजेमें दो तीन सालका विश्राम लेकर जिस रोज उसने देवूको अपना सहपाठी पाया उसी दिनसे उसने पाठशालाको सदाके लिए प्रणाम कर लिया। उसके बाद ही ब्याह करके वह दुनियादार बन गया और धीरे धीरे दुनियादारीका मूल-सूत्र पाँच पाँच गाँवोंके लोगोंको हाथमें डाल दिया। आज वह जाना माना आदमी है, गाँवका मातबर।

अनिरुद्ध और छिरू पाल—इन दो व्यक्तियोंने गाँवकी सारी शृंखला तोड़ दी। गिरीश बढ़ई और तारा हजाम भी साथ हैं। देवू चकित होकर सोच रहा था सामाजिक नियमकी अवहेलना करके अनिरुद्ध जो इस प्रकार घमण्डके साथ चण्डीमण्डपसे भोग उठा ले गया उसका समाजके किसी भी जनने तो प्रतिकार नहीं किया! क्या इसका कोई प्रतिकार नहीं है? वह खुद दूसरे कई दिन लोगोंके दरवाजे दरवाजे घूमता रहा, गाँवके लोग उसे मानते हैं, बहुतेरे उसपर श्रद्धा रखते हैं लेकिन इस मामलेमें हर किसीने एक ही बात कही 'इसका तुम करोगे भी क्या देवू? उपाय क्या है? बताओ कुछ हो तो। जो हो तुम करो! लेकिन समझते हो कि नहीं वह होनेका नहीं। समाज समाज क्या करते हो? समाज है कहाँ?"

समाज नहीं है यह देवूने भी समझा है। उस जमानेमें जिन लोगोंने समाज बनाया था वे ही उसपर शासन भी करते थे वे समाजको धरम समझते-मानते थे। उस तरहके लोग आज नहीं हैं। आजके लोग और ही तरहके हैं। न वह शिक्षा है अब, न वैसे शिक्षक ही रहे। मालवके नामपर ये अमानव हैं।

जगन डॉक्टरने उस दिन कहा था, "कम्बख्त लुहारको बूँटसे बाँधकर लगाओ मार।"

जगनके इस प्रस्तावपर देवू हामी नहीं भर सका। छि! मनुष्यको शिक्षा देनेका अधिकार है अवसर विशेषमें मनुष्यके लायक शासन करनेके अधिकारको भी वह मानता है, लेकिन अत्याचार ही तो मात्र शासन नहीं है। जीवनमें [illegible] अलावा आकांक्षा है पर उस आकांक्षाको पूरा करनेके लिए बुरे मौके, [illegible] और अन्यायका सहारा वह नहीं लेना चाहता। जीवनमें उसे एक [illegible] भी है। पढ़ते समय अपने भावी जीवनको गढ़नेके लिए उस बोधको [illegible] किया था। उसका यह आत्म-बोध महापुरुषोंके उदाहरणके [illegible] छोटी-छोटी अभिज्ञताओं और चिन्तनके मेलसे बना था। [illegible] कुछ [illegible] के चलते उसकी कुछ धारणाएँ बँध गयी थीं। विरोधी विचारोंका [illegible] पाकर भी उसकी व धारणाएँ आज तक धुल नहीं गयी हैं।

जमींदारको, धना महाजनको वह घृणा करता है। उनके हर काममें दोष ढूँढ़ना मानो उसका स्वभाव हो गया है। उनके अत्यन्त उदार दान पुण्य और धर्मको भी वह गुप्त गावधका स्वेच्छाकृत चान्द्रायण प्रायश्चित्त समझता है।

जब वह छोटा था तब एक बार बाकी लगानके लिए जमीदार बाबुओंने उसके पिताको सारा दिन कचहरीमें रोक रखा था। भयभीत देवू तीन बार बाबुओंकी कचहरीमें जाकर खड़ा-खड़ा रोता रहा था। दो बार दरबानकी डाँट खाकर भाग भी आया था। आखिरी बार उसे देखकर बाबूने कहा था, "अगर अबकी बार तू आया छोरे तो जेलमें बन्द कर दूँगा।" चपरासीने खींचकर उसे एक अँधेरा कमरा दिखा भी दिया था। कैदखानेके नामपर अवश्य ही बाबुओंके स्वर्ग या बकुण्ठ-जैसा कोई कमरा था नहीं कभी। निहायत छोटे जमीदार थे वे देवूको महज डरानेके लिए ही उन्होंने ऐसा कहा था। यह बात देवू आज समझता है। लेकिन उसकी यह धारणा हरगिज नहीं गयी कि जमीदार जुल्मी होते हैं।

जमीदारका बाकी लगान चुकानेके लिए देवूके पिताने कंकनाके बाबुओंसे कर्ज लिया था। तीन सालके बाद हैण्डनोटकी नालिश करके कुर्कीका परवाना लाकर उसके गाय बछड़े थाली गिलास तथा और-और सामान घसीटकर बाहर रास्तेपर फेंक दिया था उस अपमानका देवू भूल नहीं सकता। हाँ डिगरीके रुपयोंका तमस्सुक लिख देनेके वायदपर बाबुओंने सामान छोड़ दिया था। वे रुपये पिताके मरनेके बाद देवूने चुकाये। हालाँकि ये बाबू लोग गैरकानूनी काम कभी नहीं करते। हिसाबसे एक पैसा भी ज्यादा नहीं लेते। लोग कहा भी करते हैं कि मुखर्जी बाबुओं-जैसा महाजन मिलना मुश्किल है। वसूलीके लिए जोर जुल्म नहीं, अपमान नहीं सूद चुकाते जाओ तो कभी नालिश नहीं करते। लोगोंकी जायदादका उन्हें लोभ नहीं। नीलाम करा लेनेके बाद भी रुपये दे दो तो सम्पत्ति लौटा देते हैं। इसमें कोई अत्युक्ति नहीं है। मगर तो भी देवू महाजनको माफ नहीं कर सकता।

उसके मनमें इन सबपर और भी एक कष्ट अभिमान बस गया है। स्कूलमें वह सबसे अच्छे दो लड़कोंमेंसे एक था। उसके नीचेके दर्जेमें पढ़ता था महाग्रामके महामहोपाध्याय न्यायरत्नका पोता विश्वनाथ। वह दूसरा अच्छा लड़का था। शिक्षकोंको उम्मीद थी कि ये दोनों लड़के स्कूलका मुँह उज्ज्वल करेंगे। लेकिन देवू इस बातको आज भी नहीं भूल सकता कि वह शिक्षकोंके स्नेह करुणा का पात्र था न्यायरत्नके पोतेको स्नेहके साथ श्रद्धा मिलती थी। और, कंकनाके बाबुओंके मध्यम कोटिके कुछ लड़कोंको मिला करता था स्नेहके साथ सम्मान।

और तो और, इस छिरूको भी स्कूलके हेड पण्डित खुशामद किया करते थे। जरूरत पड़नेपर छिरूके बापसे कभी ताड़का पेड़ तो कभी जामुनका पेड़ और क्रिया-कर्मके समय दस-पन्द्रह सेर मछली भी माँग लिया करते थे। चावल-दाल, घी-गुड़की भेंट तो हमेशा मिलती ही रहती थी।

उस पण्डितके बेहया लालचकी बात याद आते ही देबूके मनमें घृणा उबलने लगी। बीस सालकी उम्रमें जब छिरू पाँचवें दर्जेसे विदा हुआ तो उस पण्डितने उसके बापसे कहा, "मण्डल, इसको संस्कृत पढ़ाओ।"

छिरूका बाप ब्रजवल्लभ क्षमतावाला खेतिहर था। अपनी मेहनतसे उसने लक्ष्मीकी कृपा पायी थी। लेकिन था वह मूर्ख। इसीलिए उसे यह बड़ी इच्छा थी कि बेटा पढ़ा लिखा हो। बीस सालकी अवस्थामें छिरूका स्वभाव जब जानवर-सा हो गया तो उसके अफसोसकी हद न रही। पण्डितके कहनेसे उसने छिरूको उसीका शिष्य बना दिया। छिरूने पहले कोई एतराज नहीं किया। पण्डितजी पढ़ाने आया करते तो उसे किस्से सुनाते। खास तौरसे विवाहित वयस्क छात्रोंको शृंगार सम्बन्धी संस्कृत श्लोकोंका अर्थ बताकर और वैसी ही कहानियाँ सुनाकर पण्डितजी चारेक साल तक नियमित वेतन लेते रहे थे—बड़ी खुशी-खुशी पूरे मान गौरवके साथ, किसी तरहकी ग्लानि अनुभव किये बिना। यह अवश्य कि वेतन बहुत नहीं—केवल दो रुपये था। चार सालके बाद छिरूने फिर विद्रोह किया। लेकिन छिरूका बाप भी ना-छोड़ बन्दा था। पण्डितसे पिण्ड छुड़ानेके लिए ही शायद छिरूने आखिर यह राग अलापा कि संस्कृत पढ़कर क्या होगा? पढ़ना ही है तो वह अँगरेजी पढ़ेगा।

लेकिन अँगरेजी पढ़ानेवाले मास्टरने दूने वेतनकी माँग की। लाचार छिरूने कहा "मैं स्कूलमें ही पढ़ूँगा।" चौबीस सालकी उम्रमें वह फिर पाँचवें दर्जेमें दाखिल हो गया। देबू भी पाँचवेंमें पहुँच चुका था। हठात छिरूकी नजर देबू पर पड़ी। देबूकी बगलमें अनिरुद्ध लुहार था। छिरूने जब स्कूलमें पढ़नेका प्रस्ताव किया था तब उसे इस बातका खयाल न था। उसकी कल्पना और ही कुछ थी। सोचा था, स्कूल जानेके बहाने वह बकता या अपने ही गाँवकी छोटी जातिवालोंके टोलेमें दिन बिता दिया करेगा। देबू और अनिरुद्धको अपने वर्गमें देखकर वह दिमागको सही न रख सका। उसी समय किताब-बही लेकर कक्षासे निकल गया। घर नहीं लौटा। वहाँसे सीधे अपने ननिहाल चला गया। वहीं उसने अपने जीवनके आदर्श गुरु त्रिपुरा सिंहको पाया। जो जीवनमें राह दिखाता है वही गुरु है। अपने नानाके मालिक त्रिपुरा सिंहको मन ही मन गुरु मानकर उसने जीवनके कर्म-पथपर चलना शुरू कर दिया। लेकिन चौबीस साल-

की उम्रमें जिस दिन छिरू जाकर कक्षामें बैठा था, पण्डितजीने उस रोज भी सबसे कहा था,- 'खबरदार, छिरूको देखकर कोई हँसना मत।" पण्डितजीकी इस बातमें व्यंग्य नहीं समाया था—देबूको आज भी यह याद है।

स्कूलमें सबसे ज्यादा सम्मानका पात्र था कंकनाके मुखर्जीका वह गँवार लड़का। घरमें तीन-तीन शिक्षकोंके होते हुए भी वह किसी विषयमें चालीस नम्बर तक कभी न ला सका। एक बार अपने साथियोंसे देबूने मजाकमें ही कहा था "भई पीटनेसे गधा कभी घोड़ा नहीं होता।" देबूकी यह बात जब उस लड़केके कानों पहुँची, तो उसने ऐसा हो हल्ला मचाया कि शिक्षकगण तक काँप उठे। हेडमास्टरने देबूको दफ्तरमें बुलवाकर माफी मँगवायी थी। एक शिक्षकने कहा था, 'अबे, गधा नहीं हाथी है। हाथीका बच्चा! हाथीकी चाल जरा धीमी ही होती है। यह बात आज नहीं बादमें समझेगा।'

देबू आज उस बातको खूब समझ रहा है। मुखर्जीका वह लड़का दो एक बार फेल हुआ, फिर थर्ड डिवीजनमें मैट्रिक पास करके आज लोकल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्डका सदस्य है, यूनियन बोर्डका प्रेसीडेण्ट है, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट है। हर महीने स्कूलकी मददके लिए देबूको उसके सामने हाथ पसारकर खड़ा होना पड़ता है। फिलहाल छिरू पाल भी यूनियन बोर्डका मेम्बर हुआ है। बीच-बीचमें वह भी आकर पूछ जाता है 'क्यों भई स्कूल कैसा चल रहा है?'

देबूके दिमागमें आग लग जाती है।

उस रोज उसने लड़कोंकी एक किताबमें लिखा देखा 'पढ़ लिख पण्डित होता है जो गाड़ी घोड़ा चढ़ता है सो।' देबूने बार-बार कलम चलाकर इन पंक्तियोंको काट दिया। और ऊपर सतीम लिख दिया—'पढ़ लिख पण्डित होना है जो महत पुरुष हो जाता है सो।' उसके बाद उसने विद्यासागरकी कहानी शुरू कर दी।

कभी-कभी उसके जीमें आता, मैं यदि यूनियन बोर्डके अध्यक्षके आसनपर बैठ पाता तो दिखा देता कि उस आसनकी कितनी मर्यादा है। न जाने कितना काम करता। वह असंख्य पक्की सड़कोंकी सोचता। गाँव-गाँवसे लाल राढ़ीकी सड़क आकर यूनियन बोर्डके गाँवसे मिल गयी है एवं केन्द्रसे और वहाँसे एक चौड़ा राजपथ जंक्शन शहर तक चला गया है। उस सड़कसे धान चावल भरी गाड़ियोंकी पाँत चल रही है सामान बेचकर लोग रुपया लिये लौट रहे हैं लड़के उसीसे होकर स्कूल जा रहे हैं। गाँवकी जंगल झाड़ियाँ साफ हो गया है, गन्दे

भर गये हैं और चारों तरफ सफाई है। हर जगह चौरासीरास फूल, चौरासीरासके बाद गेंदा। फूलोंसे गावके गाव हँस उठे हैं। हर गाँवके हर टोलेमें एक एक इनारा। किसी पोखरेमें नामको भी गन्दगी नहीं। काला पानी झलमल कर रहा है—आसपास खिले हैं भेंटके फूल। कचहरी बैठनेपर सभी अन्यायोंका उचित फैसला होता है — मगन होकर वह अन्याय और उत्पीड़नको मिटा दे रहा है। इन सबको वह सम्भव कर दे सकता है मौका मिले तो मौका मिले तो वह साबित कर दे सकता है कि मोटा और धीमी चालका चौपाया होनेसे ही वह हाथी नहीं होता, वह सोनेमें मढ़े खुरवाला मोटा गधा है महज !

कुढ़नके आवेग और कामकी प्रेरणासे अधीर होकर वह सेजमें घलने लगता बीच-बीचमें हाथ भाजकर मुट्ठी सख्त करके पशियोंको फुला देता। अपने सर्वांगमें मानो वह शक्तिका आलोड़न अनुभव करता।

उसकी स्त्री बड़ी भली औरत है। साफ रंग, चिपटा नाक, कोमल चेहरा। आँखोंका नजर कम मोटी कमका छोटी सिरमें पीठ तक झूलते बाल। मन बड़ा सरल, बड़ा भला है। तिसपर देबू-जैसे व्यक्तित्ववाले आदमीके संसर्गमें आकर अपनेको वह बिल्कुल खो बैठी है। समय-समयपर देबूको इस रूपमें देखकर अचरजमें वह पूछती, 'आपके मनका यह क्या हो रहा है जो ?"

देबू हँसकर कहता "सोचता हूँ, मैं अगर राजा होता !"

"राजा होते !"

'हाँ ! तो तुम रानी होती !"

"हाँ ? ' उसके अचरजकी सीमा नहीं रहती।

"मगर रानी होनेपर भी तुम्हारे गहने नहीं होते।'

अभिभूत होकर वह स्तब्ध रह जाता।

देबू हँसकर कहता, "अब राजाका राज्य तो है लेकिन लगान नहीं मिलता। यूनियन बोर्डका प्रेसिडेण्ट—समझी "

मनमें भली आकांक्षा और ऊँची कल्पना रहनेसे ही वह पूरी नहीं होती। संसारमें पारिपार्श्विक अवस्था ही बड़ी शक्ति होती है—उसने बार-बार कोशिश करके यह समझा है। गाँवके सिवाय बारिश भी हो तो धानकी खेती असम्भव है। पिछले सालमें एक गामी ऊँची जमीनपर उसने आलू बोये थे। लेकिन बीजके अंकुर निकलकर झुलस गये। और जो दो चार पौधे हुए उनमें जो आलू लगे, वे भी मटर जितने बड़े। सारी आशाओं-आकांक्षाओंको मनमें दबाकर वह पाठशालामें काम करता जाता। अपने गाँवकी माता रूपकी मोरे पटके भूल-जाता, विधाताकी कल्पनाके गढ़नेकी कोशिश करता। गाँवके छोटे मोटे सभी आन्दोलनों

से अपनेको अलग रखना चाहता। लेकिन उसकी सारी कोशिशोंको नाकाम करके उसकी आकांक्षा कल्पना इसी तरह आन्दोलन-उत्तेजनाके स्पर्श मात्रसे नाचकर बाहर निकल जाती।

गाँवका अभाव अभियोग, खामी कमी सब कण्ठाग्र-से थे उसे। उसके सामाजिक इतिहासको उसने आविष्कारककी नाइं संग्रह किया था। गाँवके लुहार, बढ़ई, नाई, पुरोहित, दाई, चौकीदार, धोबी आदिका क्या काम है, क्या वृत्ति है, उनको दी गयी जमीनें कहाँ थीं—ये बातें जितनी वह जानता है, और कोई नहीं जानता। पिछली पाँच पुश्तोंकी अवधिमें गाँवकी पंचायतके करम-कुकरमका पूरा इतिहास उसे याद है।

चण्डीमण्डपमें बैठकर पढ़ाते हुए देबू चण्डीमण्डपकी सोचता। यह चण्डीमण्डप कभी गाँवका हृदय था, जीवन शक्तिका केन्द्र। पूजा-पाठ आनन्द-उत्सव विवाह श्राद्ध सब यहीं होता था। गाँवमें जोर-जुल्म अन्याय-अविचार दिखाई पड़ता तो यहीं पंचायत बैठा करती थी। यहीं फैसला होता था और यहींसे सब दूर किया जाता था। चण्डीमण्डप गाँवके बीचोंबीच है। यहाँसे हाँक लगानेपर सारे गाँवमें वह आवाज सुनाई पड़ती थी। उस हाँककी उपेक्षा करनेकी सामर्थ्य किसीमें न थी। उसे यह आज भी याद है कि चण्डीमण्डपके सामनेसे जितनी भी बार वह गुजरता था प्रणाम करके जाता था। आजकल लोग प्रणाम भी नहीं करते। कभी-कभी उसे ऐसा लगता कि देवता की, ईश्वरकी उपेक्षा करनेसे ही उनकी यह दशा हो रही है। देबू रोज तीन बार चण्डीमण्डपको प्रणाम करता है। धर्मका खुद आचरण करके वह लोगोंको सिखाना चाहता है।

नास्तिकताके परिणामकी एक घटनाका उसके हृदयपर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। अवश्य यह कहानी उसकी सुनी हुई है। वह घटी तो उसके जीवनमें ही था, परन्तु तब वह निरा नन्हा था। उसके बचपनका साथी विश्वनाथ महाग्रामके महामहोपाध्याय न्यायरत्नका पोता था। यह कहानी उसके पिता शशिशेखरकी है। पण्डित शशिशेखर अपने ऋषितुल्य पिता न्यायरत्नकी इच्छाके विरुद्ध अंगरेजी पढ़कर नास्तिक हो गये थे। यहाँकी ब्राह्मण-सभाके उद्योक्ता वही थे। उस अधिवेशनमें नारायण शिलाकी स्थापना करके अर्चना न करनेके कारण न्यायरत्नने उनका विरोध किया। नास्तिक शशिशेखरने नास्तिक मनसे अपने बापसे विवाद किया। नतीजा यह हुआ कि सभा टूट गयी। यही नहीं, शशिशेखरकी अपमृत्यु हुई—वे इस्टीमके इंजनके नीचे आकर कट मरे। इसे एक घटना ही कहिए लेकिन देबूकी दृष्टिमें यह कर्मफलका अलंघ्य विधान था। देबूको सबसे बड़ा दुःख इस बातका है कि इस परिणामको जानते हुए भी न्यायरत्न

का पोता विश्वनाथ भी नास्तिक हो उठा है। वह अभी कलकत्तेमें एम० ए० पढ़ रहा है। जब आता है तो देबूसे मिलता है। एम० ए० का छात्र होते हुए भी विश्वनाथ अभीतक देबूका मित्र है। उम्रमें देबूसे पाँच-छह सालका छोटा है फिर भी दोस्त है उसका। स्कूलमें दोनों अच्छे लड़के थे, इसलिए दोनोंमें घनिष्ठता थी। उस समय विश्वनाथ उसे देबू-दा कहता था। उम्रके साथ अपनी और विश्वनाथकी सामाजिक पदकनाको समझकर उसने कहा था, "भई, तुम मुझे दादा न कहा करो। मुझे अपराध लगता है।" तबसे विशू देबूको देबू भाई कहता है। अब वह उसका दोस्त है—सच्चा मानीम दोस्त। उसके सामने श्रेष्ठताकी तेज नाकका चुभन वह कभी महसूस नहीं करता। यही विश्वनाथ सन्ध्या तक नहीं करता, चण्डीमण्डपमें आकर भी देवताको कभी प्रणाम नहीं करता।

कुछ दिन पहले देबूने चण्डीमण्डपके बारेमें अपना खयाल विश्वनाथको बताया था। उससे पूछा था कि इसके गये गौरवको क्या लौटाया जा सकता है। विश्वनाथने हँसकर जवाब दिया था, "यह होनेका नहीं देबू भाई! चण्डी मण्डप बूढ़ा हो चुका है अब यह मरेगा।"

"बूढ़ा हो चुका? मरेगा? मतलब?"

"मतलब कि उम्र होनेसे आदमी बूढ़ा होता है। यह चण्डीमण्डप कितने दिनोंका है कहो तो? बूढ़ा नहीं होगा?"

उसकी छौनीकी तरफ देखकर देबूने कहा था, "इसे नया बनवानेकी कहते हो?"

विश्वनाथ हँसा था। कहा था, "रंगीन कपड़ेसे ही बूढ़ा नन्हा-मुन्ना नहीं हो जाता देबू भाई! इस जमानेमें अब यह चण्डीमण्डप नहीं चलेगा। कोआपरेटिव बैंक कर सकते हो? करो न, वही कोआपरेटिव बैंक। देखना, रात दिन वहाँ लोग आते रहेंगे। धरना दिये पड़े रहेंगे।"

इसके बाद बहुत-सी दलीलें देकर उसने देबूको समझाना चाहा था कि रुपया ही सब कुछ है। उस युगमें धर्म, सम्मान सामाजिक व्यवस्थाके जन्मकी भित्ति रुपया ही रहा। उस भित्तिके रुपयोंका भण्डार चूँकि आज खाली हो गया है इसलिए यह दशा है।"

देबूने बारम्बार प्रतिवाद करते हुए कहा था "नहीं—नहीं—नहीं।"

विश्वनाथ हँसा था।

देबूने और अधिक तीव्रतासे प्रतिवाद करते हुए कहा था, "छि छि, विशू भाई! तुम न्यायरत्नके पोते हो। तुम्हारे मुँहसे यह बात नहीं सोहाती। तुम्हें

इसका प्रायश्चित्त करना चाहिए।"

विश्वनाथ फिर कुछ देर हँसा था। हँसकर उसने कहा था, "मैं तुम्हें कुछ किताबें भेज दूँगा देबू भाई, पढ़कर देखना।"

"न! ऐसी किताबें छूना भी पाप है। कभी किताबें मत भेजना।"

देबू जो जानता है अपने संस्कारोंसे जकड़े हुए है। उसे वह फिरसे प्रतिष्ठित करना चाहता है। इसीलिए नवान्नके दिन अनिरुद्धको चण्डीमण्डपकी पूजाके अधिकारसे वंचित करके उसे सामाजिक सजा देनेके लिए वह जगनके साथ मिलकर खड़ा हुआ था। लेकिन ताज्जुब तो यह है कि प्रतिवाद न करनेके बावजूद दूसरी बार भी उन लोगोंके पास आकर भग्न नहीं हुआ। आखिर अनिरुद्ध भी बेफिक्र भोगकी थाली उठाकर चला गया जब कि अनिरुद्धके बाप दादोंकी भी यह मजाल न थी।

देबू निढाल-सा लगातार यह विचार सोच रहा है। सोच-सोचमें उसे ऐसा लगता है कि कभी देवता ही अपनी महिमासे जाग उठेंगे और अन्यायका अन्त करके फिरसे न्यायकी प्रतिष्ठा करेंगे। वह शास्त्रकी वाणीका स्मरण करता लेकिन कुछ ही देरमें हताश हो जाता।

लड़कोंको छुट्टी देनेके बाद भी देबू चण्डीमण्डपमें अकेले बैठकर यही सब बातें सोच रहा था कि किसीने रास्तेसे आवाज दी, 'अजी ओ गुरुजी!

'कौन?'

'हाय राम! बैठे-बैठे इतना क्या सोच रहे हो?'—पातूकी बहन दुर्गा दूध बेचने जा रही थी। उसीने रास्तेमें ठहरकर बात की।

भौंहें सिकोड़कर देबूने कहा 'उससे तुझे क्या मतलब?'

दुर्गाको देबू फूटी आँखों भी नहीं देख सकता था। बदचलन है वह, गया थाना, पापिन! खास करके वह उस छिरूसे गहरा सम्बन्ध रखती है। उससे देबू घृणा करता है।

दुर्गाने हँसकर कहा, 'मतलब मुझे नहीं, तुम्हारी बहूका है। दरवाजेपर खड़ी बिलू दीदी रास्ता निहार रही है।'

अरे हाँ, ठीक तो! देबूको अब ख्याल आया। वह झटपट उठा। ओह, काफी देर हो गया। वह जल्दी जल्दी भागकर घर पहुँचा।

"चलो'—बिलूने घर पहुँचते ही कहा, 'रसोई तैयार है, नहा लो।'

देबूके जीवनमें यही एक बहुत बड़ी दौलत है कि घरमें कोई कलह नहीं

अशान्ति नहीं। शायद इसीलिए बाहर सारे गाँवमें कलह अशान्ति ढूँढ़ने फिरनेमें भी उसे थकावट नहीं होती।

देबूके चले जानेके बाद भी दुर्गा देर तक खड़ी रही। देबू जिधरसे गया, उधर ही खड़ी-खड़ी ताकती रही। देबू उसे अच्छा लगता है बहुत अच्छा। छिरूसे अब वह घृणा करती है। आग लगानेवाली बात उसने किसीसे कही नहीं, पर घृणाके कारण उससे संसर्ग नहीं रखती। लेकिन छिरूसे जब उसकी घनिष्ठता थी तब भी उसे देबू अच्छा लगता था। छिरूसे कहीं ज्यादा अच्छा लगता। मगर अचरज तो यह था कि इस अच्छा लगनेमें कोई द्वन्द्व नहीं था। आज देबू मानो उसे पहलेसे भी ज्यादा अच्छा लगा।

बारह

अगहन संक्रान्तिपर इतूलक्ष्मीका त्यौहार आ गया। और और प्रदेशोंमें—बंगालके खास खास अंचलमें कार्तिक संक्रान्तिसे ही इतू या मित्रव्रत आरम्भ होता है और खतम होता है अगहन संक्रान्तिपर। कहते हैं, रबीकी फसलके लिए सूरजकी उपासनासे इस व्रतका उद्भव हुआ है। लेकिन देबूके हलकेमें महीने भर तक इस पूजाका रिवाज नहीं है। इधर रबीकी फसल भी नहीं होती। धान इधरकी प्रधान खेती है। इतू पर्वको इधर इतूलक्ष्मीका पर्व कहते हैं। धान पीटने-ओसाने के आरम्भका त्यौहार है यह। खेतिहरोंके अपने-अपने खलिहानमें यह होता है। खलिहानके ठीक बीचमें बाँसका एक खूँटा गाड़ा जाता है। उसी खूँटेके नीचे अल्पना बनाकर वहीं लक्ष्मीका पूजा भोग होता है। उसी खूँटेमें बैलोंको बाँधकर नीचे धान फैलाकर दौनी की जाती है। बैल खूँटेसे लगे गोलाकार घूमते रहते हैं और उनके खुरोंके दबावसे पुआलसे धान झड़ता जाता है।

इस त्यौहारसे चण्डीमण्डपका खास सम्बन्ध नहीं है। हाँ इतना है कि स्त्रियाँ सबेरे स्नान करके चण्डीमण्डपमें प्रणाम किये बिना लक्ष्मीको नहीं बैठातीं। पहले थोड़ा और भी सम्बन्ध था। देबूको याद है आजसे पन्द्रह साल पहले भी पूजा हो जानेके बाद गाँवकी सभी स्त्रियाँ यहाँ जमा होतीं और हाथमें सुपारी लिये कथा सुना करती थीं। गाँवकी कोई बड़ी-बूढ़ी कथा कहती थी। आजकल यह रिवाज उठ गया है। अब दो-तीन घरकी स्त्रियाँ किसी एकके यहाँ जुटकर

कथा सुन लेती है। देवूके यहाँ भी कथा होती है। पाठशालामें लड़कोंको पढ़ाते हुए देवू आज यही सब सोच रहा था। उस दिनसे उसके मनमें आहत और क्षुब्ध होकर प्रेरणा शक्ति उसे हरदम तंग कर रही थी। किसी भी मौकेका सहारा लेकर वह फिरसे खड़ा होना चाहता है। जगनसे उसका मेल-जोल स्वाभाविक नियमसे फिर ढीला हो आया था। जगन डॉक्टरके दरखास्त देनेके उस तरीकेको वह मनसे कबूल नहीं कर सका। दरखास्तके नामसे उसे हँसी आती, वह जल उठता।

साहित्य पढ़ रहा था देवू—

महल नहीं है मुझे नहीं है दास न दासी।
तो क्या हुआ नहीं हूँ मैं वह सुख प्रत्याशी।
चाह एक है लिये बड़ा मन छोटे घर में,
अन्न दुखो का अपने खाऊँ खुश होकर मैं।
संचित किये पराये धन से होकर मैं धनवान
रह सकता मैं भला कहो तो वनचर पशु समान?

कि उसने देखा घूँघट काढ़े एक लम्बी-सी औरतने रास्तेपर-से ही चण्डीमण्डपके ठाकुरको प्रणाम किया। शायद चाहकर भी वह चण्डीमण्डपमें नहीं आयी क्योंकि उसकी चालमें वैसा कोई लक्षण नहीं दिखाई दिया। देवूने उसे पहचाना। वह अनिरुद्धकी पत्नी थी। समझ गया कि नवान्नके दिन जो घटना हुई थी, उसीके कारण वह यहाँ नहीं आयी। देवूका मन कसा तो हो गया। अनिरुद्धकी स्त्री रास्तेपर-से ही चुपचाप प्रणाम करके जो यों चली गयी, देवूको लगा, उसकी प्रत्येक भंगिमा मानो घुटी हुई व्यथासे व्यथित और उदास हो। वह अकेली चली गयी। मानो यह कहती गयी कि अकेले मैं ही क्या दोषी हूँ!

जिधरसे वह गयी देवू उसी राहकी ओर देखता रहा। उसका धीमा कदम उसे थका-थका-सा लगा। बरबस उसके एक लम्बा निःश्वास निकल आया। सचमुच ही अन्याय हो गया है। अपने विचार और बुद्धिकी भूल इस वक्त उसे माननी ही पड़ी। अनिरुद्धसे ज्यादा अन्याय तो गाँववालोंने अनिरुद्धपर किया है। अनिरुद्धने धान न मिलनेसे काम बन्द किया है। पंचायतमें पहले छिरूने उसका अपमान किया था वह उसके बाद उठा था। जब अनिरुद्धके चार बीघेका धान चुरा लेनेका प्रतिकार कोई नहीं कर सका तो अनिरुद्धको सजा देनेका अधिकार किसे है? अकस्मात वह अचरजसे चौंक उठा—उसकी चिन्ताधारामें बाधा पड़ गयी। अरे! अनिरुद्धकी स्त्री मेरे ही घरकी ओर क्या जा रही है?

गुरुजीको अनमना देखकर पाठशालाके लड़कोंमें-से किसी एकने कहा "गुरुजी आज इतू-पूजा है। आज आधा दिन स्कूल होता है। घड़ीमें नौ बज गये हैं।"

देवूके सामने ही एक टाइमपीस रखी रहती है। घड़ीकी तरफ देखकर देवूने फिर पढ़ाना शुरू किया—

गरव बीता नहीं कि सेना में सामा हूँ काज—
अपना गौरव यही, भला इसमें है कसी लाज ?

धीरे धीरे पूरी कविता खतम करके देवूने कहा, 'कल इस पत्रको अर्थ लिख कर ले आना। ययका मतलब शब्दोंका नहीं जो समझा है, वह लिख लाना।"

छुट्टी दे दी और वह तुरन्त अपने घर गया। आगनम उसका स्त्रीके सामने पद्म बठी थीं, कुछ हटकर बठी थी दुर्गा। उसकी स्त्री इन्हें कथा कह रही था। देवूकी स्त्री कथा बहुत अच्छी कहती है। इस टोलेकी कथा देवूके ही यहाँ होती है। वह तो हो चुकी थी। यह शायद दूसरी बार थी। पद्म देवूको नहें बच्चेको गोदमें लिये बठी थी। देवूको देखकर उसने घूँघट खींच लिया। देवूकी स्त्री भी घूँघटको थोड़ा खींचकर हँसी। दुर्गा कपड़े लत्ते सँभाल-कर सामने बिलासके साथ बैठी थी। उसके भी चेहरेपर हसी फूट उठी। लेकिन इस ओर ध्यान देनेकी मनोदशा नहीं थी देवूकी। उसकी स्त्री कथा अच्छी कहती है बहुत अच्छी कहती है, टोलेकी सारी स्त्रियाँ उसके यहाँ कथा सुननेके लिए आती हैं। लेकिन आज अनिरुद्धकी स्त्रीका उसके यहाँ आना जितना अस्वाभाविक था, उतना ही आश्चर्यजनक।

नवान्नके दिन देवूने लुहार बहूको पुकारनेके साथ भाग लौटा ले जानको कहा था। कुछ ही क्षण पहले पद्मने रास्तेमें ही देवूको प्रणाम किया, चण्डी मण्डपपर नहीं आयी लेकिन कथा सुननेके लिए उसके यहाँ आयी—बात यह वास्तवमें हैरतकी है। देवू ठिठक गया। पद्मसे कुछ पूछते नहीं बना, सो उसने दुर्गासे पूछा, 'क्या रा दुर्गा ?'

दुर्गाके होठोंपर मीठी हँसी खेल गयी। हँसकर वह बोली, 'कथा सुननेके लिए आया हूँ दीदीके पास। ऐसी कथा और कोई नहीं कह सकती। आखिर गुरुजी की ही तो स्त्री ठहरी।'

भँझोकर वह दकर देवूने कहा "दीदी ?"—इस बातसे उसे चोट लगी।

'जी हाँ। दीदी। तुम्हारा स्त्रीसे दीदीका नाता जोड़ा है। तुम मेरे जीजाजी हुए।'

देवूके सारे बदनमें आग लग गयी। रूखे स्वरमें ही बोला, 'मतलब वह तेरी दीदी कब हुई ?'

दुर्गाने आँखें बड़ी करके कहा, 'हाय राम! मेरा ननिहाल जो तुम्हारी ससुरालके ही गाँवमें पड़ता है। मेरे मामा वगैरह लोगोंने ही यहाँ आकर पल

हैं पुराने नौकर हैं, दीदी मेरे मामाको चाचा कहती हैं, तो फिर यह मेरी दीदी नहीं हुई ?"

अच्छा न लगनेपर भी इस प्रसंगपर उसे चुप हो जाना पड़ा। बोला, "हूँ।"—उसके बाद अपनी स्त्रीसे पूछा "वह अपने अनिरुद्धकी स्त्री है न ?"

पद्मने लम्बे घूँघटको जरा और बढ़ा दिया। देबूकी स्त्रीने धीमेसे कहा, "हाँ।"

तुरन्त दुर्गाने बात शुरू कर दी—'लुहार-बहूने क्या नहीं सुनी। मैं उसके घर गयी तो देखा बेचारी मायूस-सी सोचमें पड़ी है। उस टाँगेकी क्या पालकी यहाँ यानी सिर्फ पालकी यहाँ होती है। लुहार बहू उसमें यहाँ नहीं जाता सो मैंने ही कहा चलो मेरी दीदीके यहाँ चलो।'

देबू चुप रहा।

दुर्गाने आगे कहा 'बेचारी डर रही थी कि गुरुजी कहीं कुछ कहें न। उस दिन चण्डीमण्डपमें शायद तुमने

बीचमें ही टोककर देबूने कहा, 'अनिरुद्धने बड़ा अन्याय जो किया है।'

दुर्गाने बेहिचक कहा 'यह कहना तुम्हारे-जैसे आदमीके योग्य नहीं गुरुजी! तुम्हीं कहो अन्याय क्या अकेले अनिरुद्धका है ?"

जरा चुप रहकर देबूने कहा हाँ यह ठीक है। सममनम मुझसे गलती कुछ हुई थी।'—मौका पाकर बिना किसी दुविधाके दुर्गाके सामने भी कबूल करके उसने हल्का होना चाहा।

देबूकी स्त्रीने दबी जबानसे कहा रोओ मत बहन लुहार-बहू रोओ मत।'

पद्म घूँघटसे बार-बार आँखें पोछ रही थी—यह उसने देख लिया था।

देबूने व्यस्त होकर कहा 'न-न तुम रोओ मत। अनिरुद्ध मेरा बचपनका साथी [redacted]। पाठशालामें साथ पढ़ा है। उससे कहना, मैं आऊँगा। मैं खुद उसके पास आऊँगा।"

पद्मको लक्ष्य करके दुर्गा बोल उठी, 'मैंने कहा था न तुमसे! जगन डाक्टरके पाले पड़कर हमारे जीजाजीने ऐसा किया है।"

'न-न नाहक ही दूसरेको दोष मत दे दुर्गा! भूल मेरी है मेरी समझकी थी।'—इस आन्तरिकताके सुरमें निश्छल भावसे देबूने यह कबूल किया कि दुर्गा तक दंग रह गयी।

देबूने ही फिरसे कहा 'सुनती हो अनिरुद्धकी स्त्रीको जलपान कराके तब जाने देना, हाँ।'

"और मैं ?"—दुर्गा झनझना-सी उठी—"अच्छा, मैं बाद पड़ गयी ! खूब जीजाजी हुए !"

उस स्वैरिणीके बोलनेका ढंग, अपनेपनका सुर इतना मीठा, इतना जी चुरानेवाला है कि उसपर किसी भी प्रकारसे रंज होना मुश्किल है। उसकी बातपर देवूकी स्त्री हँसी, पद्म हँसी, देवूसे भी हँसे बिना न रहा गया। हँसकर बोला, "तेरी फ़िक्र मुझे नहीं है, तेरी फ़िक्र करेगी तेरी दीदी ! किसी अपनेके होनेमें पराया जतन थोड़े ही अच्छा लगता है ?"

"मुल्न उसका मुँह ज्यादा मीठा होता है—जैसे दीदीके दूल्हेका जतन मीठा होता है। मगर अपना नसीब !"

देवूने हँसते हुए ही कहा, "रहने भी दे, शरारत छोड़। काम कर अपना, कथा सुन।"

"ग़रीब ब्राह्मणको पकवान खानेकी इच्छा हुई।"

देवूकी स्त्री कथा कह रही थी—"ब्राह्मण मन ही मन सोचने लगे, चावलका पकवान, मलचिकला, मूँगका छिलका, नारियलके पूर, शकरकन्दका पकवान—सोचते-सोचते उनके मुँहमें पानी आ जाता।"

कमरेमें बैठा देवू मन ही मन हँसा। पानी उसके भी मुँहमें आ रहा था, शायद ही कि खुद कथा कहने और सुननेवालेके भी मुँहमें भर आया हो !

"मगर महज इच्छासे ही कुछ होता नहीं। उसके लिए समरथ भी होनी चाहिए। मगर ब्राह्मण, न जमीन न जायदाद, न नौकरी ही, न यजमानी। आज जुटा तो कलके लाले—चावल, दाल, नारियल, गुड़, शकरकन्द आये तो कहाँसे ? ब्राह्मण होकर चोरी तो कर सकते नहीं।"

ब्राह्मणकी अक्लकी तारीफ़ किये बिना न रह सका देवू।

"आख़िर ब्राह्मणको उपाय सूझा। उन्होंने एक चाल सोची। अगहन चल रहा था। खेतोंसे गृहस्थोंका धान गाड़ियोंपर लदा जा रहा था, आलू जा रहा था, ऊख जा रहा था। गाड़ीके पहियोंसे मिट्टी चूर-चूर होकर घुटने भर धूल जमा हो गया था। शामके बाद ब्राह्मणने अपने ही घरके सामने रास्तेमें गड्ढा खोद लिया—उसमें घड़ा भर भरकर पानी उड़ेला। दूसरे दिन जो भी गाड़ी उधरसे जाती उसी गड्ढेमें गिर पड़ती। ब्राह्मण सबकी गाड़ी उठानेमें मदद देने लगे और मजदूरी माँगने लगे। किसीसे धान किसीसे ऊख, किसीसे गुड़ वसूल करके जमा किया और स्नान करके—पकवान बनाया।"

देबू ठठाकर हँस पड़ा। ब्राह्मणकी बुद्धिपर मुग्ध हो गया। उसकी हँसी बन्द ही नहीं हो रही थी। बाहरसे दुर्गाने पूछा "आप हँस क्या रहे हैं गुरुजी ?"

देबूने बाहर निकलकर कहा, "पण्डितकी चालाकीपर।"

देबूकी स्त्रीने हल्के हँसकर घूँघटको जरा और खींच लिया। बोली, "समाप्त भी करने दो क्या।"

"अच्छा अच्छा।" कहते-कहते देबू बाहर चला गया।

सन्तुष्ट मन लिये देबू रास्तेपर आकर खड़ा हुआ। गँवई गाँवमें जलपानकी बेला हुई। खेतिहर बहारसे घर लौट रहे थे। मजूर खेतोंमें ही जलपान करते, उन सबका कलेवा लिये औरतें बहारकी ओर जा रही थीं। सिरपर अगाछेमें बँधा कलेवाका बरतन, बगलमें टोकरी, हाथमें पानीका लोटा। पुरुषोंको कलेवा कराके वे बिखरी धानकी बालियाँ बीनतीं, जंगल-झाड़में जलानेके लिए सूखी टहनियाँ चुनतीं।

धान लदी दो-चार गाड़ियाँ भी खेतोंसे आ रही थीं। अगहनकी 'संक्रान्ति' है। इसी बीच गाँवके रास्ते पिसान-से धूल-से भर गये थे। हेमन्तका अन्त—धूलके रंगमें धूपके फीके रंग-जैसी सर्दीकी पीली-सी छाप। गाड़ीके पहियोंसे उड़ रही धूलसे वह धूप भी धूसर हो रही थी। चण्डीमण्डपके एक ओर खड़े बूढ़े मौलसिरी-पेड़के गाढ़े सब्ज पत्तोंपर अभी ही धूलकी एक परत चढ़ चुकी थी। देबू अनमना-सा फिर चण्डीमण्डपमें आ बैठा। चण्डीमण्डपमें भी धूल जम गयी थी। इस जगहसे मानो उसका गहरा सम्बन्ध हो।

"क्या पोते, पूछती हूँ पाठशाला खत्म हो चुकी तुम्हारी ? सन्नाटा सा लगता है!"—रास्तेसे एक जर्जर बुढ़ियाकी आवाज।

"आओ-आओ राँगा दीदी। आज इतू-पूजा है। आधे दिनकी छुट्टी।"—देबूने जरा अस्वाभाविक ऊँचे स्वरमें कहा।

एक बुढ़िया—गाँवकी राँगा दीदी। बड़े-बूढ़ोंकी भली फूआ। तेल लगाये थी। हाथमें थाल लिये चण्डीमण्डपमें आयी। बुढ़िया इसी गाँवकी लड़की है। बाल-बच्चे नहीं है। आल-बच्चे हो नहीं अपना कहनेको भी कोई नहीं है। आँखसे ठीक देख नहीं पाती कानसे भी कम सुनती है मगर शरीरमें शक्ति अच्छी है। सत्तरसे ज्यादा उमर होते हुए भी सीधी है। राँगा दीदी नाम उसका निरर्थक नहीं। रंग अभी भी उसका गोरा है और उसमें एक चमक सी है। लोग कहते हैं, तेल और हलदीसे बुढ़ियाने शरीरको बना लिया है।

दो शामोंमें पाव भरके लगभग तेल लगाती है और फिर बीच बीचमें हल्दी भी मलती है। कहती है, तुम लोग साबुन लगाते हो मैं हल्दी भी न मलूँ ? नहानेके पहले बुढ़िया चण्डीमण्डपको बुहार जाती है। यह उसका नित्यकर्म है।

'इतू-पूजाम आये कितनी छुट्टी ? ठीक ही किया है।"—कहकर वह झाड़ू लगाने लगी। 'यहाँ कितनी बार गाना सुना है क्या कह नहीं सकती ! नीलकण्ठ नटवर यागोदरा। मोती राय भी एक बार आया था। बड़ी भारी यात्रापार्टी। कीरतन, पांचाली जाने कितना क्या होता था ! तूने क्या देखा ! अब न वह राम रहा न वह अयोध्या ! उस समय चण्डीमण्डप लीपनेके लिए वेतनवाला आदमी था पकझक करता रहता था।"

अपने-आप ही बक-बक करती जाती बुढ़िया। जीवनके सारे सुख-समारोहोंकी स्मृति उसने इसी जगहमें सँजायी है। यहाँ आनेपर उन सारी बातें याद आ जाती है। रोज ही वह यही बातें कहती—"बड़ी-बड़ी मजलिस बढ़ती था क्या ! गाँवके जाने-माने लोग बैठते थे विचार होता था, न्याय-चुकपर राय-मशविरा होता था। लेकिन उस समय औरतोंको कदम बढ़ानेकी जुरत न थी। बाप रे ! क्या हेकड़ी थी मरदोंकी !"

देबूने एक उसास लेकर कहा, दादा, तुम्हारे मरने तो चण्डीमण्डपमें झाड़ू भी नहीं लगेगा।'

बुढ़ियाका झाड़ू जरा देरके लिए रुक गया। उदास होकर बोली 'काली मया और मुझे बाबा अपना इन्तजाम करा लेंग भया !' कुछ देर स्तब्ध रहकर वह फिर बोली मेरे मरनेपर तुम लोग तरस खाकर इन बुढ़ियाको यहीं लाकर सुला देना भया !

देबू बोला 'सो करूँगा लेकिन तुम अपने जमा रुपयोंमेंसे कुछ हमें दे जाना चण्डीमण्डपकी मरम्मतके लिए।

और बाद यह बात कहता तो बुढ़िया उसका मुँह नहीं बाकी रखना उससे गाली-गलौज करके रात कर जाता। पर देबू मानो इस गाँवके और लोगोंसे एक अलग आदमी है। बुढ़ियाने उसे गाली नहीं दी। कहा 'अच्छा भया आखिर तूने भी वही बात कही। अरे गोबर चुनकर गोयठा बेचकर पेट चलानेके बाद रुपया जमा किया जा सकता है ? तू ही बता !

अब बुढ़िया भरसक जल्दी-जल्दी झाड़ू लगाने लगी। रुपयोंकी बातको वह बढ़ाना नहीं चाहती। रुपयोंकी चर्चासे उसे डर लगता—किसी दिन रात को कोई उसे मारकर उसका सरबस ले जायगा। सच ही बुढ़ियाके पास कुछ

रुपये हैं—दो-तीन जगह माटीके नीचे गाड रखे हैं। कुल मिलाकर दस गोडी पाँच रुपये।

धीमा, आवेगहीन गँवई जीवन। इसी बीच रास्तापर लगातार आवाजाई हो रही थी। बीच-बीचमें खेतोंसे धान ढोनेवाली गाड़ियाँ आ रही थीं। क्च-कैंचकें—खिंचती हुई सी उठ रही थी एक करुण आवाज। पूसका महीना बीत जायेगा, खेतोंकी फसल खलिहानमें आ जायगी तो इन गाड़ियोंका आना जाना भी बन्द हो जायेगा। उस बार त्रिपुन एक बात कही थी 'अपने गाँवोंकी यह बैलगाड़ीवाली जीवन यात्रा न बदली। गाँव बैलगाड़ियोंपर चलते हैं इसीलिए इतने पीछे पड़े हैं। जिन्दगी ही ढीलमढाल हो गयी है। दूसरे देशोंमें फसल खेती हो रही है—मोटर ट्रैक्टर।"

देबू अवश्य विश्वनाथका कहना नहीं स्वीकार करता। लेकिन यह बात झूठ नहीं कि यहाँका जीवन बैलगाड़ीपर चढ़कर चल रहा है। धीरे सुस्त किसी तरह लुढ़क रहा है—उन पहियों-सा कराहता हुआ।

भूपाल चौकीदार प्रणाम करके खड़ा हो गया—"पाँ लागी गुरूजी!" भूपालके पीछे घूँघट काढ़े एक औरत थी। उसके हाथमें भी हाँडी थी।

देबूने अनमना सा ही हँसकर पुकारा—"भूपाल?"

"जी हाँ चण्डीमण्डपको एक बार लिपवा पुतवा दूँ! अरे, उस छोरसे शुरू करो।"

उस औरतके हाथकी हाँडीमें घोली हुई गोबर माटी थी। उसने लीपना शुरू कर दिया। भूपाल सरकारी चौकीदार है जमींदारका फरमाबरदार भी। क्वार पूस और चैत—इन तीन महीनोंके आरम्भमें उसे चण्डीमण्डप लिपाना पड़ता है। उसकी पाँच जिम्मेदारियोंमें यह भी एक है।

देबूने सजग होकर हँसते हुए कहा "यह तो हरिठाकुरकी पूजा कराना हो रहा है भूपाल! हरिठाकुर पुजारी हैं—पाँच गाँवोंमें पूजा करता है। एक दिन एक गाँवमें पाँच दिनकी पूजा एक ही बार कर देता है, फिर पाँच दिनके बाद जाता है। पसनी किस्तके तो अभी काफी दिन हैं।"

देबूकी बातपर भूपालसे हँसे बिना न रहा गया। बोला "हमारा युधिष्ठिर थानेदार (चौकीदार) भी यही करता है। सांझको निकलता है रातमें तीन बार हाँक लगानी चाहिए—वह एक ही बारमें तीन हाँक लगाकर घर जाकर सो जाता है।"

देबू जोरसे हँस पड़ा।

भूपालने कहा, "मगर म ऐसा नही करता हूँ गुरुजी ! आज गुमाश्ताजी आ गये ह।"

"आ गये ? इतना सवेरे ?"

"जी हाँ सवेरे-सवेरे ही 'सिनल्मिण्ट' वाला आ गया ह न।"

'सेटल्मेण्ट कम्प ?'

"जा, धूम धामकी न पूछिए। तम्बू-कनात ले देकर बीस-पचीस गाडिया ! सुना ह, पूस माहकी सातवी मितिसे खानापूरी शुरू होगी। आज ही धामको शायद ढिंढारा पिटेगा। मुझे खा पीकर चल देना पडेगा।"

"सेटल्मेण्टकी खानापूरी ? खेतोमें पके धान लगे ह, उसीके ऊपरम जजीर खींचकर, बूटोमे फसल रौंदकर खानापूरी ?"

भूपालने कहा, "धानकी पिटाई इस बार खेतमे ही होगी।

देबू भौंहें सिकोडकर खडा हो गया—"यह अन्याय ह, जुल्म ह।"

तेरह

"जो इतू-पूजा करती ह, उनका भाग्य कथाकी ईशानी जमा होता ह। धान उडद, चना, मूग, गेहूँ, जौ सरसो तीसी—तरह तरहकी फसलसे खेत लहलहाते हैं अनाज गाडियामे ढो ढोकर ले जानेपर भी खाली होनेमें नही आते। खलिहानमें अन्न समाता नहा, एक मुट्टी उठाओ तो दो होता है। उनके खेत-खलिहान और भण्डारम माँ लक्ष्मी अचल होकर वास करती ह। बाल-बच्चोसे घर भरा पूरा होता ह गुहाल भर जाता ह गाय-बछडासे उनके पह फलोसे लद होते ह पोखरे मछलियोंसे भर, नग सोना चाँदीसे झलमलाता रहता ह। बहू बेटो नाती पोतासे घिरी पतिकी गोदीमे सोयी गलेभर गगाजलमें उनका मरण होता ह।'

'हुलूध्वनि' देकर कथा शेष करके देबूकी स्त्रीने प्रणाम किया। साथ ही साथ दुर्गा और पद्मने भी 'लू-लू' करके प्रणाम किया। दुर्गाकी आवाज जितनी तेज ह उसी ही चपल जबान ह उसकी जीभ। उसकी हुलूध्वनि स सारा घर गूँज उठा। प्रणाम करके हाथका सुपारी देबूकी स्त्रीके सामने रखकर जोरसे हँसते हुए कहा 'मितू दीदी वहन लुहार-बहू मेरे मरण कालमें तुमम-से कोई अपना पति मुझको उधार दना लेकिन।"

ड्यूटी स्त्रीका नाम ह विल्ववासिनी। पुकारमें बिलू। बिलू हँसी। अपने पति को वह जानती ह। वह नाराज न हुई। और कोई होती तो इस बातपर झगड़ ही पड़ती। यह खूबसूरत स्वैरिणी औरत जब मीठी बाँकी हँसी हँसते हुए रास्तेमें निकलती ह तो इस इलाकेकी दूर दूर सौक़ गा जाती हैं। उसे न लाज ह न भय। पुष्पको देखा नहीं कि उससे हँसी मजाककी दो चार बातें करके बरन झमकाकर चली जाती ह।

पद्मने भी गुस्सा नहीं किया। इधर कई दिनासे दुर्गाने उसके यहाँ आना जाना शुरू किया है। अनिरुद्धको उसने एक दान बनानेके लिए दिया है। उसीकी खोज-पूछके लिए होना बकन जाती ह अनिरुद्धसे हँसी मजाक करती ह, हँसकर लोट-पोट हो जाती ह। कभी-कभी पद्मके बदनमें आग-सी लग जाती ह मगर शरीरावको कुछ कहा नहीं जा सकता। इसके सिवा भी, आजकल पद्म मानो अकस्मात बदल गयी ह। अचानक उसके जीवनमें एक सकरुण उदासीनताने आकर उसे आच्छन्न कर दिया है। घर नहीं सुहाता काम नहीं अच्छा लगता अनिरुद्धके लिए उसकी सर्वग्रासी आसक्ति भी मानो चतनहीन बाहुबन्धन-सी धीरे धीरे शिथिल हो पड़ी है। अनिरुद्ध और दुर्गाकी इस रहस्य लीलाको अपनी आखा देखकर भी कुछ नहीं कहती कहनेको जी नहीं चाहता। आज भी उसने गुस्सा नहीं किया। एक लम्बा निश्वास छोड़कर देबूके मुन्नेको अपनी गोदसे बिलूकी गोदमें देती हुई बोली अपनी तो बहन उतनी ही पूजी ह। उसके बाद गाय-बछड़ा बहू-बेटा कहावत ह—जिसे सिर नहीं, उसे सिर-दर्द—पोता पोती। कहकर वह जरा हँसी। हँसकर बोली, न हो तो वह भी तू ले लेना।' और वह उठी। बोली ता गुरुआनी जी म चलती हूँ।'

बिलूने उसका हाथ पकड़कर कहा 'तुम्हारे पतिका दाल जलपानका न्योता द गया ह। जरा मुँह मीठा तो कर लो।

बिलूकी गोदीके बच्चेकी ओर झुककर बार-बार उसे चूमते हुए पद्मने कहा, मुन्नके चुम्मासे पेट भर गया। इससे भी कोई मीठा चीज होती ह क्या ?'

'नहीं-नहीं सो नहीं हो सकता।'

'अच्छा तो दो। गाँठमें बाँधकर ले जाऊँगी। इतना प्रसाद मुँहमें डाले बिना भोजन बस करूँ, कहो! गुरुजी चाहे इसे न जानें गुरुआनीजीको ता बतानेकी जरूरत नहीं।'

रास्तेमें दुर्गाने कहा मेरी बिलू दीदी बड़ी भली ह जैसे गुरुजी वसी ही बिलू दीदी।"

पद्मने कहा, मुझे बहन, छिरू पालका दरवाजा पार करा दो।"

"हाय राम! इतना डर काहेका? दिन-दहाड़े पकड़कर खा लेगा क्या?"—दुर्गा मुँह टेढ़ा करके हँसी, लेकिन यह बात कहनेके बावजूद वह पद्मके साथ साथ चली।

पद्मने कहा, "भागमान इसे कहते हैं। बड़ा आदमी न हो चाहे सुघरी गिरस्थी है, वैसा ही पति और बच्चा। जैसे फूल हो कमलका। जैसा मुलायम वैसा ही ठण्डा बदन। उसे गोद लिया कि शरीर जुड़ा गया मेरा।—माँ सुन्दरी है, फिर बाप वैसा सुन्दर है—लड़का सुन्दर नहीं होगा!"

पद्मने लम्बा निश्वास छोड़ा। कुछ बोली नहीं। रास्तेमें छह-सात साल का एक लड़का मारे खुशीके रास्तेकी धूलपर बैठा मजे-से मुट्ठा-मुट्ठी धूल अपने माथेपर डालते हुए हँस रहा था। दुर्गाने कहा, "यह देख लो, जैसा कपाल, वैसा गोपाल। माँ-बाप जैसे अभागे हैं वैसी ही करतूत है बेटेकी।"

वह लड़का सद्गोप वंशके तारिणीचरणका था। तारिणीचरण सर्वस्व गँवा बैठा है। बकाया लगानके दावेमें उसका सब कुछ नीलाम हो गया। अब वह बाउरी डोम मजूरोंकी तरह खट खटकर रोजी चलाता है। तारिणीकी स्त्री भी योग्य, सहधर्मिणी है। सारा दिन बाउरी डोम औरतोंकी तरह ही टोकरी लिये गाँवके बाग-बहार जंगलमें लकड़ी चुनती है साग खोटती है, ताल-तलैयाका पानी उलीच-उलीचकर मछली पकड़ती है। लेकिन यह सब उसका ढोंग है, असलमें तो वह चोरीकी घात लगाती फिरती है। आम-कटहल, खीरा केला, लौकी-कुम्हड़ा कहाँ है किसके यहाँ है—सब उसके नखदर्पणमें रहता है। साग और लकड़ी इकट्ठी करनेके बहाने वह ताक-झाँक लगाती फिरती है और सुयोग पाते ही हाथ मारकर सटक जाती है। और यह लड़का इसी तरह कहीं भी रास्तेमें पड़ा धूलमें लोटता रहता है, रिरियाता रहता है। रोते रोते थककर वह आप ही जहाँका तहाँ सो भी जाता है—घरके छाजनहीन ओसारेमें या कहीं पेड़ तले। किसी किसी दिन दूर भी निकल जाता है। माँ-बाप खोजते नहीं चिन्तित भी नहीं होते। सन्ध्या फिर आप ही लौट आता है।

"हट रे लड़के, हट तो! देख धूल मत लगा देना। कल ही धुला कपड़ा पहना है।" दुर्गाने तिरस्कार स्वरमें उसे सावधान किया।

"हूँ!" शरारत भरी हँसी हँसकर वह मुट्ठीमें धूल लेकर उठ खड़ा हुआ।

गरदन मरोड़ दूँगी।—दुर्गाने डाँटा। सफेद कपड़ेपर गर्द लगाना उसे हरगिज बरदाश्त नहीं।

"मिठाई दूँ बेटे खाओगे?" पद्मने स्नेहसे कहा।

धूल भरा मुट्ठीवाले हाथको नीचे करते हुए लड़का बोला, "झूठ।"

पद्मने कपड़ेकी कोरमें बँधी विलूकी दी हुई मिठाई खोलकर कहा, "यह देखो, धूलको फेंक दो।"

"पहले तू मिठाई वहाँ गिरा दे।"

"छि, धूल लग जायेगी। हाथमें लो।"

"हिं, तू मारेगी पकड़कर।"

"नहीं-नहीं, मारने क्यों लगी ?"

"न, गिरा दे तू।"

"गिरा दो बाबा! धूल ही तो लगेगी। अरे, यह तो घूरपर से जूठे पत्ते उठा उठाकर खाता है। धूल!"—दुर्गा तुनककर बोली। उसे खीज चढ़ रही थी—बाँझ तो वह भी है किन्तु यह इसे इतने दुलारसे बेटा-बेटा कर रही है!

पद्मसे लेकिन गिराते न बना। एक साफ-सुथरी जगहमें चुपचाप रखकर लड़केकी ओर देखकर जरा हँसी। उसके बाद चुपचाप ही आगे बढ़ी।

"लुहार बहू!"—कौतुकसे दुर्गाने आवाज दी।

लम्बा घूँघट काढ़कर नीचे देखते हुए चलनेका पद्मका अभ्यास था। इसी तरह वह जा रही थी। सिर उठाये बिना ही पूछा, "क्या ?"

"वह देखो!"

"क्या ? कहाँ ? कौन ?"

"वह सामने छाजनमें!"—दुर्गा खी-खी करके हँस पड़ी।

घूँघटको जरा-सा हटाकर चारों तरफ नजर दौड़ा झट उसने फिर घूँघट खींच लिया। सामने ही छिरू पालका खलिहान। दरवाजेपर ही मोढ़ा डाले वह बैठा था। और अकेला नहीं बगलमें एक कोई और भी था। इस आदमीकी गोल-गोल बड़ी आँखें थीं कुछ ललाई लिये हुए चपटी-सी नाक और नाककी सीधमें घनी बहारदार मूँछें जो उसके चेहरेको गर्वीला बनाये हुए थीं। छिरू और यह आदमी दोनों इन्हीं दोनोंकी ओर देख रहे थे। पद्म उस आदमीको भी पहचानती थी—वह जमींदारका गुमाश्ता है। जल्दी जल्दी वह वहाँसे आगे निकल गयी। लेकिन दुर्गा अपनी उसी मन्थर चालसे चलती रही।

गुमाश्तेने एक बार दुर्गाको ओर घूरा फिर छिरू पालकी ओर ताका। पूछा, "दुर्गाके साथ वह कौन है पाल ?"

"अनिरुद्धकी स्त्री।"

"हुँ! दुर्गाके साथ या गाँठ बाँधे क्यों घूमती है भई ?"

"पराया जी अँधेरी कोठरी! क्या बताऊँ आप ही कहिए ?"

"दुर्गा क्या कहती है ? पीती है ?"

छिरूने गम्भीर होकर कहा—"मैंने वह सब छोड दिया है, दास बाबू दुर्गासे मैं बात तक नहीं करता।"

अचरजसे आँखें फाड दास बोला, "ऐं, कहते क्या हो !" और उसकी रोबीली मूँछें हलकेसे हिल उठीं, उसमें यह एक टेव पड गयी थी।

"जी हाँ !"

"अच्छा ! बात क्या है ?"

"ऊँहूँ, नीचोंका सगत ठीक नहीं, दासजी ! समाज घृणा करता है, छोटे लोग हँसते हैं। अपनी इज्जत आबरू भी नहीं रहती।"

घरमें आग लगानेकी बातको लेकर दुर्गाके साथ छिरूका कलह हुआ था। इतना ही नहीं भीतर भीतर उसे एक झुँझलाहट भी था। उसे लगता मानो सोनेवाले कमरेमें वह एक साँप लेकर रहता हो। हाँ, साप नहीं सापिनो यही दुर्गा।

दासने हँसकर कहा, "खर ! मगर लुहारिन तो नीच नहीं, बेटा लुहारको जब सबक सिखाना ही है, तो घरका हाँडा तकका जूठा कर दो न !"

छिरू चुप रहा। यह इच्छा उसके कलेजेमें ज्वालामुखीकी आग-सी रुँधे मुँह दबी पडी है। झकझोरा खाकर वह छिपी लौ भीतर भीतर जाग उठती है।

दास फे-फे-करके हसने लगा।

साथ ही छिरूकी तेज आँखें मानो जल उठीं। उस चमकते सावले रंगवाली लम्बे कदकी बहूके प्रति उसके हृदयमें लगी कामनाकी एक गहरी आसक्ति है। उस पोखरपर खडी पद्मके घूघटमें ढके चेहरेकी याद आया। बडी-बडी आँखें, छोटे कपालको घेरे घने काले बाल, जरा-सी झुकी नाक, गालके पास एक बडा सा तिल, हाथमें पकाया हुआ दाव। निष्ठुर कौतुककी हल्की हसीसे खुले उसके छोटे-छोटे सुन्दर दाँतोंकी पाँत तक उसके अन्तरमें झिलमिला गयी।

दासने हसी रोककर कहा, "तुम्हारा क्या, तुम नसीबवाले हो ! तुम नहीं मजा लोगे तो कौन लेगा, डाढाई मँगल ?

बडी देरके बाद अजगरकी तरह एक निश्वास छोडकर छिरू बोला, "यह सब छोडिए दासजी ! अभी मन जो कहा, उसका क्या कर रहे हैं ?"

'उसका क्या करना है ! अरे 'पाल काटकर घाप' बनानेमें क्या देर लगती है ? जमीदारी सिरिश्तेके मामलाका नियम तो जानते हो हो—नाव करा नाम बनाओ। कुछ दस्तूरी दो, फिर बादको हम सबको दावत तो करनी ही होगी।"—छिरू पालकी ओर देखते हुए दासने कहा, 'अच्छा सुनो, शराब भी

छोड़ दी गया ? अजीब हाल है तुम्हारा ?"—दास जरा बाँकी हँसी हँसा ।

छिरूने हँसकर कहा, ' न-न, वह तो होगा ही । मगर बात यह है कि वह सब ढिंढोरा पीटकर नहीं करता है । छिपकर आपके घरमें कभी-कभी—।"

"बेशक, भले आदमीकी तरह ।"

दासने बार-बार गरदन हिलाकर छिरूकी युक्ति मानकर कहा, हजार बार। मैंने पहले तुम्हें कितनी बार मना किया याद है ? कितनी बार कहा पाल, ऐसा करना तुम्हें शोभा नहीं देता । खैर अन्तमें तुम सँभल गये, ठीक ही है । '

दासकी बातका छिरूने भी स्वीकार किया, 'हाँ हाँ, मैंने खूब समझ लिया दासजी कि मान सम्मान एम नहीं मिलता। वह जमाना अब नहीं रहा।'

दासजी जमींदारी सिरिश्तेके अनुभवोंवाला विलक्षण कर्मचारी ठहरा। हँसकर बोला 'कभी नहीं मिलता था भला कभी नहीं । तुम त्रिपुरा सिंहको कहते हो उसे लोग आज भी इज्जत कहते हैं । यह भी क्या मान-सम्मान है ? कंकनाके इन बाबुओंको देखो—अमीर हो गये मगर तो भी कोई बाबू कहनेको तयार न हुआ । उसके बाद स्कूल बनवाया अस्पताल खोला, ठाकुरकी प्रतिष्ठा की कि लोग धन्य धन्य कर उठे । बाबू तो बाबू एकबारगी बड़ा बाबू—बड़े घरके बड़े बाबूका खिताब मिल गया ।'

'अबकी चण्डीमण्डपको मैं पक्का करवा दूँगा, दासजी! और उसीके पास एक कुआँ खुदवा दूँगा ।''

बस बस पक्का करावे कुएको जगत और चण्डीमण्डपके पत्थर खुदवा दो—सेवक श्री श्रीहरि घोषने बनवाया। उसके बाद तो तुम्हारी घोष उपाधि बिल्कुल पक्की हो जायगी।

आप लेकिन उसे कर ही दीजिए। सेटलमेण्टके परचम भी घोष लिखाऊँगा मैं।

'करो। करो। भले ही करता ला न तुम।

श्रीहरिकी वंश प्रचलित उपाधि है पाल। वह उसे बदलना चाहता है। खुद वह बहुत दिनोंसे घोष लिखता है मगर यह अभीतक नहीं चलता। इसीलिए जमींदारी सिरिश्तेमें पालकी जगह घोष कराना चाहता है। उधर सरकार नया सर्वे करा रही है। उसकी रेकर्ड ऑफ राइट्सके दफ्तरमें भी घोष उपाधि पक्की हो जायगी। पाल उपाधि सम्मान जनक नहीं है—जो लोग अपने हाथों खेती करते हैं उन लोगोंकी, यानी खेतिहरोंकी है यह उपाधि।

दासजीने फिर पूछा और उस बारेमें क्या कर रहे हो ?

"किस बारेमें ? लुहारिनके बारेमें ?"

होन्टों पर हँसते हुए दासने कहा, "अरे, वह तो होगा ही। उसमें कुछ पूछना है भला ! मैं कह रहा था गुमाश्तागिरीवाली बात।"

छिरू शर्मिन्दा हो गया था। बिल्कुल औचक पर पकड़ा गया। अप्रतिम-सा होकर बोला, "अच्छा सोचूँगा।"

ठीक उसी वक्त बगलमें किसवत दबाये आ पहुँचा ताराचरण परामाणिक। बड़े भक्ति-भावके साथ उसने मीठी सी हँसी हँसते हुए प्रणाम किया—"गोड़ लागी।

माथेके ऊपर तक आँखें चढ़ाकर ताराचरणकी ओर देखते हुए दासजीने कहा, 'आओ तारा आओ। क्या खबर है ?"

सर खुजाते हुए ताराने कहा, "जी करना गया था। घर लौटा कि सुना—माँने बताया—गुमाश्ताजी आये हैं। सुनना था कि मैं भागा भागा आया।—"
वह नाहक ही हँसने लगा।

ताराचरणकी यह हँसी उसके रोजगारके तजुर्बे और बुद्धिका दान है। जिसको भी बुलाहटपर वह पहले नहीं जाता वही खफा हो उठता। इसीलिए सबकी खुशीके लिए वह ऐसी मीठी हँसी हँसा करता। इससे तिरस्कारमें भी हँसता। उसने एक और भी सत्यका आविष्कार किया है, उसे भी वह अपने काममें लाता। पड़ोसीका भेद जाननेका एक अजीब कौतूहल होता है लोगोंमें। सुबह होकर तब वह गाँव-गाँव जाने कितनोंके यहाँ जाता। सो रामके घरकी बात वह श्यामको और श्यामके घरकी अन्दरूनी बताता और यदु माधवकी बात मधुको कहकर उसकी चीज मिटाकर उसे खुश कर देता। उसी मौकेमें वह उसके भी घरकी कुछ भेद भरी बातें जान लेता।

हजामतवाले कटोरेमें पानी डालते हुए उसने शुरू कर दिया—'बदनाम घूम मच गया है। जी, समझमें आया कि नहीं ! कोई आठ दस तो बड़े हुए हैं गाँवमें, गालियाँ जमा हुआ है शायद।"

'हूँ ! सेटलमेण्ट कैम्प आया है।

चतुर ताराचरणने भाँप लिया—इस खबरसे गुमाश्ताजीको जो खुशी नहीं होगी। झट उसने थाहरकी ओर ताका। उसका भी चेहरा गम्भीर। सो तुरन्त उसने प्रसंग बदल लिया। कहा, 'अब दुगा-दुगानी चल निकलेगी। दोनों हाथों लपक लूँगा। अमानतकी नयी जमात देखी मन ! कैंचनदार वाला-वाले ! समझे भाई पाल !'

गुमाश्ताने डाँट बतायी—" 'पाल' क्या रे ? 'भाई पाल' कब कहा तूने ? तू

'भाई पाल' कहने लायक़ है ? 'घोषसे आप' नहीं बोल सकता ?"

"जी ?"

" 'घोष बाबू' बाल। पाल वे लोग होते हैं जो अपने हाथों खेती करते हैं, श्रीहरि तो इस गाँवके चोटीके आदमी है।"

ताराचरण सब चुपचाप सुनने लगा। बहुत-सी बातें सुना उसने। यहाँतक कि इस गाँवकी गुमाश्तागिरी भी श्रीहरि घोष ले रहे हैं, हाव भावसे उसने इसका भी अन्दाज़ कर लिया। उसने छूटते ही कहा, सौ बार, हज़ार बार, घोष बाबू-जैसा आदमी इन कई गाँवोंमें है कौन ? गुमाश्ताके गालपर उस्तरा चलाते हुए दबे गलेसे कहा, ये चाहें तो दुर्गा-जैसी बीस बाँदियाँ रख सकते हैं।' हाथ के इशारेसे उस्तरा चलानेको मना करते हुए दासजीने भौंहें पूछा, अनिरुद्ध लुहारकी वह दुर्गाके साथ क्या घूमा करती है रे ? माजरा क्या है ?

' अच्छा ? ठहरिए, आज ही पता लगाता हूँ। लेकिन हाँ, अनिरुद्धसे आजकल दुर्गाका जरा '—वह हँसा।

' हाँ ?'

जी।'

श्रीहरि चुप बैठा था। पद्मके बारेमें ऐसी बातचीत उसे अच्छी नहीं लग रही थी। उस लम्बी देहवाली बधूके प्रति उसकी आसक्ति प्रचण्ड थी, उसकी कामना बड़ी गहरी थी। ऐसी आसक्ति और कामना कि जिसके होनेपर एक मानुष मानुषीको, पुरुष नारीको एकान्त अपने लिए, सम्पूर्ण रूपसे अपनी करके प्राप्त करना चाहे जिसे किसी निर्जन-सूनेमें वह बारका सम्पदाकी नाई रखना चाहे, किसी अंधेरी गुफाके घर घुमावोंमें छिपी सपकी सर्पिणीके समान—सौ नागपाशोंके बन्धनमें बँधी जकड़ी।

दुर्गा पद्मके घर पहुँची तो क्या देखती है कि वह फिरसे नहाने जानेकी तैयारी कर रही है। पद्म तो जल्दी जल्दी चली आयी थी। दुर्गा उसके बाद कुछ देर तक एक गलीकी आड़में खड़ी थी। गुमाश्ताको वह खूब पहचानती है। श्रीहरिकी तो एड़ी चोटी उसके नख दर्पणमें है। वह उन दोनोंकी बातें सुननेके लिए ही छिपकर खड़ी थी। गुमाश्ताकी बातोंपर वह हँसी और श्रीहरिकी बातोंके हाव भावपर चकित हुई। तारा हजाम आया कि वह चली आयी। पद्म उस समय अँगोछा कन्धेपर रखकर घरसे निकल रही थी। दुर्गाने पूछा ' अरे फिर स्नान ? '

' हाँ।'

"छुआ गयी किसी चीजमें क्या? ये पाँच हाथ लम्बा तो घूँघट है! कुछ छू जाये तो आश्चर्य क्या!"

अप्रतिभ-सी हँसकर पद्म बोली, "नहीं-नहीं, छुआयी नहीं।"

"फिर?"

"बच्चेने कपड़ा गन्दा कर दिया।"

"यही तो एक रोग है तुम्हें, बच्चेको देखा नहीं कि गोदीमें उठा लिया। अपना है नहीं। पराये बच्चेको लेकर इतनी झंझट बढ़ानेकी कौन जरूरत, बोलो तो? किसके बच्चेको उठा लिया था?" इतनेमें बड़ी अप्रतिभ होकर पद्म जरा हँसी—"छिरू पालके बच्चेको।" दुर्गा अवाक् रह गयी।

पद्मने कहा, "गलीके मोड़पर खड़ी उसकी बहू बेचारी रो रही थी। गोदीमें नन्हा रो रहा था और बड़ा गोनी चढ़नके लिए माका कपड़ा खींचकर एकाकार कर रहा था और चीख रहा था। घरके अन्दर सास कोस रही थी 'कौन खोकी सबको खा गया तो यही दो क्या? इन्हें भी खा और खाकर तू भी जा, मैं जी जाऊं!' इसीलिए नन्हेंको ले लिया जरा। माँने दूधको चुप कराया।" पद्म जरा चुप रहकर बोली, 'पालकी बहू लेकिन औरत बड़ी भली है।" उसे उस रोजकी बात याद हो आयी।

श्रीहरिकी बहूके खिलाफ दुर्गाको कोई शिकायत नहीं बल्कि उसके सामने वो भीतर भीतर वह अपनेको अपराधी समझती है। इस गाँवकी सभी बहुएँ उसे सरापती हैं, बुरा भला कहती हैं—यह उसे मालूम है। सिर्फ दो बहुओंके लिए उसकी यह शिकायत नहीं एक देबूकी स्त्री बिलू दीदी और दूसरी यह छिरू पालकी स्त्री। देबूकी स्त्रीकी तो कहनेकी गुंजाइश ही नहीं उसे अपने पतिपर किसी तरहका सन्देह नहीं साधु आदमी है वह। लेकिन छिरूके साथ खुलेआम घनिष्ठ सम्बन्ध रहते हुए भी छिरूकी स्त्रीने कभी उसे कड़वी बात नहीं कही, कभी गाली-सराप नहीं दिया। छिरूकी स्त्रीसे आँख मिलानेमें सच ही उसे बड़ी शरम आती।

कुछ देर चुपचाप रास्ता चलते, जग अचानक ही श्रीहरिकी स्त्रीके प्रसंगसे छुटकारा पानेके लिए ही उसने दूसरी बात छेड़ी—'क्या जानें बहन, नन्हें बच्चोंको देखनेसे मेरा तो जी घिनघिन करने लगता है। माँ री!

पद्मने टक बाँधे एक आँख उसकी तरफ देखा।

दुर्गाने यह देखा ही नहीं। देखती भी तो परवा न करती। हिकारत भरी बाँकी हँसीके तीखे वाणसे उसके टुकड़े-टुकड़े करके धूल मिट्टी कर देती। उसी उपेक्षाके भावसे वह कहती गयी, 'मेरा भौजीको बुलानेमें फिर लड़का-बच्चा

हुआ था, बल्कि रूठा था। आज भी दुर्गासे जो सुना तो उसका यह रूठना जाता रहा और गाढ़े स्नेहसे जी भर गया।

आवेशमें काँपती हुई आवाज़में बोला—'देबू भाई।

"क्या है अन्ने भाई बात क्या है?"

अनिरुद्ध रो पड़ा।

देबूने ही जगन डॉक्टरको बुलाया 'ज़रा जल्दी चलो अनिरुद्धकी स्त्री मूर्छित हो गयी है।'

जगनने गुस्साभरी निगाहोंसे एक बार अनिरुद्धकी ओर ताका फिर आप ही आगे बढ़कर बोला 'चलो।'

सेटलमेण्टके बारेमें उसका भाषण बहरहाल स्थगित हो गया। रास्तेमें उसने गाँववालोंकी एहसान फरामोशीपर भाषण शुरू कर दिया—

जो भी चाहे अपना कर्तव्य मैं करता जाऊँगा। डाक्टर हूँ तो बुलाने पर मुझे जाना ही पड़ेगा जाऊँगा। तीन पुश्तसे गाँवमें किसान फीस नहीं दी। फीस मैं भी नहीं लूँगा। डाक्टर हँसा— दवाका ही दाम भाई नहीं देता तो फीस!

देबूने जेबसे बीड़ी निकाली— लो डॉक्टर पीयो।'

'दो! —बीड़ीको दाँतोंमें दबाकर डाक्टरने कहा 'मैं तुम्हें हिसाब-बही दिखाऊँगा देबू दस हजार! हमारे दस हज़ार रुपये डुबा दिये लोगोंने लेकिन इज़्ज़तदार कौन हुआ वो महाजन जो सूद लेता है बचनाके बाबू छिरू पाल!

वे लोग जगनके दवाखानेके पास पहुँच गये थे। वहाँसे एक शीशी लेकर डाक्टरने कहा 'चलो एक मिनट बस एक मिनटमें होश आ जायेगा। डरनेकी बात नहीं है।

चौदह

आसमानमें सुबहकी किरण भी ठीकसे नहीं फूटती कि देबू बिस्तर छोड़ देता। उसकी यह आदत बचपनसे ही है। अकेले देबू ही नहीं गाँवके ज्यादातर

लोग दिन शुरू होनेसे पहलेसे ही अपनी जीवन यात्रा शुरू कर देते हैं। औरतें जगकर दरवाजेपर पानी छिड़कती है, घर द्वार बुहारती है, लीपती है, गाय बछड़ोंको चारा देती है, और फिर जिनके यहाँ जब कोई अतिरिक्त काम होता है—जैसे धान कूटनेका ही काम—तब उसके यहाँ रातके आखिरी पहरसे ही हलचल शुरू हो जाती है। रातके अन्तिम पहरकी निस्तब्धतामें एक बँधी तालपर ढेंकीकी आवाज होती है—दुम दुम-दुम। धीमी धीमी बातचीतका आभास मिलता है, ढिबरीकी जोत जगती है। इन दिनों इस नये धानके समय गाँवके बहुतेरे घरोंसे ढेंकीकी आवाज जरूर ही उठती है लेकिन आज किसी घरसे आवाज नहीं उठी। आज इतु-पूजा है—अनाजपर ढेंकीकी चोट नहीं पड़नी चाहिए। आज सचयका दिन है।

दबूने अपनी स्त्रीसे कहा, 'सुना, आज आँगन भी लीपना है। गुमाश्ता आया है। कुछ रोज पाठशाला यहीं चलेगी।"

चण्डीमण्डपमें अभी गुमाश्तेकी कचहरी बैठेगी। दरअसल सम्पत्तिके स्वामित्वके नाते चण्डीमण्डपके मालिक है जमींदार। लेकिन जगह वह सार्वजनिक है, इसलिए आम लोगोंको उसे काममें लानेका अधिकार है। उसी अधिकारसे गाँवके लोग उसका व्यवहार करते हैं, उसी जिम्मेदारीसे उसकी देखरेख भी वे ही करते हैं, वे ही चन्दा जमा करके छौनी छप्पर करते हैं, और जरूरत पड़नेपर वे ही टूट फूटकी मरम्मत कराते हैं, यहाँतक कि एक दिन उन्होंने ही आपसमें चन्दा जमा करके चण्डीमण्डपको बनाकर खड़ा किया था। यह बात बहुत दिनोंकी है। मालिकके नाते जमींदारने राय दी थी—सिर्फ राय! और उससे अधिक दिये थे साड़के कुल दो पेड़—धरनके लकड़ीके लिए।

चण्डीमण्डपमें प्रणाम करके दबू बहारकी ओर निकल गया। गाँवके बड़े-बूढ़े उस समय मण्डपके द्वारपर जल छिड़ककर प्रणाम कर रहे थे। लगातार पानी पड़ते रहनेसे चौकठके नीचेकी लकड़ी सड़कर गल गयी थी और दरवाजेका एक हिस्सा धिस गया था। अबकी अगर उसकी मरम्मत नहीं की गयी तो पूजाके समय आगरा गधेस बिल्ली तो घुसेगी ही, कुत्ता भी घुस जाय तो अचरज नहीं। लंगड़ा पुरोहित कहता इतना ज्यादा पानी मत दो मालाओ, थोड़ा-थोड़ा दो। तुम्हारे लोगोंके परलोकका पथ किंचित् होगा—फिसलन होगी। आखिर रथका चक्का उसमें धंस जायेगा तो नहीं निकलेगा।

मण्डल फूआ अपना-सा जवाब देता, 'रथका घोड़ा आखिर तुम्हारा तीन टाँगवाला वातग्रस्त घोड़े-सा घोड़ा तो है! इसका फिकर तुम्हें नहीं करनी होगी।

पुरोहित हँसकर कहता 'मेरा घोड़ा उस रथका ही घोड़का बच्चा है फूआ!'

इसके तो गैर तीन टाँग ह, इसके माँ-बापके महज दो ही हैं। सुना नही ह—'दायाँ पाँव खटर-पटर टूटा बायाँ गोडा, बाबा बजायगा घोडा'।'

जगन डॉक्टर ओर रूखी, ओर भी सख्त बात कहता। वह कहता, "कोई चोर है तो कोई बटमार, कोई छिनाल पटगल्, फरेबी और मक्कार तो सभी ह। मगर सबर सब आते ह पुण्य कमाने। ऐसा नियम बना दो कि देवताके द्वारपर जो जल डालेगा, उसे रोज एक पैसा देना पडगा। देख लेना, कोई नही आयेगा। देखो तो सही! पासरका पानी घडोंमें भरकर लाते हैं और डालते ह!

देबू कुछ कहता ही नही। जगन बेशक झूठ नही कहता उसकी बात ज्यादा सच ही है, लेकिन नियमसे रोज पहले सुबह जब वह उन्हें देखता ह तो उनके आँख मुँह, हाव भावमें इन परिचयोंकी कोई झलक ही उसे नही दिखाई देती। बिल्कुल दूसरे ही लोगोंको देखता ह वह। उस समय इनमें स हरेक मानो एक एक मर्त्यलोकका यात्री हो! काश, ये लोग सदा ऐसे ही आदमी रहते! लेकिन चण्डीमण्डपसे बाहर निकलकर अपने घरपर पाँव रखते-न रखते एक एक आदमी फिर अपना रूप धारण कर लेता ह। कोई अपने दु ख-कष्टके लिए भगवान्‌को सौ मुहसे गालियाँ देता ह कोई घाटसे किसी औरका बरतन गायब कर देता ह ता कोई रास्तेपर खडा पैकार यानी गया-चोरके दलालका इन्तजार करता ह कि अपनी बूढी गैयाको बेच ले। बूढी गायको ले जाकर दलाल क्या करते ह—यह सब लोग जानते ह परन्तु उस समय उन चन्द सिक्कोंका लोभ भी इनसे छोडते नही बनता। इनसान सचमुच अजीब ह इनसान विचित्र ह!—लम्बी उसास लेकर देबू चण्डीमण्डपसे रास्तेपर उतर आया।

खेत मजूर खेतोंकी ओर जा रहे थे—बाउरी, डोम, माची आदि खेत मजूरे। तनपर मोटा कपडा सिरपर गमछकी पगडी। ऊपरसे धोतीको ही चादरकी तरह लपेटे हुक्का पीते हुए चले जा रहे थे। उनके हाथम हसिया। कटनीका समय। गाँवके दूसर खेतिहर भी अधिकाश अपने ही हाथो खेती गिरस्ती करते, वे भी हँसिया ले-लेकर चले जा रहे थ। खटे-खटाये दूना पाये।' यानी खेतीमें जो खुद भी काम करते हैं मजूरोसे भी कराते ह, उन्हें दूनी उपज मिलती ह। इस प्रवादको व लोग अभी भी मानते ह दो तीन चार जने ऐसे हैं जो खुदसे काम नही करत। हरेन्द्र घोषाल ब्राह्मण ही ठहरे जगन घोष एक तो जातिका ब्राह्मण तिसपर डॉक्टर देबू घोष गुरुजी और श्रीहरि फिलहाल कुलीन सदगोप तथा काफी धन जायदादका मालिक—यही कुछ लोग खुदसे नही खटते।

सतीश बाउरी अपनी जातका मातबर आदमी ह। उसका अपना हल-बैल ह। जमीन जरूर उसकी अपनी नही बटाईपर दूसरका खेत जोतता है फिर उसो

बातें करता है। देवूने झुककर प्रणाम करते हुए कहा, "पालागी गुरुजी!" साथके दूसरे लोगोंने भी प्रणाम किया।

प्रति-नमस्कार करके देवूने कहा, "खेत जा रहे हो?"

"जी!" सतीशने अपने साथियोंसे कहा, "गुरुजी-जैसा आदमी मैंने और नहीं देखा। प्रणाम करनेपर बहुतरे महानुभाव तो बोलते तक नहीं। गुरुजीका लेकिन कपालपर हाथ जरूर लगता है। उनके मुहसे मने कभी हे रे-ये नहीं सुना।"

देवूने कुछ कहा नहीं। वह तेजीसे आगे निकल जाना चाहता था। लेकिन सतीश बोला, "गुरुजी यह होगा क्या कहिए तो?"

"किस बातका क्या होगा? हुआ क्या है?

"जी, केवल अपना नहीं समूचे गाँवका। मैं सितलमिण्टकी बात कह रहा हूँ। कहता हूँ कि सात दिनके बाद ही शुरू हो जायेगा। तो क्या तमाम दिन मौजूद रहना पड़ेगा, जंजीर खींचनी पड़ेगी। ऐसेमें कटनी कम होगी और पकी फसलपर जंजीर खींचनेसे धान ही कैसे बचेगा?

"गुमाश्ताने क्या कहा? पालने क्या कहा?"

"जी, घोप बाबू कहिए।"

"घोप बाबू?"

"जी हाँ! अब वे श्रीहरि घोप हैं। घोप कहनेका हुकुम हुआ है। अब जमींदारकी बहीमें, अदालत तकमें 'पाल' के बदले 'घोप' करा लिया है।"

"अच्छा! तो उन लोगोंने क्या कहा, कल तो तुमलोग गये थे?"

"जी, बुलाहट हुई थी। कहा, दिन रात काम करके सात दिनके अन्दर फसल काट लो। भला, यह भी हो सकता है, आप ही कहिए गुरुजी!"

देवू चुप रहा। कोई जवाब नहीं दिया। कल तमाम रात वह यही सोचता रहा है लेकिन कोई उपाय नहीं निकाल सका।

सतीशने कहा, "जब वहाँसे लौटा तो देखता हूँ कि डॉक्टर बाबू टोलेमें आये हैं। वह कह रहे हैं कि अँगूठेका निशान लगाओ, दरखास्त भेजनी है। मगर आप ही कहिए, दरखास्तसे क्या होना है? अगलोंकी दरखास्त भेजी गयी थी, क्या हुआ? और फिर दरखास्त देनेसे सितलमिण्टके हाकिम नहीं नाराज हो जायेंगे!"

बंगालमें सन् १७९३ में जब इस्तिमरारी बन्दोबस्त हुई, उस समय जमीनकी नाप-जोख नहीं हुई थी। लिहाजा सीमा चौहद्दीके लिए लड़ाई-झगड़े और

साहबने हँसकर कहा, "रहने दो।" उन्होंने सब सुना। पोखरेको देखा। उसके बाँधपर खड़े होकर पानीकी दशा देख वे दंग रह गये। देबूको आज भी याद है, उनकी आँखोंमें आँसूकी दो-एक बूँद भी टपक पड़ी थी, रूमालसे आँखें पोंछकर साहबने कहा 'देबू बाबू आखिर भी कुछ नहीं कर पाया मैं।"

देबूने कहा 'मैंने तो हुजूर, पाँच दिन पहले दरख्वास्त भेजी थी।"

'डाकमें एक दिन लगा। पेश होनेमें भी कारणवश देरी हो गयी। उसकी मैं जाँच करूँगा।"—उसके बाद कुछ देर चुप रहकर साहबने कहा था, देवनाथ बाबू ऐसे मौकेपर दरख्वास्त मत दिया कीजिए। खुद जाइए—मिलकर हमें बताइए। —'दरख्वास्त' शब्दका उच्चारण करते-करते वे हँसे।

साहबने गाँवके लिए एक इनारेकी मंजूरी दे दी थी। मगर गाँवका उसका लाभ पहुँचा नहीं। कारण, साहबकी बदली हो गयी और यूनियन बोर्डके प्रेसिडेण्ट कंकनाके बाबूने वह इनारा दूसरे गाँवको दे दिया। इस गाँवके श्रीहरिने भी वोट दी थी। कंकनायन जमींदारकी कचहरी पकड़नेके लिए दरख्वास्त दी थी—इसीके खातिर सजा पूरे गाँवको भोगनी पड़ी।

दरख्वास्त! एक कहानी याद आयी उसे। किसी राजाके यहाँ आग लगी था। राजा दार्जिलिंगमें थे। चूँकि आग बुझानेके लिए घड़ा बाल्टी खरीदनेकी मंजूरी न थी, इसलिए राजाको तार दिया गया। हुकुम भी तारसे ही आया लेकिन आया चौबीस घण्टेके बाद। तबतक सब कुछ भस्म करके आग अपने-आप ठण्डी हो चुकी थी। दरख्वास्तके प्रसंगमें इस बातकी याद आ जानेसे एक तीखी हँसी उसके चेहरेपर फूट उठी। साथ ही साथ उसे साहबका वह कहना याद आ गया। मिस्टर ए० के० हाजरा आई० सी० एस०। देबू उन्हें श्रद्धा करता है।

देबूने जवाब दिया, 'लिख तो नहीं पाया, हरीश चाचा।'

दरख्वास्त नहीं लिखी गयी सुनकर हरीश भवेश आदि प्रवीण लोग सभी असन्तुष्ट हुए। हरीशने कहा 'तुमने भार लिया कि लिख रखोगे, जलपान करके गाँवके लोग आ-आकर दस्तखत करेंगे। अब इस समय कह रहे हो कि नहीं लिख पाया। यह कैसी बात है? पहले कह देते तो डाक्टर ही लिख लेता।'

भवेशने कहा, बेशक साफ कह देना अच्छा था। कोई और इन्तजाम कर लिया जाता।

देबू हँसा। बोला दरख्वास्त तो खैर मैं अभी लिख देता हूँ भवेश भैया मगर दरख्वास्तसे होगा क्या यह बतलाओ।"

सभी चुप रहे। कुछ देरके बाद हरीशने कहा, फिर क्या करनेको कहते

हो ? आखिर कुछ करना तो होगा, इस तरह—यो समझो—अपनेको ही भरोसा करो दूँ ?"

"एक काम कीजिएगा ?"

"कौन-सा काम, कहो !"

"पाँच गाँवके लोगोंको बुलाइए और चलिए सब मिलकर सदरमें मजिस्ट्रेटके पास।"

"इससे कुछ होगा, कहते हो ?"

"दरख्वास्तके मुकाबले बेशक ज्यादा होगा।"

सब लोग फिर आपसमें ही बुदबुदाने लगे।

इस बीच पाठशालाके बच्चे वहीं हाजिर हो गये थे। देवूने कहा "तुम लोग यहीं आ गये ? खैर, आज यहीं पढ़ो। बैठ जाओ। कल जिस पद्यका अर्थ लिखने-को कहा था लिखकर ले आये हो तो ? वही ले आओ रखो यहाँ।"

हरीशने पुकारा—"देवू !"

"जी, कहिए !"

"चलो चला ही जाये। क्या भई तुम लोगोंकी क्या राय है ?"—हरीशने जिज्ञासा भरी आँखोंसे सबकी ओर ताका।

भवेशने उत्साहित होकर कहा, "भगवानका नाम लेकर जाया ही जाये। आखिर साहब खा तो नहीं जायेंगे ! मैं तैयार हूँ। तुम लोग देख लो, अपनी अपनी कहो सभी !"

मनमें हरेकने एक उत्तेजनाका अनुभव किया। हरीश चौपाल सबसे ज्यादा उत्तेजित हो उठा था। वह सबके साथ उठ खड़ा हुआ और सीनेपर हाथ रखकर बोला— आई एम रेडी ! चाहे इस पार, चाहे उस पार—होना होगा सो होगा।"

"तो कल सवेरे ही चलें।"

"हाँ ! हाँ-हाँ !"—अबकी सबकी समवेत सम्मति एक स्वर-सी सुनाई पड़ी।

"लेकिन—!" भवेशको एक बात याद आ गयी।

"लेकिन क्या ?" हरीशने कहा "अब लेकिन क्यों कर रहे हो ?"

"जरा पत्रा नहीं देख लोगे ? दिन तिथि कैसी है ?"

"हाँ, बात तो सही है !

पल ही भरमें सबने हामी भर दी।

देवूने रूखे स्वरमें कहा, "आप सब मानते हैं, पर राजाका काम तो पत्रेको नहीं मानता। कहीं दस रोज तक अच्छी सायत न हो, तो ?"

घोषालने उत्तेजित होकर कहा, "डैम योर पत्रा। (पत्रेकी ऐसी तैसी) बोगस है वह सब।"

देबूने कहा, "मुकदमेकी तारीख होती है तो मघामें भी जाना पड़ता है।"

हरीशने जरा सोचकर कहा, 'बात सही है। राजाके यहाँ पोथी-पत्रा नहीं चलता।"

देबूने कहा, 'सुबह सबेर निकल पड़ें तो दस बजते-बजते ठीक कचहरीके समय ही पहुँच जायेंगे। खानेका सामान चूड़ा-गुड़, जिनसे जो बने, साथ रख लेंगे। एक दिनकी तो बात है।"

ठीक इसी वक्त वहाँ आ पहुँचे गुमास्ता दासजी श्रीहरि घोष भूपाल चौकीदार तथा और भी कई जने। उनमेंसे एक था नारन बैरागी—जो इस अंचलमें राजमिस्त्रीका काम करता है।

दासजीने हँसते हुए कहा कयो भई आप सबने फिरसे देबूकी पाठशालामें नाम लिखाया है क्या मामला क्या है ?'

सबोंका कोई क्या जवाब देता पता नहीं, किन्तु उस भारसे सबको छुटकारा देकर हरेन घोषाल तुरन्त कह उठा— वी आर गोइंग टु दि डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट—कल हम सब मजिस्ट्रेट साहबके पास जा रहे हैं—कटनी जबतक हो नहीं जाती खानापूरी स्टाप्ड —बन्द रहेगी।"

भौहें नचाकर दासजीने पूछा घोषालजीके हाथ में है ? क्या या चार ?

उसने ये बातें कुछ इस ढंगसे कही कि कुछ देरके लिए हक्का-बक्का होकर घोषाल चुप हो गया। उसके बाद वह चिल्ला उठा— तुम ब्राह्मणका इतनी बड़ी बात कहते हो।

दासजीने इस बातका जवाब नहीं दिया। श्रीहरिके हाथमें एक अखबार था। उसे खींचकर बोला लो देखो ज्यादा उछल-कूद मत करो। जितेन्द्रलाल बन्द्योपाध्याय गिरफ्तार। सेटलमेण्टके काममें बाधा देनेके अपराधमें जितेन्द्रलाल बन्द्योपाध्याय गिरफ्तार हो गये। लो पढ़ लो।' उसने अखबारको मजलिसके बीच जोरसे फेंक दिया।

घोषालने ही अखबारको उठाया और शीर्षकपर नजर दौड़ाते हुए कह उठा— माई गाड! फीके पड़े चेहरेसे उसने अखबार देबूकी ओर बढ़ा दिया। देबू उसे पढ़ने लगा।

श्रीहरिने कहा, "आप लोग तो मुझे छोड़कर ही सब कुछ कर रहे हैं मगर मैं आप लोगोंकी सोचे बिना नहीं रह सकता। यह सब मत करें पत्थरसे सर

सख्त नहीं होता। इससे तो अच्छा है, चलिए उस वेला सेटलमेण्ट हाकिमके ही पास चलें। दासजी चलेंगे, मैं भी चलूँगा, आप लोग भी कुछ जाने माने लोग चलें। अच्छी-सी भेंट भी ले चलें। मछली एक खासी मिल गयी है। समझ गये हरीश चाचा पूरी बारह सेर!"

कहते ही-कहते उसे शायद कोई बात याद आ गयी। दामजीने कहा, "दासजी, वह यानी मुर्गीके लिए आदमी भेज दिया गया है न? मिल जुल कर हाकिमको धर-पकड़कर कुछ किया जायेगा। लेकिन यह खिलाफमें दरखास्त देना या साथ मजिस्ट्रेटके पास फरियाद करना—यह एक प्रकारसे सरकारका विरोध करना है। इससे हमारा मुसीबत बढ़ेगी ही, घटेगा नहीं। क्या भाई?' श्रीहरिने पूछा गुमास्ता दासजीसे।

देखने अखबार दासको ही लौटा दिया और फिर मजलिसकी तरफसे मुँह घुमा मन लगाकर बच्चोंको पढ़ाना शुरू कर दिया। इन लोगोंको यह जानता हूँ इसी बाच इनके सकल्प ताशके पत्तोंके घरकी तरह ढहरा पड़े हैं। वह उठा और खड़िया लेकर मुँहमें डालते हुए उसने बोर्डपर लिखा—अगर एक मन दूधका दाम पाँच रुपया दस आना हो'

उधर मजलिसमें फिर राय मशविरेकी बुदबुदाहट शुरू हुई। हरेन घोषाल की ही दबी आवाज सुनाई पड़ रही थी—'यह बहुत नादस होगा। बड़ी खूब सलाह है।"

दामजीने दोखन मिस्त्रीसे कहा, 'ए, रस्सा निकाल। और भूपाल, एक छोर तू पकड़।"

साबकी एक रस्सी लिये खोखन मिस्त्री आगे बढ़ आया। सबने पहले उसने जमीनपर लम्बे पड़कर देवी-देवताओंको प्रणाम किया, उसके बाद हाथ जोड़कर बोला, 'तो शुरू करें?'

दासजीने कहा, 'जै दुर्गा कहकर शुरू कर, इसमें पूछना क्या है? सुना तुमने हरेन मण्डल, भवानी पाल! चण्डीमण्डपको पक्का बनवाया जा रहा है। आप लोग भी अनुमति दें।"

'बनवाया जा रहा है? पक्का?"—मजलिसके सभी लोग अवाक हो गये।

"हाँ, एक कुआँ भी खुदवाया जायेगा—उधर चण्डीतलामें। घोष बाबू, मानो अपने श्रीहरि घोष गाँवका भलाईके लिए यह सब बनवा दे रहे हैं।'

श्रीहरिने हाथ जोड़कर विनयके साथ कहा, "आपलोग अनुमति दें।"

हरेनने कहा, 'जुग-जुग जियो भैया! ऐसा ही तो चाहिए। मगर भाँ पढ़ीरा ही धूल-माटीमें क्या रख रहे हो? चण्डीतलाको भी बनवा दो।'

घोषालने उत्तेजित होकर कहा, "डैम योर पत्रा। (पत्रेकी ऐसी तसी) बोगस है वह सब।"

देवूने कहा, 'मुकद्मेकी तारीख होती है तो मघामें भी जाना पड़ता है।"

हरीशने जरा सोचकर कहा, "बात सही है। राजाके यहाँ पोथी-पत्रा नहीं चलता।'

देवूने कहा, "सुबह सवेरे निकल पड़ें तो दस बजते-बजते ठीक कचहरीके समय ही पहुँच जायेंगे। खानेका सामान चूड़ा-गुड़, जिनसे जो बने, साथ रख लेंगे। एक दिनकी तो बात है।"

ठीक इसी वक्त वहाँ आ पहुँचे गुमाश्ता दासजी, श्रीहरि घोष भूपाल चौकीदार तथा और भी कई जने। उनमेंसे एक था आस्न वैरागी—जो इस अंचलमें राजमिस्त्रीका काम करता है।

दासजीने हँसते हुए कहा क्या भई आप सबने फिरसे देवूकी पाठशालामें नाम लिखाया है क्या, मामला क्या है ?"

पर्योका कोई क्या जवाब देता पता नहीं, किन्तु उस भारसे सबको छुटकारा देकर हरेन घोषाल तुरन्त कह उठा—' वी आर गोइंग टु दि डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट—कल हम सब मजिस्ट्रेट साहबके पास जा रहे हैं—कटनी जबतक हो नहीं जाता सानापूरी स्टाप्ड'—बन्द रहेगी।'

भौहें नचाकर दासजीने पूछा घोषालजीके हाथ कै हैं ? दो या चार ?'

उसने ये बातें कुछ इस ढंगसे कही कि कुछ देरके लिए हक्का-बक्का होकर घोषाल चुप हो गया। उसके बाद वह चिल्ला उठा— 'तुम ब्राह्मणसे इतनी बड़ी बात कहते हो।'

दासजीने इस बातका जवाब नहीं दिया। श्रीहरिके हाथमें एक अखबार था। उसे खींचकर बोला 'लो देखो ज्यादा उछल-कूद मत करो। जितेन्द्रलाल बन्द्योपाध्याय गिरफ्तार। सेट्लमेण्टके काममें बाधा देनेके अपराधमें जितेन्द्रलाल बन्द्योपाध्याय गिरफ्तार हो गये। लो पढ़ लो।' उसने अखबारको मजलिसके बीच जोरसे फेंक दिया।

घोषालने ही अखबारको उठाया और शीर्षकोंपर नजर दौड़ाते हुए कह उठा— माई गाड! फीके पड़े चेहरेसे उसने अखबार देवूकी ओर बढ़ा दिया। देवू उसे पढ़ने लगा।

श्रीहरिने कहा 'आप लोग तो मुझे छोड़कर ही सब कुछ कर रहे हैं मगर मैं आप लोगोंको सोचे बिना नहीं रह सकता। यह सब मत करें पत्थरसे सर

सख्त नहीं होता। उससे तो अच्छा है, चलिए उस बेला सेटलमेण्ट हाकिमके ही पास चलें। दासजी चलेंगे, मैं भी चलूँगा आप लोग भी कुछ जाने-माने लोग चलें। अच्छी-सी भेंट भी ले चलें। मछली एक खासी मिल गयी है। समय गये हरीश चाचा, पूरी बारह सेर!'

कहते-ही-कहते उसे शायद कोई बात याद आ गयी। दासजीसे कहा, "दासजी, वह यानी मुर्गीके लिए आदमी भेज दिया गया है न? फिर जुट कर हाकिमको घर-पकड़कर कुछ किया जायेगा। लेकिन यह खिलाफमें दर-खास्त देना या सीधे मजिस्ट्रेटके पास फ़रियाद करना—यह एक प्रकारसे सर-कारका विरोध करना है। इससे हमारा मुसीबत बढ़ेगी ही, घटेगी नहीं। क्या भाई?' श्रीहरिने पूछा गुमाश्ता दासजीसे।

दबून बनवारी दासको ही लौटा दिया और फिर मजलिसकी तरफ मुँह घुमा मन लगाकर बच्चोंको पढ़ाना शुरू कर दिया। इन लोगोंका वह जानता है, इसी बात इनके सख्त तानके पत्तोंके घरकी तरह भहरा पड़े हैं। वह उठा और खड़िया लेकर मुँहसे बोलते हुए उसने बोर्डपर लिखा—अगर एक मन दूधका दाम पाँच रुपया दस आना हो '

उधर मजलिसमें फिर राय मशविरेकी बुदबुदाहट शुरू हुई। हरेन घोषाल की ही दबी आवाज सुनाई पड़ रही थी—' यह बहुत वाहियात होगा। वेरी गुड सलाह है।"

दासजीने चावल मिस्त्रीसे कहा, ले, रस्सी निकाल। और भूपाल, एक छोर तू पकड़।'

सावनी एक रस्सी लिये चावल मिस्त्री आगे बढ़ आया। सबसे पहले उसने जमीनपर लम्बे पड़कर दवा-खानेको प्रणाम किया, उसके बाद हाथ जोड़कर बोला, 'तो शुरू करें?'

दासजीने कहा न दुर्गा कहकर शुरू कर, इसमें पूछना क्या है? सुना तुमने हरीश मण्डल भैया पाल। चण्डीमण्डपको पक्का बनवाया जा रहा है। आप लोग भी अनुमति दें।'

'बनवाया जा रहा है? पक्का?'—मजलिसकी सभा लोग अवाक् हो गये।

हाँ, एक कुआँ भी खुदवाया जायेगा—उधर चण्डीतलामें। घोष बाबू, यानी अपने श्रीहरि घोष गाँवकी भलाईके लिए यह सब बनवा दे रहे हैं।'

श्रीहरिने हाथ जोड़कर विनयके साथ कहा, 'आपलोग अनुमति दें।'

हरीशने कहा, जुग-जुग जियो भैया! ऐसा ही तो चाहिए। मगर भी पढ़ानेको ही धूल माटीमें क्या रख रहे हो? चण्डीतलाका भी बनवा दो।'

श्रीहरिने कहा, "ठीक तो है। वह भी हो जायेगा। मुझे उसकी याद ही नहीं थी।"

हरीशने मजलिसकी ओर देखकर कहा, "तो अब सेटलमेण्टके बारेमें श्रीहरि और दासजी जो कह रहे हैं, वही ठीक रहा। क्या भई?" श्रीहरिकी इतनी बड़ी उदारतासे सबने उसीकी बात मान ली।

श्रीहरिका चाचा भवेश भतीजेके इस गौरवपर भावातिरेकसे प्राय रो पड़ा। उठकर श्रीहरिके माथेपर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया, "तेरा मगल होगा बेटे, मगल होगा!"

श्रीहरिने चाचाको प्रणाम किया।

घोषालने चुप चुप कहा, 'हो विल डाई—छिः अब मरेगा। एकाएक इतना बड़ा साधु हो गया? लच्छन यह अच्छा नहीं। मतिभ्रम है—दिस इज मतिभ्रम।"

मजलिस भग हो गयी। सब कोई घर चले गये। उधर मयूराक्षी जल्दाईका वक्त हुआ। धूप मन्दिरके शिखरसे खिसककर आठचाला[1] में पहुँच गयी थी। लड़कोंको छुट्टी देकर देबूने कहा, 'पाठशाला कलसे मेरे घरपर होगी, समझ गये? सब वहीं आना।"

"पक्का बन जानेपर तो फिर यहीं होगा न गुरुजी?"

"हाँ हाँ, क्यों नहीं! जाओ, आज छुट्टी।'

वह उठा। उठते उठते उसकी नजर पड़ी कि बूढ़े द्वारिका चौधरी अब कहीं ठुक-ठुक करते चण्डीमण्डपम आ रहे थे। उसने कहा, "चौधरीजी, इतनी देर करके?"

'हाँ, जरा देर हो गयी, सबेरे न आ सका। दरखास्तपर सही करनेकी बुलाहट थी।"

देबूने हँसकर बताया, "बस तकलीफ ही हुई आपको। दरखास्त नहीं दी गयी।'

चौधरीने हँसकर कहा, 'आते हुए रास्तेमें सब सुना। सदर जानेकी राय हुई थी, यह भी सुना फिर यह नया हुक्म भी सुना कि शामको फिर आना होगा। खैर शामको सही देखें क्या होता है!'

"मैं नहीं जाऊगा, चौधरीजी!'

---

१ मन्दिरके बाहर बना सभामण्डप जहाँ लोग जमा हुआ करते हैं।

बूढ़ेने देवूकी तरफ देखते हुए कहा, "पाँच जने जो भला समझें, करें, आप जी छोटा न करें गुरुजी !"

देवू जबरदस्ती जरा हँसा।

"चलिए गुरुजी, आपके यहाँ जरा पानी पीऊँगा।"

"चलिए, चलिए!" —तत्परतापूर्वक देवू आगे बढ़ा।

चलते-चलते बूढ़ेने कहा, "यह सब हो-हवायेगा कुछ नहीं, गुरुजी! एक समय था कि मेरे भी अच्छे दिन थे—और उन दिनों भेंट देना तो हरिलूट-जैसा था। इन्हीं दिनों बल्कि कुछ कम हो गया है। सो मैंने देखा कि होता हवाता कुछ नहीं है। इससे तो मिल मिलाकर सब चले गये होते तो।" 'कुछ होता' यह बात भी भरोसेके साथ वे न कह सके।

गहरा निःश्वास छोड़ते हुए देवूने कहा, "थोड़ी हिम्मत नहीं, बातकी स्थिरता नहीं, ये सब आदमी नहीं हैं चौधरीजी!" देवू अपनेको और शब्द नहीं कर सका, उसकी आँखोंसे आँसू बह निकले। आँखें पोंछकर हँसते हुए उसने फिर कहा, जानते हैं, पाँच भावक लोग एक होकर अगर सदर जाते—मैं कह सकता हूँ चौधरीजी, काम जरूर बनता। साहब जरूर बात सुनते। प्रजाका दुःख सुनेंगे क्या नहीं? हाजरा साहब मजिस्ट्रेटने मुझसे ही उस बार कहा था। मुझे याद है।"

बूढ़े चौधरी हँसे—'आप नाहक ही दुःख करते हैं, गुरुजी!"

'दुःख तो होगा ही।"

'मैं एक कहानी सुनाऊँगा, चलिए।"

पानी पी चुकनेके बाद मलेके हुक्केमें तम्बाखू पीते हुए चौधरीने कहा, "बहुत दिन हुए महाग्रामके ठाकुरजीके साथ कुम्भ नहानेके लिए प्रयाग गया था। वहाँ प्रकार प्रकारके संन्यासी देखकर दंग रह गया। नागा संन्यासी देखा—सब नंग-धड़ंग बैठे। किसीने छाती तक अपना बदन बालूमें गाड़ दिया है तो कोई ऊर्ध्व बाहु, कोई कीलोंके आसनपर बैठा है, कोई चारों तरफ आग जलाये बैठा है। अवाक हो गया देखकर। मैंने कहा स्वर्ग इन लोगोंकी मुट्ठीमें है। मेरी यह बात सुनकर ठाकुर बोले, चौधरी, तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ'।'

सतयुगका आरम्भ। तुरन्त-तुरन्त सृष्टि हुई थी मनुष्योंकी। सभी उस समय साधु। सतयुग जो था—जंगलमें कुटिया बनाकर रहते, फल-मूल खाते, भगवान्-

का नाम लिया करते और दिन बड़े आनन्दसे कटता। लक्ष्मी उस समय वैकुण्ठमें थीं, अन्नपूर्णा कैलासमें—मतलब कि सोना रूपा, यहाँतक कि अन्नका भी चलन नहीं हुआ था दुनियामें। खैर, इस तरहसे एक युग बीता। उस समय अकाल मृत्यु नहीं था, इसलिए हजार सालके बाद एक ही साथ एक युगके मरनेका समय हो आया। सो लोगोंने यह तै किया—चलो, हम लोग सशरीर स्वर्ग चलें। जैसा संकल्प था वैसा ही काज। निकल पड़े सब लोग।

बदरिकाश्रम पार करके हिमालयकी ओर चींटी-सी लम्बी कतार चली जा रही थी मनुष्योंकी। स्वर्गके फाटकपर जो पहरेदार था उसने देखा कि करोड़ों करोड़ लोग कलरव करते हुए उसी ओर चले आ रहे हैं। भयसे घबराकर वह देवराज इन्द्रके पास दौड़ा, देवराज, बड़ी विपत्ति आ पड़ी है।

कैसी विपत्ति ?'

'करोड़ोंकी तादादमें जाने कौन चींटीकी पाँत-से स्वर्गकी तरफ़ चले आ रहे हैं। शायद दैत्योंकी सेना है।'

दैत्योंकी सेना ? यह कह क्या रहे हो ?'

तैयार होनेकी हड़बड़ी पड़ गयी। इतनेमें आये नारदजी। उन्होंने कहा, 'दैत्य नहीं, आदमी है।'

'आदमी ?'

'जी हाँ आदमी ! आपके हथियारोंसे उनका कुछ नहीं होगा क्योंकि उनके तनमें पापकी छूत नहीं। देव-अस्त्र वहाँ बेकार है। उनके बदनसे छूते ही हथियार फूलमाला बन जायेंगे।

तो उपाय ? इतने इतने लोग अगर जीते जी स्वर्गमें आ जायेंगे तो ?

इन्द्रसे और बोल्ते नहीं बना। हर कोई शायद उन्हींके सिंहासनका दावा करेगा।

अन्तमें बोले, चलो चलो नारायणके पास चलो।'

नारायण सुनकर हँसे। कहा, अच्छा चलो, देखें। पहले उन्होंने माँ अन्नपूर्णाको भेजा।

अन्नपूर्णाने रास्तेमें एक पुरीका निर्माण कर दिया। एक भण्डारको अन्न पायस, व्यंजनसे पूर्ण कर रखा। उसके बाद आदमियोंकी जमातके वहाँ पहुँचते ही बोलीं चलते-चलते तुम लोग बहुत थक गये हो। आज मेरा आतिथ्य स्वीकार करो।

लोगोंने एक-दूसरेका मुँह ताका। रसोईकी खुशबूसे मुग्ध हो गये सब। कुछने उस मोहको झटककर कहा—स्वर्गकी राहमें आराम करना ही नहीं

चाहिए। वे चले गये। जो रह गये वे भरपूर खाकर वहीं लेट गये। कहा, 'माँ, हम लोग अगर यहीं रह जायें तो रोज इसी तरहसे खानेको दोगी न ?'

माँने कहा, 'जरूर!'—लोग वहीं रह गये।

जो लोग रुके नहीं वे बढ़ते गये। तब नारायणने लक्ष्मीको भेज दिया। लक्ष्मीकी नगरी—सोनेकी। सोनेका रास्ता, सोनेकी खाट, नगरीकी धूल सोनेकी। देखकर मनुष्योंकी आँखें चौंधिया गयीं।

माने कहा, 'बेटे, यह सारा कुछ तुम लोगोंके लिए है। जाओ नगरके अन्दर जाओ।'

एक दल दाखिल हो गया अन्दर।

रास्तेमें एक नगरी तबतक और तैयार हो चुकी थी। चारों तरफ फूल बगिया, कोयल कूक रही है भुवन मोहिनी तानकी गूँज और एक अनोखी सुगन्ध आ रही है। दरवाजेपर खड़ी अप्सराएँ। उनके एक हाथमें अपूर्व फूलोंकी माला, दूसरेमें सोनेका पानपात्र। उन्होंने कहा, 'आइए विश्राम कीजिए! हम सब आपकी दासी हैं आपकी सेवाके लिए खड़ी हैं आप प्यासे हैं—लीजिए, यह पीजिए!'

पीनेकी वह चीज स्वर्गकी सुरा थी। उनके दल लोग गिर पड़े।

नारायणने कहा 'देखो तो इन्द्र और कोई आ रहा है ?'

इन्द्रने निश्चिन्तताकी साँस लेकर कहा, 'जी नहीं!'

'अच्छी तरहसे देखा ?'

'कुछ हिल तो रहा है। शायद कोई आदमी है।'

नारायणने कहा, 'स्वर्गका दरवाजा खोल दो और तुम स्वयं हाथमें पारिजातकी माला लेकर खड़े रहो। उसे मेरे-जैसा सम्मान देकर स्वर्गमें ले आओ। उसके चरणोंकी धूलसे स्वर्ग पवित्र हुआ।

हँसकर चौधरीने कहा "समझे गुरुजी! यह किस्सा खतम करके ठाकुरजीने कहा था 'चौधरी, कोई भक्त रसीली वस्तुसे भूलेगा कोई महन्त होकर खाना-चाँदीसे भूलेगा कोई देवदासियोंके दल म स्त्रियोंपर आसक्त होगा। स्वर्ग करोड़ों-करोड़ोंमें-से कोई एक ही जायेगा। बेटा मत माना गुरुजी मनुष्यने कदम-कदम-पर भूल चूक होती है। आप इसपर अफसोस कर रहे हैं कि वे आदमी नहीं हैं। आदमी होना क्या कोई मामूली बात है ? खर मैं चलूँ। डॉक्टर आ रहे हैं। वे आ जायेंगे तो काफ़ी देर हो जायेगी। चलता हूँ।'

चौधरीजी जल्दी-जल्दी रास्तेपर उतर गये।

का नाम लिया करते और दिन बड़े आनन्दसे कटता। लक्ष्मी उस समय वैकुण्ठमें थी, अन्नपूर्णा कैलासमें—मतलब कि खाना रूपा, यहाँतक कि अन्नका भी चलन नहीं हुआ था दुनियामें। खैर, इस तरहसे एक युग बीता। उस समय अकाल मृत्यु नहीं थी, इसलिए हजार सालके बाद एक ही साथ एक युगके मरनेका समय हो आया। सो लोगोंने यह तै किया—चलो, हम लोग सशरीर स्वर्ग चलें। जैसा संकल्प था वैसा ही काज। निकल पड़े सब लोग।

बदरिकाश्रम पार करके हिमालयकी ओर चींटी-सी लम्बी कतार चली जा रही थी मनुष्योंकी। स्वर्गके फाटकपर जो पहरेदार था उसने देखा कि करोड़ों करोड़ लोग कलरव करते हुए उसी ओर चले आ रहे हैं। भयसे घबराकर वह देवराज इन्द्रके पास दौड़ा, देवराज, बड़ी विपत्ति आ पड़ी है।

'कैसी विपत्ति ?'

'करोड़ोंकी तादादमें जाने कौन चींटीकी पाँत-से स्वर्गकी तरफ चले आ रहे हैं। शायद दैत्योंकी सेना है।'

दैत्योंकी सेना ? यह कह क्या रहे हो ?'

तैयार होनेकी हड़बड़ी पड़ गयी। इतनेमें आये नारदजी। उन्होंने कहा, 'दैत्य नहीं, आदमी हैं।'

आदमी ?

'जी हाँ आदमी ! आपके हथियारोंसे उनका कुछ नहीं होगा, क्योंकि उनके तनमें पापकी छूत नहीं। देव अस्त्र वहाँ बेकार है। उनके बदनसे छूते ही हथियार फूलमाला बन जायेंगे।

'तो उपाय ? इतने-इतने लोग अगर जीते जी स्वर्गमें आ जायेंगे तो ?' इन्द्रसे और बोलते नहीं बना। हर कोई शायद उन्हींके सिंहासनका दावा करेगा ! अन्तमें बोले, चलो-चलो नारायणके पास चलो।'

नारायण सुनकर हँसे। कहा, 'अच्छा चलो, देखें। पहले उन्होंने माँ अन्नपूर्णाको भेजा।

अन्नपूर्णाने रास्तेमें एक पुरीका निर्माण कर दिया। एक भण्डारको अन्न पायस व्यंजनसे पूर्ण कर रखा। उसके बाद आदमियोंकी जमातके वहाँ पहुँचते ही बोलीं चलते-चलते तुम लोग बहुत थक गये हो। आज मेरा आतिथ्य स्वीकार करो।'

लोगोंने एक दूसरेका मुँह ताका। रसोईकी खुशबूसे मुग्ध हो गये सब। कुछने उस मोहको झटककर कहा—स्वर्गकी राहमें आराम करना ही नहीं

चाहिए। वे चले गये। जो रह गये, वे भरपूर खाकर वहीं लेट गये। कहा, 'माँ, हम लोग अगर यहीं रह जायें तो रोज इसी तरहसे खानेको दोगी न?'

माँने कहा, 'जरूर!'—लोग वहीं रह गये।

जो लोग रुके नहीं, वे बढ़ते गये। तब नारायणने लक्ष्मीको भेज दिया। लक्ष्मीकी नगरी—सोनेकी। सोनेका रास्ता, सोनेकी खाट, नगरीकी धूल सोनेकी। देखकर मनुष्योंकी आँखें चौंधियाँ गयीं।

माँने कहा, 'बेटे, यह सारा कुछ तुम लोगोंके लिए है। जाओ, नगरके अन्दर जाओ।'

एक दल दाखिल हो गया अन्दर।

रास्तेमें एक नगरी तबतक और तैयार हो चुकी थी। चारों तरफ फूल बगिया, कोयल कूक रही है, भुवन मोहिनी तानकी गूँज और एक अनोखी सुगन्ध आ रही है। दरवाजेपर खड़ी अप्सराएँ। उनके एक हाथमें अपूर्व फूलोंकी माला, दूसरेमें सोनेका पानपात्र। उन्होंने कहा, 'आइए, विश्राम कीजिए! हम सब आपकी दासी हैं, आपकी सेवाके लिए खड़ी हैं, आप प्यासे हैं—लीजिए, यह पीजिए!'

पीनेकी वह चीज स्वर्गकी सुरा थी। दलके दल लोग पिल पड़े।

नारायणने कहा, 'देखो तो इन्द्र, और कोई आ रहा है?'

इन्द्रने निश्चिन्तताकी साँस लेकर कहा, 'जी नहीं!'

'अच्छी तरहसे देखा?'

'कुछ हिल तो रहा है। शायद कोई आदमी है।'

नारायणने कहा, 'स्वर्गका दरवाजा खोल दो और तुम स्वयं हाथमें पारिजातकी माला लेकर खड़े रहो। उसे मेरे-जैसा सम्मान देकर स्वर्गमें ले आओ। उसके चरणोंकी धूलसे स्वर्ग पवित्र हुआ'।

हँसकर चौधरीने कहा, "समझे गुरुजी! यह क़िस्सा खत्म करके ठाकुरजीने कहा था, 'चौधरी, कोई मस्त रसीली वस्तुमें भूलेगा, कोई मस्त होकर सोना चाँदीमें भूलेगा, कोई स्वर्गवासियोंके दल में स्त्रियोंपर आसक्त होगा। स्वर्ग करोड़ों-करोड़ोंमें-से कोई एक ही जायेगा'। खेद मत मानो गुरुजी, मनुष्यसे कदम-कदमपर भूल-चूक होती है। आप इसपर अफसोस कर रहे हैं कि वे आदमी नहीं हैं। आदमी होना क्या कोई मामूली बात है? खैर मैं चलूँ। डॉक्टर आ रहे हैं। वे आ जायेंगे तो काफ़ी देर हो जायेगी। चलता हूँ।'

चौधरीजी जल्दी-जल्दी रास्तेपर उतर गये।

कहानी देबूको बडी अच्छी लगी। बिलूको सुना देनी होगी। अजीब खूबी है उसमें—एक बार सुनते ही याद कर लेती है।

डॉक्टरने आकर बिना भूमिकाके ही कहा, "मने सब सुन लिया।"

देबू हँसा। बोला, "सबरसे तुम रहे कहाँ आज?"

'अनिरुद्धके यहाँ। लुहार बहूको आज फिर फिट पडा था।"

'फिर?'

"हाँ भयकर फिट। घरमें न कोई औरत न मद। अजाब मुसीबत। गनीमत कहो कि दुर्गा थी। थोडी-बहुत मदद मिली। लगता है, उसे मृगीकी बीमारी हो गयी। अनिरुद्ध कुछ और ही कर रहा है। कहता है किसीने टोना कर दिया है।'

"टोना कर दिया है?"

"हाँ वह छिरु पालका नाम लेता है। खर, जाने दो। इधर यह जो हुआ, ठीक ही हुआ देबू। बादमें सारा दोष मेरे-तुम्हारे मत्थे पडता। जिते द्रपाल बनर्जीकी गिरफ्तारीके बारेमें मालूम हुआ न? शायद हो कि हमें भी गिरफ्तार किया जाता—और ये सब साले अपने-अपने दरबम दुबक जाते। अच्छा म अभी चलता हूँ। सबेरेसे ही रोगी राह देख रहे हैं। दवा देनी होगी।"

डॉक्टर जल्दीमें चला गया। देबू जरा हँसा। डॉक्टरकी इस व्यस्तताका आधा तो सही है बाकी दिखावा। रोगियोंके लिए उसे दिली दद है डॉक्टरके फजके बारेमें वह सचमुच ही सचेत है। दोस्त हो चाहे दुश्मन, समय हो कि असमय—बुलाते ही वह आता है, यत्नपूवक अपनेसे तैयार करके दवा देता है। लेकिन उसकी आजकी व्यस्तता कुछ ज्यादा है कुछ अस्वाभाविक। बनर्जीकी गिरफ्तारीके समाचारसे डॉक्टर काफी डर गया है—सचमुच वो इस बहाने वह डराना चाहता है।

"अजी ओ गुरुजी!" अन्दरसे किसीने आवाज दी।

गुरुजीने पीछे मुडकर देखा—बिलू खडी हँस रही है। आवाज उसीने दी थी।

गुस्सेका भान करके देबू कहा, 'अरी ओ शतान लडकी, हँस क्यों रही है? सबक याद किया है? बिलू खिलखिलाकर हँस पडी। देबू आया। आकर बोला "आज एक बडी अच्छी कहानी सुनी है। तुम्हे सुनाऊँगा। एक ही बार सुनकर याद कर लेना होगा लेकिन।'

बिलूने कहा, तुम मुन्नेके पास रहो। मैं जरा लुहार-बहूको देख आती हूँ।"

पन्द्रह

पद्मकी मूर्च्छा बाक़ायदा एक रोग हो गयी। लगभग एक महीने तो वह रोज़ ही मूर्च्छित हो जाती। परिणाम यह कि इतनेमें ही बाँझ पद्मका बलिष्ठ शरीर कमज़ोर और दुबला हो गया। वह कुछ लम्बी है, दुबली हो जानेसे वह और भी लम्बी लगने लगी। कमज़ोर भी ज्यादा नज़र आती। कमज़ोरीसे चलने फिरने जब वह किसी चीज़का सहारा लेकर अपनेको सँभालती तो लगता, मानो वह काँप रही है थर-थर। सबल और तेज़ चलनेवाली उस पद्मके हर क़दममें अब थकावट झलक उठी है। धीमी और धीर गतिसे चलनेमें भी उसके पाँव अब लड़खड़ाते हैं। केवल उसकी निगाह अस्वाभाविक तौरपर तेज़ हो उठी है। उसके कमज़ोर और पीले पड़े चेहरेपर बड़ी-बड़ी आँखें पीतलकी आँखों-सी चकमक करती हैं। कभी-कभी उन आँखोंको देखकर अनिरुद्ध सिहर उठता है।

अभावोंके ऊपर यह दुश्चिन्ता। अनिरुद्ध कहीं पागल न हो जाये। जगन डॉक्टरसे सलाह लेने उस रोज़ वह क़स्बेके अस्पतालके डॉक्टरको बुला लाया।

जगनने 'मिरगी' बतायी थी।

अस्पतालके डॉक्टरने बताया "यह एक प्रकारकी मूर्च्छा है। ख़ासकर बाँझ औरतोंको, जिन्हें बाल-बच्चे नहीं होते, यह बीमारी ज़्यादा होती है। हिस्टीरिया है।"

लेकिन प्राय सभी पड़ोसी इसे दैवरोग बताते। कारण भी ढूँढ निकालनेमें देर नहीं लगी। भला, बाबा बूढ़े शिव और भग्न काशीकी उपेक्षा करके कभी किसीने पार पाया है! देवस्थलीके भोगकी चीज़ ले जाना कोई मामूली क़सूर तो है नहीं! अनिरुद्धके पापसे उसकी स्त्रीको यह रोग हुआ है। लेकिन अनिरुद्धने इसे नहीं माना। उसकी राय किसीसे नहीं मिलती। उसका ख़याल है किसीने कोई टोटका कर दिया है। आज भी गाँवमें डाइन विद्यामें माहिर बहुत हैं। वे बान मारकर आदमीको पत्थर-जैसा पशु बना सकते हैं। पद्मकी एक बात उसके मनमें हर पल जगती है।

पद्मको जिस दिन पहली बार मूर्च्छा आयी और जगन डॉक्टरने उसे छोड़ा—उसी रातको अन्तिम पहरमें वह सोनेमें जोरोंसे चीखकर फिर बेहोश हो गयी थी। उस सुनसान रातमें अनिरुद्ध जगनको फिरसे बुला नहीं सका और मूर्च्छित पड़ी पद्मको अकेली छोड़कर जानेका कोई उपाय भी नहीं था। बड़े कष्टसे जब उसे होश आया तो निरी असहाय-सी अनिरुद्धसे लिपटकर उसने कहा था "मुझे बड़ा डर लगता है!"

'डर लगता है? काहेका डर?

"मैंने सपना देखा।"

"क्या, क्या सपना देखा? इस तरहसे तुम चीख क्यों उठी?'

"सपना देखा कि एक बहुत बड़े काले गेंहुअनने मुझे लपेटना शुरू किया है।"

'साँपने?'

'हाँ, साँपने! और "

"और?"

"साँपको उसी मुँहजलेने छोड़ा है—'

"किसने? किस मुँहजलेने?'

'उसी दुश्मन—छिरूने! साँप छोड़कर हमारे सदर दरवाजेके कोनारमें खड़ा-खड़ा वह हँस रहा है।'

थर थर काँपती हुई पद्मने उसे जकड़ लिया था।

यह बात अनिरुद्धको याद है। पद्मकी बीमारीका खयाल आते ही उसे वही बात याद आ जाती है। जब डॉक्टरोंका इलाज चल रहा था, तब याद होते हुए भी उसने इस बातकी परवाह नहीं की। लेकिन दिन दिन उसकी यह धारणा दृढ़ ही होती गयी। अब वह किसी ओझाकी सोचता है या किसी देवी-देवताके स्थानकी!

अनिरुद्धके इस खयालको खास कोई नहीं जानता। उसने यह बात पद्मसे भी नहीं कही। महज अपने मितवासे कही है गिरीश बढ़ईसे। दोनों जब जंक्शन शहरको जाते हैं तो आपसमें सुख-दुःखकी बहुतेरी बातें होती हैं। बहुत-बहुत कल्पनाएँ करते हैं दोनों। अभी लगभग सारा गाँव एक तरफ हो गया है। उन्हें सबक सिखानेकी लगातार कोशिशें भी चल रही हैं। अनिरुद्ध और गिरीशके साथ एक आदमी और है—पातू मोची। छिरूको आखिर धापके रूपमें गाँवका प्रधान बनाकर गुमाश्ता दासजी बैठे-ही बैठे बटन दबा रहा है। गाँववालोंके साथ नहीं हैं तो सिर्फ देबू गुरु, जगन घोष और तारा

हजाम। देबू किसीका पण नहीं लेता। उसके स्नेह प्रेमपर अनिरुद्धको भरोसा है। लेकिन इन बातोंके लिए हर समय उसे तंग करनेमें भी अनिरुद्धको संकोच होता। जगन डाक्टर रात दिन छिरूको गाली ही दिया करता। लेकिन उतना ही। उससे और ज्यादाकी उम्मीद करना भूल है। तारा हजामपर विश्वास नहीं किया जा सकता। उससे गाँववालोंका झमेला चुक गया है। चुकानेको गाँववाले ही मजबूर हुए, इसलिए कि सामाजिक क्रिया-कर्ममें नाईकी जरूरत बहुत ज्यादा है। जात कर्मसे लेकर श्राद्ध तक—सब काममें नाईका होना जरूरी है। तारा परन्तु अब नकद पैसे लेकर ही काम करता है, दर वेशक बाजार दरकी आधी। दाढ़ी मूँछ बनानेके लिए एक पैसा, बाल काटनेका दो पैसा और एक साथ बाल दाढ़ीका तीन पैसा।

दूसरी ओर सामाजिक क्रिया-कर्ममें नाईका पावना भी घट गया है। नकदके सिवा चावल-दाल आदि जो कुछ भी मिलता था उसका दावा नाईने छोड़ दिया है। तारा नाई आम किसी दलका नहीं है वह निरपेक्ष है। अनिरुद्ध और गिरीश पूछने तो वह गाँववालोंके बहुत से मनसूबे बता देता। और जब गाँवके लोग अनिरुद्ध गिरीशके बारेमें पूछते तो हाँ ना करते हुए दो चार बातें वह उनसे भी कुछ कुछ बता देता। जो भी हो लेकिन तारा नाईका आकर्षण अनिरुद्ध-गिरीशकी ही तरफ ज्यादा है। पातूसे उसका कोई वास्ता नहीं। इन्हीं लोगोंसे वह कुछ ज्यादा बातें बताता, किन्तु बिना पूछे वह देबूको ही सारी खबरें बताया करता। देबूको वह मानता है। और थोड़ा-बहुत बताता जगन डाक्टरको भी है। वह डॉक्टरको चुन चुनकर उत्तेजित करनेवाली खबरें बताता। डॉक्टर जोर जोरसे गाली गलौज करता, तारा नाईको उससे खुशी होती। वह दाँत निपोरकर हँसता। लेकिन चालाक तारा नाई कभी भी खुलकर अनिरुद्ध गिरीशके प्रति घनिष्ठता नहीं दिखाता। उनसे उसकी जो भी बातचीत होती, सब जंक्शनका हाटमें होती। जंक्शनकी हाटमें एक पेड़के नीचे आजकल उसने भी किसबत लेकर बैठना शुरू कर दिया है। उसके यजमान शिवकालीपुर देबूडिया, कुसुमपुर महाग्राम, कंकना इन्हीं पाँच गाँवोंमें है, मगर इनमेंसे दो गाँवोंका काम उसने बिलकुल छोड़ दिया है। अपने गाँव, महाग्राम और कंकनामें ही वह काम करता है। महाग्रामके ठाकुरजी महाग्राम रहते हैं। इन शिवशेखर न्यायरत्न ठाकुरके जीते-जी उस गाँवका काम छोड़ना असम्भव है। न्यायरत्न महोदय देवता हैं। इन दो गाँवोंमें दो दिन, हफ्तेके बाकी पाँच दिन वह अनिरुद्ध और गिरीशकी तरह सवेरे जंक्शन जाता है। हाटमें अनिरुद्धके लुहारखानेके पास ही एक बरगदके नीचे दो चार ईंट डालकर बैठता है। वहीं उसका हेयर

कटिंग सैलून है। उसके मनमें एक बाकायदा सैलूनकी भी कल्पना है। अनिरुद्ध से वहीं उसकी बातें होती हैं। कल्पना उसे वस्तुतः नहीं आना पड़ता। बड़े लोगोंका गाँव है, बाबू लोगोंने अपने अपने उस्तरे खरीद लिये हैं। वहाँ जाना पड़ता है क्रिया-कर्म और पूजा-पाठ होनेपर। इसमें तो उसका लाभ ही होता है।

गोविन्द पद्मकी बीमारीके बारेमें अपने खयालकी बात अनिरुद्धने गिरीशसे कही है, तारासे नहीं, और दरअसल ताराका वह पूरा विश्वास भी नहीं करता, लेकिन ताराचरण खोज-खबर बहुत रखता है। अच्छे आमोंकी दव दानवोंके स्थानोंकी—इन बातोंकी खोज वह दे सकता है। अनिरुद्ध सोच रहा था—तारासे वह पूछे या नहीं।

उस रोज आवेशमें उसने यह बात ताराके बदले जगन डॉक्टरसे कह दी। दोपहरको जक्शनके लुहारखानेमें लौटनेपर देखा, पद्म मूर्च्छित पड़ी है। उसे मूर्च्छा रोग होनेके बादसे वह दोपहरको घर आ जाता है। उस दिन आकर पद्मको मच्छिल दस कई बार हिलाया-डुलाया पर कोई उत्तर नहीं मिला। कब मूर्च्छा आया है कौन जाने! मुहमें आखोंमें पानीके छींटे देनेपर भी होश नहीं आया। लुहारखानेसे जल्द भुनकर लौटा था। मिजाज ठीक नहीं था। खीझ और गुस्सेसे वह आपेसे बाहर हो गया। पानीका लोटा उसने फेंक दिया और पद्मका झोटा पकड़कर बेरहमीसे खींचा। मगर पद्म अचेत। उसका बाल छोड़कर उसकी तरफ देखते देखते अनिरुद्धका कलेजा रुलाईके आवेगसे थर-थर काँप उठा। वह पागल-सा दौड़ा और जाकर जगन डॉक्टरको बुला लाया। जगनकी दवाकी तेज झाससे पद्मने बहाशाकी हालतमें ही दो एक बार अपना मुँह हटा लिया और अन्तमें एक गहरी सास छोड़कर आँखें खोल दीं।

डाक्टरने कहा, 'होश आ गया, लो! रो क्यों रहे हो?"

अनिरुद्धकी आँखोंसे झर झर आँसू बह रहा था। रुलाई रुँधे स्वरमें ही उसने कहा, 'मेरा नसीब देखिए डॉक्टर! आगमें जल झुलसकर एक डेढ कोस चलकर आया और यहाँ यह हाल है!"

डॉक्टरने कहा, करोगे भी क्या आखिर! बीमारीपर तो किसीका कोई बस नहीं है। मनुष्यने तो यह कुछ कर नहीं दिया है!'

आज अनिरुद्धसे अपनेको जब्त करते नहीं बना। बोला, "यह मनुष्यका ही किया हुआ है, डॉक्टर! मुझे इसमें अब जरा भी सन्देह नहीं रहा। बीमारी

होती तो इतनी दवा-दारू करनेपर कुछ तो असर होता। यह बीमारी नहीं, यह मनुष्यकी ही करतूत है।"

डॉक्टर होते हुए भी जगन पुराना संस्कार बिल्कुल भूल नहीं सका था। रोगीको मकरध्वज और सूई देनेके बाद भी देवताके पादान्वपर भरोसा रखता था। अनिरुद्धकी ओर देखते हुए उसने कहा, 'ऐसा हो ही नहीं सकता, यह बात नहीं ▌। डाइन डाकिन देशसे एकबारगी उठ नहीं गयी है। लेकिन अपना डॉक्टरी शास्त्र तो इसका विश्वास नहीं करता। उसका कहना है "

टोककर अनिरुद्ध बोला, "अब साफ-साफ ही कह दूँ—यह करतूत उस हरामजादे छिरूकी है।" मारे क्रोधके वह फूल उठा।

ताज्जुबसे जगनने पूछा, "छिरूकी है?"

"हाँ, छिरूकी। क्रोधावेगमें अनिरुद्धने पद्मके उस सपनेका सारा हाल डॉक्टरको बताया और अन्तमें कहा, 'वह जो चन्दर गराई है न, वह साला छिरूका जिगरी दोस्त है। वह डाकिनी विद्या जानता है। जाग़ी गराईकी बेवा बिटियाको उस यमदूतने मेरा वशीकरण करके निकाल लिया देखा ता है आपने। छिरूने उसीसे यह सब कराया है। मैं यह निश्चयके साथ कह सकता हूँ।"

जगन गहरे सोचमें डूब गया। कुछ देरके बाद दो एक बार गर्दन हिलाकर कहा, "हूँ।"

गुस्सेसे अनिरुद्धके दोनों होठ थर-थर काँप रहे थे। इन दोनोंकी बातचीतके बीच ही पद्म उठ बैठी थी। तकियाके सहारे टिकी हाँफ रही थी वह। अनिरुद्ध-का यह धारणा सुनकर स्तब्ध हो गया।

जगनने कहा, "तुम वहीं करो अनिरुद्ध। कोई जन्तर या तावीज हो तो डाल रहे। लेकिन एक बात मेरे मनमें आ रही है, देख लेना, जरूर फलेगा। यमदूत अपनेसे आप ही मारा जायेगा।"

अचरजसे अनिरुद्ध जगनकी ओर ताकता रह गया। जगन बोला, "साँपका सपना देखनेसे क्या होता है जानते हो?"

'क्या होता है?'

'वंश बढ़ता है। घरमें बच्चे होते हैं। तुम लोगोंके भाग्यमें बच्चा नहीं है, लेकिन छिरूने खुद ही जब साँप छोड़ा है तो उस यमदूतका बेटा मरकर तुम्हारे घर जन्म लेगा। तुम्हारे हैं नहीं, उसीने अपनेसे दिया है।'

अनिरुद्धको इस अनोखी व्याख्यासे अवाक् हो जाना पड़ा। उसकी आँखें विस्फारित हो आयीं। वह डॉक्टरकी ओर देखता रह गया।

पद्मके सरपर-से घूँघट थोड़ा सरक गया था, वह भी थिर और एक अजीब निगाहसे सामनेकी ओर ताक रही थी। उसे छिरूकी मारा और दुर्गी स्त्रीकी याद आ गयी। याद आ गयी उसकी आँखोंकी वह करुण विनती, उसके व शब्द— मेरे दाना बेटाको गाली मत देना बहन, म तुम्हारे पैरा पड़ने आया हूँ!'

जगन और अनिरुद्ध बातें करते हुए बाहर निकल गये। जगनने कहा, 'इलाज इसका वैसा कुछ ह नहीं। तब ऐसा कुछ करते रहना चाहिए कि दिमाग जरा ठण्डा रहे। बल्कि न हो तो तुम सावग्रामके शिवतल्ले एक बार घूम ही आओ। बड़ी शोहरत ह वहाँकी।"

शिवतल्लेका वह सारा मामला निरा भौतिक ह। अपनी माँके लगातार शोक क्रन्दनसे विचलित होकर मर हुए बेटेकी प्रेतात्मा रोज साँझको उसके पास आती ह। माँ अँधेरेमें खाना परोसकर रख दती ह और आसन बिछा दती ह। बेटेकी प्रेतात्मा आकर वहाँ बठती ह, मास बात करती ह। उस समय जगह-जगहके लाग वहा आकर अपने अपने रोग दुःखकी बात प्रेतात्मास कहते ह और मिन्नत करते हैं। प्रेतात्मा उनके प्रतिकारका उपाय कर देती ह। किसीको तावीज दती ह, किसीको गण्डा, किसीको जड़ी-बूटी, और किसीको कुछ और।

अनिरुद्धने कहा, 'अच्छा वही करता हूँ।'

'वही करता हूँ नहीं, वहीं जाओ तुम! दखा तो सही, क्या कहता ह?'

एक गहरा निश्वास छोड़कर अनिरुद्ध जरा हँसा, फीकी हँसी। बोला मगर पीठ ता इधर दीवारसे आ सटी ह आग बढ़ूँ ता कस!'

डाक्टरने अनिरुद्धकी ओर ताका। अनिरुद्धने कहा, पूँजी चुक गया डॉक्टर बाबू बरसात आते-आते भोजन भी न नसीब हो शायद! खतका कुल धान तो चोरी चला गया। गाँववालोंने धान लिया नहीं, म भी माँगन नहीं गया। और तिसपर इस औरतकी बीमारीम क्या खच हो रहा ह आप तो जानते ही ह! सुना ह 'शिवतल्लेका माग' बहुत बड़ी है।"

प्रेत-दवता शिवनाथ रोग-दुःखका उपाय तो करता पर बदलेमें उसकी माँ को उसका दाम देना पड़ता और वह भी दना पड़ता पहले ही।

जगनने कहा पाच सात रुपयेकी बात होती, तो म ही कोई उपाय कर दखता लेकिन ज्यादाकी ता

अनिरुद्ध उच्छ्वसित हो उठा—डॉक्टरकी अधूरी बातके जवाबमें वह बोला "उतनेसे ही हो जायगा डॉक्टर बाबू, उतनेमें ही हो जायेगा! और कुछ म उधार पैचा कर लूँगा। कुछ दवूसे, और कुछ अगर दुर्गासे"

भँवें सिकोड़कर डॉक्टरने कहा, "दुर्गा ?"

अनिरुद्ध फिक करके हँस पड़ा। सर खुजाते हुए जरा शर्मिन्दा-सा होकर बोला, "पातू मोचीकी बहन जी !"

आँखें जरा बड़ी करके डॉक्टर भी हँसा—"ओ ! तो उस छोरीके पास रुपया-पैसा है क्या ?"

"जी हाँ, है ! साले छिम्के काफ़ी रुपये ऐंठे हैं उसने। और फिर कचनाके बाबुओंसे भी अच्छा पैसा मिल जाता है उसे। पाँच रुपयेसे कममें तो कदम ही नहीं बढ़ाती।"

'मैंने तो सुना—छिम्म बिल्कुल बुट्टी हो गयी है उसकी ?'

अनिरुद्धने आँखें फाड़कर कहा 'उसने मुझसे एक दाव बनवा लिया है, कहती है, पगले कुत्तेका विश्वास नहीं। रातको उस दावको पास रखकर सोती है।"

'एँ ?"

"जी हाँ !"

"मगर तुमसे इतना मेल-जोल ? आशनाई है क्या ?"

सिर खुजलाकर अनिरुद्ध बोला 'जी वैसी बात नहीं। लेकिन है वह भली औरत ! मैं आना जाना हूँ गप शप करता हूँ।'

'शराब-सराब चलती है न ?'

"जी कभी-कभार '

शरमाकर अनिरुद्ध हँसा।

सड़कपर खड़े होकर उसने बिना कुछ छिपाये-चुराये डॉक्टरसे सारी बातें खोलकर कह दीं।

दुर्गासे अनिरुद्धकी घनिष्ठता सच ही बड़ी हार्दिक हो चली है। दुर्गा आजकल थोड़ेदिनसे हेल्मेल छोड़कर अपने जीवनका नया रूप और भाव देनेकी कर रही है। आजकल दुर्गा दूध पहुँचानेके लिए रोज ही जंक्शन जाती है। लौटते हुए अनिरुद्धके कुल्हारखानेमें बीड़ी या सिगरेट पीकर हँसी-खुशीकी बातें करती कुछ समय बिताकर लौटती है। अनिरुद्ध भी जंक्शन सवेर-दोपहर-शाम जाते आते दुर्गाके घरके सामनेसे होकर ही आता जाता है दुर्गा भी उसे एक बीड़ी पिलाती है खड़े-खड़े दो चार बातें हो जाती हैं। उस दावके चलते थोड़े ही दिनोंमें दोनोंकी हार्दिकता काफी गहरी हो आयी है। बीचमें एक दिन लोहा खरीदना

बहुत जरूरी था। लेकिन पैसे नहीं थे। अनिरुद्ध अपने लुहारखानेमें चिन्तित बैठा था। दुर्गाने आकर पूछा, "यों गुमसुम क्या बैठे हो?"

अनिरुद्धने दुर्गाको बीड़ी दी। खुद भी सुलगायी। बातोंके सिलसिलेमें उसने रुपयेकी बात दुर्गासे कही। दुर्गाने तुरन्त गाँठसे दो रुपये निकालकर उसे दिये। कहा, "मगर चार दिनमें वापस दे देना होगा!"

अनिरुद्धने चार ही दिनमें रुपये लौटा दिये थे। दुर्गा बोली थी—"अरे वाह, सोनेके चाँद-से लाल मेरे!"

दुर्गाको अनिरुद्ध बड़ा भला लगता। बड़ा ही तेज आदमी। किसीकी परवाह नहीं करता। मगर स्वभाव कितना मीठा! सबसे अच्छा लगता उसे अनिरुद्धका चेहरा! खासा लम्बा आदमी! पत्थर तराशकर गढ़ा गया हो जैसे! उतने बड़े हथौड़ेसे जब वह लोहेपर चोटपर चोट मारता रहता है तो दुर्गा डरसे सिहर उठती है, लेकिन फिर भी अच्छा लगता, एक भी चोट गलत नहीं पड़ती!

डॉक्टरको विदाकर अनिरुद्ध घर लौटा तो पद्म चुपचाप बैठी थी। रसोई पानीकी धू-धाम भी नहीं। पद्मसे उसने कुछ कहा नहीं। थोड़ी-सी लकड़ी-काठी लाकर चूल्हा सुलगाने बैठ गया। रसोई करके फिर जंक्शन जाना होगा। दुनिया भरका काम बाकी पड़ा है।

पद्मने किसीको डाँट बतायी—'जा!'

अनिरुद्धने मुड़कर देखा कहीं कोई नहीं था। कौआ या कुत्ता या कि बिल्ली कहीं कुछ भी नहीं। भौंहें सिकोड़कर उसने पूछा, "क्या है?"

जवाबमें पद्मने सवाल किया, "क्या है?"

अनिरुद्ध बेहद गुस्सा गया। बोला, "पागल तो नहीं हुई है तू? कहीं कुछ है नहीं और डाँट बता रही है!"

पद्म अबकी लजा गयी। लजा ही नहीं गयी, जरा ज्यादा सचेत हो धीरे धीरे चूल्हेके पास आ बैठी—'हटो तुम! मैं अब कर लूँगी। तुम जाओ!'

जरा देर उसके मुँहकी ओर देखते रहकर वह उठ गया। उससे और बन नहीं रहा था।

लेकिन उसकी गैरहाजिरीमें पद्म कहीं मूर्छित हो न जाये! दुविधामें वह ठिठक गया। हो जाये तो हो, मुझसे अब नहीं होता। वह बाहर निकल गया।

पद्मने रसोई चढ़ा दी। चावलमें कुछ आलू और कपड़ेमें एक टुकड़ेमें बाँध कर मसूरकी थोड़ी सी दाल हाँडीमें डाल दी और चुप बैठी रही।

अनिरुद्ध बाहर गया है। घरमें कोई नहीं। सूने घरमें एकदम अकेली पद्म। आज उसे बार-बार उस सपनेकी याद आने लगी। याद आने लगीं डाक्टरकी बातें उस रोजकी। छिः पालका बड़ा बेटा अपनी माको कितना प्यार करता है! वहीं वही आयेगा क्या?

तभी उसे लगा, उस लड़केकी गोरी और दुबली पतली मा पिछले दरवाजेके पास ही आधी रोशनी आधे अँधेरेमें वैसी ही मिन्नत भरी आशा लिये खड़ी है। उसने एक कातर निःश्वास छोड़ा। बार-बार वह मन ही मनमें बुदबुदाती रही—"नहीं-नहीं, तुम्हारे कलेजेके टुकड़ेको मैं नहीं छीनना चाहती! नहीं! नहीं!!"

चूल्हेमें लकड़ियाँ लहक उठी थीं। हाँडी-कड़ाही सामने ही पड़ी थी—रसोई चढ़ा देनी थी। लेकिन उसने चढ़ाई नहीं। चुप बैठी रही। रह रहकर उसके अन्तरमें अचानक अधीर और अतल गहराई वाले कहींसे यह कह उठता था—'मरे, मरे!' उसके मनकी आँखोंमें पाल-बहूका बेटा तिर तिर आता था। भय भरी चंचलतासे सिहरकर वह चुपचाप ही कह रही थी—"नहीं-नहीं-नहीं!

पाल बहूके आठ बच्चे हुए थे, जिनमें से दो ही बच रहे हैं। शायद फिरसे बच्चा होनेवाला है उसे। उसका बच्चा मरता है, तो फिरसे उसे होता है। क्या हर्ज है उसका एक बच्चा और जाये!

चूल्हेकी आग आराम जल उठी तो भी उसने और लकड़ियाँ चूल्हेके अन्दर अकारण ही ठेल दीं। वह कुनकुना उठी—'आः, छिः छिः!' धिक्कारा उसने अपने मनकी भावनाको।

और तब उसने पाली हुई पिपासाकी आवाज दी—'आ पुस्सी आ!'

बच्चा न हो तो स्त्रियोंका जीवन किसलिए! बच्चा न हो तो यह घर गिरस्ती! बच्चा सारे संसारका कूड़ा-करकट बिखेरेगा—पत्ता कागज, धूल मिट्टी लकड़ी पत्थर—जाने क्या-क्या! माँ बकझक करेगी और साफ सुथरा करेगी। डाँट खाकर बच्चा रोयेगा तो वह उसे छातीमें छिपाकर दुलरायेगी। दुलार पाकर वह मुट्ठीकी धूलको मुँहके पास ले जाकर खाना चाहेगा। रोयेगा धकधक करेगा, जिद पकड़ेगा। तब पद्म भी उसे डाँटेगी और फिर चटसे एक चपत जड़ देगी। रात रातमें बच्चा गोदीमें सो जायेगा। उसका बदन और सिर सहलाकर चुपचाप सोना गालोंका चुम्मा लेकर उसे लिये हुए समूचे आँगनमें घूमती फिरेगी और चन्दा मामाको पुकारेगी "चन्दा मामा आओ मेरे चन्नेके माथेपर टीप दे जाओ! चन्दा मामा आओ!

बहुत जरूरी था। लेकिन पैसे नही थे। अनिरुद्ध अपने लुहारखानेमें चिंतित बठा था। दुर्गाने आकर पूछा, "या गुमसुम क्या बठे हो?"

अनिरुद्धने दुर्गाको बीड़ी दी। खुद भी सुलगायी। बातोंके सिलसिलेमें उसने रुपयेकी बात दुर्गासे कही। दुर्गाने तुरन्त गाँठसे दो रुपये निकालकर उसे दिये। कहा, "मगर चार दिनमें वापस दे देना होगा।"

अनिरुद्धने चार ही दिनमें रुपये लौटा दिये थे। दुर्गा बोली थी—"अरे वाह, सोनेमे चाँद-से लोहार मेरे।'

दुर्गाको अनिरुद्ध बडा भला लगता। बडा ही तेज आदमी। किसीकी परवाह नही करता। मगर स्वभाव कितना मीठा! सबसे अच्छा लगता उसे अनिरुद्धका चेहरा। खासा लम्बा आदमी! पत्थर तराशकर गढा गया हो जैसे! उतने बड़े हथौडेसे जब वह लोहेपर चोटपर चोट मारता रहता है, तो दुर्गा डरसे सिहर उठती है लेकिन फिर भी अच्छा लगता, एक भी चोट गलत नही पडती!

डॉक्टरको लिवाकर अनिरुद्ध घर लौटा तो पदम चुपचाप बठी थी। रसोई पानीकी चू-बास भी नही। पद्मसे उसने कुछ कहा नही। थोडी-सी लकडी लाकर चूल्हा सुलगाने बठ गया। रसोई करके फिर जक्शन जाना होगा। दुनिया भरका काम बाकी पड गया है।

पदमने किसीको डाँट बतायी— 'जा!'

अनिरुद्धने मुडकर देखा कही कोई नही था। कौआ या कुत्ता या कि बिल्ला, कहीं कुछ भी नही। भौंहें सिकोडकर उसने पूछा "क्या है?"

जवाबमें पदमने सवाल किया 'क्या है?'

अनिरुद्ध बेहद गुस्सा गया। बोला, 'पागल तो नही हुई है तू? कही कुछ है नही और डाट बता रही है!"

पदम अबकी लजा गयी। लजा ही नही गयी जरा स्वाभाव सचेत हो धीरे धीरे चूल्हेके पास आ बैठी— 'हटो तुम! मैं अब कर लूगी। तुम जाओ!'

जरा देर उसके मुँहकी ओर देखते रहकर वह उठ गया। उससे और बन नही रहा था।

लेकिन उसकी गरहाजिरीमे पद्म कही मूर्छित हो न जाये! दुविधामे वह ठिठक गया। हो जाये तो हो मुझसे अब नही होता। वह बाहर निकल गया।

पद्मने रसोई चढा दी। चावलमें कुछ आलू और कपडेके एक टुकडेमें बाँध कर मसूरकी थोडी सी दाल हाँडीमें डाल दी और चुप बठी रही।

अनिरुद्ध बाहर गया है। घरमें कोई नहीं। सूने घरमें एकदम अकेली पद्म। आज उसे बार-बार उस सपनेकी याद आने लगी, याद आने लगीं डाक्टरकी बातें उस रोजकी। छिन्न पालका बड़ा बेटा अपनी माको कितना प्यार करता है! वही वही आयेगा क्या?

तभी उसे लगा, उस लड़केकी गोरी और दुबली पतली मा पिछले दरवाजेके पास ही आधा रोशनी आधे अँधेरेमें वसी ही मिनत भरी आखों देखती हुई खड़ी है। उसने एक कातर निःश्वास छोड़ा। बार बार वह मन ही मनमें बुदबुदाती रही—"नहीं-नहीं, तुम्हारे कलेजेके टुकड़ेको मैं नहीं छीनना चाहती! नहीं! नहीं!!"

चूल्हेमें लकड़िया लहक उठी थी। हाँडी-कड़ाही सामने ही पड़ी थी—रसोई चढ़ा देनी थी। लेकिन उसने चढ़ाई नहीं। चुप बैठी रही। रह रहकर उसके अन्तरमें अचानक अधीर और अतृप्त कोई करुणमीसी कह-कह उठती थी—'मरे, मरे!' उसकी भारी आँखोंमें पाल-बहूका बेटा तिर तिर आता था। भय भरी चंचलतासे सिहरकर वह चुपचाप ही कह रही थी—'नहीं-नहीं-नहीं!"

पाल बहूके आठ बच्चे हुए थे जिनमें-से दो ही बच रहे हैं। शायद फिरसे बच्चा होनेवाला है उसे। उसका बच्चा मरता है तो फिरसे उसे होता है। क्या हर्ज है, उसका एक बच्चा और जाये!

चूल्हेकी आग आराम जल उठी तो भी उसने और लकड़िया चूल्हेके अन्दर अकारण ही ठेल दी। वह बुदबुदा उठी—'आ, छि छि!' धिक्कारा उसने अपने मनकी भावनाको।

और तब उसने पाली हुई बिल्लीको आवाज दी—'आ पुस्सी आ!'

बच्चा न हो तो स्त्रियोंका जीवन किसलिए! बच्चा न हो तो यह घर-गिरस्ती! बच्चा सारे संसारका कूड़ा-कचरा बिखेरेगा—पत्ता, कागज धूल मिट्टी लकड़ी पत्थर—जाने क्या-क्या! माँ बकबक करेगी और मार-मुक्का करेगी, डाँट खाकर बच्चा रोयेगा, तो वह उसे छातीसे चिपकाकर दुलरायेगी। दुलार पाकर वह मुट्ठीभर धूलको मुँहके पास ले जाकर खाना चाहेगा। रोयेगा बकबक करेगा, जिद पकड़ेगा। तब पद्म भी उसे डाँटेगी और फिर झटसे एक चपत जड़ देगी। रोते रोते बच्चा गोदीमें सो जायेगा। उसका बदन और सिर सहलाकर, चुपचाप दोनों गालोंका चुम्मा लेकर उसे लिये हुए समूचे आँगनमें घूमती फिरेगी और चन्दा मामाको पुकारेगी 'चन्दा मामा आओ मेरे चन्दाके माथेपर टीप दे जाओ! चन्दा मामा आओ!

बहुत जरूरी था। लेकिन पैसे नहीं थे। अनिरुद्ध अपने लुहारखानेमें चिन्तित बैठा था। दुर्गाने आकर पूछा, "या गुमसुम क्यों बठे हो ?"

अनिरुद्धने दुर्गाको बीडी दी। खुद भी सुलगायी। बातोंके सिलसिलेमें उसने रुपयेकी बात दुर्गासे कही। दुर्गाने तुरन्त गाँठसे दो रुपये निकालकर उसे दिये। कहा, "मगर चार दिनमें वापस दे देना होगा।"

अनिरुद्धने चार ही दिनमें रुपये लौटा दिये थे। दुर्गा बोली थी—"अरे वाह, सोनेके चाँद-से खातब मेरे!"

दुर्गाको अनिरुद्ध बडा भला लगता। बडा ही तेज आदमी। किसीकी परवाह नही करता। मगर स्वभाव कितना मीठा! सबसे अच्छा लगता उसे अनिरुद्धका चेहरा! खासा लम्बा आदमी! पत्थर तराशकर गढा गया हो जैसे! उतने बड़े हथौडेसे जब वह लाहेपर चोटपर चोट मारता रहता है तो दुर्गा डरसे सिहर उठती है लेकिन फिर भी अच्छा लगता एक भी चोट गलत नही पडती!

डॉक्टरको दिखाकर अनिरुद्ध घर लौटा तो पदम चुपचाप बैठी थी। रसोई पानीकी बू-बास भी नहीं। पदमसे उसने कुछ कहा नहीं। थोडी-सी लकडी-काठी लाकर चूल्हा सुलगाने बैठ गया। रसोई करके फिर जक्शन जाना होगा। दुनिया भरका काम बाकी पड़ गया है।

पदमने किसीको डाँट बतायी—'जा!"

अनिरुद्धने मुडकर देखा वहाँ कोई नहीं था। कौआ या कुत्ता या कि बिल्ली, कहीं कुछ भी नहीं। भौंवें सिकोडकर उसने पूछा क्या है ?"

जवाबमें पदमने सवाल किया, क्या है ?'

अनिरुद्ध बेहद गुस्सा गया। बोला पागल तो नही हुई है तू ? कहीं कुछ है नहीं और डाँट बता रही है!"

पदम अबकी लजा गयी। लजा ही नहीं गयी जरा ज्यादा सचेत हो धीरे धीरे चूल्हेके पास आ बैठी— हटो तुम! मैं अब कर लूँगी। तुम जाओ!'

जरा देर उसके मुँहकी ओर देखते रहकर वह उठ गया। उससे और बन नहीं रहा था।

लेकिन उसकी गैरहाजिरीमें पदम कहीं मूर्छित हो न जाये। दुविधामें वह ठिठक गया। हो जायें तो हो मुझसे अब नहीं होता। वह बाहर निकल गया।

पदमने रसोई चढा दी। चावलमें कुछ आलू और कपडेके एक टुकडेमें बाँध कर मसूरकी थोडी-सी दाल हाँडीमें डाल दी और चुप बैठी रही।

अनिरुद्ध बाहर गया है। घरमें कोई नहीं। सूने घरमें एकदम अकेली पद्म। आज उसे बार-बार उस सपनेकी याद आने लगी, याद आने लगीं डाक्टरकी बातें उस रोजकी। छिरू पालका बड़ा बेटा अपनी माको कितना प्यार करता है! वही... वही आयेगा क्या?

तभी उसे लगा, उस लड़केकी गोरी और दुबली पतली माँ पिछले दरवाजेके पास ही आधी रोशनी आधे अँधेरेमें वैसी ही मिन्नत भरी आँखों ताकती हुई खड़ी है। उसने एक कातर निःश्वास छोड़ा। बार बार वह मन ही मनमें बुदबुदाती रही—'नहीं-नहीं, तुम्हारे कलेजेके टुकड़ेको मैं नहीं छीनना चाहती! नहीं! नहीं!!"

चूल्हेमें लकड़िया दहक उठी थी। हाँडी-कड़ाही सामने ही पड़ी थी—रसोई चढ़ा देनी थी। लेकिन उसने चढ़ाई नहीं। चुप बैठी रही। रह रहकर उसके अन्तरमें अचानक अधीर और अतल काई बेरहमीसे यह कह उठता था—'मरे, मरे! उसके माकी आँखोंमें पाल-बहूका बेटा तिर तिर आता था। भय भरी घबराहटसे सिहरकर वह चुपचाप ही कह रही थी—"नहीं नहीं नहीं!"

पाल बहूके आठ बच्चे हुए थे, जिनमें से दो ही बच रहे हैं। शायद फिरसे बच्चा होनेवाला है उसे। उसका बच्चा मरता है, तो फिरसे उसे होता है। क्या हो है उसका एक बच्चा और जाये!

चूल्हेकी आग आराम जल उठी, तो भी उसने और लकड़ियाँ चूल्हेके अन्दर अकारण ही ठेल दीं। वह बुदबुदा उठी—'आ छि छि! धिक्कारा उसने अपने मनकी भावनाको।

और तब उसने पाली हुई बिल्लीको आवाज दी—"आ पुस्सी, आ!"

बच्चा न हो तो स्त्रियोंका जीवन किसलिए! बच्चा न हो तो यह घर-गिरस्ती! बच्चा सारे संसारका कूड़ा-कर्कट बिखेरेगा—पत्ता कागज फूल मिट्टी लकड़ी, पत्थर—जानें क्या-क्या! माँ बकझक करेगी और साफ सुथरा करेगी, डाँट खाकर बच्चा रोयेगा, तो वह उसे छातीसे चिपकाकर दुलरायेगी। दुलार पाकर वह मुट्ठीकी धूलको मुँहके पास ले जाकर खाना चाहेगा। रोयेगा बकबक करेगा, जिद पकड़ेगा। तब पद्म भी उसे डाँटेगी और फिर झटसे एक चपत जड़ देगी। रोते रोते बच्चा गोदमें सो जायेगा। उसका बदन और सिर सहलाकर, चुपचाप दोनों गालोंका चुम्मा लेकर उसे लिये हुए समूचे आँगनमें घूमती फिरेगी और चन्दा मामाको पुकारेगी... चन्दा मामा आओ मेरे चन्दाके माथेपर टीप दे जाओ! चन्दा मामा आओ!

बहुत जरूरी था। लेकिन पैसे नहीं थे। अनिरुद्ध अपने लुहारखानेमें चिंतित बैठा था। दुर्गाने आकर पूछा, "या गुमसुम क्या बठे हो ?"

अनिरुद्धने दुर्गाको बीडी दी। खुद भी सुलगायी। बातोंके सिलसिलेमें उसने रुपयेकी बात दुर्गासे कही। दुर्गाने तुरन्त गाँठसे दो रुपये निकालकर उसे दिये। कहा, 'मगर चार दिनमें वापस दे देना होगा।"

अनिरुद्धने चार ही दिनमें रुपये लौटा दिये थे। दुर्गा बोली थी—"अरे वाह, सानेके चाँद-से खातक मेरे!"

दुर्गाको अनिरुद्ध बडा भला लगता। बडा ही तेज आदमी। किसीकी परवाह नहीं करता। मगर स्वभाव कितना मीठा! सबसे अच्छा लगता उसे अनिरुद्धका चेहरा! लासा लम्बा आदमी! पत्थर तराशकर गढा गया हो जम! उतने बडे हथौडेसे जब वह लाहेपर चोटपर चोट मारता रहता ह ता दुर्गा डरसे सिहर उठती ह लेकिन फिर भी अच्छा लगता, एक भी चाट गलत नहीं पडती।

डॉक्टरको विदाकर अनिरुद्ध घर लौटा तो पद्म चुपचाप बठी थी। रसोई पानीकी व्यवस्था भी नहीं। पद्मसे उसने कुछ कहा नहीं। थोडी-सी लकडी-काठी लाकर चूल्हा सुलगाने बठ गया। रसोई करके फिर जक्शन जाना होगा। दुनिया भरका काम बाकी पड गया ह।

पदमने किसीको डाँट बतायी— 'जा!'

अनिरुद्धने मुडकर देखा कही कोई नहीं था। कौआ या कुत्ता या कि बिल्ली, कहीं कुछ भी नहीं। भँवें सिकोडकर उसने पूछा क्या ह ?"

जवाबम पदमने सवाल किया, क्या ह ?'

अनिरुद्ध बेहद गुस्सा गया। बोला 'पागल तो नहीं हुई ह तू? कहीं कुछ ह नहीं और डाट बता रही ह!"

पदम अबकी लजा गयी। लजा ही नहीं गयी जरा ज्यादा सचेत हो धीरे धीरे चूल्हेके पास आ बठी— हटो तुम! मैं अब कर लूँगी। तुम जाओ!'

जरा दर उसके मुँहकी ओर देखते रहकर वह उठ गया। उससे और बन नहीं रहा था।

लेकिन उसकी गरहाजिरीमें पद्म कहीं मूर्छित हा न जाये! दुविधामें वह ठिठक गया। हा जाये तो हो मनमे अब नहीं हाता। वह बाहर निकल गया।

पदमने रसोई चढा दी। चावलमें कुछ आलू और कपडके एक टकडेम बाँध कर मसूरकी थाडी-सी दाल हाँडीमें डाल दी और चुप बठी रही।

अनिरुद्ध बाहर गया है। घरमें कोई नहीं। सूने घरमें एकदम अकेली पद्म। आज उसे बार-बार उस सपनेकी याद आने लगी, याद आने लगी डॉक्टरकी बातें उस रोजकी। छिः पालका बड़ा बेटा अपनी माँको कितना प्यार करता है! वही वही आयेगा क्या?

तभी उसे लगा, उस लड़केकी गोरी और दुबली पतली माँ पिछले दरवाजेके पास ही आधी रातकी आधे अँधेरेमें वैसी ही मिन्नत भरी आँखें दबाये हुए खड़ी है। उसने एक कातर निःश्वास छोड़ा। बार बार वह मन ही मनमें बुदबुदाती रही— "नहीं-नहीं, तुम्हारे कलेजेके टुकड़ेको मैं नहीं छीनना चाहती! नहीं! नहीं!!"

चूल्हेमें लकड़िया लहर उठी थी। हाँडी-कड़ाही सामने ही पड़ी थी—रसोई चढ़ा देनी थी। लेकिन उसने चढ़ाई नहीं। चुप बैठी रही। रह रहकर उसके अंतरमें अचानक अधीर और अतृप्त कोई बरहमीस यह कह उठता था—'मरे, मरे।' उसके मनकी आँखोंमें पालका बड़ा बेटा तिर तिर आता था। भय-भरी चकल्लासे सिहरकर वह चुपचाप ही कह रही थी— 'नहीं-नहीं-नहीं।'

पाल बहूके आठ बच्चे हुए थे जिनमें से दो ही बच रहे हैं। शायद फिरसे बच्चा होनेवाला है उसे। उसका बच्चा मरता है, तो फिरसे उसे होता है। क्या हर्ज है उसका एक बच्चा और जाये।

चूल्हेकी आग गोरोंसे जल उठी तो भी उसने और लकड़िया चूल्हेके अन्दर अकारण ही ठेल दी। वह कुनमुना उठी—'आ छि छि! 'धिक्कारा उसने अपने मनकी भावनाको।

और तब उसने पासी हुई बिल्लीको आवाज दी—"आ पुस्सी, आ!"

बच्चा न हो, तो जियोगा जाकर किसलिए! बच्चा न हो तो यह घर-गिरस्ती! बच्चा सारे संसारका कूड़ा-कचरा बिखेरेगा—पत्ता कागज धूल मिट्टी, लकड़ी, पत्थर—जाने क्या-क्या! माँ बकझक करेगी और मार सुधरा करेगी डाँट मारकर बच्चा रोयेगा, तो वह उसे छातीसे चिपकाकर दुलरायेगा। दुलार पाकर वह मुट्ठीकी धूलको मुँहके पास ले जाकर खाना चाहेगा। रोयेगा, बकबक करेगा, जिद पकड़ेगा। तब पद्म भी उसे डाँटेगी और फिर झटसे एक चपत जड़ देगी। रातो रोते बच्चा गोदीमें सो जायेगा। उसका बदन और सिर सहलाकर चुपचाप सोना माथाका चुम्मा लेकर उसे लिये हुए समूचे आँगनमें घूमती फिरेगी और चन्दा मामाको पुकारेगी चन्दा मामा आओ मेरे चन्दाके माथेपर टीप दे जाओ! चन्दा मामा आओ!

यह सब कल्पना करते करते उसकी आँखोंमें आँसूकी धारा बहने लगी। अपना तो उसे है नहीं, पालनेके लिए भी कोई एक शिशु देता उसे! कोई मातृहीन शिशु! बच्चेकी कोई माँ मरती नहीं! यह पाल बहू नहीं मरती! दबू गुरुकी स्त्री नहीं मरती! और नहीं तो फिर खुद उसीकी मौत क्यों नहीं होती? वह मर जाये तो सारी जलन ही जुड़ा जाये!

बाहर अनिरुद्धकी आवाज सुनाई पड़ी—'चण्डीमण्डपसे मेरा कोई नाता नहीं। मैं नहीं जाता। पूस-परब मैं अपने दरवाजेपर ही कर लूँगा।'

पद्मके मनमें अचानक एक दुरन्त क्रोध हो आया। उसके जीमें आया कि चूल्हेकी जलती लकड़ी उठाकर घरके चारों ओर आग लगा दे। सब-कुछ जल जाये, राख हो जाये! अनिरुद्ध भी जल जाये! और दूसरे ही क्षण उसने चूल्हे पर हाँडी चढ़ा दी, हाँडीमें पानी डाला और चावल धोने लगी।

कल लक्ष्मी-पूजा है, पूस लक्ष्मी।

लक्ष्मी! उसके लिए लक्ष्मी क्या! किसके लिए कैसी लक्ष्मी?

सोलह

पूसकी सकरातके दिन पूस लक्ष्मी यानी पूस परब। नवान्नके ठीक महीने बाद गाँववालोंके जीवनमें एक और सार्वजनीन उत्सव आया। जिस जनजीवनमें सुबहसे साँझ तक बारह घण्टेका आधा समय हल खींचनेवाले मूक बैलोंकी बेहद धीमी चालके पीछे पीछे या घर जितनी ऊँची धान और पुआल लदी गाड़ियोंका पहिया ठेलते या धानका बोझा सिरपर उठाये दमेके रोगी-जैसा असह्य पीड़ामें दम फूलते हुए बीतता है, वहाँ दो महीनेका समय बेशक बड़ा लम्बा है!

बीचमें इतू-पूजा होती, लेकिन इतू लक्ष्मीमें नियम है, पालन है—पर्व नहीं है, समारोह नहीं होता। पूसमें घर घर धूम होती है। पकवानका पर्व है। अगहनकी सकरातमें खलिहानमें लक्ष्मीको चूड़ा मूढ़ी मूड़ीका लड्डू आदिकी पूजा दी गयी थी। और पूसकी सकरातमें लक्ष्मीका आसन घरमें बिछाकर धान और कौड़ीसे सजाकर दोनों तरफ लकड़ीके दो उल्लू रखकर पूजा की जायेगी।

एक अन्न पचास व्यंजनमें लक्ष्मीके साथ और-और देवताओंका भोग दिया जायेगा। ढेंकीमें कूटकर चावलके पिसानका ढेर लगा है, उसी पिसानके पकवान बनेंगे तरह-तरहके। चीनीका शीरा तैयार है। नारियल-गुड़, तिल-गुड़की मिठाई बनी है, खोआ तैयार किया गया है—लोग भरपेट प्रसाद पायेंगे।

लेकिन अनिरुद्धकी कोई तैयारी नहीं हुई। एक तो पदम बीमार, तिसपर हाथ बिल्कुल खाली। पूसका पूरा महीना ही उसका लुहारखाना बन्द रहा। लोहेका काम इस समय ज्यादा तो नहीं, लेकिन कुछ होता है। हँसिया पजाये बिना, गाड़ीके पहियोंमें खुले हाल चढ़ाये बिना किसानोंका काम नहीं चलता। लेकिन अवसरके अभावमें अनिरुद्ध उतना भी नहीं कर सका। अवसर पाता कहाँ कैसे? पदमकी बीमारीने उसका माथा खराब कर रखा है। आज यहाँ गया, कल वहाँ। शिवनारायणपुरके किसी एक मुसलमान उस्तादके घर तक वह गया। कुछ भी उसने उठा नहीं रखा। वैद्य-डाक्टर सब कुछ किया है। ग्राहकों तकका पैसा लगाकर। इधर पाँच बीघेका धान तो उसका मुसल्लम गायब हो गया। बाकी खेतके धानके लिए वह बटाईदारके साथ मजदूरकी तरह मेहनत कर रहा था, कन्धेपर ढो-ढोकर धान घर ला रहा था। मगर धान भी कितना! वहाँ थोड़ा-सा धान ले आना अभीतक नहीं हो पाया है।

इधर सरकारी सेटलमेण्ट आया है। नोटिस दी गयी है कि अपनी अपनी जमीनकी मिल्कियत और हकूकके सबूतके साथ हाजिर रहना पड़ेगा। नहीं तो सेटलमेण्टके कानूनके मुताबिक दण्ड दिया जायगा। एक टुकड़ा जमीनके लिए कानूनगो और अमीनोंके साथ सुबहसे तीसरा पहर हो जाता पर धानके खेतोंमें जोर खींचते हुए उस जमीन तक पहुँचनेमें चार-पाँच दिन लग जाते। उस टुकड़ेके बाद चार-पाँच दिन फिर कुछ नहीं। उसके बाद ही वहाँ दूसरा टुकड़ा। अनिरुद्धकी ही क्यों, सारे गाँवके लोगोंकी जिल्लत-जहमतका अन्त नहीं था। पूसकी संक्रान्तिपर घरमें लक्ष्मीको सिंहासन बिठानेकी तैयारी चल रही थी लेकिन लक्ष्मी तो अभी खेतोंमें ही थी। गाँवका धोबी नहीं आया। यह एक हंगामा खड़ा हो गया है। कल ही आखिरी दिन होता आता है—अनिरुद्धका धानका आखिरी गुच्छा तो गुरु काटना ही होगा। कटे धानकी जड़में पानी डाल-कर धानके गुच्छेको सरपर उठाकर लाना भी होगा। अनिरुद्धके पास मजूरा भी नहीं है। दवाईदारका और पकाकर खिलाना होगा। और-और साल लक्ष्मीके साथ ही वह पर्व खतम हो जाता था—अबकी सेटलमेण्टके चलते पड़ा रह गया।

यह सब कल्पना करते करते उसकी आँखोंमें आँसूकी धारा झरने लगी। अपना तो उसे है नहीं, पालनेके लिए भी कोई एक शिशु देता उसे! कोई मातृहीन शिशु! बच्चेकी कोई माँ मरती नहीं! यह पाल बहू नहीं मरती! देबू गुरुकी स्त्री नहीं मरती! और नहीं तो फिर खुद उसीकी मौत क्यों नहीं होती? वह मर जाये तो सारी जलन ही जुड़ा जाये!

बाहर अनिरुद्धकी आवाज सुनाई पड़ी—"चण्डीमण्डपमें मेरा कोई नाता नहीं। मैं नहीं जाता। पूजा-परब मैं अपने दरवाजेपर ही कर लूँगा।"

पद्मके मनमें अचानक एक दुरन्त क्रोध हो आया। उसके जीमें आया कि चूल्हेकी जलती लकड़ी उठाकर घरके चारों ओर आग लगा दे। सब कुछ जल जाये, राख हो जाय! अनिरुद्ध भी जल जाय! और दूसरे ही क्षण उसने चूल्हे पर हाँडी चढ़ा दी। हाँडीमें पानी डाला और चावल धोने लगी।

कल लक्ष्मी-पूजा है, पूस लक्ष्मी।

लक्ष्मी! उसके लिए लक्ष्मी क्या! किसके लिए, कैसी लक्ष्मी?

सोलह

पूसकी संक्रान्तिके दिन पूस लक्ष्मी यानी पूस पर्व। नवान्नके डेढ़ महीने बाद गाँववालोंके जीवनमें एक और सार्वजनीन उत्सव आया। जिस जनजीवनमें सुबहसे शाम तक बारह घण्टेका आधा समय हल खींचनेवाले कुबड़े बैलोंकी बेहद धीमी चालके पीछे-पीछे या घर जितनी ऊँचा धान और पुआल लदी गाड़ियोंका पहिया ठेलते या धानका बोझा सिरपर उठाये दमके रोगी-जैसा असह्य पीड़ामें दम फूलते हुए बीतता है, वहाँ दो महीनेका समय बेशक बड़ा लम्बा है।

बीचमें इतू पूजा होती है लेकिन इतू लक्ष्मीमें नियम है, पालन है—पर्व नहीं है, समारोह नहीं होता। पर्वमें घर घर धूम होती है। पक्वान्नका पर्व है। अगहनकी संक्रान्तिमें खलिहानमें लक्ष्मीको चूड़ा मूढ़ी मूलीका लड्डू आदिकी पूजा दी गयी थी। और पूसकी संक्रान्तिमें लक्ष्मीका आसन घरमें बिछाकर धान और कौड़ीसे सजाकर दोनों तरफ लक्ष्मीके दो उल्लू रखकर पूजा की जायेगी।

एक अन्न पदार्थ व्यंजनसे लक्ष्मीके साथ और-और देवताओंका भोग दिया जायेगा। ढेंकीमें कूटकर चावलके पिसानका ढेर लगा है, उसी पिसानके पकवान बनेंगे तरह-तरहके। चीनीका शीरा तैयार है। नारियल-गुड़, तिल-गुड़का मिठाई बनी है, खाजा तैयार किया गया है—लोग भरपेट प्रसाद पायेंगे।

लेकिन अनिरुद्धकी कोई तैयारी नहीं हुई। एक तो पस्त बीमार, तिसपर हाथ बिलकुल खाली। पूसका पूरा महीना तो उसका लुहारखाना बन्द रहा। लोहेका काम इस समय ज्यादा तो नहीं, लेकिन कुछ होता है। हँसिया पजाये बिना, गाड़ीके पहियोंपर लोहेका हाल चढ़ाये बिना किसानोंका काम नहीं चलता। लेकिन अवसरके अभावमें अनिरुद्ध उतना भी नहीं कर सका। अवसर पायेगा कहाँ, कैसे? बुखारकी बीमारीने उसका माथा खराब कर रखा है। आज यहाँ गया, कल वहाँ। शिवनाथगंजके किसी एक मुसलमान डाक्टरके घर तक वह गया। कुछ भी उसने उठा नहीं रखा। कर्ज काढ़-काढ़कर सब कुछ किया है। डाक्टरका ढेरका पैसा लगाकर। इधर पाँच बीघेका धान तो उसका मुसल्लम गायब हो गया, बाकी खेतके धानके लिए वह बटाईदारके साथ मजदूरकी तरह मेहनत कर रहा था, कन्धेपर ढो-ढोकर धान घर ला रहा था। मगर धान भी कितना! वही थोड़ा-सा धान है, आना अभावका नहीं हो पाया है।

इधर सरकारी सेटलमेण्ट आया है। नोटिस दी गयी है कि अपनी-अपनी जमीनकी मिल्कियत और हकूकके सबूतके साथ हाजिर रहना पड़ेगा। नहीं तो सेटलमेण्टके कानूनके मुताबिक दण्ड दिया जायेगा। एक टुकड़ा जमीनके लिए कानूनगो और अमीनोंके साथ सुबहसे तीसरा पहर हो जाता पर धानके खेतोंमें पजार खींचते हुए उस जमीन तक पहुँचनेमें चार-पाँच दिन लग जाते। उस टुकड़ेके बाद चार-पाँच दिन फिर कुछ नहीं उसके बाद हो कहीं दूसरा टुकड़ा। अनिरुद्धकी ही नहीं, सारे गाँवके लोगोंकी जिल्लत-जहमतका अन्त नहीं था। पूसकी संक्रान्तिपर परम लक्ष्मीका सिंहासन बिठानेकी तैयारी चल रही थी, लेकिन लक्ष्मी तो अभी खेतोंमें ही थी। गाँवकी 'दाली' नहीं आयी। यह एक हंगामा खड़ा हो गया है। परसों आखिरी दिन दौनी आती है—अनिरुद्धका धानका आखिरी गुच्छा तो शुरू कातिका ही होगा, पहले धानको जड़में पानी डालकर धानके गुच्छेको सरपर उठाकर लाना भी होगा। अनिरुद्धके पास मजूरा भी नहीं है, बटाईदारको मार पटककर खिलाना होगा। और-और साल लक्ष्मीके साथ ही वह पर्व खत्म हो जाता था—अबकी सेटलमेण्टके चलते पर्व रह गया।

मातरी हाडी उतारकर पद्मने मौड निकाल दिया। खोजकर हाडीमेंसे एक छोटी-सी पाटली निकाली। उसी पाटलीमें थोडी-सा मसूरकी दाल, दो चार आलू, एक टुकडा कद्दू था। इन सबका भुरता बनाकर मछलीकी तलाश करनी होगी। *मछलीके बिना अनिरुद्धका कौर नहीं धँसता। इसीलिए पिछवाड़े* की गड़हियाके किनारे किनारे पानीमें कुछ गड्ढे खोद रखे गये हैं—कीचड़में रहनेवाली मछलियाँ उनमें बैठती हैं हाथियारोंके साथ पट पकड़ लो तो पकड़में आ जाती हैं। पद्मने खोज भरी निगाहसे बाहरकी ओर ताका। यह काम भी तो वह कर लेता। गये कहाँ नवाब? एक बार वही जो दरवाजेके बाहर सुनाई पड़ी थी उसकी आवाज—'चण्डीमण्डपसे कोई सरोकार नहीं'—चिल्ला रहा था उसके बाद कोई पता नहीं। चण्डी मण्डपसे कोई वास्ता नहीं। तभी तो काली मैया और महादेव बाबाके बगलकी क्यारी पानीमें डूब गया, पौने सोलह उनका बड़ा नुकसान हो गया। ऐसी मति न हो तो ऐसी दुर्गति क्या हो भला।

'अरे ओ भई कमकार, हो? कमकार? अरे ओ कमकार?'

है कौन यह? जवाब नहीं मिलता फिर भी पुकारता ही जा रहा है।

"ओ कमकार—अभी अभी दुकान बताया कि कमकार घर गया और तुम जवाब नहीं दे रहे हो! कमकार?'

अनिरुद्ध तब दुर्गाके यहाँ था। रूप है उसके इसलिए मोचीके यहाँ ? छि छि छि! लक्ष्मी? ऐसेके घर लक्ष्मी रह सकती है? या कि ऐसेके वंश चलता है? पद्म मानो पागल हो उठी। उसने चूल्हेसे एक जलती हुई लकड़ी निकाली। आग लगा देगी—घर गिरस्तीमें आग लगा देगी। लेकिन ठीक इसी मौकेसे अन्दर आ धमका भूपाल चौकीदार।

"तुम भी क्या आदमी हो अनिरुद्ध? पुकारते-पुकारते मेरा गला बैठ गया। कहाँ हो, कमकार?'

अन्दर अनिरुद्धको न पाकर भूपाल जरा अप्रतिभ हुआ। और फिर पद्मको ही लक्ष्य करके बोला, देखो तुम जरा अनिरुद्धसे कह देना कि मैं आया था। मेरी तो अजीब मुसीबत है। बुलाओ तो लोग आते नहीं और गुमाश्ता कहेगा साला, तुझे बैठे उठे पानेको तनखा दिया करता हूँ।

कौन है रे? कमकारसे कौन क्या कहेगा? कमकारने क्या किसीका कर्ज खाया है? दरवाजेके बाहरसे ही बोलते हुए अनिरुद्ध अन्दर आया।

"लो, आ ही गये।" भूपालकी जानमें जान आयी।— भैया, जरा चलो। गुमाश्ता मेरा सर खा रहा है।"

अनिरुद्धने लपककर उसकी कलाई थाम ली—"अबे ऐ, तू घरके अन्दर क्यों आया ?"

उसकी ओर देखकर भूपालने नाराजगीसे कहा, "हाथ छोड़ दो।"

"तू अन्दर क्यों आया ? लगानका तकाजा करना था तो बाहरसे करता। जमींदारका नौकर, छठ दरका गुलाम चमगादड़।"

उमेठकर अपना हाथ छुड़ाकर भूपाल गरज उठा, "खबरदार, जबान सँभालकर बोला। दो सालसे लगान बाकी है, दिया क्यों नहीं ? अन्दर घरमें घुसूँगा। यूनियन बोर्डका टैक्स, वह भी नहीं दिया।"—आखिर भूपाल भी बागदीका बेटा था, छाती तानकर खड़ा हो गया।

लगान! यूनियन बोर्डका टैक्स! अनिरुद्ध चंचल हो उठा। मगर ज्यादा बहसकी हिम्मत नहीं की उसने। सो उन बातोंपर ध्यान न देकर वह अपनी ही शिकायत ले बैठा— मैं घरमें होता तब तू घुसता तो एक बात थी। घरमें कोई मर्द नहीं, फिर तू अन्दर क्यों आया ?"

भूपालने कहा, "चलो तुम, गुमाश्ताजी बुला रहे हैं।"

"जा, जा, कह दे उनसे। मैं किसीके बुलाये नहीं जाता।"

"लगानके बारेमें क्या कहते हो ?"

"जाकर कह दे, लगान मैं नहीं दूँगा।"

"ठीक है।" कहकर भूपाल बाहर चला गया। साफ-साफ जवाब देकर अनिरुद्ध भी फुफकारने लगा— अदालत है, वकील है, कानून है—नालिश कर जाकर! घरमें क्यों घुसा! इतना मजाल!"

अचानक वह रोनी-सी आवाजमें बोल उठा, "हम गरीब हैं, इसलिए हमारा इज्जत आबरू नहीं है! हम आदमी नहीं हैं!"

पद्म अबतक एक शब्द भी नहीं बोली थी। उसका बदन चौखटसे सटा खड़ी थी चुपचाप। और अब बोली भी तो यही कि "अच्छा, मछलीका क्या होगा ?"

"मछली ? नहीं चाहिए मछली। मैं कुछ नहीं खाऊँगा, जा! खानेसे अरुचि हो गयी है।"

पद्म और कुछ न बोली। भात परोसने लगी।

अनिरुद्ध चीख उठा, "तूने घरसे लक्ष्मीको भगाया!"

"मैंने ?"

"हाँ, तूने! बीमार होकर रात-दिन पड़ी है घरमें, साँझ-बत्ती नहीं, धूप नहीं। ऐसे घरमें भी लक्ष्मी रहती है ? मैं पूछता हूँ, कब है लक्ष्मी-पूजा, तूने

कौन-सी तयारी की ह ? ' क्रोध और क्षोभसे अधीर होकर वह चला गया।

पद्म चुप बठी रही। उसके मनके क्षोभका पागलपन इस बीच एक अजीब ढगमे उदासीनतामें बदल गया। अनिरुद्धके इस अपमान और क्षोभस उसे तृप्ति हुई थी या नहीं, कौन जाने लेकिन उसके अपने क्षोभका उन्मत्तता—जिस उन्मत्ततासे कुछ ही दर पहले वह घरको आग लगा रही थी—शान्त हो गया। आचर बिछाकर वह वहीं लेट गया। उसके सीनम जसे डर सा रुलाई निथरा आयी थी।

पद्म चुपचाप गा रही थी। उसकी आखोंसे बहकर आसू उसके गालोंको भिगाता हुआ माटीपर चू रहा था। हँसने रोनेस उसके भीतरका गहरी यन्त्रणा देनेवाला आवग कम हो गया। रोनेस कुछ देरमे उसे तृप्तिका अनुभव हुआ, इसके बाद एक आनन्द मिला।

कहा हो कमकारकी बहू ? कहा हो ?"

कौन पुकारती ह ? पदमने चुपकेस साडीके छोरसे आसू पोछ लिया। लेकिन जवाब नहीं दिया—जवाब देनेकी इच्छा नहीं हुई।

"लुहार बहू ! हाय राम, यह तीसर पहर चूल्हेके पास क्या सोया हो ? '

यह कहती हुई आ आया वह थी दुर्गा। उसे देखकर पद्मका सर्वाग जल उठा। मोचिनकी जुरत देखो ! पुकारनेका ढग ह यह ? बहुत मालूम तो बोली, क्या जरूरत क्या ह ?

हसकर दुर्गाने कहा 'तुमस एक बात कहना ह।'

मुझस ? कौन-सी बात कहनी ह ? काहेकी बात ?

' कहती हूँ तुम उठो भी तो।

' मेरा तबीयत अच्छी नहीं ह।'

शका भर स्वरमे दुर्गा बोली तबीयत खराब ह ? आऊँ बरामदेपर ?

बिजली जस छू गयी हो इस ढगसे पद्म उठ बठी— नहीं।'

उसकी ओर ताककर दुर्गा हसते हुए बोली, हाय राम रो रही थी ? क्या हुआ ? लुहारसे झगडा हुआ ह क्या ?" वह हो हो करके हसने लगी।

' यह सब जानकर तुम क्या करोगी ? कहना क्या ह सो कहो। ए इतनी खोजबीन, जसे कितनी अपनी ह मेरी !

' अपनी तो हूँ ही बहन ! हूँ या नहीं, तुम्ही कहो ? '

"तू मेरी अपनी ह ? ' पद्म क्रोधसे इस बार तू सम्बोधन कर बठी।

लेकिन दुर्गा इतनेपर भी नाराज न हुई। हँसी। हँसकर बोली, "हाँ भई, हाँ। और क्या यह कहूँ कि मैं सौतिन हूँ तुम्हारी। तुम्हारा पति मुझे चाहता है।'

पद्म अब आपसे बाहर हो गयी। उसने रसोईसे झाड़ू उठा ली।

हँसकर दुर्गा थोड़ा खिसक गयी। बोली, 'छू जाओगी तो इस असमयमें नहाना पड़ जायेगा। पहले मेरी बात तो सुन लो बहन, फिर न हो तो झाड़ू फेंककर मारना।

पद्म अवाक् हो गयी।

दुर्गाने कहा, 'रुक जाओ जरा, बाहरका दरवाजा पहले बन्द कर दूँ। जाने अब कौन आ पड़े।'

पद्म अभी भी शान्त नहीं हो सकी थी। गुस्सेसे भरी आवाजमें बोली, "दरवाजा बन्द करके क्या होगा। मेरे दाना यार तो है नहीं।'

दुर्गा फिर हँस उठी। बोली, 'मेरे तो हैं। कहीं मेरी खोजमें वहीं आ पहुँचें।"

'मेरे यहाँ आयेंगे तो मारे झाड़ूके भोग नहीं ठिकाने कर दूँगी मैं।'

दुर्गाने इस बीच दरवाजा बन्द कर दिया। लौटी तो उससे छू न जाये इतनी दूरसे बोली, 'दूसरेको झाड़ू लगा सकती हो, लेकिन अपने पतिको? वह भी तो मेरा है, जैसा तुमने कहा। खैर जाने दो। मजाक नहीं—ये चीजें सहेज लो।" और उसने अपनी कमरपरसे एक टोकरी उतारी जो कपड़ेसे ढँकी थी। उसमेंसे एक लोटेमें दूध, एक मटकेमें गुड़ और कुछ चीजें निकालीं। बोली, "लक्ष्मी तिल, एक डिब्बेमें पाव भर तेल—और भी कुछ चीजें निकालीं। बोली "लक्ष्मी पूजाका इन्तजाम करो बहन। अरवा चावल तो अपने पास नहीं है और मेरे चावल पिसाकर काम भी न चलेगा। यह सब तुम्हारे पति देवतासे ही सुना है।

पद्मका तन बदन जल उठा। जीमें आया, लात मारकर सारी चीजोंको बिखेर दे। यही वह करती। लेकिन ऐन वक्तपर किसीने दरवाजेमें धक्का दिया। शायद अनिरुद्ध हो। ठीक है, आये वह। उसीके सामने लात मारकर बिखेर दूँगा।

जल्दी जल्दी उसने खुद ही जाकर दरवाजा खोल दिया। मगर आनेवाला अनिरुद्ध नहीं था। थी बुढ़िया रांगा दीदी।

पद्मने शान्त भावसे कहा, "रांगा दीदी!"

"हाँ, ननद-बहू!" कहते कहते, बुढ़ियाकी नजर दुर्गापर पड़ी—'हाय राम, यह कौन बैठा है यह!'

"मैं हूँ !" अपनी आवाज ऊँची करके दुर्गाने कहा, "मैं हूँ राखा दीदी, दुर्गा ! बजनियोंके यहाँकी दुर्गा !"

'दुर्गा ! अरी, तेरे लिए क्या कोई भट्टी बात नहीं। अभी यहाँ तो अभी वहाँ ! एक बारगी उस मुल्कमें। कस्बा, जंक्शन—कहाँ नहीं जाती है तू ? खैर ! यहाँ क्या कर रही है ? यह सब क्या है ?"

"ठाकुर बहूने जंक्शनसे सामान लानेके लिए रुपये दिये थे वही लायी हूँ।"

"मुझे नहीं बताना था ? आज कलीम ही चार आनेका बाजार किया एक रुपयेका चावल बेचा। जंक्शनमें चार आनेमें भी एक पैसा बच जाता चावलमें भी दो पसे ज्यादा मिल जाते। मेरे तो हट्टा-कट्टा खसम नहीं है मेरा उपकार भला क्यों करने लगी ?'

दुर्गाने हँसकर कहा "अब कभी कहना दादी, ला दूँगी।'

"अच्छा ला देना। औरत तो तू भली है मगर है बड़ी वाहियात। मगर तुझे जो करना है कर ! मेरा क्या।'

दुर्गा जोरसे हँस पड़ा, बेचारा ! तुम्हारे तो बुड्ढा है नहीं। डर काहेका चिन्ता काहेकी ? खैर सामान मैं ला दूँगी।"

बुढ़िया बोली मगर इसमें हँसनेका क्या है ?

'खैर, नहीं हँसती ! क्या कहना है, कहो ?"

"हाय राम ! तुझे कौन कह रहा है ? मैं तो ननन-बहूसे कह रही हूँ। अरी ओ ननन बहू इस बार मेरे यहाँ चावल कूटने नहीं गयी ?'

राखा दीदीके यहाँ ढेंका है। पदम सदा वहीं जाकर पकवानके लिए चावल कूटा करती थी। अबकी नहीं गयी। बुढ़िया इसीलिए आयी थी।

"मैं पूछती हूँ—मने कभी कुछ कहा है क्या तुझसे ? तू ही बता कहा है क्या ?" किसे कब क्या कहा, बुढ़ियाको यह स्वयं ध्यान नहीं पड़ता।

फीकी हँसी हँसकर पद्मने कहा, "कहनेकी बात नहीं—इस बार चावल ही नहीं कुटाया है।"

'कुटाया ही नहीं ! अरे यह क्या रही है ?"

"हाँ नहीं कुटाया है।

'हाय राम ! तो फिर कूटेगी कब ? रात बीतते ही तो "

पद्म चुप रही। बीचमें दुर्गाने कहा ननन-बहू बीमार है जानती तो हो। बीमारीमें करे क्या बेचारी।'

कृषक-वधुएँ वन्दना करके पूससे अनुरोध करती हैं — पूस, तुम मत जाओ, सदा यहीं रहो।

चण्डीमण्डपकी चौखण्डीमें पूस बटोरा जाता है।

तड़के ही घर घरमें लोग जाग गये। सारे गाँवमें चहल-पहल हो गयी। शंख भी बजने लगे। बिलू भी जगी। मुन्ना भी जग गया। उसे कपड़ा ओढ़ाकर चरवाहेकी गोदीमें देकर बिलू पूजाकी तैयारी करने लगी।

'अरी ओ गुरुआनी, तुम्हारा सब हो गया? आओ!' —पद्म पुकार रही थी।

बिलूने दरवाजा खोल दिया। बोली, "बस हो गया। धूपके लिए आग हो जानेभरकी देर है।"

चूल्हेमें लकड़ियाँ जल रही थीं। पद्म खड़ी रही। बिलूने धूपदानीमें आग लेकर कहा, 'चलो।"

चरवाहे बालकने लालटेन ली। घरमें हलवाह रहे। दुर्गाकी माँ सोयी ही रही, उठी नहीं। घरसे बाहर होते ही चरवाहा बालक चौंक उठा—"कौन?"

'कौन है रे?' —पद्मने पूछा।

छोरेने रोशनी उठायी। कहा, 'दुर्गा दीदी है।'

लालटेनकी पूरी रोशनी दुर्गापर पड़ी। रातकी कत्थई साड़ी पहनावेमें, बालोंका विन्यास भी बहुत सुन्दर, माथेपर बिन्दी। लेकिन सब जैसे उजड़ा उजड़ा बिखरा बिखरा। वह हाँफ रही थी आँखोंकी दृष्टि जैसे उद्भ्रान्त।

रोशनीकी तरफ मुँह करके खड़ी हुई, लज्जाका लेश तक नहीं। बोली, 'झूठ है, बिलू दीदी! झूठ है। गुरुजीको पन्द्रह महीनेकी सजा हो गयी है।" कहते कहते वह फफककर रोने लगी।

बिलू अवाक होकर पत्थर-सी खड़ी रही।

दुर्गा नैश-अभिसारमें सेटलमेण्ट कैम्पमें चली गयी थी। अमीन, चपरासी, यहाँतक कि कानूनगोमें-से भी एकाध जने दुर्गा-जैसी औरतोंपर छिपकर कृपा किया करते। इस बातमें पेशकार तो सबसे तेज था। दुर्गाके पास उसने कई बार बुलावा भेजा था, मगर दुर्गा नहीं गयी। आज वह अपनेसे गयी थी। वहाँ जाकर बोली "देखो, हाकिमसे कह-सुनकर देबू पण्डितको छुड़ा देना होगा।"

पेशकारने कहा था, 'अच्छा, कल सवेरे।"

सुबह लौटते समय दुर्गाकी कृपा चाहनेवाले पेशकारके ईर्ष्यालु एक चपरासीने दुर्गाको उसकी भूल बता दी।

दुर्गा रुकी नहीं। चली गयी। वह मन ही-मन अपनी जातिके बीच एक ऐसी औरतको ढूँढ़ने लगी, जो बाहरसे या देखनेमें सुन्दर हो, पर रोगवाली हो।

और उधर उस समय चण्डीमण्डपमें एक स्वरमें स्त्रियोंके गलेसे गूँज रही थी—पूसकी वन्दना, पूस-बाँधनेका गीत।

पूस—पूस—सोने का पूस।
आओ पूस आओ जनम-जनम छोड़कर न जाओ।
छोड़कर मत जाना पूस छोड़कर मत जाना
पति पूत के साथ भात भर भर के दाना खाना।
पूस—पूस—सोने का पूस,
बैठ फर्श पर घर में घुस,
सोने का पूस।

पद्मने उसके कंधेपर हाथ रखकर कहा 'आओ बहन!'

स्वप्नसे जागी हुई-सी बिलू बोली 'चलो!'

क्या करे वह? उपाय क्या था? जाते समय वह कह जो गया है सुनेका भार तुमपर रहा और रहा घर द्वार, मोरी-गाय-गोरू, धान जमीन—सब-कुछका भार! तुम मेरे घरकी लक्ष्मी हो, तुम घबराओगी तो काम कैसे चलेगा! हर हालतमें तुम्हें अचला होकर रहना होगा! बिलू वैसी ही रहेगी, वही रहेगी। उसके घरसे सोनेका पूस चला जा रहा है—पूजा करके उसे रोकना होगा। पूस, मत जाना छोड़कर मत जाना। पन्द्रह महीनेके बाद तो वह लौट ही आयेगा। तब तुम्हें पचास व्यंजनसे कटोरा भरकर अन्न दूँगी।

अट्ठारह

देखते-देखते एक साल बीत गया। एक पूसकी सकरातसे दूसरे पूसकी सकरात। एक साल पूरा हो गया। माघ फागुनके दो महीने और। उस रोज चैतकी पाँच तारीख थी। देबू घोष जंक्शन स्टेशनपर उतरा। चैतकी दुबली-पतली मयूराक्षी नदीको पार करके शिवकालीपुरके घाटपर वह जरा खड़ा हुआ। एक साल तीन महीनेकी लम्बी सजा काटकर वह घर लौट रहा था। पन्द्रह महीनेकी सजामें कुछ दिनोंकी छूट मिली थी। अपने गाँवकी सीमापर पहुँचकर अब उसने मुक्तिकी साँस ली थी, खुलापन अनुभव किया था।

वह रहा उसका गाँव—शिवकालीपुर। उसके बाद ही महाग्राम, पश्चिम तरफ शेखपाडा कुसुमपुर और उसके भी पश्चिम कोठी और पक्के मकानोंवाला कंकना। एकदम पश्चिम है देखुडिया। और दक्खिनमें मयूराक्षीके उस पार जवदान। शेखपाडा कुसुमपुरकी मस्जिदके सफेद ऊँचे पाये हरे-भरे पेड पौधोंकी फाँकमें-से दिखाई दे रहे थे। शिवकालीपुरके पूरब वह रहा महाग्राम—न्यायरत्न जीका घर। महाग्रामके पूरब देखुडिया। देखुडियासे ज़रा पूरब हटकर मयूराक्षी ने मोड लिया है। चैतका महीना। दससे ज्यादा बज चुके थे। इतनेमें ही खासी गरमी हो आयी थी। पूरीकी पूरी फसलवाली बहार अभी लगभग खाली थी। कहीं-कहीं सिर्फ़ तिल, कुछ आलू और कुछ हरी तरकारी। इस समयकी खास फ़सल तिल ही है। गहरे हरे रंगके पुष्ट पौधे। अब उनमें फूल आयेंगे। देबूको पत-लक्ष्मीका स्मरण हो आया। लक्ष्मी मातान तिलके फूलोंका करणफूल पहना था। इसलिए, तिलके फूलोंका कर्ज चुकानेके लिए उन्हें खतिहराके यहाँ आना पडा था। तिलके बैंगनी फूलोंकी अनोखी बनावट याद आयी—'तिल फूल जिनि नासा।'

देबू साल भरसे भी ज्यादा जेलमें रहा। वहाँ सौभाग्यसे उसे कुछ दिनोंके लिए कुछ राजबन्दियोंका सम्पर्क मिल गया। उसी सम्पर्ककी कृपासे उसका बन्दी जीवन बडे सुखसे न सही तो आनन्दसे जरूर बीता। वह दुबला जरूर हो गया, लगभग सात सेर वजन घटा उसका, लेकिन मन नहीं टूटा। छूटनेपर अपने गाँवके पास पहुँचकर भी वह आम लोगोंकी तरह अधीर आनन्दसे दौडकर या तजीसे नहीं चल रहा था। क्षण भरको वह रुका। अच्छी तरह चारों ओर देख लिया। शिवकालीपुर साफ़ नज़र आ रहा था। आम, कटहल, जामुन इमलीके पेडोंकी फुनगी नीले आसमान-पटपर चित्र-सी लग रही थी। बाँसकी फुनगियाँ ही केवल हिल रही थीं। धीमे धीमे डोलते हुए उन्हीं बाँसोंके पीछे देबूका घर पडता था। गाछोंकी फाँकमें-से कुछ और घर भी दिखाई दे रहे थे।

इधर बाउरी और बजनियोंका टोला। वह जो बडा-सा गाछ दिखाई दे रहा है, वह है धमराजतलाका बकुल गाछ। दुर्गा! अहा, बडी अच्छी औरत है वह। पहले वह दुर्गासे घृणा करता था, उसके छिछोरेपनसे खीझ होती था। बहुत बार उसे उसने कडी बात भी कह दी थी। लेकिन उसके बुरे दिनमें, विपदकी घडीमें दुर्गा नये रूपमें प्रकट हुई। इसका पहला आभास जेल जानेके दिन मिला। उसके बाद बिलूकी चिट्ठीसे बहुत-बहुत बातें मालूम हुई। हर घडी—सुबहसे साँझ तक दुर्गा बिलूके पास रहती है दासी-सी सेवा करती है भर-सक बिलूको कोई काम नहीं करने देती। मुन्नेको अपनी छातीसे लगाये रहती है।

उस स्वैरिणी, स्वेच्छाचारिणीमें यह रूप कहाँ था किस प्रकारसे छिपा हुआ था ?

वह, वह जो बडे-से घरक ऊपरका हिस्सा दिखाई दे रहा ह वह हरीश चाचाका घर ह। उसीके बाद ह भवेश भयाका घर, लकिन वह दिखाई नही पडता। और उस तरफ टिनका जो छप्पर धूपमें झकमका रहा ह वह ह श्रीहरिका घर। श्रीहरिके बाद सब तरहस स्वाहा हुए बेचारे तारिणीका टूटा घर है। उसक बाद रास्तेके एक ओर बस्तीके बीचाबीच चण्डीमण्डप। उसके बाद हरेन घोषालका मकान—नहीं, मकान नही, हरेन उस कहता ह घोषाल हाउस'! घोषाल भी अजीब ही ह। उसके घरके बाहरी दरवाजेपर लिखा ह—'पार्लर', एक कमरमें लिखा ह—'स्टडी'। देबू हरेनकी उस गेंदा मालाकी बात जीवनमें कभी नहीं भूल सकता। घोषालका पूरा परिचय वह जानता है। मैट्रिक पास किया ह मगर मूर्खके सिवा ह वह कुछ नही डरपोक कायर। ब्राह्मण होते हुए भी वह पातू माचीकी बीवीपर आसक्त ह। लेकिन उस रोज घोषाल उसे वास्तविक ब्राह्मण सा लगा था। उसकी मालाको उसने पवित्र आशीर्वादकी तरह लिया था उसी मालाने उस जानेके समय अनोखी शक्ति दी थी और शायद उसी आशीर्वादस उसने जेलम उन राजबन्दी बन्धुओंको पाया था।

बन्धु कौन नही ह ? बिलूके पत्रस उस मालूम हुआ कि उसके गावका एक एक आदमी दवता ह। उसे एक गँवई कहावतका मतलब याद आया—गाव और माँ समान होते ह। हाँ, माँ—यह गाव ही माँ ह। झुककर उसन राहकी धूलको अपने माथस लगाया।

कुछ दूर और बढा तो देखा, टेसूके फूल खिले ह। लाल टकटक फूल। एक एक घरम सहजन फला ह—बेशुमार। गावक उत्तर तरफ पोखरके बाँधपर पत्तोस सूने सेमलपर भी लाल रगका समारोह। उसीके पास एक ऊचे ताडपर एक गिद्ध बठा ह। अब साफ नजर आ रहा ह—जगन डॉक्टरकी खिडकीके पास जो बास ह उसका झुकी हुई एक डालपर हरियलकी पाँत बठी ह। हर और पत्तेकी मिलावटसे अनोखा ही रग उन चिडियोंका ह उतनी ही मीठी बोली भी उनकी ह—जलतरगकी ध्वनि-जसी। इधर आमकी मजरीकी महक आ रही थी। खेतमें आमके सभी पडोंम फल लग गय थ—सिर्फ चौधरी परिवारके खास बगीचके पडोंम चतमें मजरी आती ह। मजरीकी यह गध उसी बगीचेसे आ रही ह।

"गुरुजी!"

किशोर-कण्ठकी अचरज भरी खुशीकी आवाज सुनकर देबूने उलटकर देखा

पास ही की एक मेडपर से कालीपुरका सुधीर जा रहा है, द्वारिका चौधरीका पोता—बडे लडकेका लडका। उसका छात्र था वह।

देवूने हँसते हुए स्नेहसे पूछा, 'सुधीर? अच्छे हो?"

सुधीर जल्दीसे नजदीक आया। प्रणाम करके बोला, 'जी। आप अच्छे थे सर? अभी आ ही रहे है?"

हाँ बस चला ही आ रहा हूँ। तुम शायद स्कूल जा रहे हो।"

जी। आपके घरके सब लोग अच्छे है। मुन्ना अब काफी बोलता है। हमलोग प्राय शामको वहाँ जाया करते है। मुन्नेके साथ खेलते है।"

देवू गहरे आनन्दसे अभिभूत हो गया माना। ये लडके उसे इतना चाहते हैं।

"पाठशालाका नया भवन बना है, सर।'

"अच्छा!'

'जी। अच्छा बना है। तीन कमरे। पालिश का हुआ मेज-कुरसिया। फिर जरा झिझकके साथ बोला, 'आप तो अब स्कूलमे नही पढायेंगे सर?'

देवूने एक लम्बी उसास ली—'नही सुधीर, मै अब नही पढाऊगा। नये मास्टर कौन आये?"

'कपनाके बाबुओंके नायबके लडके। मट्रिक पास है। गुरु टेनिंग भी पास की है। लेकिन आप "

सुधीरकी बात खत्म होनेसे पहले ही एक बहुत ही कम उम्रके भले आदमीने उधरसे सुधीरको पुकारा—स्कूल जा रहे हो सुधीर? जरा अपनी कापी-पेन्सिल तो देना।"

सुधीरने कापी और पेन्सिल निकालकर दी। यह लडका—हाँ भलेमानसके बजाय इसे लडका कहना ही ज्यादा ठीक है—कौन है? उम्र अट्ठारह उन्नीसकी होगी। आँखोंपर ऐनक। बदनपर सफेद कुरता। यहाका आदमी जरूर नही है। खूबसूरत ओजस्वी चेहरा। सुधीर बेशक उसे जानता है। लेकिन उसके सामने ही देवू सुधीरसे उसका परिचय नही पूछ सका। दूसरा ही प्रसग उठाया—चौधराजी तुम्हारे दादाजी, अच्छे हैं न?'

'जी। वे आपको कितनी याद करते है।

देवू हँसा। चौधरीजीको वह सदा श्रद्धा करता है। बडे अच्छे आदमी है। वे देवूको याद करते है? देवूको खुशी हुई। उसने फिर पूछा घरके और और लोग?"

'सभी सकुशल है। सिर्फ मेरी एक छोटी बहन गुजर गयी।

दी गयी है ? डिप्टी साहब इस कानूनगोके स्वभावसे भी परिचित थे। फिर भी उन्होंने कानूनके मुताबिक देबूके नाम नोटिस निकाली। देबूने इस नोटिसको भी नहीं माना। इसके बाद नियमतः वारण्ट निकलना था। इसी समय इधर एक घटना घट गयी।

देबूके एक खेतको नापीके समय कानूनगोसे उसकी बतकही हो गयी। विवादका कारण था कि देबू जमीनकी रसीद नहीं ले आया था। वह जवाब दे ही रहा था कि एकाएक उसकी नजर पड़ी, उसके खेतके ठीक बीचमें पके धानमें जंजीर खींची जा रही है। उसने समझा कानूनगोने यह जान-बूझकर ही किया है। मगर असलमें यह कानूनगोने जानकर नहीं किया था। देबूकी जमीनकी बनावट ही कुछ ऐसी टेढ़ी मेढ़ी थी कि बीचकी चौथाईकी नाप लिये बिना चारा न था। गुस्समें गलत समझकर देबू एक अनर्थ कर बैठा। उसने जरीबकी जंजीर खींचकर अलग फेंक दी। फेंकना था कि नक्शा और जंजीर लेकर कानूनगो डिप्टी साहबके पास गया और रिपोर्ट कर दी।

डिप्टी साहब वास्तवमें भलेमानस थे। उन्हें खेतिहरोंकी निरीह प्रवृत्तिका पता था। वे भी आखिर इसी मुल्कके रहनेवाले थे। वे अवाक् हो गये। लेकिन कानूनगोका दोस्त पेशकार जो था वह बड़ा धुरन्धर था। उसने डिप्टी साहबको साफ समझा दिया कि यह आदमी उसी जी० एन० बनर्जीका शिष्य है। इस बातके बाद डिप्टीसे इस घटनाकी उपेक्षा करते नहीं बना।

इसीका यह नतीजा हुआ। एकबारगी गिरफ्तारीका वारण्ट। श्रीहरिने बात ठीक ही कही। उसने कई बार अनुरोध किया कि 'चाचा तुम चलो मैं साथ चलता हूँ। कानूनगोको मैं नरम कर आया हूँ तुम सिर्फ चले चलो मामला चुक जायेगा।'

मगर देबूने कहा नहीं।

जगनने कहा गुरुजी तुम भी दरखास्त दो। डी० ओ० को सब समझा कर लिखो—डी० एल० आर० को भी दरखास्त दो।

देबूने कहा छोड़ो रहने दो।

विलूने डरकर और उद्वेगसे पूछा "अच्छा, क्या होगा ?'

देबूने हँसकर कह दिया "जो होना होगा होगा।'

सो जो होना था हो गया।

श्रीहरिने आकर स्वयं कहा, 'छोटे दरोगाको राजी कर लिया है चाचा।

पहले हम क़ानूनगोके कैम्पमें जायेंगे, वहाँ मामला त कर लेंगे, उसके बाद कानूनगोकी चिट्ठी लेकर सर्किल डिप्टीके पास जायेंगे। केस ख़ारिज हो जायेगा— हमलोग लौट आयेंगे।'

देबू बोला, "नहीं।

'नहीं क्या?'

'नहीं। मैं नहीं जाऊँगा छिः!"

"नतीजा क्या होगा कुछ सोचते हो?'

'जो होना होगा सो होगा।' देबू इस बार भी हँसा।

गहरे दुःखसे एक लम्बी उसाँस लेकर भी श्रीहरि घोषका उच्छ्वास न कर सका। कहा, "काम तुम ठीक नहीं कर रहे हो, चाचा!'

रामजीने कहा 'मगर अब हम क्या कर सकते हैं?

फिर सभीने एक स्वरमें कहा 'हम क्या कर सकते हैं, कहो!'

सबके साथ अगर हामी नहीं भरी तो सिर्फ तीन जन—जगन डॉक्टर, अनिरुद्ध और हरेन घोषालने। हरेन घोषालकी आदत है सबसे पहले बोलनेकी, लेकिन आज उसने कुछ भी नहीं कहा और उठकर तेज़ीसे चला गया।

जगनने कहा 'फ़िक्र न करो देबू भाई! कल मुक़दमा न करके हाजतमें असामी बनाकर अगर जेल भेज दें तो सदरसे मुख़्तार बुलाकर हम लड़ेंगे। और अगर कल ही फ़ैसला करके जेलकी सज़ा दी तो सदरमें अपील करेंगे। उसी वक्त जमानत हो जायगी।

देबूने कहा 'डाकघरमें मेरे सौ रुपये पड़े हैं। बिलूके पास सही करके रुपये निकालनेका फ़ॉर्म रख दिया है। जैसी ज़रूरत हो, रुपये निकाल लेना। मुक़दमेमें कुछ होगा नहीं यह मैं जानता हूँ मगर मैं जिरहमें सब चाल-चाल देना चाहता हूँ।"

अनिरुद्धने कातर होकर कहा देबू भाई, अच्छा हो कि मेल-मिलाप कर लो तुम।'

हँसकर देबूने कहा "तुम ज़रा होशियारीसे रहना अन्नी भाई। डाक्टर, तुम उनका ख़याल रखना।

छोटे दरोग़ाने कहा 'साँझ हो गयी। क्या तै हुआ आपलोगोंका?

देबू उठकर खड़ा हो गया—'चलिए मैं तैयार हूँ।'

छोटे दरोग़ाने पुकारा— भूपाल! रामकिरण!'

ज़रा रुक जायें दरोगा बाबू!' —जाने कहाँसे दौनों आयी दुर्गा।

हाथ जोड़कर देबूसे बोली, "जरा बिलू नीनीसे भेंट करके जाओ गुरुजी !

दरोगाने कहा, "जाइए, भेंट कर आइए।"

बोलती ही रहनेवाली दुर्गा आज देबूके आगे-आगे बिल्कुल चुपचाप चल रही थी।

देबूने कहा 'लेकिन दुर्गा तू इन लोगोंका खोज-खबर रखना।"

आगे आगे चलनेवाला दुर्गाने सिर्फ गरदन हिलाकर हाँ किया।

बिलू रो रही थी। देबूने उसकी आँखें पोछ दीं। उसके बाद उसने केवल *कामकी एक बात कही, 'डाकघरसे रुपये निकालकर अपने पास रखना।* मुकदमेके लिए डॉक्टर जो माँगे देना। होशियारीसे रहना। धान पान ठीक हिसाबसे लेना। अपनेसे हिसाब करके लेना। तुम तो हिसाब जानती ही हो। जी मत छोटा करो। मुन्नेका भार तुमपर है—घर द्वार सब। तुम मेरे घरकी लक्ष्मी हो तुम घबराओगी तो कैसे चलेगा ? तुम्हें स्थिर रहना होगा।'

बिलू एक भी शब्द नहीं कह सकी।

अन्तमें हँसकर देबूने उसे खींचकर अपनी छातीसे लगा लिया और गाढ़े आवेगसे उसे एक बार चूमकर घरसे निकल गया।

बाहर दुर्गा और पद्म खड़ी थी। देबूने कहा, 'मितनी, तुम हो, दुर्गा है—तुम लोग जरा बिलूको देखना। और फिर चण्डीमण्डप पहुँचकर देबू बोला, "चलिए।

'वैट !" —नाटकीय ढंगसे चण्डीमण्डपमें प्रवेश किया हरेन घोषालने। उसके हाथमें गेंदाके फूलोंकी एक अच्छी माला थी। देबूके गलेमें माला पहना कर वह उत्तेजित स्वरमें चिल्ला उठा जय ! देबू घोषकी जय !

क्षण भरमें ही मामलेकी शक्ल बदल गयी।

दरोगा जानेके लिए उतावला हो उठा। फूलकी माला और जयकारसे देबूकी एड़ी चोटीमें एक अजीब सिहरन दौड़ गयी। उसके कलेजेमें दुर्बलताका जो क्षीणतम आवेग काँप रहा था वह भी जाता रहा। साथके साथ वहाँ खड़ी जनताकी भीड़ने दरोगा कान्स्टेबिलकी उपस्थितिकी परवा न कर एक स्वरसे प्रतिध्वनि की जय ! देबू घोषकी जय !"

धीर और लम्बा डग बढ़ाता हुआ वह आगे बढ़ा।

लक्ष्मी-पूजाकी तयारी करनेमें बिलूका हाथ नहीं उठ रहा था। एक अन्न, पचास व्यजनसे माँ लक्ष्मीकी पूजा—अपने कलेजेमें ऐसी पीडा लेकर यह आयोजन वह किस तरह, कसे करे? किसके लिए लक्ष्मीकी पूजा? लक्ष्मीका वास ह पुरुषका आश्रय करके। नारायणकी बगलमें लक्ष्मीका आसन! जब देवू ही आज नहीं, तो ! बार-बार उसकी आँखोमे आसू निकल आते।

लेकिन रागा दीदीने आकर कहा, तू फिक्र मत कर, देवू भैया आज ही लौट आयेगा। और फिर मेरा ओर जरा नजर उठाकर देख। मेरे तीन कुलमें भाई नही, मगर फिर भी तो करती हूँ पूजा! तेरी गादीमें सानेका चाद ह और देवू भी लौट आयेगा। तू पूजा न करे, भला यह कस हो सकता ह? बल्कि मै लक्ष्मी बिठा जाती हूँ तेरी। चारा तरफ ढाक बज रहा ह लक्ष्मी बठ चुकी।'

रागा दीदीने बडो धूममे अपने निपुण हाथो लक्ष्मी बिठायी। लाल रगके रेशमी कपडमें कुछ इस ढगस धान और कौडीको ढँका ह कि लगता ह सिंहासन पर जस कोई वधू बठी हुई हो।

पद्म तीन बार आयी। दुर्गा तो सवरमे यहो बठी थी। श्रीहरिकी माँ और बहू भी आयी थी।

माँ ता जबाना खाज-पूछ कर गयी। श्रीहरिकी बहू अपने साथ एक मतबान केला कलेका मोचा ले आयी था। यह सब श्रीहरिक नये पोखरके बाधपर हुए थे। मटरकी थोडी सी छीमी और एक गाभी भी लायी या वह—ये चाजें श्रीहरि लक्ष्मी-पूजाक लिए शहरसे लाया था। बहू कह गयी, "सासजी, तुम साच न करना। वे हाकिमस मिलने गये ह। ससुरजीका लेकर वे आज ही लौट आयेंगे।'

लगभग सभी घरकी औरतें आ आकर बिलूका हाल पूछ गयी। जगन डाक्टरकी स्त्री पाँच बार आया। एक एक करके हरिजन लाग आय। खजूर गुडका महालवाला गुड द गया। सबोंसे लेकर हर किसीने छोटे-बडे लाटमें दूध ला दिया। अब जरूरत नहीं ह—यह कहनेपर भी किसीने नहीं सुना, नहो माना। उत्तरमें उनाम होकर व कह देते, भला हमने कौन-सा कसूर किया ह?'

दुगाने कहा, 'बिलू दादा, दूधको गाढ़ा औंट ला।'

बिलू बाली क्या होगा, भग! खराब न हा जायेगा?'

खराब क्या हागा? तुम देखना ता भला गुरुजी ठाक लौटेंगे।

कई घरोका कुछ कुमारी लडकियाँ आकर बाली, 'भाभी घडे दो। पानी भरकर ला दें।'

नानेमें ये सब बिलूकी ननद हानी था। मीठा मुसकराहटके साथ बिलूने कहा, "पानी मैं ले आयी हूँ बहन! बठा। जलपान कर लो।"

'नहा! हम तो काम करने आयी ह।"

उनकी यह अस्पट आत्मीयता बिलूको बडी भली लगी। इतने इतन अपने लाग हैं उसे! इतने अच्छे हैं आदमा!

जब चण्डीमण्डपमें तिलकुट भोगका ढाक बजा तो वे लडकिया चली गयी। आज काली मैया और महादेव बाबाको तिलकुटका भाग लगेगा। वहाँ भाग लग चुकनके बाद ही घर घर भाग लगेगा। एक टुकडा तिलकुटके लिए बाउरी डोम, मोचीके बच्चे चण्डीमण्डपमें भीड लगाये बैठ थे। इसके बाद घर घर पकवान!

बस्तीके लोगाम से बहुतर देवूके लिए सेटलमेण्ट कम्पम गये थे। व लोग करीब एक बजे लौटे। सभा गम्भार चिन्तित थ। अभातक भमला नहीं हुआ। लेकिन पता सब चल गया था। अब करें क्या व! सबम गम्भार था श्रीहरि। अमामने श्रीहरिको बुलाकर साफ-साफ कह दिया कि देवूकी ओरसे जो गवाही देगा उससे बादमें निबटेंगे। कारण देवू किसी तरह भा क्षमा मागनेको राजी नहा हुआ।

बुजुर्गोंने राय मशविरा करके यह तय किया कि किसा भी तरफसे गवाही नहीं देंगे।

कुछ ही लोग घर न लौटे—जगन डाक्टर, अनिरुद्ध हरेन घोषाल, द्वारका चौधरी तारा हजाम। व लोग प्राय शामको घर लौटे—उदास मन, धीरे धीरे। दुगा रास्तेपर खडा थी। पूछा क्या हुआ डाक्टर बाबू? क्या बात ह चौधरीजी?'

जगनने कहा तमाम दिन बठाये रखा शामको तारीख देकर सदर चालान कर दिया। शरारत की ह सबोंन।

'चालान कर दिया?

हाँ! म कल हो जाऊँगा। जमानतपर देबूको छुडा लाऊँगा।

बात झूठी था। देवूको एक साल तीन महीने यानी पन्द्रह महीनेकी सजा हो गयी था। जगन कल अपाल करनेके लिए सदर जायगा। लेकिन देवूने अपाल का मनाही कर दी ह। गवाहकी हालत देखकर उसने अपीलके नतीजेको भी भाँप लिया था।

जगनने गाँववालोको भला-बुरा कहा था। द्वारका चौधरी तक अपनेको

ज़ब्त नहीं कर सके। पोपले मुँहसे काँपते होठों बूढ़ेने कहा, "भगवान् इसका विचार करेंगे।"

दसूने हँसकर कहा "आपने उस दिन जो कहानी कही थी उसे भूल गये चौधरीजी? मनुष्यसे कदम-कदमपर भूल-चूक होती है। एक बात और है इन लोगोंने मेरी ओरसे गवाही न दी तो विपक्षकी ओरसे भी तो न दी।"

अनिरुद्ध चीख उठा था— देते तो माथेपर वज्जर गिरता।'

जेलकी बात वे दबा गये और ऐसा उन्होंने देबूकी स्त्रीको ही ध्यानमें रख कर किया था। दुर्गाने आकर खबर दी—"बिलू दादी तुम्हारे पास मेरी माँ सोयेगी।'

बिलूने कहा, तू ही रह दुर्गा। दोनों जनें गपशप करेंगे। मैं अन्दर सोऊंगी, तू बरामदेपर दरवाजेके पास सो जाना।'

दुर्गा बोली, 'नहीं, बिलू दीदी!"

क्यों?'

'मुझे अपने बिस्तरके सिवा नींद नहीं आती।

बिलूने फिर अनुरोध नहीं किया। वह समझ गयी। जरा हँसी नाराज नहीं हुई। मरनेसे भी शायद आत्मीयका स्वभाव नहीं जाता।

दिन तो निकल गया लेकिन मौसमके बाद समय नहीं कट रहा था। बिलू चुपचाप बैठी सोच रही थी वह' जेलमें है। साँझका समय गाँवमें शंख बज उठे तो उसे होश आया। घरमें माँ लक्ष्मी है। धूप-दीप देना होगा। शीतलभोग की तैयारी करनी होगी। अभी किया नहीं है। जाते वक्त दुर्गा घरके चरवाहेको जगा गयी थी। छोरा भरपूर पकवान खाकर एक बार कपड़ा ओढ़ बेहोश सो रहा था। पेट फूलकर छातीसे भी ऊँचा हो गया था हसफस कर रहा था। अगल-बगलका नाद ध्वनिसे वह भी जागकर बोला, लगता है साँझ हो गयी। मालकिन, शंख बजाओ। धूप-दीप दो।"

लम्बी निःश्वास छोड़कर बिलू उठी। छोरा बैठा-बैठा अपने-आप बोलता जा रहा था—सब अपने मालिककी ही बात।

"मालिक बड़े-बड़े हमारी ही बात सोच रहे होंगे, है न मालकिन?

बिलूने आँखें पोंछी।

अच्छा मालकिन जेलमें क्या मोटेकी जंजीरमें बाँधकर रखा जाता है? तो भला मालिक सोयेंगे कैसे?

आतस्वरमें बिलूने कहा, "अब चुप भी रह। बक बक मत कर।"

छोरा अप्रतिभ होकर चुप हो गया।

सन्ध्यादीप, धूप शीतलभोग सजाकर बिलूने कहा, "मेरे साथ चल, म खलिहानमें गुहालमें जाऊँगी।"—कहते ही कहते उसे सोये भुनेकी याद आ गयी। उसके पास कौन रहेगा? और दिन इस समय 'वह' रहता था। बिलू अकेली ही खलिहान, गुहाल मोरीके नीचे पानी डालकर साझ दिया आती थी। आज चूँकि वह नहीं ह इसलिए नाहक ही डर लग रहा था। उसकी आकस्मिक और असहाय दशा प्रतिपल उसे अभिभूत कर रही थी।

छोरा उठ खडा हुआ—'चलो।"

'लेकिन भुनेके पास कौन रहेगा?'

"म रहता हूँ।'—कहकर वह लेट गया—' इतना डर काहेका? जाओ न खेतमजूरे सब खलिहानमें ह।"

खेतमजूरे सब ह?'

'नहीं? म तो यहाँ हूँ, गोआको उन्हो लगाने तो गुहालमें पहुँचाया। रातम एक आदमी यहाँ सोयेगा। बारी-बारीसे रोज एक आदमी यहाँ रहेगा। मालिक नहीं ह म भी रहूँगा मालकिन, मगर रोज एक कहानी कहनी होगी।

बिलू दिया-बत्ती दिखा आयी। साथमें दो हलवाहे आये। लक्ष्मीके सिंहा सनके पास धूप दीप शीतलभोग रखकर बिलूने प्रणाम किया। कामना का—"इन्हें छुटकारा दिला दो, माँ! मगल करो उनका। मेरे घर स्थिर होकर वास करो।'

छोरेने कहा, ' मालकिन वह खोआवाला पीठा और ह क्या?"

बिलूने मुसकराकर कहा "ह!'

'थोडा सा दो न!

दोपहरको एक सबने भीम भोजन किया। इन्हें खिलाना बिलूको बडा भला लगता। देवू खुद इन्हें खिलाता था। बिलू सामान ले आती देवू परोसता।

आँउरी-बाउरी से सब कुछ बाँधना था। मूठ-लक्ष्मीकी रस्सीसे सब सामग्री बाँधनी थी। आजका धन रहे कलका धन आये, पुराने-नयेम सचय बढे। लक्ष्मीकी कृपासे पुराने अन्न और नये वस्त्रसे जीवन निश्चिन्त और बेफिक्र कट जाये। तुम अचला होकर रहो माँ अचला होकर रहो।

रातके अन्तिम पहरमें पूस अगारनेकी बारी। पूस महीना जब विदा होकर पश्चिम क्षितिजकी ओर कदम बढाता है, पूरब क्षितिजका आभाके पीछे मकर राशिमें अवस्थित सूर्यके रथके साथ उगता ह माघका पहला दिन—और तब,

कृषक-वधुएँ वन्दना करके धूमसे अनुरोध करती हैं धूम, तुम मत जाओ सदा यहीं रहो।

चण्डीमण्डपकी चौखण्डीमें धूप अगोरा जाता है।

तड़के ही घर-घरमें लोग जाग गये। सारे गाँवमें चहलपहल हो गयी। शंख भी बजने लगे। बिलू भी जगी। मुन्ना भी जग गया। उसे कपड़ा ओढ़ाकर चरवाहेकी गोदीमें देकर बिलू पूजाकी तैयारी करने लगी।

अरी ओ गुरुआनी तुम्हारा सब हो गया? आओ!"—पद्म पुकार रही थी।

बिलूने दरवाजा खोल दिया। बोली, "बस हो गया। धूपके लिए आग हो जाने भरकी देर है।"

चूल्हेमें लकड़ियाँ जल रही थी। पद्म खड़ी रही। बिलूने धूपदानीमें आग लेकर कहा, चलो।"

चरवाहे बालकने लालटेन ली। घरमें हलवाहे रहे। दुर्गाकी माँ सोयी ही रही, उठी नहीं। घरसे बाहर होते ही चरवाहा बालक चौंक उठा—"कौन?"

'कौन है रे?'—पद्मने पूछा।

छोरेने रोशनी उठायी। कहा, 'दुर्गा दीदी है।"

लालटेनकी पूरी रोशनी दुर्गापर पड़ी। ताँतकी कत्थई साड़ी पहनावेमें, बालोंका विन्यास भी बहुत सुन्दर, माथेपर बिन्दी। लेकिन सब जैसे उजड़ा-उजड़ा, बिखरा बिखरा। वह हाँफ रही थी, आँखोंकी दृष्टि जैसे उद्भ्रान्त।

रोशनीकी तरफ मुँह करके खड़ी हुई, लज्जाका लेश तक नहीं। बोली, 'झूठ है बिलू दीदी! झूठ है। गुरुजीको पन्द्रह महीनेकी सजा हो गयी है।" कहते कहते वह फफककर रोने लगी।

बिलू अवाक् होकर पत्थर-सी खड़ी रही।

दुर्गा नशा-अभिमानमें सेटलमेण्ट कम्पमें अक्सर जाती थी। अमीन, चपरासी, यहाँतक कि क़ानूनगोमें-से भी एकाध जने दुर्गा-जैसी औरतोंपर छिपकर कृपा किया करते। इस बातमें पेशकार तो सबसे तेज था। दुर्गाके पास उसने कई बार बुलावा भेजा था, मगर दुर्गा नहीं गयी। आज वह अपने गयी थी। वहाँ जाकर बोली "देखो हाकिमसे कह-सुनकर देबू गुरुको छुड़ा देना होगा।'

पेशकारने कहा था, "अच्छा कल सवेरे।'

सुबह लौटते समय दुर्गाकी कृपा चाहनेवाले पेशकारके ईर्ष्यालु एक चपरासी-ने दुर्गाको उसकी भूल बता दी।

दुर्गा रुकी नहीं। चली गयी। वह मन ही-मन अपनी जातिके बीच एक ऐसी औरतको ढूँढने लगी, जो बाहरसे तो देखनेमें सुन्दर हो, पर रोगवाली हो।

और उधर उस समय चण्डीमण्डपम एक स्वरमें स्त्रियोंके गलेसे गूँज रही थी—पूसकी वन्दना, पूस-बंधनका गीत।

पूस—पूस—सोने का पूस।
आओ पूस आओ जनम-जनम छोडकर न जाओ।
छोडकर मत जाना पूस, छोडकर मत जाना,
पति पूत के साथ भात भर भर के दोना खाना।
पूस—पूस—सोने का पूस,
बैठ फर्श पर घर में घुस,
सोने का पूस।

पद्मने उसके कन्धेपर हाथ रखकर कहा "आओ बहन!

स्वप्नसे जागी हुई-सी मिलू बोली "चलो।"

क्या करे वह? उपाय क्या था? जाते समय वह कह जो गया है मुन्नेका भार तुमपर रहा और रहा घर द्वार मोरी-गाय गोरू, धान-ज़मीन—सब-कुछका भार! तुम मेरे घरकी लछमी हो तुम घबराओगी तो काम कैसे चलेगा! हर हालतमें तुम्हें अचला होकर रहना होगा! बिलू वैसी ही रहेगी, वही रहेगी। उसके घरसे सोनेका पूस चला जा रहा है—पूजा करके उसे रोकना होगा। पूस, मत जाना छोडकर मत जाना। पन्द्रह महीनेके बाद तो वह लौट ही आयेगा। तब तुम्हें पचास न्यजनम कटोरा भरकर अन्न दूँगी।

अठारह

देखत देखते एक साल बीत गया। एक पूसकी सकरातसे दूसरे पूसकी सकरात। एक साल पूरा हो गया। माघ फागुनके दो महीने और। उस रोज़ चैतकी पाँच तारीख थी। देबू घोष जंक्शन स्टेशनपर उतरा। चैतकी दुबली-पतली मयूराक्षी नदीको पार करके शिवकालीपुरके घाटपर वह ज़रा खड़ा हुआ। एक साल तीन महीनेकी लम्बी सजा काटकर वह घर लौट रहा था। पन्द्रह महीनेकी सजामें कुछ दिनोंकी छूट मिली थी। अपने गाँवकी सीमापर पहुँचकर अब उसने मुक्ति-की साँस ली थी हल्कापन अनुभव किया था।

वह रहा उनका गाँव—शिवकालीपुर। उसके बाद ही महाग्राम, पश्चिम तरफ शेखपाडा कुसुमपुर और उसके भी पश्चिम कोठा और पक्के मकानोंवाला कक्ना। एकदम परवम ह देखुडिया। और दक्खिनमें मयूराक्षीके उस पार जक्शन। शेखपाडा कुसुमपुरकी मस्जिदके सफेद ऊँचे पाये हरे-भरे पेड पौधोंकी फाँकमें-से दिखाई द रहे थे। शिवकालीपुरके पूरब वह रहा महाग्राम—न्यायरत्न-जीका घर। महाग्रामके पूरब देखुडिया। देखुडियासे जरा पूरब हटकर मयूराक्षी ने मोड लिया ह। चतका महीना। दससे ज्यादा बज चुके थे। इतनेमें ही खासी गरमी हो आयी थी। पूरीकी पूरी फसलवाली बहार अभी लगभग खाली थी। कहीं-कहीं सिर्फ तिल कुछ आलू और कुछ हरी तरकारी। इस समयकी खास फसल तिल ही है। गहरे हरे रगके पुष्ट पौधे। अब उनमें फूल आयेंगे। देबूको चत-जन्मोका स्मरण हो आया। लक्ष्मी माताने तिलके फूलोंका करणफूल पहना था। इसीलिए, तिलके फूलोंका कज चुकानेके लिए उन्हें खेतिहरोंके यहाँ आना पडा था। तिलके बैंगनी फूलोंकी अनोखी बनावट याद आयी—*तिल फूल जिनि नासा!*

देबू साल भरसे भी ज्यादा जेलमें रहा। वहाँ सौभाग्यसे उसे कुछ दिनोंके लिए कुछ राजबन्दियोंका सम्पर्क मिल गया। उसी सम्पर्ककी कृपासे उसका बन्दी जीवन बडे सुखसे न सही तो आनन्दमें जरूर बीता। वह दुबला जरूर हो गया, लगभग सात सेर वजन घटा उसका, लेकिन मन नहीं टूटा। छूटनेपर अपने गाँवके पास पहुँचकर भी वह आम लोगोंकी तरह अधीर आनन्दसे दौडकर या तेजीसे नहीं चल रहा था। क्षण भरको वह रुका। अच्छी तरह चारों ओर देख लिया। शिवकालीपुर साफ नजर आ रहा था। आम, कटहल, जामुन, इमलीके पेडोंकी फुनगी नीले आकाश-पटपर चित्र-सी लग रही थी। बाँसकी फुनगियाँ ही केवल हिल रही थीं। धीमे धीमे डोलते हुए उन्हीं बाँसोंके पीछे देबूका घर पडता था। गाछोंकी फाँकमें-से कुछ और घर भी दिखाई द रहे थे।

इधर बाउरी और बजनियोंका टोला। वह जो बडा सा गाछ दिखाई द रहा ह वह ह धमराजतलाका बकुल गाछ। दुर्गा! अहा, बडी अच्छी औरत ह वह। पहले वह दुर्गासे घृणा करता था, उसके छिछोरपनसे खीझ होती थी। बहुत बार उसे उसने कडी बात भी कह दी थी। लेकिन उसके बुरे दिनमें विपदकी घडीमें दुर्गा नये रूपमें प्रकट हुई। इसका पहला आभास जेल जानेके दिन मिला। उसके बाद बिलूकी चिट्ठीने बहुत-बहुत बातें मालूम हुई। हर घडी—सुबहसे साँझ तक दुर्गा बिलूके पास रहती ह, दासी-सी सेवा करती ह, भर सक बिलूको कोई काम नहीं करने देती। मुन्नेको अपनी छातीसे लगाये रहती ह।

उस स्वैरिणी, स्वेच्छाचारिणीमें यह रूप कहाँ था, किस प्रकारसे छिपा हुआ था ?

वह, वह जो बड़े-से घरके ऊपरका हिस्सा दिखाई दे रहा है, वह हरीश चाचाका घर है। उसीके बाद है भवेश भैयाका घर, लेकिन वह दिखाई नहीं पड़ता। और उस तरफ टिनका जो छप्पर धूपमें चकमका रहा है, वह है श्रीहरिका घर। श्रीहरिके बाद सब तरहसे स्वाहा हुए बेचारे तारिणीका टूटा घर है। उसके बाद रास्तेके एक ओर बस्तीके बीचोबीच चण्डीमण्डप। उसके बाद हरेन घोषालका मकान—नहीं, मकान नहीं, हरेन उसे कहता है 'घोषाल हाउस'! घोषाल भी अजीब ही है। उसके घरके बाहरी दरवाजेपर लिखा है—'पार्लर', एक कमरेमें लिखा है—स्टडी। देबू हरेनकी उस गेंदा-मालाकी बात जीवनमें कभी नहीं भूल सकता। घोषालका पूरा परिचय वह जानता है। मैट्रिक पास किया है मगर मूर्खके सिवा है वह कुछ नहीं, डरपोक कायर। ब्राह्मण होते हुए भी वह पातू मोचीकी बीबीपर आसक्त है। लेकिन उस रोज घोषाल उसे वास्तविक ब्राह्मण-सा लगा था। उसकी मालाको उसने पवित्र आशीर्वादकी तरह लिया था उसी मालाने उसे जानेके समय अनोखी शक्ति दी थी और शायद उसी आशीर्वादसे उसने जेलमें उन राजबन्दी बन्धुओंको पाया था।

बन्धु कौन नहीं है? विलूके पत्रसे उसे मालूम हुआ कि उसके गाँवका एक-एक आदमी देवता है। उसे एक गँवई कहावतका मतलब याद आया—गाँव और माँ समान होते हैं। हाँ माँ—यह गाँव ही माँ है। झुककर उसने राहकी धूलको अपने माथेसे लगाया।

कुछ दूर और बढ़ा तो देखा टेसूके फूल खिले हैं। लाल टकटक फूल! एक-एक घरमें सहजन फला है—बेशुमार। गाँवके उत्तर तरफ पोखरके बाँधपर पत्तोंसे सून सेमलपर भी लाल रंगका समारोह। उसीके पास एक ऊँचे ताड़पर एक गिद्ध बैठा है। अब साफ नजर आ रहा है—जगन डाक्टरकी खिड़कीके पास जो बाँस है उसकी झुकी हुई एक डालपर हरियलकी पाँत बैठी है। हरे और पीलेकी मिलावटसे अनोखा ही रंग उन चिड़ियोंका है उतनी ही मीठी बोली भी उनकी है—जलतरंगकी ध्वनि-जैसी। हवामें आमकी मंजरीकी महक आ रही थी। चैतमें आमके सभी पेड़ोंमें फल लग गये थे—सिर्फ चौधरी परिवारके खास बगीचेके पेड़ोंमें चैतमें मंजरी आती है! मंजरीकी यह गंध उसी बगीचेसे आ रही है।

"गुरुजी!"

किशोर-कण्ठकी अचरज भरी खुशीकी आवाज सुनकर देबूने उलटकर देखा

पास ही की एक मेंडपर-से कालीपुरका सुधीर जा रहा है द्वारिका चौधरीका पोता—बड़े लडकेका लडका। उसका छात्र था वह।

देवूने हँसते हुए स्नेहसे पूछा, "सुधीर? अच्छे हो?"

सुधीर जल्दीसे नजदीक आया। प्रणाम करके बोला, 'जी! आप अच्छे थे सर? अभी आ ही रहे हैं?"

"हाँ, बस चला ही आ रहा हूँ। तुम शायद स्कूल जा रहे हो?'

'जी! आपके घरके सब लोग अच्छे हैं। मुन्ना अब काफी बोलता है। हमलोग प्राय शामको वहाँ जाया करते हैं। मुन्नेके साथ खेलते हैं।'

देवू गहरे आनन्दसे अभिभूत हो गया मानो। ये लडके उसे इतना चाहते हैं!

"पाठशालाका नया भवन बना है सर!"

'अच्छा!"

'जी! अच्छा बना है। तीन कमरे। पालिश की हुई मेज-कुरसियाँ। फिर जरा झिझकके साथ बोला, "आप तो अब स्कूलमें नहीं पढायेंगे सर?'

देवूने एक लम्बी उसास ली—"नहीं सुधीर, मैं अब नहीं पढाऊँगा। नये मास्टर कौन आये?"

'कंकनाके बाबुओंके नायबके लडके। मट्रिक पास हैं। गुरु ट्रेनिंग भी पास की है। लेकिन आप "

सुधीरकी बात खत्म होनेसे पहले ही एक बहुत ही कम उम्रके भले आदमीने उधरसे सुधीरको पुकारा— स्कूल जा रहे हो सुधीर? जरा अपनी कापी-पेन्सिल तो देना।"

सुधीरने कापी और पेंसिल निकालकर दी। यह लडका—हाँ भलेमानसके बजाय इसे लडका कहना ही ज्यादा ठीक है—कौन है? उम्र अट्ठारह उन्नीसकी होगी। आँखोंपर ऐनक। बदनपर सफेद कुरता। यहाँका आदमी जरूर नहीं है। खूबसूरत ओजस्वी चेहरा। सुधीर बेशक उसे जानता है। लेकिन उसके सामने ही देवू सुधीरसे उसका परिचय नहीं पूछ सका। दूसरा ही प्रसंग उठाया—"चौधरीजी तुम्हारे दादाजी अच्छे हैं न?'

जी! वे आपको कितनी याद करते हैं!'

देवू हँसा। चौधरीजीको वह सदा श्रद्धा करता है। बड़े अच्छे आत्मा हैं। वे देवूको याद करते हैं? देवूको खुशी हुई। उसने फिर पूछा, 'घरके और और लोग?

'सभी सकुशल हैं। सिर्फ मेरी एक छोटी बहन गुजर गयी।'

"गुजर गयी ?"

"जी ! ज्यादा बडी नही। एक महीनेकी थी।"

उस भले आदमीने सुधीरकी कॉपी और पॅसिल लौटा दी। हँसकर कहा, "बताओ तो, यह संख्या कितनी है ?"

संख्याकी ओर देखकर सुधीर मुश्किलमें पड गया।

देबूने भी देखा—बडी लम्बी एक संख्या, कई लाख या हजार करोड।

भले आदमीने खुद ही हँसकर कहा, "नही बता सके ? बाईस हजार आठ सौ छियानबे करोड चौंसठ लाख निन्यानबे हजार।"

अचरजसे सुधीरने पूछा, 'क्या ?'

"रुपया।"

"रुपया ?"

"हाँ ! संयुक्त राज्य अमेरिकाकी खानो और कारखानोसे सालमे जो उत्पन्न होता है, उसकी कीमत।"

सुधीर हक्का-बक्का रह गया। विमूढकी नाई मुँह ताकता रहा। देबू भी हैरान था—यह अजीब लडका कौन है ?

उस सज्जनने सुधीरकी पीठपर दो एक थप्पड लगाकर कहा, "अच्छा जाओ ! स्कूल जानेमे देर हो रही है।" उसके बाद देबूकी ओर ताककर कहा, "आप शायद इसके यहाँ जायगे ? चौधराजीके यहाँ ?"

देबूको और भी हैरानी हुई—ये तो चौधरीजीको भी पहचानते है। कहा, "नही, मै शिवपुर जाऊँगा।"

"शिवपुरमे किसके यहाँ ?"

"आप क्या सबको पहचानते है ? देबू घोषको जानते है ?"

सम्भ्रमके साथ उस युवकने कहा, "उनका मकान मै जानता हूँ उनके छोटे मुन्नेको भी पहचानता हूँ मगर उनको अभीतक नही देखा है। मेरे आनेके पहले ही वे जेल चले गये थे। अब आने ही वाले है।"

सुधीरने कहा, "जी, यही तो हमारे गुरुजी है।"

"आप !"—युवककी दोनो आँखें आनन्दकी उत्तेजनासे दमक उठी दोनो हाथ फैलाकर वह सादर देबूसे लिपट गया। बोला "आ, देबू बाबू है आप ! आइए, चलिए घर चलिए।"

देबूने पूछा "आप ? आपका परिचय तो ?"

सुधीरने आँखें बडी-बडी करके सम्भ्रमके साथ कहा, "ये यहाँ नजरबन्द है सर !"

"मुझे यहाँ रखा है। अनिरुद्ध कमकारके यहाँ बाहरवाले कमरेमें रहता हूँ। सुधीर, फौरन भागकर जाओ इनके यहाँ खबर दो गाँवमें कह दो। एक दो, तीन! समझो—डाकगाड़ी—तूफान मेलसे जा रहे हो!"

सुधीर तीरकी तरह निकल गया।

हँसकर उस युवकने कहा, "शायद समझ गये हैं कि मैं यहाँ नजरबंदी में हूँ।"

गाँवमें प्रवेश करते ही एक छोटी-सी भीड़से भेंट हो गयी। जगन हरेन, अनिरुद्ध, तारिणी गणेश—और भी कई लोग। चण्डीमण्डपमें बहुत-से लोग थे। श्रीहरि हरीश, भवेश आदि बड़े लोग वहाँ थे। सबने उसकी सादर अभ्यर्थना की—आओ आओ देबू बैठो! देबूने चण्डीमण्डपमें प्रणाम किया। आज श्रीहरि तकने उसकी खातिर की। रिश्तेमें देबू उसका चाचा जरूर है लेकिन श्रीहरि उम्रमें उससे बहुत बड़ा है। तिसपर सम्पन्न होनेके नाते श्रीहरि प्रणाम शायद ही किसीको करता है। श्रीहरिने भी उसे प्रणाम किया।

चण्डीमण्डपसे कुछ ही फासलेपर उसका घर है। बरामदेके पास ही हर-सिंगारका वह पेड़। दरवाजेपर भीड़ लगाये जाने कौन-कौन खड़े हैं।

उसके दरवाजेपर गाँवकी औरतें खड़ी थीं। दो कुमारी लड़कियाँकी कमर-पर जल भरे घट थे। देबू अभिभूत हो गया। उसके स्वागत अभिनन्दनके लिए गाँववालोंमें कितना गाढ़ा आग्रह है—कैसा आदर-भरा आयोजन! अचानक शंख ध्वनि हुई। देबूने देखा एक लम्बी सी औरत शंख फूँक रही है। देबूने उसे पहचाना—वह पद्म थी।

घरमें दाखिल होते ही मुनेको उसके कदमोंके पास उतारकर दुर्गाने उसे प्रणाम किया।

घूँघट काढ़े दरवाजेके बाजूसे टिकी खड़ी थी बिलू। मुनेका गोदीमें उठाकर देबूने बिलूकी तरफ देखा। बुढ़िया रांगा दीदीने उसका हाथ पकड़कर खींचा—'छोरेको जरा भी अक्ल नहीं। खाक गुरुजी बना है! अरे पहले इधर आ। अरसिक कहींका!'

'रांगा दीदी छोड़ो! प्रणाम कर लूँ।'

"प्रणाम करनेकी जरूरत नहीं है—चल तू!'—बुढ़िया उसे खींचती हुई अन्दर ले गयी। उसके बाद वह बिलूको खींच लायी—यह ले!"

उसके बाद बुढ़ियाने वहाँ खड़ी सभी स्त्रियाँसे कहा, 'भई अब सब घर चलो अभी। चलो, नहीं तो मैं गाली दूँगी।

स्त्रियाँ हँसती हुई चली गयी। देबूने बिलूका हाथ पकड़कर स्नेहसे पुकारा—'बिलू!'

बिलूके चेहरेपर आँसूके दाग थे, आँखें बोझिल हो रही थी। आँखें पोछकर उसने कहा, "रुको, प्रणाम कर लूँ।"

"मालिक!"—तान तब फटी हँसी हँसकर वह चरवाहा बालक सामने आ खड़ा हुआ। वह हाँफ रहा था—'बहारमें था। सुना तो भागकर आ गया।' —उसने देबूको प्रणाम किया।

"गुरुजी कहा है?"—अबकी सतीश बाउरी आया। उसके साथ उसके टोलेके लोग थे।

"कहाँ हो भई गुरुजी?'

आवाज सुनते ही देबू व्यस्त हो उठा। यह गला था द्वारिका चौधरीका।

देबूके जीवनमें यह एक अनोखा दिन था। दुःख और गरीबीसे जर्जर नीचता और दीनतासे भरे इस गावके किस अस्थि पंजरकी आटम छिपा थी ऐसी सुन्दर, उदार स्नेह ममता! उसने बिलूसे कहा, जरा बाहरसे हो आऊँ। चौधरीजी आये ह। आदमीको सुखमें नही पहचाना जाता बिलू उसे ठीक-ठीक पहचाना जा सकता ह दुःखमें। पहले मुझे लगता था कि ऐसा स्वार्थी और नीच गाव दूसरा नही ह।"

बिलूने हँसकर कहा तुम आदमी कितने बड़े हो प्यार नही करेंगे लोग! पता है तुम्हें—तुम्हारे जेल जानेके बाद जरीबके अमीन, कानूनगो, हाकिम—किसीने भी किसीको कोई कड़ी बात नहीं कही। 'आप'के सिवा 'तुम' या नाम नही। आस-पासके सभी गाँवके लागोन तुम्हारी तारीफ की सबन तुम्हें आशीर्वाद दिया।'

साल भरमें बहुत-कुछ हो गया ह। गावके एक एक आदमी आ-आकर एक ही शाममें सब बता गये। जगनने खबर दी और साथ ही-साथ हरेन घोषालने हामी भरी—साथके साथ कुछ-कुछ सुधार-सशोधन भी करता गया।

गाँवमें प्रजा समिति कायम हुई ह। काग्रेस-कमेटी भी बनी ह। जगन उसका अध्यक्ष ह और हरन सेक्रेटरी।

हरनने कहा पहलेसे ही तय हैं लौटनेपर तुम इन दोनोंमेसे एकके अध्यक्ष हो जिसके भी चाहो। म कहता हूँ तुम काँग्रेस-कमेटीके प्रेसिडेण्ट बनो। लेकिन नजरबन्द यतीन बाबूका कहना ह देबू बाबू प्रजा-समितिके प्रेसिडेण्ट होगे।'

"छिरू पाल अब गण्यमान्य व्यक्ति बन गया है। एक गडगन्त खरीदा है चण्डीमण्डपमें दरी मसनद बिछाकर बैठता है। कमलाकान्त गाँवका गुमाश्ता भी बन गया है, गुमाश्तागिरी ले रखी है। महाजन तो था ही ऊपरसे गुमाश्ता बन बैठा। गाँवका सत्यानाश कर दिया।

'जमींदारकी हालत इस समय खराब है। श्रीहरिके पास रुपये हैं। वसूली हो या न हो, श्रीहरि सारे रुपये देगा—इसी शर्तपर जमींदारने श्रीहरिको गुमाश्तागिरी दी है। श्रीहरि आजकल एक ढेलेसे दो चिड़ियाका शिकार करता है। बकाया लगानके लिए नालिशका मौका है। लोगोंकी जमीन नीलामपर चढ़ाकर सूद मूल सहित अपना पावना वसूल कर लेता है। सूद मूलका वसूलीके सिवा भी उसे और मोटा लाभ रहता है।

"गणेश पालकी जोत नीलाम हो गयी। उसे खरीदा श्रीहरिने। बेचारे गणेशके पास अब सिर्फ कुछ बीघे जमीन रह गयी है।

'गरीब तारिणीका घर भी श्रीहरिने खरीद लिया वह अब उसके गुलामोंमें शामिल हो गया है। तारिणीकी स्त्री सेटलमेण्टके एक चपरासीके साथ भाग गयी। तारिणी मजदूरी करता है उसका लड़का जंक्शन स्टेशनपर भीख माँगता है।

पातू मोचीकी दबोत्तर जमीन जाती रही। उसके लिए नालिश फौजदारी की जरूरत नहीं हुई। सेटलमेण्टमें ही वह जमीन जमींदारके खतियानमें चढ़ गयी। पातूने खुद ही यह बात मान ली थी कि अब वह बाजा नहीं बजाना बजाना भी नहीं चाहता।

'अनिरुद्धकी जमीन नीलामपर चढ़ गयी है। अनिरुद्ध अब शराब पीकर भटकता चलता है। कभी-कभी दुर्गाके यहाँ भी जाता है। उसकी बीबी भी पागल-सी हो गयी थी। अब कुछ अच्छी है। दुर्गाके सहारे ही दरोगाने मजरबन्दको रखनेके लिए अनिरुद्धका कमरा किरायेपर लिया है। उसी किरायेकी आयसे उसका गिरस्ती चलती है।

देबूने कहा, "स्टार-बहूको आज मैंने देखा। नल फूँक रही थी।'

जगनने कहा, 'हाँ, अब कुछ अच्छी है। कुछ क्या, यतीन बाबूके जानेके बादसे ही बहुत अच्छी है।'—होंठ टेढ़ा करके वह जरा हँसा।

हरनने दबी आवाजमें कहा, 'मेनी मेन से—समझा—यतीन बाबू एण्ड स्टार-बहू '

देबू यकीन नहीं कर सका। तिलमिलाकर बोला 'छि हरन! क्या कह रहे हो।'

"बस ! मैं भी वही कहता हूँ कि यह नहीं हो सकता। यतीन बाबू तुम्हारे बहूको माँ कहता है।"

उसके बाद फिर बोला, "लेकिन यतीन बाबू है बहुत गहरा आदमी। लाख कोशिश की लेकिन बमवाला फार्मूला उससे नहीं ले सका।"

हरीश और भवेशके आ जानेसे उन लोगोंकी बातचीत बन्द हो गयी। जरा देरमें वह उठकर चला गया।

हरीशने कहा "भैया देवू, शामको एक बार चण्डीमण्डपमें आना। हम लोग आजकल वहीं आते हैं। दस-पाँचके साथ श्रीहरि भी बैठता है। रोशनी, तम्बाकू, पान—सब-कुछका इन्तजाम है। श्रीहरि अब बिल्कुल नया आदमी है। समझ गये ?"

भवेशने कहा "हाँ, हम लोगोंके लिए दोनों शाम चाय तकका बन्दोबस्त कर रखा है श्रीहरिने। समझे ?"

देवूने उनसे भी और बहुत-सी बातें सुनीं।

गाँवके पाँच-जनके साथ उठने-बैठनेकी सुविधाके लिए ही श्रीहरिने पाठशाला के लिए अलग जगहकी व्यवस्था कर दी है। जगह उसने जमींदारसे दिलवा दी है। वह यूनियन बोर्डका मेम्बर है, दीवारके खर्चकी उसने मंजूरी करा दी है—खुद नकद पचीस रुपये दिये हैं। इसके सिवा श्रीहरिने लकड़ी, पुआल, दरवाजा, खिड़कीके लिए भी लकड़ी दी है।

अब दोनों शाम चण्डीमण्डपमें मजलिस जमने लगी है, यह देखकर श्रीहरिके विरोधी दलवाले कुढ़नसे जल गये। वे उसकी निन्दा करते फिरते हैं। लेकिन उससे श्रीहरिका कुछ होता-जाता नहीं। उसकी गुमाश्तागिरीपर आँच लानेके लिए ही लोगोंने प्रजा समिति कांग्रेस-कमेटी खड़ी की है, जिसमें देवू उन सबका शामिल न हो।

तारा हजामन और भी भेदकी खबर बतलायी—'जमींदार यह सोच रहे हैं कि इस गाँवका बन्दोबस्त करें या नहीं। श्रीहरि इसे निपटानेके लिए 'हाँ' किये बैठा है। अगर बन्दोबस्ती कायम हो गयी तो श्रीहरि बाबा शिवके अधबने मन्दिरको पक्का बनवा देगा—चण्डीमण्डपके अटपलियेपर पक्का नाटचमन्दिर बनवायेगा। श्रीहरिके यहाँ अब रसोइया है, लड़का खेलानेके लिए नौकर है।"

और अन्तमें ताराने कहा, "हरिहरकी दो लड़कियाँ—जो दाईका काम करनेके लिए कलकत्ते गयी थीं, वहीं दोनों हैं। यानी मतलब समझा आपने ?

बदस्तूर बड़े आदमीकी बात है—जिन्होंने उन दोनोंको रफ़ा किया। समझ गये, बिलकुल अमीरी ठाठ! जब छोटी लड़की आयी तो बेहद दुबली, मरी-मरी-सी, सनके फूल जैसा रंग! धीरे धीरे पता चला—कलकत्तेमें!—समझ गये?

'मतलब कि उस लड़कीने गर्भपात करवाया था। इसलिए गाँवके समाजने उन लोगोंको निकाल दिया। श्रीहरिने दया करके उन्हें पनाह दी उसीके अनुरोधसे समाजने उन लोगोंकी भूल चूक माफ़ कर दी। कहा आखिर दो-दो लड़कियोंकी रोटी-कपड़ा, शौककी चीजें कोई आसान बात नहीं देबू भाई।'

बूढ़े चौधरीने स्वयं अपना कुशल क्षेम कहा देबूसे उसके सुख-दुःखकी खबर पूछी। अन्तमें आशीर्वाद दिया, 'गुरुजी, तुम दीर्घजीवी होओ! देखो अगर बन सके तो श्रीहरिसे डाक्टरका खासकर अनिरुद्धका मेलमिलाप करा दो। बेचारा अनिरुद्ध तो बरबाद हो गया। इसके बाद सबका हो जायेगा।'

इस बातका अर्थ व्यापक है। रामनारायणने आकर कहा कुशलसे हो देबू भाई? मेरी माँ चल बसी।

वृन्दावनने आकर बताया 'चावलके कारबारमें काफ़ी रुपयेका नुकसान किया देबू भाई! जिन लोगोंने चावलका कारबार किया था उन सभीने नुकसान उठाया। जंक्शनके रामलाल मण्डलने तो लाभ बहुत कमाया है।'

बूढ़ा मुकुन्द एक नन्हें बच्चेको गोदमें ले दिखाने आया था। कहा 'यह हरेन्द्रका बच्चा है।'

मुकुन्दका लड़का गोविन्द, गोविन्दका बेटा हरेन्द्र, मतलब कि हरेन्द्रका बेटा मुकुन्दका परपोता हुआ।

गाँवका श्रीहरि स्वयं आया। अब श्रीहरि सम्भ्रान्त व्यक्ति है। लम्बा-तगड़ा मजबूत पहलवान-सा जो मनोहर नंगे बदन हाथमें कुदाल लिये घूमता फिरता था—अपनी दैहिक शक्तिकी दुर्दान्ततासे इठलाता फिरता था, मामूली-सी बात पर बल प्रयोग करता था, जबरदस्ती दूसरेकी जमीनका थोड़ा-सा हिस्सा हड़प लेता था और नाम स्वयं ऐलान करता था—वही अब गाँवका प्रधान व्यक्ति है उससे बड़ा दूसरा नहीं। उस छिरू पालसे इस श्रीहरिकी कोई समानता नहीं। श्रीहरि बिलकुल अलग आदमी है। पैरोंमें अच्छी-सी जूती बदनपर कुर्ता,

पनुहीपर चादर, गम्भीर सयत मुद्रा। आज वह गाँवका गुमाश्ता है—महाजन। दूसरे शब्दोंमें कहें तो आज वह गावका अधिपति है।

'देबू चाचा हो !"—हँसता हुआ आकर खड़ा हुआ श्रीहरि।

'आओ श्रीहरि, आओ !" देबूने भी आदरसे उसका स्वागत किया। वह निकलना ही चाह रहा था। अनिरुद्धके यहाँ जानेकी इच्छा थी। नजरबन्द यतीन बाबू उसे चण्डीमण्डप तक पहुँचाकर ही लौट गया था, उससे मिलनेके लिए देबू उतावला हो उठा था। अनिरुद्ध भी झलक दिखाकर चला गया था। वह घोर शराबी बन गया है। दुर्गा वहाँ रात बिताता है। उसके यहाँके भोजन से भी अरुचि नहीं होती।—इधर जगह जमीन नीलामपर चढ चुकी है।

अभागे भाइके लिए दुःख होता है। हा गया गया बेचारा! देबूको एक बात याद आयी चौधरीजीने ही कही थी— गुरुजी मा लक्ष्मीका ही नाम श्री है। जिसके घर लक्ष्मी है उसीके श्री है जिसके मनमें चेहरेपर, स्वभावमें बल है—वही है श्रीमान। श्रीहरिमें तो परिवर्तन होगा ही। और फिर अभावसे ही दशा अनिरुद्धकी यह दशा है! तिसपर स्त्रीकी ऐसी बीमारीसे वह और भी ऐसा हो गया।'

श्रीहरिने उसे पुकारकर कहा 'तुम्हें बुलाने आया हूँ। चलो चाचा, चण्डीमण्डपमें चलो। आजकल वहीं बैठा करता हूँ। चाय तैयार है। चलो।'

देबू 'ना' नहीं कह सका। चण्डीमण्डपमें बैठकर श्रीहरि बहुत सी बातें कह गया— 'यहाँ बैठनेके लिए ही गावके स्कूलका अलग भवन बनाया गया है। स्कूल भवनका फर्श बरामदा—सबको पक्का बनवा देनेका इरादा है। एक डॉक्टरसे बातचीत हुई है। उसे लाकर गाँवमें जमाना है। जगनसे अब काम नहीं चलता। उसके पास दवा नहीं है सब पानी सब धोखा।'

देबू चुप रहा।

सेटलमेण्टकी 'खानापुरी' और 'बुझारत'—ये दो तो खत्म हुए। फिर कोई झमेला नहीं हुआ। श्रीहरिने अस्वीकार नहीं किया कि जो कुछ हुआ देबूकी ही वजहसे हुआ। वह बोला समझे चाचा अन्तमें ऐसा हुआ कि अमीन और क़ानूनगो 'आप' के सिवा बात ही नहीं करते! हम सब तुम्हारा नाम लिया करते थे। अब रही धारा तीन और धारा पाँच।"

श्रीहरिने यह भी बताया कि उसने देबूकी जमीन जायदाद सब ठीकसे सेटलमेण्टमें रकॅर्ड करा दी है। यहाँतक कि जमीनके जिस टुकड़ेको कंकनाके जमीदारका कारिंदा हड़प गया था, उसे भी निकाल लिया।

"उसे भी निकाल लिया!" देवू अचम्भेमें पड़ गया।

"क्यों नहीं निकालता! जमींदारी सिरिश्तेका कागज-पत्तर तो हमारे ही हाथ है और उसपर गुमाश्ताजीका पक्का दिमाग। मैंने दासजीसे कहा, देवू चाचा इलाके भरकी भलाई की, बाघका दांत तोड़ गया वह और उसकी जमीन कुत्ते खायें यह नहीं होगा। हम उसका इतना भी न करें, यह नहीं होने-का। और फिर "

"और फिर —श्रीहरिने आसमानकी ओर नजर करके हाथ जोड़कर प्रणाम किया—'भगवानने जब मनुष्यका जनम दिया है तो उपकारके सिवा किसीका अपकार नहीं करूँगा चाचा! देखो न, हरिहरकी दोनों लड़कियोंके लिए क्या फिजीता सब हुआ! कलकत्तेमें तो उन्होंने रजिस्टरमें नाम लिखाया था। अन्तमें एक काली करतूत करके लौटा। गांववालोंने उन्हें समाजसे निकाल दिया। मन समझा-बुझाकर उन्हें अपने ही यहाँ जगह दी। लोग-बाग तरह-तरह की बातें कहते फिरते हैं। सो मैं झूठ नहीं कहूँगा, तुम महज मेरे चाचा ही नहीं, मित्र भी हो। एक ही साथ हम पढ़े हैं। जिन लोगोंने बाजारमें रजिस्टरमें नाम लिखाया था, उनको मैंने अगर उसी कामके लिए रखा है, तो कौन-सी गलती की है, कहो।'

गड़गड़का नरचा देवूकी ओर बढ़ाते हुए श्रीहरिने कहा 'पाया चाचा।"

मैंने जेलमें बीस तम्बाकू सब छोड़ दिया है।'

'अच्छा किया।'

श्रीहरिकी बात खत्म ही नहीं होना चाह रही थी। विसकू विपत्तिके समय, किसकी भलाईके लिए उसने कितना रुपया दिया और वह अब किस प्रकार देनेका ही नाम नहीं लेता—अब उसने इस तरहके किस्से कहने प्रारम्भ किये।

श्रीहरिको दोष नहीं दिया जा सकता। रुपया रखना न तो पाप है और न ही गैरकानूनी। विपत्तिके समय किसीको रुपया देनेमें वह आदमी उपकार ही मानता है, मगर जब सूद-सहित अदायगीका वक्त आता है तो उसका भाव रूप जाहिर होता है वह दरअसल कर्जदार आतंकित होता है। महाजन अपने क्षेत्र विशेषमें संकुचित होनेपर भी सभी क्षम नहीं होता। मगर इसका जिम्मेदार कौन है, यह कहना कठिन है। सूदके लिए महाजनको इन्कमटैक्स देना पड़ता है पावनेकी वसूलीके लिए अदालतमें फीस देना पड़ती है यूनियनकी चौकीदारी टैक्स देना पड़ता है। श्रीहरि वह सब कम छोड़ दे?

देवूने एक लम्बा निःश्वास छोड़ा। श्रीहरिका सोचने-सोचते उसे बचपनकी एक बात याद आ गयी—कर्जके लिए बकनाथ बाबूजान जायदाद कुर्क करायी

थी। वह सिहर उठा। कर्जदारकी दशा दबूकी आँखोंमें तैरने लगी। जमीन गयी, पोखर-बगीचा गया, खेत खलिहान गया, इसके बाद उसके ढोर डंगर गये, फिर बरतन भाँडोंकी बारी आयी। इसके बाद मन साफ मैदान। कोई आधार नहीं, कोई सहारा नहीं, बस उपवास। तीन बरसके अन्तर-अन्तरालमें हुण्डनोट बदल-बदलकर एक सौ रुपये अनायास ही कई हजारके रकम हो गये—वह भी कानून-सम्मत। जब कानून-सम्मत है तब यही न्याय है। यही अगर न्याय है तो संसारका आशय क्या?

उसकी चिन्ताको ताड़ते हुए श्रीहरिने कहा—अब देखो, सेटलमेण्टकी धारा तीन और धारा पाँचका काट आ रहा है। और इधर प्रजा-समिति कायम करके डाक्टरने नारा लगा दिया है—इस गाँवकी सारी जमीन मुकर्ररी जमा है। इस मौजेमें कभी भी लगान नहीं बढ़ा। मैं तुम्हें कागज दिखाऊँगा बारह सौ सत्तर सालका कागज—हर जमामें बढ़ोत्तरीका लेखा है। एक भी जमा मुकर्ररी नहीं साबित होगा। जमींदार ज्यादाका दावा करेगा। शायद हो कि वे लोग हंगामा भी करें। मुकदमा होगा। कानूनन जमींदारका जो पावना है वह उसे मिलेगा ही। और कानूनन जब उसका पावना है तो उसका कसूर क्या है, बताओ भला! पचास वर्षोंमें फसलकी कीमत तीन गुनी बढ़ गयी है। फिर जमींदारको क्यों नहीं मिलेगा?'

दबूसे इस बातका कोई जवाब देते नहीं बना। फसलका दाम सचमुच ही बढ़ गया है। लेकिन उसमें रय्यतकी आय नहीं बढ़ी। उस बढ़ी हुई बाजार दरें खा गयी। बढ़ा सबके लिए तो अभाव ही और उसके ऊपरसे लगानकी बढ़ोत्तरी।

श्रीहरिने कहा, 'सुनो चाचा, दबूके लिए काफी कष्ट उठा चुके। अब तुम उस रास्तेमें न जाओ। खाओ-पीओ, काम-काज करो, लोगोंकी भलाई करो। लोग तुमसे बड़ी-बड़ी उम्मीदें रखते हैं, हम भी रखते हैं। आज न्यायरत्नने मुझसे यही कहा। कहा, घोष तुम गुरुजीको मना कर दो, यह सब काम न करें। सो तुम एक बाण्डपर सही कर दो, वे तुमको सभा समाजसे निकाल देंगे। स्कूल की नौकरी—वह तो तुम्हारा ही है। बाण्ड लिख देनेपर मिल जायगी। और हाँ, उस नजरबन्द छोरेसे तुम मिला जुला मत करना। समझ गये?

अबकी दबूने हँसकर कहा, 'सब समझ गया।'

"तो फिर कल ही चलो मेरे साथ।'

'नहीं, यह मुझसे न होगा छिरू। मैंने कुछ अन्याय थोड़े ही किया है?

"मगर तुम यह ठीक नहीं कर रहे हो चाचा! खैर, दो दिन सोच देखो।"

"अच्छा !"—हँसते हुए देबू उठकर चला आया। चण्डीमण्डपसे रास्तेपर उतरते ही झुककर नमस्कार करके कुछ लोग उसके सामने खड़े हो गये।

'सतीश ?'

"जी हाँ !"

"क्या बात है ?"

"जी आपको एक बार हमारे टोलेमें पधारना ही होगा।"

"क्या बात क्या है ? घेंटू-गान ? आज रहने दो सतीश फिर कभी।"

"जी, आपको ही सुनानेके लिए तो हमने इन्तजाम किया है !"—फिर फुसफुसाकर कहा, 'नजरबन्द बाबू भी बैठे हैं, डाक्टर बाबू भी हैं !'

"नजरबन्द बाबू भी हैं ?"

"जी !"

"अच्छा ! तो चलो।"

चैत महीनेमें घण्टाकर्णकी पूजा। घेंटू पूजा पंजिकावाली घण्टाकर्ण-पूजा नहीं है। पंजिकामें जिस घण्टाकर्णकी पूजा की जाती है वह केवल निर्वाक महात्मा घण्टाकर्णकी पूजा है। यह घण्टाकर्ण या घेंटू-पूजा गाजनका एक अंग है। घण्टाकर्ण एक पिशाच था—शिवका भक्त और विष्णुका विरोधी। साधना द्वारा सिद्धि लाभ करके उसने शिव और विष्णु दोनोंकी ही कृपा प्राप्त की थी। इसी आधारपर पिशाच घण्टाकर्णकी पूजा बंगालकी नीच जातिके लोग करते हैं। पूरे महीने द्वार द्वार घेंटू गान गाते फिरते हैं दाल चावल माँगकर गाजनके समय समारोह करते हैं।

घरकी शाम। धर्मराजकी वेदी, बकुल पेड़के नीचे महफिल लगी। बकुलकी गन्धसे यह जगह महमहा रही थी। आसमानमें चाँद था—अँधारिया पाखकी द्वादशी। एक तरफ औरतें दूसरी तरफ पुरुषोंका जमघट। गानेके बीचोबीच बैठे थे नजरबन्द बाबू गुरुजी, डॉक्टर बाबू हरेन घोषाल। चार मशालोंका इन्तजाम कर लिया था उन लोगोंने। वसन्तकी साँझकी चाँदनी—आकाशसे धरती तक मानो स्वप्न-कुहेलिकाका एक जाल-सा बिछा था।

देबूको याद आया बचपनमें वे सब यहीं घेंटू-गान सुननेको आया करते थे। ऐसी ही चाँदनीमें महफिल जमती थी। जाते समय मौलसिरीके फूल चुन-

तीन टाँग की मेज के ऊपर लगी हुई दुकान,
यहाँ-वहाँ गाड़े चलना चीना माटी का पिन,
प्राण अब बचना मुश्किल ।
लाल गोल आँखें, घूमें रह रह कर जैसे तारे
दाँत कटाकट करके बोले, ऐ बे उल्लू, जा रे ।
कहीं में धँसे न धरती ।
देबू घोष गुरु जी ठहरे ओजस्वी विद्वान
उन्हें जान से कहीं अधिक प्यारा है अपना मान
शान किसकी क्या करती ।
कानूनगो कर बैठा उनको जैसे ही तुम-ताम
दिया उन्होंने रें-वें से झट उसका दूना दाम
उन्हें परवा न किसी की ।
देबू के खेतों में सीकड़ भारी चालीस मन,
खींचे लिये अमीन चला झन झन झन झन झन झन ।
लोभ से जला उसी को ।

देबू हँसा । बोला "यह सब बनाया किसने सतीश ?'

सतीश मुग्ध होकर सुन रहा था । गायकोंने उसके बादकी घटनाका भी हूबहू वर्णन किया । गाया—

गिरफ्तार कर लिया दरोगा ने देबू को आकर
बोला, कानूनगो से माफी अभी माँग लो जाकर ।
कह दिया देबू ने 'ना' ।
पड़ी रही घर सोने की प्रतिमा-सी प्यारी नारी
खिले फूल-से कोमल मुन्ने की न सुनी किलकारी
नहीं की कुछ भी परवा ।

आँखें पोंछते हुए दुर्गाने कहा, 'तुम पत्थर हो गुरुजी ! उफ वह भी क्या दिन था !'—न केवल दुर्गा बल्कि जितनी स्त्रियाँ वहाँ थीं सब आँचलसे आँखें पोंछने लगीं । उस दिनकी याद उन्हें थी ।

गायक गाने लगे—

पहन फूल की माला देबू जेल चले हँस-हँस कर
अधम सतीश झुका आके उनके पावनपद तल पर
देवता ही तो हैं वे ।

गीत खतम हो गया। सतीशने आकर देबूको प्रणाम किया। देबूका हृदय भी उच्छ्वसित हो उठा था। वह बोल नहीं पाया, स्नेहसे सतीशको पकड़कर उठा लिया।

जगनने कहा, 'तुझे मैं एक मेडल दूँगा, सतीश!''

हरेनने कहा, 'अरे हो सतीश! माला तो मैंने दी थी, लेकिन तेरे गीतमें यह बात तो छूट ही गयी? माला है, गला है—मैं ही नहीं? वाह रे वा!'

जैसे सपनेसे आच्छन्न हो, यतीन इस तरह उठ खड़ा हुआ। उसे सारा आयोजन ही अनोखा लगा। मन-ही-मन उसने सतीशको नमस्कार किया। कहा, ''अपने गीत मुझे लिख दोगे सतीश?'

'जी,'' सतीश अप्रतिभ-सा हँसने लगा—'आप लिख लीजिएगा?''

हाँ!''

''सच कह रहे हैं, बाबू?''

''हाँ-हाँ, सच!''

चुपचाप खिल गयी हँसीसे सतीशका मुँह भर गया। वह निहाल हो गया।

देबूने कहा, 'आज तो आपसे बातें नहीं हो सकीं। कल ''

यतीनने कहा, 'बात तो हो चुकी है। आलोचना अभी बाकी है। कल मैं ही आपके घर आऊँगा।''

उन्नीस

गए ही दिन। सिर्फ एक दिनके लिए देबू घोष देबूने शिवकालीपुरका एक अनोखा रूप देखा। और रूप ही नहीं उसका स्वाद, उसका स्वाद एक दिनके लिए देबूके सामने सब-कुछ मधुमय हो उठा। लेकिन दूसरे ही दिनसे फिर वही पुराना शिवकालीपुर। वही हो दीन-हीन हिंसा-जर्जर लोग, रोग-दुःख गरीबीसे घिरा गाँव। कल ही गाँवके पेड़-पौधों लता-पत्ता, फल-फूलोंमें देबूको जो एक सर्वथा नयी माधुरी दिखाई दी थी, दरसे पकनेवाली आम्र-मंजरीकी सुगन्धसे उसने जिस तृप्तिका अनुभव किया था, आज उसका कुछ भी नहीं था।

अपने बरामदेमें बैठा वह इधर-उधरकी बिखरी बिखरी बहुत-सी बातें सोच रहा था। देखा, गाँवमें सब कहीं धूल ही धूल भरी है जिस रास्ते सब कोई

जाते-आते हैं वहाँ तो टखने-टखने तक हो गयी है। गाँवमें इतनी धूल ? पोखर सूख आया ह, पानी सड रहा ह। गाँवम पानीकी कमी हो आयी। जेठ-बैसाखमें गाय-गोरू, पेड-पौधोके लिए कष्टकी सीमा नही रहेगी। घरमें बहुत-से पौधे ह, रोज-रोज पानी चाहिए।—और, पेड-पौधे लगानेसे लाभ भी क्या ? दीवारपर कोहडेकी जो लतर फली ह, उसमें कई कोहडे लगे थे। कल रातको तीन कोहडे कोई तोड ले भागा! घरके चरवाहेने वह लतर लगायी थी—वह अजाने चोरको जोर-जोरसे गालियाँ देने लगा।

वह छोरा अपना तनखाह और कपडेके लिए उतावला हो गया ह। बिलूकी साडी भी फट गयी ह। खुदके लिए भी कपडा चाहिए। जसे भी पहनो कपडा चतमें फटेगा ही—यह कहावत यो ही नही ह। किया क्या जाये ? डाकघरमें जो रुपये जमा थे, चुक गये। मनम उठत विचाराका तार टूट गया, कही कुछ शोर हो रहा था।

अरे यह क्या ? कही लोग गाली गलौज कर रहे ह, झगड रहे हैं। उनमें एक आवाज तो शायद रागा दीदीकी ह। बुढियाको किसस क्या हो गया ? उसने बिलू ही से पूछा 'यह रागा दीदी किससे उलझ पडी ?''

बिलूने हँसकर कहा, ''किसीसे उलझी नही ह। बुढिया अपने बापको और दवताको गाली दे रही ह। आजकल रोज ही सवेरे इसी तरह गाली दिया करती ह। बुड्ढी हो गयी—अकेले काम काज करनेमें तकलीफ होती ह, इसी लिए सबेरे उठते ही रोज गाली देती ह। बापको कहती ह—राच्छस, जमीन जायदाद सब भकोस गया और देवताको कहती हैं—नजरखौका, अधे हो जाओ।'

देबू हँसा। बोला और भी तो कोई गाली बक रही ह। काँसे सी टनटन् आवाज!'

''वह पदम ह। अनिरुद्धकी बहू।'

''अनिरुद्धकी बहू ?'

''हाँ वह शायद हमारे जेठके बेटे यानी श्रीहरि घोषको गाली दे रहा ह। बीच-बीचम देती ह इसी तरह। शायद आज भी दे रही है। बीचमें तो पागल सी हो गयी था। अब कुछ अच्छी ह। अनिरुद्ध तो एक प्रकारसे निकम्मा ही हो गया। और कभी-कभी जब पाकर यह लोहेका डण्डा लिये घूमता ह—चीखता ह खून कर दूँग। जिस तिसके घर खाता है।''

''जिस तिसके माने दुर्गाके यहाँ न ?'

''हाँ।'

"छि ! छि ! छि ! दुर्गाका यह दुर्गुण नहीं गया। इसी एक दोषसे उसके सारे गुण जाते रहे!"

बिल्लूने कहा, 'धोकर नशेमें चूर हो 'खानेको दें' 'खानेको दे' करता है। खानेके लिए हरामी मचानेवाले भला दुर्गा क्या करेगी, तुम्हीं कहो? अनिरुद्ध कुछ दिन तक रात वहीं बिताता जरूर था। लेकिन आजकल दुर्गा उसे रातको अपने यहां नहीं घुसने देती। मगर फिर भी वह कभी उसके आँगनमें, कभी बगीचेमें, कभी रास्तेमें, कभी और कहीं पड़ा रहता है।"

"क्या नहीं, अब तो अनिरुद्धकी गाठमें पैसे नहीं हैं! अब दुर्गा '

न, न ऐसा न कहो! दुर्गाने अनिरुद्धसे कभी पैसा नहीं लिया है। बल्कि उसीने समय-समयपर दो चार रुपये दिये हैं। उसने रुपये मेरे ही हाथसे दिये हैं। कहा था—बिल्लू दीदी, ये रुपये लुहार-बहूको दे देना। मुझसे तो वह लेगी नहीं।"

'छि, तुम इन घिनौनी बातोंमें पड़ी थी?'

बिल्लू जरा देर सिर झुकाये रही। फिर बोली, 'क्या करती कहो।" पद्म पागल-सी हो गयी थी! घरमें हँडिया नहीं चढ़ती। खानेको कुछ न था—न पद्मके लिए न अनिरुद्धके लिए। मेरे पास भी कुछ नहीं था कि दे देती। एक दिन दुर्गा आकर बहुत गिड़गिड़ाने लगी। फिर मैं भला करती भी क्या?"

"हूँ!' देबूको एक बात याद आ गयी—"दरोगासे कहकर दुर्गाने ही तो नजरबन्दके लिए अनिरुद्धका कमरा किरायेपर लगा दिया है।"

"यह तो बादकी बात है।' थोड़ा देर चुप रहकर वह बोला।

"हाँ! यह नजरबन्द छोकरा जो है, है बड़ा भला। पद्मको माँ कहता है। गाँवके लड़के भी उसे घेरे बैठे रहते हैं!"

अच्छा, तुम बैठो। मैं जरा यतीन बाबूसे ही मिल आऊँ।"

रास्तेमें चण्डीमण्डपसे श्रीहरिने आवाज दी। वहाँपर छोटी-सी भीड़ भी जुटी थी। देबूने अन्दाज किया, लगान वसूली चल रही है। चैतकी बारहवीं तेरहवीं तारीख अँगरेजी महीनेका आखिरी सरकारी खजाना दाखिल करनेका आखिरी दिन। और फिर चैतकी किस्त—अन्तिम।

देबूने कहा, "भतीजे, जरा देखता आऊँगा।"

लेकिन श्रीहरिने कहा, "बस, पाँच मिनट! जरा गाँवका रवैया देख जाओ। लगता है जैसे अराजकता हो गयी है!"

देबू मण्डपपर गया। देखा—बैरागी छोटा नलिन हाथ जोड़ खड़ा है। एक तरफ खड़ा उसकी माँ रो रही है।

श्रीहरिने कहा, "जरा इस छोकरेकी हरकत देख लो।"—श्रीहरिने हाथके इशारेसे मण्डपका पुता हुआ एक पाया दिखाया। चूना पुते हुए पायेको सफेद जमीनपर कोयलसे एक चित्र बना था—कालीकी तसवीर।

देबूने उससे पूछा "क्यों रे, यह तसवीर तूने बनायी है?"

नलिनने गरदन हिलाकर हाँ किया।

श्रीहरिने कहा "पोताईकी क्या गत कर दी है, देखो!" फिर नलिनसे कहा, "पोताईका खरचा यहाँ रख दे और तब जा।

देबू तबतक भी तसवीरको देख रहा था। अच्छा बनाया है! उस छोरेसे पूछा, 'तसवीर बनाना किसमे सीखा?'

रुँधे गलेसे उसने जवाब दिया 'जी अपने-आप।

श्रीहरि बोल उठा, 'हाँ हाँ! इस कमबख्तकी यही हरकत है। लोगोंकी दीवारोंपर, सीमेण्टके आँगनमें और तो और, बड़े-बड़े पेड़ोंके ऊपर कोयलेसे तसवीर बनाता फिरता है। उस नजरखम्मे जवानने इसका सिर चटकारा है! अनिरुद्धके बाहरवाले कमरेमें रहता है, देखा तो जरा सारी दीवार तसवीरोंसे भरी पड़ी है। अब चण्डीमण्डपपर पड़ गया है। यह उसने कल दोपहरको किया है।'

देबूने हँसकर कहा, 'काम इसने जरूर गलत किया है, मगर आँका है बड़ा अच्छा! कालीकी तसवीर अच्छी बनायी है।'

'नमस्कार घोष बाबू!' सीढ़ियोंसे ऊपर आया नजरबन्द यतीन।

देबूको देखकर बोला 'अरे, आप भी हैं! आप ही के यहाँ जा रहा था।'

"मैं भी आपके ही यहाँ जा रहा था।'

'ठहरिए जरा, यहाँका काम खतम कर लें तब चलें। घोष बाबू इस पायेकी पोताईमें क्या खर्च लगेगा?"

श्रीहरिने कहा 'खर्च तो थोड़ा लग ही जायेगा। मगर बात यह तो नहीं है। बात है नलिनका शासन करनेकी।'

हँसकर यतीन बोला 'मैंने दो आदमियोंसे पूछा। उन्होंने बताया चार आनेका चूना एक मिस्त्रीकी आधे दिनकी मजूरी चार आने और एक मजूरकी आधे दिनकी मजूरी दो आने। कुल दस आने।'

"हाँ, कूची बनानेके लिए थोड़ा सन भी लगेगा।"

'खैर उसका भी दो आना रख लीजिए। बारह आने।'—यतीनने एक रुपया निकालकर श्रीहरिके सामने रख दिया और कहा, 'जो बचे, मुझे भिजवा देंगे।"

वह उठ खड़ा हुआ। साथ-साथ देवू भी उठा। यतीन फिर हँसकर बोला, "मेरे ही यहाँ चलिए देवू बाबू, नलिनकी बनायी बहुत-सी तसवीरें हैं, देखिएगा! चलो नलिन, चलो!"

श्रीहरिने पुकारा, "चाचा, एक बात है।"

देवू उलटकर खड़ा हो गया, "कहो!"

"जरा इधर आओ! हर बात क्या हर एकके सामने कही जाती है?"

श्रीहरि हँसा। पप्पीतलेके एकान्तमें ले जाकर श्रीहरिने कहा, "पिछले वर्षसे ही तुम्हारे यहाँ लगान बाकी पड़ा है। अबकी किस्तसे पहले ही कोई उपाय करना।"

देवूके चेहरेपर क्षण भरके लिए नाराजी उभर आयी। उसे कलकी बात याद हो आयी। लगा, श्रीहरि उसे धमकी दे रहा है। उसने संयत स्वरमें ही कहा, 'ठीक है, दूँगा समयपर ही दूँगा।'

सन १९२४ में विशेष अधिकारपर अँगरेज सरकार-द्वारा बनाया गया नजरबन्दी क़ानून। राजनैतिक अपराधके सन्देहमें खास-खास थानेके पासके गाँवमें बंगाली युवकोंको नजरबन्द रखनेकी व्यवस्था की गयी थी। यतीन बंगाल सरकारके उसी क़ानूनका बन्दी था। यतीनकी उम्र ज्यादा न थी सत्रह-अठारह सालका किशोर—जवानीकी दहलीजपर कदम रखा ही था। साँवला रंग, हरे बड़े बड़े बाल। छरहरा बदन। शरीरमें एक कमनीय लावण्य। चकमकाती आँखें—ऐनकके अन्दरसे व और भी अनोखी दीखतीं।

अनिरुद्धके बाहरवाले कमरेके बरामदेपर एक चौकी डालकर उसीपर उसका अड्डा जमता। गाँवके लड़के तो वहीं पड़े रहते। वयस्क भी आते—तारा हजाम, गिरीश बढ़ई, गैनेनी गदाई पाल बूढ़े द्वारिका चौधरी भी। साँझके बाद अपनी दूकान बन्द करके वृन्दावन दत्त भी आता। बेचारा तारिणी किसी प्रकार मजदूरी करके जी रहा था। वह भी आकर चुपचाप बैठा रहता। कभी-कभी उधरसे गुजरते हुए श्रीहरि भी एकाध बार आकर बैठ जाता। बाउरी टोला और मोची टोलेके लोग भी आते गाँवकी बहू-बेटियाँ दूरसे उसे देखा करतीं। बुनिया राँगा दीदी कभी-कभी उससे बातें करती, कभी लड्डू, कभी केला तो कभी और कुछ लाकर देती और उसे देखकर आप ही-आप पाँचालीकी वह पंक्ति दुहरातीं, जिसका आशय है—गर्गमुनि अक्रूरने सोनेके कन्हैयाको लेकर यशोदा मैयाकी गोद सूनी कर दी।

यतीन भी कभी कभी रवीन्द्रनाथकी कविता गुनगुनाता। इस आशयकी दो पंक्तियाँ सदा उसके मनमें घुमड़ती रहती कि—हर जगह मेरा घर है और घर घरमें मेरा परम आत्मीय है।

इस छोटी सी बस्तीके छोटे आकारमें मानो सारा बंगाल स्थापित होकर उसकी आंखोंमें प्रकट हुआ है। यहाँ आते ही पल भरमें सारा गाँव उसका अपना घर बन गया है। यहाँका एक एक आदमी उसका घनिष्ठतम प्रियजन, परम आत्मीय है। उसे हैरानी होती कि ऐसा हुआ कैसे! शहरका लड़का, घर उसका कलकत्ता है। जीवनमें उसने गाँव कभी देखा नहीं था। नजरबन्दी कानूनमें गिरफ्तार होकर पहले कुछ दिन जेलमें था, उसके बाद कुछ दिनों तक विभिन्न जिलोंके सदरमें या महकमेमें रहा। ये महकमे भी अजीब थे। गाँव की भी थोड़ी-बहुत झलक, घाट-बाट। खेती आज भी वहाँकी मुख्य या गौण जीविका है। छोटा मोटा समाज भी है। समाज ठीक नहीं, उसे दल ही कहना चाहिए। समाज टूटकर—शिक्षा सम्मान और अर्थबलकी भिन्नतासे अलग अलग दल बन गये हैं। संकीर्ण दल स्वार्थ केन्द्रित, ईर्ष्यापरायण। वहाँ गाँवका बस ही आभास रह गया है जैसा कि सलचिनमें रंग पहनेसे छिपे नपड़ेका होता है—धुँधला इशारा भर है, प्रभाव नहीं है, प्रकाश नहीं है।

इसीलिए घोर गँवई गाँवमें नजरबन्दीके आदेशसे वह एक अजानी आशंकासे विचलित हो उठा। लेकिन गाँवको साक्षात देखकर वह आश्वस्त हुआ, हर जगह उसे एक अनोखे स्नेह-स्पर्शका अनुभव हुआ। लेकिन यहाँकी गरीबी, यहाँकी हीनता, यहाँकी कदर्यता भी उसकी नजरसे परे नहीं रही। अशिक्षा तो यहाँ साफ जाहिर है। लेकिन तो भी अच्छा लगा है। यहाँके लोग अशिक्षित हैं मगर शिक्षाके प्रभावसे रहित अमानुष नहीं हैं। अशिक्षाकी दीनतासे ये सकुचाये हुए हैं, कुशिक्षा अथवा अशिक्षाके दम्भसे दम्भी नहीं हैं। यहाँके लोगोंमें शिक्षा चाहे न हो जीर्ण शीर्ण पुरानी संस्कृति आज भी है जो कि मरती हुई सी ही किसी तरह टिकी हुई है। मगर उसकी भी एक आन्तरिकता है।

शहरको वह प्यार करता है श्रद्धा करता है। मनुष्यकी जययात्रा वहीं तो हो रही है। मगर वैसा शहर नहीं जहाँ वकील-मुख्तार अमले ही हों, पान बीड़ी और मनिहारीके कुछ दुकानदार हों, चावलकी छोटी मिलवाला तमाखू की आढ़तवाला और कपड़ेवाला हो, ऐसे स्लोंका छोटा शहर नहीं। वह शहर जहाँ कल-कारखानोंकी सैकड़ा चिमनियाँ खड़ी हैं—ऊर्ध्वबाहु तपस्वीकी भाँइ अपरिमेय और अविश्वसनीय है शक्ति उनकी बड़ी दानवों-जैसी यन्त्र शक्तिसे काम करते हैं—उत्पन्न करते हैं विपुल सम्पदा। लेकिन अरमराता हुआ

तन्मय भाव उसे भला लगा है। बीते युगका मरता हुआ प्राचीन, जिससे नये युगका बड़ा फर्क है,—उसी मुमूर्षु प्राचीनकी करुणा भरी विदा-वाणी मानो नवीनको अभिभूत करती है, ठीक उसी तरह मरणासन्न प्राचीन संस्कृतिकी परितप्ति उनके लिए जैसी मार्मिक, वैसी ही मधुर लगती है।

यतीनने देवूको अनिरुद्धके बगलमेंमें बिछी चौकीपर बिठाया—"बैठिए! आपसे परिचयके लिए तो मैं उतावला हो गया हूँ।"

देवूने हँसकर कहा, "कल तो कहा आपने कि परिचय हो चुका है।"

"बात तो सही है। अब बातें होंगी। ठहरिए, पहले जरा चाय बनाऊँ।" और उसने अनिरुद्धके घरके दरवाजेपर खड़े होकर आवाज दी—"माँ!"

माँ उसकी है पद्म। यह माँ उसके जीवनमें अमृत और विषकी बनी अनूठी दौलत है। उसके जहरकी ज्वाला और अमृतकी मिठास इतनी तीखी है कि उसे बरदाश्त करनेमें यतीन हाँफ उठता है। उम्रमें भी उससे ज्यादा फर्क नहीं, शायद पाँच-सात सालका हो। फिर भी वह उसकी माँ है। कभी कभी यतीनको अपने बचपनकी बात याद आ जाती है। खेलमें उसकी दीदी माँ बनती थी, वह बनता था बेटा। उम्र बढ़नेपर उसी खेलकी मानो अब पुनरावृत्ति हो रही हो। यतीन जब यहाँ आया, तो पद्म प्राय उन्मादकी हालतमें थी। मूर्च्छासे होशमें आनेपर कभी-कभी आँगनमें, धूल-माटीमें अस्त-व्यस्त हालत में पड़ी रहती। अनिरुद्ध उसके पहलेसे ही जहाँ-तहाँ गायब रहता था, घर नहीं आता था। यतीनको ही पद्मकी उस हालतमें ज्यादातर आँख मुँहमें पानीके छींटे देने पड़ते। तभीसे यतीन उसे माँ कहकर पुकारता है। माँके सिवा दूसरा सम्बोधन उसे ढूँढ़े नहीं मिला। एक दिन जब पद्म आपेमें आयीं, तो इसी सम्बोधनपर उसने यतीनको बेटा कहा। यह घरौंदा तभीसे बना है। पद्म अब बहुत-कुछ ठीक है। हर घड़ी अपने बेटेके लिए परेशान रहती है। अनिरुद्ध-की मानो चिन्ता ही नहीं करती। यदा-कदा आ भी जाता है वह तो उसका खास जतन भी नहीं करती।

घरके अन्दर उस समय शोर-गुल मचा था। बहुत-से लड़के उछल-कूद करते हुए हल्ला कर रहे थे। एक लड़केको आँखें अँगोछेसे दबाये पद्म कह रही थी, "भात करें क्या?"

"टपटप!" लड़केने जवाब दिया।

"मछली करती क्या?"

"छुंक छुंक !"

"हाटमें बिकता क्या ?"

"अदरक !"

"तो भैयाको घर ला झटपट !"

लुका चोरी चल रही थी। यतीनके पास लड़कोंकी जमात जुटती थी। जब यतीन नहीं होता तो बच्चे पदमको घेरते। पद्म भी यतीनकी ग़ैरहाज़िरीमें बच्चोंके खेलमें बुढ़िया बनती।

यतीनने फिर पुकारा— 'माँ !"

पद्म उठी—"क्या है ? चाँद चाहनेवाले मेरे बेटेका हुक्म क्या है ?"

'चायका पानी ज़रा फिर चढ़ा दो।'

"नहीं ! अब नहीं ! आख़िर कितनी बार कोई चाय पीता है ?"

"देवू बाबू आये हैं ! उन्हें चाय नहीं पिलायें ?"

"गुरुजी ?'

"हाँ।"

पदमने एक हाथसे घूँघट काढ़ लिया। धीमेसे बोली, "चढ़ा देती हूँ।'

यतीनने हँसकर कहा 'गुरुजी तो बाहर हैं, घूँघट किसे देखकर काढ़ लिया तुमने ?'

'अरे हाँ ठीक ही तो कहते हो !' घूँघट हटाकर वह अप्रतिभ-सी हो ज़रा सा हँस दी।

बाहर आकर यतीनने देवूसे कहा "मैं आपके नामसे एक वी० पी० मँगवाऊँगा।"

देवू ज़रा उलझनमें पड़ा। दूसरेके नाममें वी० पी०! जाने क्याहेको है! बोला, 'वी० पी० ?

'हाँ ! तसवीरोंकी कुछ किताबें, रंगोंका एक बक्स। नलिनके लिए। पुलिसके मारफत मँगानेमें बड़ा झमेला है। नलिन चित्रकारी सीखे बड़ा अच्छा हाथ है इसका।"

हाँ ठीक है। लेकिन बहतर तो यह होगा नलिन कि तू पटुआसे सीखे। मूरत बनाना सीख रंग भरना सीख।"

नलिन अजीब शरमीला लड़का है। बहुत थोड़े शब्दोंमें बोलता है। ज़मीनकी ओर ताकते हुए बोला पटुओंने नहीं सिखाया। पैसे माँगते हैं वे।'

यतीनने कहा, पैसे मैं दूँगा, तुम सीखो।"

' महीनेमें दो रुपये।'

देवूने कहा, "ठीक है, मैं द्विजपदो पण्डासे कह दूँगा। मैं परसों जाऊँगा महाग्राम। मेरे साथ चलना।"

गरदन हिलाकर नलिन बोला, "अच्छा।"

जरा देर चुप रहकर फिर बोला, "आपने कहा था, पैसा देंगे।"

यतीनने एक चवन्नी निकालकर उसे दी। कहा, "तो तुम गुरुजीके साथ जाना, हाँ।"

नलिनने गरदन हिलाकर 'हाँ' जताया और चुपचाप उठकर चला गया।

यतीन अब देवूकी ओर मुखातिब होकर बोला, "अब आपसे बातें करूँ। एक बात मैंने बहुतोंसे पूछी है, कोई जवाब नहीं दे सका। और जिन्होंने दिया भी कमसे कम उनके जवाब मुझे सन्तोषजनक नहीं लगे।"

"कौन-सी बात, कहिए?"

"आप लोगोंका वह चण्डीमण्डप किसका है?"

"सर्वसाधारणका—सभीका।"

"फिर यह क्यों कहते हैं कि उसका मालिक जमींदार है?"

"मालिक नहीं। जमींदार हैं देवोत्तरके सेवायत, इसीलिए उसकी देख भाल करते हैं।"

"मुझे जहाँतक मालूम हो सका है देखभाल तो गाँवके लोग ही करते हैं।"

"हाँ-हाँ, सो तो करते हैं, फिर भी ऐसा ही होता आया है न। वह जमींदारका सम्मान है। इसके सिवा गाँव शूद्रोंका है। ब्राह्मण जमींदार ही सेवायत हैं। यह भी बात है कि गाँवमें झगड़ा-झंझट होता है, दलबन्दी होती है, इसीलिए जमींदारको ही देवोत्तरका मालिक माना जाता रहा है। लेकिन हक़ गाँवके लोगोंका ही है।"

"तो फिर प्रजा-समितिकी बैठकमें जमींदारने बाधा क्यों दी?"

"बाधा दी है?"

"हाँ, बैठक नहीं करने दी।

देवूने जरा देर सोचकर कहा "हो सकता है, प्रजा-समिति चूँकि जमींदारका विरोधी है इसलिए नहीं करने दिया हो।"

प्रजा-समिति प्रजाके कल्याणके लिए है। प्रजाके कल्याणका मतलब जमींदार का विरोध नहीं होता। किसी किसी बातमें विरोध आता है, लेकिन अधिकांश बातोंमें नहीं। और चण्डीमण्डप तो जनताका ही बनाया हुआ है, जमींदारने नहीं बनवाया। सिर्फ जगह जमींदारकी है। जगह तो रास्तेकी भी जमींदार की ही है। तो क्या प्रजा-समितिका जुलूस उस रास्तेसे नहीं निकल सकता? यह

भी ह कि यदि धरम-करमको छोड़कर और कामोंका अधिकार नहीं है, तो जमींदारके लगानकी वसूली वहा कैसे होती ह? जब दरोगा या हाकिम आते हं, तो वहा जमघट क्या होता ह?"

देबू हरान रह गया। इतने ही दिनोंम इस युवकने इतनी खोज-बीन कर रखी ह। साथ ही-साथ उसके मनम एक सन्देह भी जागा। वह यह कि चण्डीमण्डप का स्वत्वाधिकार वास्तवमें एक समस्या है। वह जरा देर चुप रहा। बोला, "म आज आपकी बातका जवाब नहीं द पाया।"

अन्दरसे कुण्डी खटखटानेकी खुट-खुट् आवाज हुई। यतीन समझ गया, माँ बुला रही ह। उसने कहा, 'मा, मैं अभी नहीं आ सकता। तुम्हीं दे जाओ।

पदम खीज गयी—अजीब लडका ह यह।

देबूने हँसकर कहा, तुमसे शरम लग रही ह शायद?'

इसके बाद तो गये बिना चारा न रहा। लम्बा घूँघट काढ़कर पदम आयी और चायके दो प्याले रखकर चली गयी।

यतीनने फिर अपनी बातको आगे बढाया— जो भी चण्डीमण्डपम जाता है सबको यहा आता ह—यह मत करो, वह मत करो। लोग मान लेते ह्। बेचारे गरीब समझते नहीं। अपने पैसेसे थोड़ा-थोड़ा चौपने पक्का करा बनवा दिया ह इससे सर्वसाधारणका अधिकार तो बिक नहीं गया।'

देबू देर तक चुप रहकर बोला 'आखिर उपाय इसका क्या ह बताइए? श्रीहरि धनी आदमी ह। इस समय वह सारे गावका मालिक बन बैठा ह। जमींदार तकने उसे गुमाश्तागिरी दे रखी ह। आप कर क्या सकते हैं?'

यतीन हँसकर बोला 'मुझे क्या करना। मेरे तो करनेकी बात भी नहीं है। करना आपको होगा देबू बाबू। नहीं तो इस उतावलीसे आखिर म आपका इन्तजार क्या कर रहा था?'

देबू स्थिर आखों यतीनको देखता रहा। यतीन भी सामनेकी तरफ ताकता हुआ चुप हो रहा।

अचानक किसीने पुकारा—'बाबू!"

कौन? यतीन और देबूने पलटकर देखा, अन्दरके दरवाजेपर दुर्गा खड़ी थी।

देबूने हसकर कहा दुर्गा?

'हाँ।'

"क्या खबर ह?'

"लुहार-बहू पूछ रही है, चूल्हा सुलगायें या नहीं। रसोई-बसाई "

यतीनने कहा, "हाँ हाँ, चूल्हा सुलगानेको कह दो न।"

'क्या बनेगा?'

"कुछ भी बनानेको कह दो।"

अचरजसे दुर्गा बोली, 'बनानेका किसे कहूँ?'

'मासे कहो। या फिर तुम्हीं कुछ चढ़ा दो।'

मुँहमें कपड़ा डालकर दुर्गा हँसते-हँसते बेहाल हो गयी— आप कुछ पागल हैं बाबू!'

'क्या, इसमें बुराई क्या है? जो साफ़-सुथरा रहता है, उसके हाथका खाने-में कोई दोष नहीं। गुरुजीसे पूछ देखो। ठीक है न गुरुजी?'

देबूने हँसकर कहा 'जेलमें जो हम लोगोंकी रसोई पकाता था वह जातिका हाड़ी था।" यतीनकी तरफ देखते हुए बोला, "नाम अजीब था उसका— गान्धारी हाड़ी।"

यतीनने कहा, "द्रौपदी होता तो ठीक था। चलिए नदी नहाने चलें।" कुरता उतारकर उसने अँगोछा खींच लिया।

देबूने मन ही मन तै कर लिया था कि इसके पचड़ेमें अब नहीं पड़ूँगा। जेलसे यही मनसूबा करके निकला था। लेकिन यह यतीन उसके सब संकल्प उलट-पलट देनेको तैयार है।

घर जाकर उसने तेल लगाया, गमछा लिया और यतीनके साथ चुपचाप चल पड़ा। चण्डीमण्डपके निकट पहुँचते ही बूढ़े द्वारिका चौधरीसे भेंट हो गयी। हाथकी लाठी टुक-टुक करते हुए वे चण्डीमण्डपसे ही उतर आये और यतीनकी ओर देखकर पूछा, 'नहाने चले?'

यतीनने हँसकर कहा, "जी हाँ।"

'मैंने सुना है, आप तेल नहीं लगाते हैं?'

"जी नहीं!'

अच्छा नमस्कार!' थोड़ा झुककर बूढ़ेने नमस्कार किया।

यतीन हड़बड़ा-सा गया। बोला, 'न, न! यह क्या? आपको मैंने कितनी बार मना किया है। उम्रमें आप मुझसे "

चौधरी ही चौधरी धीमेसे हँसकर बोले, "ग्रामीणोंका बढ़िया अभी छोटी बात नहीं! क्या, आप ब्राह्मण हैं!"

"नहा नही ! यह सब आप लोगाके उस जमानेमें चलता था। वह जमाना अब लद गया।"

चौधरीके होठोंमें हँसी लगी ही रहती है। हँसकर उन्होने फिर कहा, "अब का जमाना बेशक नया ह भैया ! उस जमानेका अब कुछ भी न रहा। लेकिन मुसीबत तो यह ह कि उस जमानेके हम क जने इस जमानेमें रह गये ह।"

बूढेकी यह बात यतीनको बडी भली लगी। बोला, "अपने उस जमानेकी कहानी कहिए।"

कहानी ? हाँ उस जमानकी बात आज कहानी ही तो ह ! फिर उस पार जाकर जब बुजुर्गोसे भेंट होगी और आज जो देखकर जा रहे हैं, यह उनमे कहूँगे, तो उनके लिए यह कहानी ही होगी। उस समय गायके बियानेपर दूध बाँटा करते थे मछली पकडते तो मछली बाटते थे और पेडोंपर फल पकने तो फल बाटते क्रिया-करममें बरतन बाँटत थे, देवताकी प्रतिष्ठा करत थे गहके किनारे आम-कटहलका बगीचा लगाते थे, तालाब-पोखरा खुदवाते थे, गुरु ब्राह्मणको प्रणाम करते थे महापुरुष लोग ईश्वरके दर्शन करत थे—यह सब आप लोगोके लिए कहानी ह। और आज आसमानमें हवाई जहाज, पानीके नीचे पनडुब्बी बेतारस खबरका आना, रुपयेम दो सेर चावल, नयी-नयी बीमारी, देव-कीर्तिका लोप—सबके लोगोके लिए यह भी कहानी ही ह।"

'आपने पोखरा खुदवाया ह चौधरीजी ?"

' मेरा नसीब फूटा भया ! मरे सामने पिताजीने खुदवाया था म तब छोटा था, याद ह मुझे। एक टोकरा माटी ढोनेकी मजूरी दस गण्डा कौडी। एक आदमी कौडी लेकर बठा रहता था टोकरी गिन गिनकर कौडी देता। शामको वही कौडी गिनकर पसा देता।

धेला टोकरा कहिए।"

"हाँ !" हसकर चौधरीन कहा 'हमारा बात तो आप फिर भा समझ लेते ह, आप लोगोकी बात तो म समझ ही नही पाता ! अच्छा भया, यह इतना हगामा स्वदशीका बन्दूक पिस्तौल यह सब क्या करते ह ? अँगरेजोंके राजको तो हम सदासे रामराज कहते आये ह।

पलमें एक प्रदीप्त आभास यतीनकी आखें टार्च-सा जल उठी लेकिन वह चमक दूसरे ही क्षण बुझ गयी। हँसकर कहा "बम पिस्तौल मैंने नहीं देखी ह— लेकिन हगामा क्या हो रहा ह जानत ह ? इसलिए कि तालाब-पोखरा खुदाने वाले आप लोगोंके उस जमानेको व लोग नष्ट कर रहे ह।'

वृद्ध कुछ देर चुप रहकर बोले, "ठीक समझ नहीं पाया ! हाँ भई गुरुजी, आप ऐसे चुपचाप क्यों हैं ?"

चिंतित सा ही हँसकर देवूने कहा, "यों ही ।"

वृद्ध फिर कुछ देर चुप रहे । उसके बाद देवूसे बोले, "शामको एक बार आपके पास आऊँगा ।"

"मेरे पास ?"

'हाँ ! कुछ बात ह । आपके सिवा कहूँ भी किससे ?"

"असुविधा न हो तो अभी ही कहिए ! इसीके लिए फिर कष्ट करके आयेंगे ?" उत्कण्ठित होकर देवूने कहा ।

यतीनने कहा "न हो तो मैं अलग हो जाता हूँ जरा !"

"न, न !" चौधरीने कहा, 'देर हो गयी ह, इसलिए कह रहा था । इस उम्रमें अब मुझे छिपानेकी क्या बात ह ?" चौधरी हँस उठे—"आपने शायद सुना ह पण्डित ?"

"क्या, कहिए तो ?"

"गाजनकी बात ।"

"नहीं, कुछ तो नही सुना ह !"

"गाजनके भक्त लोग कहते हैं अबकी वे शिव नहीं बिठायेंगे ।"

'नही बिठायेंगे ? क्या ?"

"अरे हाँ, आप तो पिछली बार थे नहीं । उसी बारसे इसकी शुरुआत हुई ह । पिछली बार ठीक इसी गाजनके समय ही सेटलमेण्टकी खानापूरीमें शिवकी जमीन खो गयी ।"

'खो गयी !'

"जमीन्दारका नायब-गुमाश्ता उसे निकाल नहीं सका । निकाले भी क्या, पुरोहितकी जमीन खुद ही बन्दोबस्त कर ली ह । इसके अलावा शिवकी पूजाका सब मुकुन्द मण्डलके जिम्मे था । शिवोत्तर जमीनका उपभोग वही करता था । अब मुकुन्दके बापने उस जमीनको अपनी बताकर पता नहीं कब बेच दिया । लगान खारिजके मुल्कमें जमीदारने भी उसे दवोत्तर सम्पत्ति मान लिया । मुकुन्दको इतना कुछ मालूम नहीं था, वह बराबर शिव-पूजाका खर्चा जुगाता आता था । अब जरीबके समय जब पता चला कि शिवके नामकी जमीन ही नहीं ह तो उसने कहा जब जमीन ही नहीं ह तो मैं खर्च भी नहीं देनेका । पिछले साल चन्दा करके किसी तरह पूजा हुई । अबकी गाजनके भक्त कह रहे हैं एस माँग-जाँचकर पूजा हम नहीं करते । इसीलिए म श्रीहरिके पास यह

जाननेके लिए आया था कि पूजाका हो क्या रहा है ? मैं अभीतक जिन्दा हूँ। मेरे जीते जी ही गाजन बन्द हो जायेगा क्या भैया !"

'श्रीहरिने क्या कहा ?"

"जमींदारका पत्र दिखाया। जमीदार खर्च नहीं देंगे, पूजा बन्द हो तो हो।"

"हूँऽ !"

चौधरीने कहा "पिछले साल पातूने ढाक नहीं बजाया—उसने जमीन छोड़ दी है—लेकिन वर्जनिया होगा। अनिरुद्धने बलि नहीं दी। कहा, बकरी की महज टँगड़ी लेकर मैं यह काम नहीं करूँगा। अन्तमें उसी लँगड़े पुरोहितने बलि दी। अबकी उसने कह दिया है बलि करनेकी दक्षिणा लूँगा। बहुत तरह का झमेला खड़ा हो गया है। सबका उपाय रास्ता चलते तो नहीं होगा। इसीलिए शामको आनेको कह रहा था।"

देबू जैसे हाँफ उठा था। बोला, "मगर मैं इसका क्या कर सकता हूँ ?'

'यह बात आपके योग्य नहीं हुई गुरुजी ! आप जैसा विद्वान् अगर नहीं करेगा तो कौन करेगा ?"

देबू स्तब्ध हो गया।

चौधरी कालीपुरकी तरफ चल पड़े। देबू और यतीन बहार पार करके मयूराक्षी नदीमें उतरे। देबू चुपचाप ही नहाता रहा, चुपचाप ही लौटा। यतीनने दो एक बात कही भी, मगर जवाब नहीं मिला तो कविता गुनगुनाने लगा—

पास पड़े जो खोकर उनको फिरता प्राण गगन में
मुझे बुलाते ऐसे क्या तो बतला दूँ मनमें म
लगता मानो उस रजतल में
युगा युगा में था तणदल म

लौटकर यतीन बड़ी आफतमें पड़ा। मूर्च्छित होकर पद्म पानी-कादमें पड़ी थी आँगनमें। सिरके पास बैठी दुर्गा अकेली हवा कर रही थी। उसके भी सारे बदनमें कीचड़ लग गयी थी। उस कमरेके बरामदेमें नदीमें चूर अनिरुद्ध बैठा था। सिर छातीपर झुक आया था, मन ही-मन बुड़बुड़ा रहा था। रसोईका कोई लक्षण ही नहीं था।

दुर्गाने कहा 'आप लोग निकले कि लुहार-बहूने पागल-सी होकर मुझे कहा—निकल मेरे घरसे निकल जा तू ! मुझसे कुछ बातावाती हो गयी। मैं

घर जानेके लिए इधर निकली कि घड़ामसे आवाज हुई। पलटकर मैंने देखा, तो यही हालत! पानीके छींटे दिये, हवा की, कोई लाभ न हुआ। ज़रा देरमें अचानक अनिरुद्ध आया। थोड़ा बहुत शोर मचाया और बैठ गया। अब तो सिर ठुक आया है।"

देवूने अनिरुद्धको हिलाकर कहा, 'अनिरुद्ध!"

गरजकर अनिरुद्धने आँखें खोलीं—'ऐं!" लेकिन देवूको पहचानकर विनयके साथ कहा, "ओ, गुरुजी!'

"हाँ, सुनते हो?"

"अलबत्त! हजार बार सुनूँगा!" दूसरे ही क्षण वह हो हो करके रो पड़ा—'मेरा नसीब देखो गुरुजी, तुम मित्र हो अच्छे आदमी हो, गाँवके सिरताज हो, प्रातःस्मरणीय हो तुम—मेरी गत देखो! मैं राहका भिखारी हूँ! और उधर पदमकी हालत देख लो।"

"जगनको बुला लाओ अनिरुद्ध! डॉक्टरको बुलाओ!"

बड़ी कठिन आवाज़में अनिरुद्धने कहा, "डॉक्टर क्या करेगा भया, यह साले छिरूकी करतूत है। मेरी गुप्ती कहाँ है? मैं सालेका खून करूँगा। और तुम दुर्गाका! पद्मका! दुर्गा मुझे अपने घर नहीं जाने देती है गुरुजी! ठीकसे मुझसे बात नहीं करती। "

उसके बाद उसने भद्दी गालियाँ बकनी शुरू कर दीं। दुर्गा सिर झुकाये चुपचाप बैठी रही।

देवूने कहा "यतीन बाबू चलिए! मेरे ही यहाँ थोड़ा-सा भोजन कर लीजिएगा। न होगा, हम लोग ही जगनको बुला देंगे।'

देवू और यतीनके चले जाते ही अनिरुद्धने ज़ोरसे कहना शुरू कर दिया—"और उस नज़रबन्द छोकरेको काटूँगा। उसीका पहले काटूँगा। उसी कमबख्त ने मेरे घरको "

दुर्गा इस बार तमक उठी— सुनो कमार, अच्छा नहीं होगा—कहे देती हूँ!'

अनिरुद्धने चौखटके ऊपर बेरहमीसे सिर पीटना शुरू किया—"ले यह ले।" दुर्गाने उसे मना तक नहीं किया।

बीस

फागुन आठ, चैत का आठ।
फिर तो तिल दाव से काट।

फागुनके दूसरे सप्ताहमें चैतके पहले सप्ताह तकमें तिल पकनेपर फसल जोरोंकी होती है, वह फसल दावके सिवा हँसियासे नहीं काटी जा सकती। इस बार तिल देरसे लगा, अभी अभी फूलना शुरू किया है, वैशाखका पहला हफ्ता हो जायेगा पकते-पकते। लिहाजा फसल होगी नहीं।

देबू सवेरे धरती खेतकी देखभाल कर घूमता हुआ लौट रहा था। इस साल माघसे ही बारिश नहीं हुई। बारिश नहीं होनेसे कोई ऊख नहीं लगा सका। मयूराक्षीकी धारा बिल्कुल दुबली होकर जंक्शन शहरसे सटकर उस पार बह रही थी। बांध बनाकर पानी इधर लाया जा सकता तो खेती हो सकती थी। लेकिन यह बाँध बाँधना बड़ा कष्टकर है। मयूराक्षीके फाटम इस पारसे उस पार तक बांध बांधना होगा। कमसे कम चार पाँच हाथ ऊँचा हुए बिना काम नहीं चलेगा। इतना ऊँचा कौन करेगा? चार पाँच गाँवोंके लोगोंके जुटे बिना यह सम्भव नहीं। इस समय ऊख लग जानेसे अक्षय हो जाता, वर्षा आते-आते दो हाथ न सही डेढ़ हाथ तक ऊँचा तो हो ही जाता वह। परवल भी नहीं रोपा गया। परवल रोप फगुना फल लगता है दुगुना। लेकिन श्रीहरि ने सब कुछ लगा लिया। उसने दो-तीन कच्चे कुएँ खुदवा लिए और लाठा चलाकर सिंचाईका इन्तजाम किया। उसीके कुएँसे पानी लेकर भवेश हरीशने भी काम चला लिया।

देबू एक कुआँ खुदवानेकी सोच रहा था। परवल न सही ऊख लगाये बिना काम कैसे चलेगा? घरमें गुड़ नहीं रहनेसे चलता है भला? मयूराक्षीके चौरमें थोड़ा ही खोदनेसे पानी मिलेगा, आठ-दस हाथ खोदनेसे ही काम बन जायेगा। पन्द्रह एक रुपयेका खर्च है। लेकिन इधर बिल्कुल पासकी सारी पूँजी चुक गयी है। बल्कि कर्ज हो गया है। श्रीहरिकी स्त्रीने छिपाकर उधार दिया है। दुर्गाकी मारफत दूकानका भी कुछ उधार हो गया है। धानकी फसल इस बार अच्छी नहीं हुई। जो मौजूद है, उसे बेचनेकी हिम्मत नहीं होती, वर्षा आ रही है, खेतीका खर्चा है, गृहस्थीका खर्चा—बहुत भार है! जौ-गेहूँ भी अच्छा नहीं हुआ। गेहूँ डेढ़ मन है, जौ महज तीस सेर। उड़द जितना है, उसमें घर-खर्च ही चलेगा। स्कूलकी नौकरी रही नहीं, महीने-महीने तनख्वा

जो ठिकाना था वह भी नहीं रहा। अब करे तो क्या ? मगर सारा गाँव हजारों समस्याएँ लेकर उसीको खीच रहा है। यतीनकी बात याद आयी, चौधरीकी बातका स्मरण हो आया।

गाँवमें घुसते ही भूपालसे मुलाकात हो गयी। कन्धेपर चौकीदारवाली पेटी रखकर वह सवेरे ही निकला था। भूपालने प्रणाम किया—"पा लागी !"

प्रति-नमस्कार करके देवू चला जा रहा था। भूपालने विनयके साथ कहा, "गुरुजी !"

"मुझसे कुछ कह रहे हो ?"

"जी ! घरपर गया था। लौटा आ रहा हूँ।"

"क्या कहना है, कहो !"

"जी लगान और यूनियन बोर्डका टैक्स !"

"दे दूँगा !"

भूपालने खुश होकर कहा, "यह रही आदमी जैसी बात ! सो नहीं, डाक्टर बाबू तो मुँह मारने दौड़े ! घोपाल बाबूने कह दिया, जा, नहीं देता ! दूसरे सब घरमें छिप गये, औरत बच्चोंने कह दिया घरमें नहीं हैं। और इधर मैं गाली सुनता हूँ।"

देवूने कहा, "नहीं रहनेपर ही आदमीको चोर बनना पड़ता है, भूपाल !"

"यह तो आपने बिलकुल सही कहा बाबूजी !"

भूपालने दीर्घ निःश्वासके साथ कहा "किसीके भी घरमें अब क्या है ? सारी यहाँकी फसल तो घोष बाबूके यहाँ चली आयी। बरसातका लिया धान देनेमें ही तो सब साफ हो गया। कोई दे तो कैसे ? मगर मैं ही क्या करूँ ? मेरी नौकरी ही मौतकी है।"

घर लौटनेपर देवूने देखा—बिलू उसके लिए चाय तैयार करके बैठी है। वह चकित हो गया। यह क्या !

बिलूने शरमाकर कहा, "देखो तो बनी या नहीं। लुहार-बहूसे पूछ आयी। यह नजरबन्दकी चाय बनाती है न !"

"वह तो हुआ। मगर चाय बनानेको किसने कहा ?"

"तुमने ही तो कहा, जेलमें नजरबन्दोंके साथ रोज चाय पीते थे।"

"हाँ, सो तो पीता था मगर इसीलिए अभी भी पीना होगी, इसके क्या मानी ? न ज्यादा खर्च अब मत बढ़ाओ बिलू !"

"अच्छा ! एक पैकेट मँगवाया है उसे खत्म कर लो, फिर मत पीना।"

"एक पैकेट मँगवाया है !"

'कल शामको दुर्गाने ला दिया है।"

देबूके जीमें आया, चायका प्याला लुढ़का दे। लेकिन बिलूको चोट पहुँचेगी, यह सोचकर वैसा नहीं किया। कहा, "आज तो बना ली, लेकिन कलसे मत बनाना। चायके इस पैकेटको रहने दो, अच्छी तरह्से लपेटकर रख दो, कभी कोई सज्जन आयें जायें तो, या पानी बूँदी सर्दी होनेपर, काम आयेगी।"

"नहीं।"

देबूने हैरतमें आकर पूछा, "मतलब?"

"तुम्हें तकलीफ होगी।"

'मुझे तकलीफ नहीं होगी।'

'होगी मैं जानती हूँ।'

"अजीब है। खीझ और विस्मयसे देबूने कहा, 'मुझे तकलीफ होगी कि नहीं यह मैं नहीं जानूंगा, तुम जानोगी।'

'ठीक है। नहीं बनाऊँगी।' क्षण भरमें बिलूकी दोनों आँखें भर आयीं। और तुरत वह मुँह फेरकर चली गयी।

देबूने दीर्घ निःश्वास छोड़ा। उन दोनोंके जीवनमें शायद यही पहला द्वंद्व था। बिलूके मनको दुखानेका दुःख देबूके मनमें बहुत गहरा हुआ।

"मालिक।' देबूका हलवाहा आकर खड़ा हुआ।

'क्या है रे?"

"जी, अब तो एक कुदाली हुए बिना नहीं चलेगा।"

'नयी चाहिए। मरम्मत करानेसे नहीं होगा?'

'जी नहीं। पिछले ही साल चाहिए था। आप थे नहीं, इसलिए लोहा चढ़ाकर किसी तरह काम चलाया। घिसकर इत्ती-सी हो गयी है। खाद भी पलटाई नहीं जा रही है।"

'खाद काट रहे हो? पानी दे रहे हो न? चलो देखूँ तो।'

खाद तैयार करनेके गढ़ेमें अनाम ऊपरके नये कूड़े-कचरेको नीचे डालकर, नीचेके सड़े कचरेको जो खाद बन चुका होता है, ऊपर कर देनेका नियम है। ऊपरसे घड़ा घड़ा पानी देना पड़ता है। देबूके यहाँकी खाद किसी तरह पलटी गयी थी। हलवाहेने उसे कुदाली दिखायी। सच ही वह घिसकर छोटी हो गयी थी। उससे खेतीका काम नहीं हो सकता। खेतीके लिए वज़नी और बड़ी कुदाली चाहिए। उस समयके मज़बूत खेतिहर जो कुदाली चलाया करते थे, उसका वज़न पाँच सेरसे कम नहीं होता, सात आठ सेरके वज़नकी कुदाली चलानेवाले किसान भी अनेक थे।

देवूने कहा, "खर, कुदाली बनवा लोगे कि खरीदोगे ?"

"खरीदी हुई कुदाली ठीक नहीं होती, सस्ती जरूर होगी।"

"मगर बनानेवाला लुहार कहाँ है ? अनिरुद्धने तो काम ही छोड दिया है। दूसरे जिस लुहारको भी दोगे, कल देनेकी कहकर भी दो महीने लगा देगा।"

"तो फिर खरीद ही लूँगा। सन चाहिए हलकी जातके लिए। घोरई कह रहा था—गयाकी पगहिया भी टूट गयी है।"

एक काम मिल गया, इसस देवूको खुशी हुई। सनसे डोरी बनानेका काम। गाव घरमें यह निकम्मोंका काम है। बूढोंका काम ! वह उसी वक्त सन ले आया। डोरी बाँटते हुए सोचने लगा, 'करें क्या ?"

कुछ देर बाद हलवाहा फिर आकर खडा हुआ—"एक बात और कहनी थी मालिक !"

"क्या, कहो ?"

"मुहल्लेके लोग आपके पास आयेंगे। उन्होंने मुझसे कहा है आपको पहले कह रखूँ मैं।"

"क्या, बात क्या है ?'

"जी, बात यह है कि चण्डीमण्डपकी छौनाम हम सब बगार देते है। सो, इस बार डॉक्टर बाबू, घोषाल—सबने मिलकर समिति बनायी है। वे कहते है, तुम लोग मजदूरी लेना। बगार क्यों दोगे ? चण्डीमण्डप जमीदारका है, जमीदार को पैसा देना होगा।"

देवू चुप ही रहा। परका धन्धा लिये यह डोरी बँटता हुआ अपने भविष्य-की सोच रहा था। सोच रहा था कि एक दूकान करेगा, साथ ही अच्छी तरहसे खेती-बारी भी। और जरूरत पडनेपर हल लेकर स्वयं जुताई भी करेगा, कुछ किये बिना गिरस्ती चलेगी कैसे ?

हलवाहेने फिर कहा, हम लोग बड़ा सोच रहे है। डाक्टर बाबूने क्या नहीं कहा कि चण्डीमण्डपमें जमीदारकी कचहरी बैठती है, अब लोगोंकी बैठकी जमती है—तुम लोगोंसे चण्डीमण्डपका क्या सम्बन्ध ? मुफ्तमें क्या खटोगे तुम ? और उधर घोष बाबू लगातार आदमी भेज रहे हैं कि फटपट बगार दे रहे हो। घोष बाबू गाँवके सिरमौर हैं, फिर अब तो गुमाश्ता भी बन गये हैं। उनकी बात कैसे टाली जाये ! और फिर ग्राम देवताकी बात ! इसीलिए सबने आपके पास आनेकी सोची है—गुरुजी जो कहेंगे, वही सिर आँखोंपर !

देवूका जी टाल वालेकी तरह ही हाँफ उठा।

जरा देर इन्तजार करके हलवाहेने कहा, 'मालिक !

"मैं अभी कोई जवाब नहीं दे पा रहा हूँ, लाटन !"

"आप जो भी कहेंगे, हम लोग वही करेंगे—यह हम लोगोने तय कर लिया है।"

वह चला गया। देबूका ढेरा हाथमें अचल हो गया। वह सामनेकी ओर ताकता रह गया।

चण्डामण्डपमें लोगोंकी हलचल थी। लगानकी वसूली चल रही थी। साथ ही श्रीहरिका बकाया भी वसूला जा रहा था। आखिरी किस्त। सालका अन्त। तमादीवालोंपर नालिश होगी। श्रीहरिके धानका बकाया चुकानेके बाद जो बचेगा, वह अगले साल तक चलेगा। जिसकी वसूली नहीं होगी उसका मूल सूद दोनों मिलाकर अगले सालके लिए असल होगा।

श्रीहरिके गुहालोंकी छौनी चल रही थी। छप्परपर छौनीवाले मजूरे काम कर रहे थे। खेतिहरोंका छौनी छप्पर लगभग हो चुका था। वे सब अपने-अपने हलवाहे चरवाहेसे यह काम करा लेते। देबूके लिए भी यह काम अनजाना न था। मगर गुरुगिरी शुरू करनेके बादसे उसने यह काम नहीं किया। लेकिन अबकी करना होगा। उसके घरका छप्पर अभीतक छवाया नहीं गया था। उसने एक लम्बी उसास ली।

"सलाम गुरुजी !" दो तीन जनोंके साथ पकार दच्छू शेख उधरसे जा रहा था। देबूको देखकर सलाम करके खड़ा हो गया। उसके साथियोंने भी सलाम किया।

"सलाम ! कुशलसे तो हो शेख ? और तुम लोग सब अच्छे हो ?"

"जी ! और आप तो खैरियतसे रहे ?"

"हाँ !"

"हम सबने तो हजार बार आपको सलाम किया है। मर्द हैं आप ! मसजिदमें बराबर आपका जिक्र आता है। मन्नू मियाँ खातिब साहब, गुलाम मिरजा एक दिन आपसे मुलाकात करने आयेंगे।"

देबूने प्रसंगको बदल दिया— "किधर चले थे ?"

"यहीं आया था। किसनका बरस है न ! कुछ लोग गाय-बकरा बेचेंगे। यह मेरा खरीद बिक्रीका गाँव है। रुपया पैसा लेकर आया था। खरीदना तो अब लगभग उठ ही गया है। खरीदनेवाले रहे नहीं। आपका तो एक बैल बूढ़ा हो गया है गुरुजी—आप एक बैल खरीदिए न !"

"अबकी तो मुश्किल है भाई!"

"आप लीजिए तो सही। बूढ़ा बैल मुझे दे दीजिए। जो पैसे बाकी रह जायेंगे, मुझे बादमें दीजिएगा। वह न हो, तो कुछ धान दे दीजिए। धान लेनेवाले मेरे साथ हैं।"

देवू हँसा—"अभी रहने दो।"

"ख़ैर, छोड़िए!"

इच्छू और उसके साथी सलाम करके चले गये। इच्छू पक्का व्यापारी है। लोगोंको जब रुपयेकी ज़रूरत होती है, तब वह रुपये लेकर पहुँच ही जाता है। किसके यहाँ कौन-सी कीमती चीज़ है इसका उसे ख़ूब पता होता है। लेकिन यह मन्नू मियाँ, सादिक साहब, गुलाम मिरज़ा उससे क्यों मिलने आयेंगे? मन-ही-मन उसे थोड़ी परेशानी सी हुई। ये सभी सम्भ्रान्त व्यक्ति हैं—बड़े सेठिहर, व्यापारी हैं।

चरवाहा लड़का मुन्नेको लाकर देवूके पास बठाते हुए बोला 'आप इसे ज़रा सम्हालें मालिक! छोड़ ही नहीं रहा है। मेरे साथ गोरू चराने जायेगा।"

छोकरा ही ही करके हँसकर मुन्नेसे बोला, 'बाबूजीके पास पढ़ो लिखो। गोरू चराने नहीं जाते। छि!'

देवूने आग्रहके साथ मुन्नेको गोदीमें उठा लिया। मुन्ना भी वैसा ही था, जिन्होंने उसे अच्छी तालीम दी है। उसने गम्भीर होकर बोलना शुरू कर दिया—"क-ख ग-घ। क-ल घ-ल!'

"क्या हो रहा है गुरुजी?' कहते हुए अनिरुद्ध आकर बैठ गया। अभी वह आपमें था। मुँहसे ताड़ीकी बास बहुत बू आ रही थी, मगर नशेमें नहीं था। हाथमें ताड़ीका घड़ा था एक।

हँसकर मुन्नेने कहा, 'हाय आ गया अन्नी भाई!'

अनिरुद्धने भाई शरम नहीं महसूस की। हँसकर बोला, "कल ज़रा ज्यादा हो गयी थी।"

देवूने कहा, 'छि अन्नी भाई! छि!"

अनिरुद्ध कुछ देर तक चुप हो रहा। उसके बाद अकस्मात ज़रा हँसकर बोला "यह तुम क्या समझोगे देवू भाई! उसका रस तुम्हें नहीं मिला है—तुम नहीं समझोगे।'

देबूने चिढ़कर कहा, "तुम्हारी जमीन नीलामपर चढ़ी है या कि नीलाम हो गया, घरमें स्त्री बीमार और तुम शराब पीते फिरते हो, पैसे बरबाद करते हो।"

"पैसे अब ज्यादा बरबाद नहीं करता मैं, अब हँड़िया[1] चलता है। अभी मैं तुमसे जमीन नीलामीकी बात ही कहने आया हूँ। स्त्रीकी बीमारी और कितनी भोगूँ—कहो?"

'ऐसे तो तुम थे नहीं अनी भाई?"

'क्या मालूम? शराब तो मैं बराबर थोड़ी-बहुत पीता हूँ। इसमें अन्याय तो कुछ नहीं समझता।"

'नहीं समझते! मौरूसी पेशा बन्द कर दिया। नीचोंकी तरह हँड़िया पीना शुरू कर दिया है। जहाँ-तहाँ पीते हो, पड़े रहते हो।"

'आखिर करूँ भी तो क्या? अभी लुहारका दाव, उस्तरा, गुप्ती खरीदता कौन है? कुदाली कुल्हाड़ी, फाल भी अब बाजारमें मिलते है—सस्ते मिलते हैं। गाँवमें काम करो तो साले धान नहीं देते! क्या करूँ? और हँड़ियाकी कहते हो? पैसा नहीं है तो क्या करूँ?"

'क्या करोगे? तुम्हारी समझ भी जाती रही है अनी भाई!'

'क्या जाने!'

"तुम दुर्गाके यहाँ खाते हो? वहीं रात बिताते हो?"

'दुर्गाका नाम न लो गुरुजी! नमकहराम है वह पाजी है शैतानकी बच्ची! मुझे अब अपने घर नहीं जाने देती।"

अनिरुद्धकी इस निर्लज्ज स्वीकारोक्तिसे देबू चुप हो गया। अनिरुद्ध कहता ही गया—"मालूम है गुरुजी दुर्गाके लिए मैं अपनी जान तक दे सकता था। अभी भी दे सकता हूँ। उसीने मुझे अपनसे बुलाया था। उस समय मेरी स्त्री पागल हो गयी थी। झूठ नहीं कहूँगा उस समय दुर्गाने मेरी स्त्रीकी सेवा भी की थी रुपये-पैसे भी दिये थे। दरोगासे कभी उसे आशनाई थी उससे कहकर उसने मेरे कमरको किरायेपर लगवा दिया। महीनेमें दस रुपया। किन्तु सब उसकी नजरका नशा है। जब जो जँच जाये। अब उस जमींदारपर उसकी निगाह है।'

'छि अनिरुद्ध छि!"

"मैं यतीन बाबूको दोष नहीं देता। भले घरका है भला है। पद्मको माँ

[1] भात सड़ाकर बननेवाली शराब।

कहता हूँ। मैंने परगा-देना है। पर जाने दो इन सब बातोंको। दुनी भाड़में जाये। अभी मैं जो कहने आया हूँ, सुनो। बकाया लगानकी डिग्री हो गयी है, मेरी जमीन अब नीलाम होगी। इस झंझटको मैं अब रखूँगा भी नहीं। वेचकर जो भी मिल जाये। तुम्हें भैया, देख-जाँचकर इसे बेच देना है।'

"बेच दोगे?" देबूके आश्चर्यका ठिकाना न रहा।

'हाँ! लगान चुकाकर जो मिले।"

'उसके बाद?"

'सो जो होगा, करूँगा। छिरु गुमाश्ताको मैं लगान नहीं दूँगा।"

'पागलपन मत करो अनी भाई!'

'पागल! तो फिर रहे, खेत मेंत ही नीलाम हो जाये। मेरे लिये कुछ न होगा।"

किसी तरह बाकी लगानकी रकम जुटा लो। या कि लगानके रुपयेके परिमाण भर जमीन बेच डालो, या कहीं उधार मिल सके, तो वैसी कोशिश करो।"

थोड़ी देर चुप रहनेके बाद अनिरुद्धने कहा, 'देबू भाई, बाप दादोंकी जमीन छोड़ दूँगा—यह सोचकर कलेजा फट जाता है। जानते हो गुरुजी वह चार बीघा जो धोकर है, मेरे दादाने उसमें इसके सात टुकड़े थे—दादाने काट-कूटकर इसके तीन खेत बनाये थे। पिताजीने तीनके दो बनाये। साढ़े तीन बीघा धोकर और दस कट्ठेका एक टुकड़ा। और उन दोको काटकर मैंने एक धोकर बनाया।'

उसकी आसक्ति टपक-टपक कर आँसूकी कुछ बड़ी-बड़ी बूँदें टपक पड़ीं।

उसकी पीठपर हाथ फेरते हुए देबूने कहा "राजी मन करो भाई! तुम समर्थ हो मर्द हो! मन लगाकर काम करो तो तुम्हें बाईं कमी न रहेगी।'

अजाब ढंगसे हँसकर अनिरुद्धने कहा, 'हजार मन लगाकर काम करनेपर भी लुहारका काम करके अब अभाव दूर नहीं होगा गुरुजी! एक ही उपाय है—मशीनपर काम करना। अब वही देखूँगा। तुमने एक बार सुझाव कहा था मैंने ध्यान नहीं दिया। वैसाव लुहारका बेटा, हिन्दू लुहारका पोता—मैं कारखानेका कुली बनूँगा? विलायत किसी जातिके मिस्त्रियोंका तावेदार बनूँगा? जानते हो देबू मैं ऐसा दाव कर सकता हूँ कि एक ही चोटमें बाघकी गरदन कट गिरे!'

अनिरुद्धको शान्त करनेकी ही नीयतसे देबूने मजाक करके कहा, "यही

तो तुम्हारी भूल है अन्नी भाई ! वह दाव लेकर कोई करेगा क्या—कहो ? बापको काटने कौन जायेगा ?"

अनिरुद्ध अबकी हँस पड़ा।

देबूने कहा "मिले तो रुपये उधार लो अन्नी भाई ! जमीनको बचाना ही पड़ेगा। उसके बाद मन लगाकर काम काज करो। कारखाना—तो वही काम करो फिलहाल। हर्ज क्या है ?'

बड़ी देर तक चुप रहकर अनिरुद्धने कहा, "तुम कह रहे हो यह !" फिर थोड़ी देर चुप रहकर बोला 'अच्छा यही देखता हूँ।"

अनिरुद्ध निकला। लेकिन घर नहीं गया। घर उसे अच्छा नहीं लगता। पदम उसे नहीं चाहती वह भी पद्मको नहीं चाहता। चरित्रवान तो वह कभी नहीं रहा लेकिन पदमके लिए प्यारकी कभी उसमें कमी नहीं थी। चरित्र हीनताका व्यभिचार उसकी वासना-तमिका एक भाग भर था—उन्मत्त देह लालसाकी आगसे निवृत्तिके लिए कीचड़में नहाने-जैसा। अचानक कहींसे जीवनमें एक दुर्योग आया उसने सब बिगाड़ दिया। इसी दुर्दिनमें दुर्गा मोहिनी बनकर सामने आयी केवल मोहिनी बनकर ही नहीं, उसने अपार प्यार भी दिया था। सेवा जतन यहाँतक कि अपनी पार्थिव सम्पत्ति भी उसने उँड़ेल देनी चाही थी, कुछ दी भी थी।

इसके सिवा सायका जो सुख दुर्गाने दिया अपना तन्दुरुस्त शरीर, परिपूर्ण यौवन लेकर भी पदम वह सुख नहीं दे सकी। उसकी छातीपर लटकता है एक मोटा तावीज उससे अनिरुद्धको सदा कष्ट होता रहा है। आचार विचार तीज-त्योहार सब पालनेके झोंकमें, पवित्रताका जरूरतसे ज्यादा खयाल ! अनिरुद्ध को पदमने सदा अछूत-सा दूर दूर रखा। उसके प्यारके आदरकी अधिकता ममताकी अवलतान अनिरुद्धको पीड़ा पहुँचायी। सकोचहीन अधीरतासे वह दुर्गा की नाई उसके कलेजमें कूद नहीं सकी कभी। तमाम दिन जलती भट्ठीके सामने सारा बदन झुलसाकर घर लौटनेपर थोड़ी थोड़ी शराब वह पाता था पर वसा तन मन लिये पदमके सामने खड़े होते ही उसका सारा नशा ठण्डा पड़ जाता था।

दुर्गामें आग पानी दोनो है। एक ही साथ जलाने और जुड़ानेका उपादान ! उसकी जवानीमें है आवेगमयी नारीका गरम स्वाद !—उसने अनिरुद्धको पागल कर दिया है। उसके प्यारमें सब कुछ स्वाहा कर देनकी एक उद्दाम लालसा है। अपना लुहारखाना ठप पड़ जानेपर निकम्मे अनिरुद्धने उस भयंकर अलस उदासीसे बचनेके लिए जब सस्ती शराबकी लत पकड़ी, तभी दुर्गा आक्रोश भर मनसे छिरूको छोड़कर आग्रहपूर्वक अनिरुद्धके साथ हो गयी था। अनिरुद्धने भा

सम्पूर्णतया अपनेको उसके हाथों सौंप दिया। लेकिन दुर्गा सहसा एक दिन उसे छोड़कर खिसक गयी—नयेके मोहमें। वह आग और मरीचिका दोनों है—पाषाणी, विश्वासघातिनी, मायाविनी!

एकाएक वह चौंका—यह क्या? अनमना-सा चलते-चलते वह मोची-टोलेमें दुर्गाके घरके सामने आ पहुँचा था। दुर्गा आँगनमें दूध नाप रही थी, रोज़ जहाँ देती है वहाँ देने जायेगी।

वह लौट आया। जल्दीसे टोलेको पार करके वह बहारके किनारे जा खड़ा हुआ। दुर्गाने जब उसे छोड़ दिया है, तो वही उसके पीछे क्यों डोलता फिरेगा? वह भी उसे छोड़ देगा। दबूने उससे ठीक ही कहा है। अब वह समझ रहा है कि उसमें कितना परिवर्तन आ गया है। छि छि! केशव लुहारका बेटा हिन्नू लुहारका पोता, वह क्या महज़ एक जूठी कायाको चाटनेके लालचमें और दो चार रुपये मिलनेकी आशामें एक मोची स्त्रीके घर पड़ा रहेगा! छि, वह समरथ मर्द है न! एक नामी कारीगर!!

दूसरे ही क्षण वह हँसा। लुहार कारीगरका न तो अब मान रहा न नाम। मार आनेकी विलायती छूरीसे ही नामकी गरदन चाक हो गयी। उसने एक लम्बा निःश्वास छोड़ा। खैर, नाम जाये मान भी जाये, जान भर बच पाये चावलकी मिल तेलमिलमें नट-बोल्टू कसकर हथौड़ा ठोककर मिस्त्री होकर ही ज़िन्दा रहेगा। ज़मीनको भी बचाना पड़ेगा। दादाने एड़ी चोटीका पसीना एक करके अपने हाथों तैयार की थी यह ज़मीन पिताजीकी बनायी हुई अपने हाथों काट-कर बनाया था यह खेत उजान—मानका खेत लक्ष्मी है अन्नपूर्णा!

सुद-प-कुल मूनी बहारसे होना हुई उसकी आँखें अपनी चार बीघा धाधर ज़मीनपर जा अटकीं। वह चलने लगा आकर अपने खेतकी मेड़पर बैठा। मेड़ पर बबूलका एक पेड़ था। इस पेड़को उसके दादाने लगाया था। बचपनमें उसका बाप खेती करता था—वह अपने बाप और हलवाहेके लिए कलेवा लेकर आता था, आकर इसी पेड़के नीचे बैठता था। बुगारके बाद जाने कितनी बार यहाँ आकर उसने मकबक साथ क्या खाया है। लक्ष्मा-पूजाम, नव-न्याहारमें इसीके धानके चावलका अन्न हुआ है गुड़ और नमक मिलाकर इसी बथुएकी चटनी बनी है। बहुत देर तक अनिरुद्ध बैठा रहा फिर सकल्पके साथ उठा मक्खको वह ज़रूर बचायगा।

वह अँगुलिया गाँवके बाबूजी गोबरोंके पास चला। फेकाराम चौधरी, काना स्कूलका मास्टर, वह मूनरके रुपये लगाया करता था। चूँकि सूझका दर ऊँची और सगाई बहुत कड़ा था, इसलिए बहुत-से लोग उसे बावली कहते थे।

बहुतेरे उसे अजगर कहते। उसके ग्रासमें पड जानेपर छूटना मुश्किल होता है। बहुतेरे 'खूनी' कहते। एक बार एक चोरको पकडकर चौधरीने उसका खून कर दिया था। धरती जमीनके लिए चौधरीकी भूख प्रचण्ड थी। जायदाद अच्छी होनेपर चौधरी जरूर रुपया देगा। वह उसीके पास चला।

चौधरी पढा लिखा आदमी है—बी० ए० पास। इधर संस्कृतका भी कोई इम्तहान दिया है। स्कूलमें हेड पण्डित हैं। मगर दरअसल है वह अव्वल दर्जेका हिसाबी। सूद जोडनेके लिए उसे कागज-कलमकी जरूरत नहीं पडती। चक्रवृद्धि दरसे दस-बीस सालका ब्याज वह जबानी ही जोड देता है। लेकिन ब्याजको असलमें बदलकर वसूलीके समय बातचीतमें संस्कृतके दो चार श्लोक सुनाकर आँकडोंको रसमय या पारमार्थिक तत्त्वसे मण्डित कर देता है।

अनिरुद्धने कहा, "मैं समयपर कर्ज चुका दूँगा चौधरीजी। मैं धोखेबाज नहीं हूँ कि भागता फिरूँ, भेंट नहीं करूँ। मेरा ऐसा स्वभाव नहीं है।"

चौधरी हँसा—' धोखा देनेका उपाय नहीं है भया। और भागकर जायेगा भी कहाँ?' इतना कहकर उसने एक श्लोक पढ दिया—'गिरौ कलापी गगने च मेघो लक्षान्तरेऽर्क सलिले च पद्मम। समझा अनिरुद्ध, मेघ रहता है आसमान में और मोर रहता है पहाडपर, बहुत दूर। लेकिन मेघके निकलते ही मोरको आकर पूँछ उठाकर नाचना ही पडता है। और सूरज रहता है आकाशमें, पानी में रहती है कमलकी कली। सूरज उगा नहीं कि कमलको पंखडियाँ बिखेरनी ही पडती है। महाजन और कर्जदारका सम्बन्ध हो जानेपर कहीं क्या न रहे, हाजिर होना ही पडेगा। भागेगा कहाँ?

अनिरुद्धने अच्छी तरहसे समझा नहीं चुपचाप दाँत निपोरकर हँसा सिर्फ। उनकी बातें बडी रसीली थी।

चौधरीने जबानी हिसाब लगाया—' बीघा पीछे चालीस रुपये दससे तीन सालमें चालीसके साठ हो जायेंगे। ऊपरसे अगर नालिशका खर्चा जोडा जाये तो महाजनका क्या रहेगा बता? और कहाँ कर्जदार लगान बाकी रखता जाये, तब तो मुझे राजा रघुकी तरह मटकेमें पानी पीना पडेगा।'

अनिरुद्धने उसका पाँव पकडकर कहा जी, आपके पैर छूकर कहता हूँ, एक ही सालमें मैं सब रुपये चुका दूँगा।

अपना पर खींचकर चौधरीने कहा मेरा पैर मत पकड अनिरुद्ध पैरोंकी बिवाईसे तेरा हाथ मुँह नोच जायगा, [illegible]।" चौधरीने झूठ नहीं कहा। चौधरी के पाँवमें बरसात चाहे किसी रागसे हो चाहे किसी तत्त्वकी कमीसे बारहों महीने बिवाई पडी रहती है। सर्दियोंमें व लाल हो उठती है। सबसे भयंकर हैं

तलवेकी बिवाई। सूखा सरत चमडा छुरी-सा पना है। चौधरीने पैर छुडाकर दिलासा देकर कहा, "मगर साल ही भरमें चुका देना है तो चारके बदले दस ही बीघे बन्धक रखनेमें क्या उज्र है? महज कागजमें लिखा रहेगा, और क्या।"

अनिरुद्ध चुप रहा। वह शरीरकी गतिकी सोच रहा था, देवताकी गति यानी बारिश-सूखेकी सोच रहा था।

"डर मत!"—उसके मनके भावको भापकर चौधरीने कहा, "साल भरम चुका, चाहे पाच सालमें, म तुझे मरने नही दूँगा। ब्याज मैं बाकी नही छोडता, छोडूँगा भी नही। बाकी रहेगा तो मूल ही। उसमें बेईमानी करेगा तो ब्राह्मणका गण्डुदा!" चौधरी हँसने लगा।

अनिरुद्धने कहा "सूद आपको हर महीने मिलेगा।"

'ठीक?'

"आपके पाँव छूकर तीन सत्य करता हूँ!"

"तो तू तीन दिनके बाद आना। म जरा खोज पूछ कर लूँ।"

"खोज-पूछ? खोज-पूछ क्या करेंगे?"

"यही कि और तो कही बन्धक बन्धक नही रखा है।"

"आपके चरण छूकर कहता हूँ"

चौधरीने कहा, "अब इन चरणोंको मुझे छोकपर रख देना होगा। उसमें तुम्हारा ही बुरा होगा। रजिस्ट्री आफ़िस नही जा सकूँगा और तुझे भी रुपया नही मिलेगा। खोज-पूछ किये बिना म किसीको रुपया नही देता, दूँगा भी नही।"

अनिरुद्ध फिर भी न्हा उठा। एक मदि परदेसीको अचानक प्रियजनकी याद पर जानेस घर लौटनकी जसी बेकली जगती है अनिरुद्धको आज वसी ही व्याकुलता जागी थी—फिरसे अपन उसी सयत सुखी गृहस्थ जीवनमें लौट जानेकी। लौटनेका पाथेय चाहिए उसे। चार सालका बाकी लगान सोलह पचीस रुपया दस आनाके हिसाबसे कुल एक सौ रुपये आठ आने चवन्नी ब्याज, पचीस रुपया दस आना—कुल एक सौ अठारह दो आना। खर्चा जोडकर एक सौ चालीस या पचास। दो सौ ही रख लो। एक सौ और चाहिए। एक जोडा बल खरीदेगा। खेता बटाईपर न देकर एक हलवाहा रखकर बाप-दादाकी तरह खुद ही खेती करेगा। जमीन है तेरह बीघा। उसके साथ किसी औरका भी बीघा पाँचेक बटाईपर कर सकता है। साथ हो जकशनमें किसी तेलकल या चावलकी मिलमें काई नौकरी करेगा। रात रहते ही जग जायेगा बलोंको अपने हाथों सानी-पानी करेगा। हलवाहा हल लेकर निकलेगा और उसक साथ

बहुतेरे उसे अजगर कहते। उसके ग्रासमें पड जानेपर छूटना मुश्किल होता है। बहुतेरे 'खूनी' कहते। एक बार एक चोरको पकडकर चौधरीने उसका खून कर दिया था। धरती जमीनके लिए चौधरीकी भूख प्रचण्ड थी। जायदाद अच्छी होनेपर चौधरी जरूर रुपया देगा। वह उसीके पास चला।

चौधरी पढा लिखा आदमी है—बी० ए० पास। इधर संस्कृतका भी कोई इम्तहान दिया है। स्कूलमें हेड पण्डित है। मगर दरअसल है वह अव्वल दर्जेका हिसाबी। सूद जोडनेके लिए उसे कागज-कलमकी जरूरत नहीं पडती। चक्रवृद्धि दरसे दस-बीस सालका ब्याज वह जबानी ही जोड देता है। लेकिन ब्याजकी असलम बदलकर वसूलीके समय बातचीतमें संस्कृतके दो चार श्लोक सुनाकर आँकडोंको रसमय या पारमार्थिक तत्त्वसे मण्डित कर देता है।

अनिरुद्धने कहा, "मैं समयपर कर्ज चुका दूँगा चौधरीजी! मैं धोखेबाज नहीं हूँ कि भागता फिरूँ, भेंट नहीं करूँ। मेरा ऐसा स्वभाव नहीं है।"

चौधरी हँसा—'धोखा देनेका उपाय नहीं है भैया! और भागकर जायेगा भी कहाँ?" इतना कहकर उसने एक श्लोक पढ दिया—गिरौ कलापी गगने च मेघो लक्षान्तरऽर्क सलिले च पद्मम। समझा अनिरुद्ध, मेघ रहता है आसमान में और मोर रहता है पहाडपर, बहुत दूर। लेकिन मेघके निकलते ही मोरको आकर पूँछ उठाकर नाचना ही पडता है। और सूरज रहता है आकाशमें, पानी में रहती है कमलकी कली। सूरज उगा नहीं कि कमलकी पँखडियाँ बिखेरनी ही पडती है। महाजन और कर्जदारका सम्बन्ध हो जानेपर कहीं क्या न रहे, हाजिर होना ही पडेगा। भागेगा कहाँ?"

अनिरुद्धने अच्छी तरहसे समझा नहीं चुपचाप दाँत निपोरकर हँसा सिर्फ। उनकी बातें बडी रसीली थी।

चौधरीने जबानी हिसाब लगाया—"बीघा पीछे चालीस रुपये दरसे तीन सालमें चालीसके साठ हो जायेंगे। ऊपरसे अगर नालिशका खर्चा जोडा जाये तो महाजनका क्या रहेगा, बता? और कहीं कर्जदार लगान बाकी रखता जाये, तब तो मुने राजा रघुकी तरह मटकेमें पानी पीना पडेगा।'

अनिरुद्धने उसका पाँव पकडकर कहा जी, ब्राह्मणके पर छूकर कहता हूँ, एक ही सालमें मैं सब रुपये चुका दूँगा।

अपना पैर खींचकर चौधरीने कहा मेरा पैर मत पकड अनिरुद्ध पराती बिवाईसे तेरा हाथ मुँह मजोर जायेगा, छोड। चौधरीने झूठ नहीं कहा। चौधरी के काले मकड चमडम चाहे किसी रागसे हो चाहे किसी तत्त्वकी कमीसे, बारहो महीने बिवाइ पडी रहती है। सर्दियाम वे लाल हो उठती है। सबसे भयकर है

तलवेकी बिवाई। सूखा सख्त चमड़ा छूरा-सा पना है। चौधरीने पर छुड़ाकर दिलासा देकर कहा, "मगर साल ही भरमें चुका देना है तो चारके बदले दस ही बीघे बंधक रखनेमें क्या उज्र है? महज कागजमें लिखा रहेगा, और क्या।"

अनिरुद्ध चुप रहा। वह शरीरकी गतिकी सोच रहा था, देवताकी गति यानी वारिदा-मुखेरी सोच रहा था।

"डर मत!"—उसके मनके भावका भापकर चौधरीने कहा, 'साल भरम चुका, चाहे पांच सालमें, म तुझे मरने नही दूँगा। ब्याज म बाकी नही छोड़ता, छोडूँगा भी नही। बाकी रहेगा तो मूल ही। उसमें बेईमानी करगा तो ब्राह्मणका गण्डुश!" चौधरी हँसने लगा।

अनिरुद्धने कहा "सूद आपको हर महीने मिलेगा।"

"ठीक?'

"आपके पांव छूकर तीन सत्य करता हूँ!'

"तो तू तीन दिनके बाद आना। म जरा खोज-पूछ कर लूँ।"

'खोज-पूछ? खोज-पूछ क्या करेंगे?"

'यही कि और तो कही बंधक-वंधक नहीं रखा है।"

'आपके चरण छूकर कहता हूँ '

चौधरीने कहा, 'अब इन चरणोंको मुझे छातेपर रख देना होगा। उसमें तुम्हारा ही बुरा होगा। रजिस्ट्री ऑफिस नही जा सकूँगा और तुझे भी रुपया नही मिलेगा। खोज-पूछ किये बिना मैं किसीको रुपया नही देता, दूँगा भी नही।"

अनिरुद्ध फिर भी नही उठा। थके मांदे परदेशीको अचानक प्रियजनकी याद पड़ जानेपर घर लौटनेकी जैसी बेकली जगती है अनिरुद्धको आज वैसी ही व्याकुलता जागी थी—फिरसे अपने उसी संयत सुखी गृहस्थ जीवनमें लौट जानेकी। लौटनेका पाथेय चाहिए उसे। चार सालका बाकी लगान सालाना पचीस रुपया दस आनाके हिसाबसे कुल एक सौ दो रुपये आठ आने, चवन्नी ब्याज, पचीस रुपया दस आना—कुल एक सौ अठाइस दो आना। खर्चा जोड़कर एक सौ चालीस या पैंतालिस। है सौ ही रख ले। एक सौ और चाहिए। एक जोड़ा बैल खरीदेगा। खेती बटाईपर न देकर एक हलवाहा रखकर बाप-दादाकी तरह खुद ही खेती करेगा। जमीन है तरह बीघा। उसके साथ किसी औरका भी बीघा पाँचेक बटाईपर कर लेना है। साथ ही जंक्शनमें किसी तेल-कल या चावलकी मिलमें कोई नौकरी करेगा। रात रहते ही जग जायेगा बैलोंको अपने हाथों सानी-पानी करेगा। हलवाहा हल लेकर निकलेगा और उसके साथ

पदमने कहा "तुम भी क्या अजीब आदमी हो। इसे ले आया हूँ और कोई, तुम्हारे यहां तो नहीं आया हू यह। तुम बकझक क्यो कर रहे हो? और फिर लडका है, अनाथ है उसका क्या कसूर है? जा तो बेटे, तू उठकर बाहर जा।"

लेकिन छोकरा उसी तरहसे वहीं बैठा रहा, हिला डुला नहीं।

इक्कीस

खेती और घास—गावके जीवनके दो भाग है। बहार और घर—इन्हीं दो क्षेत्रोंमें यहांकी जिन्दगीका सारा आयोजन सारी साधना। असाढ़से भादो—गाववालोंके ये तीन महीने खेतीके लिए खेतोंमें कटते है। क्वारसे पूस तक फसल काटकर घर ले जाते है और रबी लगाते हैं। इस समय भी गांवके जीवनका बारह आना समय खेतोंमें ही कटता है। माघसे चैत तक कटता है घरमें। अनाज तैयार करके दना पावना चुकाकर आगेकी खेतीकी तयारी। घरका अन्दर बाहर सहेजते है, जरूरत होनेपर नया घर बनाते है पुराने घरोंमें छौनी छप्पर करते है मरम्मत करते है। राख पल्टकर पानी डालते है सनकी डोरी बाँटते है। गाना बजाना गप शप मजलिस महफिल। आँखें मूँदे हरदम तम्बाखू पीते है, बरसातके लिए तम्बाखू कूटकर गुड मिलाकर हाडीमें डाल सडनेके लिए जमीनमें गाडते है। खतिहरोंके घर जितना भी विवाह होता है इसी समय होता है। माघ और फागुन बहुत तो बैसाख तक। हरिजनोंमें चैतमें भी रोक नहीं। पूसमें चैत तकमें व विवाहका काम चुका लेते है।

अकालमें—चैत मासके बीचो-बीच अकाल—काल-बैसाखी आँधीसे उस बँधे-बँधाये जीवनको एक धक्का लगा। सुबह सनकी डोरी बाँटना छोडकर लोग खेतोंमें जा जुटे। बुजुर्गोंके सबके हाथमें हुक्का। कम उम्रवालोंमें-से हर किसीकी कमर या जेबमें बीडी दियासलाई। कानोंपर अधजली बीडी। हर कोई अपने खतोंकी मेडोंपर घूमने लगा। ऊची जमीनपर कुछने आज ही हल चलाना शुरू कर दिया। नीचे खेतोंमें अभी भी पानी था। दो चार दिन सूखे बिना हल चलाने योग्य नहीं लगे। मयूराक्षीके चौरमें ढाव सजीव पौधे मातासे स्तन-वंचित शिशुसे दुबले बने आज तक किसी तरह जिन्दा थे—अब अहिरावणके बेटे महिरावणकी तरह एक दिनमें दस मूर्ति हो उठेंगे। तिलमें फूल आ रहे

है, इस पानीसे तिल्का ाम होगा। मगर नुकसान भी कुछ हो गया। जो फूल अभी फूले थे वो म उनका मधु धुल गया, उनमें अब फल नहीं लगेंगे। अब ईख लगायी जा गी। इस पानीसे लाभ बहुत हुआ। लेकिन गाँवमें घरोंकी बहुत क्षति है, मगर उसका क्या किया जाये।

गाँवकी औरतें आधीम अस्त-व्यस्त हुए घरोंकी सफ़ाईमें लगीं। कमरमें अँचरका फेंटा बाँधकर, कूड़ा-करकट बटोर-बटोरकर खादवाले गड्ढेमें डाल रही थी। बच्चोंकी जमात तड़के ही आमके बगीचेकी ओर दौड़ पड़ी टिकोले चुनने। हरिजन स्त्रियाँ कन्धेपर टोकरी लिये राह-बाटमें पड़े हुए डाल-पत्ते बटोरकर भारी बोझा उठाये अपने-अपने घर जा रही थीं। जलावन होगा। उनके अपने घर-द्वारकी सफ़ाई अभी नहीं हो सकी थी। मर्द-पुरुष अपने अपने कामपर निकल गये थे। कोई गृहस्थोंके यहाँकी नौकरीपर, कोई जंक्शनकी मिलमें और कोई दूसरे गाँव मजूरी करने।

दुर्गा अपने घरमें बैठी थी। उसका या काम जिसके बाहर वह नहीं जाती। वह डाल-पत्ता बीनने कभी नहीं जाती। जलावन वह खरीदती है। सुबह गाय दुहवाकर वह नजरबन्द बाबूको दूध पहुँचा आयी है। रास्तेमें थाना दूर निकल दीदाका दफ़्तर वहीं चाय पी और घर लौटकर बैठी है। पहले कुछ दिनों तक वह लुहार-बढ़ई यहाँ चाय पीया करती थी। वह नजरबन्द बाबूके लिए चाय बनाया करती थी। उस दफ़्तर बाबूकी दुआ और वह खुद पीती थी। लेकिन उस दिन जो पद्मने कोई कड़ी बात कही था तबसे वह उसके यहाँ नहीं जाती। बाहर-बाहर ही नजरबन्द बाबूका दूध देकर उसके कुछ काम धाम करके लौट आती है। नजरबन्द बाबूने भी कई दिनोंसे उसे कुछ नहीं कहा है। वह बैठी-बैठी सोच रही थी, कलसे वह खुद दूध देने नहीं जायेगी। माँसे भिजवा दिया करेगी। जो गुण नहीं बात करता अपनेसे, उससे बात करनेकी उसे आदत नहीं थी।

दुर्गाकी माँ आँगन साफ़ कर रही थी और बहू डाल-पत्ते बीनने गया था। बच्चेको लेकर पातू बरामदेमें बैठा था। लोग तो कहते हैं कि बच्चा देखनेमें बहुत कुछ हरल गोपाल-गोरोका हो गया है। लेकिन फिर भी पातू बच्चेको प्यार बहुत करता है। भाई घरमें ही उसके भीतर अनोखा परिवर्तन आ गया है—अरण्य और स्वभाव दोनोंमें। पहले पातू माँको खाला मानकर आदमी था। आचार और व्यवहारमें उसके घमण्ड साफ़ झलकता था। उस समय उसका घाट ग़ल्ल देखकर लोग उससे ईर्ष्या करते थे। मर पतुआको सालम हो उसे बड़ी आमदनी होती थी। शाम वह बना करता था। कुछको तो साफ़ करके

पदमने कहा "तुम भी क्या अजीब आदमी हो। इसे ले आया है और कोई, तुम्हारे यहाँ तो नही आया ह यह। तुम वकझक क्या कर रहे हो ? और फिर लडका ह, अनाथ ह, उसका क्या कसूर ह ? जा तो वटे, तू उठकर बाहर जा।"

लेकिन छोकरा उसी तरहसे वही वठा रहा, हिला-डुला नही ।

इक्कीस

खेती और घास—गावके जीवनके दो भाग ह। वहार और घर—इन्ही दो क्षेत्रोमें यहाँकी जिन्दगीका सारा आयोजन सारी साधना। असाढसे भादो—गाववालाके ये तीन महीने खेतीके लिए खेतोमें कटते ह। क्वारसे पूस तक फसल काटकर घर ले जाते ह और रवी लगाते ह। इस समय भी गावके जीवनका बारह आना समय खेतामें ही कटता ह। माघस चैत तक कटता ह घरमें। अनाज तैयार करके देना-पावना चुकाकर आगेका खेतोकी तैयारी। घरका अन्दर बाहर सहेजते ह जरूरत होनेपर नया घर बनाते ह पुराने घरामें छौनी छप्पर करते ह मरम्मत करते ह। खाद पलटकर पानी डालते ह सनकी डोरी वाटते ह। गाना बजाना गप शप मजलिस महफिल। आँखें मूदे हरदम तम्बाकू पीते ह वरसातके लिए तम्बाकू कूटकर गुड मिलाकर हाँडामें डाल सडनेके लिए जमीनमें गाडते ह। खतिहरके घर जितना भी विवाह होता ह इसी समय होता ह। माघ और फागुन बहुत तो वशाख तक। हरिजनोको चतमें भी रोक नही। पूसमे चत तकम वे विवाहका काम चुका लेते ह।

अकालमें—चत मासके बीचो-बीच अकाल—काल-वशाखी आधीसे उस बँधे-बधाये जीवनको एक धक्का लगा। सुवह सनकी डोरी वाटना छोडकर लोग खेतामें जा जुटे। बुजुर्गोंमें स सबके हाथमें हुक्का। कम उम्रवालामें-स हर किसीकी कमर या जेबम बीडी दियासलाइ। कानापर अधजली बीडी। हर कोई अपन खेताकी मेडपर घूमने लगा। ऊँची जमीनपर कुछने आज ही हल चलाना शुरू कर दिया। नीचे खेताम अभी भी पानी था। दो चार दिन सूखे बिना हल चलने योग्य नहीं होंगे। मयूराक्षीके चोरमें गाव स जीव पौधे माताके स्तन-वचित शिशु स सूखकर वने आज तक किसी तरह जिन्दा थे—अब अहिरावणके वेटे महिरावणकी तरह इस दिनम दस मूर्ति हो उठेंगे। तिलम फूल आ रहे

हैं इस पानीसे तिलको लाभ होगा। मगर नुकसान भी कुछ हो गया। जो फूल अभी फूले थे, वर्षासे उनका मधु घुल गया, उनमें अब फल नहीं लगेंगे। अब ईख लगायी जा सकेगी। इस पानीसे लाभ बहुत हुआ। लेकिन गांवमें घरोंकी बहुत क्षति हुई है, मगर उसका क्या किया जाये!

गांवकी औरतें आंधीसे अस्त-व्यस्त हुए घरोंकी सफाईमें लगी। कमरमें अँचरेका फेंटा बांधकर, कूड़ा-करकट बटोर-बटोरकर खादवाले गढ्ढेमें डाल रही थी। बच्चोंका जमात तड़के ही आमके बगीचेकी ओर दौड़ पड़ी टिकोले चुनने। हरिजन स्त्रियाँ कन्धेपर टोकरी लिये राह-बाटमें पड़े हुए डाल-पत्ते बटोरकर भारी बोझा उठाये अपने-अपने घर जा रही थी। जलावन होगा। उनके अपने घर-द्वारोंकी सफाई अभी नहीं हो सकी थी। मर्द-सूरतें अपने-अपने कामपर निकल गयी थी। कोई गृहस्थोंके यहांकी नौकरीपर, कोई जक्शनकी मिलमें और कोई दूसरे गाँव मजूरी करने।

दुर्गा अपने घरमें बठी थी। उसका [illegible] या काम, जिसके बाहर वह नहीं जाती। वह डाल-पत्ता बीनने कभी नहीं जाती। जलावन वह खरीदती है। सुबह गाय दुहवाकर वह नजरबन्द बाबूको दूध पहुँचा आयी है। रास्तेमें थोड़ा दूध मिला दोस्तोंको देकर वहीं चाय पी और घर लौटकर बठी है। पहले कुछ दिनों तक वह लुहार-बहूके यहां चाय पीया करती थी। वह नजरबन्द बाबूके लिए चाय बनाया करती थी। उस दफ्तर वाको दुगा और वह खुद पीती थीं। लेकिन उस दिन जो पद्मने वसी कच्ची बात कही सो तबसे वह उसके यहां नहीं जाती। बाहर-बाहर ही नजरबन्द बाबूको दूध देकर, उसका कुछ काम धाम करके लौट आती है। नजरबन्द बाबूने भी कई दिनोंसे उसे कुछ नहीं कहा है। वह बैठी-बठी सोच रही थी, कलसे वह खुद दूध देने नहीं जायेगी। मौसि भिजवा दिया करेगी। जो खुद नहीं बात करता, अपनेसे, उससे बात करनेकी उसे आदत नहीं थी।

दुर्गाकी माँ आँगन साफ कर रही थी और वह डाल-पत्ते बीनने गयी थी। बच्चेको लेकर पानू बरामदेमें बठा था। लोग तो कहते हैं कि बच्चा जनममें बहुत-कुछ हरन घोषाल-सरीखा हो गया है! लेकिन फिर भी पानू बच्चेको प्यार बहुत करता है। साल भरमें ही उसके भीतर अनोखा परिवर्तन आ गया है—अवस्था और स्वभाव दोनोंमें। पहले पानू मोचो खासा मानदार आदमी था। आचार और व्यवहारमें उसके घमण्ड साफ दिखता था। उस समय उसका पाट करने देखकर लोग उससे ईर्ष्या करते थे। मर [illegible] [illegible] बड़ी आमदनी होती था। साल वह बचा करता था। [illegible]

ढोल, तबला, बाजामें चमडा चढाना था। हाँ, उसके मढे हुए तबलोम ठनक भी खूब हाती थी। उसकी बारह आना आमदनी पशुओकी खाल्स होती थी, शेष चार आना चाकरी और ढोल-ढाक बजानेस हाती थी। मवेशी मसान अब मोचियोके हाथसे निकल गया ह। जमीदारने उसका बन्दोबस्त अलग कर दिया ह। बन्दोबस्त लिया ह माल्पुरके रहमत शेख और कक्नाके रमेन्द्र चटर्जीने। जमीन जो मिली हुई थी, वह भी जमीदारके खास खतियानमें चली गयी। उस जमीनको पातूने खुद ही छोड दिया। छोडनेके अलावा और कोई दूसरा उपाय भी क्या था। तीन बीघे जमीनके बदले बारहो महीने पर्व त्योहारपर *ढाक बजाकर क्या होगा ? अब भी रोजाना होगा सारा दिन या ही बजायेगा।* उससे ता यही अच्छा ह कि नवद पसे लेकर जहा-तहा ही बजा आता ह। कहीका बयाना रहता ह तो पातू साफ कपडेपर चादर लपेटता ह और ढाकको कन्धेपर रखकर निकल पडता ह। दो एक रुपया लेकर लौटता ह ऊपरसे दो एक पुराने कुरते भी मिल जाते हैं। अभी वह लगभग बारहा महीन बकार ह। मजदूरी भी नही कर सकता। बजनियेके रूपम उसका कुछ मान ह, फिर भला मजदूरी भी वह कसे करे ? कुछ और न होगा ता जहाँ मरे ढोर फेंके जाते हैं उस मवेशी मसानके बन्दोबस्तका ही ठेका ले लेगा। उन्हीका जातिभाई नीलू बजनिया (अब नीलू दास!)—चमडेके व्यापारमे लखपति बन गया है। अब वह कलकत्तेमें रहता ह। चमडेका बहुत बडा कारबार ह उसका। बडा भारी मकान बनवाया ह उसम ठाकुरजीका मूर्ति प्रतिष्ठित की ह और एम० ए० बी० एल० पास एक हाकिम सरकारी नौकरी छाडकर उसकी मनेजरी करता ह। विशाल मकान ह ठाकुरबाडी, हवागाडी हैं। अपने गाँवमें उसन कक्नाके बाबुओकी ही तरह स्कूल और अस्पताल बनवा दिया ह। उसका लडका शायद लाट साहबका मेम्बर ह। पातू चमडेके कारबार व मवेशी मसानकी बन्दोबस्तीकी कल्पना करता और ऐसे ही ऐश्वर्यका सपना दखा करता।

साल भरकी जीविकाका जुगाड उसकी स्त्री और दुर्गा करती। जिस पातूने कभी छिरु पालसे नाता रखनके कारण मारे गुस्सेके दुर्गाकी लानत मलामत की था वही पातू हरेन घोषालसे अपने घरके घटरकी समानता होते हुए भी उस प्यार करता ह दिन रात दुलारा करता ह। बीच-बीचमें वह घोपालके पास जाता ह। बड लाहम कहता ह आज ता चार आने पैसे देन हागे घोपाल बाबू!

दुर्गा रातका अभिसारम जाती—कक्ना, जक्शन। इन्तजार करता हुआ

आदमी पूछता, "साथमें वह कौन है ?" अँधेरेमें वह छायामूर्ति खिसक पड़ती।
दुर्गा कहती, 'वह मेरे साथ आया है।

"कौन है ?'

'मेरा भाई।"

छायामूर्ति झुककर चुपचाप नमस्कार करती।

दुर्गा कहती 'उसे एक सिगरेट दीजिए। बढ़कर पियेगा तबतक।"

बाबुओंके बागमहलके किसी पेड़-तले या बरामदेमें सिगरेटकी आगकी चमकमें पानूको पहचाना जा सकता है। लौटते वक्त उसे इनाम मिलता—चार आना, आठ आना। दुर्गा उसे दे देती।

उस दिन अपना इरादा पक्का करके पानू बार-बार दुर्गासे कहने लगा, 'कुल पचीस रुपयेकी तो बात है! दस-दस न रुपये दुर्गा, मवेशी-मसानका बन्दोबस्त हो रहे !"

दुर्गाने कहा, 'हो जायेगा। आज अभी ताड़के कुछ पत्ते तो काट ला! घर भी तो ढँकना होगा।

यही उनका बराबरका हाल है। उड़ने या जल जानेसे इन्हें घरकी फिकर नहीं होती। जल जानेपर तो फिर भी बाँस लकड़ीकी चिन्ता होती है, लेकिन उड़नेकी परवा ही नहीं करते। बहारमें खास खलिहानवाले पोखरेके बाँधपर या सरकारी मकीज किनारे जो ताड़के पेड़ हैं, उन्हींके पत्ते काट लाते हैं और घरको छौनी कर लेते हैं। मर्द मर्दोंने घर लौटने भरकी देर रहती है—कामसे लौट आनेपर वे पेड़पर चढ़कर पत्ते काट देते हैं और औरतें सिरपर ढोकर घर ले आती हैं। दो चार औरतें भी ऐसी हैं जो पेड़पर चढ़कर पत्ते काट लेती हैं। दुर्गा भी कभी ताड़के पेड़पर चढ़ सकती थी। लेकिन अब नहीं चढ़ती। जरूरत भी नहीं रही चढ़नेकी। उसके कोठाघरका छप्पर पुआलसे मोटा छाया हुआ है मजबूत बन्धनसे बँधा है। उसके छप्परका पुआल कुछ इधर उधर बिखरा जरूर है, पर छप्पर नहीं उड़ा। उन ठीक-ठाक करनेके लिए सिर्फ दो एक मजूरोंकी जरूरत होगी। यह काम पानूसे ही हो जायेगा—बल्कि उसको दो दिनकी मजूरी दे दी जायेगी।

दुर्गाके कहनेपर पानूने कहा हूँ !

'हूँ क्या, उठ!

'बहूको आ लेन दे।'

'वह आयगी तो भेज दूँगी—मौका भी। तू जा तो सही! पत्ते काट ला!

दुर्गाकी माँ आँगन बुहार रही थी। बोली, माँग नहीं होगा। तुम

ढोल, तबला, बाजामें चमड़ा चढ़ाता था। हाँ, उसके मढ़े हुए तबलामें ठनक भी खूब होती थी। उसकी बारह आना आमदनी पशुओंकी खालसे होती थी, शेष चार आना चाकरी और ढोल ढाक बजानेसे होती थी। मवशी मसान अब मोचियोंके हाथसे निकल गया है। जमींदारने उसका बन्दोबस्त अलग कर दिया है। बन्दोबस्त लिया है मालेपुरके रहमत शेख और कंकनाके रमेन्द्र चटर्जीने। जमीन जो मिली हुई थी, वह भी जमींदारके खास खतियानमें चली गयी। उस जमीनको पातूने खुद ही छोड़ दिया। छोड़नेके अलावा और कोई दूसरा उपाय भी क्या था। तीन बीघे जमीनके बदले बारहों महीने पर्व-त्योहारपर ढाक बजाकर क्या होगा? जब भी बजाना होगा, सारा दिन या ही बजायेगा। उससे तो यही अच्छा है कि नक़द पैसे लेकर जहाँ-तहाँ ही बजा आता है। कहीं कोई बयाना रहता है तो पातू साफ कपड़ेपर चादर लपेटता है और ढाकको कंधेपर रखकर निकल पड़ता है। दो एक रुपया लेकर लौटता है ऊपरसे दो एक पुराने कुरते भी मिल जाते हैं। अभी वह लगभग बारहों महीने बेकार है। मजदूरी भी नहीं कर सकता। बजनियेके रूपमें उसका कुछ मान है फिर भला मजदूरी भी वह कैसे करे? कुछ और न होगा तो जहाँ मरे ढोर फेंक जाते हैं उस मवशी मसानके बन्दोबस्तका ही ठेका ले लेगा। उन्हींका जातिभाई नीरू बजनिया (अब नीलू दास!)—चमड़ेके व्यापारसे लखपति बन गया है। अब वह कलकत्तेमें रहता है। चमड़ेका बहुत बड़ा कारबार है उसका। बड़ा भारी मकान बनवाया है, उसमें ठाकुरजीकी मूर्ति प्रतिष्ठित की है और एम० ए०, बी० एल० पास एक हाकिम सरकारी नौकरी छोड़कर उसकी मैनेजरी करता है। विशाल मकान है ठाकुरबाड़ी, हवागाड़ी है। अपने गाँवमें उसने कंकनाके बाबुओंकी ही तरह स्कूल और अस्पताल बनवा दिया है। उसका लड़का शायद लाट साहबका मेम्बर है। पातू चमड़ेके कारबार व मवेशी मसानके बन्दोबस्तोंकी कल्पना करता और ऐसे ही ऐश्वर्यका सपना देखा करता।

साल भरकी जीविकाका जुगाड़ उसकी स्त्री और दुर्गा करती। जिस पातूने कभी छिरू पालसे नाता रखनेके कारण मार गुस्सेके दुर्गाकी लानत मलामत की थी वही पातू हरेन घोषालसे अपने कल्के चहरेकी समानता होने हुए भी उसे प्यार करता है दिन रात दुलारा करता है! बीच-बीचमें वह घोषालके पास जाता है। वह लाड़से कहता है आज तो चार आने पैसे देने होंगे घोषाल बाबू!

दुर्गा रातको अभिसारमें जाती—अकेली, अकेली। इन्तजार करता हुआ

आत्मा पूछता — सातमें न कौन है? अँधेरमें वह छायामूर्ति सिहर पड़ता।

दुर्गा कहती, वह मेरे साथ आया है।

'कौन है?'

'मेरा भाई।'

छायामूर्ति झुककर चुपचाप नमस्कार करता।

दुर्गा कहती — उसे एक सिगरेट दीजिए। बैठकर पियेगा तबतक।

बाबुआन बाबमहल्ले किसी पनचल्ल या बरामदेमें सिगरेटकी नोकसे चमक में पानूको पहचाना जा सकता है। लौटते वक्त उसे इनाम मिलता—चार आना आठ आना। दुर्गा उसे दे देती।

उस दिन अपना इरादा पक्का करके पानू बार-बार दुर्गासे कहने लगा 'कुल पचीस रुपयेका तो काम है। दे-दे न रुपये दुर्गा, मरघट-मसानकी कसम है है।''

दुर्गाने कहा, हो जायगा। आज अभी जाकर कुछ पत्ते तो काट ला। घर भी तो ढकना होगा।

पर इनका घराबरका हाल है। उड़ने या जल जानेसे इन्हें घरकी फ़िकर नहीं होती। जल जानेपर तो फिर भी बाँस लकड़ीकी चिन्ता होती है लेकिन उनकी परवा ही नहीं करते। बिहारमें खास खलिहानवाले पोखरके बाँधपर या मरघटके नगर किनारे जो ताड़के पेड़ हैं, उन्हींके पत्ते काट लाते हैं और घरकी छौना कर लेते हैं। मरद मर्दे घर लौटने भरकी देर रहती है—कामसे लौट आनेपर वे पेड़पर चढ़कर पत्ते काट देते हैं और औरतें सिरपर ढोकर घर ले आती हैं। दो-चार औरतें भी ऐसी हैं जो पेड़पर चढ़कर पत्ते काट लेती हैं। दुर्गा भी कभी ताड़के पेड़पर चढ़ सकती थी। लेकिन अब नहीं चढ़ती। जरूरत भी नहीं रही उनकी। उसके कोठाघरका छप्पर पुआलसे मोटा छाया हुआ है मजबूत बन्धनमें बँधा है। उसके छप्परका पुआल कुछ इधर उधर बिखरा जरूर है पर छप्पर नहीं उड़ा। उन टीक-ठाक करनेके लिए सिर्फ दो एक मजूरोंकी जरूरत होगी। यह काम पानूसे ही हो जायगा—बल्कि उसीको दो दिनकी मजूरी दे दी जायगी।

दुर्गाके कहनेपर पानूने कहा — हूँ।

'हूँ क्या, उठ।'

बहूको आ लेने दे।

बहू आयगी तो भेज दूँगी—माँको भी। तू जा तो सही। पत्ते काट ला।

दुर्गाकी माँ आँगन बुहार रही थी। बोली — माँस नहीं होगा। तुम

खिलाती हो तो, तुम्हारे कहनेपर खटती हूँ। वरना बगैर लिए मैं नहीं खट सकती। आखिर क्या खटूँ? किसलिए? मावे नाते दो गण्डा पैसा भी देता है कभी? कि एक टुकडा कपडा देता है? उसके लिए मैं क्या खटूँ?"

पातू गरज उठा, "आखिर हम नहीं देते हैं, तो तेरा कौन बाप आकर दे जाता है, सुनूँ जरा?"

'सुन लो, दुर्गा इस कमीनेकी बात सुन लो।"

दुर्गाने बीचमें रोकते हुए कहा 'एक भी बाबा! तेरे जानेकी भी जरूरत नहीं और इस शोर गुलकी भी दरकार नहीं। वह आ जाये—हमी दो जने जायेंगे। भया, तू पहले चला जा।'

कमरमें कटार खोसकर पातू नदी किनारे पहुँचा। मयूराक्षीका बाढ रोधी बाँध नदीके बहावके साथ साथ पूरबमें पश्चिमकी ओर बरता चला गया था। इसी बाँधपर अनगिनत ताड्के पेडों और सरकण्डोंकी लम्बी पाँत है। जिसमें अच्छे पत्ते थे ऐसा एक पेड देखकर पातू चढ गया।

करीबके ही एक पेडपर राखोहरा बाउरी पत्ता काट रहा था। उसके बगलके पेडपर वह कौन है? मर्द नहीं, औरत। राखोहरीकी स्त्री—परी। इधरवाले इस पेडपर कौन? पहचान नहीं सका इसलिए पातूने पुकारा, 'कौन है रे वहाँ?'

"मैं गता हूँ। गणपति।

"और कौन है?

'मेरे पास है बाँका। वहाँपर छिदाम। और उधर मोतीलाल।'

पेडपर ही सबकी बातें हो रही थीं। एकाएक राखोहरी चीख उठा, 'हुह, हुम! हुट! अरे बाप रे! मार डालेगा रुलता है! हिश चोंच सख्त कितना है। बाप रे!' राखोहरीकी जीभ कुछ-कुछ लटपटाती है। साफ-साफ नहीं बोल सकता।

राखोहरीपर दो कौओंने हमला कर दिया था। काँव-काँव करके माथेपर मँडरा रहे थे और चोचकी ठोकरें मारते थे। पेडपर बसेरा था कौओंका। उधरसे परी पतिको गालियाँ दे रही थी—"कलमुँहेको मना किया कि उसपर कौओंका घोसला है मत चढ उसपर! अब कैसा मजा आ रहा है!" कहते कहते राखोहरीकी दुर्गत देखकर वह खिलखिलाकर बेहाल हो गयी।

कुछ दूरपर धम्मसे आवाज हुई! सत्यनाश! मदार पर ताड-सा कौन गिरा? जान तो नहीं गया? न हिल रहा है। खैर उठकर बैठ गया। बाप रे! कमी कठोर जान है! नन्हे लम्बी गोली माटी रही, तभी बच गया। मगर है कौन? कौन है रे?

वह आदमी उठकर खड़ा हो गया। बोला, "साँप!"

'साँप?'

"हाँ, सरकार! इसके डमरोंपर चढ़ हो रहा था कि साला फन करके फन फनाकर उसके पत्तेपर चढ़ गया। क्या करता, कूद पड़ा।'

यह था फाड़िंग बाउरी। छोकरा बड़ा सुन्दर है! आज खूब बचा! साँप अण्डेके लोभसे पत्थर चढ़ गया था।

अरे बाप रे! पातूको भी कम आफ़त नहीं थी। एक पत्ता काटा कि बेशुमार चींटोंने उसकी सारी देहको छा लिया। गमछा निकालकर पातू उन्हें झाड़कर फेंकने लगा। भाग साले भाग! धत! धत!

दुर्गा आईना लिये नहरनीसे दाँत साफ़ कर रही थी। सफ़ाईका शौक़ है उसे। दाँतोंका शंखकी तरह चकमक रहना ज़रूरी है। कभी-कभी दाँतोंमें पानकी लाली चढ़ जाती है। भली तरह दाँत माँजनेपर भी नहीं जाती। ऐसी हालतमें नहरनीसे उस दाग़को वह खुरच देती है। वह लौटे तो उसे साथ लेकर वह पत्ता ढोने जायेगी। यह पत्ता ढोना भी बड़ा झमेला है! गरम बालूमें धूल लगेगा, सारा बदन गर्दसे भर जायेगा, वह कपड़ा फिर पहनने नहीं बनेगा। मगर तो भी उपाय क्या है? सहोदर ठहरा!

माँने कहा, "बहू सयानी है, कभी फूटी पाई भी देती है कुछ? माल ढोकर 'सरधा' करता है?"

दुर्गाने हँसकर कहा, "रहने भी दे माँ, मत बोल! भला वह पैसा मुझे छूना चाहिए?"

अबकी माँ झल्ला उठी, 'हाय रे मेरा सोनाका बड़ा सावित्री!' और उसने सारा पुराना पचड़ा उठाया, अपनी माँ-सासके ज़मानेकी कथा, अपने युगकी बात, आजकी बहू-बेटियोंकी लम्बी-चौड़ी कहानी। अन्तमें बोली, 'उस समय हरामज़ादी बहू सावित्रीका धन कैसा पकड़ा था? मन बहुतेरा कहा, मगर नाक सिकोड़कर कहती—छि! अब तो वहाँ छि गरम भातका भी बनी है! उसी कमाईसे पेट भरता है, तन ढँकना है!

टोलेसे बाद गाड़ी बजती हुई आ रही था। दुर्गाने कहा, 'सबेरे आ घर माँ, रह जा। बाई आ रही है।

गाना गाती दाना जब रही थी—'सोना नहीं रूपा और मैं सोना! इसके बाद तो बिना ओघारके हो उड़ जायगा, बिना आगके हो जल जायगा! धानके अन्दर चावलके ज्ञान नहीं होगे गगरी होगा।

दुर्गाने हँसकर पूछा, "क्या हुआ सोना भाभी?"

रागा दादी उमी लइजेमें वाली "अरी विटिया, घरमको मब पकाकर खा गये ! पिरथा पर ता घरम नामका अब कुछ नही रहा।

दुर्गाने चीखकर पूछा, हुआ क्या आखिर ? किमने क्या किया ?

अरे वही मरदुआ गोविन्द ! अबतक देता आया ह और आज कह रहा ह नही !

क्या ?

'क्या क्या ? तू क्या विलायतसे आया है ? गोलेके लोग जानते ह गाव वाले जानते ह तुझे नही मालूम ? म पूछती हूँ तू ह कौन री छोरी ! एक तो आँखमे ठीक देख नही पाती, ऊपरसे मुहजले सूरजको धूपकी तो छटा देख ? पहचान नही पायी तू कौन ह ?

"मै दुर्गा हूँ दुर्गा !

' दुर्गा ! हाय मेरा मौत ! बस अपनी ही धुनम लगी ह ? दूसराकी बात क्यो नही सुनती ? गोविन्दके बापने मुझसे छह रुपये उधार लिये थे—नहीं जानती ? बुड्ढा हर महीने दो आना ब्याज दे जाया करता था। और जब कभी बुलाती थी आ जाना था। छप्परको मरम्मत कर दी, नालेमें पानी जमा तो निकाल दिया। व मरा तो गोविन्द दस बारह साल तक हर महाने दा आने देता रहा बुलानेपर आता रहा। आज बुलाने गयी तो कहता ह—नही काफी दे चुका ह अब न सूद दूगा न असल न बेगार हा ! म दनूके पास जा रही हूँ। घोर कलजुग आ गया। अब अगर सब लाग यही जवाब दें तो मेरी कौन गत होगी ?'

बुढियाके ऐसे कजदार बहुत-से ह। कमसे कम दस-बारह। दो कोडीस ज्यादा रुपये लगे हैं। पुश्त दर पुश्त व सूद भरते जाते है बुढिया कभी मूल नहीं मागती वे लोग भी नही देते। उन्हें यह भरोसा ह कि बुढिया मर जायेगी तो असलसे पिण्ड छूट जायेगा। लेकिन ऐसे महाजन गावमें और भी कई ह। सभी प्राय औरतें और उनके वारिस ह। असलमें इनके कर्ज-कानूनका ढग ही यही ह।

जाते जाते बुढिया रुक गया— अरी दुर्गा सुन !

क्या ह कहो !

' एक जोड़ा करनफूल ह लेगी ? सोनका ह !

'करनफूल ? किमका ह ?

चल मेरे साथ। बडी अच्छी चीज ह। एक आदमीकी ह लेकिन अब वह लेगा नही। और म करनफूल क्या करूँगी ? तू लेना चाहे तो लेले।

"आज अब नहीं, दीदी। अभी ताडका पत्ता लाने जाना है।'
"हाय मेरी मौत तुझ ताडके पत्तेका क्या करना ?"
"भैयाके लिए अपने लिए नहीं।
हाय रे भैयाकी भक्तिन। भैयाके लिए सोचते-सोचते तो मर गयी।'— अपने-ही-आप बकबक करती हुई बुढ़िया चल पड़ी। जरा दूर चलकर एक गड्ढेमें पाँव पड गया। सो उसने मेघको गालियाँ दीं। यूनियन बोर्डके टैक्स वसूलनेवालेको गाली दी। कुछ लड़के कीचड़से खेल रहे थे उनके बाप-पुरखोंको गाली दी। उसके बाद जगन डॉक्टरके दवाखानेके सामने दवाकी बूसे नाकपर कपडा रखकर दवाको गाली दी डॉक्टरको गाली दी रोग और रोगीको गाली दी। रुपये डूब जानेकी आशंकासे बुढ़िया आज पगला गयी थी। देबूके घरके सामने आकर आवाज दी— देबू गुरुजी।

किसीने जवाब नहीं दिया। खिजलाकर बुढ़िया अन्दर गयी—"मैं पूछती हूँ, कानका सिर खा बैठे हो क्या ? ओ देबू ?'

बिलू बाहर निकली— राँगा दीदी ?'

'मरी तरह कानका सिर खाया है आँखोंका माथा खाया है ? सुनती नहीं ? देख नहीं रही है ?

बिलूके होठोंमें जरा हँसी। कोई जवाब नहीं दिया। समझ गया कि राँगा दीदी आज बहुत बिगड गयी है।

"अरे यह देबा कहाँ है देबा ?

वह तो घरपर नहीं है राँगा दादी।'

'घरपर नहीं है ? जोरसे बोल जरा गया कहाँ ?

'चण्डीमण्डपमें गये हैं।'

"चण्डीमण्डपमें ?'

'हाँ।'

"अच्छा, मैं वहीं जाती हूँ। देखती हूँ न्याय होता है या नहीं। अच्छा ही हुआ वहाँ देबू भी है और छिरू भी है। कान पकड़कर मैंगवा पकाऊँगा हराम जादेको। ऐसी मजाल। धरम नहीं न्याय नहीं।

बकबक करती हुई बुढ़िया चण्डीमण्डपकी तरफ चली।

वहाँ जारोंसे बैठक जमी था।

भूपाल बागदी हाथमें लाठी लिये खड़ा था। बकुल पेड़के नीचे सिर थामे हुए बैठे थे—पातू राँगादिदी हरी बौरा छिदाम पदिम—और भी कई लोग। बगलमें ताड़के पत्तोंके कुछ बाप पड़े थे। मयूराक्षीका बाँध उमोंशको

जायदाद है। वहाँके ताड भी जमीदारके है। उन पेड़ोंसे पत्ते काटनेके कसूरमें भूपाल सबको लाया था। श्रीहरि गम्भीर होकर गडगडेमें दम लगा रहे थे। एक ओर देवू चुपचाप बैठा था। उसे पातू बगरहकी ओरसे बुला लाया था। हरेन घोषाल आप ही आया था। वह प्रजा समितिका सेक्रेटरी है। चिल्ला वही रहा था।

ये सदासे पत्ता काटते आये है, बाप दादेके जमानेसे। अब उनका स्वत्व हो गया है।''

घोषालकी बातका श्रीहरिने जवाब ही नही दिया।

पातू जो बहुत दिनोंसे मन-ही मन श्रीहरिके खिलाफ विरोध पाल रहा था, जरा गरम होकर बोला, 'पत्ता तो सदासे काटा जाता रहा है, आज कोई नयी बात नही है।''

'सदा अन्याय करते आये थे इसलिए आज भी जबरदस्ती अन्याय करोगे? जो काटते हो चुराकर काटते हो।

देवूने इतनी देरके बाद कहा इसे चोरी नहीं कहा जा सकता है श्रीहरि। पहले जमींदार एतराज नही करता था ये लोग काटते थे। अब तुम गुमाश्ता बनकर एतराज करते हो सब आइन्दासे नही काटा करेंगे। उसके बाद अगर बिना जताये काटें, तो चोरी कहना।'

घोषालने कहा ना! नेवर! तुम यह गलत कह रहे हो देवू, गाछका पत्ता काटनेका हक इन्हें है। तीन पुश्तसे काटते आ रहे है। तीन साल तक घाट-बाटमें चलनेके बाद कोई घाट बाट बन्द कर सकता है?'

हँसकर श्रीहरि बोला वह पेड़ है घोषाल तालाब नहीं है और न रास्ता ही है।'

यस गाछ इज गाछ एण्ड रास्ता इज रास्ता बट मन इज मन आफ्टर आल।'

कलको अगर जमीदार उन पेडोंको बेच दे या कि काट ले तो पत्ता काटनेका अधिकार कहा रहेगा? नाहक मत बको। केवल खास-खलिहानके ही नही, माल जमीनके पेड भी जमींदारके है। फल प्रजा खा सकती है काट नहीं सकता।

देवूने एक लम्बी उसाँस ली। पलमें उसके मनमें एक भूला हुआ क्षोभ जाग उठा। उसके पिछवाड़ेवाले गडहाके किनारे कटहलका एक पेड था। अवश्य कटहल उसमें पकता नही था मगर फलता बेहद था। उसे धुंधला याद है। अपना अमबार बनानेके लिए जमींदारने उसे काट दिया था। कुछ दीमन शायद

दी थी, लेकिन शुरूमें जब उसके पिताने एतराज किया था तो इसी कानूनके बलपर जबरदस्ती ही काट लिया था। जाने कितनी बार देवूका पिता कहा करता था, आह, कच्चा कटहल पेडका खसो है! और उसमें स्वाद भी क्या!

देवूने कहा, "तो फिर वही करो श्रीहरि! पेडोको कटवा डालो। रयत फल नहीं खायेंगे।"

श्रीहरि हँसा—"तुम नाहक ही नाराज हो रहे हो, चाचा! वह तो मैंने बातोंके सिलसिलेमें कानूनकी बात कही। जमींदार ऐसा क्या करने लगे? लेकिन रैयत अगर जमींदारका विरोध करें, तो जमींदारका कानूनके हिसाबसे चलनेमें दोष क्या है? ग़ैरकानूनी या अन्याय तो नहीं चल सकता।"

'लेकिन इन गरीबोंने क्या विरोध किया, सुनूँ मैं? एकाएक इन्हें यों पकडवा मँगानेका मतलब?'

"उन्हींसे पूछो। प्रजा-समितिके सेक्रेटरीसे पूछो।"—उसके बाद हरिजनोंकी ओर ताककर श्रीहरिने कहा, "क्या रे, चण्डीमण्डपकी छौनीका तुम लोग पैसा नहीं लोगे?"

इतनी देरके बाद बात साफ हुई। सभी सन्न रह गये। लेकिन भीतरसे सबने एक जलन महसूस की। यह जलन सबसे ज्यादा महसूस की देवूने। ताडके पत्तेकी कीमत और चण्डीमण्डपमें छौनीका मजदूरीकी असगति इसका कारण नहीं था, कारण तो इस पूरे मामलेमें श्रीहरिका ढग था।

रांगा दीदी कुछ पहले वहाँ पहुँची थी और वहाँका रवया देख-सुनकर अवाक् खडी थी। कानसे पूरा सुनाई नहीं पडता, सो कुछ देर खडी रहकर मामलेको समझती रही। उसके बाद बोली, "अरे छोकरे तुम लोग चण्डी मण्डपकी छौनी नहीं करोगे? मजाल देखो इनकी, हाय मेरी मैया कहाँ जाऊँ मैं।'

मौका पाकर हरेन घोषालने रांगा दीदीको डाँट बतायी—जिसे तुम समझती नहीं, उसपर बोला मत करो रांगा दादी! चण्डीमण्डप अभी है किसका? वह रहा न रहा, उनका क्या? उनका तो उनका गाँववालोंका ही उसपर कौन-सा अधिकार है? चण्डीमण्डप जमींदारका है। यह चण्डीमण्डप नहीं, अब यह जमींदारकी कचहरी है।

"जो राजाका है, वही प्रजाका है। राजाका हुआ तो प्रजाका हुआ।'

देवूने हँसकर जरा तेज गलेसे ही कहा, 'यह तो इस ताडके पत्तेके मामलेमें ही दाग रखो रा रांगा दीदी।"

कौन, देवू?'

'हाँ।"

'हा, कालू शेख !"

नादिर शेख अपने जमानेका नामी लठैत था। कालू उसका लायक लड़का है। जवान, बलवान, चालाक, दुर्दम साहसी। दगा करके एक बार जेलकी सजा काट चुका है। उसके बाद एक बार डकतीके सन्देहमें गिरफ्तार हुआ लेकिन सबूत नहीं मिलनेमें छूट गया। कालू शेख बड़ा भयंकर जीव है।

श्रीहरिने कहा "मैं अन्याय नहीं करूँगा, भवेश भया! किसीका बुरा भी मैं नहीं करना चाहता। लेकिन जो मेरे सिरपर पाँव रखेगा, उसका मैं खात्मा कर दूँगा, इसमें चाहे अन्याय हो, चाहे अधर्म।"—जरा देर चुप रहकर फिर बोला, 'ये नीच लोग बरसातके दिनों मैं धान देता हूँ तब तो ये खाते हैं—और आज ये मेरी न मानकर उठकर चले गये।"

यह देवू घोष सेटलमेण्टके समय मन उसकी जगह जमीनको निष्कण्टक कर दिया है। उसके बाल-बच्चोंकी दोनों शाम खोज-खबर लेता रहा। जानते हो हरीश भया फिरसे जिसमें उसका स्कूलवाला काम हो जाये, इसकी भी कोशिश कर रहा था। प्रेसिडेण्टसे भी कहा।"

भवेशने कहा, 'कलजुगमें किसीका भला नहीं करना चाहिए बेटा!"

'सबका मूल है वह नजरबन्द छोकरा। उसीकी यह सब करतूत है। लुहार-बहूके साथ ठिठोली करता है। और वह साला कमकार!'

कहते-कहते श्रीहरि कठोर हो उठा—'नमकहराम गाँव! कभी कभी जीमें आता है इसका सत्यानाश कर दूँ!"

हरीशने कहा ऐसा कहनेसे कैसे चलेगा भाई! भगवान्‌ने तुम्हें बड़ा बनाया है तुम्हारा भण्डार भर दिया है तुम्हें करना ही होगा। ऐसा कहना तुम्हें नहीं सोहता।"

कुछ देर चुप रहकर श्रीहरिने सहज स्वरमें ही कहा हरीश भया, पष्ठी काकासे कहिए कि काम अब शुरू कर दें। ईट तो तुम्हारी पकी-पकायी है। स्कूलका फर्श न हो तो दस दिनके बाद होगा अच्छी तरहसे पानी पड़ जाय, नहीं तो फट जायगा। मगर पुलिया अब नहीं बनेगी तो कब बनाओगे? फिर यह काम मेरा नहीं है मने दस रुपये जरूर दिये हैं मगर युनियन बोर्डको दिये हैं पुलिया बनवानेके लिए। युनियन बोर्डसे मैं क्या कहूँगा।

हरीशका लड़का पष्ठी श्रीहरिकी मददसे आजकल ठेकेदारी करता है। युनियन बोर्डकी तरफसे शिवकालीपुरके रास्तेमें एक पुलिया बनेगी। श्रीहरि स्कूलका फर्श पक्का बनवा देगा। इन सबका ठेकेदार पष्ठीचरण है।

हरीशने कहा वह तो तुम्हारे ही काममें व्यस्त है भाई! खाता-पत्तर

लेकर सवेरे बैठना है उठना है रात ही को। तमाखूका हिसाब वह भी तो कुछ कम नहीं है।"

षष्ठी श्रीहरिकी गुमाश्तागिरीका कागज-पत्तर भी लिखता है। चलता महीना। बाकी-बकायेका हिसाब किताब हो रहा है। जिनपर चार सालका बाकी पड़ा है उनपर नालिश की जायेगी। श्रीहरिके अपने धान-पानका हिसाब है। तीन सालसे तमाखू। वह हिसाब भी हो रहा है।

भूपाल जा चुका था। हुक्म तामील करनेवाला कोई न था। लाचार भवेश खुद ही चिलम भरने लगा। षष्ठीतलाके पास आगकी धूनी जलती है—वहाँ बैठकर चिलममें आग रखते हुए उसने जाने किसको पुकारा—"कौन है रे ? ए छोरे !"

एक लड़का लाल फूलोंका एक गुच्छा हाथमें लिये जा रहा था। पुकारनेपर वह ठिठक गया।

'कौन है रे ? कौन-सा फूल है हाथमें ? अशोक ?'

वह लड़का वैरागी परिवारका नलिन था। वह महाग्राम गया था—पटवा के यहाँ। ठाकुरोंके बगीचेमें अशोकके फूल थे, वहींसे एक गुलदस्ता बनाकर ले आया था नजरकत्ल बाबूको देनेके लिए। कुछ कलियाँ भी तोड़ लाया था गुरुओंके यहाँ पड़ोसियोंमें यहाँ बाँटनेके लिए। दो दिनके बाद ही अशोकषष्ठी है। अशोककी कली चाहिए। अपनी आदतके अनुसार बिना बोले गरदन हिला कर बता दिया कि हाँ, अशोककी कली है।

'लिये जा तो बेटे ! एक टहनी दिये तो जा !'

नलिनने कुछ फूल रख दिये और चला गया।

श्रीहरिने कहा, 'अपने पोखरके बाँधपर मैंने भी अशोकका पौधा लगाया है।'

उसने एक पोखरा खुदवाया है। उसके बाँधपर शौकसे तरह-तरहके पेड़ लगाये हैं। सभी लगभग अच्छी किस्मके पेड़ हैं।

बाईस

अशोक-षष्ठी ! जो लोग यह षष्ठी करते हैं, कहते हैं उनके संसारमें कभी शोकका प्रवेश नहीं होता। 'जिये मेरा पाये जो भाव'—यानी बाईं उतरा

मरे, तो जी जाता है कुछ खो जाये तो फिर मिल जाता है। स्त्रियाँ सुबहसे ही उपवास किये हुए है। पछी देवीकी पूजा करेंगी, कथा सुनेंगी, अशोककी आठ कलियाँ खायेंगी—लड़कोंके ललाटपर दही हल्दीका टीका लगायेंगी। उसके बाद मामूली-सा खान पान! अन्न तो निषेध है।

बारह महीनेमें तेरह षष्ठी। महीने महीने षष्ठी देवीकी नाव स्वर्गसे उतरती है, बारह महीनेमें वे तेरह रूपोंमें मर्त्यलोकमें आती है धरतीकी सन्तानोंके कल्याणके लिए। उनकी माँगमें दग दग करता है सिन्दूर, हाथमें झलमलाती है शंखकी चूड़ियाँ, सारे शरीरमें हल्दीका प्रसाधन, बड़ी बड़ी आँखोंमें काजल! दूसरोंके सात पूतको रखती है गोदमें, अपने सात पूत रहते है पीठपर। वैशाखमें चन्दन षष्ठी जेठमें अरण्य षष्ठी आषाढ़में बाँस षष्ठी सावनमें लोटन षष्ठी, भादोमें चपटा अर्थात चपेड़ा षष्ठी आश्विनमें दुर्गा षष्ठी कातिकमें काल षष्ठी, अगहनमें अखण्ड षष्ठी—संसारको अखण्ड और परिपूर्ण कर देती हैं। पूसमें मूली षष्ठी माघमें शीतला षष्ठी फागुनमें गोविन्द षष्ठी और चैतमें जब फूलोंकी शोभासे अशोक गदरा जाते है तो दुनियाका सारा दुःख शोक पोछ डालनेके लिए आती है अशोक षष्ठी! उनके मंगल-परससे फूलोंभरे अशोक तरुकी तरह ही संसार सुख और आनन्दसे भर जाता है। अशोकके बाद नील षष्ठी। गाजनकी सक्रान्तके पहले दिन। तिथिमें षष्ठी हो या नहीं उस दिन नील षष्ठी होती है।

पद्म सवेरेसे ही घरके काम धन्धे चुका लेनेको जुट गयी थी। काम धन्धा करके नहाना नहानेके बाद कथा सुननेके लिए बिल्वके यहाँ जाना है। उसके बाद अशोककी कली खानी पड़ेगी। अशोककी कली खानेका भी मन्त्र है। और ऐसे व्यस्त दिनमें अनिरुद्धने कामका झमेला खड़ा दिया था। वह अपने लुहारखानेकी मरम्मतमें लग गया था। हापर निहाई हथौड़ा सँड़सी आदि को लेकर खींच-तान शुरू कर दी थी। इतने दिनोंकी जमी धूल कालिखकी झाड़-पोंछ जरा देरका काम नहीं। तिसपर कोयलेमें मिले हुए है लोहेके टुकड़े। बढ़ईकी छिली हुई लकड़ीके बारीक छिलका-जैसे मुड़े सिकुड़े ये लोहेके छिलके ऐसे खतरनाक होते है कि चुभ जाते है। झाड़ूसे झाड़-पोंछकर फिर गोबर माटीसे लीपना। पद्मके साथ तारिणीका वह लड़का भी काम कर रहा था, खाना उसे यतीन देता है। दो एक कामकाज वह कर जरूर देता है पर रहता है हरदम पद्मके पास। अनिरुद्ध डाँट डपट भी करता है तो वह खास कुछ नहीं बोलता। मुमावत तब जानी जब वह बाहर जाता। बाहर जानेपर जल्दी लौटता ही नहीं! यतीन उसमें दवूको कुछ कहला भेजता तो दवू तो आ जाता पर वह छोकरा लापता रहता। और अन्तमें एक पहर बड़ी गँवाकर

खानेके वक्त लौटता। कभी कभी हरिजन टोले या किसी जंगल झाड़ीसे उसे ढूँढकर लाना पड़ता। पद्म ही ढूँढ लाती।

अनिरुद्ध नये सिरेसे काम शुरू करना चाहता था, उसे काबुली चौधरीसे रुपये भी मिल गये थे। लेकिन ढाई सौ रुपयेके बदले चौधरी उसकी सारी जोत लिखाये बिना न माना। अनिरुद्धने लिख भी दी। उसका मन जरा कुनमुना रहा था, पर रुपये मिल जानेके बाद सारी मायूसी भूलकर उत्साहके साथ उसने काम शुरू कर दिया। लगानके बाकी रुपये अदालतमें देने होंगे—आपसी तसफिये का भरोसा नहीं। और बचे वह दे भी क्या? माचुन्डीके मवशी हाटसे बैल खरीदने हैं। हलवाहा उसने रख भी लिया। दुर्गाका भाई पातू ही उसे पसन्द था। उसे उसने लुहारखानेमें नौकर रख लिया। और पातूको वह प्यार भी करता था। अनिरुद्धके लिए पातूने दुर्गासे बड़ी पैरवी भी की थी। पातू अनिरुद्धके साथ लुहारखानेमें भी काम कर रहा था। लोहेकी मोटी मोटी चीजें घर-पकड़ करके दोनों जने निकाल रहे थे। कामोंके बीच ही खेतीकी बातें कर रहे थे। बैलकी बात—कि कैसा बैल खरीदा जाये।

पातूका ख्याल है, दुर्गावाला बछड़ा ही खरीद लेना ठीक है। हाटमें उसका जोड़ा खरीद लाया जायगा। बड़ा अच्छा रहेगा। अनिरुद्धने कहा "दुर्गाके बछड़ेका दाम भी तो बेहिसाब है।'

'पचाराने सौ तक कहा है! दुगान रोज रखा है—और पचास रुपया! मगर तुम्हें सस्ते देगी। और फिर मैं भी हूँ।'

हँसकर अनिरुद्ध बोला, 'कुल सौ की तो पूँजी है अपनी। यह सौदा न होगा। दो बछड़े खरीद लूँगा। जमीन भी तो ज्यादा नहीं है। काम चल जायेगा।"

'लेकिन दुनि मुप बल लेना भया। वह बल ज्यादावाला होता है।'

"चलो न, दोनों ही जन तो चलेंगे हाट।'

पद्मने तारिणीके छोरसे कहा, "अरे, फिर लाईका टुकड़ा चुनने लगा? यही काम कर रहा है तू?'

छोरने जवाब नहीं दिया।

पातूने कहा, 'अजी ए! यह तो गूंगा लगता है भाई! अबे छोर!

उसने दाँत दिखलाकर पातूको मुँह चिढ़ाया।

'हाँ, यह तो मुँह चिढ़ाने लगा। बलिहारी रे छोर!

अनिरुद्धने कहा, पकड़ ला तो उसे पातू! कान पकड़कर ले आ।'

पद्म हाँ हाँ कर उठी—'मत पकड़ो काट लेगा, काट लेगा!'

छोरेकी बडी बुरी लत थी। किसीने पकना नहीं कि काट गाया। और दाँत भी कमश्नके उस्तर-से पने ह। अचानक दात जमाकर हमलावरको ट्रान करके अपनेको छुडा लेता ह। यही उसका युद्ध-कौशल ह। लेकिन आज पातूके पकडनेसे पहले ही वह चम्पत हा गया।

पद्म परेशान मी हो उठीं—"अरे ओ फतिमा ! कही चल मत दना, हा!"

फतिगा छोरेको पुकारनेका नाम था। एक अच्छा-सा नाम भी मा-बापने रखा था, पर वह नाम उसके माँ-बाप ही जानते थे, छोरेको भी मालूम था। लेकिन फतिगेने पदमको बातपर ध्यान हो नही दिया। मगर भरोसा था तो इतना ही कि भागा वह घरके ही अन्दरको था। पदम भी अन्दर चली गयी।

अनिरुद्धने पूछा, "कहा चली ?

'देखूँ जरा वह गया कहाँ ?

'मरने दे उसे तेरा क्या! तू अपना काम कर।"

'आज पड़ी ह जबानपर लगाम नहीं तुम्हें!' और बडी-बडी आँखोंकी जलती हुई दृष्टिसे अनिरुद्धका मौन तिरस्कार करके पदम चली ही गयी।

दाँत पीसते हुए अनिरुद्ध पद्मको दखता रहा। लेकिन पदमने पलटकर भी नही ताका वह अन्दर चली गयी। लम्बा नि श्वास छोडकर अनिरुद्ध भी काम करने लगा।

उधर फतिगा कहो भागा नही था। यतीनकी बठकमें जा बठा था वह। यतीनकी आवाज़से पदमको फतिगाके वहा होनेका अन्दाज लग गया।

यतीनने पूछा माँ कहाँ ह र'

एहाँरमानेम।

"लो मेरी ही खोज हो रही ह!'—पदम हँसी। क्या? माँकी खोज बिसलिए? पता नही क्या हुक्म हो? अन्दरसे दरवाजेकी जजीर हिलाकर उसने जता दिया कि माँ ह मर नही गयी। यतीनके कमरके बरामदेपर भरपूर मजलिस बठी थी। दबू जगन हरन गिरीश गन्धइ—बहुतेरे आय थे। जजीर की आवाजसे यतीन हँसता हुआ बरामदेसे कमरमें होता हुआ अन्दरक दरवाजेके पास आ खडा हुआ।

धूल-धूसरित रूप अपने बदल और फटे मले कपडेकी तरफ देखकर पद्म सकुचाकर छिप गयी— न अन्दर मत आओ!"

'नहीं आऊ ?

न म भून बनी खडी हूँ।

हँसकर यतीनने कहा, "भूत बना ?"

"हाँ, देख लो !" दरवाज़ेकी फाँकसे, उसने अपने कालिख लगे हाथ बढ़ा दिये—"आना मत भूतनी बुढ़िया ! डर जाओगे !" एक नये आनन्द पुलकमें वह खिलखिला उठी।

यतीनने हँसकर कहा "मगर भूतना माँ, चायकी जो जरूरत है ! हाथ धो डालो झटपट !"

पद्म बुदबुदाने लगी—"चाय आखिर दिनमें कोई कै बार पीता है ! नसीब तो मेरा खोटा है अनिरुद्ध नशाखोर यतीन चायखोर और यह कमबख्त पतिंगा यह भी देखो !"

यतीन बैठकमें लौट गया। चाय बैठकका अन्यतम आकर्षण है। हरेनने इसी बीच दो बार याद दिलायी।

"चाय कहाँ है ? मामला जम जो नहीं रहा है !"

बैठकमें आज जगन बंगालके राजनैतिक इतिहासपर भाषण दे रहा था। प्रजाके अधिकार-सम्बन्धी कानूनके संशोधनकी सम्भावनापर चर्चा चल रही थी। बंगालकी विधान सभामें इसपर जोरोंकी बहस चल रही थी। यह बात इसलिए उठी थी कि उस रोज श्रीहरि पालने शासन-वाक्य रूपमें कहा था—"प्रजास्वत्व यानी जमानेके पड़नेसे प्रजाको महज फल लेनेके सिवाय और कोई हक नहीं है। पेड़ जमींदारके होते हैं।"

जगन कह रहा था "प्रजाके अधिकारवाले कानूनमें वह स्वत्व प्रजाका होगा। जमींदारके जहरके दाँत अब टूटे हैं। उस दिन अखबारमें सब छपा था कि कौन और क्या-क्या परिवर्तन होगा। मैंने जतनसे अखबारकी कतरन रखी है। यह कानून पास होकर ही रहेगा। उफ़ स्वराज पार्टीने क्या-क्या दलीलें दीं ! आग फैला दी !"

गर्गाईने पूछा "क्या क्या होगा डॉक्टर ?"

हरेन अखबारका केवल शीर्षक पढ़ा करता और पढ़ा करता कानून कचहरी की बात। विस्तारसे पढ़नेका धैर्य उसमें नहीं है—फिर भी उसने कहा "बहुत-बहुत बातें हैं। इतनी बड़ा पाया हो जायेगी ! —कहते कहते दाना हाथ फैलाकर उसने आकारका आभास दिया। फिर बोला "मूर्खकी तरह मुँहसे ही पूछता है, क्या क्या होगा डॉक्टर !

जानता भी सब बात नहीं था। सब कुछ वह समझ भी नहीं सका फिर भी कुछ कुछ बताया। कहा 'पेड़पर प्रजाका हक कायम होगा।

"हस्तान्तरण कानूनसे प्रजाको उठा देनेवाली जमीदारकी क्षमता नहीं रहेगी।'

"खारिजकी फीस तय कर दी जायेगी और वह फीस प्रजा रजिस्ट्रीके दफ्तरमे दाखिल करेगी।"

'रियाया माल जमीनपर भी पक्का घर बनवा सकेगी।'

"साराश यह कि जमीन प्रजाकी है।"

गदाईने कहा 'सुना कोफोका भी हकूक होगा, बँटाईका भी।"

जगनने कहा, हा हाँ! वह हक्क हो जानेसे किसीका फिर रहेगा क्या? जा नाकम तेल डालकर सो जा। बँटाईकी सारी जमीन तेरी हो जायेगी।"

अपने स्वभावके मुताबिक देबू चुप बठा था। आज कई दिनोसे उसके मनम एक अशान्ति सी है। वह उस दिनकी बात सोच रहा था। उसकी बातपर बाउरी मोची वगैरह श्रीहरिकी उपेक्षा करके चले आये थे। अचानक किसी-न किसी ओरसे श्रीहरिका कठोर शासन दण्ड उनके सिरपर आ टूटेगा। उन लोगो को उस आघातसे बचाना है और बचाना उसीको होगा। न्यायके नाते उनको बचानेकी जिम्मेदारी उसकी है। लेकिन उसने एक उसास भरी। बिलू, मुना, जगह जायदादके बारम सोचनेकी उसे फुरसत नही। कभी-कभी एक सामयिक दुश्चिन्ताकी तरह उनकी याद भर आ जाती है।

जगन भाषण दिये ही चला जा रहा था, आज अगर देशबन्धु चित्तरजन दास जीवित होते, तो सोचना ही नही था।

उस नामसे मजलिसके सारे लोगोके बदन रोमाचित हो उठे। दशबन्धुका नाम सबने सुना है उनके बारेमें सभी जानते हैं उनकी तसवीर भी सबने देखी है। देबूकी आखोम उनकी तसवीर नाच उठी। मृत्युशय्याकी उनका जो तसवीर ली गयी थी उसकी एक प्रति फ्रेम करके उसने घरम टाँग रखी है। उस तसवीरके नीचे महाकवि रवीन्द्रनाथने लिख दिया है

साथ तुम लाये थे मृत्युहीन प्राण, मरणपर वही तुम कर गये दान।'

यतीनन भीतरसे बुलाया, पतिंगे!—वह चायकी खोजमें भीतर गया था।

बठकमें लोगोके बीच पतिंगेको मनमानी शरारत करनेका मौका नहीं मिल रहा था। कुछ देर तक रास्तेके उस ओर झाड़ियोंमें एक गिरगिटका शिकार देख रहा था। देखते-देखते जरा शान्त स्थिर हुआ कि सो गया। बेचारा!

हरननें डपटकर कहा अब तो छोड़े। ऐ!'

देवूने कहा, "छोड दो । लडका है, सो गया है ।" कहकर वह खुद ही उठकर अन्दर गया । यतीनसे कहा, 'क्या करना है, कहिए ?'

यतीनने कहा, "चायके कटोरे सबको दे दीजिए ।"

देवूने सबको चाय दी। चाय पीते-पीते जगनने शुरू किया महात्मा गान्धीके बारेमें। मोतीलाल, जवाहरलाल, यतीन्द्रमोहन, सुभाषचन्द्रके बारेमें।

चाय पीकर सब चले गये। सबसे अन्तमें गया देवू, गोकि जानेके लिए सबसे पहले खडा हुआ था वही। लेकिन यतीनने उससे कहा "आपसे कुछ बातें जो करनी थी देवू बाबू !'

देवू रुक गया। सबके चले जानेके बाद यतीन बोला, "अब देर मत करें देवू बाबू समितिका काम स्वीकार लें।"

समिति यानी प्रजा समिति। यतीन देवूसे उसका भार लेनेको कह रहा था।

देवू चुप रहा।

'आपके बिना यह सब नही होनेका, नही चलनेका। सभी आपको चाहते है। शायद इससे मन ही-मन डाक्टर जरा असन्तुष्ट भी हों। हो तो हो, लेकिन जब एक चीज बन गयी है, तो उसे बिगडने नही दिया जा सकता।

देवूने कहा, 'अच्छा, इसका जवाब मै आपको कल दूँगा।

यतीन हँसा, "जवाबका क्या है भार आपको लेना ही पडेगा।'

देवू चला गया। यतीन स्तब्ध होकर बैठा रहा।

छात्र जीवनमें उसने बगालके गावोकी दुर्दशा बहुत पढी है, बहुत सुनी है। बहुत-से सरकारी आकडो और पुस्तक पत्रिकाओमें भी पढी, मगर उसने ऐसे वास्तव रूपकी कल्पना नही की थी। अभी तो चैत ही है उपजका अन्न अभी तक खेतोसे खलिहानमें भी पूरा नही आ पाया है और इसी बीच लोगोका भण्डार खाली हो गया है। धान श्रीहरिके घर गया अथवा कलमें पहुँचा। गेहूँ जौ, उडद, आलू तक बेच दिया लोगोने। तिल खेतमें है, पर उसपर भी पैसार बेपारी दे चुके है। श्रीहरिके खलिहानमें इसी बीच एक भीड हो गयी। उसने उधार लगाना शुरू कर दिया धान। गाँवकी बहारका सारा कुछ महाजन के पास बन्धक है। महाजनोमें सबसे बडे है श्रीहरि। यानी ज्यादासे ज्यादा श्रीहरिके पास। गाँवका एक-एक घर जर्जर श्रीहीन है। लोग मूक है और मवेशी कमजोर। चारो ओर जगल-ही-जगल, टीले-गड्ढोने गाँवको घाट दिया है। उस दिनकी बारिशसे सारा रास्ता किचकिच हो गया। नहाने और पानीके पानार तालाबोका दलदल मिट्टर उठता पडता है। विशाल जलाशय, लेकिन पानी है मुश्किलसे थोडी-सी जगहमें गहराई महज हाथ-डेढ हाथ। उस

रोज़ उसने किसीको पलुआसे उसम मछली मारते देखा था। बीच पानीमें उसकी कमर तक भी ठीकसे नहीं डूबी।

ताज्जुब है, इस हालतमें लाग जिंदा है!

विशेषज्ञोंका कहना है, यह जीना प्रेतका जीना है। या कि क्षयके रोगीकी तरह दिन गिनना है। निश्चेष्ट आत्मसमर्पणसे तिल तिल मृत्युकी ओर अग्रसर हो रहे है सब। बिलकुल निरुद्यम होकर सबने अपनेको मृत्युके हाथों सौंप दिया है।

यहां प्रजा समिति टिकेगी? जमा पूँजी नदारद। बेसहारे खेतिहरोंके सामने खेतीका समय—कठिन गरमी विपदसंकुल वर्षा। आखोंके सामने श्रीहरिके खलिहानमें ढेरका ढेर धान। ऐसी जगहमें प्रजासमिति बचेगी कि किसीको बचा सकेगी? समितिका प्रथम और प्रत्यक्ष सबप तो श्रीहरिसे होगा। और होगा क्या शुरू तो हो ही गया!

सामने बरामदेपर फतिंगा सो रहा था।

गांवका भावी पुरुष वहां है! नितान्त गरीब बेचारा बेसहारा! स्वजन हीन आत्मसर्वस्व। जिस बसेरेको बसानेके लिए राग थी यानी लक्ष्मीकी तपस्या करके उसे हासिल करना चाहते हैं वही बसेरा इसका उजड़ चुका है!

एकाएक पदमकी ऊँची आवाज उसके कानों तक पहुँची। वह उसे डाँट रही थी। उसकी झनझनाहटसे उसकी विचारलीनता टूट गयी। पद्मी पूजाकी थाली हाथमें लिये पदम बकझक करती हुई सामने आ खड़ी हुई। स्नान कर चुकी थी पहनावम एक पुराना शुद्ध कपड़ा। बोली 'तुम भी कैसे लड़के हो? पचास बार तो कज़ार बजायी सुन नहीं पाते? खैर, फिर भी मेरा भाग्य कहो कि दल-बादल मत गया। लो उठो। टीका लगा लो।

यतीन हँसता हुआ खड़ा हो गया। शुचिस्मिता पदम उसके माथपर दहीं हल्दीका टीका लगाकर बोली तुम्हारी मा आज द्वारके चौखटेपर तुम्हें टीका लगायगी।

यतीनका टीका लगाकर उसने पुकारा "फतिंग! अरे आ फतिंगे! जरा नींद तो देखो छोरकी कुबलामें! फतिंगे!'

फतिंगा इस बीच मजेकी एक नींद सो चुका था। भूख लगनेका समय भी हो गया था, इसलिए दो-तीन बार आवाज देते ही जग पड़ा।

उठ खड़ा हो जा! टीका लगा दूं बटे! उठ!'

फतिंगाने खड़ा होने ही पहले हाथ पसार दिया—'प्रसाद! प्रसाद दा!'

पदम हँस पड़ी, ठहर, पहले टीका लगा दूँ!'

फतिंगा बड़े भले लड़के-सा खड़ा हो गया। माथा आगे करके टीका लगवा लिया।

यतीनने कहा, "ऐ फतिंगे, प्रणाम कर! प्रणाम करना चाहिए। ठहरा, मैं भी प्रणाम कर लूं, मा!"

"बाप रे, मुझे नरक भेजे बिना नहीं मानोगे तुम!"

और पदम झट फतिंगेको गोद उठाकर एक प्रकारसे भागकर ही अन्दर चली गयी।

चैतकी दोपहर। बरामदेकी चौकीपर यतीन अलसाया पड़ा था। चारों तरफ धूप तप रही थी। गरम हवा वहकती हुई जोरोंसे ही बह रही थी। बरगद, पीपल सिरायके बड़-बड़े पेड़ कोपलोंसे लदे। तापसे कोमल पत्ते मुरझा गये थे। उस दिन जो बारिश हुई तो उसमें खलाम हल चलने लगे थे। हल-बैल लिये हलवाहे खेतोंसे लौट रहे थे। सारा बदन पसीनेसे तर, स्वेद भिंचा काला चमड़ा धूपसे लोहेके पत्तर-सा चमक रहा था। बाउरी-मोची औरतें गोबर, लकड़ी-काठी बीनकर लौट रही थीं। ठीक सामने—रास्तेकी ओर उधर एक सिरीषके पेड़से लिपटी कोई लता थी—लताम लगना फूल। उसपर मड़राती हुई मधुमाछी गुनगुना रही थी—जैसे एक ऐक्य-संगीतका स्वर-जाल बुन रही हो। दो-एक फुनफुनी चिड़िया नाचती हुई इस डालसे उस डालपर आ जा रही थी। कहीं दूरपर दो कोयलें होड़ लगाकर कूक रही थीं। 'पी कहाँ' की आज बोलती बन्द थी। कहाँ गया, पता नहीं। कई टालियोंमें ऊपर धनबुसे उड़ रहे थे—तितली फसलकी तलाशमें। अनगिनत रंग बिरंगी तितलियाँ देवलोककी हवासे उड़ते हुए फूल-सी मड़रा रही थीं।

गन्ध, गीत और रंगकी छटामें गौरवा यह एक अनिर्वच रूप! इस गन्ध गीत और रंगमें धनिक गीला जमा एक मादकता हो जाता! यतीन उसी इशारे-पर जैसे मन्त्रमुग्ध होकर सहसा उठा और चल पड़ा। करीब ही किसी पेड़पर कोई चिड़िया बोल रही थी। बड़ी मीठी बोली। बोली ही नहीं उसकी बोलीमें मानो संगीतकी एक पूर्णता हो—वह मानो किसी गीतकी पूरी तान गाती जा रही हो! उस चिड़ियाकी तलाशमें यतीन झाड़ीमें घुस गया। ज़रा ही दूर गया कि उसे एक बहुत ही तेज़ गन्धकी महक मिली। वह उस आवाज़ और गन्धकी उनकी खोजमें आगे बढ़ा। अजीब है। यह चिड़िया और ये फूल उसके आगे मिचौनी खेल रहे हैं क्या? उनकी खोजमें वह जितना ही आगे बढ़ने लगा व

जमीदारखा ह हम विना मजूरी लिये क्या काम करें—ऐसोको वह बता देना चाहता ह कि विना कुछ दिये वे जमीनारका कितना स्त ह। जमीदारका महज कुछ पत्ता ही वे नही लेते बल्कि जमीदारकी जो जमीन परती पडी ह एकमात्र वही उन लोगोकी गोचरभूमि ह। जमीदारके निजी पोखरमें वे नहाते ह, वहीसे पीनेके लिए पानी लेते ह और उसीकी परती पडी जमीनपर-से उन लोगोंके जाने आनेका रास्ता ह। चण्डीमण्डप भी उसीके अधिकारमें होनेके कारण बिना मजरी लिये उसकी छौनी वे नही करेंग क्या ? इसीलिए उसने अपने नये प्यारे काल्‌ शेखको यह हुक्म दे रखा ह कि बाउरी-मोचीके मवशी जैसे ही जमीदारके बाधपर या परती जमीनमे घुसें उन्हें हकाकर सीधे कब्जावे अडगडेमें ले जाकर चालान कर दे। नया बहाल हुआ काल्‌ अपने मालिकको अपना काम दिखानेके लिए उतावला ह और फिर यह काम कुछ लाभका भी ह। अडगडावाले ऐसेसे की मवशी कुछ घूस देते ह। काल्‌ने युककर मालिकको सलाम ठोका और उसका हुक्म बजाने चल पडा। भूपालने उसे पहचान करा दी कि कौन-कौन जानवर श्रीहरिके अनुगत लोगोके हैं। बाकीको काल्‌ हॅका ले गया।

श्रीहरिके गाँव शासनका यह दूसरा दौर था। अगर लोग इसपर भी न समझें तो और भी उपाय ह। अवश्य, एकबारगी सख्त सजा वह नही देगा। अधम नही करगा। लक्ष्मीने उसपर कृपा की ह। यह उसके पिछले जन्मके सुकर्मका फल ह। उसका अपव्यय वह नही करेगा। दानके समान पुण्य नही दयासे बडा धर्म नही—सजा देते वक्त भी वह इस बातको नही भूलेगा। उसकी इच्छा थी कि जानवरोंको गपन हो यहाँ पकडवा मँगाये। लोग आ-आकर जब रोयें-पीटेंगे तो उन्हें अच्छी तरहसे उनकी गलती समझा देगा। ऐसमे उन्हें अडगडेके पसे नही दने पडेंगे। पैसे भी तो कुछ कम नही लेने पडते हैं। चार आने फी जानवर। इस तरह चालीस-पचास जानवरोंके दस-बारह रुपये भरने पड जायेंगे। और यदि कही जरा देर हो गयी तो अडगडावाला फी जानवर एक आनके हिसाबसे खुराकी वसूलेगा यद्यपि खुराकके नामपर एक बिचाली भी नही देता जानवर यो ही रहते ह। खुराकीके भी ढाई रुपयेके लगभग लग जायेंगे। मगर वह करता क्या ? यही कानून ह। कुछ गर-कानूनी करो तो देबू और जगन डॉक्टर उस आफतमे डालनेके लिए मामला चला सकते ह दरख्वास्त दे सकते ह। चण्डीमण्डपमें अकेले अपना गडगडा पीते हुए वह अलसाया आखो गाँवके हितुआका पुरुषार्थ देख रहा था। मगर इतनी जल्दी यह खबर फैलाया किसने ?

खबर ले आया था तारा हजाम! काल्‌ शेखने जानवरोंको घेरा तो

चरवाहोंने पाँवों पड़कर उसकी आरज़ू-मिन्नत की, "भई शेखजी, आपके पाँवों पड़ते हैं, छोड़ दीजिए। आज भर माफ कीजिए।"

एक अवसरपर इधरसे मयूराक्षीके बाँधपर-से ताराचरण भण्डारी आ रहा था। वह ठिठक गया। चरवाहे शेखकी डाँटसे डरकर कुछ हट जरूर गये थे, मगर जानवरोंका साथ नहीं छोड़ सके। दो-एक चरवाहे तो ज़ोर-ज़ोरसे रो पड़े।

कालूने कहा, 'अरे उल्लू, बेवकूफ! अपने घर जाकर कहो रे छछूंदर! यहाँ मत चिल्ला।'

लेकिन चरवाहोंने यह न समझा। वे उन जानवरोंकी ममतामें खिंचे पीछे-पीछे चलने लगे। उनका रोना थम नहीं रहा था। हाय-हाय क्या करें!

शेखने उनको खदेड़ा, "भाग, कह रहा हूँ!"

चरवाहे ज़रा भागे। मगर शेख ज्यों ही आगे बढ़ा, वे लोग फिर पीछे हो लिये।

ताराचरण समझ गया कि माजरा क्या है। कल जब वह श्रीहरिके पाँवके नाखून काट रहा था, तो उसे इसका थोड़ा-सा आभास भी मिला था। ताराचरण झट गाँव लौटा। दबूके पीछेके दरवाजेसे चुपचाप उसे बताकर चला गया। बोला, 'जानवरोंको छुड़ानेका जल्दी इन्तज़ाम कराओ भैया, वरना नाहक ही एक आना करके खुराकी भी लग जायेगी। वह भी बाद तीन रुपया हो जायगा। और कहीं छह बज गये तो आज छोड़ेगा भी नहीं। कल फी जानवर दो आनेके हिसाबसे अदा करना होगा।'

ताराचरण पीछेके ही दरवाजेसे निकला। उसको पता था कि श्रीहरि ज़रूर अभी चण्डीमण्डपमें ही बैठा होगा। और उस जगह दबूके यहाँसे निकलते देख ले तो शुबहा करेगा। उसने झाड़ियोंकी आड़में चण्डीमण्डपकी ओर उचक कर देखा—उसका अनुमान एकदम ठीक था। उसके मुँहपर एक हल्की हँसी फैल गयी।

दबू कुछ देर मार्गपर नज़र गड़ाये बैठा रहा। उन कई दिनोंमें जिस प्रकारकी आशंका थी, वह प्रहार आज पड़ गया। इसकी सारी ज़िम्मेदारी उसीपर है, इस बातको वह कभी एक पलके लिए भी अस्वीकार नहीं कर सका। सो इस प्रहारके आते ही उन बेकसूर पशुओंको बचानेके लिए वह सजग होकर सोचने लगा।

"ये गरीब पैसे भी कहाँसे लायेंगे?" ताराचरण बता गया, फी जानवर एक

आना ज्यादा लगेगा—यानी ढाई-तीन रुपये ज्यादा। इसका मतलब कि जानवर चालीस पचासके करीब होंगे। उसने मन ही मन हिसाब लगाकर देखा, दस पन्द्रह रुपये भरने होंगे। ये रुपये कहाँसे लायेंगे वे? न तो घर है न द्वार, जमीन जायदाद भी नहीं। सहारेको सिर्फ टूटा मकान है और ये गाय-बकरियाँ हैं। गायका दूध बेचते हैं, गोबरके गोयठे बेचते हैं, गाय-बैल-बकरियाँ बेचते हैं। यही उनके एकमात्र अवलम्ब हैं। ऐसे मौकेपर पाँच रुपये तो दे सकता है, मगर वसूल एकके दो करेगा। और फिर उन बेचारोंकी इस मुसीबतका एकमात्र कारण देबू ही है। देबू समझता है कि श्रीहरिके सामने झुक जानेसे ताड़के पत्तेका मामला सहज ही चुक जाता। लेकिन अन्यायको नहीं माननेके लिए उसीने तो लोगोंको उकसाया। आज जब अपने ऊपर आन पड़ी है, तो न्याय और धर्मको सिर आँखों उठाये बिना कैसे चलेगा?

कुछ क्षण और सोचनेके बाद उसने अपना सिर ऊँचा किया। आवाज दी—'बिलू!'

ताराचरणके आते ही बिलू भी आकर ओटमें खड़ी हो गयी थी। उसके चले जानेके बाद भी वह देबूके सामने नहीं आयी, चुपचाप आड़में ही खड़ी रही। उन्हीं गरीबोंके बारेमें सोच रही थी। हाय बेचारे! उनपर भी ऐसा जुल्म किया जाता है कहीं! सुनसान दोपहरीमें हरिजन टोलेकी औरतोंका रोना सुनाई पड़ रहा था। बिलूको भी रोना आ गया। वह भी रोने लगी। देबूने आवाज दी, तो वह झट आँखें पोछकर सामने आ खड़ी हुई।

देबूने बिलूके अंग-अंगपर गौर किया। कहीं भी सोनेका कोई टुकड़ा न था। सेतिहरोंके यहाँ सोनेका खास चलन नहीं—बहुत हुआ तो नाककी कील करनफूल गलेमें सिकड़ी हाथमें सोना-बँधी शंखकी चूड़ियाँ। बिलूके सारेके सारे खतम हो चुके थे।

बिलूने पूछा, "क्या कह रहे हो?"

"और कुछ भी नहीं है?"

"क्या?"

"ऐसा कुछ जिसे बन्धक रखकर पन्द्रह रुपये तक मिल सकें?"

कुछ क्षण सोचकर बिलूने शायद मन-ही-मन अपने सारे भण्डारकी तलाशी ली। उसके बाद वह अन्दर गयी और एक जोड़ा पतली बालियाँ लिये बाहर निकली।

देबू दो कदम पीछे हट गया—"मुन्नेकी बालियाँ?"

"हाँ!"

ये बालिया मिलूके बापने दी थी। देवूकी लम्बी अनुपस्थितिमें हज़ार कष्ट होनेपर भी बिलू इन बालियोंको बचाये रही थी। बोली, "लो!"

"मुन्नेकी बालियाँ लूँ?"

"क्यों नहीं? जब तुम्हारे पास होगा, बनवा देना।"

"और न हो पाया, न बनवा सका तो क्या होगा?"

"तो क्या, मुन्ना नहीं पहनेगा।"

देवूने अब झिझक नहीं की। बालियाँ ली कुरता पहना और तेज़ीसे निकल पड़ा।

जानवरोंका अड्डा छुड़ाकर वह गामको लौटा। आधे दिन तक धूपमें चक्कर काटता रहा, कपड़े पसीनेसे तर थे। ऊपरसे इतने जानवरोंकी खुरसे उड़ती हुई धूल। बदन किचकिच हो गया। उस समय यतीनके पास खासी एक मजलिस जमा थी।

प्राय सबने एक हो साथ पूछा, "क्या हुआ?"

"जानवर छुड़ा लिये गये!" देवू सूखी हँसी हँसा।

"कितने लगे?"

देवूने इस बातका जवाब नहीं दिया। कहा, "यतीन बाबू!"

"कहिए!"

"आपसे एक बात कहनी है।"

"ठहरिए! आप बड़े थके मांदे लग रहे हैं। पहले आपके लिए ज़रा चाय बना लाऊँ।"

"छोड़िए! मैं घर जाऊँगा। बात कहकर ही जाऊँ।"

यतीन देवूको छोड़कर अन्दर चला गया।

देवूने पीछेसे पुकारते हुए कहा, "प्रजा-समितिका भार मैं लूँगा।"

"रुकिए! चाय पानेके बाद ही आपको जाने दूँगा।"

उसने अन्दर आवाज़ दी 'माँ!"

किसीने जवाब नहीं दिया।

पद्म घरमें नहीं थी। वह पनिघटकी साँझमें निकली थी। वह अभीतक लौटी नहीं थी। उसका ढूँढ़ना गयी थी।

यतीनने खुद चायका पानी चढ़ा दिया।

हरेन घोषालका जोश—वह एक अजीब चीज है! उसने गावकी गली गलीमें ऐलान कर दिया प्रजा समितिकी बैठक है। प्रजा-समितिकी बैठक। जगह बताना वह भूल ही गया। तय था कि बैठक बाउरी टोलेके धर्मराज थानमें होगी। लेकिन चूंकि घोषाल जगह बताना भूल गया इसलिए लोग-बाग नजरबन्द बाबूके घरके सामने आ जुटे क्योंकि प्रजा-समितिके सारे उत्साहका मूल वहींपर था। हरेनने कहा कि बैठक अब यहीं हो जाये। यहासे अब वहा क्या जाना। इसके सिवा जरूरत होनेपर यहां चाय बनेगी। कुरसी मेज है। यहीं हो!

और यह कहते ही वह यतीनकी मेज-कुरसी बाहर खींच लाया। बदस्तूर सभा-मच तयार कर दिया। इसी बीच उसने दो मालाएं भी गूथ ली थी। इसमें भूल नहीं होती उससे।

काफी लोग जुट गये। बाउरी-मोची लगभग सभी आये। गावके खेतिहर भी आये। खास करके आज जानवरोंको जङ्गलमें चालान करानेवाली बातसे सभी खासे उत्तेजित हो उठे थे। मयूराक्षीका बाँध भले ही जमींदारके खास खतियानमें अन्तर्गत हो उसे बाँधा तो रयतोंने ही है। वहा लोग सदासे मवेशी चराते आये है। और गावकी परती जमीनका उपयोग भी लोग सदासे चराखरकी तरह करते आये है। वहा गाय गोरू चरानेका अधिकार नहीं है इस बातने सबको जोशमें ला दिया था। आज वह जुल्म बाउरी मोचियोंपर ढाया गया, कल यह कानून सबपर लागू नहीं होगा, यह कौन कह सकता है? बाउरी मोची लोगोंने उतना समझा नहीं। उन लोगोंने यही सुना कि देबू गुरुजी समितिके अगुआ होंगे। इसीलिए वे एहसानमन्द-से आये। गुरुजीने आज उन लोगोंके लिए जो किया है इसकी कल्पना वे सपनमें भी नहीं कर सकते थे। ऐसा कभी कोई नहीं करता। वे कृतज्ञ होकर आये निर्भय होकर आये।

उनके टोलेमें आज घर घर गुरुजीकी चर्चा थी। यहांतक कि दुर्गाकी माँ भी खुले दिलसे आशीर्वाद दे रही थी— सिरके बाल जितनी परमायु हो सोनेकी दावात-कलम हो गुरुजीकी! बेटेपर बेटा हो लक्ष्मीकी अपार कृपा हो! गुरुजी सोनेका आदमी है यह जमाई हमारा सचमुच सोनेका आदमी है!

सांझको अपने घर तकियेपर छाती टिकाये खिड़कीसे बाहरकी तरफ ताकती हुई दुर्गा भी यही सोच रही थी कि—गुरुजी सोनेका आदमी है, सोनेका! बिलू दीदी भगवती है! दुर्गाकी आँखोंमें आज वह नजरबन्द बाबू भी फीका पड़ गया

था। उसके जीम एक वार वठकमें आनेकी बात आयी—चलकर जरा देख आये कि वठकमें दस जनोंके बीच गुरुजी सिर ऊँचा किये कैसे वठे हैं। फिर सोचा नहीं। बठक हो ल, तव वह बिलू दीदीके यहा जायगी। जाकर गुरुजीसे थोड़ा हँसी मजाक करेगी और उनके जवावमें थोड़ी-कुछ डाँट धमक खा आयेगी। सोचन लगी बात शुरू कस की जायेगी गुरुजीसे!

और उधर नजरवार बाबूसे भी बतियानेके लिए बहुत सी बातें उसके मनमें घुमड़ने लगी थी।

"महुएका रस कैसा लगा बाबू ?

दुर्गा अपने ही मनमें हँसी। बाबूकी आँखोंमें दौड़ती हुई लाली उसने अपनी आँखा देखी थी। मगर गुरुजीसे क्या कहेगी ?

दुर्गाके काठेके सामने है अमरकुण्डका बहार उसके बाद मयूराक्षीका बाँध। बीचारका एक रास्ता आती दाखी। रोशनी बहारमें उतरी।

'गुरुजी बड़े गम्भीर आदमी है।"—उसने दीघ नि श्वास छोड़ा। उसके बाद एकाएक वह खुशीसे चचल हो उठी। गुरुजीसे बात करनेका बहाना मिल गया था।

गुरुजी आप कहें, फिरसे पाठशाला खोलें!

पढ़ेगा कौन ?'

'कोई पढ़े न पढ़े म पढ़ूँगी। म लिखना पढ़ना सीखूँगी।'

अरे रोशनी उधीर गाँवकी तरफ आ रही है। हाथमें झूलती हुई लालटेन की रोशनीमें चलते हुए आदमीके दोनों पाँव साफ दीख रहे है। कौन? कौन है वे? एक तो लालटेन लिये है उसके पीछे एक कोई और है। एक नही दो जन। नालेके किनारे किनारे भी गाँवमें आनेका सीधा रास्ता है। आनेवाले वहीं पहुँच गये थे।

अरे! —यह तो चौकीदार है। यह तो हाथमें रोशनी लिये भूपाल चौकीदार है। उसके पीछे है जमादार और जमादारके पीछे वह सिपाही। ये लोग ठीक पाड़ेमें यहीं आ रहे हैं। ठीक पहलेके जमानेमें रातको जमादारका आना या कोई नयी बात नहीं। पहले उस जमानेमें इलाका भी नियमित आता रहता था। लेकिन पाड़ेमें आना जमादारके साथ सिपाहीका होना तो बात नहीं! और जमादारका पाड़ेमें ही आज ऐसा क्या है? आज तो वह जमादारकी वर्दी पहने पड़ेमें है। सिपाहीके सिरपर मुरेठा है। और ठीक आना समय ता कभी रातके पहले पहरमें नहीं होता। वह होता है आधी रातमें—रातके बारह बजे।

दुर्गा एकाएक जरा चौंकी। अचानक उसे नजरबन्द बाबूका याद आ गयी, गुरुजीकी याद आ गयी। पता नहीं, क्यों। लेकिन याद उन दोनोंकी आयी। वह उतरी और राहपर निकली। अँजारियाकी छठीका चाँद डूब चुका था। अँधेरेकी ओट ले दुर्गाने झाडियोंकी राह उन सबका पीछा किया।

चण्डीमण्डपपर आज अँधेरा था। आज छिरू वहाँ नहीं बैठा था। घोष बाबू के खलिहान घरके बैठकेमें रोशनी जल रही थी। भूपालकी रोशनी जाकर वहीं रुकी। जशन हो है। चण्डीमण्डप देवस्थान ठहरा, वहाँ ऐसा नहीं होता। मगर श्रीहरि आजकल क्या तो याद आते ही दुर्गाकी हँसी रोके नहीं रुकी।

कोई कोई गोरू रातको रस्सी तुडाकर खेत चरता है जाकर। जिसे इसका स्वाद एक बार मिल गया, वह फिर कभी भूल नहीं सकता। उसे जंजीरमें ही क्या न बाँधो खूँटा उखाडकर रातको खेतमें पहुँच जायेगा। छिरू पाल शायद साधु बन गया है। दुर्गा इसीपर हँसी। लेकिन यह नयी औरत कौन है? कोई न-कोई होगी। मगर कौन? दुर्गा कौतूहलको रोक नहीं सकी। श्रीहरिके घरके हर गुप्त रास्तेका उसे पता है—जानें कितनी रातोंमें वह वहाँ जा चुकी है। उसने कलाईकी चूड़ियोंको ऊपर खींच लिया और श्रीहरिके घरके पिछवाड़े जाकर चुपचाप खड़ी हो गयी। भीतरकी बातें साफ सुनाई दे रही थीं। उसने कान लगाया।

जमादार कह रहा था बेनाग दो साल ठोक दूँगा।"

श्रीहरिने कहा 'तो फिर चलिए। कमिटीकी बैठक जोराम जमी है। जगन डाक्टर साला हरेन घोषाल गिरीश बढ़ई और अनिरुद्ध लुहार तो हैं ही। स्वयं नजरबन्द बाबूका ही घेरकर सब बैठे हैं।

जमादारने कहा जल्दीसे चाय मँगवाओ। चाय मैंने नहीं पी है।'

खबर श्रीहरिने ही भिजवायी थी। नजरबन्द बाबूके यहाँ प्रजा समितिकी बैठक है। जमादारको मलामीका इशारा करते हुए सलाम भेजा गया था। जमादारको अपने आपकी भी आशा थी। नजरबन्द बाबूको वह कानून भंग षड्यन्त्र या ऐसे किसी मामलेमें फँसा सके तो उसकी तरक्की होगी या पुरस्कार मिलेगा। कुछ भी न हो तो विभागसे सर्टिफिकेट तो जरूर मिलेगा। और श्रीहरिकी सलामी सेंतमेंतमें।

दुर्गा सिहर उठी। चुपचाप तेज चालसे वह घरके पिछवाड़ेसे रास्तेपर आ गयी और कुछ क्षण सोचती रही। फिर मजेमें चूड़ियाँ झनकाती हुई गाँवपर चलने लगी। दूसरे ही क्षण किसीने टोका कौन है? कौन जा रही है?

मैं हूँ।

"मै कौन ?"

"मै मोचीटोलेकी दुर्गादासी हूँ।"

"ओ, दुर्गा! सुन! सुन जा!"

"नही आती।"

अबकी भूपाल आया। बोला, "जमादार बाबू बुला रहे है।"

भरमुँह हँसती हुई दुर्गा अन्दर गयी। बोली, 'हाय राम! अभी तो लग रहा था कि आवाज पहचानी-सी लग रही है और पहचान नही पा रही हूँ। जमादार बाबू! खुशनसीबी अपनी। आज जाने किसका मुँह देखकर जगी थी।'

जमादारने हँसकर कहा, 'माजरा क्या है, बता तो सही। सुना आजकल प्रेममें पड गयी है? पहले तो अनो लुहारके, और अब सुन रहा हूँ—नजरबन्द बाबूसे!'

दुर्गाने हँसकर कहा, "कहा तो आपके नेक दोस्त पालने ही होगा!" दूसरे ही क्षण बोली "अब तो शायद गुमाश्ता बाबू कहना होगा? गुमाश्ताजीने गलत कहा है, गुस्सेसे कहा है।"

जमादारने टोका, 'गुस्सेसे? गुस्सा तो खैर हो ही सकता है। तूने पुराने मितवाको छोड़ा क्यो?'

दुर्गाने कहा 'जी, आपके मितने तो सारे मोची टोलेको आग लगाकर फूँक दिया। मन घरको टिनसे छवानेके लिए रुपये माँगे तो आपके दोस्त हजरतने साफ अँगूठा दिखा दिया। झूठ कह रही हूँ कि सच, उन्हीसे पूछिए। घरको उसने आग लगायी थी या नही जरा वह बताये तो।"

श्रीहरिका चेहरा बदरंग हो गया। जमादारने उसकी ओर देखकर कहा, "यह दुर्गा क्या कह रही है पाल बाबू!" जमादारका कण्ठस्वर पलभरमें बदल गया।

दुर्गाने अन्दाजसे समझा खिसकनेका मौका आ गया है। उसने कहा "घाट हो आती हूँ जमादार बाबू!"

जमादारने दुर्गाकी बातका कोई जवाब नही दिया। वह स्थिर दृष्टि श्रीहरिकी ओर देख रहा था। उस दृष्टिका मतलब दुर्गा भलीभाँति जानती है। यह है जुर्माना वसूलनेका पूर्वराग। यह अध्याय समाप्त होनेमें कुछ समय लगेगा। घाट जानेके लिए निकली तो मगर तुरन्त पलटकर दुर्गाने अपनी देहको लालित भंगिमासे लहराकर कहा, 'लेकिन आज माल चाहिए दरोगा बाबू! नहीं मानूँ!' और फिर वह घाटकी तरफ चली गयी।

श्रीहरि शिवकालीपुरका बीच जनस्थानका भला है। पंचायती है।

इमली शिरापके पड कुछ इस कदर घने हो गये है कि दिनमें भी वहाँ कभी धप नहीं पडती। नीचे घनी कँटीली झाडिया उग आयी ह। चारा तरफ दीमक के वल्मीक है। उनके भीतर खोफनाक सापाका डेरा ह। श्रीहरिके पिछवाडे-का पोखरा साँपके लिए मशहूर ह। खासकरके च द्रवोडा साँपके लिए। शामसे ही उस सापकी सीटी सुनाई पडती ह। पोखरेके पास जाकर दुर्गा पानीमें नही उतरी वह जगलमें धँस गयी। निशाचरीकी नाई निर्भय चुपचाप चलकर वह जगल पार करके जल्दी जल्दी इस पार आ निकली। यहासे अनिरुद्धका घर करीब ही था। बत्तकी रोशनी वही तो दिखाई पड रही ह! दौडकर दुर्गा अनिरुद्धके पिछवाडकी खिडकीसे कूदकर अन्दर घुस गयी।

प्रजा-समितिके सभापतिका चनाव हो चुका था। अनिरुद्ध चाय चला रहा था! जगन सोच रहा था—विदा होनेवाले सभापतिको हसियतसे वह एक जोशीला भाषण देगा। और देबू अपने नये उत्तरदायित्वकी सोच रहा था। अचानक एक छायामूर्तिको जल्दीसे अनिरुद्धके पिछवाडेकी ओर जाते देखकर सभी चौंक उठे। एडी चोटी सफेद कपडसे लिपटी—तेज किन्तु लघुपदकी चालमें गहनाकी रुनझुन!—कौन ह यह? कौन गयी?

अनिरुद्ध तजीसे घरके अन्दर गया। पद्म थी? इस तरहसे वह कहाँसे दौडी आयी? कहाँ गयी थी?

'लुहार?

"कौन ह?'

"दुर्गा!' —दुर्गाका कण्ठस्वर! क्रोध और खीजसे अधीर होकर अनिरुद्ध दुर्गाके सामने गया— क्या ह?'

दुर्गाने दो सक्षेपमे श्रीहरिके घर जमादारके आनेका समाचार दिया और जैसे आयी थी वैसे ही तजीसे गहनोंकी रुनझुन बजाती हुई गायब होनेवाले रहस्यकी तरह देखते ही देखते ओझल हो गयी। दौडकर वह फिर उसी पोखरे की घनी नारियोंमें पहुँची।

घाटमे हाथ मुँह धोकर जब वह श्रीहरिके कमरेमें पहुची तो अगलगीवाले मामलेका काम किनारा हो चुका था। जमादारकी नजर प्रसन्न थी। दुर्गाकी ओर देखकर उसने पूछा— हाँफ क्यों रही ह?

आतकसे आँखें फाडकर दुर्गाने कहा साँप।

"साँप? कहाँ?

"घाटपर। इत्ता बडा चन्द्रबोडा। यह देखिए जमादार साहब! यह कहकर उसने अपना दायाँ पाँव रोशनीमे उठाया। एक जगहसे ताजा लहू बह रहा था।

जमादार और श्रीहरि दोनों डर गये। सर्वनाश! जमादार बोला, "बाँधो, रस्सीसे बाँधो जल्दी। पाल, रस्सी ले आओ।"

रस्सीके लिए अन्दर जाते हुए खीझसे श्रीहरि बोला, 'अजीब आफ़त है! कहाँसे यह बला आयी!' श्रीहरि रस्सी ले आया। भूपालको थमाते हुए बोला, "बाँध इसे। जमादार साहब, चलिए, इतनेमें हम उधरका काम कर लें।"

दुर्गाने विवश और करुण आँखोंसे जमादारकी ओर देखते हुए कहा, "क्या होगा जमादार साहब?" उसकी आँखोंमें पानी छलक आया।

जमादारने दिलासा दिया—'डरनेकी बात नहीं।' भूपालके हाथसे रस्सी लेकर वह खुद ही बाँधने बैठ गया। भूपालसे कहा, "जल्दी थाने जा। भागकर देविमन लेता आ। और ओझाको फौरन बुला।'

दुर्गा बोली, "मुझे घर भिजवा दीजिए। मैं अपनी माँकी गोदमें मरूँगी।"

श्रीहरिने कहा, "हाँ, यही ठीक है। भूपाल, इसे घर पहुँचाकर दीनू ओझा और मीता गराईको बुला दे। भागकर जाना और भागकर आना। चलिए जमादार साहब!"

अनिरुद्धके बरामदेमें तख्तपर यतीन अकेला बैठा था, उसने जमादारकी अगवानी की, "इतनी रातको किधर छोटे दरोगा साहब?"

जमादार जरा देर चुप रहकर बोला "गया था एक गाँवमें। लौटते वक्त सोचा, जरा आपकी मजलिस भी देखता चलूँ। मगर कहाँ, यहाँ तो कोई नहीं है!"

यतीनने कहा 'आप आये हैं घोष बाबू आये हैं बैठ जाये मजलिस! अबे ओ पर्तिगे, जरा चायका पानी चढ़ा।'

भूपालने दुर्गाको घर पहुँचा दिया और दवा तथा ओझाके लिए चला गया। दुर्गाकी माँने चीख-पुकार शुरू कर दी। उसकी चीखसे टोलेके लोग जुट गये। पातूकी बहूने करुणा भरी ममतासे बार-बार पूछा 'कौन सा साँप था ननद जी? साँपको देखा?'

दुर्गा बड़े ही कातर स्वरमें बोली 'बाबा रे, तुम लोग भीड़ हटा दो।' वह छटपटाने लगी। इस मुहल्लेका सतीश कामार आदमी है। तरह-तरहकी दवा-मन्तर रखता है। साँपकी भी दो-चार दवा वह जानता है। वह दवाकी खोजमें लगभग दौड़ता हुआ ही निकला। कुछ देरमें लौटा। एक जड़ी दुर्गाको देकर बोला 'इसे चबाकर देखो तो कड़वी लगती है या मीठी।'

दुर्गाने जड़ी मुँहमें रख ली। तुरन्त थूक दिया— थू-थू।'

सतीशने भरोसा पाकर कहा, 'कड़वी लगी—तो डरनेकी कोई बात नहीं है।'

दुर्गा जमीनमें लोटती हुई बोली "मिठाससे उबकाई आ रही है रे! बाबा रे! वह देखो, कौन आ रहा है? ओझा तो नहीं?"

ओझा नहीं था। जगन डॉक्टर, हरेन घोषाल, अनिरुद्ध तथा और भी कई जने थे।

जगनने आकर झट दुर्गाका पैर खींचा—"वह, साफ दांतका दाग है!"

पातूकी आंखोंसे आंसू बह रहे थे। वह बोला, 'क्या होगा डॉक्टर बाबू?"

जगनने जेबसे छूरी निकाली। कहा, मैं देता हूँ दवा। अनिरुद्ध तुम परमैंगनेट पोटाशको सँभालो तो जरा, मैं नश्तर लगाता हूँ, तुम दवा डाल देना।'

दुर्गाने पैर खींच लिया, 'नहीं नहीं! छोड़ो!"

नहीं क्या?'

"नहीं! मरेको अब और मार मत लगाओ।

'घोषाल! पकड़ो तो इसका पैर।'

घोषाल चौंक उठा। मौका पाकर पातूकी बीवीसे आंखें लड़ाते हुए वह हँस रहा था।

दुर्गाने फिर दर्द स्वरमें कहा, नहीं-नहीं नहीं!

जगनने खीझकर कहा, तो मर तू!"

दुर्गा औंधी पड़कर चुपचाप रहकर टूट गयी मानो। उसका सारा शरीर रुलाईके आवेगमें थर-थर काँप रहा था।

अनिरुद्धकी भी आंखोंमें आँसू आ रहे थे। किसी तरह अपनेको जब्त करके वह बोला दुर्गा! ओ दुर्गा! डॉक्टर जो कह रहा है उसे मान जा।"

दुर्गाका कम्पित शरीर नकारनेकी भंगिमासे काँप उठा।

जगन नाराज होकर चला गया। अनिरुद्ध ओझेकी तलाशमें निकल गया। कुसुमपुरमें एक नामी ओझा है। हरेनने एक बीड़ी सुलगायी।

पास ही एक रोशनी आकर रुकी। उस रोशनीके पीछे जमादार और श्रीहरि थे। अब घोषाल भी खिसक पड़ा।

जमादारने सतीशसे पूछा अब कैसी है?'

'जी अच्छी नहीं है। छटपटा रही है।

गराई नहीं आया है?

'जी नहीं।

"घाव वाव, आप और किसीको भेज दीजिए। म थानेसे रेक्सिन भिजवाता हूँ, आइए!"—जमादार और श्रीहरि चले गये।

कुछ देर और छटपटाकर दुर्गा कुछ सम्हली। बोली 'सतीश भया आपकी दवा अच्छी है। मुझे अब अच्छा लग रहा ह।" और थोड़ी देरके बाद वह उठ बठी।

सतीशने कहा, 'मेरी दवा अचूक ह।'

दुर्गा बोली बहू, मुझ ऊपर ले चलो।

ऊपर दुर्गा बिस्तरपर बैठी। अपने जूड़से एक काँटा निकालकर उसकी नोक-को घुमा फिराकर देखा।

पातूकी बहूने पूछा तुमने साँप देखा? कौन-सा साँप था?

दुर्गाने कहा, 'काला साँप था!" उसके होठोंपर बड़ी छिपी सी हँसीकी एक रेखा खेल गयी। उसे साँपने नहीं काटा था। अनिरुद्धके घरसे लौटते वक्त ही उसने माथकी काँटीसे परमें लहू-लुहान चिह्न बना लिया था। नहीं तो क्या बढ़कर सब लोग भागनेका मौका पाते या कि जमादार ही उस छुटकारा देता? शराब पीनेपर जमादारकी जो शक्ल होती ह—स्मरण करके दुर्गा सिहर उठी। दुर्गाके मनमें भय था कि अनिरुद्धके घरपर उसके जानेकी बात लोग कह देंगे, पर सौभाग्यसे किसीको भी उसकी याद न थी।

लेकिन नजरबन्द बाबू देबू गुरुजी उसकी ऐसी हालत सुनकर भी उसे जरा देखने नहीं आये?

सच क्या ह इसका तो किसीको पता नहीं, फिर भी नहीं आये ये? नजरबन्द बाबूको तो रात रातमें निकलनेकी इजाजत नहीं ह। जमादार यहीं था, छिप पाता ह ही। सो नजरबन्द बाबू न आये, एक बात ह। लेकिन गुरुजी? गुरुजी क्यों नहीं आये?

मारे उसकी आँखोंमें आँसू आ गये। जगन डॉक्टर आया था, अनिरुद्ध आया था हरेन मामा आया था गुरुजी नहीं आये!

पातूकी बहूने पूछा, ननद जी, और जलन ह?"

'जा बहू, तू जा। म जरा सोऊँगी।'

नहीं! आज तुम्हें सोने नहीं दिया जायगा।

दुर्गा अब गुस्सेसे अधीर हो गयी— नहीं सोऊँगी नहीं सोऊँगी। मेरी मौत नहीं आवेगी। म मरूँगी नहीं। तू जा मरने।

पातूकी बहू दुःखी होकर चली गयी। दुर्गा तकियेमें मुँह गाड़कर पड़ी रही।

कौन ? नीचे कौन पुकार रहा है ? 'पातू दुर्गा कैसी है रे ? —हाँ, गुरुजीकी ही तो आवाज है। हाँ-हाँ, जीनेपर पैरोंकी आहट।

"कैसी है अब दुर्गा ?' पातूके साथ देबू अन्दर आया।

दुर्गाने जवाब नहीं दिया।

'दुर्गा !'

अबकी दुर्गा बोली 'अबतक अगर मर गयी होती गुरुजी ?'

देबूने कहा 'मैंने खोज-पूछ की थी। पता चल गया था कि तू अब अच्छी है। वह चरवाहा छोरा देख गया था आकर।

दुर्गाने फिर तकियेमें मुँह गाड़ लिया—कमबख्त चरवाहा छोरा खोज कर गया। मौत मेरी !

देबूने कहा, घर आकर बैठा ही था कि महाग्रामके ठाकुर पधारे। करता क्या, अब उन्हें विदा देकर आ रहा हूँ।

महाग्रामके ठाकुर ?' दुर्गाके अचरजकी सीमा नहीं रही।

महाग्रामके ठाकुर ? महामहोपाध्याय शिवशेखर न्यायरत्न ? साक्षात देवता ! जो राजाके भी यहाँ नहीं जाते वह !

न्यायरत्न देबूके घरपर आये थे। इसपर खुद देबूको भी अचरजकी सीमा नहीं थी। बिल्कुल अचानक ही वह आ पहुँचे थे। हुआ इस तरह—

यतीनके यहाँसे लौटा तो वह दुर्गाकी ही सोच रहा था। दुर्गा अजीब है दुर्गा ! नालों है दुर्गाकी तुलना नहीं हो सकती। बिलूने सारा कुछ सुन लिया था सो वह दुर्गाकी तारीफमें पंचमुख हो रही थी। कहानीकी लाल हीरा-जैसी देख लेना तुम अगले जनममें उसका जनम किसी अच्छे घरमें होगा। वह जिसकी कामना करके मरेगी वही उसको पति मिलेगा।

ठीक इसी समय किसीने दरवाजेपर आवाज दी— मण्डलजी घरपर हैं ?

आवाजसे देबू समझ नहीं सका कि कौन है। ध्वनि आवाज सम्भ्रमपूर्ण था। उसने विस्मयसे पूछा कौन ?' और कहते-कहते ही वह बाहर निकला।

मैं हूँ ! लालटेन लिये एक आदमी आगे था उसके पीछेसे उत्तर आया— 'मैं विश्वनाथका दादा !

अचरज और सम्भ्रमसे देबूकी बोली खो गयी। उसके रोंगटे खड़े हो गये। विश्वनाथके दादा—महामहोपाध्याय शिवशेखर न्यायरत्न ! उसका शरीर काँप उठा। उसी क्षण अपनेको सम्हालकर उसने उनको साष्टांग प्रणाम किया।

"मैं तुम्हें आशीर्वाद देनेके लिए ही आया हूँ। मंगल हो तुम्हारा धर्म तुम्हें कभी त्याग न करे। जयी रहो! तुम्हारी जय हो।"—कहते हुए उन्होंने उसके सिरपर हाथ रखा। फिर बोले, 'अपना कमरा खोलो कुछ देर बैठूँ।'

इतनी देरके बाद देबूको ख्याल आया। उसने झटपट कमरा खोल दिया। दरवाजेपर खड़ी बिलूने सब देखा था, सब सुन लिया था। उसने अन्दरसे आसन उठाकर लाकर अपने घरमें जो सबसे अच्छा आसन था लाकर बिछा दिया। उसके बाद हाथमें लोटा लिये खड़ी हुई आकर।

न्यायरत्नने कहा, "पाँव धुलाओगी बिटिया? जरूरत तो नहीं थी।"

बिलू खड़ी रही। आखिर न्यायरत्नने पाँव बढ़ाया 'लो!'

बिलूने उनके चरण धोये और सिल्कके कपड़ेसे जतनसे पोंछा। बैठते हुए न्यायरत्न बोले, "अपने बच्चेको लाओ आशीर्वाद दूँ उसे भी।"

देबूके चारों तरफ अचरजका जैसे मोहजाल फैल गया था। किस अजानी खुशकिस्मतीसे उसके यहाँ रातके इस अँधेरेमें एकाएक स्वर्गके देवता उतर आये हैं। कल्याणका आशीर्वाद लिये उसका घर भर देनेको आ गये हैं।

बिलूने सो रहे शिशुको लाकर न्यायरत्नके चरणोंपर रख दिया।

न्यायरत्नने बच्चेको देखकर कहा "विश्वनाथका बच्चा इससे छोटा है। अभी अभी तो उसको खीर खिलायी गयी है, आठ महीनेका है। फिर मुन्नेके माथेपर हाथ रखकर बोले, 'यह दीर्घायु हो भाग्य इसपर प्रसन्न हो।'—कहनेके बाद ओढ़ी हुई चादरके अन्दरसे गाँठ खोलकर उन्होंने दो बालियाँ निकालीं। कहा 'लो!'

देबू और बिलू—दोनों अवाक् रह गये। वे बालियाँ वही मन्नेवाली थीं। आज ही तो गिरवी रखी गयी थीं।

'लो! मेरी बात गिरानी नहीं चाहिए बिटिया! लो, सम्हालो।'

बिलूने बालियाँ ली। उसके आँसू बहते रहे थे।

'बच्चेको पहना दो बिटिया! आज अन्नप्राशनकी है तुम्हारी दुनिया शोक हीन आनन्दसे परिपूर्ण हो।' उसके बाद हँसकर बोले 'मेरी रामा गऊ ...ने आकर मुझे खबर दी। बाउरी-मोचियोंकी गायें अपराध भिजवानेका पता मुझे था। सोच रखा था किसानोंके भिजवाकर उनकी गायोंको छुड़वा दूँ। गायें माता हैं, भगवती हैं खुशी रहेंगी। और उन गरीबोंका सर्वस्व चला जायेगा जुरमाना भरनेमें। इसी बीच समाचार मिला, तुम गायोंको छुड़ा ले आये, भरोसा हुआ। मन ही-मन मैंने तुम्हें आशीर्वाद दिया। मुझे लगा अब हम सब जियेंगे। मुझे बड़ा ... याद आयी। मन ही-मन संकल्प कर लिया, कभी

तुम्हें बुलाकर आशीर्वाद दूँगा। शामको विश्वनाथकी वहूने मुझसे कहा—दादाजी, जरा शिवकालीपुरके गुरुजीका तो मजा देखिए! आज षष्ठी है और उन्होंने अपने बच्चेकी वालिया अपने यहाँके चटर्जी बाबूकी बहूके हाथ गिरवी रखी है। चटर्जी की बीबीने मुझे बालिया दिखायी। दिखाकर कहा, देखो तो बहू पूछा—पन्द्रह रुपयेमें बेजा है? मण्डल मेरा मन अपार आनन्दसे भर उठा। मैने बारम्बार तुम्हे आशीर्वाद दिया। तो भी मन कुनमुन करता रहा। षष्ठीका दिन और गहने गुनेन्द! हो सकता है उसके लिए मुन्ना रोया हो। मैने बालिया उसी समय छुड्वा मँगायी। किसीके मार्फत भेजनेको जी न चाहा। खुद ही आया हूँ। आया हूँ तुम्हें आशीर्वाद देने। तुम दीर्घजीवी हो—कल्याण हो तुम्हारा! कर्मके बन्धनमें तुम धर्मको बाँधकर रखो! तुम्हारी जय हो। बिटिया, मुन्नेको वालिया पहना दो। तुम्हें जब रुपया हो मण्डल मुझे दे आना। तुम्हारे धर्म तुम्हारे पुण्यपर मैं आंच नही आने देना चाहता।

देवूकी आँखोसे झर झर करके आँसू चू पड़े।

बिलूकी आँखोमे भी आँसू झर रहे थे। उसने वालिया मुन्नेको पहना दी।

न्यायरत्नने कहा, रोओ मत, एक कहानी कहता हूँ सुनो।'

इसी समय यतीन आ पहुँचा—"देवू बाबू!"

"आइए यतीन बाबू आइए!'

न्यायरत्नने हसकर पूछा 'इन्हे नही पहचाना?

देवूने यतीनसे परिचय कराया। वह कुछ देर तक न्यायरत्नको देखता रहा फिर उन्हे प्रणाम करके बोला आपके पोते विश्वनाथ बाबूको मै जानता हूँ।'

न्यायरत्नने पहले तो यतीनको प्रतिनमस्कार किया। उसके बाद आशीर्वाद दिया। पूछा, उसे पहचानते हैं? आप लोगोके साथ समगोत्रीय हैं शायद?

इस प्रश्नसे यतीन पहले जरा हैरान हुआ फिर भाव समझकर हँसते हुए बोला गोत्र एक है गोष्ठी अलग।

न्यायरत्न चुप रहे। कोई जवाब नही दिया।

यतीनने कहा 'मुझे तारा हजामने बताया। सुनते ही मैं दौड़ा आया हूँ आपके दर्शन लिए।

'देवनेकी दर्शन करनेकी क्या रही! न दर्पमें रही न लोगोमें। विशाल अट्टालिका विराट बरगद जनमा और फटकर चौचीर हो गया। देर ही ता रह है। वे हँसे और बोले इसीलिए कभी-कभी दारुण दुर्योगमें उस अट्टालिकाके किसी हिस्सेको बचकी मारको बकार करने देख बड़ी खुशी होती है। आज देवूने मुझे बड़ी खुशी दी है।'

देवूने यह प्रसंग बदलनेके खयालसे ही कहा "आप एक कहानी सुना रहे थे न !'

"कहानी ? अच्छा, सुनो !—एक थे ब्राह्मण। बड़े कामकाजी। बड़े पुण्यवान। चमकता हुआ ललाट। उस ललाटमें सौभाग्य लक्ष्मीने स्वयं आश्रय लिया था। उनका हर काम सफल होता था और हरेकके पीछे सफलता होती थी। क्योंकि उनकी कर्मशक्तिमें यशको लक्ष्मीने बसा लिया था। कुल उनका निष्कलंक था और पत्नी-पुत्र-कन्या-वधूके गौरवसे वह निष्कलंक कुल उज्ज्वलतर हो उठा था। इसलिए कि कुल लक्ष्मी उनके यहाँ बसती थी। ईर्ष्यासे अकुलाया पाप ब्राह्मणके घरके चारों ओर अधीर हो-होकर चक्कर काटता। उसे सहन नहीं हो रहा था। बहुत सोच विचारके बाद एक दिन वह अलक्ष्मीको अपने साथ लाया। बाहरसे ब्राह्मणको पुकारा।

ब्राह्मणने पूछा, 'कहिए ?

पापने कहा, मैं बड़ा अभागा हूं। मेरे कष्टोंकी सीमा नहीं। आपसे प्रार्थना है कि मेरी भगिनीको कुछ दिनके लिए अपने यहाँ आश्रय दें।

ब्राह्मणने कहा मैं गृहस्थ हूँ। आश्रय माँगनेवाले लाचारको आश्रय देना मेरा धर्म है। ठीक है, ये रहें यहाँ। बहू-बेटीके समान हो मैं इनका जतन करूँगा। और चाहो, तो जबतक तुम्हारे दुर्दिनका अन्त न हो, तुम भी यहाँ रह सकते हो। स्वागत है।'

लेकिन कहनेपर भी पाप आनेका साहस न कर सका, क्योंकि ब्राह्मणके आश्रयमें धर्म था।

खैर ! अलक्ष्मीको आश्रय देते ही अजीब परिवर्तन हो गया। फल पेड़से फल गायब-से हो गये, फूल मुरझा गये।

रातको ब्राह्मण जप कर रहे थे। उसी समय अचानक किसीका रोना सुना। मालूम हुआ—जैसे कोई बिलख-बिलखकर रो रहा था। जप पूरा करके उठे कि लगा जैसे ललाटसे एक ज्योति निकली। वह ज्योति धीरे धीरे एक अनोखी नारी-मूर्ति बन गयी। अवनत वही रो रही थी। ब्राह्मणने पूछा 'कौन हो माँ तुम ?'

उस नारी-मूर्तिने उत्तर दिया 'मैं तुम्हारी सौभाग्यलक्ष्मी हूँ। अबतक तुम्हारे ललाटमें रहती आयी। आज छोड़कर जाना पड़ रहा है, इसीलिए रो रही हूँ।'

ब्राह्मण कुछ देर चुप रहे। बोले, 'एक बात मैं पूछ सकता हूँ माँ ? मुझसे कौन-सा अपराध हुआ ?

'तुमने आज अलक्ष्मीको आश्रय दिया है। यह जो स्त्री है, वह अलक्ष्मी है। अलक्ष्मी और मैं—दोनों साथ तो नहीं रह सकती।'

ब्राह्मणने निश्वास छोड़ा। भाग्य लक्ष्मीको उन्होंने प्रणाम किया, कुछ बोले नहीं। वह चली गयी।

सवेरे उन्होंने देखा पेड़ोंके फल गिर गये, फूल सूख गये। सरोवरमें छेद हो गया उस छेदसे होकर पानी निकल गया। जमानमें फसल नहीं गायोंको दूध नहीं। घर श्री हीन।

रात फिर वैसा ही रोना उठा। ब्राह्मणके शरीरसे फिर एक दिव्यांगना प्रकट हुई। उसने कहा 'मैं तुम्हारी यश लक्ष्मी हूँ तुमने अलक्ष्मीको जगह दी, भाग्यलक्ष्मीने तुम्हें छोड़ दिया इसलिए मैं भी अब जा रही हूँ।

ब्राह्मणने चुपचाप उन्हें प्रणाम किया। वह भी चली गयी।

दूसरे ही दिन निन्दा हुई—यह ब्राह्मण जो है, बड़ा लम्पट है। इसने जिस औरतको अपने घर आश्रय दिया है उसपर इसकी बुरी नजर है। ब्राह्मण ने इस बातका प्रतिवाद नहीं किया।

उस दिन रातको फिर एक नारी मूर्ति ब्राह्मणके शरीरसे निकल आयी। ये थी कुल लक्ष्मी। बोली घरमें अलक्ष्मीके आगमनसे भाग्य लक्ष्मी चली गयी, यश लक्ष्मी गयी। लोग तुम्हारी कलंक-कहानी कह रहे हैं। मैं कुल लक्ष्मी हूँ ऐसेमें तुम्हारे यहाँ वस रह सकती हूँ मैं ?—और वह भी चली गयी।

दूसरे दिन ब्राह्मणकी देहसे एक और मूर्ति निकली। नारी नहीं, पुरुष मूर्ति। दिव्य विशाल शरीर अनामी दमक। ब्राह्मणने पूछा, आप ?

दिव्यकान्ति पुरुषने कहा मैं धर्म हूँ।

धर्म ? लेकिन आप मुझको किस अपराधके लिए छोड़ रहे हैं ?

तुमने अलक्ष्मीको अपने यहाँ आश्रय दिया है।

तो क्या मैंने अधर्म किया है ?

धर्मने सोचकर कहा नहीं।

फिर ?

भाग्य लक्ष्मी तुम्हें छोड़ गयी।

आश्रय माँगनेवालेको आश्रय देना जब अधर्म नहीं है तो निश्चय ही उन्होंने मेरे अधर्मके नाते मेरा त्याग नहीं किया है। उन्होंने मुझे छोड़ा है इसलिए कि उन्हें अलक्ष्मीका मसर्ग सह्य नहीं।

हाँ।

भाग्य लक्ष्मीका अनुसरण किया यश-लक्ष्मीने। उनके पीछे कुल-लक्ष्मी

गयी। मने चू नहीं की। क्योंकि यही उनकी रीति है। एकके पीछे दूसरी आती है और जाती भी है एकके पीछे दूसरी। लेकिन आप मुझे किस अपराधके लिए छोड़ेंगे ?

धर्म ठक-से खड़े रह गये।

ब्राह्मणने कहा, मैं आपको हरगिज़ नहीं जाने दूँगा क्योंकि आप ही के सहारे तो मैं जीवित हूँ। और जबतक मैं आपको जाने नहीं देता तबतक आपको जानेका अधिकार नहीं है। मैं ही आपका अस्तित्व हूँ।'

धर्म स्तम्भित रह गये। अपनी भूल उन्होंने समझी। उसके बाद बोले, 'तथास्तु ! तुम्हारी जय हो'—इतना कहकर धर्मने फिर ब्राह्मणके शरीरमें प्रवेश किया।'

"श्यामरत्नके कहानी कहनेका ढंग अनोखा था। आरम्भिक जीवनमें वे भागवतकी कथा सुनाया करते थे। उनके कथा कथन स्वरकी माधुरी अदायगीसे मोहका जाल-सा बिछ गया था। वे चुप हो गये।

कुछ देरके बाद मतीनने पूछा "फिर क्या हुआ ?"

"फिर ?"—श्यामरत्न हँसे। बोले, "उसके बादकी कहानी बड़ी मुख्तसर है। धर्मके प्रभावसे उसी रात फिर एक रोनेकी आवाज़ उठी। ब्राह्मणने देखा उस अलक्ष्मी स्त्रीने आकर कहा, 'मैं जाती हूँ।

ब्राह्मणने पूछा, 'अपनी इच्छासे बिना माँगे रही हो ?'

हाँ अपनी इच्छासे। और वह अदृश्य हो गयी।

उसी रात सौभाग्य-लक्ष्मी लौटी उनके पीछे-पीछे आयी धन-लक्ष्मी, कुल-लक्ष्मी।

मतीनने कहा, "ठीक है ! लक्ष्मी ही धन देनेवाली है यही कुलको पवित्र करती है। इसीलिए लक्ष्मीके लिए इतना छीना-झपटी है। लक्ष्मी ही सब कुछ है।'

"नहीं !" श्यामरत्न बोले 'धर्म सब कुछ है। तुमने अभी धर्मको आश्रय किया है देबू, मैं इसी सुनाने दौड़ा-दौड़ा आया हूँ। अच्छा, आज अब चलता हूँ।"

इसी समय यह खबर मिली कि दुर्गाको साँपने काट खाया है। उस चरवाहे छोरेने यह भी बताया कि अब वह ठीक है उठकर बैठी है।

देबू श्यामरत्नके साथ कुछ दूर तक गया। रास्तेमें मतीन बिदा हुआ। वह अपने घरामदेकी चौकीपर आकर गुमसुम बैठ गया।

चौबीस

यतीनके मनकी हालत अजीब हो गयी। गँवई गाँवके किसी एक सूने कोनेमें रहते हैं ये बूढ़े—चारों ओर ढहता हुआ परिवेश : अज्ञान, अशिक्षा, गरीबी, हीनता। कठोर जीवन संग्राम भयंकर अजगरकी तरह श्वासरोधी पकड़से क्रमशः पीसता जा रहा है। इसी परिवेशमें यह प्रशान्त अविचल चित्त सौम्यदर्शन वृद्ध अपनी निर्मल दृष्टि ऊपरकी ओर पसारे किस प्रकार परमानन्दके भावमें बैठे हैं! असीम ज्ञानका अपार भण्डार लिये : खारे जलके सागरमें अपने गर्भमें मोतीको धारण किये हुए सीपीकी तरह! इस समय यह बात एक आश्चर्य जैसी लगी।

दण्ड-प्रहर पार करती हुई रात धीरे धीरे घनी गाढ़ी होती जा रही थी। दूसरे पहरका स्यार बोल गया, उल्लू भी बोल गया। किसी पेड़पर बैठा एक उल्लू अभी भी बोल रहा था। यह बोलना उसका और ही किस्मका था—पहरकी घोषणा करता हुआ सा नहीं। पहरवाली पुकारमें घोषणाका स्वर साफ होता है। कोटरमें अपरिणत कण्ठकी दबी सीटी सा शब्द निकालते हुए बोलते जा रहे थे उल्लूके बच्चे। वन-जंगल, घाट-बाट, घर द्वार—चारों ओर अविराम ध्वनि—असंख्य कीट पतंगोंकी। अँधेरे शून्यमें जोरोंसे अपने पंख फड़फड़ाते हुए उड़ जा रहे थे चमगादड़—एकके बाद दूसरा, फिर एक साथ तीन, फिर एक। उस दिन बारिश हुई थी, इसलिए आसमान अभी भी निर्मल नील था, तारे खासे चमक रहे थे। चलती झिरमिर बहती हवामें भुरभुराती फूलोंकी महक—अनोखा अनोखा ऐश्वर्य! अंतिम पहरमें हवामें ठण्डक क्रमशः बढ़ रही थी।

बूढ़ेसे एक बात पूछनी रह गयी। कहानी यतीनको बड़ी भली लगी। उस बूढ़े और इस कहानीमें आज उसे ग्राम जीवनका आभास मिल रहा था। युग-युगसे ये बूढ़े ही ऐसी कहानियाँ सुनाते आये हैं। कहानी सचमुच ही अच्छी है, अच्छी ही नहीं उसे सच-सी लगी। सिर्फ एक जगह खटका रह गया। अलक्ष्मीके आनेसे सौभाग्य लक्ष्मीका अन्तर्धान होना ठीक है। भाग्य लक्ष्मीके न रहनेसे धर्मकी शक्ति जाती रहती है, यशकी लक्ष्मी नहीं रहती, लक्ष्मीविहीन अकर्मण्यतासे कुलका गौरव नष्ट होता है। फतिगांवकी माँ सैटलमेण्ट कम्पके पियुनके साथ चली गयी। लेकिन धर्मसे बूढ़ेका क्या मतलब है?—यह पूछना रह गया। बहुत सोचनेके बाद भी वह ऐसा कोई उत्तर इसका न ढूँढ़ सका, जिससे दुनियाके नये उपलब्ध सत्यसे इसका समन्वय हो जाय। थके दिमागसे वह रातके गाँवकी ओर ताकता रहा।

गाढ़े और नज़र न धँसनेवाले अँधेरेमें सारा गाँव मानो खो गया था। अन्दाज़से ही यह कहा जा सकता है कि सामने राहके उस पार वह गड्ढा है। रात भरमें सिर्फ़ शामको ही एक बार घाटपर ढिबरीकी रोशनी दिखाई पड़ती, दो औरतें हाथमें ढिबरी लिये बरतन धो जातीं। ढिबरीके प्रकाशमें यतीन उनका चेहरा साफ़ देख पाता। घाटसे जाते ही वे अपना दरवाज़ा लगा लेतीं। गाँवके अधिकांश घरोंमें शामको ही द्वार बन्द हो जाता। श्रीहरि या जगन डाक्टर या खुद उसीके यहाँ छोटी-मोटी बैठक जमती है, मगर वह भी कबतक? दस बजते न-बजते बस्तीमें घोर सन्नाटा छा जाता। यतीनने एक बार अच्छी तरहसे गाँवकी तरफ़ देखा। गाढ़े अँधेरेमें सोयी हुई बस्तीमें असहाय शिशुके आत्मसमर्पणका ढंग साफ़ फूट उठा था।

सहसा उसे अपने जन्म-स्थान—कलकत्ता महानगरी—की याद आ गयी। कलकत्तेको यतीन बहुत चाहता है। कलकत्ता संसारकी श्रेष्ठ नगरियोंमें अन्यतम है। दिनके प्रकाश और रातके अँधेरेका प्रभाव वहाँ है कितना? दिनमें वहाँ रोशनी जलती है। रातको राहका रोशनाम झलमल! मनुष्यके नयनकी दमकती आँखोंके आगे रातका अँधेरा महानगरीके दरवाज़ेपर बेबस-सा असहाय आँखें खड़ा ताकता रहता है। हर मोड़पर-के खड़े पहरेदार जागता और खड़-खड़ ऐलान करते हैं—हम जाग रहे हैं। गवेषणागारमें वैज्ञानिक तीखी निगाहसे अपनी गवेषणाकी वस्तु देख रहे हैं। चलती हुई मशीनके इंजनोंके थामे खड़ा है मशीन मैन—मशाल चल रहा है, अविराम उत्पादन हो रहा है। पानीको उमड़ाता हुआ चल रहा है जहाज़, प्लेटफ़ार्मपर लाइनपर चल रही है गाड़ी, साइडिंगमें शंटिंग। रास्तेपर गरजकर आ रहा है मोटरें—बीच-बीचमें रातोंकी आवाज़ जगाती हुई सुनाई पड़ जाती है घोड़ोंकी टाप। महानगरी चल रही है—और चल रही है। उसके चलनेका कभी विराम नहीं। इस आने-जाने तोड़-फोड़, हँसी-रुदनमें ही नित्य उसके नये रूपकी अभिनव अभिव्यक्ति है। एक पहलू उसका अपकारका भी है, पर उसे जाने दो।

लेकिन गाँवका यही एक रूप! खासकर इस देशके गाँव समाज संगठनके आदिकालसे ठीक एक ही जगह अनन्त परमाणुपुंजकी तरह बैठे हुए हैं। भारतीय अर्थशास्त्रकी एक बात उसे याद आ गयी। सर चार्ल्स मेटकाफ़ कह गये हैं—"द साम्स टु लास्ट व्हेयर नथिंग एल्स लास्ट्स।"—अजीब है! डाइनेस्टी आफ़्टर डाइनेस्टी ट्रम्बल्स डाउन, रिवोल्यूशन सक्सीड्स रिवोल्यूशन, हिन्दू, पठान, मोगल, मराठा, सिख, इंग्लिश आर मास्टर्स इन टर्न, बट दि विलेज कम्युनिटी रिमेन्स द सेम।

यह क्या कभी नहीं हिलें-डुलेगा ? बीसवीं सदीकी दुनियामें बड़े हेर फेर हो रहे हैं। तमाम नये विधानोंका शोर है। इस देशके गांवके जीर्ण पुरातनका क्या परिवर्तन नहीं होगा ?

क्रांतिकारी युवक—उसकी कल्पनाकी आँखोंमें अनागत कालकी नवीनता का सपना ! न्यायरत्न कह गये—बरगदकी जड़के दबावसे विशाल अट्टालिका चौचीर हो गयी। वह उसी टूटनपर चोट करनेको तैयार है। उसी धर्मसे वह जहां जरा-सा द्वन्द्व देखता है, वहीं उस द्वन्द्वको उत्साहित कर देता है।

अन्दरसे दरवाजेपर दस्तक पड़ी।

यतीनने पूछा, 'कौन ? माँ ?'

'हां। —पद्मने झिड़की दी— आज सोओगे नहीं क्या ? देखती हूँ— बीमार पड़े बिना न मानोगे।

बस, आ रहा हूँ।' —यतीन हंसा।

आ रहा हूं नहीं आओ। मैं बल्कि पंखा झल देती हूँ। आओ।

'तुम जाकर सो रहो। मैं तुरंत आता हूँ।'

'नहीं, तुम अभी चलो, नहीं तो मैं सिर पीट लूंगी।

आखिर यतीनको जाना ही पड़ा। जानेपर भी छुटकारा नहीं। पद्मने कहा 'इधरका दरवाजा खोल दो। पंखा झल दूं।'

'उसकी जरूरत नहीं है।'

'है जरूर।

यतीनने दरवाजा खोल दिया। पद्म पंखा लेकर उसके सिरहाने बैठती हुई बोली एक जने तो निकले हैं इसलिए कि दुर्गाको साँपने काटा है, लौटनेका नाम नहीं ले रहे हैं। और तुम ?

अनिरुद्ध बाबू अभी लौटे नहीं ?'

नहीं। पहले दुर्गाको मर लेने दो तब वह रोता-पीटता लौटेगा। दुनियामें इतने लोग मरते हैं वही हरामजादी नहीं मरती।

यतीन सिहरा। पद्मकी भाषामें कितना घना आक्रोश है। उसने भींचकर उसने आँखें बन्द कर लीं। कुछ ही देरमें उसके कानोंमें दूरसे आती हुई कोई जोरकी आवाज जागी जैसे। वह आवाज तेजीके साथ करीब आने लगी। घर द्वारमें एक कंपकंपी दौड़ गयी। वह उठ बैठा—भूकम्प !

हंसकर पदम बोली उफ कैसा लड़का है हाय राम! आसमान सिरपर उठा लेता है जैसे! अरे यह भूकम्प नहीं है, मालगाड़ी जा रही है। सो जाओ।"

"डाकगाड़ी ? मेल ट्रेन है ?

'हाँ, हाँ ! सोओ !"

सीटी बजाती हुई गाड़ी मयूराक्षीके पुलपर जा रही थी। चारों तरफका वातावरण घरघराहटसे गूँज उठा। घर-द्वार थर-थर काँप रहे थे। जंक्शन स्टेशनमें रोशनी जल रही थी। वहाँकी मिलमें रातमें भी काम चलता है। मयूराक्षीके उस पार है जंक्शन। सतीनको मानो अकस्मात आशाकी किरण दीखी। गाँव काँप रहा है। जंक्शन तक पश्चिमके नये जीवनकी आहट पहुँच गयी है। किसी दिन वह मयूराक्षीके उस पार जायेगा। कोई कम्पनी शायद मयूराक्षीके बाँधके बड़ी सड़कपर बस सर्विस चलानेकी सोच रही है।

कुछ देरके बाद पन्ना रगड़कर पाँव दबाये पद्म वहाँसे चला गया। खैर, सो गया। मसहरी ठीक नहीं कर दी—फतिंगाको तो मच्छड़ खा गया होगा!

सतीनके कमरेमें निरुत्तर वह हैरान रह गयी। जाने कब ऊपरसे फतिंगा नीचे उतर आया था। तीन पहर रात गये वह अकेले ही बैठा आँगनमें कौड़ियाँ खेल रहा था।

रातके अन्तिम पहरमें सोया था इसलिए सतीनकी नींद टूटनेमें देर हुई। पद्मने उसे जगाया—'उठो जरा!'

सतीन उठ बैठा—"काफ़ी दिन निकल आया है, न?'

और उधर सर्वनाश जो हो गया!"

सर्वनाश हो गया?'

एटन ऐ जाकर छिम्मपाल पेड़ काट रहा है। सब लोग दौड़कर गये हैं उधर कहीं दंगा न हो जाय!"

कौन गये हैं दौड़कर? अनिरुद्ध बाबू?"

सभी गये—गुरुजी, जगन डॉक्टर, पाषाण—बहुत-से लोग।

सतीन खुश हो उठा। बोला, 'जरा भाभी कड़ी चाय बनाओ तो माँ।

लेकिन तुम वहाँ मत चल जाना।'

तो फिर मुझे बुलाया क्यों?

पद्म कुछ देर चुप रहकर बोली 'नहीं जा सकती!' और सच ही वह सतीनको बुलानेका कारण नहीं ढूँढ़ पायी। बोली 'मुँह हाथ धो लो। चाय बनाती हूँ।'

'फतिंगा कहाँ है?

'वह तो आँखोंके आगेका धूल है! खेलने गया है शायद।

श्रीहरिने कलके अपमानका बदला लिया। बाउरी मोचियोंके सामने उसका सिर नीचा हुआ है। न केवल अपमान हुआ है बल्कि उसकी रायमें यह गांवकी शृंखलाको तोड़नेकी एक कोशिश है। तिसपर दुर्गाने उन लोगोंको जिस तरहसे धोखा दिया, दो एक घण्टे बाद ही उस बातको मन-ही-मन समझकर वह आगबबूला हो गया था। और जो-जो लोग उसमें सम्मिलित थे उन्हें दण्ड देनेका प्रबन्ध भी उसने कल रात ही कर लिया था। कालू शेखके जरिये उसने लठैत बुलवाये और जमीदारके गुमाश्तेके नाते आज सबेरे उसने देवू, जगन, हरेन, अनिरुद्धके पेड़ काटने शुरू किये। ये पेड़ जमीदारकी परती जमीनपर हैं। पहले रियाया इसी तरह पेड़ लगाया करती थी। उसका लाभ उठाया करती थी—जमीदारकी ओरसे कोई आपत्ति नहीं की जाती थी। जरूरत होती तो लोगोंसे मीठी बातें करके जमीदार उनके फल भी तोड़ लेता था। लेकिन इस तरहसे उजाड़ता कभी नहीं था। उजाड़ता तो बहुत पहले सौ साल पहले रैयत जमीदारमें दंगा होता। पचास सालके बाद वह जमाना पलटा। तब प्रजा जमीदारके हाथ-गोड़ पड़ती पेड़ोंकी ममतासे घर बैठी रोती। अचानक आज फिर वह नजारा सामने आया कि सबके सब लोग दौड़ पड़े।

यतीन समाचारके लिए अकुला रहा था। वहां अगर खून-खराबी हो गयी तो बड़ा बुरा होगा। विचलित-सा होकर वह सोच रहा था उसका जाना ठीक होगा क्या? नहीं। कहीं उसे इस मामलेमें लपेट लें तो सारी घटनाका रंग ही बदल जायगा।

पद्मने इस बीच तीन बार उचककर देखा कि वह घरमें है या नहीं। अंतिम बार यतीनने कहा मैं गया नहीं हूं माँ यहीं हूं।'

तुम्हारा विश्वास क्या? भयंकर लड़के हो तुम।

यतीन हंसा।

हंसो मत हां। —बोलते-बोलते रास्तेकी तरफ देखकर वह बोली, वह देखो नलिन आ रहा है। दो अब पैसे।

यही चित्रकार लड़का बैरागी परिवारका नलिन। वह पैसेकी जरूरत होनेसे ही आता या नहीं। आता और चुपचाप बैठा रहता। बिना पूछे अपनी कोई बात वह बताता भी नहीं। मगर उठकर जाता भी नहीं। बैठा ही रहता। पूछा तो मुस्कराकर जवाब—पैसा। मांग भी कोई खास नहीं—बस चार पैसेसे चार आने तक। लेकिन आज कुछ उत्तेजित था नलिन। चेहरेका सारा रंग लाल उठा था। आंखोंकी पुतलियां थिर थीं। आज वह आकर बैठा नहीं खड़ा ही रहा।

क्या नलिन? पैसे चाहिए?

"गुरुजीका सिर फट गया।"

'किसका ? देवू बाबूका ?"

"हाँ ! और कालीपुरके चौधरीजीका।"

"द्वारिका चौधरीजीका ?'

"हाँ ! गुरुजीके बागका पेड़ कट रहा था। गुरुजी बिल्कुल कुल्हाड़ीके सामने जाकर खड़े हो गये।"

"फिर ?'

'लठैतोंसे गुरुजीकी धक्कमधुक्की हुई। चौधरीजी छुड़ाने गये। लठैतोंने दोनोंको धक्के मारकर गिरा दिया।'

'गिरा दिया ?"

'जी ! गाछ काट रहा था। उसीके तनेमें लगकर दोनोंके सिर फट गये।"

'उसके बाद ?"

"खून बहुत बह रहा है। सब लोग सम्हालकर ला रहे हैं।"

'और दूसरे लोग क्या कर रहे थे ?'

"सभी खड़े थे। कोई भी आगे नहीं बढ़ा। केवल अनिरुद्ध एक लठैतको लाठी जमाकर फरार हो गया है।

'जगन डॉक्टर कहाँ है ?"

"वह पुलिसको खबर देनेके लिए जंक्शन गया है।'

मनीन तार लिखने बैठा। एक डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेटके पास, दूसरा एस० डी० ओ० के पास। साथ ही यहाँकी जिला-कांग्रेस-कमेटीके पास एक चिट्ठी। यह चिट्ठी छिपाकर भेजना होगी।

तार लगानेके लिए डॉक्टरको भेजना होगा। लेकिन यह चिट्ठी जगनके हाथ नहीं भेजना है। देवू बाबू ठीक होते तो उन्हींको जरूर भेजना सबसे अच्छा होता। उसने कुछ सोचकर नलिनसे पूछा, "एक काम कर सकोगे ?"

गरदन हिलाकर वह बोला, 'जरूर।'

'जंक्शनके डाकखानेमें एक चिट्ठी लगानी है। चार पैसेका एक टिकट लगाकर चिट्ठीमें चिपका देना और डाल देना।'

नलिनने फिर वही गरदन हिलाकर हामी भरी।

मगर किसीको दिखाना मत।'

नलिनने फिर वही मौन हामी।

'लो, चार पैसेका टिकट लेना और इन चार पैसोंका तुम जलपान कर लेना !'

नलिनने पत्रको कमरमें रखा। उसपर होशियारीसे फेंटा बाँध लिया कसकर। इकन्नियोंको गाँठमें बाँधा। उसके बाद सिर झुकाकर भरसक तेजीसे चल पडा।

सारी बस्ती हंगामेसे भर उठी।

देबू और चौधरीजीको जगनके दवाखानेमें लाया गया। देबू चलकर ही आया। उसे वैसी गहरी चोट नही थी और फिर जवान आदमी! उत्तेजना भी काफी बढ गयी थी। खून कुछ ज्यादा बहनेपर भी वह उतना उदास या भीत नही हुआ था। लेकिन बूढे चौधरी कातर हो गये थे। चोट भी उन्हें ज्यादा लगी थी। पहले तो वे बेहोश हो गये थे। फिर होश तो आया, पर उन्हें ढोकर ही लाना पडा। वे आँखें बन्द किये पडे थे। देबू दीवालसे टिका चुप बठा था। धो देनेपर भी लाल पानीकी धार माथेसे चू रही थी। लगभग सारी बस्तीके लोग जगनके दवाखानेके सामने जुट गये थे।

टिंचर, रुई, गरम पानी और बैंडेज लिये जगन व्यस्त था। हरेन उसकी मदद कर रहा था। बीच-बीचमें बोलता जा रहा था—"हटो, भीड छोडो!'

रागा दीदी एक पडके नीचे बठकर रो रही थी। दुर्गा दाँतसे होंठ दबाये अपलक आँखों खडी थी। इतनेमें वहाँ यतीन आया।

जगनने कहा, 'पेडोंपर रोक लगवा दी है। पुलिसने आकर नोटिस जारी कर दी—दोनों पक्षोंमें से कोई भी पडके पास नही जा सकेगा। म मना कर गया था कि मेरे आने तक कोई कुछ मत करना। काटने दो पेड। लौटकर देखता क्या हूँ कि देबूने यह हरकत कर दी ह। अनिरुद्ध एकको एक लाठी जमाकर लापता ह।'

भीडमें-से आगे निकलकर अनिरुद्धने कहा, "अनिरुद्धने ठीक ही किया ह। यह कोई औरत नही ह, मद है।" उसके हाथम उस समय भी कुल्हाडी थी। बोला, 'उस समय कुल्हाडी मिली नही, वरना आज कुछ होकर ही रहता!"

यतीनने कहा 'सर, वह सब जो करना होगा, पीछे कीजिएगा, पहले इनका बैंडेज तो कर दें जल्दीसे।"

बूढे द्वारिका चौधरीने अब आँखें खोली। हल्की मुसकराहटके साथ बोले, "नमस्कार!"

यतीनने प्रतिनमस्कार किया— अब कैसा लग रहा ह?"

'अच्छा है! योग रखकर चौधरी बोला, 'सोचा, बीच-बचाव कर दूँगा। देबू आकर कुल्हाडीके सामने तन गया। उससे रहा नहीं गया।'

सभी चुप थे। जवाब देनेको कुछ था नहीं।

बूढ़ेने कहा "पण्डित प्रणाम करने योग्य आदमी हैं। ये पण्डित ही नहीं, वीर हैं। मेरी उम्र काफी हुई, मगर अभी भी मैं चश्मा नहीं लगाता। हे भगवान्! तनी हुई कुल्हाड़ीके सामने जाकर जब गुरुजी खड़े हो गये, तो उस वक्तकी अपनी मूर्ति शायद गुरुजीने भी कभी आइनेमें नहीं देखी है। वीर!"

जगनने कहा, "यह गँवारपना है। नतीजा क्या हुआ? नाराज मत होना देबू भाई!"

हँसकर बूढ़ेने कहा, "सबका पेड़ काट डाला। खड़ा अभीतक केवल देबूका ही पेड़ है डॉक्टर बाबू!"

जगनने हरेन घोषालको जोरसे डाँट बतायी—"किधर ताकते हुए काम कर रहे हो घोषाल?"

हरेन चौंक उठा।

देबू हँसा। डॉक्टर बूढ़ेपर नाराज हुआ, झल्लाना पड़ा हरेनको।

पुलिसकी जाँच हुई।

श्रीहरिने कुछ भी अस्वीकार नहीं किया। श्रीहरिकी ओरसे जो भी कहना था, वह सब दासजीने कहा। अब दासजी जमींदारके सदरका कर्मचारी है, पहले महीना गुमाश्ता था। चतुर, तजुर्बेकार और विषय बुद्धि-सम्पन्न आदमी। प्रजा-स्वत्व क़ानून, फौजदारी क़ानूनमें वह साधारण वकील मुख्तारसे ज्यादा होशियार है। खबर भेजकर श्रीहरिने उसे बुलवा लिया था। आखिर बात तो अब गाँववाला और श्रीहरि तकमें ही सीमित नहीं रह गयी थी। और चूँकि यह काम उसने जमींदारके गुमाश्तेकी हैसियतसे किया, इसलिए ज़िम्मेदारी जमींदार पर भी आ पड़ी।

जमींदार उमेश नया। आजके बंगालका जमींदार-लड़का। अँगरेजी पढ़ा लिखा है। जमींदारी खास पसन्द नहीं करता। कई बार व्यापारकी कोशिश की, मगर नुकसान उठाकर लाचार जमींदारीसे ही लिपटा पड़ा है। जमींदारीमें क़ानूनके मुताबिक चलनेकी प्रथा चलानेका हिमायती है। पुराने जमींदारोंकी तरह जोर जबरदस्ती कर बिल्कुल नहीं पसन्द करता। पहलेके जमींदार जैसा व्यक्तित्व भी नहीं है उसका। लिहाजा उसकी साधु चेष्टा फलवती भी नहीं होती। जब कलकत्ता जानेके लिए रुपयेकी कमी पड़ती तो नायब-गुमाश्तोंकी रायसे ही राय मिलानेको बाध्य होना पड़ता। कलकत्तेमें सिनेमा देखता थियेटर देखता, थोड़ी

पण्डोमण्डप

बहुत शराब भी पीता, दशक होकर राजनैतिक सभा-समितिमें शामिल होता। यूनियन-बोर्डका सदस्य है। लोकल बोर्डके लिए खड़ा हुआ था, हार गया। अगली बार कांग्रेससे टिकट पानेकी कोशिशमें लगा है। अबकी यानी सन् १९२८ में कांग्रेसका जो अधिवेशन होनेवाला है, अभीसे उसका डेलीगेट होनेकी भी चेष्टा कर रहा है।

लेकिन यह खबर सुनकर जमींदारने इसे पसन्द नहीं किया था। कहा, "जब हमने ऐसा हुक्म नहीं दिया है, तो अपनी जिम्मेदारीसे हम इनकार करें। श्रीहरि ही समझे अपना।"

दासजीने हँसकर कहा, "मगर श्रीहरि-जैसा गुमाश्ता पायेंगे कहाँ—यह भी तो सोचिए। गाँववालोंसे उसका झगड़ा हुआ है। गुमाश्ताके हिसाबसे काम उसने बेजा किया है। लेकिन वह आदमी वसूली हो या न हो, आपका लगान पावना पाई-पाई चुका जाता है। इसके अलावा एक सालके अन्दर उसने हुण्ड नोटपर भी दो हजारके करीब रुपये दिये हैं। सेटलमेण्टका खर्चा वसूलनेका भी अब समय आ गया है। एक शिवकालीपुरमें ही आपके हजार रुपयेसे ऊपर लगेंगे। इसके अलावा, और मदोंकी भी रकम मोटी है। इस समय अगर उसे छुड़ा दें तो क्या यह अच्छा होगा?"

जमींदार मीटिंगमें दो चार बातें बोल सकता है, बन्धु-बान्धवोंमें उसके स्पष्टवक्ता होनेकी ख्याति है। मगर जब यह दासजी इसी तरहसे चबा चबाकर बात करता है तो ठीक उसी तरह वह हाथ बढ़ाकर आत्मसमर्पण भी कर देता है जैसे कोई डूबता हुआ आदमी।

दासजीने कहा, "तो हुजूर, एक काम क्या न किया जाये—शिवकालीपुर श्रीहरिको बन्दोबस्त दे दें।"

"बन्दोबस्त?

"हाँ। या समझिए कि श्रीहरि दो हजारसे ज्यादा पायेगा। और सेटलमेण्ट का खर्चा लगेगा पाँचेक हजार। श्रीहरिको गुमाश्ता रखनेपर विरोध तो होगा ही। श्रीहरि लेगा भी मजेसे ही।"

नहीं, नहीं, वह सब नहीं, खरीदना चाहे तो देखिए।"

जमींदारी टूटनेमें जमींदारको उज्र नहीं है। वह खुद ही कहा करता है—यह जमींदारी क्या है, जमादारी है।

जाँच-पड़तालके समय दासजीने झुककर सब स्वीकार कर लिया—"जी हाँ, पेड़ काटनेका हुक्म हमने जमींदारकी ओरसे दिया है। श्रीहरि घोषाल हमारे

गुमाश्तेके जाते ही पेड़ काटनेके लिए लोगोंको लगाया था। बैसाखके महीनेमें हम हिन्दू लोग पेड़ नहीं काटते, इसीलिए चैतमें काटना पड़ता है। साल भर-की लकड़ी इसी समय काटकर रखी जाती है।"

जगनने कहा "सो काटें वे अपना गाछ काटें। जमींदार "

बीचमें ही टोककर दासजी बोले, "अपना ही तो है। वह सारा ही पेड़ तो जमींदारका है।"

"जमींदार का?"

"आप ही लोग बतायें, जमींदारका है या नहीं?"

"नहीं, पेड़ हम लोगोंका है।

"आप लोगोंका है? ठीक है, आपने कभी डाल काटी है पेड़की?"

'नहीं काटी है, पर पेड़ोंपर दखल तो सदासे हमारा रहा है।"

"हाँ, फल आप ही भोगते हैं। किन्तु वह तो आप जमींदारके हो पेड़का ताड़ लेते हैं, पत्ते तोड़ते हैं। समझकी दई लेते हैं आप लोग। सरकारी पोखरमें लोग पहलेसे मछली मारते हैं। पोखरी तक गाँववालोंने एक बँटवारा कर रखा है—इस पोखरेकी मछली राम, श्याम, यदु मारेगा, इसकी काली, कन्हाई, हरी, इसकी भवेश, देवेश, योगेश। अब इन ताड़के पेड़ों और पोखरोंका मिल्कियत क्या आप लोगोंकी है?"

इतनी देरके बाद देबू बोला, "अच्छी बात है दासजी! ये पेड़ अगर आपके हैं, तो आपने इतने लठैत क्या भेजे थे? जबरदस्ती दखलका प्रश्न कहाँ आता है? जहाँ अपना दखल नहीं हो, वहाँ या फिर जहाँ बेदखलका खतरा हो, वहाँ। यानी जहाँ भी दखल सन्देहजनक है।"

दासने हँसकर कहा, "नहीं, लठैत नहीं, हमने प्यादे भेजे थे। उनके हाथमें लाठी होती है। असलमें जिसका जैसा ब्याह, उसका वैसा बाजा। हमारे आपके यहाँ शादी होती है महज एक ढोल बजता है बहुत हुआ तो शहनाई बजी। जमींदारके यहाँ शादी होगी, तो तरह-तरहके बाजे बजेंगे। सो इसलिए कि गाछ काटने आये जमींदारके आदमी, पाँच-सात गाछ काटने थे। तीस-पैंतीस मजूर थे, उनके साथ आठ-दस प्यादे आये तो क्या अनर्थ हो गया? अगर मालूम होता कि आप लोग ऐसा गैरकानूनी दंगा करेंगे तो हम थानेसे दस पचास लठैत भेजते। और निश्चय ही पहलेसे थानेको शान्ति भंगकी आशंकाकी सूचना भी भेजते। फिर आप तो कानून खूब जानते हैं देबू बाबू, कहिए न, यह किसका है?'

आज पञ्चायतमें दरोगा गुप्त आये थे। दरोगा आदमी भला है, अपनी क्षमताका दुरुपयोग नहीं करता, भद्र भी है। उसने कहा, 'कहनेको जो कहें

दासजी, काम यह अच्छा नहीं हुआ है। आदमीके मनको चोट नहीं पहुँचानी चाहिए। इतना ही है कि कानून आपके पक्षमें है। खैर, इसमें हमारे करनेका कुछ नहीं है। यह हक्कका मामला है। हमने नोटिस दे दी है। जबानी भी दोनों पक्षोंको मना कर रहे हैं कि अदालतसे फैसला हो जाने तक कोई पक्ष पेडके पास न जाये। गये तो फौजदारी होगी और हम गिरफ्तारी करेंगे। वादी होकर पुलिस मामला करेगी।'

उठते हुए दरोगाने कहा, "प्रजास्वत्व कानूनमें संशोधन हो रहा है, मालूम है न दासजी!"

"जी, मालूम है!" दास हँसा—"हो जाये तो हम जी जायें दरोगा साहब!"

दरोगाको विदा करके श्रीहरि दास जीको अपने बठकेमें ले गया। उसने नया बठका बनवाया है। है तो फूसका ही, मगर सीढ़ी, बरामदा, फर्श पक्का है। दासने तारीफ करते हुए कहा, 'वाह! वाह! यह तो पक्का बनवा लिया! मगर अपने नीलकण्ठका वह गाना याद है?—करना हो जो पक्का घर, तो पहले जमींदारी कर!"

चौकीपर-की दरीको झाडकर श्रीहरिने कहा, "बठिए!"

दास बठ गया। बोला, 'जमींदारी खरीदोगे श्रीहरि?"

"जमींदारी?—श्रीहरि चौंक उठा। जमींदारीकी कल्पना उसने साफ-साफ कभी नहीं की।

उसने पूछा, "कौन-सा मौजा? पास-पडोसमें है?'

'ग्राम शिवकालीपुर! खरीदोगे?"

अजीब संदेहकी निगाहसे श्रीहरिने दासजीकी ओर ताका। शिवकालीपुर! गाँवका एक एक आदमी उसका रैयत होगा! श्रीहरि सबका मालिक होगा! हुजूर, सरकार! क्षण भरमें उसका अधीर मन तरह-तरहकी कल्पनाओंसे चंचल हो उठा। गाँवमें हाट लगायेगा! नहानेवाला जो तालाब भर गया है, उसे खुदवा देगा। चण्डीमण्डपमें नया मन्दिर बनवायेगा, उसकी अठचलिया तुडवाकर नाटय-मन्दिर बनवा देगा। निम्न प्राथमिक स्कूलके बदले माध्यमिक विद्यालय नाम होगा—श्रीहरि माध्यमिक विद्यालय। युनियन-बोर्डसे स्ट्रेटर बोडने लिए खडा होगा।

दासजीने कहा, 'खरीद लो घोष! तुम्हारे पास पसा है। जमींदारी अक्षय सम्पत्ति होती है। फिर एक बात यह भी है कि आज गाँवके जो लोग तुम्हारे दुश्मन हैं एक ही दिनमें परापर आ गिरेंगे। मगर सेटलमेण्टके फाइनल पब्लिकेशनके पहले ही खरीद लो। दरख्वास्त देकर नाम बदलवा लो। फाइनल

पब्लिकेशनके बाद पाँच तरहका दण्ड भोगना होगा। रुपयेमें चार आनेकी बढ़ोतरी तो होगी ही। आठ आनेकी नज़ीर हाइकोर्टसे लेकर रखी है। मैं सम्सर्में तय करा दूँगा। हाँ, ज़रा दरवाज़ा बन्द कर लो तो!"

श्रीहरिने दरवाज़ा बन्द कर लिया।

बड़ी देर तक बातचीत करके दोनों हँसते-हँसते ही बाहर निकले। दासजीने कहा, "अरे वह नोटिस तो या ही है, एकदम बेकार! तुम अगर वहाँ गये और शान्ति भंग हुई, तो यह होगा, वह होगा। यही न?,

फिर मुँहके पास मुँह लाकर एक अजीब-सी मुद्रा बनाते हुए कहा, "लेकिन शान्ति भंग न हो तो?"—दास होंठ दबाकर हँसा।

श्रीहरिने कहा, "तो मैं बेफ़िक्र कर सकता हूँ?

बेशक! लेकिन होशियार कोई जान न पाये। कोई हंगामा न हो जाये।"

"और गाजनका क्या करूँ?"

"जो भी हो, करो।"

"तो फिर चण्डीमण्डप जैसा है वैसा ही रहे?"

"देखो घोष, यह काम तो न करो, मैं मना करता हूँ। चण्डीमण्डपका सेवायत ज़मींदार है, मगर अधिकार गाँववालोंका है। पक्का नाट्य मन्दिर, और मन्दिर—यह सब अपने घरमें करो। सम्पत्ति रहती भी है, जाती भी है। अगर किसी दिन सम्पत्ति हाथसे निकल ही जाये तो तुम्हारा हक नहीं रहेगा।"

दास श्रीहरिको चण्डीमण्डपके लिए खर्च करनेसे रोक रहा था—"क्या ज़माना आया है! सर्वसाधारणकी सम्पत्तिपर खर्च करना महज़ मूर्खता है!"

दूसरे दिन सबेरे गाँवमें फिर हलचल हुई।

देबू घोषके अघराटे पेड़को रात ही कोई काट ले गया। कौन—फिर कौन? श्रीहरि ले गया है। चूँकि शान्ति भंग नहीं हुई, इसलिए क़ानूनके ख़िलाफ़ भी नहीं हुआ! ताज़े कटे पेड़की जड़ ऊपर चारेक अंगुलका तना केवल बचा पड़ा था! बड़े पेड़का बचा खुचा कुछ भी कहीं नहीं था। कुछ पत्ते और कच्चे आम जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े थे, उनमें अभी पतली-पतली कुछ टहनियाँ कुछ जड़ोंसे जुड़े इधर उधर रह गये थे। गीली मिट्टीपर पड़े पहियोंके दाग़, बलदोंके खुरोंके चिह्नमें पिछली रातकी घटनाकी सांकेतिक भाषामें लिखी पड़ी थी।

थानेदार बोलता फिरा, "साफ़ चोरीका मामला है। हो दस तो पाँच। हाँ दस एक पर! इसको पड़तालकर चालान करवा दूँगा।"

देवूने मना किया—"छोडो ! यह सब मत बोलो घोपाल !"

जगनने कहा, "दोपहरकी गाडीसे ही चलो, मुकदमा कर आयें।"

उसपर भी देवू बोला, "नहीं।"

देवू धीरे धीरे यतीनके पास जाकर बैठा।

यतीन बोला, "सुना, रातो रात पेड काट ले गया?"

देवू जरा फीकी हँसी हँसा।

जगनने कहा, "नालिश करनेको कहता हूँ, लेकिन देवू राजी नहीं हो रहा है।"

नालिश करके क्या होगा? कानूनन तो पेड जमीदारका है। नाहक ही पैसे बरबाद करनेसे क्या फायदा?'

"इतने ही में थक गये देवू बाबू?"

'हां, थक ही गया हूँ यतीन बाबू! अब और नहीं चलता।"

'ठहरिए चाय बनाता हूँ। फतिंगा! अरे फतिंगा!" और फिर फतिंगा ही नहीं, साथमें एक बच्चा और आ पहुँचा।

'मासे कहो, चाय बनाये।"

हरेनने कहा, 'यह और कहाँसे आ जुटा? एक रामसे ही खैर नहीं, ऊपर से सुग्रीव!'

यतीनने हँसकर जवाब दिया "यह फतिंगाका दोस्त है, जक्शनका। कल पुलिसके पीछे-पीछे आ गया था पेड काटनेका हगामा देखनेके लिए। वहीं जगलके और पिंजरेके पछीका मिलन हुआ! फतिंगा उसे ले आया है।"

'नन्दी भृंगीके साथ मजेमें है आप! ऐसे सब आपके ही पास जुटते है आकर।

'मेरे पास नहीं, फतिंगा उसे माँके पास ले आया है।'

"यानी? लुहार-बहूके पास?"

हँसकर यतीनने कहा, "हाँ।"

'अनिरुद्ध उसे मारकर निकाल बाहर करेगा।'

कल समझौता हो गया है। अनिरुद्ध बाबू भगाना चाह रहे थे। माँने कहा, यह गोरू चरायेगा, खायेगा पियेगा रहेगा। अनिरुद्ध बाबूने कल खरीदे हैं न! और लुहारखानेकी धौंकनी खींचेगा।"

इसी बीच फतिंगा आकर बोला, 'चाय लीजिए बाबू!"

उधर टन बज उठा। फतिंगा जल्दीमें आधी चाय छलकाकर चायके कटोरे रखकर एक ही छलाँगमें सड़कपर जा रुका 'टंग टंग टंग! नेराग,

हेराम ! अरे गोबरा, चल चल ! शिवजी चढ़ेंगे, चल देख आयें !"

गाजनका ढाक बज रहा था। पूरे एक बरसके बाद शिवजीको आज पोखरके पानीसे निकाला जायेगा। भक्त लोग डोलमें बिठाकर ले आवेंगे।

जगन बोला, "भक्त कौन-कौन हुआ, जानते हो घोषाल ?"

हरेनने कहा, "ओनली फाइव !" उसने एक हाथकी अँगुलियाँ फैलाकर दिखा दीं।

"चलो, ज़रा देख आयें।"

"चलो।"

जगन और हरेन चले गये।

यतीनने कहा, "देबू बाबू ?"

"कहिए ?"

"क्या सोच रहे हैं ?"

"सोच रहा हूँ"—देबू हँसा—"देखेंगे आप ?"

"क्या ?"

"चलिए मेरे साथ।"

थोड़ी ही दूरपर श्रीहरिका मकान। मकानके बाद खलिहान। रास्तेपरसे ही खलिहान दिखाई पड़ता। वहाँ एक विशाल भीड़ जमा थी। खलिहानके बीचमें सुनहले धानोंका बड़ा-सा ढेर। पास ही बाँसके तिपायेपर वज़नका काँटा। एक पेड़के नीचे कुरसीपर बैठा था श्रीहरि। कई जने देबू और यतीनको देखकर ओटमें हो गये। उधर काँटेपर वज़न चल रहा था—राम दस रामे राम ग्यारह ग्यारहजी ग्यारह।

देबूने कहा "देख लिया ?"

यतीनने हँसकर कहा "यदि तेरी पुकार सुनकर कोई न आये तो अकेला चल।"

"मैं क्या सोच रहा हूँ समझे आप ? मैं अकेला पड़ गया हूँ।"

ज़रा देरके बाद यतीनने कहा, "तो आप कोई मेलमिलाप कर लीजिए देबू बाबू ! मन ही बड़ी झंझटमें पड़ेंगे आप !"

देबू हँसा। बोला "मैं उसकी फ़िक्र नहीं करता। सोचता हूँ इतने दिनोंका यह गाजन, गाजनमें कितनी धूम होती थी। सारे गाँवके लोग जी जानसे खटते थे। दूसरे गाँवोंसे धूमधामकी होड़ चलती थी। वह सब-कुछ उठ जायेगा। या फिर यह उत्सव आज श्रीहरिके हाथ चला जायेगा। देवतापर हम लोगोंका अधिकार नहीं रहा, भगवानपर हम लोगोंका अधिकार नहीं रहा। हमारे भगवान्‌को भी छीन लिया!"

नलिन आकर खड़ा हुआ।

यतीनने कहा, "क्या खबर है नलिन ?"

"आठ आना पैसा। अबकी गाजनमें घोष बाबू मेला लगायेंगे। [illegible] खिलौने बनाकर बेचूँगा। रंग खरीदना है।"

"श्रीहरि मेला लगायेगा ?" देबू उठ बैठा।

नलिनको रुखसत करके यतीन बोला, "लड़केका हाथ बड़ा अच्छा है।"

देबूने कहा, "उसका नाना बड़ा नामी कारीगर था—कुम्हार।"

"कुम्हार ? नलिन तो बैरागी है !"

"हाँ ! काँचके खिलौनोंका प्रचलन हो गया। बुढ़ापेमें बेचारेने भीखकी शरण ली। बैरागी हो गया। इसके सिवा विधवा बिटियाके ब्याहके लिए भी बाना पड़ा।" कुछ देर चुप रहकर देबूने कहा 'सो देख रहा हूँ, श्रीहरि अबकी धूमधामसे गाजन करेगा।'

पचीस

ढाककी आवाज़से भोरमें ही—भोर क्या, कुछ रात बाकी थी तभी यतीनकी नींद खुल गयी। गाजनका ढाक। पहले तो चैतके पहले ही दिनसे गाजनका ढाक बजा करता था। पिछली बारसे पातूने देवोत्तर नौकरान जमीन छोड़ दी—तबसे तीस तारीखसे बजता है। नकद पैसेपर दूसरे गाँवके बजनियेको ढाक पर लिया गया है। रातके अंतिम पहरमें ढाकके बोल यतीनको अच्छे लगे। ढाकमें एक गूढ़ गम्भीरता है—प्रचण्डताकी। रातके अंतिम पहरके सन्नाटेमें प्रचण्ड गम्भीर शब्दसे उसे एक पवित्रताके आभासका अनुभव हुआ। दरवाजा खोलकर वह बाहर निकला।

चकित रह गया वह। रातके अंतिम पहरमें ही बस्तीमें जागरणकी लहर दौड़ गयी है। ढेंकी चलने लगी। औरतें इसी बीच रास्तेपर निकल आयीं। हाथमें पानी भरा लोटा—चण्डीमण्डपमें छिड़कावके लिए जा रही हैं। रामा दासी बड़बड़ाती हुई तैंतीस कोटि देवताओंका नाम ले रही थी—और वह यहींसे सुनाई पड़ रहा था। गाजनके कई भक्त नहाकर लौट रहे थे। वे ध्वनि कर रहे थे—शिवो—शिवो ! हर हर बम !

यतीन उठना सदा सवेरे ही है, लेकिन रातके आखिरी पहरमें कभी नहीं जगा। बस्तीका यह रूप उसके लिए नया है। वह जब जगता है, तब राणा दीदी भगवान् और अपने पुरखोंको गालियाँ देती होती है। औरतोंका काम धन्धा शुरू हो जाता पूजा-अर्चनके बाद।

अनिरुद्धके पिछवाड़ेकी खिड़की खुल गयी। धुँधले अँधेरेमें छाया मूर्ति-से रतिया और गोवरा निकल गये। उनके पीछे पीछे निकले पद्म। उसके भी हाथमें लाटा था।

चूँ चरमर करती हुई खाद-लदी एक गाड़ी चली गयी। रात रहते ही खेती का काम शुरू हो गया। खाद डालनेका काम चल रहा था। खादवाली गाड़ीपर ही हल पड़ा था। खाद डालनेके बाद जोताई चलेगी। खेतोंमें अभी रस है। धूपसे माटीका लसलसापन जाता रहा है और वह खतीके लिए बड़े मजेकी हो गयी है। ढेलेके लौंदेके नीचे जैसे छुरी चलती है, वैसी आसानीसे गले तक माटीमें डूबकर चीरता हुआ चलेगा हलका फाल। बड़े-बड़े ढेले फालके दबाव और निकलते चले जायेंगे और मालूम जरा भी भाटा नहीं लगेगी। मामूली ठोकरसे ही ढेले चूर-चूर हो जायेंगे। बैल मस्त उसपर लापरवाह-से चलेंगे। ऐसी जोताईमें हलवाहोंको बड़ा आनन्द आता है। मन ही मन मानो आनन्दका रस झरता हो।

एक कतारमें जैसे जुलूस निकला हो—छः हल गये, उनके पीछे खाद भरी हुई चार गाड़ियाँ। हलके तन्दुरुस्त और बलिष्ठ बलोंको देखकर आँखें जुड़ा जाती। ये चार ही हल-बैल घोषोंके है। घोषके दस हल है—खास हलवाले। घोषकी सारी सम्पत्तिपर प्रसन्न भाग्यलक्ष्मीका प्रतिबिम्ब स्पष्ट है।

कुरता पहनकर यतीन घरसे निकल पड़ा। गाँवसे निकलकर बहारमें जा पहुँचा। गिनती तक पैंसी बहार! बहारके छोरपर मयूराक्षीका बाँध। बाँधपर मोमन हरे सरपतका जंगल। उन्हींके अन्दरसे निकलकर खड़े हैं ताड़के पेड़। बीच-बीचमें सेमल, शिरीष, इमलीके पेड़। पेड़ोंके ऊपर अस्पष्ट प्रकाशमें झाँकती हुई अजान पक्षियोंकी चिमनियाँ। झिल्लियाँ भौंरे बज रहे थे—एक साथ चार-पाँच। शायद चार बज है।

बहार पार करके वह बाँधपर पहुँचा। बाँधसे उतरा मयूराक्षीके चौरपर। पानी घट जाने चौरकी घास गाड़ी हरी हो उठी थी। उसके बीच जतनसे जोती हुई जमीनकी गेरुआ माटी। बहुत ही अच्छी दिखाई दे रही थी। उसमें सञ्जोर पौध सौरस पन-सी पुनगी उठायें स्तरन रूप है। सुबह-सुबह सीतराग

झुण्ड चारेकी खोजमें निकल पड़ा है। यतीनकी आहट पाकर कुछ तीतर फुर फुर उड़कर जंगलमें जा छिपे।

आसमान लाल हो उठा। यतीन नदीकी बालूपर आकर खड़ा हुआ। मयूराक्षी-के बालू भरे घाट और आसमानके मिलन-केंद्रपर पूर्वमें सूरज उगने लगा। कुछ दिन बाद ही महा विषुव संक्रांति है। मयूराक्षी यहाँसे ठीक पूरबको बह गयी है।

मयूराक्षीको पार करके वह जंक्शनके घाटपर पहुँचा। हफ्तेमें दो दिन उस थाने जाकर हाजिरी देनी पड़ती। और-और दिन वह चाय पीकर थाना जाता था। आज जब प्रात कालके नशेमें इतनी दूर निकल ही आया तो तय कर लिया कि हाजिरीवाला काम खत्म करके ही लौटेगा।

गाँवके रास्तेपर पर रखते ही यतीनको फिर हंगामेकी खबर मिली। कितने दिनोंसे हंगामोंके मारे गाँवकी धीमी जीवन यात्राका क्रम सारा भंग हो गया है। आज जान विसन मा किन्होंने श्रीहरिके बगीचेका पेड़ काटकर सहम-नहस कर दिया है। अफवाहोंसे भीड़ भाड़से, जोरसे गाँव चंचल हो उठा है। चण्डीमण्डपमें मारे दुःख और गुस्सेसे श्रीहरि अपना बाल नोचता हुआ चहलकदमी कर रहा है। आज एक-ब एक उसके अन्दरसे पुराना बेहूदा छिरू पाल निकल आया है।

गाँवसे कुछ हटकर उत्तरी बहारमें, यानी जिधर मयूराक्षी नदी है उसके ठीक उल्टे जो बाढ़के खतरेसे खाली जमीन है उसमें एक पोखरा था जो भर गया था। उसीको मिट्टी डलवाकर उसके चारों तरफ शौकसे श्रीहरिने बगीचा लगवाया था। पहलेके खेतिहर छिरूकी रचनात्मकता और आजके आभिजात्य कामी श्रीहरिकी कल्पनाके मेलसे यह बगीचा बना था। श्रीहरिने कलमके अनेक कीमती पेड़ मँगवाकर लगाये थे। मालदह मुर्शिदाबादसे आमकी, कलकत्तेसे लीची-जम्बूफलकी और विभिन्न जगहोंसे कटहलकी, अमृतसागर, कावुली आदि केलेकी कलमें और पौधे उसने जुटाये थे। फल ही नहीं, उसे फूलोंका भी शौक था—मसलन चम्पा गुलाब, गंधराज, बकुलके पेड़ भी बहुतेरे रोपे थे।

श्रीहरिके और भी बहुत-से सपने थे। बगीचेमें सजे-सजाये दो कमरोंका एक बंगला, बंगलेके सामने पोखरकी ओर एक पक्के चौतरेसे घाट तक बँधी होंगी सीढ़ियाँ। उसी कल्पनासे उसने कच्चे घाटके दोनों तरफ कनकचम्पाके दो पेड़ लगाये थे। अशोकका चारा बगीचेके द्वारपर ही लगाया था। इच्छा थी कि पेड़ जरा बड़े हो लें तो उनके नीचे बैठनेके चौतरे बनवाये। साँझको दोस्तोंके साथ वहाँ जायगा। जीमें आया तो रात वहीं खुशियाँ मनाया करेगा मौज-मजे करेगा। जमींदार बाबुओंकी तरह गाना-बजाना खान-पान।

काली रात जाने किसने या किन लोगोंने उसके उस बगीचेको बरबाद कर दिया। श्रीहरि चीख रहा था, चिल्ला चिल्लाकर कह रहा था, 'मैं भी उनकी गरदनपर वार करूँगा।"

उसका खयाल है यह करतूत उन्हीं लोगोंकी है, जिनके पेड़ उसने काटे हैं। पांचों पाण्डवोंपर कुपित होकर कठोर आक्रामक अश्वत्थामाने जैसे अँधेरेमें छिपकर पाण्डवोंके शिशुओंकी हत्या की थी—इन कायर दुश्मनोंने वैसी ही चिन्ते इन पौधोंको बरबाद कर दिया है। मगर श्रीहरि छोड़नेवाला आदमी नहीं अश्वत्थामाकी शिरोमणि काटकर इसका बदला चुकाकर रहेगा। थानेमें खबर भेज दी गयी है। रास्तेमें भूपालसे यतीनकी मुलाक़ात हुई।

हरेन घोषाल बदस्तूर भड़क गया है। उस श्रीहरिको इस मूर्तिम बहद डर लगता है। इस रूपमें छिरू पालने एक बार उसे पानीमें गाड़ दिया था, गरदन पकड़कर माटीमें मुँह रगड़ दिया था। वह ब्राह्मणके सामने डरता नहीं भले आत्माकी परवाह नहीं करता। यतीनके आते ही हरेन उसके पास बैठा। बोला, 'यतीन बाबू, थेस इज सीरियस! वरी सीरियस! छिरू पाल इज फ्यूरियस! ही इज ए डेंजरस मैन!'

जगन इस घटनासे बेतरह खुश हुआ है। इसकी उसने सबसे बड़े सूक्ष्म विचारक विधाताके फसलेसे तुलना भी की। बड़े बगैर सब पढ़े हुए जगनने आज देव भाषामें इसकी व्याख्या कर दी—'खण्डस्य शत्रुव्याघ्रेन निपातित।" यानी साण्डके शत्रुको बाघने मार दिया।'

देबूने कहा, "नहीं, यह काम बड़ा बुरा हुआ है डॉक्टर!"

'तुम्हारी बात ही अलग है भाई! तुम ठहरे धर्मपुत्र युधिष्ठिर!'

देबूने कोई जवाब नहीं दिया। नाराज भी नहीं हुआ। वह वास्तवमें दुःखी हुआ था। पेड़ोंको श्रीहरिने जतनसे लगाया था। फल भी खाता था उनका। श्रीहरिने उसका पेड़ काटा है, फिर भी उसे ही दुःख हुआ। काम बुरा है। पशु-पौधोंसे उसको बड़ी ममता है। ये पेड़ बढ़ते, फल-फूलोंसे लद जाते हर साल, पुष्पानुक्रमसे बढ़ने जाते। आदमीसे पेड़ोंकी आयु ज्यादा होती है। श्रीहरि श्रीहरिके बाल-बच्चे उनके भी उत्तराधिकारी उनके भी बालके लोग उन पेड़ोंके फल-फूलसे परितृप्त होते। देवताको भोग लगाते, गाँवमें बाँटते लोग तृप्त होते। भला उन पेड़ोंको ऐसे नष्ट करना था!

मौसीकी आवाजसे दौड़ते हुए आकर पतितने कहा, "दरोगा आया है।

हरेन चौंक उठा, 'कहाँ?'

फतिंगा तबतक घरके अन्दर दाखिल हो गया था। जवाब दिया गोवराने। वह फतिंगाके पीछे था। बोला, "पोखरसे होकर गावमें आ रहा हू।"

अबकी जगन भी शंकित हो उठा। बोला, "यतीन बाबू, यह कमबख्त निश्चय ही हम लोगोके खिलाफ बयान देगा। और पुलिस भी शायद हम लोगो का ही चालान करेगी। लेकिन जमानतका इतजाम आपको ही करना पडेगा। आप काग्रेसके सेक्रेटरीको पत्र लिख रखें।"

दुर्गा आयी—' गुरुजी !"

"दुर्गा !" देबू यतीनकी चौकीपर लेटा था। उठ बैठा।

'जी, घर चलिए !"

"क्यो रे ?

पुलिस आयी है। घरकी तलाशी लगी। डाक्टर बाबू, आपके भी घरके सामने पुलिस खडी है।"

हरेन सबसे पहले उठा। बोला, "माई गाड ! मुझे माँकी गीताके लिए परेशानी है।"

एक सिपाही तीनेक चौकीदाराके साथ आया और अनिरुद्धके तीनो दरवाजा पर पहरा बठा दिया।

रास्तेपर चलते हुए दुर्गाने कहा, "गुरुजी !"

'क्या है दुर्गा ?"

'घरमें कुछ हो तो मुझे दे दीजिएगा। मै आँचलके नीचे छिपाकर निकल जाऊगी।'

मेरे यहा क्या होगा दुर्गा ? कुछ नही है।

दरवाजेपर खुद सब इसपक्टर था। उसने कहा, "गुरुजी हम आपके घर की तलाशी लेंगे। दुर्गा, तू अन्दर मत जा।'

दुर्गाने कहा, 'हाय राम ! मेरा दूधका लोटा जो यहा रह गया है दरोगा बाबू ! आप मुझपर क्या पड गये ?

हँसकर दरोगाने कहा, 'बडी बदमाश है तू ! कहा है तेरा लोटा, बता ! चौकीदार ला देगा।'

देबूने कहा, 'चलिए दरोगाजी ! दुर्गा, तू यही रह। लोटा मै भिजवाये देता हूँ।"

दरोगाने कहा, 'दुर्गा, तू जरा साफ-सुथरी जगहमें बैठ। कहो साँप बिच्छू न काट खाये।"

एक चीजके बारेमें देबूने सोचा नही था।

पुलिसने घरको ठीकसे देखा। दाव-कुल्हाडोकी पैनी नजरसे निरख-परख की कि उनमें रातको पेड काटनेका कोई निशान है या नही। लेकिन वह-सब कुछ नहीं मिला। गीले कपडोकी जाच की कि उनमें केलेके पौधाका रस तो नहीं लगा है कहीं। लेकिन वह भी नहीं था। पुलिसने मयो प्रजा-समितिके कागज पत्तर ले लिये। इनका देवूको याद नहीं थी। औरोंके घरसे पुलिस खाली हाथ ही निकली।

श्रीहरिने पठौनके खिलाफ भी बयान दिया उसपर भी शक था। श्रीहरि का दोस्त जमादार होता तो क्या होता पता नही मगर सब-इन्सपेक्टरने श्रीहरिकी इस बातपर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। बोला 'घोष बाबू, हर बात की सीमा होती है, उससे बाहर न जायें।"

इस दुनियामें जो लोग अपने मत्यके विधानको लाँघना चाहते हैं विधाताको सबस ज्यादा वही मानते हैं। विधाताको प्रसन्न करनेसे विधान तोडनेके सभी अपराधोका दण्ड हल्का हो जाता है यही विश्वास उनके जीवनका सबसे बडा भरोसा होता है। श्रीहरिने झट कहा, "जी नहीं, नहीं। यह हमारी ही भूल है। आप ठीक कह रहे हैं।"

जो भी हो देवूके घरकी तलाशीके बाद दरोगाने कहा 'गुरुजी, हम आपको गिरफ्तार कर रहे हैं। आप प्रजा-समितिके अध्यक्ष हैं, हमारा सन्देह है कि यह काम प्रजा-समितिने ही किया है। यह अवश्य है कि उसकी अभी पडताल नहीं हुई। फिर भी हम आपको गिरफ्तार कर रहे हैं। जुर्म जरूर चोरीका है।"

देवूने कहा "चोरी? मुझपर चोरीका जुर्म?'

हँसकर दरोगाने कहा, 'पेड काटनेकी बात तो है ही, उसका सम्मन एस० डी० ओ० करेंगे। श्रीहरिकी लाईकी ने आपको भा मारा गयी है।'

'मुझ चोरीके अपराधमें चालान करेंगे दरोगाजी?' न्याय यह ही मानिए आपसे पूछा।

'अर्जुन-जैसे वीरको भी समयके फेरसे गऊएँ उतना पडा था, पता है न गुरुजी! इसके लिए अफसोस मत करें। वक्त तो काफी आ गया। खाना-खाना गरम ही कर लाइए!

दरोगाकी बातसे देवूको अजीब आश्चर्य मिली। उसने कहा, 'थोड़ा-सा जलपान कर लें आप भी?

नौकरी तो झट हो कर लिया है गुरुजी! खाऊँगा जरूर मगर न तो आपके यहाँ खाऊँगा न श्रीहरिके यहाँ। अपना यजीन खाक है। वहीं जो थोडा-सा बनेगा, ले लूँगा।

दरोगा यतीनके यहाँ आकर बैठा।

गावके लोग सिर झुकाये चारो ओर बठे थे। सभी हरान हो सोच रहे थे—"यह काम किया किसने।"

औरतें देबूके यहा आ जुटी। बहुतेरियाने आगनमें भीड लगायी, बहुतेरी बरामदेमे बठी। बिलू तो जसे पत्थर हो गयी। दुर्गाकी आखासे अविराम आसू बह रहे थे। राना दीदीके विलापका अन्त न था। पदम आकर बिलूके पास बैठी थी। बिलूके दु खसे वह भी असीम दु खका अनुभव कर रही थी। उसे लग रहा था, इस दु खका वह हिस्सा बँटा पाती तो बिलूका दु ख वह मेट सकती थी। घूँघटके अन्दरसे उसकी आखासे भी आसूकी बूँदें टपटप चू रही थी।

हठात फतिंगा दौडा आया। लोगोकी भीड़में चालाकीसे सिर धँसाकर वह एकबारगी पदमके पास पहुँचा—"मा, जल्दी घर चलो।"

यतीनकी देखा-देखी वह भी पद्मको माँ कहता है।

खीजकर पदमने सिर हिलाकर पूछा "किसलिए?"—उसने समझ लिया कि चाय बनानेके लिए यतीनने बुलवा पठाया है।

"दरोगा कमकारको पकडकर ले जा रहा है।"

पदमका कलेजा धक उठा। उसका सारा शरीर थरथर कापने लगा। अनिरुद्धको पकडकर ले जा रहा है! यह कसी बात! अकेली पदम ही नही बात सुनकर सभी चौंक उठे।

सिरमें तेल लगाते लगाते देबूने पूछा, 'उसने क्या किया?"

'उसने बहादुरी दिखाकर कहा, मुझको पकडो मने पेड काटा है। दरोगाने पकड लिया।' यह कहकर फतिंगा सिर घुसाकर जिस तरह भीडके अन्दर आया था उसी तरह बाहर निकल गया।

किसी प्रकारसे अपनेको ज्ञान्त करके पद्म भी स्त्रियाकी भीडमसे ठेलते हुए बाहर निकल आयी।

'लुहार-बहू?'

पदमने पलटकर देखा—दुर्गा थी।

'ठहरो, म भी चलती हूँ।"

फतिंगा घटनाको सुलझाकर नही कह पाया था लेकिन उसने गलत नही कहा। ठीक ही कहा। सब खडी भीडमें स एकाएक बाहर आँख मुँह दमकाकर अनिरुद्ध दरोगाके सामने छाती फुलाकर खडा हो गया और बोला, 'देबू पण्डित के बदले मुझे पकडो उसने नहीं पड मैंने काटा है।"

दरोगा नजरबन्द यतीनके बरामदेमें बठे थे। सामने लोगोकी एक अच्छी

सामी भीड़ जमा हो गयी थी। दरोगाको लेकर वहाँ खड़ी भीड़का एक-एक आदमी आकम्पित विस्मयसे उसकी ओर ताकने लगा।

अनिरुद्धने कहा, "कल रात मैंने कुल्हाड़ीसे सारे पेड़ काट डाले हैं और जाफरीको 'चरखाई' तालाबमें डाल दिया है।"

बात झूठ न थी। पैनी कुल्हाड़ीसे अनिरुद्धने छिरू पालसे अपना पेड़ काटनेका बदला चुकाया था। बदला लेनेके उन्मत्त आनन्दसे वह उसी अँधेरी रातमें नाचता-नाचता गया था और बच्चोंकी तरह अपने मुँहसे तालियाँ बजाकर बाजा बोलता गया था—घाजिज जिज जिनाक जिजि ना जि जि जिनाक जिना। इस बातका किसीको पता नहीं, उसने किसीसे कहा नहीं, पद्म तकसे नहीं। पद्म इन दिनों उन दोनों लड़कोंके साथ अलग घरमें रहती है। रातको अनिरुद्ध चुपचाप गया और चुपचाप ही लौटा। सुबहसे श्रीहरिको बौखलाते देख वह मन-ही-मन खुश होता रहा। पुलिसके आनेसे भी नहीं डरा, जरा भी नहीं। सुबह अपनी कुल्हाड़ीको आगमें तपाकर उसने उसपर-से अपराधके सारे दाग पोंछ लिये थे। कपड़ेमें केलेका रस जरूर लगा था, सो उस कपड़ेको उसने पोखरमें गाड़ दिया था। लेकिन जब दरोगाने देबू गुरुजीको गिरफ्तार किया तो वह चौंक उठा। उसे बड़ा ठेस-सी लगी—यह क्या हुआ? गुरुजीको गिरफ्तार किया? देबूको? अभी-अभी तो वह जेलसे वापस आया है। बिना कसूर उसको फिर पकड़ लिया? गाँवके सबसे सज्जन परोपकारी, उसके सहपाठी मुसीबतके साथी देबूको पकड़ लिया? जगनको नहीं पकड़ा, हरेनको नहीं पकड़ा, उसको नहीं पकड़ा, पकड़ा देबूको! भीड़में चुपचाप माटीकी तरफ निहारता हुआ क्षुब्ध चित्तसे वह सोच रहा था। उसके कसूरकी सजा भोगनेके लिए देबू भाई जेल जायेगा? सभी लोग मौन होकर हाय-हाय कर रहे थे। वह अधीर हो उठा। सोचते-सोचते वह अकेला और नहीं रुक सका। एक विचित्र आवेगके अतिरेकसे उसने लमहे भरमें दरोगाके सामने आकर हाथ फैलाकर कहा, 'देबू पण्डितको क्यों मुफ्त पकड़ते हो। उन्होंने पेड़ नहीं काटा, मैंने काटा है।' क्षण भरको सारी जनता निर्वाक् हो गयी। चारों ओर सन्नाटा छा गया। दरोगा भी अनिरुद्धकी ओर विस्मयसे आँखें फाड़ देखने लगा। क्षोभ, ग्लानि और विस्मयके परिवेशमें अनिरुद्ध बार-बार अपना अपराध स्वीकार कर रहा था।

उस स्वीकारोक्तिसे मन रिसा सबका पहले देबूका। इसी बीच खबर पाकर वह भागता हुआ आया और अनिरुद्धकी बाँहें पकड़े रोती-सी आवाजमें बोला, "अनि भाई, अनि भाई! तुम फिकर मत करो अनी भाई, मैं जान देकर तुम्हें छुड़ानेकी कोशिश करूँगा।"

अनिरुद्ध जवाब नहीं दे सका। वह गीली आखों गहरे आनंदसे बेवकूफ़की नाईं होंठ फैलाकर हँसता हुआ देबूके सामने खड़ा रह गया। एकाएक उसकी आखोंसे टप-टप आसू गिरने लगे। देबू भी रो पड़ा। और लोग भी रोने लगे। यतीन और दरोगा भी आँखें पोछ रहे थे। साथ-ही-साथ बस्तीके सबने अनिरुद्धकी बड़ाई की—अनिरुद्धने सही आदमी-जैसा काम किया है। बेशक! शाबाश अनिरुद्ध, शाबाश!

तभी भीड़के पीछेसे एक ऊँची आवाज सुनाई दी—"शाबाश भाई, शाबाश! तुम्हें सौ बार शाबाशी!"

विचित्र घटना! यह आवाज थी जो सब-कुछ खो चुका है उस तारिणी पालकी, फतिंगेके पिताकी। काला लम्बा-सा आदमी, बाहरको निकले हुए बड़े-बड़े दाँत, कुछ पागला-जैसा। अनिरुद्धके इस कार्यमें उसे जाने कैसे एक महोल्लासकी खोज मिली।

अन्दर पद्म निर्वाक् खड़ी थी। उसकी आखोंसे आँसू झर रहे थे। उसकी बोली खो गयी थी, चिन्ता खो गयी थी, भविष्यत खो गया था। मात्र वर्तमानमें खड़ी वह केवल आसू बहा रही थी। दुर्गा खड़ी थी जरा दूरपर। फतिंगा और गोबरा पास ही थे। अनिरुद्ध अन्दर आया तो वे हट गये। गीली आखों लज्जित जैसा हसता हुआ अनिरुद्ध सबकी ओर देखता हुआ बोला, "तो, चलता हूँ।"

पद्मकी रसोई तयार नहीं थी। यतीनकी रसोईमें भी देर थी। देबूने कहा, "मेरे यहा रसोई तैयार है अन्नी भाई चलो थोड़ा-सा खा लेना।"

देबूके यहाँ खाकर अनिरुद्ध थाने चला गया।

जाते-जाते दरोगा दुर्गाको एक डपट दे गया— जरा थानेमें आ जाना। तेरे खिलाफ भी शिकायत हुई है।"

आज यतीनने खुद ही रसोई बनायी। जुगाड़ फतिंगा और गोबराने कर दिया। दूरसे दुर्गा सभी बताती रही।

पद्म कुछ देर घरमें बैठी रही। उसके बाद पिछवाड़ेके घाटपर जा बैठी। वहाँ बैठी-बैठी किसी नामहीन व्यक्तिको जोर-जोरसे गाली-सराप देने लगी—" घुन लग जायेगा बदनमें कठिन बीमारी होगी। सर्वांग पत्थरका भी होगा तो फट जायेगा लोहेका होगा तो गल जायेगा। दारिद्र घुसेगा घरमें। लक्ष्मी वनवास लेंगी। आग लग जायेगी घरमें घरकी मोरियाँ राखकी ढेरी हो जायेंगी।

मनमें सरापकी और भी तेज़-ज्वाली बातें घुमड़ रही थीं—बहू-बेटा मरेंगे पिण्ड भी नहीं मिलेगा। दोनो बेटे एक ही खाटपर तड़प-तड़पकर दम

तोड़ेंगे।—लेकिन इसके साथ ही मनके कोनेमें एक गोरी-दुबली सुहागवाली स्त्रीका करुणाकी भीख माँगता हुआ चेहरा झाँक रहा था। थोड़ेमें ही चुप हो गयी वह।

दुर्गाने आकर कहा, "लुहार गढ़, चलो बहन, नजरबन्द बाबू रसोई लिये बठे है।"

पद्मने जवाब नहीं दिया।

"मुँहझौंसी, आती क्यों नहीं? पिण्ड नहीं खायेगी? तेरे लिए हम लोग भी भूखे ही रहेंगे क्या?"

यह मधुर सम्भाषण पतियाका था।

पदमने जवाब दिया—"तू खा ले न रे हतभागे! मैं नहीं खाती। जा!"

"नजरबन्द बाबू दे तो नहीं रहे हैं! तेरे खाये बिना हम लोगोंको नहीं देंगे। खुद भी नहीं खाये हैं। आखिर लुहार मरा थोड़े ही है। उसके लिए इस कदर रोती क्यों है?"

"मुँहजली कहींकी!"—उसे रगेदती हुई पदम अन्दर आ पहुँची।

घतकी उन्तीस अनिरुद्धके मुकदमेकी तारीख थी। करना कुछ नहीं था, उसने स्वयं सब-कुछ कबूल कर लिया था। पुलिसके सामने भी, हाकिमके सामने भी। वकील-मुख्तार, किसीकी भी सलाहपर अपने बयानको उसने बदला नहीं। एकबारगी ही सब तरफसे जरा लापरवाह हो गया था वह। उस दिन जो सबसे शाबाशी मिली उसका एक नशा-जैसा चढ़ गया था उसपर। सजा तो होकर ही रहेगी। देयू कई दिन सदर गया। वकील मुख्तार सबने एक ही बात कही। सजा दो-से छह महीने तककी हो सकती है। पर होगी जरूर।

इस बीच इंस्पेक्टर आकर एक बार जाँच पड़ताल कर गया। उसकी पड़तालका उद्देश्य यह जानना था कि इससे प्रजा-समितिका कोई सम्बन्ध है या नहीं। अपना खयाल उसने गाँववालोंको साफ सुना दिया कि प्रजा-समितिने यह काम करनेको कहा नहीं है, यह सही है, लेकिन गाँवमें प्रजा-समिति नहीं रही होती तो यह घटना नहीं घटती, इसमें मुझे कोई शक नहीं।

दुर्गाको घुलाहट हुई थी। उसके खिलाफ कोई रिपोर्ट की शायद। रिपोर्ट किसने की है, यह कहे बिना भी दुर्गा समझ गयी। तीखी नजरसे उसे ताककर इउसकरके कहा, "मन सुना, जितने भी दागी-बदमाश हैं, तेरा सबसे परिचय है। उनके साथ । बात क्या है, बता तो?"

दुगाने हाथ जोडकर कहा, "सरकार, मं बुरी बिगडी हूँ, यह सही है। मगर हुजूर, म यह कैसे जा सकती हूँ कि अपने गावके छिए पाल "—दातो तले जीभ दवाकर बोली, "नही, यानी घोप महाशय—श्रीहरि घोप, थानेके जमादार बाबू, युनियन बोडके परशीडेंट साहब—ये सब दागी-बदमाश हैं। यह मुझे कसे मालूम हागा! मेल मिलाप, जान पहचान मेरी इन्हीं लोगोंके साथ ह।"

इन्सपेक्टरने डाँट बतायी, लेकिन दुर्गा वेपरवाह बनी रही। बोली, "आप बुलवाइए सबको, मैं सबके सामने कहती हूँ। अभी-अभी उसी रातको तो जमादार साहबने घोप बाबूके बैठकेमें दिल बहलावके लिए मुझे बुलवा भेजा था, म गयी थी। उस रात घोप बाबूके पोखरेमें मुझे साँपने काट लिया था आयु बाकी थी कि जिन्दा रह गयी। रामकिसुन सिपाही था, भूपाल चौकीदार था सबसे पूछ देखिए। मेरी बात किसीसे छिपी तो नहीं ह।"

इन्सपेक्टरने बात नहीं बढायी। कडी निगाहसे ताककर कहा "अच्छा जा! होशियार रहना।'

बडी भक्तिसे प्रणाम करके दुर्गा लौट आयी।

छब्बीस

अब मुसीबत थी पदमको लेकर। उसके मिजाजका अंत पाना मुश्किल। अभी कुछ और थी और अब कुछ और ह। फतिंगा और गौरा तक तो हक्का वक्का हो गये हं। मगर इतना ही ह कि वे दोनो घरमें क्याम रहते नही। बीस तारीखसे बज उठा ह गाजनका ढाक, पानीसे बूढे शिव निकल आये हं, चण्डीमण्डपमें शानसे विराजमान ह—वे दोनो नन्दी भृंगीकी नाई हमेशा चण्डी मण्डपमें हाजिर रहते हैं। गाजनके भक्त भीखके लिए गाँव-गाँवम घूमते तो ये दोना छोकरे भी साथ जाते।

गाँवमें इस बार गाजनकी बडी धूम थी। चण्डीमण्डपमें मन्दिर और नाट्य मन्दिर बनानेके सकल्पको यद्यपि श्रीहरिने छोड दिया, लकिन अचानक इस घटना के बाद वह गाजनम जी जानसे लग गया। लोग भक्त हाना नहा चाहते थे, इसका कारण भी वह जानता था। वह समझ गया ह कि देबू घोप, जगन डॉक्टर और एक दुधमुँहे लडकेने मिलकर उसके समारोहको नष्ट करनेकी साजिश की ह।

इसीलिए वह गाजनमें कमर बाँधकर जुट पड़ा था। छोटा-मोटा एक मेला लगानेकी भी तैयारी की थी। बोलन गानकी दो पार्टियाँ, एक दल झूमरका, कवि-गान—तरह-तरहका इन्तजाम था। जिन लोगोंने चण्डीमण्डपकी छौनी करनेमें इनकार किया है, वे लोग जिसमें चौबीसों घण्टे इस आनन्द-समारोहके पास कुत्तेकी तरह खड़े रहें—इसीलिए इतनी सारी तैयारी थी। भात बिखेरो तो कुत्ते और कौवे खुद ही आते हैं। जिस रोज वह धान बाँट रहा था, उस रोज लोग उसके घरके आस-पास मँडराते हुए उसका ध्यान खींचनेकी कोशिश करते रहे। भवेश चाचा बहुतोंकी पैरवी लेकर पहुँचा। ऐसी बात चल रही थी कि वे लोग कसूर मानकर क्षमा माँग लेंगे, प्रजा-समितिको भी छोड़ देंगे—ऐसा वचन भी दिया है?

गुड़गुड़ा पीते हुए श्रीहरि मन-ही-मन हँसा। मगर इन हरिजनोंको माफ नहीं करनेका। कुत्ते हैं व और ठाकुरके सिरपर चढ़ना चाहते हैं?

कल फिर तारीख है अनिरुद्धकी। सदर जाना होगा। श्रीहरि चंचल हो उठा। अनिरुद्ध जेल चला जाये तो पद्म अकेली रहेगी। उसे अन्नके लाले पड़ेंगे, कपड़ेकी दिक्कत होगी। लम्बी, बड़ी-बड़ी आँखोंवाली, उद्धत और मुखरा लुहार-बहू! देखना है, अबकी वह क्या करती है! उसके बाद अनिरुद्धका चार बीघा बाकर। उसकी तो पूरी जान ही नीलामपर चढ़ चुकी है। शायद इतने दिनोंमें नीलाम हो भी चुकी हो। जो भी हो।

कालू शेखने आकर सलाम किया—"हुजूरको माँजी बुला रही हैं।"

"माँ?—ओ, आज नीलषष्ठी भी तो है!"—वह चला गया।

चैत संक्रान्तिका पहला दिन नीलषष्ठी। तिथिमें षष्ठी हो चाहे न हो, जो औरतें व्रत मानती हैं, वे उपवास जरूर रखती हैं, पूजा करती हैं, बच्चोंका टीका लगाती हैं। नील यानी नीलकण्ठने शायद इसी दिन लीलावतीसे विवाह किया था। लीलावतीकी गोदमें उज्ज्वल नीलमणिकी शोभा। नीलषष्ठी व्रत करनेसे नीलमणि-जैसे बच्चे होते हैं।

पद्म सभी षष्ठी-व्रत करती है। उपवास रखा है। मगर आफत हो गया है पतिंगा और गोबराके। आज सुबहसे ही उनका कहीं पता नहीं। आज दरअसल ढाक बजाते हुए भक्त गाँवोंमें घूम रहे थे। एक भक्त कल दुपहरी फीता बाँध खम्भेपर टाँगा रहेगा। यह कोई आसान काम है? ये दोनों इसीके पीछे पाठ डाल रहे थे। पहले भक्तोंकी यहीं लोहेके काँटे गाँथ घुमाए जाते थे। अब ऐसा नहीं होता।

इन्तजार करते-करते आखिर पद्म खुद चण्डीमण्डपके पास पहुँची। ढाक

बज रहा था। शायद चडक लौट आया।

चण्डीमण्डपके पास मेला लगा था। बीसेक दूकानें। ज्यादातर मिठाई पकौडीकी—बैंगनी, फुलौनी, पापड। बच्चे आते, खरीदते और खाते। चारेक मनिहारिनोंकी दूकानें थी। वहा युवतियोंकी भीड ही अधिक थी—सब फीता, आलता, टीका, फुलेल खरीद रही थी। पेडके नीचे तीन चूडीवालियोंन बिसात बिछायी थी। एक पेड-तले बैरागीका नलिन भी कुछ खिलौने लिये बठा था। अच्छा! इस बुड्ढेने खिलौने तो खूब बनाये ह। बुड्ढा तम्बाकू पी रहा है और गरदन हिला रहा ह। वयस्क लोग अलसाये मदमो घूम रहे थे। इन दो दिनोंमें खेतीके काम-काज बन्द हैं। हल जोतना, बैलको जूएमें लगाना मना है। दो दिन सब कामोसे छुट्टी।

फतिगा और गोवराकी सूरत नही दिखाइ पडी। इसका मतलब कि चडक अभी वापस नही लौटा ह। यह ढाक श्रीहरि घोषकी मानो आगसे बज रहा है। पदमको शायद पता नही ह कि घोषने इस बार दस ढाक ठीक किये ह।

पातू किसी और गावमें बजाने गया है। हालत हर जगहकी एक ही है। लगभग सभी जगह बजनियोंकी नौकरान जमीन ले ली गयी ह। यहांके ढाक बजानेवाले वहाँ जाते है, वहांके यहा आते हैं। सतीश बाउरी भी अपनी बोलन पार्टी लेकर दूसरे गाव गया है।

पदम लौट आयी। जमीनपर आचल फैलाकर लेट गयी। दूसरेके बच्चेके लिए यह कैसी विडम्बना है उसकी। जरा देर बाद वह फिर बाहर निकली। अबकी धूल भरे उन दोनो लडकोंका देखा। पकडकर उन्हें यतीनके पास ले आयी—"जरा शक्ल तो देखो इन लोगोंकी। डाटो!"

यतीन कुछ बोला नही धीरेसे हँसा।

पद्मने कहा, 'तुम हँसो मत! तुम्हारी हँसीसे मेरे सर्वागमें आग लग जाती है। अन्दर चलो, टीका दूँगी।"

टीका देकर पद्मने कहा, 'मजाक नहीं, तुम फतिगासे साफ कह दो कि अगर वह इसी तरह भटका करेगा तो तुम उसे निकाल दोगे, खाना नही दोगे। गोबरा बल्कि अच्छा है। उसे यह फतिगा ही ले आता ह। कह दो, कल वे कहीं न जायें!

यतीनने इस बार बनावटी गम्भीरताके साथ कहा, अच्छी बात ह!' उसके बाद फतिगाको जोरोस और गोवराको हल्केस डाँटा। यानी दानोके दो तरहसे कान ऐंठ दिये।

लेकिन इससे होता क्या है!

गाजनके दिन फतिंगा और गोबरा भला घर रहें यह कभी हो सकता है? वह रात रहते ही ढाक बजनेके साथ-साथ गोबराको साथ लेकर निकल पड़ा। निकला सो फिर काहेको लौटे! लौटनेपर माँ रोक न ले कहीं।

आज बूढ़े शिवकी पूजा है। पूजा, होम, बलिदान। भक्त आज तमाम दिन लेटा रहेगा। उसका काँटावाला तख्ता कुछ इस तरहका बना है कि घुमानेपर वह चाँ-चाँ करके घूमता रहेगा।

फतिंगाने गोबरासे कहा, "आज हम लोग शिवका उपवास करेंगे।"

"उपवास?"—गोबराको भूख जरा ज्यादा लगती है।

"हाँ! बूढ़े शिवका उपवास! सभी करते हैं। नहीं करनेसे पाप होता है। उपवास करनेसे ढेरों रुपया मिलता है।"

गोबरा इस बातसे इनकार नहीं कर सका कि गाजनका उपवास सभी करते हैं। यह उपवास लगभग सार्वजनीन है। बाउरी-बजनियोंसे लेकर ऊँची जातिके ब्राह्मण तक आज उपवास करते हैं। देबू उपवास करके ही अनिरुद्धके मुकदमेकी पैरवीमें शहर गया है। श्रीहरिका भी उपवास है। लेकिन गोबरा इस बातको नहीं मान सका कि उपवास करनेसे रुपये मिलते हैं। अगर ऐसा ही होता तो फिर पण्डित गरीब क्यों है?

गोबराकी एकान्त अनिच्छाको फतिंगाने समझा। कहा, "और ज्यादा भूख लगेगी तो चौधरीके बगीचेमें जाकर आम खायेंगे। काफी बड़े-बड़े हो गये हैं—समझा? आम तोड़नेसे वे कुछ कहेंगे नहीं, पाप भी नहीं होगा।"

इसमें गोबराको कोई एतराज न रहा।

"न होगा, तो किसीसे यहीं माँगकर खा लेंगे।"

"ऊँहूँ! सिर तो माँ मारेगी। कहेगी—निकल जा, भिखमंगा कहींका!"

"तो चल हम लोग महाग्राम चलें। वहाँ यहाँसे ज्यादा धूमधाम होती है। और वहाँ माँगकर भी खायेंगे, तो माँ क्या जानेगी? चल!"

इस प्रस्तावसे गोबरा उत्साहित हो गया।

गाँवके छोरपर एक सूखे तालाबके बाँधपर लँगड़े पुरोहितका तीन टाँगों वाला घोड़ा चर रहा था। फतिंगा वहीं रुक गया। बोला, "पकड़ तो इसे!"

"लात मारेगा।"

"धत् तेरी! पीछेकी एक टाँग टूटी हुई है। लात मारने चलेगा कि आप ही धप्पसे गिर जायेगा। पकड़! इसीपर चढ़कर दोनों जने चलेंगे। अपना कपड़ा उतार ले। उसीकी लगाम बना लेंगे।"

ल्ताड वह सच ही नही चला सकता मगर काटता है, जिद्दी कुत्तेकी तरह दात निकालकर काटने दौडता ह। फतिंगेको यह बात मालूम नही थी। शायद अपनेको बचानेके लिए इस घोडेने इस साधनका आविष्कार किया था। लाचार फतिंगाको उसपर चढनेका सकल्प छोडना पडा।

सॉझको गाजनकी पूजा खत्म हो चुकी थी। चडक समाप्त हो गया था। आगसे भक्तोका फूल-सा खेलना भी हो चुका था। बलि और होम भी शेष हो चुके थे। कपालपर टीका लगाये हरीश और भवेश चण्डीमण्डपमें बठे थे। श्रीहरि अभीतक सदरसे नही लौटा था। ढाकवाले बडी उमगसे ढाकपर अपनी करामात दिखा रहे थे। बडे-बडे ढाक ढाकोपर डेढ डेढ हाथ लम्बे पखनोके फूल! इन ढाककी आवाज भी बडी प्रचण्ड होती है। भले लोग कहते हैं ढाकका बजना बन्द होता है तो मीठा लगता ह। लेकिन कुशल बजनियेके हाथोमे जब ढाकपर रागिनीके अनुरूप बोल निकलते ह तो आकाश-बातास गूँज जाता ह। उसकी गुरु गम्भीर ध्वनिमे कलेजेके अन्दर भा नकार उठती है। नाच-नाचकर मुँहसे बोल दुहराते हुए एक-एक बजनिया क्रमसे बजा रहा था और उनके नाचके साथ ढाकपर-के पखनोका फूल नाच रहा था। कौओका काला पखना और सिरके बिल्कुल ऊपर बगुलेका सफेद पखना।

हरीश अफसोस कर रहा था— इस बार चौधरी नही पहुँच सके। उनके बिना सूना लगता ह।"

चौधरी हर साल आते है। ढाकके वह एक समझदार श्रोता ह! ताल पर गरदन हिलती रहती ह। बजा लेनेके बाद अपनी गठरी खालकर चौधरी बजनियाको इनाम देते ह। किसीको पुराना कुरता किसीको पुरानी चादर, पुरानी धाती। अबकी वह बीमार ह। माथेमे वही जो चोट लगी थी और खाट पकडा थी तबस उठे नही। घाव सूख नही रहा ह साथ ही थोडा-थोडा बुखार भी रहता ह।

मेलेमें इस समय भीड खासी थी। औरत मद, बूढे-बच्चे दलके दल घूम रहे थे। शामके बाद कवि-गान होगा। शोरका अत न था। अचानक उस शोर को चीरते हुए कालू शेखका गला सुनाई पडा— 'ऐ हट जा! हट।"

भीडको चीरकर रास्ता बनाता हुआ कालू घरा मामने आया पीछे-पाछे श्रीहरि। भवश और हरीश आगे बढे।

पोपले मुँहसे श्रीहरिने हँसकर कहा, "शुभ समाचार है—दो महीना सश्रम कारावास !"

भीड़को ठेलता हुआ देबू घोष भी जा रहा था। उदास चेहरा लिये वह यतीनके यहाँ गया।

यतीन, देबू जगन और हरेन—मांझकी बैठकमें आज चार ही जने थे। समस्या यह थी कि यह खबर पद्मको कौन दे ? कसे ?

अन्दरके किवाड़की जंजीर खनक उठी। पदम बुला रही थी। यतीन उठकर गया। अनिरुद्धको सजा हो गयी, यह सुनकर वह बहुत ज्यादा गमगीन नहीं हुआ था। दो महीनेकी सजा यतीनकी रायमें कम ही हुई। अनिरुद्धने जिस मनसे बेकसूर देबूको बचानेके लिए सच्चाईको साफ स्वीकार किया है उसका वह मन अगर टिका रह गया तो वह एक नया ही आदमी होकर निकलेगा। और वह मन नहीं बुदबुदा-सा ही क्षणजीवी हो, तो भी दुःख क्या करना ? दरिद्रताके रोगसे जर्जर हुई मनुष्यताका मरना तो जरूरी ही था। मगर मुसीबत तो थी उसे पद्मके लिए। इस अपढ़ आवेगमयी गँवई स्त्रीने जाने किस मायामें उसे इस तरहसे जकड़ लिया है कि वह समझ नहीं पाता। बुद्धिसे उसका विश्लेषण करके भी वह इसे टाल नहीं सकता। वृहत्तर जीवन और महत्तर स्वार्थकी तुलनापर तौल करके भी वह इसके मूल्यको हरगिज तुच्छ नहीं कर पाता वह माटीमें दबी स्पष्टी कल्पना नहीं कर सकता, नहीं करता पानीमें डुबानेपर वह मूर्ति गल जाती है पानीके नीचे पंक-समाधि लेती है—इस बातको स्मरण करके वह हँसता है। किन्तु इस मिटनेवाली माटीने अक्षय देवी-रूप कैसे पाया ? लगता है काल-स्रोतके जलमें तूफानसे भी वह नहीं गलेगी। शिक्षा नहीं है, संस्कार नहीं है—अभिमान और कुसंस्कारसे भरी पदम माटीकी मूरत नहीं तो और क्या है ? ऐसी सजीव देवी मूर्ति वह कैसे बन गयी ? किसी मन्त्र-बलसे ?

रोते रोते पद्मकी दोनों आँखें सूज गयी थीं। आँखोंको पोंछते हुए एक म्लान हँसीके साथ बोली, 'दो महीनेकी सजा हुई ?

यतीन हैरतमें पड़ गया। इसी बीच उसको किसने यह खबर कह दी ? फिर सुधारकर उसने कहा "हाँ।"

लम्बा निश्वास डालकर पदम बोली, 'चलो खैर हो। भले भले घर लौट आवें। लेकिन उसने पापका दण्ड मुन्शीजीको नहीं भोगना पड़ा उसने सच्ची बात

कह दी—यही मेरा सौभाग्य है! नही तो उसे अनन्त कालके लिए नरक मिलता, उसके सात पुश्त नरकमें जाते।"

यतीन अवाक् हो गया।

पदमने कहा, "पानी उबल गया है। चाय तुम बना लो। मैं ज़रा इन मुँहजले छोकरोंको देखूँ। अभीतक नही लौटे। दिन भर खाया नही है।"

"खाया तो तुमने भी नही है मा! खा लो।" यतीनको याद आ गया, कल पदमका षष्ठीका उपवास था और आज उसने दिन भर गाजनका उपवास किया है।

"खाऊँगी मैं, पहले उन दोनोंको पकड़ लाऊँ।"

यतीन और कुछ कहे, इसके पहले ही पदम जा चुकी थी।

श्रीहरिके पिछवाड़ेके घाटपर उसकी माँ ज़ोर-ज़ोरसे और विस्तारके साथ अनिरुद्धकी सज़ाकी घोषणा कर रही थी। बहुत पहलेसे ही कह रही थी, कहना अभीतक खत्म नही हुआ था। पुत्रके गर्वसे गर्वित बुढ़िया हर पल पाससे रोनेकी एक आवाज़की प्रतीक्षा कर रही थी।

आज बातचीतका मौका कम ही मिल रहा था।

चाय पी चुकनेके बाद यतीनने पूछा, 'चौधरीजी कैसे हैं डाक्टर?"

देवू चौंक उठा। अनिरुद्धके इस झमेलेके कारण दो दिनसे उनकी खोज-पूछ वह नही कर सका था।

जगनने कहा, कुछ अच्छे है। मगर वह ज़रा-सा जो घाव है, वह अच्छा ही नही हो रहा है। उस जख़मसे थोड़ा-थोड़ा पीब आता है और थोड़ा थोड़ा बुखार भी रहता है।

यतीनने कहा 'किसी दिन जाऊँगा उन्हें देखने।

देवू बोला कल ही सबेरे चलिए न! मैं भी जाऊँगा।'

"मुझे भी बुला लेना देवू! तुम्ही लोगोंके साथ चला चलूँगा। मुझे तो जाना ही पड़ेगा। एक साथ ही चला जाऊँगा। हरेनका क्या खयाल है?"

'हमारा तो नही होगा ब्रदर। पहला बैशाख है, खाता पत्तर बदलनेका हंगामा। मुझे इछू शेखके पास जाना होगा—आलेपुर। चारेक रुपये लाने हैं। वरना साले वृन्दावनको तो जानते ही हो, फिर कभी एक पैसा उधार नही देगा।

पहला बैशाख। नया खाता। बात अचानक आ पड़ी। बात देवूको भी

याद आयी। उसपर खास कोई कर्ज तो नहीं है। उसकी गैरहाजिरीमें दुर्गाकी मार्फत जवदानकी एक दूकानका ग्यारह रुपया दस आना बाकी हुआ है। अनिरुद्धके इस झमेलेकी उलझनमें उसे इसकी याद ही नहीं आयी। दुर्गाने भी कोई तकाजा नहीं किया। और रुपये ही कहाँसे आयेंगे? जेलसे लौटनेके बाद अपनी सोचनेका तो मौका ही नहीं मिला उसे। मगर बिना सोचे भविष्यका क्या होगा? अचानक कहीं चल बसे वह तो अन्त तक बिलू क्या इस पद्मकी नाई, या कि तारिणीकी स्त्रीकी तरह यह सोचते ही वह सिहर उठा। उसने बार-बार अपनेको धिक्कारा—छि छि! फिर भी मनसे चिन्ता गयी नहीं। बिलूको छोड़कर मुन्ना याद आया। उसका मुन्ना क्या पतिंगाके समान न, न, न! उसने मन-ही-मन कहा, हर्गिज नहीं। कल नये सालकी शुरुआतसे वह अपनी बात सोचेगा। अब नहीं। बाल-बच्चेकी जिम्मेदारी और यह गरीबी रहते हुए उसे परायेकी चिन्ता करनेका अधिकार नहीं है। वह अधिकार भगवान्‌ने उसे दिया नहीं है। वह भार, वह अधिकार श्रीहरिका है। गाजनका सारा खर्च उसीने दिया है। देश भरके लोगोंको उसीने धान उधार दिया था। यह भार उसीका है।

वह बड़े ही आकस्मिक ढंगसे उठ पड़ा।

जगनने पूछा "बात क्या है भई? एकाएक ही कैसे उठ पड़े?"

"एक जरूरी काम भूल गया हूँ।"

वह चला आया। रास्तेमें चण्डीमण्डपमें जाकर शिवको प्रणाम किया—"हे देवाधिदेव महादेव, इस साल आपने अच्छी तरह बिता दिया। आशीर्वाद दो कि अगला साल भी भले भले निकल जाये।"

लँगड़े पुरोहितने उसे प्रसादी माला दी।

चण्डीमण्डपसे उतरकर वह अपने घर नहीं गया, वह गया दुर्गाके यहाँ। उसीने दूकानसे उधार ला दिया था। कल उसीकी मार्फत दूकानदारको एक रुपया भेजकर वह महीने भरकी मुहलत माँग लेगा। कुछ ज्यादा ही समय लेना अच्छा है। तीसी, जौ, गहूँ—जो कुछ भी घरमें है, वैशाखके शुरूमें ही बेच डालेगा। खाने भरका आलू रखकर बाकी बेच देगा। सबसे पहले कर्ज चुकाना होगा।

घरमें दुर्गाकी माँ बैठी थी। अँधेरेमें बरामदेपर अकेली बठी जाने किसे गाली दे रही थी—"राक्षस, घरमें आग लगे, आग लगे पेटमें। मरे! मर

जाये ! और यह हरामजादी, बाढके आगेका तिनका हो जैसे ! मैं पूछती हूँ, सबसे पहले तेरे ही जानेकी क्या जरूरत थी ?"

देबूने पूछा, "दुर्गा कहाँ है फूफी ?"

बिलू दुर्गाकी माको—इसलिए कि वह उसके मायकेके गावकी थी—फूफी कहा करती थी।

दुर्गाकी माने जरा घूँघट खींच लिया। दामादके सामने सिरपर कपडा न हो और वह सिरके बाल देख ले, तो शायद चितामें बाल जलते नही है। दुर्गाकी माने घूँघट खींचकर कहा "उस हरामजादीकी मत पूछो बेटे। बाढके आगेका तिनका है। रुपेन बजनियेका जाने क्या हुआ है सो सबसे पहले वही गयी है।"

रूपेन यानी उपेन। बूढा उपेन, जिसका अपना सगा कोई नही। बेचारा! दुनियामें कोई नही है उसका। लेकिन वह तो यहाँ नही रहता। वह तो कंकना में भीख मागा करता था।

देबूने पूछा, 'उपेन आजकल गाव लौट आया है क्या ?"

'मरनेको लौटा है बेटा। गावमें आग लगानेको लौटा है। कलसे यहाँ गाजनका मेला आया है। आज एक फुलौडीवालेने तीन दिनकी बासी कुछ फुलौडियाँ फेंक दी थी—इस डरसे कि सनेटरी बाबू आयेगा। वह फुलौडियाँ उठाकर रुपेनने गपागप खा ली। खाते ही शामसे कै-दस्त जारी हो गया। अपनी दुर्गा बीबी यही सुनकर देखने गयी है। अहा हमदर्दी कितनी है! मैं क्या कहूँ बेटे!"

"सत्यानाश! वसाथ आ रहा है। कही पानीकी एक बूँद नही और इस समय हैजा!

वह जल्दी जल्दी उपेनके यहाँ गया। एक क्षणमें ही अपनी सारी बात भूल गया।

आँगनमें माटीपर ही पडा तडप रहा था जरा-जर्जर बूढा। "पानी पानी! —आवाज अनुनासिक हो उठी थी। कोई कही न था केवल दुर्गा खडी थी। उसने छूत बचाकर एक माटीके बरतनमें उसे पानी दिया है, पर बूढा पानीके उस बरतनसे काफी दूर होकर निस्तेज-सा हो पडा है। काँपते हुए हाथ फैलाकर आँखें फाड-फाडकर बडी व्याकुलतासे वह चीख रहा था— पानी पानी!"

देबू आगे बढा। बरतन लेकर वह उपेनके पास बैठा और थोडा-थोडा करके पानी ढालकर उसे देने लगा। दुर्गासे बोला, दुर्गा, जरा जल्दीसे जा। जगनको

खबर दे। कहना कि मैं यहीं बैठा हूँ।"

यतीनको भी याद आयी। लेकिन तुरत यह खयाल हुआ कि परदेशी है। उसे यहाँके संकटमें खींचना ठीक नहीं। यहाँका सब दुःख-कष्ट हमारा है, क्योंकि यह गाँव हमारा है। अतिथि-आगन्तुकको सुखका ही हिस्सा देना चाहिए। दुःख बँटानेके लिए किस मुँहसे, किस अधिकारसे कहा जाये उसे।

सत्ताइस

शुभ नक्षत्र। बड़े लोग साथ उठे। बड़ा ही अशुभ आरम्भ है। मौत रूद्रके रूपमें आयी है—साथ लेकर आयी है महामारीको। चण्डीमण्डपमें वर्ष-गणना-पाठ और पत्रा विचार चल रहा था। विचार कर रहा था लंगड़ा पुरोहित और सुन रहे थे श्रीहरि घोष और गाँवके बड़े-बूढ़े लोग।

पिछली रातके अन्तिम पहरसे मोचीटोलेमें तीन आदमी इसके शिकार हुए, बाउरी टोलेमें दो जने। उनमें एक मर गया। श्रीहरि गम्भीर होकर सोच रहा था। सामने बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ खड़ी हुई। गाँवको बचाना होगा। अभागोंने चूँकि मेरा विरोध किया है इसलिए इससे विमुख रहना अधम होगा। काम उसने आरम्भ शुरू कर दिया था। भूपाल चौकीदारको उसने यूनियन-बोर्डमें भेजा था। सैनिटरी इन्स्पेक्टरको खबर भेजनेके लिए सक्रेटरीको लिखा था। वह आदमी कल सबेरे आया था। बाउरी और मोचीटोलेका चावलसे मदद देनेकी भी सोच रखी थी। चण्डीमण्डपके इनारेको हवेका छूतसे बचानेका प्रबन्ध किया था। वहाँ कालू शेख पहरेपर तैनात था।

आज सबेर राँगा दीदीने भगवान्‌को गालियाँ नहीं दीं। हाथ जोड़कर बार-बार कहा, भगवान्, रक्षा करो प्रभो! दुहाई है बाबा! तुम्हारे सिवा सहारा और है कौन दयामय! बाबा बूढ़े शिव गाँवको बचाओ! हे बाबा भोलानाथ! हे काली माँ!

पद्म परेशान हो उठी। पतिता और गोबराका क्या होगा? कैसे बचाया जाय उनको? वह थर-थर काँपने लगी।

यतीन भी चिन्तित हो उठा था। उसे यह मालूम है कि बंगालमें कितने

लोग मलेरियासे मरते हैं, कितने भूखसे और कितने अधभूखे रहते हैं। नियति को यह नहीं मानता। वह मानता है कि यह त्रुटि मनुष्यकी है, उसकी अज्ञानता और असमर्थताका प्रतिफल। यह दोष मात्र इसी देश तक सीमित नहीं है—मनुष्यके भ्रम, मंद-बुद्धि, अक्षमतासे पैदा हुआ यह दोष संसारमें सर्वत्र है। रोग एकसे दूसरेमें नहीं फैला, उसी देशमें उत्पन्न हुआ है—अब पिशाचोंके कमानेकी प्रतिक्रिया-स्वरूप चोरकी नाई दान धर्मकी नाई, दान धर्मकी प्रतिक्रियाके भीरुके व्यवसाय सा। पुलिस ऐडमिनिस्ट्रेशनमें उसने पढ़ा है—भिखमंगे किसी किसी बच्चेको रात दिन एक घड़में बैठाये रखते हैं बरसों, ताकि उसका आधा अंग बढ़ नहीं पाये। फिर इनके विकलांगको दुहाईसे भीखके कारोबारके लिए इनको पुतला बना लेते हैं। हो सकता है, यह दोष इस देशमें ज्यादा हो, यहाँ ज्यादा लोग मरते हैं, कुत्ते बिल्लीकी तरह मरते हैं। इसके प्रतिकारकी भी कोशिश की जा रही है। शायद हो कि किसी दिन और फिर उसकी आँखें दप् दप् जल उठीं—आरतीकी युगल कपूर्रशिखा-जैसी, पल भरके लिए। दूसरे ही क्षण उसने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ा। लेकिन आज वह दृढ़ हृदयसे यह नहीं सोच पा रहा था कि ये सब कालके दरवाजेकी बलि हैं। पता नहीं क्यों और कैसे आज सारे गाँवने ही पद्मकी भाँति उसके हृदयको ममतासे भर लिया—वह समझ नहीं पाया। गाँवकी इस दुर्घटना, वियोग, शोकसे वह नितान्त अपने जन-सा ही विपण्ण और दुःखी हो उठा।

वैशाखका पहला दिन। वही जो आखें चतम बारिश हुई, उसके बादसे फिर नहीं हुई। आँधी जैसी हू-हू करती हुई धूल भरी गरम हवाके झोंके। उस हवासे बदनका खून सूख रहा हो जैसे। माटी तपकर आग हो गयी। चारों ओर माता एवं प्यासका हाहाकार। कहीं किसी आदमीका पता नहीं। एक ही राजमें, एक ही बेलामें, एक ही जनकी मौतसे मार डरके सब घरके अन्दर घुस गये—रास्ते पर एक भी आदमी नहीं। केवल देबू और जगन बाहर गये हैं, वे अभी लौटे नहीं। यतीन भी एक बार बाहर निकला था। थोड़ी ही देर पहले लौटा। उसके लौटते ही पद्म जोरसे रोकर बोली, देखो, मेरी हत्या मत करो तुम, तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ। दुहाई है जरा सावधानीसे रहो।'

यतीन सोच नहीं पाता इस अबोध माँको वह क्या कहे।

देबू उपनके दाह-संस्कारमें गया था। सचमुच वह अकेले ही मानो एक सौ हो उठा। इस अर्ध शिक्षित गाँवके इस युवककी कार्य-क्षमता और परोपकारिता देखकर यतीन दंग रह गया है। उसने एक और नयी चीज देखी है—यह है जगन डॉक्टरका अभिनव रूप। चिकित्सकके कर्तव्यमें उससे जरा भी

त्रुटि नहीं हुई। आलस नहीं। इस महामारीके परिवेशमें एक भयहीन जगन। प्रत्येक व्यक्तिकी वह अपनी विद्या-बुद्धिके हिसाबसे वैज्ञानिक चिकित्सा करता चला जाता है। गाँवमें कभी वह फीस नहीं लेता। ऐसे समय भी—जब कि हैजा महामारीमें डॉक्टरोंको ज्यादा कुछ कमानेका मौका मिलता है—जगनने अपनी रीति नहीं तोड़ी। यह उसकी छिपी हुई महत्ताका आश्चर्यजनक परिचय है। जबानपर कोई कड़ी-खोटी बात नहीं, मीठी बातोंसे वह सबको अभय देता चला जाता है।

देबूने डिस्ट्रिक्ट-बोर्डको तार भेजा है। तार लगानेके लिए दुर्गा जंक्शन गयी। यूनियन-बोर्डको देबूने भी खबर भेजी। वहाँ गया पातू। खुद वह बीमारोंके घर घर घूमता रहा। जो बस्ती छोड़कर जाना चाहते थे, उनकी मदद की। उसके बाद उपेन बजनियेके संस्कारकी व्यवस्थामें लगा। बजनियोंमें यहाँ समर्थ तीन ही जने हैं। एक तो भाग गया। बाकी दोने कहा, केवल दो आदमियोंसे लाश जानी असम्भव है। पासकी बाउरी-बस्तीमें बहुत-से लोग हैं सही, पर वे मोचीका शव छुएँगे नहीं। फिर भी उनका सरदार सतीश उसके साथ है। श्मशान तकका रास्ता भी थोड़ा नहीं। मयूराक्षीके ऊपर श्मशान—डेढ़ मीलसे ज्यादा! बहुत सोच विचारके बाद आखिर ग्यारह बजे दिनमें वह अपनी गाड़ी ले आया। उसी गाड़ीमें ले जाकर उसने संस्कारका इन्तजाम किया।

इन्तजाम करके ही वह निश्चिन्त नहीं हो सका। बाउरी बजनियोंको दायित्वका ज्ञान कम है। हो सकता है लाशको ये आसपास ही कहीं डाल दें। इस डरसे वह खुद भी मसान तक चलनेको तयार हुआ। और फिर पातू भी उसका साथी ठहरा, हैजेसे मरे हुएको महज दो आदमी ले जानेमें डर भी रहे थे। देबूने यह समझा। पूछा "डर लग रहा है पातू?'

उदास चेहरेसे पातूने कहा, 'जी?

'ले जानेमें डर लग रहा है?'

"लग तो रहा है कुछ!" भयभीत सिकुड़ा उसने निश्छल भावसे स्वीकार किया।

"तो चलो, हम तुम्हारे साथ चलते हैं।"

"आप?'

"हाँ तो क्या हुआ?"

पातू और उसके साथीका चेहरा खिल पड़ा। पातूने कहा 'आप बाँधपर खड़े रहिएगा बस। इसीसे हो जायेगा।'

"चलो चलो, मैं मसान तक ही चलूँगा।"

वैशाखकी जलती दोपहरीके भयंकर तापमें गाड़ीपर लाशको चढ़ाकर वे निकल पड़े। बहार सूना था आज। अक्सर चरवाहे इन बाउरी-बजनियोंके ही बच्चे होते हैं। व इतने डर गये थे कि आज गाय गोरू चराने निकले ही नहीं, गाँवके पास ही ढोरोंको बगैरे बैठे रहे। इस तपी दोपहरीमें धू धू जलते बहारमें अगर इन्हें अचानक बीमारी हो जाये तो क्या हो? आग हुई-सी धरतीपर प्याससे तड़पकर मर जायेंगे। इस डरसे बेतरह डर गये थे वे। जहाँतक नज़र जा रही थी—चारों ओर खाँव-खाँव! बीचमें जो बारिश हुई थी एक बार—उसका पानी भी अब कहीं नहीं बच रहा था। माटीका रस तक सूख गया था। सिंचाईके पुराने पोखरे इस कदर भर गये थे मुहानेका बाँध इस ढंगसे टूट गया था कि बूँद-बूँद जो पानी वहाँ सिमटता, वह भी कतई बाहर निकल जाता। गाँवसे मयूराक्षी तक बूँद भर पानी नहीं। आँधी-सी उठती हुई दोपहरकी हवामें धूल उड़ रही थी, और उस धूलमें मानो आगकी जलन थी। गाड़ी धीरे धीरे जा रही थी। चूँ चरर मरर आवाज हो रही थी पहियोंकी।

पातूने कहा 'अब हमारी खैर नहीं है गुरुजी! कोई जिन्दा नहीं रहेगा।

स्नेह-सने स्वरमें देबूने भरोसा दिया—"पागल हो गया है पातू! डर क्या है?

'डर?'—पातू हँसा—"पहले ही बैशाखका आ पहुँचा हैज़ा। और लोग कहते हैं, इस बार हम लोगोंने चण्डीमण्डपकी छौनी नहीं की इसीलिए शायद बाबा बूढ़े शिवके शापसे यह सब हुआ है!"

देबूने भी दीर्घ निःश्वास छोड़ा। देवता धर्ममें उसे विश्वास है। लेकिन बाबा क्या ऐसा अविचार करेंगे? बेकसूरोंका कसूर उनके लिए इतना बड़ा होगा! जिन लोगोंने देवोत्तर जमीन हड़प ली है, उनका तो कुछ नहीं हुआ! उसने विश्वासके साथ कहा नहीं नहीं, पातू बाबाके प्रति तुम लोगोंसे कोई अपराध नहीं हुआ। मैं कहता हूँ।'

पातूने कहा 'तो ऐसा आखिर क्यों हुआ गुरुजी?'

देबूने हैजेकी वैज्ञानिक व्याख्या करनी शुरू कर दी।

ओफ़ इस दोपहरीमें कौन औरत आ रही है इधर? हो सकता है, जंक्शनसे लौट रही है। अरे हाँ, यह तो दुर्गा है। तार लगाकर लौट रही है।

उपेनकी लाशके साथ देबूको देखकर दुर्गा ठिठक गयी। करीब आकर उसने झिड़की दी बोली यह क्या गुरुजी आप क्यों आये? आप क्या जा रहे हैं? लौट जाइए!

देवूने जैसे सुना ही नहीं। बातको पलटते हुए बोला, "अब लौट रही है तू? तार लग गया?"

"हाँ, लग गया। मगर आप क्यों जा रहे हैं? लौट चलिए।"

"लौट जाऊँगा। तू जा।"

"नहीं, पहले आप चलें।"

"पागलपन मत कर दुगा! तू जा। मैं जल्दी ही लौट आऊँगा।"

वे लोग बढ़ गये। दुर्गाकी आँखोंमें अकारण ही आँसू बहने लगे।

जल्दी ही लौटूँगा—यह कहनेके बावजूद जल्दी लौटना न हो सका। लौटनेमें तीसरा पहर भी ढल गया। मयूराक्षीके घुटने भर कदीर पानीमें ही जस-तसे नहाकर देवू लौटा। घर पहुँचते ही आवाज दी—'बिलू!"

दौड़ा-दौड़ा मुना बाहर निकल आया—"बाबू!'

देवू दो डग पीछे हट गया। बोला, 'उँ हूँ मुझे मत छुओ।'

मुन्नेको मजा आया। उसे लुकाचोरीका खेल सूझ आया। वह खिलखिलाकर हँसता हुआ हाथ फैलाकर और जोरसे लपका। मुन्नेके कौतुककी छूत देवूको भी लगी। वह कुछ और पीछे हट आया—'नहीं-नहीं मुन्ने, वहीं रहो।" इसके बाद बिलूको पुकारा— बिलू! बिलू!"

बिलू बाहर आयी। आँखोंमें मानकी बहती धारा। उसने कुछ भी न कहा। पतिके आनेके इन्तजारमें खवाजेके पास खड़ी रही। देवू आखिर क्या चाहता है? मेरा सर्वनाश हो जाय! यह जारकी गरमी उसपर भयंकर महामारी और वह उस महामारीके पीछे पागल हो गया है! यह सब क्या मेरे सर्वनाशके लिए? वह तमाम दोपहर रोती रही। दुर्गा आयी थी। वह बिलूका रूप निरख गयी। कह गयी—'दादा, जरा मन्द हाथ। उनकी लगाम जरा मजबूतीसे पकड़ो। नहीं तो इसके पीछे वह अपनी भूख-नींद हराम करेंगे और हो सकता है, तुम लोगोंको, अपना सर्वनाश कर बैठें।'

उसकी ओर देखकर मुन्ने उसके कष्टोंका अनुभव किया। कहा "ओह आपकी बिलूको गुस्सा आया है! जरा मुन्नेको सँभाल लो बिलू।

बिलूने आँसूने बाँध तोड़ दिया। वह जोरोंसे रो पड़ी। देवूने कहा "छि! रोओ मत। जल्दीसे मुन्नेको पकड़ो। और पुआल जलाकर जरा आग बना दो मेरे लिए। पानी गरम कर दो। उस पानीमें हाथ-पाँव भी धो लूँगा कपड़ोंको भी धो डालूँगा।

बिलूने कुछ नहीं कहा। लौटकर मुन्नेको गोदमें उठा लिया। मुन्नेने

सुबहसे ही देवूको नहीं देखा था। उसने चिल्लाना शुरू कर दिया—"बाबू! बाबू!"

बिलूने उसकी पीठपर एक चपत लगा दी—"चुप! कहती हूँ, चुप रह! चु उप!"—फिर भी उसे अड़ा देख उसने धमसे उसे उतार दिया।

देवूसे और नहीं सहा गया। बिलूको झिड़कते हुए बोला, 'छि यह क्या कर रही हो बिलू! कहता हूँ, जल्दी उसे गोदीमें उठाओ!"

बिलू आज जैसे पागल हो गयी थी। बोली, "क्यों, मुझे मारोगे क्या? बच्चेको जितना प्यार करते हो, जानती हूँ न!'

देवू सन्न रह गया।

बिलू जोरोंसे रो पड़ी—'या घुला घुलाकर मारनेसे तो बेहतर है कि तुम मेरा खून कर दो! जहर ला दो मुझे!'

देवूने जवाब देना चाहा। दिलासके ही शब्द कहना चाहता था किन्तु बोल नहीं सका। वह चौंक उठा, जैसे साँपने छू गया हो। सिहर उठा—पीछेसे मुन्ना दोना हाथोंसे उसे पकड़कर खिलखिल हँस रहा था। इस तरह मानो भागते हुए को पकड़ लिया हो। पलटकर देवूने दोनों हाथों मजबूतीसे मुन्नेको पकड़ लिया और आतस्वरमें बिलूसे कहा जल्दी पानी गरम करो जल्दी! मुन्नेका हाथ धुलाना पड़ेगा। यही हाथ अपने मुँहमें न डाल ले।"

मुन्ना चीख चिल्लाकर हाथ पाँव पटककर परेशान हो गया। उसे ऐसा लगा कि बाबूजी उसको अलग हटा रहे हैं। वह न सिर्फ रोया बल्कि गुस्सेमें उसने देवूके हाथमें एक जगह गड़ जानेसे दाँत भी काट लिया। और अन्तमें उसके गीले कपड़ेके कुछ हिस्सेको भी दाँतसे फाड़ डाला।

इस बातसे देवू बहुत ही भयभीत हो उठा। बिलूको वह पाँव खींचते हुए घरके अन्दर ले आया और बोला बिलू मेरी रानी मैं तुम्हें बताता हूँ सब! पहले गरम होनेको पानी चढ़ा दो। मुन्नेका मुँह धुला दो जल्दीसे!'

बिलूका गुस्सा कुछ ही देरमें ठण्डा पड़ गया। मुन्नेको देवूकी गोदमें देखकर वह बेहद खुश हो गयी। बोली 'तुम कितने कठोर हो? मुन्ना तुम्हें मुझसे भी ज्यादा चाहता है और तुम हो कि उसे छोड़कर बाहर-ही-बाहर रहते हो। लगता है घरके भीतर कदम रखनेपर तुम्हें गिरस्तीकी याद ही नहीं रहती। छि मुन्नेको भी भूल जाते हो तुम!

देवूने कहा, 'नहीं मैं अब नहीं जाऊँगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ बिलू, अब नहीं जाऊँगा।

गरम पानीसे हाथ मुँह धुलाकर और मुँह भी धोकर देवूने मुन्नेको इतनी

देर बाद गोदीमें लिया। माको करीब आते देख उसने बापकी छातीमें मुँह छिपा लिया। बिलू हँसी, "जरा मजा देख लो इसका !"

मुना बोल उठा, 'न, नही दाऊँदा, नही ।"

बिलू खिलखिलाकर हँसी—"अरे दुष्ट लड़के ! माँके पास नही आओगे ? बापकी गोदमें पहुँचकर भूल गये मुझे ! अच्छा, मैं भी दुद्धू नही दूँगी।"

माँका मन रखनेके लिए मुना बोला, "बाबू, माँ दाऊँ ?"

बिलूने कहा, "उँहूं ! बाबूको पकड़े रहो। भाग जायेगा।"

देवूका कलेजा रुँधे आवेगसे मथने लगा।

बिलूको पता चल गया। शंकित होकर उसने पूछा, "अच्छा, यह बताओ, तबीयत तो तुम्हारी ठीक है न !"

देबूने हसनेकी कोशिश करके कहा, "बहुत थक गया हूँ।"

"चाय बना दूँ, पियोगे ?"

"बनाओ !"

चाय पीनेके बाद भी वह वैसी ही मौन उदासीके बीच उद्वेगसे कापते हुए मनमें कुछ भयकरकी कल्पना करता हुआ बठा रहा। साझको बाउरा मोचियाके टोलेमें रोना धोना मचा। कोई जरूर मर गया। मुनेको सुलाते हुए देबू अधीर हो उठा।

बिलू बोली, "लगता है, कोई मरा है !"

तीखे स्वरमें देबूने कहा, 'मरे ! मै अब खोज-पूछ नही करता।"

अवाक होकर बिलू उसके मुँहकी ओर ताकती रही। उसके बाद बोली, "मने तुमसे यह थोड़े ही कहा है कि कोई मरे तो तुम खोज-खबर न लो, या कि उनके दुख विपद्में सुध न लो। उपन मोची है, उसके दाह-सस्कारके लिए तुमने अपनी गाठी दी, मने कुछ कहा ? मगर तुम मसान तक साथ क्या गये ? खाना-पाना नदारद, और वह बगालकी धूप। मन तो इसलिए कहा था।"

मुन्ना देबूकी गोदमें सो गया था। बिलूने उसे देबूकी गोदसे ले लिया और कहा, "जाओ खोज-पूछ करके तुरत लौट आना। म यह जानती हूँ कि लोग तुम्हारा कितना भरोसा रखते है।

यन्त्रसे चलनेवाले खिलौनेकी तरह देबू बिलूकी बातपर घरसे बाहर निकल पड़ा। चण्डीमण्डपमें सकीर्तन दलके निकलनेकी तयारी चल रही थी। मृत्युकी ध्वनिसे शायद अशुभ भागता है।

उस टोलेमें धमराजकी पूजाकी तयारी हो रही थी। उसने सतीशको बुलाया। सतीशने आकर उसे प्रणाम किया— हालत तो बड़ी भयकर हो

उठी गुरुजी। तीसरे पहर फिर दो आदमियोंकी हो गया। अभी अभी गन्नाकी स्त्री गुजर गयी!"

"झटपट उनको फूंकनेका इन्तजाम करो!"

"जी हाँ, कर रहा हूँ।" जरा देर चुप रहकर अपराधीकी तरह बोला, "दिनमें उनका लाश लेकर आपको क्या करना कहिए? हमारी जातिका तो नहीं था। हम लोगोंके लिए आपको इतनी फिक्र नहीं करनी पड़ेगी।"

देबू कुछ देर चुप रहा। पूछा—'शामको डॉक्टर आया था?"

'जी, तीसरे पहर घोष बाबूने भी चावल देनेकी बात कहला भेजी थी। डॉक्टर बाबूने कहा, हर्गिज मत लेना। सो हम लोग नहीं गये।"

देबू अनमना सा चुप रहा। उसके मनमें धीरे धीरे एक गहरी उदासीनता मानो गाढ़े कुहरे-सी जाग रही थी। उसका सुख-दुःख सारा-कुछ जैसे संवेदन शून्यतासे ढँकता जा रहा हो। जिस गहरे उद्वेगको वह सह नहीं पा रहा था, वही उद्वेग मानो पुराणोंके नीलकण्ठका हलाहल हो कि साहस आच्छन्न किये दे रहा था।

सतीशने कहा, गुरुजी!"

मुझसे कुछ कह रहे हो? —देबूने पूछा।

सतीश अवाक् रह गया—'जी। गुरुजी यहाँ और कौन है? इस नामसे हम और किसको पुकारेंगे?'

कहो।'

'पूछता हूँ मगर नाराज तो नहीं होंगे आप?'

'नहीं नहीं! नाराज क्या हूँगा?"

कह रहा था कि घोष बाबू जब चावल दे रहे हैं तो लेनेमें क्या हर्ज है? गरीब हैं बेचारे ऐसे आड़े वक्तमें

देबूने प्रसन्नता भरी सहानुभूतिसे कहा, 'नहीं, नहीं कोई हर्ज नहीं है। घोष बाबू कुछ दुश्मन तो हैं नहीं तुम्हारे, न ही हमारे। वे जब अपना इच्छासे देना चाहते हैं, तो क्यों नहीं लोगे?"

सतीशने देबूके चरणोंकी धूल ली— मानो, सब आप जैसे होते गुरुजी! आप जरा डॉक्टर बाबूसे भी कह दीजिएगा वरना वे नाराज होंगे!"

'अच्छा मैं कह दूँगा डॉक्टरसे।

डॉक्टर बाद् नजरबन्द बाबूके पास बैठे हैं।'

देबू लौटा। लेकिन आज घर सतीशके पास जानेकी इच्छा नहीं हुई। उसने घरकी राह पकड़ी। घरपर दुर्गा आकर बैठा था।

दुर्गाने कहा, "मेरे टोलेमें गये थे गुरुजी ? गताकी बहू गुजर गयी न !"

"हाँ !" फिर बिलूसे पूछा—"मुना कहाँ है ?

' वह तबसे ही सो रहा है। जगा नहीं है।"

' सो रहा है !' देबूने सन्तोषकी साँस ली। चार घण्टे हो गये, मुना बेखबर सो रहा है। नींद स्वस्थताकी निशानी है। देबूने दुर्गासे पूछा तू अबतक कहाँ थी ?"

' जंक्शन गयी थी।"

बिलूने कहा, ' थोड़ा जलपान कर लो। दुर्गा नये खातेकी मिठाई ले आयी है।"

"अरे हाँ ! दुर्गा जंक्शनके दूकानदारके आगे तो बड़ा बसा बनना पड़ा मुझे।"

'वह सब हो गया गया। इतनी फ़िक्र करनेकी जरूरत नहीं है।" फिर दुर्गा हँसी—' दिदू दादी जैसी लक्ष्मी घरमें है तो आपको फिक्र किस बातकी ? दीदीने मुझे दो रुपये दिये थे। मैं दे आयी। अब आषाढ़में रथके दिन कुछ दे दीजिएगा, कुछ क्वारमें। दूकानदार मान गया है।

बड़े आरामकी साँस छोड़कर अब वास्तविक खुली हँसी हँसते हुए देबूने कहा, ' बिलू मैं जरा यतीन बाबूके पाससे हो आता हूँ।"

"अब रातको निकलोगे ? ठहर, जलपान करके जाओ।'

' तुरत लौट आऊँगा। जलपान अभी छोड़ो।"

'खूब मुझे रह समझते हो तुम !' बिलू प्यारसे हँसी। देबू चला गया।

यतीनकी बैठकमें आज बकल यतीन, जगन और चायके लोभसे आनेवाला गँजेड़ी गणाई था। चित्रकार नलिन भी आया था और अपनी आदतके अनुसार एक किनारे चुप बैठा था। आज वह एक रुपया माँगनेके लिए आया था। कुछ दिनके लिए गाँवसे कहीं बाहर जाना चाहता था।

जगन बक-बक करता ही जा रहा था। देबूको देखकर उसने कहा क्या भई बात क्या है ? तुम्हारी तो झाँकी ही नहीं दिखाई दी। मैं सोच रहा था, तुम शायद डर गये।"

देबू हँसा।

यतीनने पूछा, "तबीयत कैसी है देबू बाबू ? मैंने सुना, आप मसान गये थे। चार बजके बाद लौटे हैं।'

' सर बहुत गया हूँ। यों सब ठीक ही है।'

तुम मालोंकी शव-यात्रामें शामिल हुए—इसपर क्या हो रहा है आगर

चण्डीमण्डपमें दस आओ।"

देबूने इसका जवाब ही नहीं दिया। कहा, "अच्छा डॉक्टर, हैजेके कीटाणु शरीरमें प्रवेश करें तो कितनी देरमें बीमारी जाहिर होती है?"

जगन ठठाकर हँस पड़ा—'तुम डर गये हो देबू भाई!"

गदाईने उधरसे सकोचके साथ कहा "डर किस बातका? उसकी दवा हैं एक चिलम गाँजा।"

देबूने और कोई सवाल नहीं किया। उसे अब प्रश्न पूछनेमें भी डर लग रहा था। कहीं विज्ञानका सत्य उसकी उत्कण्ठाको बढ़ा न दे? बार-बार उसने मन-ही मन कहा "विज्ञान ही एकमात्र सत्य नहीं है। इस दुनियामें और भी एक परम तत्त्व है वह है पुण्य, धर्म। उसका धर्म उसका पुण्य ही उसकी रक्षा करेगा! अमृतका वह आवरण मुनेको महामारीके जहरसे जरूर बचायेगा!

यतीनने पूछा, "बात क्या है देबू बाबू! आपने एकाएक यह प्रश्न क्यों किया?"

देबू बोला, 'असलमें आज मसान जानेपर वहाँ मुझे उपेनकी लाश पकड़नी पड़ी थी। मयूराक्षीमें नहा तो लिया था। लेकिन घर लौटा तो—' बात बीचमें ही रुक गयी! कौन? दुर्गा है क्या? हाँ दुर्गा ही है!'

हाथमें लालटेन लिये अधर गलीपर दुर्गा आ खड़ी हुई। रुंधे गलेसे उसने कहा, जी! जल्दी घर चलिए! मुनेकी तबीयत खराब हो गयी है। एक बार बिलकुल पानी-जैसा '

बिजली छू गयी हो जैसे, देबू अकेले ही उठा और चलते हुए आवाज दी, "डॉक्टर!"

धर्म और विश्वासका गला घोटकर वैज्ञानिक सत्यने आखिर उसीके यहाँ यह रूप धरकर अपनेको प्रकट किया क्या?

महामारी हैजा मनुष्यके शरीरका सारा रस देखते-ही-देखते सोख लेती है और जीवनी शक्तिको खतम कर देती है। वह महामारी आयी और देबूके मनके सारे रस सारी कोमलताओंको चूसकर उसे पत्थर बनाकर उसके घरसे चली गयी। एक मुन्ना ही नहीं—मुन्ना और बिलू दोनों हैजेके शिकार हो गये। पहले दिन मुन्ना दूसरे दिन बिलू। इलाज-जतनमें कोई कसर नहीं रखा गया। जगनके रेलवेका डॉक्टर और कंकनाका डॉक्टर—दोनों बड़े डॉक्टरोंको बुलवाया गया था। कंकनाका डॉक्टर तो यह सुनकर खुद ही आया था। यह आदमी

गुणग्राही है, देबूपर उसे श्रद्धा थी, इसीसे वह आया था। रेलवेके डॉक्टरको जगन खुद बुला लाया था। भूखा-उनींदा देबू उनकी सेवा करता रहा और ईश्वरके सामने सिर पटकता रहा, मनत मानता रहा। दुर्गा भी मदद करती रही। जगन का तो कहना ही क्या—यतीन, सतीश, गदाई, पातू दोनों शाम आ-आकर खोज लेते रहे। लेकिन लाख किये भी कुछ नहीं हुआ। पत्थर-जैसी सूखी आँखोंसे देबू मौन निर्वाक बैठा देखता रहा—छाती पत्थर कर यह भयानक चोट वह सह गया।

बिलूका अंतिम संस्कार शेष होते-होते सूर्योदय हो चुका था। देबू घर लौटा—सूना, सूखा, कड़वा जीवन लेकर। उसके सुख-दुखकी अनुभूति मर गयी, आँसू सूख गये, बोली खो गयी, मन अवश हो गया, आँखें पथराय हो गयी—होठोंसे कलेजे तक रसहीन सूखा—सहाराके रेगिस्तान-सरीखा धू-धू कर रहा था। सबकी सब चीजें मौजूद थी—वही ठाट-बाट, वही घर-बार, वही पेड़ पौधे—सब, लेकिन देबूकी आँखोंके आगे सब निरर्थक था, सब अस्तित्वहीन, धुँधला। एक सुनसान पारहीन प्यासा प्रान्तर और वेदनाविधुर पाण्डुर आकाश। इस धूसर विवर्णतामें उसका भविष्य खो गया था—निश्चिह्न हो गया था।

सारे गाँवके लोग आये थे। सभी आये थे अपनी निश्छल सहानुभूति दिखाने। लेकिन देबूकी इस सूरतके सामने किसीसे कुछ कहते न बना। यतीन भी उसे सान्त्वना देने आया था, पर निर्वाक होकर बैठ रहा। उसे आत्मग्लानि हो रही थी—वह सोच रहा था देबूको शायद उसीने इस अजामक जनम्म ढकेला है। जगन भी काठका मारा-सा हो गया था। श्रीहरि, हरीश और भवेश भी आये थे। वे सब भी मौन ही रहे। देबूके सामने बोलनेमें श्रीहरिको जाने कैसा—एक संकोच हुआ।

भवेशने सिर्फ "राम हो, राम हो!' कहा।

मौन खड़े लोगोंमें एक किनारेसे किसीने पुकारा—'डॉक्टर बाबू!'

चौंककर जगनने कहा, "कौन है? क्या कहता है?'

'जी, मैं हूँ गोपेन! दया करके एक बार चलिए।'

'क्यों? क्या हुआ है?'

एक तरहका होठ टेढ़ा करके म्लान हँसी हँसकर देबूने कहा, "और क्या होगा? समझते नहीं? जाओ, देख आओ!'

जगनने और कुछ नहीं कहा। वह उठा। तो यतीन बोला, ' ठहरिए मैं भी चलता हूँ!'

लोग एक-एक करके चुपचाप चले गये। देबू घरमें अकेला बैठा रहा। अब उसको भी खोलकर रोनेकी इच्छा हुई। एक बार तो उसने कोशिश भी की,

लेकिन रुलाई आयी नहीं। सोनेकी कोशिश की। चारों तरफ निगाह दौड़ायी। हज़ारों स्मृतियाँ बिखरी। दीवारपर कोयलेकी लकीरें थी—मुन्नेकी खींची हुई, बिलूके लगाये सिन्दूरके निशान, पानकी पीक, मुन्नेका काठका घोड़ा जिसका रंग चटख गया था, टूटी सीटी, और फटी तसवीर। करवट फेरकर जब वह सोने लगा तो किसी चीजके गड़नेसे उसे तकलीफ हुई। जब हाथसे उसे निकाला—मुन्नेकी बालियाँ थी। वही दोनों बालियाँ बिलूकी नाककी कील, करनफूल कलाईकी कतरी लोहेकी। फटे हुए कलेजेसे निकलते निःश्वासको छोड़कर वह सहसा पुकार उठा—"मुन्ने! बिलू!"

अन्दरसे दरवाज़ेकी तरफ खड़ी किसीने पुकारा, 'देबू!'

'कौन?' देबू उधर आया—"राँगा दीदी!"

बुढ़िया पुक्का फाड़कर रो पड़ी। उसके साथ और भी कोई था।

राँगा दीदी ही नहीं दुर्गा भी पास बैठी रो रही थी।

देबूकी इच्छा थी गहरी रातमें जब सो जायेंगे सब, विश्व प्रकृति निस्तब्ध हो जायेगी तो जी भरकर रो लूँगा एक बार।

शामसे बहुतेरे लोग आये और चले गये। उसके पास सोनेके लिए आया जगन, हरेन घोषाल, गँजेड़ी गदाई और फतिंगेका बाप तारिणी। श्रीहरिने भूपाल चौकीदारको भी भेज दिया था। रातमें देबूके बरामदेपर सो रहेगा। जब सब सो गये तो देबू उठा। आँगनमें उतरकर वह ऊपर आसमानकी तरफ ताकता खड़ा हो गया। मुन्ना नहीं है! बिलू नहीं है! इस दुनियामें कहीं नहीं! स्वर्ग-नरक सब झूठ है। पाप-पुण्य झूठे हैं। जाने उसने कौन-सा पाप किया था पूर्व जन्मका? कौन जाने? एक बार सतीशके पास जाये? अकेले बैठकर एक बार मुन्ने और बिलूके बारेमें सोचनेका मौका उसने ढूँढा था, लेकिन वह भी उसे अच्छा नहीं लगा। आत्मग्लानिसे ही उसका जी भर उठा था। वही तो मौतका ज़हर अपने साथ ले आया था। उसीने तो उनकी हत्या की। अब किस लाजसे वह रोये? फिर बाहर आकर वह बरामदेमें खड़ा हो गया। दूर रास्तेपर एक रोशनी इधरको आती हुई उसे दिखाई दी।

'इतनी रात गये हाथमें रोशनी लिये कौन आ रहा है? एक नहीं कई जने हैं।'—उसने सोचा।

तभी किसीकी आवाज़ कानमें पड़ी—'गुरुजी!' देबूके सामने आकर खड़े हुए न्यायरत्न। साथ साथ यतीन, उनके पीछे एक आदमी और।

'आप! किन्तु मुझे तो—

'चलो, अन्दर चलो!

"मुझे तो प्रणाम भी नहीं करना चाहिए। छूत लगा है!"

स्नेहसे न्यायरत्नने उसके माथेपर हाथ रखा—"छूत?" फिर वे धीरेसे हँसे और बोले, "कुछ रे आओ गुरुजी, यहीं आँगनमें बैठें। घरके अन्दर सोये हुए लोगोंकी साँसोंका शब्द सुनाई पड़ रहा है। जो सो रहे हैं उन्हें सोने दो। तुमसे एकान्तमें कुछ बातें कहूँगा, इसीलिए इतनी रातको आया हूँ। लोगोंकी भीड़ भाड़में आनेका जी नहीं हुआ। रास्तेमें यतीन साथ हो गये। इन लोगोंकी निगाहें जागते तपस्वी-सी हैं बचा न सका। मैंने देखा, आसमानकी ओर नजर किये ये तुम्हारी ही तरह खड़े हैं। मुझसे इन्होंने कहा—देवूकी इस [illegible] का जिम्मेदार मैं हूँ। इनकी आँखें भी छलछला आयीं। इसीलिए इन्हें साथ ले आया हूँ। हमारी सुख-दुःखकी बातोंके ये भी साझेदार होंगे।" न्यायरत्न हँसे। यह हँसी सुखकी नहीं तो, दुःखकी भी नहीं थी एक अजीब दिव्य हँसी।

देबू भी हँसा। मानो न्यायरत्नकी ही हँसीकी प्रतिध्वनि निकली हो। घरसे एक मोढ़ा लाकर बोला "बैठिए।"

न्यायरत्न बैठ गये। कहा, "मेरे पास बैठो। यतीन, तुम भी बैठो भाई।"

वे लोग जमीनपर ही बैठ गये। देबूने कहा "उसी दिन तो, बड़ी श्रद्धाके साथ बिलूने आपके चरण धोये थे। लेकिन आज, आज कहाँ है वह?"

न्यायरत्नने उसके सिरपर हाथ रखकर कहा, "गुरुजी, मैं उसी दिन समझ गया था कि तुम उसी परिणामकी ओर बढ़ रहे हो। यह बात मैंने तुम्हें देखकर भी समझी थी, तुम्हारी स्त्रीको भी देखकर।

देबू और यतीन, दोनों अचरजसे उनकी ओर देखते रहे। न्यायरत्नने कहा "उस दिनकी कहानी याद है? उस रात पूरी नहीं कही थी अब कहता हूँ। आज तो अच्छी लगेगी।"

देबू आग्रहके साथ उनकी ओर देखने लगा, "कहिए।"

और फिर यतीनकी ओर देखकर न्यायरत्न कहने लगे, "धर्मके बलसे ब्राह्मण फिर अपने सौभाग्यके आसनपर पहुँचे। बेटा-बेटी नाती, पोता-पोती नाती-नातिनोंसे उनका परिवार देवपुरी समान हो गया। अन्नमें अमृतका स्वाद और गुण आ गया फूलोंमें ऐसी सुगन्ध आ गयी कि अगुरु चन्दन का मान। कोई फल समयसे पहले नहीं गिरता कोई फूल असमयमें नहीं झरता। भरा-पूरा संसार—सुख शान्ति आनन्दसे उज्ज्वल हो उठा। बेटे धुरन्धर पण्डित, जामाता भी वैसे ही थे। सभी दूर-दूर अच्छे कामोंमें लगे थे। कोई किसी राजाके पुरोहित, कोई राजपण्डित कोई किसी संस्कृत पाठशालाके अध्यापक। ब्राह्मण घरपर ही रहते, अपना काम-धन्धा करते। एक रोज वे गये हाट। एक मटकेकी डोरी जो

देखी, सो अवाक रह गये। टोकरीमे काले रगका एक सुडौल पत्थर था। पत्थर पर कुछ नाग थे। वह पहचान गये, नारायणशिला थी, शालिग्राम। मछेरिनकी उस अपवित्र और दुर्गन्ध भरी टोकरीमें पवित्र नारायणशिला! चौंककर उन्होने मछेरिनसे पूछा, "यह तुम्हें कहा मिली?"

मछेरिनने उन्हें प्रणाम किया। कहा, 'यह नदीमें मिल गया बाबा। पूरे पाव भरका है। मैने इसे बटखरा बनाया है। बडा सगुनिया है। जबसे यह मिला है, तबसे मेरा सब तरह तरक्की हो रही है।"

बात सही थी। मछेरिनके बदनमें भरे थे सोनेके गहने। ब्राह्मण बोले 'देखो बिटिया यह है शालिग्राम शिला। इसे तुमने इस आमिषमें रखा है अपराध लगेगा।"

मछेरिन तो हँसकर बेहाल हो गयी।

ब्राह्मणने कहा, यह पत्थर तुम मुझे दे दो। बदलेमें मैं तुम्हें रुपये देता हूँ—पाँच रुपये।'

मछेरिन बोला जी नही। म इसे नही बेचूँगी।'

खर। दस रुपये ले लो।'

'नही पण्डित बाबा यह मुझे कई दस दिला देगा।'

'दस न सही बीस ले लो।

'म आपने हाथ जोडती हूँ छोड दीजिए इसे।

पचास ले लो।

नही।'

'एक सौ।

जी मने कह तो दिया नहीं।'

'एक हजार।'

अबकी मछेरिन अवाक होकर ब्राह्मणको देखने लगी। कोई जवाब नहा दिया जवाब देते न बना।

पाँच हजार रुपये ले लो।'

मछेरिनसे पाँच हजारका लोभ नही रोका गया। ब्राह्मणने मछेरिनको पाँच हजार रुपये गिन दिये और शालिग्रामको ले जाकर अपने घर प्रतिष्ठित किया। लेकिन महा आश्चर्यकी बात, तीसरे ही दिन ब्राह्मणने सपना देखा। देखा कि एक ज्योतिमय चचल किशोर उनके सिरहाने खडा उनसे कह रहा है कि तुम मुझे मछेरिनकी टोकरीसे क्यों ले आये? वहाँ म बड मजेमें था। मुझे तुरत वही पहुँचा दो।

ब्राह्मण बहुत हैरान हुए।

दूसरे दिन फिर वही सपना। तीसरे दिन फिर। देखा, आज उस किशोरकी मूर्ति भयकर हो गयी है। मूर्ति बोली, 'फौरन मुझे वहाँ पहुँचा दो, नहीं तो तुम्हारा सवनाश होगा।'

सवेरे उन्होंने अपनी स्त्रीसे सारा हाल कहा। इतने दिन स्वप्नकी बात किसीसे नहीं कही थी, लेकिन आज बिना कहे उनसे रहा नहीं गया। स्त्री बोली, 'तो क्या हुआ है इसके लिए नारायणको छोड दोगे? होना होगा सो होगा, तुम उसकी चिन्ता मत करो।

रातको फिर वही सपना। फिर। फिर। इसपर उन्होंने बेटे-दामादको लिखा। उनकी राय माँगी। जवाब आया। सबकी वही राय, जो ब्राह्मणकी स्त्रीने दी थी।

उस रात सपनेमें ब्राह्मणने पूछा, 'देवता, तुम क्यों नित्य मेरी नींद खराब करते हो? मेरे कम, मेरे वचन, मेरे विचारसे क्या तुम्हें आज तक जवाब नहीं मिला है? मैं तुम्हें आमिषकी टोकरीमें नहीं रख सकता।'

दूसरे दिन ब्राह्मणने पूजाके बाद पोता-पोतियोंको प्रसादके लिए बुलाया। जो सबसे छोटा था वह सबके पीछे दौडता हुआ आ रहा था। एकाएक दौडकर आनेमें ठोकर खाकर वह गिर पडा। ब्राह्मणने लपककर उसे उठाया। लेकिन तबतक उसका शरीर निष्प्राण हो चुका था। औरतें रो पडीं। ब्राह्मण स्थिर होकर सिर्फ जरा हँसे और आकाशकी ओर देखते खडे रह गये।

रातमें फिर सपना आया। वही किशोर निर्दय हँसी हँसते हुए बोला 'अब भी सोच देखो।'

ब्राह्मण चुपचाप हँसे।

उसके बाद परिवारमें महामारी आयी। एकके बाद दूसरा दिया बुझने लगा और रोज रात आने लगा वही सपना। रोज ही ब्राह्मण चुपचाप हँसते।

एक-एक कर उनके संसारका सब शेष हो गया। बाकी रह गये खुद ब्राह्मण और ब्राह्मणी।

फिर सपना आया—'अभी भी सोच देखो। ब्राह्मणी बच रही है। ब्राह्मणने कहा, 'छोकरे, बडे ढीठ हो तुम। बेहद तंग करते हो मुझे।

दूसरे दिन ब्राह्मणी भी चल बसी। आश्चर्य है उस रात कोई सपना नहीं आया।

फिर ब्राह्मणने क्रिया-कर्म किया। एक झोलेमें शालिग्रामको रखकर झोला गलेमें झुला लिया और निकल पडे। एकके दूसरे गाँव, एकसे दूसरे देश—नद

नदी, जगल पहाड पार करते चले। पूजाकी घडी आती तो वही जमीनको झाड पोछकर बठ जाते, फूल तोडकर पूजा करते, फल लाकर भोग लगाते और प्रसाद पाते।

इस प्रकार अन्तमें वे पहुँच गये मानसरोवर। स्नान किया। पूजापर बैठे। आँखें बन्द किये ध्यान लगाया कि एक अपूर्व दिव्य गन्धसे सारी जगह महमहा उठी। आकाश मण्डलको गुँजाती हुई बजने लगी देव-दुन्दुभी। फिर जाने कौन उनके हृदयके भीतर बोल उठा, 'ब्राह्मण, म आ गया।'

आखें बन्द ही किये ब्राह्मणने पूछा कौन हो तुम ?

'म हूँ, नारायण।'

'कसा ह रूप तुम्हारा, बताओ तो भला।'

'क्या ? चतुर्भुज मूर्ति। शख—चक्र—'

न। जाओ। जाओ तुम।'

'क्या ?'

'मने तुमको नही बुलाया है।

फिर किसे बुला रहे हो ?

'वह जो एक ढीठ किशोर ह। सपनेम रोज मुझे धमकाया करता था, उसको।'

ब्राह्मणको अब उसी स्वप्नके किशोरकी आवाज सुनाई पडी—'ब्राह्मण मैं आ गया।

ब्राह्मणने आँखें खोलीं—'हाँ वही तो ह।

हँसकर उस किशोरने कहा मेरे साथ चलो।'

ब्राह्मणने आपत्ति नही की चले। जरा तुम्हारी ही दौड देखूँ।'

एक दिव्य रथपर चढाकर किशोर ब्राह्मणको एक अपूर्व पुरीमें ले गये। कहा, 'यह रही तुम्हारी पुरी। तुम्हारे लिए मने बनवायी। पुरीका द्वार खुल गया, और द्वार खुलते ही सबसे पहले वही छोटा नाती आया जो सबसे पहले मरा था। उसके बाद एक-एक करके सब।''

कहानी खतम करके न्यायरत्न चुप हो गये।

दीर्घनि श्वास छोडकर देबू मुँह उठाकर जरा मुसकराया।

यतीन नही हँसा। वह इस अजीब ब्राह्मणके बारेमें सोचने लगा था।

न्यायरत्नने कहा, उस रोज तुम्हें और विलूको देखकर मेरे मनमें यही बात आयी थी। उसके बाद जब यह सुना कि तुम उपेनके दाह-सस्कारमें गये हो, लोगोकी सेवामें जुट गये हो, तब मुझे और भी सन्देह नहीं रहा। मन प्रत्यक्ष

देगा कि तुमने मछेरिनकी टोकरीके शालिग्रामकी तरफ़ हाथ बढ़ाया है। आत्मा नारायण है। लेकिन उन बाउरी मोचियोंकी पतित दशाकी अगर मैं मछेरिनकी टोकरीसे तुलना करूँ तो तुम आधुनिक लोग, मुझपर नाराज़ मत होना।"

तभी देबूकी आँखोंसे आँसूकी कुछ बूँदें चू पड़ीं।

अपने कपड़ेकी कोरसे न्यायरत्नने सस्नेह वह आँसू पोंछ लिये। उसके सिरपर हाथ रखकर बड़ी देर बैठे रहे। उसके बाद बोले, 'तो अब मैं चलूँ भैया। तुम्हारी सान्त्वना तुम्हारे ही पास है। उसका उत्स प्राणोंके अन्दर ही है। मुझे भागवत कथा अच्छी लगती है। मेरा शशि जिस दिन गुज़रा था मुझे भागवतसे ही शान्ति मिली थी। इसीलिए आज मैं तुम्हें भागवती लीलाकी एक कहानी सुनाने आया था।"

न्यायरत्नके साथ यतीन भी उठ खड़ा हुआ। रास्तेमें उसने कहा, 'काश, इन कहानियोंको आप इस युगके लिए उपयोगी बना जाते।"

हँसकर न्यायरत्नने कहा, "अनुपयोगी कहाँ लगी भाई!'

"नाराज़ तो न होंगे आप?

नहीं-नहीं। सत्यकी युक्तिके आगे सिर झुकानेको मैं विवश हूँ। नाराज़ हूँगा भला? —न्यायरत्न निःशब्द खिलखिलाकर हँस पड़े।

"वंशी, वनी, मछलीकी टोकरी, चतुर्भुज, शंख चक्र—

'भगवान् अनन्त रूप हैं। जो रूप जँचे, वही लगा लो। और फिर ब्राह्मणने तो चतुर्भुज मूर्तिको आँखों देखा नहीं। उन्होंने तो देखी सजनवाली सूरत—उस अल्हड़ किशोरको।'

यतीन अपने यहाँ पहुँच गया था। रात भी काफ़ी हो गयी थी। बात बढ़ानेकी गुंजाइश न थी। न्यायरत्न चले गये।

घड़ी-घड़ी यतीनको अचानक रवीन्द्रनाथकी कविताकी कुछ पंक्तियाँ याद आ गयीं—

हे ईश्वर, तुमने इस दयाहीन संसार में
हर युग में बार-बार दूत को भेजा है—
वे बार-बार कह गये, सबको क्षमा करो
कह गये, सबको प्यार करो।
मन से विद्वेष के विष को निकाल दो।
वे वरणीय हैं, स्मरणीय हैं, लेकिन तो भी
आज दुर्दिन में दरवाज़े पर से ही
उन्हें एक व्यर्थ नमस्कार करके लौटा दिया।

नहीं, न्यायरत्नकी बात वह नहीं मान सकता।

अट्ठाईस

कोई दो महीने बाद। महामारी रुक चुकी थी।

आषाढ़ महीनेका पहला सप्ताह। सात तारीखको अम्बुवाची। धरती शायद उस रोज़ ऋतुमती होती है। आसमान घटाटोप घटाओंसे घिरा। वर्षा आने वाली लग रही थी। इस बार जो ऊमस गयी उससे किसानोंका अन्दाज है कि वर्षा जल्दी ही उतरेगी। जेठके अन्तमें मृगशिरा नक्षत्रमें जिस साल ऐसी ऊमस होती है उस साल आषाढ़की शुरुआतमें ही वर्षा उतर आती है। और, अम्बुवाचीमें बारिश होकर कही रुकी तो बहुत ही अच्छा लक्षण जानिए। ऋतुमती धरतीकी माटी भींगकर बेहद उपजाऊ हो जाती है। अम्बुवाचीसे तीन दिन तक जोताईकी मनाही है। गाँवमें ढोल बज रहा था। अखाड़ेका ढोल।

अम्बुवाचीके रोज गाँवमें कुश्तीकी प्रतियोगिता होती है। कुसुमपुर और आलेपुरमें कुश्तीकी धूम ज्यादा रहती है। ये दोनों मुसलमानोंके गाँव हैं। यह कुश्ती हिन्दू मुसलमानोंमें समान उत्साहसे होती है। खेतीके पहले शायद खेतिहर लोग बलकी जाँच करते हैं। इस इलाकेमें कुश्तीका सबसे बड़ा अखाड़ा भरतपुरमें होता है। जगह-जगहके नामी और बलवान खेतिहर, जो अच्छे पहलवान गिने जाते हैं, वहाँ जुटते हैं। भरतपुरमें जो विजयी होता है वह इस इलाकेका सबसे बड़ा पहलवान माना जाता है। हाँ, पहलवानीमें, बलकी होड़में, आग्रह ज्यादा मुसलमानोंमें है।

यतीनके कमरेके सामने फतिंगा और गोवराने एक अखाड़ा खोला है। दोनों दिन भर उसीमें लड़ रहे हैं।

आज निष्ठावाले खेतिहरोंके घर रसोई बन्द है। ऋतुमती धरतीकी छातीपर आग नहीं जलेगी। ब्राह्मण और विधवा ये तीन दिन उबाले या पकाये हुए पदार्थ नहीं खायेंगे। देबूने भी यही व्रत रखा था। अकेला बैठा उदास आँखों मेघ मेदुर अम्बरको देख रहा था। वर्षाके औदे बादल, उमड़ घुमड़ रहे थे— दूर दिगन्तकी ओर जा रहे थे उड़-उड़कर। इस दिगन्तसे फिर उगते आ रहे थे नये मेघ। जल्दी ही बारिश होगी। अजस्र वर्षणसे धरती सुजला हो उठेगी, शस्य भारसे श्यामला हो उठेगी। लोगोंकी दुःख-दुर्दशा दूर होगी। मैदान खेत हरे भरे हो जायेंगे। घाट जलसे भर उठेंगे। मयूराक्षीकी धाराके साथ गेरुए रंगका जल बहता जायेगा। सूने खेत फसलसे लहलहा उठेंगे। नील आकाश मेघोंसे भर गया है। इनके छँटते दिनमें सूर्य और रातमें चाँद-तारोंसे

जगमगा उठेगा। एक उसीका जीवन शून्य हो गया है, केवल उसीका जीवन! यह अब कभी भरेगा नहीं!—अकेला बैठा वह ऐसी कितनी ही बातें सोचता। जीवनमें अचानक जो इतनी बड़ी एक दुर्घटना हो गयी, उससे उसके जीवनमें भी एक परिवर्तन आ गया। प्रशान्त, उदासीन, निःशब्द अकेला एक आदमी! गाँवका हर कोई उसे प्यार करता, श्रद्धा करता, लेकिन तो भी लोग ज्यादा देर तक उसके पास बैठ नहीं सकते थे। देबूकी निरी निर्वाक उदासीनतासे लोग हाँफ उठते।

ज्यादा रात होनेपर देबू यतीनके पास जाकर बैठता। उसी समय उसे साथी मिलता। यतीनने उसे बहुत-सी किताबें दी थीं। बंकिमकी ग्रन्थावली देबूके पास थी। यतीनने उसे रवीन्द्रनाथकी कई पुस्तकें दी थीं, शरत्‌की ग्रन्थावली और कुछ नये लेखकोंकी किताबें। अकेलेपनमें उन्हीं किताबोंके बीच उसका समय निश्चिन्ततामें कट जाता। कभी-कभी वह बरामदेमें अकेला बैठा ताका करता—ताका करता—बरामदेके ठीक सामने जो हरसिंगारका पेड़ था, उसे। उस हरसिंगारके पेड़से बिलूकी हजारों स्मृतियाँ जुड़ी हुई थीं। बिलू हरसिंगारके फूल बहुत पसन्द करती थी। कितनी बार शरत्‌की भोरमें देबूने भी बिलूके साथ हरसिंगारके फूल चुने थे।

आज तीसरे पहर उसे आलेपुर जाना था। वहाँके दो-एक सेटिलर उसके पास आये थे—उसे पुरनीके पाँच निर्णायकोंमें एक रहना पड़ेगा। उसने हँसकर कहा था, "मुझे किस लिए इछू भाई, किसी औरको—'

इछूने जवाब दिया था—"अरे बाप रे! यह भी हो सकता है भला! आप जो कहेंगे पाँच गाँवके लोग वही मानेंगे।"

देबू यही सोच रहा था। पाँच गाँवके लोग उसे मानें—कभी यही आकांक्षा उसके मनमें थी। लेकिन यह उसे किस कीमतपर मिला?

बड़ा अच्छा होता यदि यतीन उसके साथ आलेपुर जाता। यह राजबन्दी युवक उसे बहुत अच्छा लगता, उसपर वह असीम श्रद्धा भी करता था। यतीन कभी-कभी कहता—'अपने यहाँके लोग शक्ति-पूजा बिल्कुल नहीं करते।' यतीन [illegible] जाती। कभी कभी लोग यह करते थे। वह प्रथा आज भी जारी है—ठीक चण्डीमण्डपका नाश। अबकी चण्डीमण्डपकी छौनी नहीं की गयी। बरसातमें गिर जायेगा। गाँववालोंने छौनी नहीं की और श्रीहरिने भी हाथ नहीं लगाया। श्रीहरि उसे तोड़ना ही चाहता है। इस बार दुर्गा पूजाके बाद [illegible] वह वहाँपर मन्दिर नाटमन्दिर बनवायेगा। चण्डीमण्डप अब वास्तवमें श्रीहरिका है। श्रीहरि ही अब इस गाँवका जमींदार है। शिवकालीपुरकी जमींदारी उसीने खरीद ली है। चण्डीमण्डप उसका अपना

है। अलङ्कारों चण्डीमण्डपकी दीवारें इसी बीच बैशाखके आँधी-पानी और घाँदोंसे भर गयी हैं। वसुधाराकी उतनी पुरानी रेखाएँ—अब एक भी नजर नहीं आती।

अब श्रीहरि भी प्रायः उसे बुलाया करता—"चाचा, मेरे यहाँ पाँवकी धूल देना।" ऐसा वह व्यंग्यसे नहीं, श्रद्धासे ही कहता।

लेकिन कहनेसे क्या होता है। उधर श्रीहरिसे गाँवके विवादकी सम्भावना फिर धीरे धीरे बीजसे अंकुरकी तरह उगती आ रही थी। सेटलमेंटकी पाँच धाराका वक्त आनेवाला है। चूँकि अनाजका दाम बढ़ गया है इसलिए श्रीहरि लगान बढ़ाना चाहेगा। उसने देबूसे उस रोज इसका जिक्र भी किया था। देबूने कहा, 'देख लो कि आसपासके गाँवोंका क्या होता है। सब गाँवोंमें क्या होता है। अगर सभी गाँवके लोग जमींदारको ज्यादा लगान देंगे तो तुम्हें भी मिलेगा।''

सरकारी सर्वेका यह नतीजा हुआ है कि सार्वजनीन त्योहारकी तरह जमींदारोंको लगान बढ़ानेका एक सामान्य उपलक्ष्य मिल गया है। प्रजा चिन्तित हो उठी है। गाँवके मातबरोंने इतनेमें ही उसके यहाँ आया-जाई शुरू कर दी है। देबूने बराबर यही कहा है, सोचा भी है कि मैं अब इन मामलोंमें नहीं पड़ता। मगर लोग फिर भी नहीं मानते। लेकिन लगान-वृद्धि! इसपर भी लगानकी बढ़ानेकी? वह सिहर उठता। गाँवकी तरफ ताकता। गया-बीता गाँव। महज दो मुट्ठी अन्न और दो टुकड़ा कपड़ा मयस्सर नहीं होता लोगोंको। इसपर लगान बढ़ जाये तो मर ही जायेंगे लोग। श्रीहरि सतिहरका बेटा है, मगर जमींदार होकर सब भूल गया है। लेकिन बीवी-बच्चे मर जानेसे संन्यासी-सा जानवर भी देबू इस बातको किसी भी प्रकारसे नहीं भूल पाता। पिछले कई दिनोंसे यतीनसे उसकी यही चर्चा होती।

क्या करे? जरूरत होती तो फिर इसके पीछे वह पड़ता। कभी-कभी जीमें आता—न। दूसरोंकी झंझट सिरपर लेकर क्या लाभ? उसे न्यायरत्नकी कहानी याद आ जाती। धार्मिक-जीवन बितानेकी इच्छा होती। मगर किसी भी प्रकारसे सम्भव नहीं होता। यतीनने उसे उस कहानीका अब दूसरे ढंगसे समझाना चाहा, मगर उसे अच्छा न लगा। लेकिन निरा धरम-करम लेकर भी वह नहीं रह गया—यही बात उसे अपने तईं अजीब अचरजकी लगी। उसके भीतर मन न जाने कौन है जो उसे इसी तरह इसी रास्तेपर चला रहा है। शायद यही होगा असल देबू घोष!

जरा और ठहरो तो लगान-वृद्धिके खिलाफ अभीसे लड़नेका पैतरा बाँधने

लगी थे। हरेन घाट-बाटमें निकलता और नाहक ही चिल्ला उठता—"करो हड़ताल। हम लोग हैं पीछेमें।"

बंगालकी ग्राम-समाजमें हड़ताल पुरानी बात है। यहाँ उसे 'धर्मघट' कहते हैं। नाममें ही उसकी प्राचीनताका परिचय है। पहले तो धर्मको साक्षी रखकर, घट स्थापित करके सर्वसाधारणके जिस किसी कामके लिए शपथ ली जाती थी। बादमें वह जमींदार और रियाया, पूँजीपति और मजूरोंकी लड़ाईमें ही सीमित हो गयी।

इसमें उन्हें बेहद जोश होता है। संघ शक्तिकी प्रेरणासे असम्भवको सम्भव करनेका उत्साह रहता है—अपने सर्वांगीण स्वार्थको अनोखे ढंगसे हँसते हुए बलि चढ़ाते हैं। प्रत्येक गाँवके इतिहासकी खोज करनेसे पता चलता है कि गरीब खेतिहरोंमें-से किसी किसीका पुरखा प्रजा-हड़तालका अगुआ होकर सब-कुछ गँवा बैठा और अपनी भावी पीढ़ीको कंगाल बना गया। किसी किसी गाँवमें खण्डहर पड़े हैं, जहाँ कभी किसी सम्पन्न खेतिहरका घर था, वह घर इस हड़तालके चलते तबाह हो गया। घरके लोग पेट पालनेकी ताड़नासे गाँव छोड़कर चले गये या भुखमरी और बीमारीका शिकार होकर वंश ही लुप्त हो गया।

लेकिन हड़ताल आमतौरसे होती नहीं। हड़ताल करने-जैसा सार्वजनीन कारण कम आता है। आता भी है तो प्रेरणा देनेवालेकी कमी होती है। अब कि ऐसा ही एक अवसर आया है। इलाकेके प्रत्येक गाँवके जमींदार सर्वेके बाद अनाजकी कीमत बढ़ जानेके बहाने लगान बढ़ानेकी तैयारी कर रहे हैं। प्रजा लगान बढ़ने देना नहीं चाहती। इसे रियाया अन्याय समझती है। उनका मन कोई भी युक्ति माननेको तैयार नहीं। पुश्त-दर-पुश्त वे लोग चोटीका पसीना बहाकर खेतको उपजाऊ बनाते आये हैं। उन खेतोंका अनाज उनका है। अन्य मन कुछ भी समझना नहीं चाहता। गाँव गाँवमें प्रजा सोच विचार कर रही है। बात्जुब है कि उसकी हर लहर आकर देबूको चोट करती है।

कुसुमपुरके मुसलमानोंने आज जो उसे मुखिया बननेका न्योता दिया है यह भी वही लहर है। कुद्खोके बाद उसी बातपर राय-मशविरा होगा।

महाग्रामकी लहर भी उसके पास पहुँच गयी है। गाँवके लोग न्यायरत्नके पास आये थे। उन्होंने लोगोंको देबूके पास भेज दिया। एक पत्रमें उन्होंने लिखा—'गुरुजी, पर शास्त्रमें इसका विधान नहीं है। सोच-विचारकर देखा—तुम कर सकते हो। समझ-बूझकर राय देना।'

न्यायरत्नको उसने मन-ही-मन प्रणाम किया—'आप मेरे कन्धेपर यह भार डाल रहे हैं ठाकुर? ठीक है, लूँगा मैं भार।"—उसके होठोंपर अजीब

मुसकान खेल गयी। वही मुसकान, जो वह उस रोज यायरत्नके सामने मुसकराया था। वही सोच रहा था वह—नाहक ही सघष वह नही छेडेगा। कानून जब लगान बढानेकी गुजाइश देता है तो प्रजाको बढा हुआ लगान देना ही पडेगा। लेकिन जमीदारको भी उचित लेना चाहिए, प्रजाकी सगतिका विचार करके लेना चाहिए। रथयात्राके दिन यायरत्नके गृहदेवताकी रथयात्राके अवसरपर जो मेला लगेगा, उस मेलेमे पाच सात गावके लोग आयेंगे। हर गावके जाने माने लोग यायरत्नका आशीर्वाद लेनेके लिए आते है। यायरत्नने देबूको आमन्त्रित किया है। देबूने भी तय किया है कि—वही लोगोसे राय मशविरा करके जैसा होगा, किया जायेगा।

रेलगाडी भेडाता हुआ पतिगा आया। एक क्षण ही रुका। बोला, "नजरबन्द बाबू बुला रहे है।" और फिर सीटी बजाकर दौड पडा

देबू हँसने लगा।

यतीनने अनिरुद्धकी बात कही।

"दो महीने तो बीत गये देबू बाबू। अबतक भी उन्हें लौट आना चाहिए था। मने हिसाब लगाकर देखा वे दस दिन पहले ही छूट चुके है। हिसाब यही कहता है। थाना भी यही बताता है।"

'सच ही तो, अनी भाईको अबतक वापस आ जाना चाहिए था।"

"मै यह सोच रहा हूँ जेलमें कोई हगामा करके फिर तो सजा नही हो गयी?'

'ताज्जुब नही है। अनी भाईका विश्वास नही। बदनमें बेहद ताकत है। बेहिसाब गुस्सल है। वह सब कर सकता है। देबूने कहा, "लुहारबहू बहुत परेशान हो रही है क्या?

यतीनने कहा माँ! देबू बाबू वह एक अजीब औरत है। देखते नही है ये दोनो बौडम छोकरे अब कही नही जाते घरके ही आसपास चक्कर काटा करते है दिन रात फिर भी माँ इन्ही दोनोके पीछे परेशान रहती है दिन रात। उसने महज एक दिन अनिरुद्धके बारेमें पूछा था। बस! फिर कभी खयाल पडेगा तो पूछेगी।'

इस मामूलीसे कारणके लिए देबूकी आँखोंमें आँसू आ गया। उसे मुनेकी गोदमें लिये रहती बिलुआ हसता हुआ मुखडा और सदा कामकाजमें फस दिन याद हो आये।

यतीनने कहा, बल्कि दुर्गाने दो-तीन दिन पूछा था।'

आगे पाठकर देबू हसा। बोला दुर्गा आजकल मेरी ओर नहीं जाती।

एक दिन मैंने पूछा, तो बोली—गाँववालोंको तो आप जानते हैं। अगर मैं ज्यादा आयी-गयी कि लोग कोई किस्सा उड़ा देंगे।"

सही है। दुर्गा देवूके यहाँ विशेष नहीं आती। लेकिन दूध देनेके लिए माँ को भेजती है, दोनों बेला पातूको भेजा करती है। रातको पातू ही देवूके यहाँ सोता है। यह इन्तज़ाम भी दुर्गा ही का है। इसके सिवा वह ख़ुद भी वैसी तो हो गयी है। वह अब वैसी लीला-चंचल-तरंगमयी नहीं है। अजीब शान्त हो गयी है। शायद उसे देवूकी छूत लग गयी। यतीनका किशोर तरुण रूप अब उसे विचलित नहीं करता। वह बीच बीचमें दूरसे देवूको देखा करती—उसी जैसी उदास स्निग्ध नज़रोंको तरफ़ निरर्थक ताकती रहती।

कुछ देरके बाद यतीनने कहा, "मैंने सुना है, श्रीहरि घोषने दरख्वास्त दी है कि गाँवमें हड़तालकी तैयारी हो रही है और उसमें मेरा हाथ है। मुझे यहाँ से हटानेकी चेष्टा कर रहे हैं। और मुझे लगता है कि मुझको हटना भी पड़ेगा। लेकिन स्नेह-पागल उस औरतकी सोचकर तो मैं व्याकुल हो रहा हूँ। एक ही भरोसा है कि आप हैं। लेकिन वह भी तो एक झंझट है। इसके सिवा यह विचित्र औरत है देवू बाबू! ऊपरसे उन दो छोकरोंको जुटा लिया है। खायेगी क्या? गुज़ारा कैसे होगा? मेरे जाने ही किरायेके दस रुपये भी बन्द हो जायेंगे। सुना, ज़मीन भी नीलाम हो जायेगी। अंगुलियाके फेलू चौधरीने भी श्रीहरिसे साज़िश करके नालिश कर दी है। बाकी लगान कुछ—बहुत रुपये हो जायेंगे। ज़मीन नहीं रहेगी। आजकल माँ धान कूटती है। कंकनाके बाबुओंके यहाँ जाकर भूँजा भूँजती है। लेकिन उतनेसे क्या उन दो छोकरों सहित गुज़ारा होगा?"

थोड़ी देर सोचकर देवूने कहा, "बिना जेल ऑफ़िस गये अनिरुद्धका ठीक-ठीक पता नहीं चलेगा। मैं, न होगा तो, कल सदर जाकर पता लगा आऊँगा।"

देवू सदर जो गया, सो दो दिन नहीं लौटा। यतीन इससे और भी चिंतित हो उठा। दूसरे किसीको कुछ मालूम नहीं। पद्म भी नहीं जानती। तीसरे दिन देवू लौटा। अनिरुद्धका कोई पता न चला। जेलसे वह दस दिन पहले ही निकला। देवूने बहुत खोजा-ढूँढ़ा। इसीलिए उसे दो दिन लग गये। जेलसे निकलनेके बाद अनिरुद्ध एक दिन शहरमें ही था। दूसरे दिन जंक्शन तक आया था। वहाँसे जाने किसी औरतको साथ लेकर चला गया। इतना ही पता लग सका कि कारखानेमें काम करनेके लिए वह कलकत्ता या बम्बई या दिल्ली या लाहौर चला गया। कमसे कम वह यही कह गया है कि जब कारखानेमें ही काम

करना है, तो यहाँ क्यों करूँगा! किसी बड़े कारखानेमें करूँगा। कलकत्ता बम्बई दिल्ली लाहौर—जहाँ भी ज्यादा तनख्वाह मिलेगी वहीं काम करूँगा।"

अन्दरकी जंजीर बज उठी।

यतीन और देवूने चौंककर एक दूसरेकी ओर ताका। जंजीर फिर बजी। अबकी यतीन उठा और अपराधीकी नाईं सिर झुकाकर पद्मके सामने जाकर खड़ा हो गया।

पद्मने पूछा, "वह क्या जेलसे निकलकर वहीं चला गया है?"

'हाँ!'

'कलकत्ता, बम्बई?"

"हाँ!"

पद्मने और कुछ नहीं पूछा लौट गयी। लौटकर दीवारसे उठँगकर बैठ गयी वह चला गया? जाने दो! उसका धरम उसके साथ है!

उसकी यह शक्ल देखकर यतीन आज विस्मित नहीं हुआ। पद्मके उस तरहसे बैठते ही पाँचिया और गोवरा आकर चुपचाप उसके पास बैठ गये। यतीन बहुत-कुछ आश्वस्त होकर देवूके पास लौट आया।

बारेक दिन बाद। रथयात्रा थी उस दिन।

पिछली रातसे नयी बरसातकी बारिश शुरू हो गयी थी। आकाश फटकर जैसे पानी पड़ा हो। चारों ओर पानी ही पानी हो गया। जोरोंकी उस बारिशमें किसान माथेपर चटाईकी छतरी-सी डाले खेतमें जुट पड़े थे। टूटी मेड़ोंका मुँह बन्द कर रहे थे चूहोंके बिल बन्द कर रहे थे—पानीको रोककर जो रखना है। पाँवके नीचेकी मिट्टी मक्खन-सी मुलायम हो गयी थी। उससे सोंधी गन्ध आ रही थी। बदलीके दिनकी ओनने पन्नेमें पानी भरे खेत चक-चक कर रहे थे। बीच-बीचमें बीज धानके पौधे घने होकर सब्ज गलीचे-से लग रहे थे। हवामें हिल रहे थे धानके पौधे, मानो अन्नदा लक्ष्मी देवी मेघलोकसे उतरकर कोमल चरणों धरतीपर आकर विराजेंगी इस भावनासे ग्रामीण किसानोंने आसन बिछा रखे हैं।

उसी बारिशमें यतीन घरसे बाहर रास्तेपर उतरा। उसके साथ दरोगाजी थे। दो चार चौकीदारोंके सिरपर उसका असबाब-पत्तर था। देवू जगन हरेन गाँवके सभी लोग उस बारिशमें खड़े थे। यतीनका अनुमान सत्य निकला। उसको यहाँसे जानेका आदेश आ गया। अब उसे सदरमें अधिकारियोंकी नजरके सामने रखनेका प्रबन्ध किया गया। चौखट पकड़े मलिन मुँह खड़ी थी पद्म, आज

उसके सिरपर घूँघट नहीं था। उसकी दोनों आँखोंसे आँसू बह रहा था। उसके पास खड़े थे फतिंगा और गोवरा—सन्न और उदास।

यतीन पहले तो चकित था। सोचता था, पद्म कुछ कर न बैठे। यही आशंका ज्यादा थी कि मूछा रोगवाली पद्म मूर्छित हो जायेगी। लेकिन यतीनको इस आशंकासे निश्चिन्त रखकर पद्म सिर्फ रोयी। फतिंगा और गोवरा बड़े शान्त थे। पद्मने उनसे कोई बात नहीं की।

फतिंगाने पूछा, 'तुम चले जाओगे बाबू?'

"हाँ! देख, माँके पास तू अच्छी तरहसे रहना फतिंगा! हाँ? मैं चिट्ठी लिखकर खोज लूँगा।'

सिर हिलाकर हाँ करते हुए फतिंगाने पूछा, 'तुम अब लौटकर नहीं आओगे बाबू?'

गरदन हिलाकर हँसनेकी कोशिशमें यतीनने एक लम्बा निःश्वास छोड़ा। उसके बाद पद्मसे बोला, 'माँ, जब छूट जाऊँगा छूटूँगा तो आखिर एक दिन जरूर ही, तो तुम्हारे पास आऊँगा।'

पद्म चुप ही रही।

यतीनने कहा, "सावधानीसे रहना! घरमें देखभाल करनेवाला कोई नहीं है।"

मन-ही-मन रोते हुए भी अबकी पद्मने हँसकर हाथ ऊपर उठाते हुए आसमानकी ओर देखा।

यतीनकी आँखोंमें आँसू आ गया था। अपनेको छिपा करके बोला, 'जब जमा हो, गुरुजीसे कहना, उनकी राय लेना।'

पद्मका चेहरा खिल उठा—'हाँ! गुरुजी तो हैं ही!' फिर आँसें पोछकर बोली, 'तुम ठीकसे रहना।'

लेकिन, वह बिहारी लड़का भी भीड़में चुपचाप खड़ा था। वह चुपचाप आगे बढ़ा और प्रणाम करके अपनी आदतके अनुसार चुपचाप ही चला गया।

यतीन उसकी ओर देखकर मुसकराया।

दूरनने उसका हाथ पकड़कर कहा, 'गुडबाई कामरेड!'

जगननने कहा, 'फ्लीज हरीनपर हमें खबर मिले!'

यतीनने बाउरान आकर प्रणाम किया। मुड़ा हुआ एक मैला-सा कागज उसे देते हुए शरम-सी हँसी हँसकर बोला, 'यह गीत है हमारा। आप लिख लेना चाहते थे। मन बहुत दिन हुए लिखवा रखा था। दे नहीं पाया था।"

यतीनने कागजको हिफाजतसे जेबमें रख लिया।

"अजब है! दुर्गा नहीं आयी!"

दरोगाने कहा, "अब चलिए यतीन बाबू!"

यतीन सरत कदमों आगे बढ़ा—"चलिए!" देबू भी उसकी बगलसे चला। पीछे-पीछे जगन, हरेन और भी बहुतेरे। रास्तेमें चण्डीमण्डपके किनारे श्रीहरि घोष खड़ा था। मजदूरे चण्डीमण्डपका छप्पर खोल रहे थे। वर्षासे गिर पड़ेगा। उसके बाद वह ठाकुरवाड़ी बनवायेगा। श्रीहरिने भी मुसकराकर उसे नमस्कार किया।

गाँवसे बाहर वे बहारमें पहुँच गये। यतीनने कहा, "अब आप लोग लौट जायें!'

सब लौट गये, केवल देबूने कहा, "चलिए, मैं बाँध तक चलूँगा। वहाँसे मैं महाग्राम जाऊँगा— न्यायरत्नके यहाँ। उनके यहाँ रथयात्रा है।"

रास्तेमें सूने बँहारके पोखरेके किनारे एक पेड़के नीचे खड़ी थी दुर्गा। उसे किसीने नहीं देखा। लेकिन वह उसकी ओर ताकती हुई जैसी खड़ी थी वैसी ही खड़ी रही। सभी चुपचाप जा रहे थे। दु:खसे सबके शब्द खो गये हों मानो। दरोगाजी तक चुप थे। सबकी पीड़ाने मानो उनके हृदयको छू लिया था।

यतीनको बहुत सारी बातें याद आ रही थीं, बहुत-बहुत स्मृतियाँ! एक व एक बँहारकी ओर निहारकर उसमें भावान्तर आ गया। यह दूर तक फैली हुई बहार एक दिन हरे पौधोंसे भर जायगी—धीरे धीरे हेमन्तके सुनहले रंगसे चमक उठेगी यह। सोनेकी फसलसे किसानोंके घर भर जायेंगे।

दूसरे ही क्षण जीमें आया—फिर? वह धान पायेगा कहाँ?

उसे अनिरुद्धकी गिरस्तीकी छवि याद आयी। और भी बहुतोंके घरकी याद आयी। टूटा-फूटा घर सूना आँगन, अभावसे पीड़ित मुखड़े, महामारी, मलेरिया, कर्जका बोझ दुबले अधनंगे अबोध शिशुओंका दल! फतिंगा और गोबरा—बंगालके भावी पुरुषके नमूने!

और फिर याद आया—पद्म उसके माथेपर अशोक पष्ठीका टीका दे रही है!

उसे पढ़ी हुई सांख्यिकीकी बात सहसा बड़ी तुच्छ लगी। अधूरा सत्य—महज वस्तुगत हिसाब! लेकिन यह दुनिया मात्र हिसाबसे समझनेकी चीज नहीं है। यह बात उससे एक दिन न्यायरत्नने कही थी। उनकी याद आ गयी। सिर झुकाकर बार-बार मन-ही मन उन्हें प्रणाम करते हुए उसने स्वीकारा कि संसार और संसारका कोई भी आदमी हिसाबके दायरेमें बँधा नहीं है।

न्यायरत्न हिसावसे परे हैं—परिमापसे अलग। और उसके पासका यह आदमी—देवू गुरुजी? अधपढा खेतिहरका लडका, हृदयकी उदारतासे अपनी कीमतके अकाको पार कर गया है—कितना, कहाँतक—इसका लेखा यतीन नहीं लगा सका ह। और पार किया कैसे यह भी अक शास्त्रका एक अतिरिक्त रहस्य है।

हिसावकी इसी भूलके फेरेसे तो बची हुई ह यह धरती। एक बार एक धूमकेतुकी टक्करसे इसके चूर-चूर हो जानेकी वात थी। बडे-बडे हिसाव लगा कर ही उस परिणामकी घोषणा की गयी थी। हिसावमें गलती नही हुई थी, लेकिन जाने किस रहस्यमयके इशारेसे गलतीसे धरती उस धूमकेतुके वगलसे वचकर निकल गयी।

रही तो, उस समाज शृखलाका तो सारा कुछ विखर गया ह। गाँवाकी वह सनातन व्यवस्था—नाई, लुहार, कुम्हार, तांती—आज अपना-अपना काम छोड चुके हैं, अपने पेशेस परे ह। एक गाँवसे पाँच गाँवका वन्धन, पचग्रामसे सप्तग्राम, नवग्राम दसग्राम, वीसग्राम। वस, सहस्र ग्रामके वन्धनकी गाँठें विखर गयी ह।

महाग्रामका महा' विशेषण विगडकर मह्में वदल गया ह। न केवल अथम वल्कि वास्तविक परिणतिमें भी उसकी महा महिमा खो चुकी ह। अट्ठारह टोलेका गाँव आज कुछ घराकी वस्ती वन गया ह। बूढे न्यायरत्न एकान्तमें महाप्रयाणके दिन गिनते जा रहे ह।

नदीके उस पार नया काल नये महाग्रामकी रचना कर रहा ह। नये कालकी उस रचनामें जो रूप निखरेगा, उसे यतीनने अपनी कितावोंमें पढ़ा ह—कलकत्तेमें उसने अपने जन्मस्थानमें प्रत्यक्ष देखा है। उसके याद आते ही सिहर उठना पडता है, लगता ह कि सारी दुनियाकी रोशनी गुल हो जायेगी, हवाका प्रवाह थम जायेगा, सारी सृष्टि दस्यु-द्वारा रौंदी हुई नारी-जैसी सारहीन कगालिन वन जायेगी। जर्जर हृदय, कलेजेमें हाहाकार, वाहर चमक-दमक, होठोंपर वनावटी हँसी। अभागिन सृष्टि! शास्त्रके नियमसे उसकी परिणति—क्षय रोगीकी तरह तिल तिल करके मृत्यु! लेकिन तो भी आज वह हताश नहीं। सारी सृष्टिमें मनुष्य अकशास्त्रका अलग रहस्य ह। धरतीके समुद्र तटकी वालुकामें एक कणके समान ब्रह्माण्डमें व्याप्तिके भीतर यह पृथ्वी, इस पृथ्वीमें जो जीवन रहस्य ह, वह रहस्य ब्रह्माण्डके ग्रह-उपग्रहके रहस्यका अतिक्रम ह। एक कण जीवन प्रकृतिकी प्रतिकूलता मृत्युकी अमोघ शक्ति सब-कुछकी पार करके सौ, हजार, लाख, करोडों-करोड धाराओंमें युग-युग उच्छ्वसित होकर महाप्रवाह हो वहता

जा रहा है। वह सारी बाधाओंको पार करेगा। आनन्दमयी प्राणवान् यह सृष्टि, अपार है उसकी शक्ति—अपने जीवन विकासकी समस्त विरोधी शक्तियोंको वह नष्ट करेगी। इसमें उसे कोई सन्देह नहीं। भारतका जीवन प्रवाह सारे बाधा विघ्नोंको ठेलता हुआ फिर तेजीसे दौड़ेगा।

न्यायरत्न जीर्ण हैं। उनका युग बीत चुका है। वे नहीं रहेंगे। लेकिन उनकी याद, उनका आदर्श नया जन्म ग्रहण करेगा। यतीन हँसा। न्यायरत्नके पोते विश्वनाथकी याद आ गयी। वह आयेगा। देबू घोष, गाँवोंकी टूटती हुई शृंखलाके युगमें, टूटने-बननेके क्रममें श्रीहरि पाल, कंकनाके बाबू, थानेके जमादार दरोगाकी लाल आँखोंकी परवा न करके नये रूपमें जाग खड़ा हुआ है—महामारीके हमलेको उसने रोका है। देबूकी छातीसे छाती लगाकर गले मिलते हुए उसने साफ महसूस किया कि उसके हृदयमें समयकी वाणी उमड़ रही है। सारी बाधा, सारे विघ्नको दूर करके जीवनकी सार्थकताके अटूट अदम्य आग्रहकी वाणी!

उत्तेजनासे विप्लववादी यतीनका शरीर थर थर कर उठा। यह चिन्ता उसके विप्लवकी थी। आनन्दसे उसकी आँखोंमें दमक उठी एक अनोखी ज्योति! उसे यही खुशी थी, यही सन्तोष था कि उसने अपना कर्तव्य किया। अपने बन्दी जीवनमें इस बस्तीमें देबूके जागरणमें उसने मदद की। कैद उसके अपने जीवनके जागरण भावप्लावनमें बाधा नहीं दे सका। नये युगके धर्षणकी प्रचेष्टा इसी प्रकारसे बेकार होगी—मनुष्य जियेगा! भय नहीं! भय नहीं!

बाँधपर खड़े होकर देबूने कहा, "तो अब विदा यतीन बाबू! नमस्कार!'

यतीनने भी कहा, 'नमस्कार देबू बाबू! विदा! ' उसने देबूके दोनों हाथ अपने हाथोंमें लेकर उसके मुँहकी ओर देखा। सहसा बोल उठा

उदयेर पथे शुनि कार वाणी—भय नाइ ओरे भय नाइ।
निःशेषे प्राण करिबे जे दान क्षय नाइ तार क्षय नाइ॥"

उसके बाद अचानक मुँह फेरकर वह स्टेशनकी ओर चलने लगा। देबू उसकी ओर खड़ा देखता रह गया। उसकी आँखोंसे आँसू बहने लगा। यह निरा सूना अकेला जीवन—बिलू और मुन्ना चले गये, जगन, हरेन अब आ जाकर वैसा ही हल्ला नहीं करते, सारे गाँवमें वह घटता-सा जा रहा है! आज यतीन बाबू भी चल दिये! कैसे बीतेंगे दिन उसके? किसे लेकर वह जिन्दा रहेगा? सहसा उसे न्यायरत्नकी कहानी याद आ गयी। कहाँ है वह धान्यग्राम कहाँ है उसका?

आसमानकी ओर ऊपर ताककर उसने खोये हुएके समान हाथ बढ़ाया—भगवान !

मयूराक्षीके पाटमें उतरकर यतीन फिर पलटकर खड़ा हो गया। ऊँचे बाँध पर ऊपरको आँखें और मुँह किये हुए देबूको देखकर आनन्द और तृप्तिसे मोहग्रस्त-सा होकर वह देबूको देखता ही रह गया।

दरोगाने कहा, "यतीन बाबू चलिए !"

यतीनने हाथ ज़मीनसे लगाया और उस हाथको अपने माथेसे। फिर प्रणाम करके बोला, "चलिए !"

अकस्मात दूरपर कहीं ढाक बज उठा।

दूरसे आती हुई उस ढाककी आवाज़से सचेत होकर देबूने लम्बा निःश्वास छोड़ा। ढाक बज रहा था। महाग्रामके ढाककी आवाज़! न्यायरत्नके यहाँ रथ यात्रा है। देवता शायद रथपर आसीन हुए। रथ शायद चलने लगा। पता नहीं वह रथ जाकर कहाँ रुकेगा?

बाँधपरकी राह पकड़कर वह तेज़ीसे चलने लगा।

■ ■ ■

गणदेवता खण्ड दो

पंचग्राम

एक

आसाढ़का महीना। इस महीनेकी शुक्ला द्वितीया तिथिको जगन्नाथजीकी रथ-यात्राका त्योहार, बारह महीनेमें भगवान् विष्णुकी बारह यात्राएँ, जिनमें यह रथयात्रा हिन्दुओंका लगभग सार्वजनीन उत्सव है। पुरीकी जगन्नाथ मूर्तिकी रथयात्रा ही भारतवर्षकी प्रधान रथयात्रा है। आजके दिन वहाँ भी जगन्नाथजी जाति-वर्ण निर्विशेष सबके देवता हैं जाति-वर्णकी यह निर्विशेषता अवश्य ही केवल हिन्दूधर्मवालों तक सीमित है। हिन्दुओंमें सभी जातिके लोग आज रथकी रस्सीको छूकर जगन्नाथजीके स्पर्शका पुण्य लाभ करते हैं। जगन्नाथजी कंगालोंके देवता हैं।

रथयात्रा यों पुरीकी ही प्रधान होती है, लेकिन हिन्दुओंमें सभी जगह, खासकर बंगालके प्राय गाँव-गाँवमें छोटे-बड़े रूपमें रथयात्राका उत्सव मनाया जाता है। ऊँचे वर्णके हिन्दुओंके यहाँ आज पंचगव्य और पंचामृतके साथ जगन्नाथजीको खीरका विशेष भोग लगाया जाता है। आम-कटहलका समय है, इसलिए आम-कटहल भोगका एक अपरिहार्य उपकरण है। धनी जमींदारोंमेंसे बहुतोंके यहाँ रथ हैं—लकड़ीका, पीतलका। इस रथपर शालग्राम शिला या घरकी प्रतिष्ठित मूर्तिको रखकर पुरीके अनुकरणमें रथ खींचा जाता है। वैष्णवोंके मठमें रथयात्राके दिन संकीर्तन समारोह होता है मेला लगता है। बंगालके किसानोंमें ज्यादातर वैष्णव धर्मावलम्बी हैं वे इस पर्वको बड़े चावसे मनाते हैं। इस दिन हल जोतना बन्द रखकर उन्होंने इस पर्वको अपने जीवनसे बड़ा घनिष्ठ कर लिया है। दो-दस गाँवोंके पारस्परिक सम्पन्न किसानोंके गाँवमें हर साल बाँस-लकड़ीका रथ बनाकर यह उत्सव मनाया जाता है। छोटा-सा मेला लगता है। आस-पासके लोगोंकी भीड़ हो जाती है। कागज़के फूल, रंगीन कागज़में लपेटी हुई बाँसुरी, हवामें घूमनेवाले कागज़के फूल, ताड़के पत्तेके बने हाथ-पाँव हिलानेवाले हनुमान्, पटाखे, तेलमें तले हुए पापड़, बेगनी, फुलौरी और थोड़ी-बहुत मनिहारी चीज़ें बिकती हैं।

महाग्राममें न्यायरत्नके यहाँ रथयात्राका अनुष्ठान बहुत दिनोंसे चला आ रहा है। उनके चौथे पूर्व-पुरुषने रथ प्रतिष्ठा की थी। उनके गृह-देवता लक्ष्मी

चला गया। वर्षाके इस मेघ घिरे दिनमें उसे मयूराक्षीके घाटपर ही किसी एकान्त पेड़-तले चुपचाप बैठनेकी इच्छा हो रही थी। उसी घाटके पास मयूराक्षीकी रेतीमें उसने अपने मुन्ने और प्यारी बिल्लूको जलाकर राख किया है। जेठके झाके और थोड़ी-बहुत बारिशसे वह चिह्न अभी भी कतई धुल पुँछ नहीं गया है। उसीकी बगलसे भीगी बालूपर अपने पाँवोंकी छाप छोड़ता हुआ यतीन चला गया। आज जिस तरहसे उमड़ घुमड़कर घिर आयी है घटाएँ, नैऋत्य कोण से बहने लगी है जैसी मन्द मधुर हवा, उससे लगता है कि पानी पड़नेमें अब देर नहीं। बस्ती घाट बाटको डुबाता हुआ मयूराक्षीमें पानीका बहाव आयेगा—उस बहावके सोतेसे मुन्ने और बिल्लूकी चिताके चिह्न यतीनके पैरोंके निशान बिल्कुल धुल जायेंगे—उसी धुल जानेको देखनेकी इच्छा थी उसकी। लेकिन न्यायरत्नजीके बुलावेको वह टाल नहीं सकता। यतीन उसके जीवनमें लाया है निश्चित आदर्श और न्यायरत्नने भी दी है उसे एक परम सान्त्वना। उसकी वह कहानी जो भूलने योग्य नहीं। न्यायरत्नने आज उसे विशेष रूपसे बुलाया है। बुलानेका एक खास कारण है। स्नेह तो खैर है ही, लेकिन जिस कारणवश उन्होंने जिक्र किया था देबू उसीकी सोच रहा था।

जरीब कानूनके मुताबिक इस इलाकेका सेटलमेण्ट सर्वे हो चुका। रेकॅर्ड ऑव राइट्सका अन्तिम रूपसे प्रकाशन भी हो गया। सेटलमेण्टकी लागत का अपना हिस्सा देकर रैयतोंने परचा ले लिया। अब जमींदारके लगान बढ़ाने की बारी थी। जहाँ देखिए जमींदारोंने एक ही आवाज उठायी थी—लगान बढ़ायेंगे। कानूनन तो हर दस सालपर वे लगान बढ़ानेके हकदार हैं। आज बहुत-से दस साल गुजर जानेके बाद सेटलमेण्टके खास मौकेसे वे लगान बढ़ानेपर तुल गये हैं। अनाजोंकी कीमतें बढ़ गयी हैं—लगान बढ़ानेका यही प्रधान कारण है। राज-सरकारमें प्रत्येक भूमिपर जमींदारका शायद उपजका हिस्सा प्राप्य है। चिरस्थायी बन्दोबस्तके जमानेमें जमींदारोंने अपनी उसी प्राप्य फसलकी जो कीमत उस समय होती थी, उस रुपया लगानमें निश्चित कर लिया था। लिहाजा आज जब फसलका दाम उस समयसे बढ़ गया है तो जमींदार भी ज्यादा पानेके हकदार हैं। इसके सिवा भी जमींदारोंको एक बहुत बड़ी सुविधा हुई है। सेटलमेण्ट कानूनकी धारा पाँचके मुताबिक जगह-जगहपर सामयिक अदालत बैठेगी। उन अदालतोंमें सिर्फ लगान बढ़ानेके ही उचित-अनुचितका विचार होगा। खूब कम खर्चमें ही ऐसे मुकदमे दायर किये जा सकेंगे और फैसला भी कम ही समयमें हो जायेगा। इसीलिए छोटे-बड़े सभी जमींदार एक ही साथ लगान बढ़ानेपर आमादा हो गये।

रयत लोग भी चुप नहीं बठे थे। उन लोगोंने भी लगानकी वढती न देनेका जोरदार नारा बुलन्द किया, एक आन्दोलन-सा खडा कर लिया। उनकी दलील थी, तब भी करते थे वे। उनका कहना था फसलका दाम बढ गया है यह सही है, लेकिन हमारी घर गिरस्तीका खच कितना बढ गया है यह भी तो देखो। जमींदारोंका जवाब था, वह देखनेका जिम्मा हमारा नही हमारा नाता उस उपज मूल्यसे है जो राजाके हिस्सेका है। यह महीन बात रियाया समझ नही सकती थी, समझना चाहती नही थी। वह कहती था—हम नही देंगे। यह 'नहीं देंगे' कहनेमें उन्हें एक अनोखी तप्तिका स्वाद मिलता था। कोई अकेला अगर पावनेदारका पावना न देनेकी कहे तो समाजमें उसकी निन्दा होती है लेकिन वही गोया मनुष्यके मनकी बात हो। न देनेसे जब अपना बचेगा—कमसे कम घट जानेके दुखसे बचेंगे—तो नहीं देनेका इरादा ही जीमें जग पडता है। लेकिन यह बात अकेले किसीके कहनेसे समाजमें निन्दा होती है, राजाके दरबारमें जाकर पावनादार देनदारसे अपना पावना सहज ही वसूल कर लेता है। लेकिन आज जब सारे समाजने ही नहीं देनेका नारा दिया है तो यह निन्दाकी बात कहाँ रही? आज उठ आयी है दावेकी बात। पावनादार राजाने यहाँ करे नालिश, आज ये धाँसकी एक कमची नही हैं कमचियोंकी गाँठ है। इसके टूट जानेका डर इनको नहीं है। डर नहीं है इस उपलब्धिमें जो एक तान है मत्तता है उसी मत्ततासे ये मत्त हो उठे थे। यहाँके लगभग सभी गाँवाकी प्रजाने हडताल करनेका सकल्प कर लिया था। उन्हें अब नेताकी जरूरत थी। प्राय हर गाँवसे देबूका न्योता आया था। उसके अपने गाँव शिवकालीपुरके लोगोंने उसे परेशान कर रखा था। देबूकी इन मामलोंमें अब पडनेकी इच्छा न थी। उसने बार-बार लोगोंको टाल देना चाहा, मगर लोग सुनते न थे। इधर महाग्रामके लोगोंने न्यायरत्नकी शरण ली थी। उन्होंने एक चिट्ठी देकर लोगोंको देबूके पास भेज दिया था। लिखा था—'गुरुजी, मेरे शास्त्रमें इसका कोई विधान नहीं है। सोचकर देखो तुम विधान दे सकते हो। साथ विचार कर कोई राह निकालो।

रथयात्राके मौकेपर पचग्रामके मातबर किसान आज न्यायरत्नके यहाँ इकट्ठे होंगे। महाग्रामके सक्रिय कार्यकर्तागण इसी मौकेपर हडतालके उद्योग पर्वकी भूमिका समाप्त कर लेना चाहते थे, इसीलिए देबूसे आज जरूर-जरूर उपस्थित होनेका अनुरोध किया गया था। गुरु न्यायरत्नने भी लिखा था—गुरुजीको मेरा आशीर्वाद। मेरे मैनाका रथ मझार-समुद्रको पार करके घर लौटकर आयेगा। इस मेलेमें जिनका रथ गुण और गम्भीर भरमोलोंके घर जायेगा,

वे लोग मुझे खींच तान रहे हैं। यह जिम्मेदारी तुम लेकर मुझे छुटकारा दो। तुम्हारे हाथों यह भार सौंपनेसे मैं निश्चिन्त हो सकता हूँ, क्योंकि लोगोंकी सेवामें तुमने अपना सरबस गँवाया है। तुम्हारे हाथों घटना चक्रसे अगर लाभके बदले नुकसान भी होगा तो उस नुकसानसे अमंगल नहीं होगा यह मेरा विश्वास है। जरूर आओ और आकर इस विपत्तिसे मुझे बचाओ।" देबू इस निमन्त्रणको टाल नहीं सका। इसीलिए स्त्री पुत्रके चिता चिह्नके प्रबल आकर्षण, मित्र यतीनकी विदाई-वेदनाके अवसाद—सबको झाड़ फेंककर वह महाग्रामकी ओर चला जा रहा था।

मयूराक्षीके बाढ़ रोधी बाँधसे वह बँहारकी तरफ उत्तरको उतरा। वहाँसे थोड़ी ही दूरपर महाग्राम। ढाककी आवाज और ऊँची हो रही थी। अपनी चालसे कुछ और तेज करके भीड़को ठेलता हुआ आखिर वह न्यायरत्नके अटचालिएमें जा पहुँचा। जलती हुई होमाग्निके सामने बैठे-बैठे ही मुसकराकर न्यायरत्नने स्नेहसे चुपचाप उसका स्वागत किया।

देबूने प्रणाम किया।

जाने-माने किसानोंने भी सादर उसकी अगवानी की—"आओ आओ गुरुजी, आओ! यहाँ बैठो यहाँ! —उसे जगह देनेके लिए सबने अपनी जगह छोड़कर बैठना चाहा। नम्रतासे हँसकर देबू एक किनारे ही बैठा। कहा "मैं यहीं मजेमें हूँ।' लेकिन उन लोगोंके स्वागतकी आन्तरिकताने उसके हृदयको छू लिया। अपने स्त्री-पुत्रको खोकर वह मानो इस इलाकेके सभी लोगोंके स्नेह प्रेमका पात्र बन गया था। उसकी आँखोंके कोनेमें आँसूकी दो बूँदें बन आयीं। उसका सारा हृदय असीम कृतज्ञतासे भर आया। लोगोंका इतना प्रेम!

बहुतसे लोग आये थे। महाग्रामके मुख्य व्यक्ति शिवराम, गारिन्द घोष, माखन मण्डल गणेश घोष आदि तो आये ही थे उनके सिवा शिवकालीपुरसे हरेन्द्र घोषाल आया था जगन डॉक्टर भी आयेगा। देखुड़ियाका तिनकौड़ीदास आया था साथमें और कई जने। बलियाराका बूढ़ा बनाराम गोपालको और गोकुलको साथ लेकर आया था। बेनाराम गाँवकी पाठशालामें गुरुगिरी करता था। अब बूढ़ा हो गया है, आँखोंसे बिल्कुल नहीं देख पाता। पुरानी आदतसे *ही शायद उसने स्याही न दिखनेवाली आँखोंसे इधर-उधर ताककर उसने बार* धोमेग गोपालको आवाज दी—"गोपाल।'

गोपाल पास ही बैठा था। उसने बूढ़ेके कानके पास मुँह पहुँचाया और फुसफुसाकर बोला, गुरुजी, देबू घोष!

कुबड़े बूढ़ेने सीधे बैठकर पुकारा—"देवू ? कहाँ, देवू कहाँ है ?"

अपनी जगहसे ही देवूने जवाब दिया "जी, आप अच्छे हैं ?"

"यहाँ, यहाँ आओ तुम मेरे पास !"

देवू उनकी बुलाहटकी उपेक्षा न कर सका। उठकर बूढ़ेके पास गया। पैरपर हाथ रखकर स्पर्श जताते हुए प्रणाम किया—"प्रणाम करता हूँ !"

अपने दोनों हाथोंसे देवूको चेहरेसे छाती तक छूकर बूढ़ेने कहा, "मैं तुम्हें ही देखने आया हूँ।" और फिर हँसकर बोला, "आँखोंसे अब सूझता नहीं है नजर नहीं रही। इसीलिए बदनपर हाथ फेरकर देख रहा हूँ।"

देवूने बूढ़ेकी बातोंकी आड़में जिस समवेदना और प्रगाढ़ उच्छ्वासका आभास पाया उसी उच्छ्वाससे कतरानेके लिए उसने दूसरा प्रसंग छेड़ दिया—"आँखोंके जालेको कटवा दें न ! यहीं तो बेनागढ़में पादरियोंके अस्पतालसे अक्सर लोग आँखोंका जाला निकलवा आते हैं। वास्तवमें वहाँ ऑपरेशन बड़ा अच्छा होता है।"

"ऑपरेशन ? नश्तर लगानेको कहते हो ?"

"जी हाँ, मामूली ऑपरेशन है। हो जानेसे आप साफ-साफ देखने लगेंगे !"

"क्या देखूँगा ?"—बूढ़ेने अजीब हँसी हँसकर पूछा, "क्या देखूँगा ? तुम्हारा सूना घर ? तुम्हारी आँखोंका आँसू ? आँखें गयीं—अच्छा ही हुआ है देवू ! अकाल मृत्युसे देश भर गया। उस रात मेरा एक भानजा मर गया, मेरी बहन छाती फाड़कर रोयी, मैंने कानोंसे सुना, लेकिन उसका मरा हुआ मुखड़ा तो नहीं देखना पड़ा ! यह अच्छा है, यह अच्छा है देवू ! अब ये कान भी बहरे हो जायँ तो यह सब भी सुनना न पड़े।"

बूढ़ेकी दृष्टिहीन आँखोंसे आँसूकी धारा चेहरेकी झुर्रियोंको भिगाती हुई छाती पर गिरने लगी। मलिन हँसी हँसता हुआ देवू चुप रहा, कोई जवाब देते न बना उससे। जो लोग वहाँ इकट्ठे थे, उनकी बातचीत बन्द हो गयी। केवल न्यायरत्नके मन्त्रोच्चारणकी ध्वनि एक संगीतमय परिवेश बनाती हुई गूँजती रही।

ठीक इसी वक्त टोलेके अठचालेके प्रांगणमें रास्तेसे एक आधुनिक सुन्दर तरुण आया, देवूका हमउम्र। पीछे कुलीके सिरपर एक छोटा-सा सूटकेस और फलोंकी एक टोकरी। देवू आग्रहके साथ उठ खड़ा हुआ—"विशू भाई !"

देवूका विशू भाई—विश्वनाथ—न्यायरत्नका पोता था।

न्यायरत्नको अभी बोलनेकी फुरसत नहीं थी। उनके होठोंके कोनोंमें मन्त्र पढ़नेके बीचमें सिर्फ स्नेहकी एक हँसी फूट आयी।

दो

शिवकालीपुर अंचलमें—पहले शिवकालीपुरमें ही लगान-वृद्धिके विरुद्ध आन्दोलनकी आग धधक उठी।

आगके जलते ही प्राकृतिक नियमसे वायुके स्तरमें प्रवाह जाग उठता है। यही नहीं, आगके आसपासकी चीजोंके अन्दरकी दाहिका शक्ति आगका स्पर्श पानेके लिए जैसे उन्मुख हुई-सी काँपती रहती है। फूसके छप्परमें जब आग लगती है तो बगलवाले घरके छप्परकी फूस उत्तापसे स्त्री-पुष्पके गमकेशरकी तरह फूलकर खिल पड़ता है। आगके कणका स्पर्श न पानेके बावजूद उत्तापको पीते पीते वह छप्पर भी अचानक दपसे जल उठता है। आग जलती है, उस आगकी लपटसे आसपासके घरोंमें भी आग लग जाती है। उसी प्रकार शिवकालीपुरकी हड़तालकी लपटें आसपासके सब गाँवोंमें फैल गयीं। कुछ ही रोजमें इलाकेके लगभग सभी गाँवोंमें वही रट शुरू हो गयी—"लगान-वृद्धि नहीं दे सकता, नहीं दूँगा। यह बढ़ोत्तरी क्यों? किसलिए?" दूसरी ओर शिवकालीपुरका खेतिहरसे जमींदार बना श्रीहरि घोष भी तैयार हो गया। वह पक्का मामलेबाज गुमाश्ता है—सदरके दीवानी कानूनके बड़े वकील और [illegible] लैस होकर उसने ऐलान किया, 'मेरे पास कानूनका सप्तसिन्धु लहराता हुआ प्रतीक्षा कर रहा है, रुपयोंके जोरसे समुद्रके पानीको उठाकर मैं इस तुच्छ शिवकालीपुरको डुबा दूँगा। लगान-वृद्धिके मामलेमें मैं हाईकोर्ट तक लड़ूँगा।" आसपासके जमींदार भी आपसमें सहानुभूतिशील हो उठे। उन लोगोंने श्रीहरिको भरोसा दिया।

रथयात्राके दूसरे दिन।

झमाझम बारिशसे खेतोंमें पानी भर गया। खेतोंका काम शुरू हुआ। रात रहते ही किसान खेतोंमें जा जुटे। चारों तरफके गाँवोंके बीचोंबीच खेतोंमें काम करते करते ही आन्दोलनकी चर्चा चल रही थी।

पानी भरे खेतकी मेड़ काटते-काटते थककर [illegible] [illegible] बार तम्बाकू पीनेके

लिए आ बठा। चकमकी ठाकर सोलेकी आग सुलगा चिलम भरते ही आस-पासके कई लोग आ गये। कुसुमपुरके रहम दीनने ही पहले शुरू किया।

"चाचा, सुना तुम लोगोंने जिहाद बोल दिया?"

शिबूदास बिल्ली की तरह जरा हँसा—"कल न्यायरत्नके यहाँ हड़तालका ही निश्चय किया गया।"

दबूने सब-कुछ समझा दिया। उसने बार-बार बाधा विपत्ति, दुःख-कष्टकी बातें बतायी, जो जरूर ही आयेंगे। बीते सौ सालके अन्दर इसी पचग्राममें जितनी हड़तालें हुई, उनकी कहानियाँ कहकर बताया कि कितने किसान जमींदारके खिलाफ लड़नेमें किस तरह बिल्कुल तबाह हो गये। उसने साफ़ बताया, कानून जहाँ जमींदारके पक्षमें है वहाँ लगानकी बढ़ोत्तरी न देनेको कहना गलत है, कानूनके मुताबिक अन्याय है। रयत और जमींदारके पैसोंके जोरकी बात तथा कानूनन अधिकारकी याद दिलाते हुए प्रकारान्तरसे उसने मना ही किया था।

सभी हतोत्साह हो गये थे। लेकिन न्यायरत्नका पोता विशू वहाँ मौजूद था। उसने हँसकर कहा, "क़ानून भी बदलता है, दबू भाई। पहले सरकारके मुताबिक जमीनके मालिक जमींदार थे, प्रजाको सिर्फ जोतने-बोनेका अधिकार था। जमीन बेचनेके लिए जमींदारसे खारिज-दाखिल करकर हुक्म लेना पड़ता था। जमीनपर जो कीमती पेड़ होते थे, उनपर भी रयतका हक नहीं होता था। लेकिन वह क़ानून बदल गया। लगानकी बढ़ोत्तरी न देनेकी अपनी माँगको प्रजा अगर मजबूत और जोरदार बना सके, उसके लिए वाजिब दलील पेश कर सके, तो बढ़ोत्तरीका क़ानून भी बदल जायेगा।

इतना कहना था कि सबके मनमें एक ही युक्ति फूलकर विक्षुब्ध पक्षकी नाई सिर उठाकर आवाज घूमती-सी हो उठी थी— बढ़ोत्तरी देंगे? देनेसे हमें बच क्या रहेगा? हम क्या खाकर जियेंगे? सरकारका ऐसा क़ानून न्यायसंगत कैसे हो सकता है?'

अन्धे और बूढ़े पण्डित केनारामने हँसकर कहा था, 'लेकिन विशू बाबू, भगवान्की मार पड़े तो कौन बचा सकता है?"

बूढ़ेके ऐसा कहनेपर सारी सभा क्षोभसे भर गयी थी। जीव-जीवनकी भौतिक प्रकृतिके अनुसार एक व्यक्ति दूसरेको हराकर शोषण करके अपनेको यथासम्भव ताकतवर बना लेता है। जो हारता है, शोषित होता है वह हजारों दुःख-कष्ट झेलते हुए भी मरते-दम तक एकबारगी पनपनेकी कोशिश बाज नहीं आता। किसी स्थितिमें वह हार या मान नहीं करता। लेकिन उसके प्रतिकारके लिए वह

जिसपर निर्भर करता है वह भी आकर यदि शोषण करनेवालेकी ही मदद करे, जी-जानसे छुटकारा पानेकी कोशिशके कलेजेपर अपनी शक्तिका दबाव डाल दे, तो शापिताका आखिरी सहारा होता है आँसूकी दो बूँदोंसे भीगा हुआ हृदयका क्षोभ, केवल क्षोभ ही नहीं मान भी। लोगोंमें वही क्षोभ, वही अभिमान जाग उठा।

विशूने उसपर कहा था, 'भगवान् अगर इन्साफ न करके मारना ही चाहे तो वैसे भगवानको बदलकर हम दूसरे भगवानकी पूजा करेंगे।"

देबू सिहरकर बोल उठा था 'यह क्या कहते हो विशू भाई! नहीं, तुम्हारे मुँहसे ऐसी बात नहीं सोहती।"

देबू ही नहीं सारी सभा सिहर उठी थी। लेकिन विशूने हँसकर कहा था, 'मैं गोकुल या गोलोकके मुरलीधर या चक्रधारी भगवानकी बात नहीं कह रहा हूँ बिन भाई, वे जैसे हैं, रहें मायेपर। मैं उनकी कह रहा हूँ जो कानून बनाते हैं। जो कानून बनाते हैं वे अगर हमलोगोंके दुःखका खयाल न करें तो अगली बार हम उन्हें वोट नहीं देंगे। वोट तो अपने ही हाथ है!"

इसी वक्त न्यायरत्न आकर विश्वनाथको बुला ले गये थे। वे बगलके ही कमरेमें थे और सब सुन रहे थे। बोले, 'भई विश्वनाथको अभी दुनियाका अनुभव नहीं है। तुम लोग उसके कहेपर कान न दो। पाँच जने मिलकर अपना भला-बुरा सोचकर जैसा समझो करो।'

विश्वनाथके चले जानेके बावजूद घोर तर्क-कोलाहलमें आखिर उन सबके हृदयकी निश्छल अभिलाषाकी ही जीत हुई—लगानकी बढ़ोतरी नहीं देंगे।

देबूने कहा, तो मुझे छुटकारा दो, मैं इसमें नहीं रहता।'

'क्या?'

"मेरा खयाल है बढ़ोत्तरी नहीं देंगे यह कहना ठीक न होगा, जो वाजिब है उससे ज्यादा नहीं देंगे यही कहना ठीक है। इसके लिए हड़ताल करनेकी जरूरत पड़े तो मैं तैयार हूँ।'

"लेकिन विशू बाबूने जो यह कहा है कि नहीं देनेका आन्दोलन करनेसे कानून पलट जायेगा?'

मुसकराकर देबूने कहा "न्यायरत्नजीने कहा न कि विशूको दुनियाका अनुभव नहीं है मेरा भी यही खयाल है। बाल-बच्चेवाली घर गिरस्ती है अपनी, अगर हम न्याय या बढ़ें कि बढ़ा हुआ लगान नहीं देंगे, तो किसीकी मुट्ठी भर भी जगह जमीन नहीं रह पायेगी। हाँ, यह हो सकता है कि उससे यह कानून बदल जाये।'

जगनने खड़े होकर कहा, "तुम्हारी यह बात तो डरपोक जैसी हुई। सभी जब हड़ताल करेंगे तो जमीन खरीदेगा कौन?"

"कौन खरीदेगा?"—हँसते हुए देबूने ककना तथा आसपासके बाबू भयाकी याद दिला दी, जक्शनके गद्दीवाले महाजनोंकी बात बता दी।

इसपर जगन भी चुप होकर बैठ गया।

आखिर सबने देबूकी ही बात मानी। लेकिन साथ ही यह भी तय हुआ कि यह बात अन्दरकी रहे। पहले नहीं देनेकी ही कही जायेगी।

शिबूदासको उस बाहर भीतरकी बातका पता था, इसीलिए वह बिनकी तरह जरा हँसा।

"हमारी तो कल जुम्मेकी नमाज है। मसजिदमें ही सब तय होगा।"

शिबूने पूछा, "और दौलत शेख? शेखजी राजी हो गया?"

दौलत शेख धमन्वा व्यापारी था धनी आदमी। बीते दिनोंके अनुभवसे दौलत शेखके बारेमें शिबूको सन्देह था। उसके अपने गाँवमें भी ठीक वही बात हुई। भले लोग हड़तालमें शामिल होनेको तैयार नहीं हुए। उनमेंसे ज्यादातर लोगोंने निजी तौरपर मामला-मुकदमा करनेकी सोच ली। किसी किसीने आपसी तौरपर बढ़ोत्तरा दे दी या देनेका निश्चय कर लिया। भले लोग चूँकि अपनेसे खेती नहीं करते इसलिए उन लोगोंने जमींदारकी शरण ली। बल्कि उत्तरी पहले ही दे देनेके नाते इनका नम्रता और अनुगतताका दावा भी है। ये सबके सब नौकरी पेशा, गरीब तथा भले गृहस्थ हैं।

रहमने हँसकर कहा, 'तेल और पानी कभी मिल सकते हैं, चाचा? छोड़ अलगसे मुकदमा लड़ना। वह इन बातोंमें नहीं है।'

कुसुमपुरके पास ही है दगुडिया। वहाँका तिनकौड़ा बड़ा जाबिर आदमी है। अपने इसी जाबिरपनके कारण वह करीब-करीब तबाह हो चुका है और अब दूसर लोगोंका खेत बटाईदारीमें जोतता है। शिवकालीपुरमें ही करनाथ एक बाबूका खेत जोतने आया था वह। बोला, "हमारे गाँवके सारे लोग अभी भी गुजुर-गुजुर कर रहे हैं। मन साफ कह दिया है, देना है सो दे, मैं नहीं दूँगा।

दूसरे ही क्षण वह हँसकर बोला 'कुल पाँच ही बीघा तो जमीन है। पाँच सौ बीघे जाते रहें पाँच बीघा बच रहा है। जाये, वह पाँच बीघा भी जाय। उसके बाद खरिया-चरगा समेटकर सब दिन बम-बम करके घर दूँगा।'

रहमने कहा "तुम सब दाँव-पेंच बाजना नहीं रखते—भैंसाकी तरह सींग मारना ही आता है। लड़ाई क्या सिर्फ बलकी ताकतसे होती है? दाँव ही

असल चीज है। अम्बुवाचीके दिन उस बार इतेसे जनाब अजीने तुम्हारे लगन ग्वालेको किस कदर देखते ही देखते दे मारा—देखा था?"

तिनकौडी बिगड उठा। वह तनकर खडा हो गया।

तिनकौडी अवल्का जमा गँवार है शरीरसे वैसा ही ताकतवर भी है। तिसपर नामी लठत है वह। रहमनके इस श्लेपसे वह उखड गया। वजह भी थी उखडनेकी। देखुडियावालोंमे कुसुमपुरके आम मुसलमान किसानोंकी शारीरिक शक्तिकी होड बहुत दिनोंसे चली आ रही है। देखुडियाके वाशिन्दे ज्यादातर मल्लावागदी है। इन मल्लावागदियोंकी ताकत बगालमें विख्यात है। तिनकौडी है तो सदगोप मगर उन मल्लावागदियोका नेतृत्व वही करता है। इलाकेमें उसके गावकी ताकत उसका घमण्ड है। तिनकौडीके उस घमण्डपर रहमने चोट की। शिवूदास परेशान हो उठा, कही दोनोंमे ठन न जाये। अचानक बायी तरफ देखकर उसे भरोसा-सा हुआ। बोला, 'चुप रहो तिनकौडी, चौधरीजी आ रहे है।'

अपनी खेतीकी देखभालके लिए उधरसे द्वारिका चौधरी आ रहा था। साल भरसे इस्तेमाल किया हुआ छाता खोले हाथमे लाठी लिये इस बूढे आदमीको इलाकेका हर आदमी दूरसे पहचान लेता है। और फिर सभी लोग उस श्रद्धा और सम्मान देते हैं। दूरसे ही उन्हें आते देख शिवूने तिनकौडीसे कहा, "चुप रहो चौधरीजी आ रहे है।"

महज एक पीढी पहले तक चौधरी जमींदार था, अब जमीदारी नही है। बहरहाल खेती-बारीका ही सहारा लिया है। वृत्तिके लिहाजसे किसान ही कहना चाहिए उन्हें। फिर भी चौधरी लोग, खासकर यह बूढा चौधरी आजतक साधारणसे कुछ अलगाव रखकर ही चलता है। लोग भी उसे कुछ विशेष सम्मानकी नजरसे देखते हैं।

नजदीक आकर चौधरीने अपनी आदतके मुताबिक मुसकराकर कहा, "क्यों भैया मिल जुलकर तम्बाकू पी रहे है सब?'

अपनी इज्जत बचाते चलनेके लिए चौधरी इसी तरह सबकी इज्जत करते थे। आप कहनेसे जवाबमे दुनियामें तुम कोई नहीं कह सकता। शिवदासने उठकर नमस्कार किया, "प्रणाम! तो अब चंगा हो गये आप?"

चौधरीने कहा, 'हाँ भैया हो गया! पापका भोग अभी भी बाकी है चंगा हो गया।' कुछ दिन पहले शिवकालीपुरके नये जमीदार श्रीहरि घोषकी एक पेड काटनेके बारमें देबूसे लडाई हुई थी। देबूको दवानेको गरजसे श्रीहरि उसके दागका लगाया हुआ पेड काट डालना चाह रहा था। उसका कुल्हाडीके सामने

तनकर देवूने बाधा दी। उस दंगमें दोनों पक्षोंको रोकते हुए चौधरी श्रीहरि घोषक लठतकी लाठीसे घायल होकर कई महीने बिस्तरपर लाचार पड़ा रहा। उस घटनापर सबने हाय-हाय की थी।

शिवूदासने कहा, "कलकी सभाके बारेमें सुना ?"

चौधरीने हँसकर कहा, "सुना! जगन डॉक्टर मेरे पास गये थे।"

व्यग्र होकर शिवूने पूछा 'क्या हुआ ?'

चौधरी चुप रहा। जवाब देनेकी ख्वाहिश नहीं थी। इस प्रसंगको वह टाल जाना चाहता था।

लेकिन शिवूने फिर टोका 'चौधरीजी ?

चौधरीने हँसकर कहा "मैं भया बूढ़ा आदमी ठहरा—उस युगका। आजके ये रवैये न तो मैं समझता हूँ, न ही मुझे बरदाश्त हैं। मैं इन बातोंमें नहीं हूँ।"

सुनकर सभी अवाक् हो गये। कुछ क्षण अशोभन मौनमें बीत जानेके बाद दूसरा प्रसंग छेड़नेके खयालसे चौधरीने हँसकर कहा "बारिश तो इस बार अच्छी है। शुरूमें ही फसल शुरू हो गयी। अब अन्त तक निबह जाये तो खैर समझूँ।"

रहमं शेख बातनेका कोई जरिया ढूँढ़ रहा था। अब मिल गया कि सलाम करके बोला 'सलाम चौधरी चाचा! अन्त तक नहीं निबहेगा यह पक्की बात जानिए।"

सलाम! अन्त तक नहीं निबहेगा, यह आप कैसे कह रहे हैं शेखजी ?

"पाप! पापके लिए कह रहा हूँ! अल्लाहकी दुनिया पापसे भर गयी। अमीरोंके कदमोंमें सारी दुनियाके लोग कुत्तेकी तरह दुम हिलाते हैं पापका कुछ बाकी भी रहा चौधरीजी ?'

'बात तो सही है। लेकिन अमीर और गरीब बनाकर तो अल्लाह ही भेजते हैं, शेखजी!'

'हाँ भैया। मगर अमीरोंके पर पालनेके लिए तो नहीं कहा अल्लाने! मसला अपनी ही लीजिए। कभी आप भी अमीर थे जमींदार थे। फिर मस्जिदका मुँह भूल गया, जो बँगला बेचकर खत्म हो गया। उधर इसके आप दंगा हलवाइनमें साथ नहीं दे रहे हैं। इसपर भला अल्लाह खुश होगा कि अन्त तक निबहेगा।'

चौधरी फिर भी हँसा। लेकिन कोई जवाब नहीं दिया। जरा देर चुपचाप गद्दा पकड़कर कड़ी बातपर बगलमें धरा हुआ बोला, 'खैर तो मैं चलता हूँ।'

धीरे धीरे राह चलते हुए उसाँस लेकर चौधरीने कहा, "हरि-नारायण, पार करो प्रभो!"

उसने यह कामना हृदयसे की। यह सही है कि रहमके व्यंग्यने उसे चोट पहुँचायी मगर वही एकमात्र कारण नहीं। पहलेसे ही वह जिन्दगीमें एक अस्वच्छन्दताका अनुभव कर रहा है। वह अस्वच्छन्दता दिन दिन जैसे और भी गहरी और भी प्रबल होती जा रही है। वह अपनेको वर्तमानसे हरगिज़ नहीं मिला पा रहा है। तौर-तरीके, मति-गति आचार विचार सब बदल गया। उसके पुराने मकान-जैसा सब-कुछ मानो टूटनेको तैयार है। मकानका चूना-बालू जिस तरह हर पल भुरभुराकर झड़ता जा रहा है, वैसे ही पिछले दिनोंका सारा कुछ झड़ता जा रहा है। लोग अब परकाल नहीं मानते गो-ब्राह्मणमें भक्ति नहीं रही बड़-बूढ़ोंकी इज्ज़त नहीं, राजा जमींदारके प्रति श्रद्धा नहीं, अखाद्य खानेमें भी हिचक नहीं। पुरोहितका बेटा साहबी फ़ैशनसे बाल बनवाकर चुटिया कटाकर क्या नहीं कर रहा है? कंकनाके चटर्जी परिवारका वह लड़का चमड़ेका व्यापार करता है। गाँवका कुम्हार भाग गया लुहारने कारबार उठा दिया, बजनियेने ढाक बजाना छोड़ दिया, डोम अब बाँस और ताड़के पत्तेकी चीज़ें नहीं देता, नाई अब धानके बदले हजामत नहीं बनाता। नल्में मिलावट, घीमें चरबी नमकमें कभी-कभी हड्डी निकल आती है। सबसे बुरी बात यह है कि आदमीसे आदमीका मेल नहीं रहा। आज हर आदमी आज़ाद है हर आदमी प्रधान है कोई किसीको नहीं मानना चाहता। रियायाकी यह हड़ताल कोई नयी बात नहीं पहले भी होती रही है मगर इस बार उसकी जैसी शुरुआत है वह उससे कितनी भिन्न है! पहले जमींदार जुल्म करता था गैरवाजिब दावा करता था तो हड़ताल होती थी। लेकिन जमींदारकी इस बारकी जो माँग है उसे लाख सोचकर भी चौधरी उसे गैरवाजिब कहकर एकबारगी नहीं उड़ा पाया। उसकी अक्लके मुताबिक़ जो बढ़ोत्तरीका हक़ जमींदारका हो गया है। क़ानूनके अनुसार बीस-तीस सालपर ज़मींदारको फसलकी बढ़ी हुई क़ीमतके औसतसे एक-एक बढ़ोत्तरी मिलनी चाहिए। अलबत्ता यह बढ़ोत्तरी एक निश्चित होना जरूरी है। माँग गैरवाजिब हो तो लोग यह जरूर कह सकते हैं कि जो उचित है उससे ज्यादा नहीं देंगे। लेकिन यह एकदम ही न देनेकी बात किस धर्म-बुद्धि, किस विचारसे कह रहे हैं लोग?

गुस्सेसे ही यह सवाल पूछकर चौधरी तुरत मन-ही-मन हँसा। धर्म बुद्धि? उसके पुराने मकानकी टूटे पलस्तरसे झाँकती इंटोंकी दीवारोंके समान धर्म बुद्धि गायब होकर, लोगोंमें लोभ, भूख और स्वार्थके ही दाँत प्रधान होकर

निकल आये हैं। धर्म-बुद्धि ? अगर इस खुदगर्जी और महज पेटपरायणतामें पेट ही भरता होता तो भी गनीमत थी ! आज कितनोंके घर रोटी चलती है ? जमींदारका घर खाली हो गया, खेतिहरोंके गोले तक धान नहीं पहुँचता सारा धान कुछेक महाजनोंके यहा जा पहुँचा है। छिरू पाल महाजनी करते-करते श्रीहरि घोष बन बैठा, जमींदारका गुमाश्ता बना और जमींदारोंका हिस्सेदार हो गया। वह अब इस जमानेको समझ नहीं पा रहा है। ऐसे समय समझ-बूझकर ही चलना चाहिए। हृदयसे भगवानको याद करके चौधरीने प्रार्थना की "पार करो, प्रभो !"

चारो तरफ पानी-ही-पानी हो गया था और ऊँचे खेतोंसे नीचे खेतोंमें कलकल करता हुआ उतर रहा था। आज भी आसमानमें घटाएँ घिरी थी। बीच-बीचमें थोड़ा-बहुत पानी बरस जाता था। चौधरी सँभलकर फिसलन भरी मेड़पर-से चला जा रहा था। अपने खेतपर खड़े होकर उसने देखा, बैलोंकी पीठपर मारका मोटी रस्सी-सा निशान पड़ा है। चौधरीको यो सहज ही गुस्सा नही आता है। लेकिन बैलोंकी पीठपर मारके निशान देखकर आज वह अचानक गुस्सेसे आग हो उठा। रहम दोस्तकी बातोंकी जलन और जीवनसे विरक्ति—निकलनेकी एक राहका मौका पाते ही आगकी लपट-सी निकल पड़ी। चौधरी पानी भर खेतमें उतर पड़ा और हलवाहेके हाथका पैना छीनकर बोला, "देखेगा ? देखेगा ?'

हलवाहा अवाक होकर बोला 'हाय राम ! क्या है मैंने किया क्या ?'

'दोना बैलोंको इस तरह मारा है ?

चौधरी पैनेको उठाये हुए था। किसीने पीछेसे आवाज दी—'हाँ हाँ, चौधरीजी !'

चौधरीने पलटकर देखा, देबू घोष। साथमें वार्डिंग-तेर्दिंग छोकरा एक युवक। शरमाकर चौधरीने पैनेको फेंक दिया। बोला "जरा देखो तो भया कमबख्तने किस बेरहमीसे मारा है। बेजोन जाव भगवती है ये !"

यह भद्र युवक हँसकर बोला, लेकिन उस आदमीका कहने खास भाई अन्तर नही है चौधरीजी ! अन्तर है तो सिर्फ इतना ही कि यह बेबोल नही है, भगवती नही है।'

चौधरी और भी शर्मिन्दा होकर बोला, सही कहते है ! सच ही बड़ी गलती होती मुझसे ! मगर आपको तो मैं पहचान नहीं सका ?'

देबूने कहा, "महाग्रामके न्यायरत्नके पोते हैं।"

चौधरीने झट बाँसोंकी खिचखिच मेड़पर ही सर टेककर प्रणाम किया। बाते

"अरे बाप रे बाप !—आज महाभाग्य अपना, आपके ही पुण्यसे आज मैं एक महा अपराध करते करते बच गया ।"

विश्वनाथ कई डग पीछे हट गया । हटकर बोला, "नहीं, यह क्या कर रहे हैं आप !"

चौधरीने अचरजसे कहा, "क्या ?"

"आप मेरे दादाकी उमरके हैं ! आपके इस तरहसे प्रणाम करनेसे न केवल शर्म आती है बल्कि अपराध भी लगता है ।"

"आप ऐसी बात कह रहे हैं ?"

"जी हाँ, मैं !—" कहकर विश्वनाथने चौधरीको प्रतिनमस्कार किया ।

आश्चर्यसे चौधरीकी बोलती बन्द हो गयी थी । इस इलाकेमें महागुरु जैसे पूजे जानेवाले न्यायरत्नके पोतेके मुँहसे ऐसी बात ! कुछ दिन पहले शिवकालीपुरमें यतीन बाबू नजरबन्द थे । वे भी ब्राह्मण थे । उन्होंने भी ठीक यही बात कही थी । लेकिन चौधरी उस रोज इस तरहसे चकित नहीं हुआ था । उसके भीतरके संस्कारको इतने दिनों तक ठेस नहीं लगी थी । उस रोज उसने अपने-आपको दिलासा दिया था—यतीन बाबू कलकत्तेके हैं । उनमें ऐसा स्वभाव अचरजकी बात नहीं । लेकिन न्यायरत्नके पोते जो इस इलाकेके भावी महागुरु हैं, अगर वे स्वयं इस तरहसे समाजका बाँध तोड़ दें तो गति क्या होगी समाजकी ?

"मैं कहने आया था कि कल आप... यहाँ आयेंगे, चौधरीजी !"

"हैं ?"—चौंककर चौधरीने पूछा ।

"कल हम लोग आपके यहाँ आयेंगे !"

"यह अपना सौभाग्य होगा । मगर किसलिए ? इस्तहारके बारेमें ?"

"जी हाँ !"

"मैं इस्तहार-वस्तहारमें नहीं पड़ता भैया ! मुझे माफ करो ! —इतना कह-कर उसने चलना शुरू कर दिया ।

देबूने पीछेसे पुकारा— चौधरीजी !"

चलते-चलते हाथ हिलाकर चौधरीने कहा, "नहीं भैया !"

विश्वनाथने हँसकर कहा, "चलो, फिर देखा जायगा । उनका प्रणाम जो नहीं लिया सो वे बिगड़ उठे हैं ।"

देबूने कहा, "बताओ भला यह बात बोलकर ही तुम्हें क्या लाभ हुआ ? और उनका प्रणाम भी क्या न स्वीकार करोगे ? तुम ब्राह्मण हो !"

"मैंने जनेऊ फेंक दिया है, देबू !"

"जनेऊ फेंक दिया है ?'

"फेंक ही दिया है समझो। बक्समें रखता हूँ। जब घर आता हूँ तो निकालकर पहन लेता हूँ। दादाजीको ठेस नहीं लगाना चाहता।"

'लेकिन यह तो धोखा देना है। छि !'

विश्वनाथने हँसकर कहा, "वह चर्चा फिर होगी। अभी चलो।"

"नहीं।" —देबूने दृढ़ताके साथ कहा, 'पहले तुमसे इसी बातकी मीमांसा हो ले। उसके बाद ही दोनों एक साथ कदम बढ़ायेंगे। या तो तुम्हीं इस हड़तालका जिम्मा लो, मैं अलग हट जाता हूँ या फिर तुम्हीं हट जाओ।'

'यह बात तुम्हीं सोच देखो। तुम जो कहोगे मैं वही करूँगा।' —विश्वनाथ अब भी हँस रहा था।

देबू विश्वनाथकी तरफ ताकता हुआ खड़ा रहा, कोई जवाब न दे सका। एन वक्तपर उनके पास आकर खड़ा हो गया रहम शेख— 'आदाब देबू बाबू !'

चिंतित चेहरेसे जरा सूखी-सी हँसी हँसकर देबूने कहा, "आदाब चाचा !"

रहमने कहा, "हल छोड़कर आ नहीं पा रहा था और तुम लोगोंने अच्छा गजर-बजर लगा दिया। खैर हमारी बस्तीमें चल रहे हो ?"

"जाऊँगा चाचा। आज ही जाऊँगा।'

'हाँ, जाना। कल गुजरात है, जुम्मेका नमाज। मसजिदमें ही सब तय तमाम हो जायगा। तुम बल्कि आज ही शामको आ जाओ। भूलना मत।'

'अच्छा !' —देबू जरा हँसा।

'और हाँ, सुन लो। यह जो न्यायरत्नका पोता है न, उसे मत ले जाना। हम लोगोंका ताहिर मियाँ—नासिर मियाँको जानते हो न, कलकत्तेमें कॉलेजमें पढ़ता है ? वह कह रहा था—ठाकुरका पोता कम्युनिस्टोंका हिमायती है। इधर गया हमारा इस्लाम मौलवी बोल रहा था—वह निरहमन ठाकुर है। उनको तुम लोग मानते हो, हम क्यों मानें ?'

'नहीं, सो तुम्हें मालूम नहीं है रहम चाचा, अपना विशु भाई वैसा नहीं है।' —देबू बड़ा अप्रतिभ हो गया।

रहम बड़ा जबरदस्त [illegible] ताड़नेवाला है। अन्दाजसे विशुको पहचानकर ही उसने यह बात कही थी। अबकी वह हँसकर बोला, 'ओ, शायद तुम ही उनके पोते हो ?'

इसपर विशु बोला, 'हाँ !'

"तुम मत जाना ठाकुर, मत जाना !"—कहकर वह अपने खेतकी तरफ लौटा।

विश्वनाथने हँसकर कहा, "फैसला हो गया देबू भाई ! मैं चला !"

देबू कातर होकर विश्वनाथकी ओर ताकने लगा।

विश्वनाथने मुसकराते हुए कहा, "जरूरत पड़नेपर खबर देना, मैं तुरंत आ जाऊँगा।"

रिमझिम बारिश शुरू हो गयी। उसी बारिशमें दोनों एक दूसरेसे थोड़े ही फासलेमें ओझल हो गये।

रहमने सत्यको जाहिर करके मनकी खुशीसे हल जोतते हुए गाना शुरू कर दिया—

हसन हुसेन यहा दो भाई, इस माटी पर जनमे,
हुआ न उनके जैसा बन्दा खास खुदा का कोई

तीन

महग्राम या महाग्राम कभी बड़ा सम्पन्न गाँव था। इंट और माटीके बहुतर खण्डहर गाँवकी प्राचीनता और खुशहालीके प्रमाणस्वरूप आज भी दिखाई देते हैं। आकारमें गाँव आज भी बहुत बड़ा है, पर उसकी आबादी इधर उधर बिखरी हुई है। बीच-बीचमें बीस-पच्चीस, यहाँतक कि पचास-साठ तक घर बसने लायक खाली जगह पड़ी हुई है। वह परती खजूर, बेर, सिहाड़, अकवन आदिकी जंगल-झाड़ीसे भर गयी है। यह परती कभी आबादी भरा टोला थी। आबादी नहीं रही, मगर दो चार टोलोंका नाम अभी भी जिन्दा है। जुलाहा और धोबी टोलामें एक भी घर नहीं, पाल टोलेमें दो घर कुम्हारोंके रह गये हैं। दाँ टोलेमें एक समय दाँ उपाधिवाले हिन्दू रेशमकी दलाली करके धनी बने थे। रेशमके कारोबारके ठप पड़ते ही उनकी दौलत गयी, दाँ लोग भी नहीं रहे, उनके पक्के मकानोंकी टूटी बुनियादोंका चिह्न ही केवल रह गया है। दाँ टोलेको पार करके विश्वनाथ अपने घर पहुँचा।

न्यायरत्न—शिवशेखरेश्वर न्यायरत्न—इस इलाकेके बड़े ही मान्य व्यक्ति

हैं। महामहोपाध्याय पण्डित। यह खानदान बहुत दिनोंसे पाण्डित्य और निष्ठाके लिए मशहूर है। देश-देशान्तरसे उनके टोलमें छात्र आया करते थे। टोल अभी भी है, न्यायरत्न-जैसे महामहोपाध्याय गुरु भी हैं, लेकिन आजकल विद्यार्थियोंकी संख्या बहुत कम है। घरके पहले ही नारायणशिलाका जो कच्चा घर है, उसीके सामने अठचल्लियेमें टोल चलता है। एक तरफ एक लम्बे घरमें छात्रोंके रहनेका इन्तजाम। घर बहुत बड़ा, देखनेमें सुन्दर और मनोरम न होते हुए भी रहनेकी कोई असुविधा वहाँ नहीं है। पिछले दिनों इसमें बीस छात्र तक रहते थे। आजकल सिर्फ दो हैं। विश्वनाथ जब उस अठचल्लियेमें पहुँचा तो उन छात्रोंमेंसे भी कोई नहीं था। न्यायरत्नने उन दोनोंको ही खेतोंकी निगरानीके लिए भेज दिया था। केवल एक कुत्ता न्यायरत्नके बैठनेकी चौकीपर पोटली बना बैठा बरसातमें बड़े आनन्दका उपभोग कर रहा था। यह देखकर विश्वनाथ बड़ा बिगड़ गया। दादाजीपर उसे बड़ी भक्ति थी, और उस दादाजीकी कुरसीपर आकर बैठा है एक रोआँ झड़ा हुआ कुत्ता! इधर उधर देखा। कुछ न मिला तो हाथका छाता सँभालकर ही पीछेसे आकर उसकी तरफ बढ़ा। ठीक इसी वक्त अन्दर घरके दरवाजेपर न्यायरत्नकी आवाज सुनाई पड़ी—"भो भो राजन्, आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः।"

मुँह घुमाकर दादाजीकी तरफ देखते हुए विश्वनाथने कहा, "यह कम्बख्त अगर आपका इच्छाधारी आश्रममृग हो तो मैं ऋषिवाक्यको भी न मानूँगा। कमीना कुत्ता!"

हँसकर न्यायरत्नने कहा, "वह मेरा भगानीचरण है।"

अपना नाम सुनकर भगाजानने मुँह उठाया। छत्रपाणि विश्वनाथको देखकर भी उसने हिलनेका नाम न लिया, सूखी लाठी-सी दुमको हिला हिलाकर चौकीपर पट-पट आवाज करने लगा। न्यायरत्न उसकी तरफ बढ़े तो वह चित हो गया और अपनी चारों टाँगें ऊपरको उठा दीं। अबकी विश्वनाथसे हँसे बिना न रहा गया। न्यायरत्न हँसकर बोले, 'एक ही चोटमें तो मर जाता—इस कदर छाता उठाया था तुमने!"

विश्वनाथने मारनेके लिए उठाये हुए छातेको उतारकर कहा, "छाता माथा बचानेके लिए है, दादाजी! इसकी सींक और डण्डा कितने ही मजबूत क्यों न हों, उनसे सिर नहीं तोड़ा जा सकता। इससे उसका सिर नहीं टूटता, मुझे एक डण्डा कमाना ही चाहिए था। खैर—यह कम्बख्त आपके पास आया कहाँसे? क्या तो नाम बताया आपने?"

"मैंने उसका नाम भगानीचरण रखा है। कहींसे आया और चला आया,

यह परिचय उसके नामसे ही जुडा है। मगर इस बदलीम तुम गये कहा थे ?"

"गया था देवूके साथ। बताता हूँ! जरा कुरता-बनियान उतार आऊँ।"

विश्वनाथ अन्दर चला गया।

देवूका नाम सुनते ही न्यायरत्नका चेहरा जरा गम्भीर हो उठा, लेकिन एक पलके ही लिए। दूसरे ही क्षण वे स्वाभाविक प्रसन्न मुद्रासे अन्दर चले गये।

अन्दर जाते ही उन्ह नारी-कण्ठ सुनाई पडा, "पूछो मत, इस बुढियासे तो मेरी नाकमे दम आ गया ह। कानकी बहरी, बकझक भी करो तो सुनती नही। एक बार कपडे ले जाती ह तो पन्द्रह दिनसे पहले देनेका नाम नही। जवाब देते भी माया होती है।

विशने कहा, तो क्या इसीलिए ऐसे गन्दे कपडे पहने रहोगी ? छि !"

ठीक ही कहते हो। लोगोके सामने आनम शम लगती ह।"

न्यायरत्न हँसते हुए आकर बोले—

'सरसिजमनुविद्ध शैवलेनापि रम्य
मलिनमपि हिमाशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।

सखि शकुन्तले मधुराणा आकृतीना मण्डन शोभन निमित्त न! तुम्हारे सुन्दर शरीरपर यह मैला कपडा ही अनोखा शोभन हो उठा ह। तुम्हारे दुष्यन्त उसीसे मुग्ध हुए ह।

विश्वनाथ अपनी स्त्रीसे बात कर रहा था। सुन्दरसे बच्चेको गोदीमें लिये तरुणी स्त्री रसोईके बरामदपर खडी थी। वह भी शरमाकर जल्दी-जल्दी रसोइ में चली गयी। विश्वनाथ भी हँसते हँसते बाहर चला गया।

सून आँगनमें खडे-खडे न्यायरत्न फिर गम्भीर हो उठे। लेकिन लडखडाते लडखडाते नन्हा मुन्ना बाहर आया। खूबसूरत बच्चा! अग-अगसे एक मनोरम लावण्य टपक पडता हो मानो। साल भरका होगा। उसने आकर कहा, 'दा जी!'

दा जी यानी दादाजी।

न्यायरत्नने पोतेसे भाईका नाता जोडा था। उस नाते परपोतेको भाई, बापा कहते थे।

बच्चन फिर कहा दा जी!"

क्षणभरमें न्यायरत्नका चहरा हँसीसे भर गया। उन्होने बाँहें फैलाकर मुन्नेको अपनी गोदीमें उठा लिया। कहा, बापो!

"फिर दाओ पित्र! —मतलब फिर फिरसे गाओ। न्यायरत्नके श्लोक पढनेमें जो एक सुर होता है बच्चने सुनते-सुनते उसके माधुर्यको पहचान लिया

था। एक बार सुनकर उसे तृप्ति नहीं हुई, इसीलिए उसने कहा 'फिर दाओ'। न्यायरत्नने बच्चेके आग्रहको टाला नहीं, फिरसे श्लोकको पढ़ा। बच्चेका नाम है अजय। अजयने फिर कहा—'फिर दाओ।'"

उन्होंने बच्चेको छातीसे लगा लिया। आनन्दसे उनकी आँखोंमें आँसू भर आये। उन्हें लगा—यह वही है! खोया हुआ धन लौट आया है।

न्यायरत्नका खोया हुआ धन—उनका इकलौता बेटा शशिशेखर विश्वनाथ-का बाप। सुडौल सुन्दर कान्तिमान शशिशेखर ऐसे ही प्रखर बुद्धिके थे। उनके साथ-साथ दर्शनशास्त्रमें उन्होंने गहरी विद्वत्ता प्राप्त की थी। न केवल हिन्दू दर्शन बल्कि बौद्धदर्शन—यहाँतक कि पिताजीसे छिपाकर अंगरेजी सीखी और पाश्चात्य दर्शनकी भी जानकारी प्राप्त की। लेकिन यही उनके सर्वनाशका कारण हुआ।

उस समय शिवदासेश्वर न्यायरत्न आदमी ही दूसरे थे। पुरातन युग और सनातन धर्मकी रक्षाके लिए महाकालके तपोवनके पहरेदार ब्रह्मचारी तपस्वी नाद गगन त्यागी बनाये और तर्जनी उठाये ही रहते थे। इस नाते वे म्लेच्छ भाषा और विचारके विरोधी थे। शशिशेखरने भी अपने अंगरेजी ज्ञानकी बात उनसे छिपा रखी थी। लेकिन एक दिन अकस्मात् भण्डा फूट गया। उस समय जिलाधिकारी एक अंगरेज थे। भले आदमी थे वो सर० सी० एस०। अफसर लेकिन राजनीतिके बजाय विद्या-अनुशीलनका उन्हें ज्यादा अनुराग था। अपने देशमें दर्शनविद्याभ्यासके व दर्शनके गुणी छात्र थे। भारत आनेके बाद वे भारतीय दर्शनकी ओर आकृष्ट हुए थे। इस जिलेमें आये तो उन्होंने महामहोपाध्याय शिव-दासेश्वर न्यायरत्नका नाम सुना और एक दिन खुद उनके दर्शनको जा पहुँचे। साहबके साथ जिला-स्कूलके हेडमास्टर थे। दुभाषियेका काम करनेके लिए साहब हेडमास्टरको साथ लेते आये थे। शशिशेखर उसी समय नदी किनारे स्नान करके अपने घर लौटे थे। न्यायरत्न साहबकी आगत-स्वागतमें बात कहना न सके। यदि शशिशेखरको तो स्वागतकी अति उत्कंठा भी न लगी। मगर वे चुप ही रहे। साहब भी जरा सकुचाते गये थे। हेडमास्टर साहब बोले, 'आप घबराइये ना। न्यायरत्नजी साहब यहाँ बड़े जिलाधिकारीकी हैसियतसे नहीं आये हैं, ये आये हैं आपसे परिचय-ज्ञान करने।'

न्यायरत्नने ईश्वर कहा, परिवारकी खुशियाँ ही महत्वपूर्ण हैं। और यह मेरा आखिरी धन है। राजाके दरबारमें जैसा सम्मान पण्डितोंका मिलता है

पण्डितके यहाँ भी वैसा ही सम्मान राजा या राजपुरुषका होना चाहिए। यह मेरा कर्तव्य है।"

इसके बाद बातचीत शुरू हुई। अन्तमें साहबने खड़े होकर हँसते हुए अंगरेजीमें हेडमास्टरसे जाने क्या कहा। हेडमास्टरसे न्यायरत्नको उसका अनुवाद सुनाये बिना न रहा गया। बोले, "साहब क्या कह रहे हैं मालूम है?"

न्यायरत्नने कोई आग्रह नहीं दिखाया। सिर्फ मुसकराये।

हेडमास्टरने कहा, 'ग्रीक वीर सिकन्दरने हमारे यहाँके एक योगीको देख कर कहा था—मैं अगर सिकन्दर न होता तो भारतका योगी होनेकी कामना करता। साहब भी ठीक वही बात कह रहे हैं। कह रहे हैं—विलायतमें पैदा नहीं हुआ होता तो मैं शिवशेखरेश्वर-जैसा होकर भारतमें जन्म लेनेकी कामना करता।

न्यायरत्नने हँसते हुए कहा, "मेरा जन्म ऐसे ब्राह्मण कुलमें न भी हुआ होता तो भी मैं इसी देशमें कीड़ा पतिंगा होकर पैदा होनेकी कामना करता, और कहीं जन्म लेनेकी चाह नहीं करता।"

न्यायरत्नकी बातका मतलब सुनकर साहबने हँसते हुए हेडमास्टरसे अँगरेजीमें कहा, 'हीन भावनाका यह एक अजीब रूप है। यह मानो भारतीयोंके स्वभावमें है।"

हेडमास्टरका चेहरा सुर्ख हो उठा। लेकिन साहबकी बातका विरोध करनेकी उन्हें हिम्मत नहीं हुई। न्यायरत्नने अँगरेजी नहीं समझी, पर बोलनेवालेके हँसनेके ढंग और बातकी ध्वनिसे उन्होंने व्यंग्यका स्पष्ट अनुभव किया। फिर भी वे चुप बैठे रहे। लेकिन शिवशेखर स्पष्ट स्वरमें तेज तीखेपनसे अँगरेजीमें ही बोल उठे, "नहीं, यह हीन भावना नहीं है। यह उसके और भारतीय मनीषियोंके अन्तरका विश्वास है। आपकी पश्चिमी विद्या मनके सिवा और कुछको नहीं समझती—विश्वास नहीं करती। हम मनकी सीमाके परे अन्तर और आत्माको मानते हैं। मन और चित्तको अतिक्रम कर आत्माको पानेकी साधना ही हमारी साधना है। हमारी आत्माको मन नहीं चलाता है, मनको आत्माके इशारेपर बालककी तरह चलना पड़ता है। इसलिए आप लोगोंके मनोविश्लेषणसे भारतके साधक मनीषियोंके सम्बन्धमें विचार मूर्खताके सिवा और कुछ नहीं।'

साहब बारीक भरी निगाहसे शिवकी तरफ ताकने लगे। हेडमास्टर डर गये। राजपुरुषकी प्रशंसाकी मदिरा भी उन्हें भरोसा नहीं। न्यायरत्न अचम्भेमें आकर पोतेको देखने लगे—आखिर शिव म्लेच्छ भाषामें आ गया! शिवने हारकर म्लेच्छ भाषा!

इसीपर पिता-पुत्रमें विवाद हो गया।

न्यायरत्न कालधर्मको शिवके तपोवनके ऋतुचक्रके आवर्तनकी नाईं दूर रखते हुए सनातन महाकाल धर्मको जकड़े रहना चाहते थे। लेकिन उन्होंने अचानक ही यह देखा कि जाने कब किस घड़ी अकाल वसन्तकी नाईं कालधर्मने गड़बड़ी पैदा कर दी है। खुद उन्हींके यहाँ शशिके माध्यमसे म्लेच्छ भावधारा सदासे चले आते हुए महाकाल धर्मको आघात करनेपर आमादा है। और दूसरी ओर शशिशेखर एकाएक इस तरहसे खुल जानेके कारण बेफिक्र होकर आत्म-विश्वासके साथ अपनी संस्कृतिके अनुसार चलनेको कमर कसे तैयार हो गये।

परिणाम बड़ा भयंकर हुआ। न्यायरत्न शूलपाणि नन्दीकी तरह कठिन और कठोर हो गये। अपनी जीविका स्वयं ही कमानेके लिए शशिशेखरने घर छोड़ दिया। न्यायरत्नने रोका नहीं। लेकिन खानदानको कायम रखनेके लिए बेटा पतोहूको नहीं ले जाने दिया। उन्होंने संकल्प किया कि शशिने संस्कृतिकी जिस धाराको ठेस पहुँचायी है अपने पोतेको वे सब प्रकारसे उसका संस्कार करने योग्य बनायेंगे। इस घटनाकी चरम परिणति साल भर बाद घटी। पण्डितोंकी एक सभामें शास्त्र विचारके सिलसिलेमें बाप-बेटेमें खुला विरोध आरम्भ हो गया। शशिशेखरकी वे दमकती ऑखें काँपते होंठ और प्रतिभाका स्फुरण न्यायरत्नकी नजरमें आज भी तैर जाता ह। आँखें गीली हो जाती हैं।

सभा खत्म हुई तो बापने बेटेसे कहा, 'आजसे मैं यह समझूँगा कि मैं पुत्रहीन हूँ। जो सनातन धर्मपर चोट पहुँचानेकी कोशिश करता है वह धर्महीन है। धर्महीन बेटेकी मौतसे बढ़कर दूसरी कोई मंगल-कामना मैं नहीं करता।'

शशिकी आँखें लहक उठीं। बोले 'इसीसे क्या आपके सनातन धर्मकी रक्षा होगी?'

"होगी।'

न्यायरत्न उसी रोज पुत्रहीन हो गये। शशिशेखरने आत्महत्या कर ली।

भीषण शोकसे हारकर न्यायरत्न कुछ समयके लिए मानो गुम-सुम से हो गये। मन्वन्तर जलाकर महाकालके शान्त हो जानेके बाद जैसी दशा धरतीकी हुई थी—न्यायरत्नकी भी ठीक वैसी ही दशा हुई। उसके बाद एक दिन अचानक उन्होंने महाकालका आविष्कार किया—ठीक नगेन्द्र गिरिनन्दन पत्थर बरसाकर महाकालका आविष्कार करने लगा हो! मानो उन्होंने कालकी परिवर्तनशीलतामें महाकाल-की लीलाका प्रथम प्रत्यक्ष किया। उस लीलामें सतीके पति महाकाल गौरीके पति हैं। लेकिन क्या उससे लीलाका अन्त हुआ है? न्यायरत्न कभी यह विचार करते थे। लेकिन आज उन्होंने यह अनुभव किया कि सती गौरीरूपा

महाशक्तिने कितने नये रूपोंसे महाकालका वरण किया है, लेकिन उस लीलाको प्रत्यक्ष कर सकने जैसी दिव्यदृष्टिवाले व्यासदेवने प्रकट होकर फिर नये पुराणकी रचना नहीं की।

पढ़नेकी उम्र होते ही उन्होंने विश्वनाथसे पूछा था, "भैयाको कहाँ पढ़नेका मन है? मेरे पास कि कलकत्तेके स्कूलमें?"

छह-सात सालके विश्वनाथने कहा, "घरमें तुम्हारे पास पढ़ूँगा, दादा! और बादमें स्कूल जाऊँगा।"

न्यायरत्नने वही इन्तजाम किया। वही विश्वनाथ आज एम० ए०में पढ़ रहा है। न्यायरत्नकी स्त्री चल बसी, पतोहू—विश्वनाथकी माँ भी नहीं रही। न्यायरत्नने विश्वनाथका ब्याह करके गिरस्ती बसायी। और शालग्रामको प्रणाम करके मुग्ध दृष्टिकी नाईं उसके भविष्यकी तरफ देख रहे हैं।

लेकिन सो भी आज दो-एक बार उनका चेहरा गम्भीर हो उठा, भवें सिकुड़ीं। विश्वनाथ यह कर क्या रहा है? यहाँ इन घरेलू मामलोंमें अपनेको क्यों उलझा रहा है? इस चिन्तासे छुटकारा पानेके लिए ही वे कमरेमें जाकर पोथी लिये बैठ गये।

सारी दोपहरी वे सोचते रहे, लेकिन निश्चिन्त और निर्विकार न हो सके। तीसरे पहर पोतेके कमरेके सामने जाकर आवाज दी, "विशू!"

अन्दरसे नन्हें अजयने जवाब दिया, "दादाजी! मोरी उर्वा!" मानो गोदी चढ़कर बाहर ले चलो—कहाँ!

हँसते हुए न्यायरत्न अन्दर गये। देखा विश्वनाथ नहीं है। अजयको उन्होंने गोदीमें उठा लिया। पोतेकी बहूसे पूछा, "कहो शकुन्तले! राजा दुष्यन्त कहाँ गये?"

हँसकर घूँघटको जरा और खींचती हुई जयाने कहा, "क्या पता कहाँ गये!"

अजयको चूमकर न्यायरत्नने एक लम्बी उसाँस ली। कहा, "शकुन्तले, कन्यादानका अंगूठा जतनसे बचाना बेटी!" और इतना कहकर अजयको उसकी गोदमें देकर वे वहाँसे निकल आये।

नाट्य-मन्दिरकी ओरसे उन्होंने पुकारा, "विश्वनाथ!"

विश्वनाथ नाट्य-मन्दिरमें ही था। नाम लेकर पुकारनेसे वह चौंका। दादाजी उसे भैया या विशू कहकर पुकारा करते हैं या फिर संस्कृत काव्य नाटकोंके

नायकोंके नामसे—कभी राजन्, कभी राजा, कभी दुष्यन्त, कभी अग्निमित्र आदि—जब जैसा उन्हें जँचे। विश्वनाथ कहकर दादाजीने कभी उसे पुकारा हो, याद नहीं आता। चौंककर उसने अदबके साथ कहा "जी! मुझे बुला रहे हैं?"

"नायरत्न बोले, हाँ बहुत व्यस्त हो क्या?"

आज न्यायरत्न एकाएक विचलित हो पड़े थे। नतिनीकी आत्महत्या कर लेनेके बादसे वे निरासक्त रहनेकी कोशिश करते आये हैं। पत्नीकी जुदाईपर आँखोंसे एक बूँद भी आँसू नहीं बहाया, यहाँतक कि मनके किसी छिपे कोनेमें भी अपने जानते तिल भर पीड़ाको जगह उन्होंने नहीं दी। उसके बाद पतोहू चल बसी। उस दिन भी उन्होंने अविचल रहकर ही अपना कर्तव्य किया था। किन्तु आज एकाएक चंचल हो उठे। यहाँ रमतामें हड़तालका आन्दोलन हो रहा है—यह खबर उसे कलकत्तेमें रहते हुए कब मिली? साफ जाहिर है कि वह रमयाशाके मौकेपर तो आया है, मगर उसका असली मुख्य उद्देश्य यह आन्दोलन है। दंगा-फसादके बारेमें वे अनजान नहीं हैं। राजनीतिक आन्दोलनोंकी जानकारी उन्हें रहती है। दोनों अन्तिकारी आन्दोलन किस प्रकारसे धीरे धीरे जनसाधारणके बीच फैल रहा है, उन्होंने यह भी गौर किया है। इसीलिए देबू घोषके उसका संग-साथ देखकर वे परेशान हो उठे हैं। अकस्मात उन्होंने ऐसा अनुभव किया कि उनकी इतने दिनोंकी निरासक्तिका मुखौटा मानो खुलकर गिर गया। अन्दरकी आसक्ति नये जन्मने उनकी निरासक्तिके आवरणको पुराना और जर्जर कर दिया है।

न्यायरत्न कुछ देर तक पोतेके मुँहकी ओर ताकते रहे। उसके बाद धीरे धीरे पूछा "बड़ी बात कहकर कोई लाभ नहीं भया, मैं सीधी—साफ बात ही कहना चाहता हूँ। रमतोंकी इस हड़तालसे तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? देबू घोषके इस हंगामेकी तुम्हें खबर ही किसने दी?"

विश्वनाथने हँसकर कहा "आजकल तो दुनियाकी बातें यहीं दबाकर, हजारों मील दूरकी यह सब कुछ तुरन्त बताने लगती है। और कलकत्तेके अखबारोंमें इनका नाम खबरें छपता है। इसके सिवा आप तो जानते ही हैं कि देबू मेरा सहपाठी है।"

"मन तो कह ही दिया विश्वनाथ कि मैं सीधी बात कह रहा हूँ। जवाबमें तुम्हें भी सीधा ही कहनेका अनुरोध कर रहा हूँ। और मेरा ख्याल है कि कम-से-कम मेरे सामने तुम सत्यको छिपाने नहीं हो।"

न्यायरत्नका स्वर हाल-फिलहाल गहरा और गम्भीर हो उठा था। विश्वनाथने दादाजीकी ओर निहारा। देखा, उनका चेहरा तमतमा रहा है। बहुत पहले

न्यायरत्नका यह चेहरा देखनेसे इलाकेके लोग भीतर ही भीतर काँप उठते थे। उनके विद्रोही बेटे शशिशेखर तक उनकी ऐसी सूरतके सामने नजर मिलाकर बात नहीं कर सकते थे। उन्होंने पितासे बगावत की, तर्क किया, लेकिन सिर झुकाकर माटीकी तरफ ताकते हुए। उस चेहरेकी ओर देखकर विश्वनाथ एक क्षणके लिए हक्का-बक्का हो गया। न्यायरत्न फिर बोले, "मेरी बातका जवाब दो भाई!"

विश्वनाथने धीमेसे हँसकर कहा, "आपके सामने मैंने कभी झूठ नहीं कहा। झूठ कहूँगा भी नहीं। यहाँ, यानी शिवकालीपुरमें एक राजबन्दी था, मालूम है? जिसे कई दिन पहले यहाँसे हटा दिया गया है? यह खबर उसीने दी थी।"

"उससे तुम्हारी जान-पहचान है?"

"है।"

"तो"—एकटक पोतेकी ओर जरा देर ताकते रहकर न्यायरत्नने कहा, "मतलब यह कि तुम लोग एक ही दलके हो?"

"कभी था। अब हमने अलग मत, अलग पथ अपनाया है।"

न्यायरत्न देर तक चुप रहे, फिर बोले, "तुम लोगोंका मत, तुम लोगोंका पथ कौन-सा है मुझे समझा सकते हो विश्वनाथ?"

उनकी ओर देखते हुए विश्वनाथने कहा, "मेरी बातसे आपको तकलीफ़ हुई दादाजी?"

"तकलीफ़?"—न्यायरत्न जरा हँसे। फिर बोले, "दुःख-सुखसे परे होना सहज साधनाका काम नहीं है भाई! तकलीफ कुछ हुई जरूर!"

"आपको तकलीफ हुई दादाजी, मगर मैंने तो कोई अन्याय नहीं किया है! दुनियामें जो लोग रो-पीटकर, सोकर जिन्दगी गुजार देते हैं, मैं उन-जैसा नहीं होना चाहता, इसीके लिए आपको तकलीफ है?"

"दुःख नहीं पाऊँगा, सुखका अनुभव नहीं करूँगा—मैंने यही संकल्प तो शशिके मर जानेपर किया था विश्वनाथ! लेकिन तुम्हारा ब्याह करके जयाको जिस दिन अपने घर ले आया, आज लगता है, उसी दिन एकाएककी याद भुलाकर आनन्दका रस पिया था। उसके बाद आया—अजो-अजय। आज देख रहा हूँ कि शशिके मरनेपर दिलका जो पत्थर था वह टूटकर चूर-चूर हो गया है। आज मुझे जया और अजयके लिए चिन्ता और दुःखकी सीमा जो नहीं है!"

विश्वनाथ चुप रहा।

न्यायरत्न भी जरा चुप रहे। उसके बाद बोले "अपने आदर्शकी बात तो मुझे नहीं बतायी, भाई।"

"सच ही आप सुनना चाहते हैं दादाजी?"

"हाँ, चाहता हूँ।"

विशूने आदर्शकी बात कहनी शुरू की। न्यायरत्न चुपचाप सब सुनते गये, एक शब्द भी न कहा। रूसकी क्रांति और उस देशकी आजकी अवस्थाका वर्णन करते हुए विश्वनाथने कहा "हमारा यही आदर्श है, दादाजी। साम्यवाद।"

न्यायरत्न बोले, "हमारा धर्म भी तो असमानताका धर्म नहीं है विश्वनाथ! जहाँ जीव वहाँ शिव, यह बात तो हमारी ही है, हमारे ही दर्शनकी उपलब्धि है।"

विश्वनाथने हँसकर कहा "मैं आपके साथ काशी गया था दादाजी। सुना था, काशी शिवमय है। देखा, बात सही है। विश्वनाथजीसे लेकर मन्दिरमें, मठमें, घाटमें, बाटमें, ताखेपर शिवका अन्त नहीं। अनन्त शिव। लेकिन व्यवहारमें पाया, विश्वनाथजीके लिए विराट राजसिक व्यवस्था है—भोगमें, शृंगारमें, विलासमें, प्रसाधनमें—विश्वनाथजीकी व्यवस्था विश्वनाथजी-जैसी ही है। और फिर ताखेपर रखे शिवके लिए देखा—दो-चार अरवा चावल एक बेलपत्ता। अपने यहाँके जहाँ जीव, वहाँ शिवकी व्यवस्था ठीक वैसी ही व्यवस्था है। इसीलिए तो यहाँ-वहाँ बिखरे पड़े छोटे मोटे शिवोंके साथ विश्वनाथजीको मिलाना यह अभियान है हमारा।"

"छोड़ो! धर्मका मजाक न करो, उससे अपराध होगा।"

"अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र ही हमारा सर्वस्व है दादाजी, धर्म—"

"बोलो मत विश्वनाथ, उच्चारण मत करो!"

न्यायरत्नके कण्ठस्वरसे विश्वनाथ अबकी चौंक उठा। उनके तमतमाये चेहरेपर इस बार जैसे आगकी दमक फूट उठी थी। बहुत-बहुत दिनोंके बाद ज्वालामुखीकी शीतल गहराईसे मानो सिर्फ उत्ताप ही नहीं, प्रकाशमय इंगित भी क्षण-क्षण झाँक रहा था।

"नारायण-नारायण!"—कहकर न्यायरत्न उठ खड़े हुए। बहुत दिनोंके बाद उनके खड़ाऊँकी आवाज सन्त-सी बजने लगी। ठीक इसी वक्त अजयकी माँ भी लिए जया घर और नाट्य-मन्दिरके बीचवाले दरवाजेपर आकर बोली, "दादा-पोतेमें तो खूब गप्पें हो रही हैं! इधर साँझ जो हो आयी!"

चार

पाँच गाँव—महाग्राम, शिवकालीपुर, देखुड़िया, कुसुमपुर, और कंकना। इन्हीं पाँचोंसे एक समय हिन्दू-समाजका पंचग्राम बना था। उसके बाद कब और कैसे सारा का सारा कुसुमपुर एकबारगी मुसलमानोंकी बस्तीमें बदल गया, यह इतिहास अजाना न होते हुए भी यहाँ अवान्तर है। हिन्दू-सामाजिक बन्धनसे कुसुमपुर बहुत दिनोंसे अलग है लेकिन तो भी कुसुमपुरके साथ एक गहरा बन्धन था। किसी समय वहाँके मियाँजी लोग ही इस इलाकेके जमींदार थे। कुसुमपुरके मियाँजी लोगों-द्वारा प्रदत्त लाखिराज, ब्रह्मोत्तर और देवोत्तर जमीन इधरके बहुतेरे ब्राह्मण और देवालय आज भी भोग रहे हैं। और, कुसुमपुरके एक ओर जो मस्जिद नजर आती है, उसका निचला हिस्सा कभी कोई देव मन्दिर रहा होगा यह बात देखते ही समझमें आ जाती है। धर्म कर्म पर्व-त्योहार और विवाहादि सामाजिक कामकाजमें दोनों समाजोंमें परस्पर जान पहचान और लौकिकताका भी आदान प्रदान चलता था—विशेष रूपसे शादी-ब्याहमें दोनों तरफका काफी सहयोग रहता था। उन दिनों मियाँजी लोगोंकी चार-पाँच पालकियाँ थीं। इधरके सभी ब्याहोंमें उन्हीं पालकियोंसे काम लिया जाता था। दरी शामियाना उन्हीं लोगोंके यहाँसे आया करता था। ब्याहमें वे लोग चौक-चुमौना दिया करते थे। ब्याहवाले घरोंसे उन लोगोंके यहाँ विशेषतया पान सुपारी और चीनीकी सौगात भेजा जाता था। सम्पन्न हिन्दू परिवारोंसे सीधा भेजा जाता था—घी, आटा, मिठाई, मछली इत्यादि। मियाँजी लोगोंके यहाँसे भी विवाह आदिके मौकेपर हिन्दुओंको भेंट आती थी। हिन्दुओंके पूजा-पाठके अवसरपर जब पूजा हो चुकती थी वे लोग मूर्ति दर्शन आया करते प्रतिमा विसर्जनके जुलूसमें शामिल होते। एक समय था कि भसान (प्रतिमा विसर्जन) का जुलूस मियाँ साहबके दहलीज तक जाता था। वे लोग प्रतिमा देखते थे। हिन्दुओंके लिए वहाँ तम्बाकू का इन्तजाम रहता था। उनके मुहर्रमका अखाड़ा भी हिन्दुओंके गाँवमें आता था ताजिया रखकर वे नाना-प्रकार खेल तम्बाकू पिया करते। उन दिनों हिन्दुओंके पूजा-पर्वके बलिके प्रतिमा के जानवर कहार, नाई आदिके लिए पूजाके बाद मियाँ साहबके निश्चित वृत्ति देनेकी व्यवस्था थी। मुहर्रमके बाद हिन्दुओंके यहाँ भी लाठी वाले खेलनेवाले लोग आया करते थे। उनकी भी वृत्ति बँधी थी। पीरकी दरगाहपर हिन्दुओंकी मन्नत अभी भी बिलकुल मिट नहीं गयी है। सन्त पीरकी

बीमारीवाले मुसल्मान आज भी देवुड़िया कालीबाड़ी आया करते हैं।

इधर कुछ दिनोंमें ये बातें उठती जा रही हैं। अवश्य ही इसका असली कारण लोगोंकी माली हालतका गिर जाना है। मियाँजी लोगोंके वे दिन लद गये। दूसरे दूसरे हिन्दू मुसलमानोंकी हालत भी धीरे धीरे पस्त हो आयी है। जो लोग नये सिरेसे पनपे हैं उनका भी रंग-ढंग नया है। अपने समाज, अपनी जातिमें भी उनका बन्धन निरा लौकिक है। सभीका रंग-ढंग बिलकुल अलग है। फिर भी कुछ बन्धन है, गाँवका जीवन बिताना हो तो वह उतना-सा बन्धन तोड़ सकना असम्भव है। वह बन्धन खेती-बारीका है। बरसात आनेपर आज भी दोनों दलोंको बढ़ई-लुहारके यहाँ जुटना पड़ता है। बटकर बातें करते हैं। लगानकी किस्त चुकाते वक्त दोनों जमींदारकी कचहरीमें अगल-बगल बैठते हैं। जिस साल फसल मारी जाती है लगान और सूदके बारेमें दोनों साथ ही बैठकर सलाह करते हैं और मिल-जुलकर जमींदारसे अपनी माँग पेश करते हैं। यात्रा[1] या कविगानकी महफिलमें हिन्दू-मुसल्मान दोनोंकी समान भीड़ होती है। कंकनाके बाबुओंका नाटक देखनेके लिए दोनों तरफसे पढ़े लिखे लोग आते हैं। अम्बुवाचीके अवसरपर जो कुश्तीकी होड़ होती है, उसमें दोनों पक्षके किसान भाग लेते हैं। हिन्दुओंके अखाड़ेपर मुसल्मान लड़ने आते हैं, मुसल्मानोंके अखाड़ेमें हिन्दू लड़ने जाते हैं। लेकिन आजकल अब सावधानीसे साथ जमात बनाकर जाया करते हैं। मारपीट हो जानेकी आशंका आजकल जरा बढ़ गयी है। गीत-लड़ाईकी प्रतियोगिता दोनोंमें आज भी होती है। हिन्दू लोग घेंटू-गीत गाते हैं, मुसल्मानोंमें मिरासिनका दल है। मनसाका भसान दोनों ही दल गाते हैं।

इस समय कुसुमपुरमें चमड़ेका व्यापारी दौलत शेख सबसे ज्यादा सम्पन्न आदमी है। वह यूनियन बोर्डका मेम्बर है। अपने दरवाजेपर बैठकर दौलत तम्बाकू पी रहा था। देबूको जाता देख उसने पुकारा, 'अरे कौन, देबू गुरुजी? किधर जाओगे चाचा? सुनो-सुनो!'

जरा आगा-पीछा करके देबू गया। दौलत शेखने स्वागत करके ही उसे बिठाया। उसने बात बिना भूमिकाके ही यह बात — यह काम कुछ ठीक नहीं कर रहे हो चाचा!'

देबूने प्रश्न भरी निगाहसे उसकी तरफ देखा। शेखने कहा, 'लगान बढ़नेके

१ यात्रा नाटक जैसा है पर बिना परदेके खेला जाता है। और कविगान है प्रायः कवियोंका तत्काल स्वरचित कविता पाठ। दोनोंमें संगीत होता है।

मामलेमें हंगामा कर रहे हो, हड़ताल करा रहे हो, यह काम तुम ठीक नहीं कर रहे हो।"

देबूने विनयके साथ कहा "क्यों ?"

अपनी दाढ़ीपर हाथ फेरकर दौलतने कहा "मैं अपने कामसे कलकत्ता गया था। लाट साहबके मेम्बरोंसे मेरी मुलाकात हुई थी। मेरा मुवक्किल मुझे मिनिस्टरके यहाँ ले गया था। लीगके मेम्बर मुसलमान मिनिस्टरके यहाँ। मैंने पूछा। मिनिस्टरने मुझे तसफिया कर लेनेको कहा।'

देबू चुप रहा। दौलत फिर बोला, 'तुम बड़ी फजीहतमें पड़ जाओगे, पण्डितजी! यह काम तुम मत करो। आखिरकार सारा हुज्जत हंगामा अकेले तुमपर आ पड़ेगा। ये बेईमान उस वक्त जोरूके आँचलमें मुँह छिपाकर घरमें जा घुसेंगे। मिनिस्टरने मुझसे कहा है—कानूनन जब जमींदार बढ़ोतरीका हकदार है तो उसे रोक कौन सकता है? बेहतर है आपसमें मिट माट कर लो। वही अच्छा होगा। हुज्जत होनेसे सरकार अपना नुकसान हरगिज बरदाश्त नहीं करेगी।'

अबकी देबू बोला, 'लेकिन जमींदार जो दावा कर रहा है वह देते-देते हमें रहेगा क्या? हम खायेंगे क्या?"

दौलतने आगे धीरेसे कहा "सोचसे मन बात की है बाबा! खाँ मुझे पक्का वचन दे रहा है। कहो मैं तुम्हारे भी उसी दरसे तय करा दूँ। रुपयेमें एक आना बस!'—दौलत शेख विचित्र-सा हँसने लगा।

'उसपर तो हम तुरन्त राजी हैं। मैं आज ही बुलाकर कहता हूँ सब—'

टोककर दौलतने कहा 'सबकी नहीं, मैंने महज तुम्हारी बात कही है!"

देबू एक पलमें सारी बात समझ गया। मुसकराकर उसने नम्रताके साथ कहा 'माफ करें चाचा, मैं अकेले मेल-मिलाप नहीं कर सकता। आप रुपयाकी बात कह रहे हैं? मैं जानता हूँ अगर मैं इनका साथ छोड़ दूँ तो जमींदार रुपयेमें एक पैसा लगाकर मुझसे मिट-माट कर लेगा। मगर मुझसे यह नहीं हो सकता।' देबू उठ खड़ा हुआ।

हाथ पकड़कर दौलतने कहा 'बैठो बाबा, बैठो!' मगर देबूने कुछ कहा नहीं और न ही अपना हाथ उससे छुड़ाया। खड़े-खड़े ही वह बोला, 'कहिए!"

दौलत बोला 'मेरी उम्र सौ बीस हो गयी! दुनियाका बहुत-कुछ देखा, बहुत-कुछ सुना। यह काम मत करो। सुनो दुनियामें आदमी बड़ा होता है धन-दौलत और बड़ा होता है अपने इल्मसे। जो अच्छा काम करता है अल्ला उसे बड़ा बनाता है। बाबा, तुममें से एक परा छोटा-आदमी बीस साल

पैदल जाता था। मोचियोंके यहाँ जाकर माल खरीदता था। जमींदारको सलाम बजाता था। मुसाहबोंको चाचा कहता था। आज अल्लाहकी मेहरबानीसे लेन-देन किया, पूँजी जोड़ी। अब अगर मैं अपने-आप ही अपनी क़दर न करूँ तो दस छोटे लोग ही मेरी खातिर क्या करने लगें? और फिर अल्लाह ही मुझपर मेहरबानी कम करेंगे? अपने गाँवके घोष लोगोंको देखा, उनका चाल चलन देखो। और सुनो कलकत्तेके मुखर्जी बाबूके व्यापारकी नींव ही पड़ी थी उस समय। उस समय ये मुखर्जी लोग गाय बाबुओंसे बनर्जी बाबुओंको सलाम बजाया करते थे। उनके परासे धूल लेते थे। और फिर यह देखा कि लाखों लाख रुपये कमाकर मुखर्जी बाबू ही इलाकेके खास आदमी बने। अब अपने-आप कुरसीपर बैठते हैं और बनर्जियोंको चौकीपर बैठाते हैं। इज्जत कायम रखनी चाहिए। चाचा तुम्हारा बच्चा मर गया, तुमने बहुत महसूल चुकाया। इसके लिए लोग तुम्हारी तारीफ करते हैं। अमीरसे गरीब सभी लोग तुम्हें अच्छा कहते हैं। इसमें अपनी इज्जत तुम्हें गुड़ समझनी होगी। इन हरामियोंके साथ तुम न उठा-बैठा करो। कलनाथ बाबू प्रेसीडेण्ट बाबू कह रहे थे—अबकी बार नदू घोष जेलमें सड़ता हो गया तो मुश्किल करेगा। बनिज-व्यापार करो। अभी महाजन मालिकसे तुम्हें काफी माल दूँगा। मैं जमानत दूँगा। जाओ घरमें घर बसाओ!"

नदूने धीरे धीरे अपना हाथ खींच लिया। अभिवादन करके कहा "सलाम चाचा! रात हो रही है घर चलूँ!"

दौलतने उसकी बात ही काट दिया तुम चाचा व्यापार करो! तुम्हारे लिए शीघ्र महाजनके पास जामिन बनूँगा।

हाथ जोड़कर नदूने कहा, "यह नहीं होनेका चाचा! आप बुरा न मानें!"

इसके बाद नदू मनिन्दर मुसलमानोंके टोलेमें पहुँचा। उस समय वहाँ काफी लोग जुटे हुए थे। इकट्ठे होकर खुशीमें उमंगमें उन्होंने टोलेके गीत गानेवाले दलको बुलाकर गाने-बजानेका भी इन्तजाम कर रखा था। मजूरों और मल्लाहोंके गाने-बजानेकी जमात। कुछ मुखिया लम्बे गीतका भोहरी कर रहे थे—टोलेके मल्लाहों मालिक उनमें मूल गायक था। वह मूल गान गाता जा रहा था। बाकीके बहुत प्राचीन कालका गान लम्बे दोहावे कर रहे थे—

सबकी रो देख आ गान गय धरमे की धनधनो।
सजना री!

उसमान गा रहा था—

कौन सजनिया कहे रे भाई, चरखे को न लिया है,
चरखे के चलते सातो पूतों का ब्याह किया है।
कौन सजनिया कहे रे भाई चरखे के नहीं पानी,
चरखे की दौलत से मेरे द्वार बँधा है हाथी।
कौन सजनिया कहे रे भाई, चरखे के नहीं जोड़ा,
उसी के चलते दरवाजे पर बँधा है मेरे घोड़ा।

देबूके आते ही गाना थम गया। कई लोग एक साथ ही बोल उठे, "आइए आइए गुरुजी!"

रहमने पूछा, "वह बूढ़ा शैतान तुमसे क्या कह रहा था चाचा!"

देबू हँसा। कुछ बोला नहीं।

शेखोंमें मातब्बर कुसुमपुर मकतबका मास्टर इरशाद बोला "बैठिए भाई जान! दौलत शेख जो कह रहा था, वह हमें मालूम है। यही बात होगी यह सुनकर आज घोष जो उसके पास आया था।"

देबूने इस बातका जवाब नहीं दिया।

इरशादने कहा "आपने बुड्ढेको क्या कहा?"

"उसकी बात जाने दीजिए इरशाद भाई! मुझे यहाँ जिस कामके लिए बुलाया है उसकी बात कीजिए।"

इरशाद स्थिर निगाहसे देबूकी ओर ताकने लगा। उजड्ड और खूँखार रहम जोशमें गरम होकर उठ खड़ा हुआ। बोला "तुम्हें कहना ही पड़ेगा!"

देबूने उसकी तरफ देखते हुए कहा, "नहीं!"

"जरूर कहना पड़ेगा!"

इसपर देबूने इरशादसे पूछा, "इरशाद भाई?"

इरशादने रहमको डाँटा "रहम चाचा कर क्या रहे हो तुम? बैठो, चुपचाप बैठ जाओ!"

रहम बैठ गया लेकिन दाँत पीसता हुआ बुदबुदाया, "जो हरामी बेईमानी करेगा उसका गला दो फाँक करके मयूराक्षीमें बहा दूँगा हाँ! फिर मेरे नसीबमें चाहे जो हो!"

देबूने हँसकर कहा "अगर हम ऐसा करें चाचा, तो तुम भी यही करना। उस वक्त अगर मैं शोर मचाऊँ या कि तुम्हें टोकूँ तो तुम मुझे आजकी बात याद दिला देना। मैं तुम्हें बाधा नहीं दूँगा, चीखूँगा नहीं, रोऊँगा नहीं, गर्दन बढ़ा दूँगा!

सारी सभा स्तब्ध हो गयी। गाने बजानेवाले दलके छोकरे बीड़ी पीते हुए हँसी-मजाक कर रहे थे। देवू घोषके मुँहकी तरफ़ देखकर वे भी अवाक् रह गये। कोई जोश नहीं शान्त स्वरके उन कुछ शब्दोंको सुनकर सभी कोई उसकी ओर ताकने लगे थे और बातोंके साथ ही उसके होंटोंपर मीठी हँसी खेल जाते देख अवाक् हो गये थे। रहमने एक बार देवूकी ओर देखा और फिर सिर झुकाकर नाहक ही नाखूनसे माटीपर अण्ट-शण्ट दाग देने लगा।

ज़रा देरमें इरशादने कहा, 'आप इसका कुछ खयाल मत कीजिए देवू भाई! रहम चाचाको तो आप जानते ही हैं।''

'नहीं-नहीं मैंने कुछ भी खयाल नहीं किया है।''—देवू हँसने लगा—''अब कामकी बात कीजिए इरशाद भाई! रात काफ़ी हो गयी है।'

इरशादने बीड़ी निकालकर देवूको दी। देवूने हँसकर कहा, 'यह सब मैंने छोड़ दिया है।

'छोड़ दिया है?''—खुद एक बीड़ी सुलगाकर फीकी हँसी हँसते हुए इरशादने कहा 'आप फ़कीर हो गये देवू भाई!'

इस्मायलकी दूकानपर आज सब मिलकर बातें कर रहे थे

लगातार बहुत सलाह-मशविरा बातोंमें काफ़ी रात हो गयी। तय पाया गया कि कुसुमपुरके मुसलमान अलग ही अपनी हड़ताल करेंगे। हिन्दुओंसे बस इतना ही नाता रहा कि आपसमें राय किये बिना कोई सम्प्रदाय ज़मींदारसे मेल-मिलाप नहीं कर सकेगा। मामले-मुकदमेमें दोनों तरफ़के अलग वकील रहेंगे, लेकिन वे भी आपसमें मशविरा करके ही काम करेंगे।

इरशादने कहा, 'शहरमें नूर-मुहम्मद साहब हैं, जानते हैं न? हमारे ज़िलेकी लीगके सदर हैं। हम लोग उन्हींको अपना वकालतनामा देंगे। हमें वे सहूलियत देंगे।''

खैर, यही होगा! तो अब हम चलें!'—बात खतम करके देवू उठा।

'रात बहुत हो चुकी है। आप ज़रा रुक जायें, देवू भाई! रास्तेभर कोई आदमी साथ कर दूँ।

ज़रूरत नहीं होगी उसकी। मैं मज़ेमें चला जाऊँगा।''

'नहीं, नहीं! बरसातका समय है साँप-बिच्छूका डर है। फिर तुम्हारे चोर का कोई एतबार नहीं। घोषका गोल्ल ठीक जा मिला है। ठहरे!'

सामनेकी गली जगहमें अभी भी लोग-बाग खड़े थे। उसी भीड़मेंसे निकलकर आगे बढ़ आया रहम चाचा—एक हाथमें लालटेन, दूसरेमें लाठी!—

'मैं चलता हूँ इरशाद, मैं। चलो चाचा !"—कहकर वह एक गाल हँसा।

पहले सिरका गँवार होते हुए भी रहम किसानोंमें मातब्बर गिना जाता था। यों किसीको पहुँचाने जाना उसके लिए हेठीकी बात थी। देवूने झट कहा, 'नहीं-नहीं चाचा ! यह कैसे हो सकता है तुम क्या जाओगे ?"

"अरे बाबा, चलो ! तुम्हारी बदौलत देखें अगर घोष या शेखके आदमीसे हो जाये मुलाकात, तो एक हाथ आजमा लूँ !"—वह बड़े नाजके साथ हँसने लगा। देवूने एतराज नहीं किया। इरशादने भी मना नहीं किया। झूठ सन्देहपर एकाएक नाराज हो जानेकी झोंकमें उसने देवूको जो तीखी बातें कही थीं उसीके अफसोसमें वह इस तरहसे लाठी लालटेन लिये इस रातको आलमम देवूके साथ जानेको तैयार हो गया। दिलसे चाहते हुए भी माफ करो—यह बात उसकी जबानपर नहीं आयी। इसीलिए स्नेहशील अभिभावककी नाई अपने सारे सम्मानको ताकपर रखकर देवूको सारी आफतोंसे बचाकर वह जता देना चाहता है कि वह उसे कितना प्यार करता है वह उसका कितना अपना है।

इरशादने कहा, 'खैर, तुम्हीं जाओ।'

बहारमें उतरा कि रहमने आराम गाना शुरू कर दिया—

बार-बार बादरवा
आ पानी ले के आ
जलती जान जुड़ाता जा !

हँसकर देवूने कहा, 'और पानी लाकर क्या करोगे चाचा ? बहारमें तो पानी-ही पानी है !"

रहम जरा सकुचा गया। ऐसा बारीके दिन है। रातमें आकर उसे यही गीत याद आ गया। बोला, बेंगके ब्याहका गीत है चाचा !"—और उसने दूसरा पद शुरू कर दिया—

बेंग का ब्याह करूँगा बदरा
ब्याह करूँ बेंगी का
झमझम गरज बरसो बादरवा
झमझम जल बरसा !

आषाढ़-सावनमें पानी नहीं बरसता है तो इधरके गाँवोंमें बेंगका ब्याह रचानेका रिवाज है। कहते हैं बेंगका ब्याह रचानेसे खूब बारिश होती है। लड़कपनमें देवू भी घर लड़कोंके साथ गाने हुए माँग-माँगकर बेंगका ब्याह करता था। बेंगके ब्याहका बड़ा उत्साह था उसको सभी लड़का। उसे याद आया,

एक बार एक बँगला कपड़े उसे पहनाकर बिल्लूने बड़ी कुशलतासे दुलहिन बनाया था। दबूने एक लम्बा निःश्वास छोड़ा।

बिल्लू और मुना ! उसके जीवनकी सोनेकी बेल और हीरेका फूल ! लड़कपनमें उसने एक रूप-कथा सुनी थी—राजाके स्वप्नकी कथा। राजाने सपनेमें देखा—एक अनोखा पेड़ चाँदीका तना, सोनेके डाल-पात और उनमें फूल थे हीरेके फूल। उस पेड़पर हीरा, मोती पन्ना, मूँगा, पुखराज, नीलम आदि रंग रंगके मणि माणिक्य सजा-सँवरा एक मोर पंख पसारे नाच रहा था। देखा वह पेड़ थी बिल्लू, मुना था वह फूल और उस पेड़पर जो मोर नाच रहा था, वह था दबूके जीवनका अरमान, भरोसा, उसके होठोंकी हँसी, उसका बल, उसके मनकी शान्ति ! खुद हाँ खुद ही तो उसने उस पेड़को काट फेंका। आज सिर्फ धर्म, कर्तव्य समाजका स्वर दोना चल रहा है वह। उसके बजाय अगर वह भगवान्को पुकारता ! राजकन्दी यतीन बाबूके यहाँसे चले आनेके बाद रह रहकर उसके मनमें होता रहा है कि सब छोड़कर किसी तीरथमें चला जाय। लेकिन उसे मानो उसका रास्ता नहीं मिल रहा है। जिस दिन यतीन गया ऐन उसी दिन उसे न्यायरत्नका चिट्ठा मिला— गुरुजी मुझे इस आपदासे बचाओ !"

यह लगान बढ़ाकर चलने जमींदार और रैयतोंमें जो विरोध होनेको है उस विरोधमें रैयतोंकी तरफकी सारी जिम्मेदारी सारा बोझा पहाड़-सा उसीके माथेपर आ पड़ा है। लगानकी बढ़ोत्तरी ! रैयतोंका हाल अपनी नजरोंसे देखनेके बावजूद जमींदार कम लगान बढ़ाना चाहता है दबू यह समझ नहीं पाता। रैयतोंके पास है क्या ? घरमें अनाजका नाम नहीं। बनियेके आदमी हाथ चिट्ठियाँसे उधार खाना शुरू कर दिया है ? सालके भरमें पहननेका चारसे ज्यादा कपड़े मयस्सर नहीं। बीमार पड़ जानेसे बिना इलाजके ही मरते हैं। छप्परपर फूस साबित नहीं है। सारी बरसातका पानी उनके घरके अन्दर ही गिरता है। यह सब देखते हुए भी दयाराम लगानकी माँग क्यों करते हैं वे ? इस इलाकेके जमींदारोंका एक दलील यह भी है कि उन्होंने मयूराक्षीका बाढ़ रोका बाँध बनवा लिया है, जिससे यहाँके खेतोंकी उपज बढ़ी है। लेकिन इससे बढ़कर झूठी बात दूसरी न। हाँ सचमुच। इस बाँधको बनाया है रैयतोंने। जमींदारने अपनी दया रकम इसे बनवाया है। प्यादे भेजकर काम करनेके लिए रैयतोंका पकड़वा मँगाया है। हर साल बाँधकी मरम्मत आज भी रैयत लोग ही करते हैं। अवश्य आज कल बहुतेरे किसान रैयत मरम्मतके लिए नहीं जाते। इन दिनों कानून भी कुछ कड़ा हो गया है। पहलेकी तरह आकर रैयतोंसे जबरदस्ती काम करानेकी हिम्मत भी नहीं पड़ती है जमींदारकी। लेकिन बाउरी डोम, मांझी आदिका

आज भी यह बेगारी करनी पड़ती है। सेटलमेण्टके रेकॅर्ड्स ऑव राइटस तकमें यह बेगार खटना ही उनके घरके लगानमें लिखा है। रहनेके घरका लगान है साल में तीन मजूर—एक बाँधकी मरम्मतके लिए, एक चण्डीमण्डपके लिए और एक जमींदारके अपने घरके लिए।

दवू चाचा! अब मैं चलूँ?'—रहम अभीतक वही गीत गाता चला आ रहा था। गाना बन्द करके उसने देबूसे कहा, "मैं बस्तीके अन्दर नहीं जाऊँगा।"—लालटेन और लाठी लिये देबूको पहुँचानेवालेके रूपमें वह बस्तीके अन्दर नहीं जाना चाह रहा था।

देबूने चारों तरफ देखा। मोचीटोला आ गया था। बोला, "हाँ हाँ, अब तुम लौट जाओ चाचा!'

"आदाब!'

'आदाब चाचा!

'मेरी बातका कुछ खयाल मत करना!'—लालटेन और लाठी लिये दबूके साथ इतना दूर आकर अपनी तीखी बातके कसूरकी ग्लानिसे बहुत-कुछ हल्का हो चुका था। अब वह हल्का होकर सहज भावसे ही यह बोल पड़ा।

उज्ज्वल हँसीसे दबूका चेहरा खिल पड़ा। बोला, "नहीं-नहीं, चाचा! हम क्या बाल-बच्चोंको डराते नहीं हैं? बुरा काम करनेसे कहते नहीं हैं कि खून कर देंगे?

'तो अब चलता हूँ!

'हाँ जाओ!"

'न न, चलो तुम्हें घर ही पहुँचाकर जाऊँगा! —दबूकी मीठी हँसीसे, उसकी अपनपनसे भरी बातोंसे रहमकी ग्लानि तो जाती ही रही, आनन्दके आवेगमें मान-अपमानका सवाल भी जाता रहा। बोला, "अपने बच्चेका पहुँचाने आया हूँ इसमें शर्म किस बातकी है? चलो!'

दबूके बरामदेपर लालटेन जल रही थी। वह चकित हो गया। घरमें अपना तो कोई है ही नहीं, वहाँ इस तरह बैठे कौन लोग हैं? इतनी रातमें कहाँ कौन आया? कुटुम्ब तो नहीं है? हो सकता है अम्बुबाचीमें गंगा-नहाकर वापस लौटे हुए यात्री ही हों!

दरवाजेपर पहुँचते ही पातू मोचीने कहा, 'लो गुरुजी आ गये!' बरामदे पर हरेन घोषाल, तारा नाई गिरीश बढ़ई तथा और भी कई आदमी बैठ

थे। देबूने शंकित होकर ही पूछा, "क्या बात है?"

हरेनने कहा, 'दिस इज वेरी बैड गुरुजी, वेरी बैड! ऐसा आँधी-पानी, साँप बिच्छू और फिर जमींदारसे अनबन चल रही है। तुम शामको लौट आनेको कह गये और इतनी रात तक लापता!"

दरवाजेके अधरसे दुर्गा निकल आयी। उसने हँसते हुए कहा जमाई तो किसीको अपना नहीं समझता है न घोपाल कि सोचे मेरे लिए कोई चिंतित होगा!"

देबू हल्का हल्का हँसा।

पातूने कहा, 'मैं लालटेन लेकर जा ही रहा था।'

दुर्गाने कहा, रात हुई देखकर मैंने लुहार बहूसे रोटी बनवा ली थी। मुँह हाथ धो लो, फिर चलो खा आओ! आज अब रसोई नहीं बनानी पड़ेगी।

यह दुर्गा और लुहार-बहू पद्म! देबूके स्वजनहीन जीवनमें न केवल मर्द बल्कि ये दो औरतें भी अपार स्नेह-ममता लिये अयाचित रूपसे आकर उसे सींच देना चाहती हैं। लुहार-बहू उसकी मितनी है। अनी भाई घर-द्वार छोड़कर कहीं चला गया। इस समय लुहार बहू पद्म उसीकी आश्रित-सी है। पति-द्वारा ठुकरायी हुई इस बाँझ औरतका दिमाग भी कुछ-कुछ खराब है। पद्मका यह क्या पर—कुछ समझ नहीं पाता।

सोचते हुए वह दुर्गाके साथ चल पड़ा।

पाँच

पद्म इन्तजारमें बैठी थी।

आज इस इन्तजारमें जाने कितनी तृप्ति हो! अनिरुद्धके इन्तजारमें उसने कितनी ही रातें उनींदे बितायी हैं। उसके बाद आया था यतीन।

पद्मके सूने जीवनमें यतीनका आना जैसे एक सपना हो! हठात् ही वह पहुँचा था। अनिरुद्धका एक कमरा किरायेपर लेकर पुलिसके अधिकारियोंने नजरबंद उस युवकको इतनी दूरके एक गाँवमें जोग-शरोग पर शान्त परिवेशमें लाकर रखा था। अधिकारियोंने निश्चिन्त होकर सोचा था कि बंगालके मरणासन्न समाजकी बीमार साँसें इन क्रान्तिकारियोंके हृदयमें भी

छून सी फट जायेंगी। वर्षाके सजल मेघकी प्राणवन्त शक्तिको बेकार करनेके लिए नाराज़ देवताने मानो उसे रेगिस्तानके आसमानमें भेज दिया था। लेकिन एक रोज देवताने आश्चर्यचकित होकर देखा कि वह प्राण शक्ति निष्फल नहीं हुई है। ऊसर मरुभूमिके कलेजेमें जगह जगह हरियाली छिटक आयी है, आसिक्त शिशु जाग उठे हैं। बंगालके विभिन्न गाँवोंके ताप-श्याम भरे चेष्टाहीन जीवनमें इन राजबन्दियोंकी प्राण शक्तिके स्पर्शसे रेगिस्तानकी हरियाली-जैसी नये जागरणकी झलक दिखाई देने लगी थी। यह सब देख सुनकर आखिर सरकारने राजबन्दियोंको गाँवमें निर्वासित करनेका नियम उठा लिया और उन्हें गाँवोंसे हटा ले गयी। बंगालके सरकारी विवरण और वहाँके राजनीतिक इतिहासमें इस तथ्यको स्वीकारा गया है।

ख़ैर छोड़िए यह बात। यतीनको पाकर पद्म कुछ दिनोंमें ठीक हो गयी थी। वह यतीनकी माँ बन गयी थी। तीन चार सालकी बच्ची जैसे अपने बराबर आकारका खिलौना लिये माँ बनकर खेलती है, वैसे ही पद्मने कुछ दिनोंके लिए एक घरौंदा बनाया था और यतीनने इस गाँवके एक बिना माँ-बापके लड़के फतिंगाको खोज लिया था। फतिंगा एक और छोटेको ले आया था। नाम था उसका गोबरा। पुलिस अधिकारियोंने यतीनको वहाँसे हटा लिया तो पद्मके जीवनमें फिरसे एक विपत्ति आ गयी। आर्थिक सहारा जो किरायेका था वह भी जाता रहा। फतिंगा और गोबरा भी उसे छोड़कर भाग गये, उन्हें खाना नसीब न होनेका कष्ट बरदाश्त नहीं था। इसी बीच उन लोगोंने अपनी कमाईका जरिया ढूँढ निकाला है। मयूराक्षी नदीके उस पार रेलका बड़ा जंक्शन है। कारोबार वहाँ दिनोंदिन तरक्कीपर है। मारवाड़ी महाजनोंकी गद्दी, छोटी-बड़ी मिलें— चावलकी, तेलकी, आटाकी, मोटर मरम्मतका कारखाना। इन सबके कारण वहाँ पानी-सा पैसेका लेना-देना चलता है हरदम। फतिंगा और गोबरा वहीं जा जुटे हैं। कभी भीख माँगते हैं, कभी बाबूकी दुकानपर काम-काज कर देते; कभी मास्टर-गृहिणीके यहाँ धोनेके लिए पानी भर देते हैं। और फिर मौका मिलता है तो स्टेशनके प्लेटफार्ममें सोये मुसाफिरोंका छोटा-मोटा सामान गायब कर देते हैं। पद्म उन्हें प्यार करती थी, यह बात शायद वे भूल ही बैठे हैं। जरा देखनेके लिए भी कभी नहीं आते। दुनियामें पद्म फिर निरी अकेली पड़ गयी है। उसका हिस्टीरिया रोग फिर बढ़ने लगा है। आजकल वह कपड़ा [illegible] घड़ी-घड़ी उन्माद [illegible] करती है। बीच-बीचमें किसीको या चलते गुट-पाट करता है तो वह एक अजीब-सी नजरसे ऊपर ताकती है और एक अजीब हँसी उसके होठोंपर फूट पड़ती है। फतिंगा

और शायद पराये लड़के हैं, वे चले गये हैं—यह बात उसे याद आ जाती।

असली दुर्गा ही उसकी खोज-खबर रखती है। दुर्गा उसे मिठाई कहती है। एक समय स्वैरिणी दुर्गाने अनिरुद्धसे दोस्ती कर ली थी। व्यंग्य करनेकी नीयतसे ही वह उस समय पद्मको मिताई कहा करती थी। लेकिन आज यह सम्बन्ध परम सत्य हो उठा है। दुर्गाने ही देबू घोषको पद्मके बारेमें सारा कुछ खोल-कर बताया था। कहा था—'उसका कोई उपाय किये बिना तो नहीं चलेगा जमाई!'

देबूने चिन्तित होकर कहा था 'सही तो दुर्गा!

'कहो तो कहकर चुप लगा जानेसे तो नहीं बनेगा, गुरुजी! गाँवमें तुम-जैसे आदमीके रहते एक औरत बेचारी जहन्नुममें चली जायगी!

'लुहार-बहूके मायकेमें कौन है?'

"माँ-बाप नहीं हैं। भाई भाभी हैं, सो उन लोगोंने साफ कह दिया है कि उनके पास जगह-गुजारा नहीं है।

"तो?"

"तभी तो कह रही हूँ! आखिरकार क्या छिरू पालके—'

"छिरू पाल?"—देबू चौंक उठा था।

हँसकर दुर्गाने कहा था 'छिरू पालको तो जानते हो? मुद्दतसे लुहार-बहूपर उसकी नजर लगी हुई है।"

जरा देर चुप रहकर देबूने दुर्गासे कहा था, 'मैं खाने-पहननेके बारेमें नहीं सोचता, दुर्गा! एक तो अनाथ औरत, फिर अनिरुद्ध मेरा दोस्त था और फिर भी लुहार-बहूको मानती था। उसके खाने-कपड़ेका भार न हो तो मैं लेता हूँ पर उस बारे आगा पीछा? अकेली औरत—

सुनकर दुर्गाके होठोंपर हँसीकी पतली-सी लकीर दौड़ गयी थी।

देबूने कहा, "हँसनेकी बात नहीं है, दुर्गा!'

इस बातपर दुर्गा जरा और भी हँसी। कहा "जमाई तुम पण्डित आदमी हो पर—'

अपने आँचलसे मुँह दबाकर वह खूब हँसी ठठाकर। हँसकर बोली, 'मगर इन मामलोंमें तुम बड़ा पण्डित हूँ।'

देबूने यह बात स्वीकार कर ली था हँसकर।

'इस उम्र मुझसा हँसीका म क्या कहूँ'—कहकर हँसीका उन्न करके पाण्डित्यके गम्भीरतापूर्ण भाव हो बोली तुम्हें मालूम है जमाई, औरत बगैर होता है पेटके लिए और लोभसे। मुहब्बत नहीं होती है, या नहीं, मुहब्बत भी

होती है। मगर कितनी ? सौमें एक ! लोभसे, रुपयेके लोभसे, गहने कपड़ेके लोभसे औरतें नष्ट हुआ करती हैं, मगर पटकी आग बड़ी जबरदस्त आग होती है जमाई ! तुम उसे पेटकी ज्वालासे बचा लो ! लुहार उसके लिए पेटका अन्न नहीं रख गया है, रख गया है एक पना दाव ! कहा करता था, इस दावसे बाघको काटा जा सकता है। पदम उसी दावको बगलमें लेकर सोती है। काम करती है, काज करती है, मगर दावको सदा हाथके पास ही रखती है। उसके लिए तुम फिक्र न करो !"

उसी दिनसे देबूने पदमके भरण पोषणका भार उठाया है। दुर्गा खोज खबर लेती रहती है। आज दुर्गाने आटेकी कीमत देकर पदमके यहाँ ही देबूके लिए रोटी बनवा रखी था।

खानेकी तयारी मामूली ही थी। रोटी, एक सब्जी दो टुकड़ा मछली, थोड़ी-सी मसूरकी दाल और ज़रा-सा गुड़। लेकिन इसकी परिपाटी कुछ असाधारण-सी थी। थाली-कटोरे चाँदी-से चमचमा रहे थे। फटे कपड़ोंके कोरों से बनाया हुआ आसन बड़ा सुन्दर था, बड़ा साफ ! कमलके बड़े कोमल पत्तोंको बड़े जतनसे गोल गोल काटकर ढक्कन बनाया था, गिलास और दालका कटोरा उसीसे ढँका था। सबसे छोटा जो पत्ता था उसपर रखा था नमक। इसीसे साधारण असाधारण हो उठा था। पहली ही नजरमें मन प्रसन्नतासे भर उठता। पदमके बरामदेपर जाकर श्रद्धा-सने इस आयोजनको देखकर देबू जरा शर्मिंदा सा हो गया।

'अरे बाप रे ! मितनीने यह सब कर क्या रखा है दुर्गा !'

दुर्गा वहीं एक किनारे खड़ी थी। वह हँसकर बोली वह तो पूछो ही मत, नमक रिगमें देगी—यही सोचकर हैरान ! मने कहा सत्तुएके पत्तेके टुकड़ेमें दे दो। उहूँ ! आखिर इतनी रातको जाकर कमलका पत्ता ले आयी। उसके बाद यह सारा कुछ किया।"

थाली सामने रखकर पद्म रसोईके दरवाजेके पास दीवारके सहारे खड़ी थी। ये बातें सुनकर उसका सिर अवसन्न-सा हो गया। वह दीवारसे आठग गयी सिर और उसकी नज़रवाली बड़ी-बड़ी उसकी आँखें भी बन्द हो आयीं। तन-मन मानो बहुत थक गया हो आँखोंमें जबरन नींद चली आ रही हो।

आगनपर बैठकर देबूको भी बड़ा अच्छा लगा। दिनोंसे किसीने मूँहके बाद इस जतनके साथ उसे किसीने नहीं खिलाया। खिलानेके पानीसे हाथ धोकर उसने मुसकराकर कहा दुर्गा किसीने मरनेके बाद मुझे इतने जतनसे किसीने नहीं खिलाया है !

दुर्गाने देबूको कोई जवाब नहीं दिया। रसोईकी तरफ मुँह घुमाकर जरा

ऊँचे गलेसे कहा "सुनती हो मितनी, मीता तुम्हारा क्या कह रहा है ?" अन्दर पद्मके होठोंपर जरा हँसी फूट उठी। दुर्गाने देबूसे कहा, "तुम्हारी मितना खूब है जमाई! खाना परोस दिया और अन्दर चली गयी? क्या चाहिए, क्या कैसा बना है—यह सब कौन पूछेगा, कहो तो ?"

देबूने कहा, 'नहीं-नहीं, मुझे और कुछ नहीं चाहिए। और चीजें सब अच्छी बनी हैं।"

"फिर भी आकर दो बातें तो करे! चुपचाप नहीं, हाँसके खाया बस जायेगा!"

'तू बड़ा फाजिल है दुर्गा!'

'मैं तुम्हारी साली हूँ न!"—कहकर वह हँसते-हँसते लोट-पोट हो गयी। उसके बाद बोली, 'मेरा छुआ तो तुम खाओगे नहीं न भाई, वरना देखते कि मैं तुम्हें इसस कितनी अच्छी तरह खिलाती हूँ!'

देबूने कोई जवाब नहीं दिया। गम्भीर होकर खा-पीकर उठ पड़ा। कहा, "तो अभी चलता हूँ!"

दुर्गा रोशनी उठाकर खड़ी। देबूने कहा 'तुझे जाना नहीं पड़ेगा। बत्ती मुझे दे दे।"

उसकी ओर देखकर दुर्गाने बत्ती रख दी। देबूके घरसे बाहर निकलते ही उसने पुकारा, 'सुनो, सुनो जमाई! जरा ठहरो!'

देबू ठहर गया—'कहो!'

दुर्गा आगे बढ़ आयी—"एक बात कह रही थी।

'क्या ?"

"चलो, चलते-चलते कहती हूँ!'

कुछ आगे बढ़नेपर दुर्गाने कहा, 'इधर-उधर लिए कहीं धान कूटनेका काम जुटा दो! एक ही तो पेट है, इससे भी चल जायगा। उसके बाद कुछ जरूरत हो तो तुम देना।"

देबूने भवें सिकोड़कर फिर 'हूँ' कहा।

और थोड़ी दूर जाकर दुर्गाने कहा, 'मैं इस गलीसे अपने घर चली जाऊँ ?'

देबूने कोई जवाब नहीं दिया। दुर्गाने पुकारा, 'जमाई!'

'क्या ?

'तुम मुझसे नाराज हो।'

देबू उसकी तरफ मुड़कर बोला 'नहीं!"

"हुँ ! तुम नाराज़ हो ! नाराज़ नहीं हो तो हँसो तो जरा !"

देवू अबकी हँस पड़ा। बोला, 'जा भाग !'

डरका स्वांग रचकर दुर्गा बोली, 'बाप रे अब जमाई मारेगा रे बाबा !'

वह खिलखिलाकर हँस पड़ी और कलाई भरी चूड़ियाँ जरा बाजेकी झंकार करती हुई गलीके अँधेरेमें खो गयी।

स्नेहसे देवू जरा हँसा। उसके बाद धीरे धीरे चलकर जब अपने घर पहुँचा तो देखा सोनेके लिए पातू बकबका आ गया है। दुर्गाका बड़ा भाई पातू माँकी रातको देवूके ही यहाँ सोता है।

बिस्तरपर लेटकर देवूको नींद नहीं आयी।

जिसे जात खलिहर कहते हैं उसी जात खेतिहरके घरका है यह। उसका बाप अपने हाथसे हल जोतना था। उसने अपने कंधेपर बहँगी ढोया है, धानकी टोकरी सिरपर रखकर गाड़ीको अपनेसे लादा है, खेतसे धानका बोझा माथेपर उठाकर घर लाया है, बैलोंकी सेवा की है। बचपनमें देवू भी घरके गाय बाछे चरवाहेके साथ पहुँचाता रहा है। उन दिनों वह भी गाय-बछड़ोंका नियमित सेवा करता था। [illegible] बापका कलेवा खेत पहुँचाया करता था। बाप जब कलेवा करने बैठ जाता तो वह उसकी वजनी कुदाली उठाकर आलन्त डालता था। घरमें कुदालोंका जो भी काम होता बचपनमें सब वही करता था। उसके बाद गाँवकी पाठशालासे उसे लोअर प्राइमरीमें छात्र-वृत्ति मिली। पाठशालाके गुरुजी वही अंधा बूढ़ा केनाराम था। केनारामने ही उस रोज देवूके बापसे कहा था, "तुम इस लड़केको पढ़ने दो बाबा! लड़केके जरिये तुम्हारा सारा दुःख दूर होगा। देवूको ऐसी-वैसी छात्र-वृत्ति नहीं मिली है, सारे जिलेमें वह अव्वल आया है। कंकनाके स्कूलमें उसे फीस नहीं देनी पड़ेगी, ऊपरसे हर महीने दो रुपये मिला करेंगे। नहीं पढ़ेगा तो यह वृत्ति बेकारका नहीं मिलेगी।"

कंकनाके स्कूलमें केनारामने ही मण्डलके बजाय उसकी उपाधि घोष लिखाया थी। उसके बाद हर साल फर्स्ट या सेकण्ड होता-होता वह फर्स्ट क्लास तक पहुँचा। उस समय उसका बाप उसे कोई काम नहीं करने देता था। हँसते हुए बापने उसकी माँसे कहा था, "हमारा देवू हाकिम होगा!" देवू वही आशा करता था।

आज इन बातोंका स्मरण करते हुए देवू लेटा रहा।

उसके बाद अचानक बिना मेघके गाज गिरा जैसा उसके जीवनमें जीवनकी पहली विपत्ति आयी। बाप और माँ—दोनों लगभग एक ही साथ मर गये। देवूको लाचार अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी और अपना पुश्तैनी काम शुरू करना

पेशा। इसके बाद उसने अपने बाप-दादेकी तरह खेती शुरू की। उसके बाद उसे यूनियन बोर्डके निःशुल्क प्रायमरी स्कूलमें नौकरी मिल गयी। गुरुजीकी जगह। मजेमें था। सिंहू-जैसी शान्त गिरस्ती स्त्री खिलौने-सा मुन्ना, बारह रुपये माहवार और फिर अपनी खेती-बारीकी आमदनी। बोरीमें धान, भण्डार-घरकी कोठीमें उड़द गेहूँ तिल सरसों, गोशी गुहालमें गाय, सागरमें मछली दो चार आम-कटहलके पेड़। राजासे भी बढ़कर सुख था उसे। अचानक उसे दुर्गति आयी। यह दुर्गति उसने अवश्य बचपनसे स्कूलसे ही अपनायी थी। अन्यायका विरोध करनेकी कुमति उसपर वहींसे सवार हो गयी थी। उसी नशेमें कानूनगोका विरोध करनेमें उसे जेल जाना पड़ा।

जेलसे लौटनेके बाद वह नशा मानो पेशा होकर उसके कन्धेपर सवार हो गया। नशा चाहे तो छूट भी सकता है पर पेशा छोड़ सकना सम्पूर्णतया आत्माके अपने बसकी बात नहीं। छोड़ना चाहते ही पेशा नहीं छोड़ा जा सकता। जिनसे देन-पावनेका सम्बन्ध रहता है वे नहीं छोड़ते। खेती जिनका पेशा है वे खेती छोड़ दें तो जमींदार अपना बाकी लगान नहीं छोड़ता। जमीन बिकनेके बाद भी लगानके लिए स्थावर सम्पत्तिपर आफ़त आती है। और दुनियामें क्या सिर्फ़ पावनेदार ही नहीं छोड़ते? देनदार भी तो नहीं छोड़ते। महाजन जब कहता है कि मैं अब यह सूदका कारोबार नहीं करूँगा तो कर्ज़दार लोग गिड़गिड़ाते हैं। यह भी तो एक नैतिक दावा है और यह दावा धनके दावेसे कम नहीं है। देबूकी भी आज यही दशा हुई है। दुनियामें आज उसे अपने लिए जरूरत ही कितनी है? पर पाँच गाँवकी जरूरत उसकी गरदनपर सवार है। छोड़ देनेकी कहनेसे एक तरफ़ तो लोग नहीं छोड़ते दूसरी तरफ़ पावनेदार नहीं छोड़ते। उसका पावनेदार भगवान् है। उस न्यायरत्नजीकी कही हुई कहानी याद हो आयी। मढेरिनकी टोकरीमें एक ब्राह्मण शालिग्राम शिला ले आये थे। उन शिलारूपी भगवान्की पूजासे ब्राह्मणने सरबस गँवाया, लेकिन शिलाको नहीं छोड़ा। न्यायरत्नने कहा था, मनुष्यमें जो भगवान् हैं, उसकी भी यही गति है। वह है मढेरिनकी टोकरीकी शिला। उसकी सिंहू चली गयी, मुन्ना चला गया उसके साथ अन्तरके देवता कौन-सी राह गहेंगे, कौन जाने!

एक लम्बी निःश्वास छोड़कर देबूने मन-ही-मन कहा, "यही हो देवता! मैं भी देखूँ तुम्हारा कौन कलेवर है! मेरे बीवी-बच्चेको छीन अब पाँच गाँवके लोगोंका बोझा बनकर तुम मेरे कन्धेपर सवार हो! रहो सवार!

बाहर मेघ गरज उठे। बरसातके पानीसे भरे बादलोंकी गम्भीर गरज। घन

गाढे अन्धकारमें लगातार रिमझिम पानी। बड़े-बड़े बेंग खुशीके मारे बोल रहे थे। आज झींगुरकी झी झी नहीं सुनाई पड़ रही थी। सहसा रास्तेपर रोशनी दिखाई दी। देवूने सिर उठाकर खिड़कीसे बाहर झाँका। इस बारिशमें इतनी रातको कौन जा रहा है? जानेमें यों ऐसे आश्चर्यका कुछ नहीं था। फिर भी उसने आवाज दी—"कौन, कौन जा रहे हो?"

जवाब मिला, "जी, हम लोग हैं गुरुजी! मैं सतीश!"

"सतीश?"

"जी! खेतमें एक लकड़ी बाधना ह। सोचा था, कल बाँधूँगा। लेकिन देवता जिस ढगसे उतरा ह कि रातको न बाधें तो खेतकी माटी वाटी सब बुहार कर ले जायेगा।"

देवूने निःश्वास फेंका। निःश्वास नाहक ही फेंका। दुनियामें सबसे दुखी यही लोग ह। गृहस्थ तो घरमें सो रहे हैं ये भागीदार हलवाहे इतनी रातको उनका खेत बचानेके लिए चले जा रहे ह। गोकि इनका खुराकी कर्ज देकर वे सैकड़े पचास सूद लेते ह।

अंधेरेमें ताकते हुए देवू यही सोच रहा था। आज यह घटना इस समय उसके लिए महत्त्वपूर्ण हो गयी। लेकिन किसानोंके गाँवोंमें यह घटना बडी मामूली-सी ह।

"गुरुजी!" डरी हुई आवाजमें किसीने चुपचाप पुकारा।

"कौन?" देवू उठ बैठा।

"जी, मैं सतीश!"

"सतीश? क्या बात ह सतीश?"

"जी मौलकिनीके बरगदके नीचे 'जमाट-वस्ती' मालूम पड़ती ह।"

"क्या कह रहे हो? 'जमाट-वस्ती'?"

"जी वस्तीसे निकला तो देखा कि खेतमें रोशनी ह। इस पानीमें भी कौन सी चोरको रोशनी। लाल रोशनी दप-दप कर रही है। गौर किया। मौलकिनीके बाँधपर बरगदके नीचे मशाल जल रही ह।"

'जमाट-वस्ता' यानी मशाल लिये डकैत जमा हैं। दरवाजा खोलकर देवू बाहर निकला। बोला तुम जल्दीसे भूपाल चौकीदारको तो बुला लाओ!"

"आप घरके अन्दर जायें, गुरुजी! म तुरन्त उसे बुला लाता हूँ।"

सतीश चला गया। देवू अंधेरेमें ही स्थिर होकर खड़ा रहा। जमाट-वस्तीका क्या ठिकाना! बरसातके दिनोंमें लाशोंमें बेहद समान ह। तिसपर दुर्योगकी यह रात! जो लोग चोरी डकैती करते हैं, दुनियाके अभाव और गरीबीमें उनका

साया आक्रोश सबसे पहले इसी खूंखार पापवृत्तिको छेड़कर जगाता है और तब बाहरी दुनियाके इन दुर्योगोंका सुयोग उन्हें हाथके इशारेसे बुलाता है। धीरे धीरे वे लोग आपसमें सहयोग क़ायम करते हैं। उसके बाद निष्ठुर उल्लाससे एक दिन बाहर निकल पड़ते हैं। निश्चित स्थानपर आकर एक आदमी माटीकी हाँडीमें मुँह डालकर एक अजीब भयंकर आवाज़ रातके सन्नाटेमें गुँजा देता है। उसी इशारेसे सब लोग आ इकट्ठे होते हैं। फिर मिल-जुलकर शुरू करते हैं अपना अभियान। उस समय उन्हें दया नहीं होती माया नहीं होती आँखोंमें पौरुष विस्मृतिकी एक ज्वाला जल उठती है—उस वक्त वे अपनी सन्तानको नहीं पहचानते सर्वांगमें विनाशकी बेरोक चंचलता जाग पड़ती है। उस समय जो रुकावट डालता है उसकी गरदन काटकर वे उछाल देते हैं या खुद मरते हैं दलका कोई मरता है तो उसका सिर काटकर चल देते हैं।

दबू अंधेरेमें खड़ा-खड़ा सिहर उठा। अभी जाने किस टोलेमें शोर मचाते हुए वे कूद पड़ेंगे। भूपाल अभागा आ क्यों नहीं रहा है? उसके रास्तेकी तरफ़ वह परेशान निगाहों ताकने लगा। वर्षा-मुखर रात मेढकोंकी लगातार टर-टर आने कहीं तो पासमें भोजवर उल्लू बोलने लगा। यह रात भी जैसे उन निशाचरोंका नशा ही उमंग भरी हो उठी है। एड़ीसे चोटी तक उसके शरीरमें उत्तेजनाका एक प्रवाह धीरे धीरे तेज हो उठने लगा। लेकिन भगवान् तुम्हारी दुनियामें इतना पाप क्यों है? लोगोंमें ऐसी खौफ़नाक प्रवृत्ति क्या? तुम लोगोंको पेट भर खाना क्यों नहीं देते? तुम्हीं तो हर रोज़ हर जीवके लिए नियमसे खानेकी व्यवस्था करते हो। महामारीमें भूकम्पमें बाढ़में आगमें आँधीमें तुम खतरनाक खेल खेलते हो भयंकर हो उठते हो। हम समग्र त्रस्त हैं। घुटनेमें हाथ जोड़कर हम तुम्हें पुकारते हैं—हे प्रभु अपना यह रुद्र रूप रोको। हमारी यह पुकार तुम कहीं भी सुनते हो तो तुम्हारी महिमामयी विराट मूर्तिके सामने हम केवल कीड़े-मकोड़ोंकी तरह मर जाते हैं हममें निवारण करनेकी शक्ति भी नहीं रहती। लेकिन मनुष्यकी इस खूंखार शक्तिको तो तुम्हारा वह रुद्र रूप नहीं रोक सकते! यह तो पाप है। आखिर यह पाप क्या? मनुष्यमें यह पाप कहाँसे आया?

भूपालने पुकारा 'गुरुजी!'

हाँ बच्चा! दबू उछलकर रास्तेपर आ गया।

अभी पहले गाँवके किनारे दल देखे हैं क्या।

'दर्शन गुरुजी!' —भूपालने उसका अभिवादन किया। वह आज टोले और कई लोगोंको जगाकर साथ ले आया था।

गाढ़ी अँधेरी रातके पर्देमें ढँकी धरती आसमानके नक्षत्र गायब। एक गाढ़े जमे हुए अँधेरेके सिवाय सारे-कुछका अस्तित्व खो गया था। उत्कण्ठासे भरे ये कुछ लोग अपनी नजदीकीके लिए परस और धीमी धीमी बातचीतके शब्द मात्रसे ही एक-दूसरेके निकट जिन्दा थे। इस अखण्ड अन्धकारको कहींपर खण्डित करके एक नाचती हुई लौ जल रही थी। उत्कण्ठित आदमियोंकी आँखोंमें शंका भरी दृष्टि। देबू ठीक सामने ही खड़ा था। वह सब-कुछको कोमल कर देनेवाले अँधेरेमें ठीक जगहका अन्दाज लगा रहा था। यह गाँव, यह बहार, यहाँकी दिशा दिशासे उसका गहरा परिचय जो है। आज अगर वह अन्धा भी हो जाये, फिर भी वह स्पर्शसे गन्धसे, मनके परिमापसे आँखवालेकी तरह सब कुछ पहचान लेगा। तिसपर अब इस इलाकेमें कमकोलाहलमय दिन रात मुखर एक अद्भुत पुरी हो गयी है इस दुर्योगकी रातमें भी वह समान रूपसे बोल रहा है। मयूराक्षीके उस पार जंक्शन स्टेशन स्टेशनके चारों तरफ कल कारखाने, वहाँ मालगाड़ीकी शंटिंगकी आवाज, मिलके इंजनकी आवाज, बीच बीचमें रेलके इंजनकी सीटी।

देबूके सामने ही वह बायें कोनेपर पश्चिम-दक्षिणमें जंक्शन स्टेशनकी आवाजें। उसके उत्तर मयूराक्षी नदी। जंक्शन वालेके पम्प जैसी अँधेरी रातमें इस गाँवके लोगोंको मयूराक्षी दिखायी नहीं देती थी। देबूके बायें पूरब-पश्चिम बह रही है मयूराक्षी नदी। उस मयूराक्षीकी धनुषकी प्रत्यंचा-सी छातीपर आधे चन्द्रमाके आकारका बह रहा कंकना। कंकनाके उत्तर-पूरब कुसुमपुर, उसीके बाद महग्राम, महग्रामके बाद शिवकालीपुर, शिवकालीपुरके दक्षिण मयूराक्षीसे लगा देखुड़िया। इस आधे चाँदके आकारमें घेरकर यह बहार लम्बाईमें लगभग छह मील, चौड़ाईमें चार मीलसे कुछ कम। बहारका नाम ही है पंचग्रामकी बहार। इस बहारमें पाँचों गाँवोंकी साझेकी जमीन है। इसके सिवा प्रत्येक गाँवकी सीमामें दो पाँच गाँवोंकी रयतकी जमीन है। इस फैले हुए बहारकी छातीमें एक जगह इस रिमझिम अँधेरेमें भी आग-सी लौ नाच रही है—नाचते साँप-सा लग रहा है। अँधेरेमें हिसाब लगाकर देबूने समझा सतीशने ठीक ही अनुमान किया है यह जगह मौलिकीकी बरगदतला है। जाने किस भूले जमानेमें किसान मौलिकी नामका कोई साधक गुजरा था। किसान साधक। किसी समय इस महान पंचग्रामके बीचोबीच बैठकर काली वह हिसाबी

सिंचाईके लिए पानी जुगाया है। उस तालाबके बाँधपर वह जो प्रकाण्ड बरगद खड़ा है वह भी शायद तालाबकी खुदाईके समय ही लगाया गया था। आज भी धूपसे तपा प्यासा किसान मजेसे उस तालाबका पानी पीता है, उस पेड़की छायामें सुस्ताकर जुड़ाता है। परन्तु बहुत दिनोंसे ही रातमें उस बरगदके नीचे 'जमाट-बस्ती' की मशालें जल उठती हैं। जमाट बस्तीकी और भी कई जगहें हैं। मयूराक्षीके बाँधपर अर्जुन पेड़के नीचे कुसुमपुरके मियाँ लोगोंके आमके बगीचेमें भी अँधेरी रातमें ऐसी ही रोशनी जला करती है। लेकिन आजकी रोशनी मौलकिनीके बरगदके नीचे ही जल रही है।

देखून कहा, "मौलकिनीके बरगदतले है भूपाल! रोशनी भी मशालकी ही है।"

भूपालने कहा, "जी हाँ, भल्लाकी जमात है।"

"भल्लाकी जमात?"

"हाँ, बिल्कुल सही! मशाल जलाकर भल्लोंके सिवा और जमात तो जुटती नहीं।"

भल्ला यानी बाग्दी। बंगालमें ये भल्ले बाग्दी शक्तिके लिए बड़े मशहूर हैं। शारीरिक बल, लाठीके दाँवपेच और खास करके भाला चलानेकी निपुणताके लिए किसी समय ये बड़े ही मशहूर थे। शारीरिक बल और लाठी अभी भी पुरानी तौरपर बरकरार है। इनकी कभी इलाकेमें धाक थी। अँगरेजी जमानेमें पठानोंके अभिजात वर्गके नये जागरणके समय नये जातीय अनुशासित समाज-नेताओंके सहयोगसे शासनतन्त्र द्वारा जातिके सुधार कार्योंके साथ-साथ इन भल्ला लोगोंका भी काफी दमन किया था। फिर भी ये लोग बिल्कुल मर नहीं गये। आज केवल अपना अस्तित्व और संस्कृतिको ये यहाँ छिपाकर पालते हैं। औरतोंके साथ चोरी-डाका करनेवाली पुरानी जमात बनाये भागते फिरते हैं। यहाँ अगर इनका पारिश्रमिक मिलता है तो बल और ऐंठाव करीनेसे दिखाते हैं। साधारणतया ये खेतिहर हैं, वाहकका काम ही करते। लेकिन खानाबदोशीमें, विशेषरूपसे बरसातके दिनोंमें जब कहीं अकाल पड़ जाता है, तभी यह दुष्प्रवृत्ति जाग पड़ती है। बसमें परस्पर दुःख-सुखकी बातें करते करते यह डाकेका मनसूबा गाँठ लेते हैं, इसे वे बुरा नहीं समझते। राय छगनू जब पकड़ा ही जाता है तो फल पाता है। भल्ला बाग्दियोंके सिवा भी इस तरहके डकैतीका दल है—काम है डकैती है। और फिर सभी सम्प्रदायोंका भिन्न जुदा दल भी है।

भूपालने कहा, "यह भल्ला बाग्दियोंका दल है। देखिए, भल्ला

बागदियोंका गाँव है। दूसरी जातिके भी कुछ लोग हैं, परन्तु संख्यामें भल्ला ही प्रधान हैं। पहले देखुडियाके ये भल्ला ही पंचग्रामके बाहुबल थे। आज दो सौ सालसे भी ज्यादा पहलेसे ये लुटेरे बन गये हैं।"

ये कई आदमी काठके मारे-से खड़े थे। कभी-कभी धीमे धीमे कुछ बात हो जाती थी, फिर वही सन्नाटा। इधर दूरपर गहरे अन्धकारमें मशालकी रोशनी जल रही थी। देबू नहीं रहा होता, तो ये जरूर अपनी अक्लसे जैसा समझते, करते। देबूकी प्रतीक्षामें ही सब चुप थे। सतीश बाउरीने कहा, "गुरुजी?"

"हूँ!"

'हाँक लगाऊँ?'

"हाँक लगानेसे लोग जाग गये हैं, यह सोचकर वे निशाचर लौट जा सकते हैं। कमसे कम इस गाँवकी तरफ नहीं आयेंगे ऐसा लगता है, लेकिन वे अगर भागते हुए हों तो जरा भी विलम्ब न करके इस गाँवको छोड़कर दूसरे सोये गाँवपर कूद पड़ेंगे।"

भूपालने कहा, "घोष बाबूको खबर करें गुरुजी?"

'श्रीहरिको?"

जी हाँ! उन्होंने बन्दूक ली है। बन्दूक है उनके पास। उनके यहाँ भारू दोस्त है। इसके अलावा घोष बाबू यह समझ लेंगे कि यह हरकत किसकी है!"—भूपाल जरा हँसा।

श्रीहरि आज गाँवका जमींदार है। आज वह गिना माना आदमी है। लेकिन एक समय जब वह छिरू पालके नामसे मशहूर था, तो लूटमारपाटमें वह इन्हीं लोगोंके समान था। बहुतोंका कहना है कि खेती और उधार-कर्ज लगाके जमींदार बननेकी हैरतअंगेज कहानीकी आड़में एक ही निशाचरकी साँठ-गाँठकी बात छिपी है। उस समय छिरू शायद डकैतीका माल भी रखता था। अनिरुद्ध लुहारकी धान चोरीके समय भी छिरू पर एक बार उसके घरकी तलाशी ही हुई थी—उसके पहले भी इसी शकपर और कई मर्तबा तलाशियाँ हो चुकी थीं उसके यहाँ। अभी तो वह जमींदार है, प्रभाववाला आदमी है, अब वह डकैतोंके दलमें नहीं रहता, लेकिन वह ठीक पहचान लेगा कि यह किसका दल है। हो सकता है डाकू देखनेके साथ हाथमें बन्दूक लिये उस रोशनीको देखता हुआ चुपचाप घर पड़ा रहे और जाकर एकाएक बन्दूक चला दे।

देबूने कहा, "इतनी रातको ऐसे दुर्योगमें उसे क्या कष्ट होगा भूपाल! बल्कि एक काम करो। सतीश अपने टोलेका नगाड़ा पिटवा दो। तुम लोगोंके पास है नगाड़ा?'

"जी दो हैं।"

"ठीक है। दो आदमी गाँवके इस-उस छोरपर पीटें।"

नगाड़ेकी आवाज खास करके रातको नगाड़ेकी आवाज इस इलाकेमें आफत आनेका संकेत है। जब मयूराक्षीका बाँध टूटता है तो नगाड़ेकी आवाज होती है। उससे आगेका गाँव जग जाता है और वहाँ भी नगाड़ा बजने लगता है। उससे उसके आगेका गाँव जग जाता है।

डाका पड़नेपर भी नगाड़ा बजनेका नियम था—है भी। परन्तु सभी समय इस नियमका पालन नहीं होता। गाँवमें डकैतोंके आ जानेपर सब भूल जाते हैं। और, नगाड़ेपर चोट पड़नेसे दूसरे गाँवके लोग जगते भी हैं तो मददको नहीं दौड़ते, इसलिए कि पुलिसके झमेलेमें पड़ना पड़ता है पुलिसको इस बातका सबूत देना पड़ता है कि वे डकैती डालने नहीं, डकैतोंको पकड़नेके लिए आये थे।

नगाड़ेकी बात सतीशको अच्छी हो लगी, उसने तुरन्त दलके दो आदमियोंको भेज दिया। लेकिन भूपाल जरा मायूस हुआ। बोला, "आप बाबू बोर्डके मेम्बर हैं। उन्हें खबर नहीं भेजनेसे मुझे फजीहतमें पड़ना पड़ेगा।"

लेकिन श्रीहरिको इस बातकी सूचना देनेके लिए देबूका मन हरगिज राजी न हुआ। जरा देर चुप रहकर बोला, "चलो हम लोग ही जरा आगे बढ़कर देखें।"

"न, और आगे मत जाना!"

एक ओरके नारी-कण्ठसे सभी चौंक उठे। इधर अंधेरे माहौलमें यह नितान्त अप्रत्याशित कौन स्त्री बोली? चुड़ैल? किसी अशरीरी आत्मा?

फिर नारीका गला—"मुसीबतको आते ज्यादा देर नहीं लगती, जमाई!"

देबूने अचरजसे पूछा "कौन? दुर्गा?

"हाँ!"

लगभग सभी एक साथ बोल उठे, "दुर्गा?"

दुर्गाने 'हाँ' कहा और तुरत मजाकसे बोली, "डरो मत! मैं भुतनी नहीं, औरत हूँ! दुर्गा!

"तू कब आयी?"

दुर्गाने कहा, "सतीश भैयाने थानेदारको पुकारा, टार्चसे लोगोंको जगाया। मेरी नींद टूट गयी। फिर घरमें नहीं रह सकी। सबकी नजर बचाकर पीछे-पीछे चली आयी।"

"तेरे कलेजेकी बलिहारी है दुर्गा!"—भूपाल अचम्भित हो गया।

"यह कलेजा न होता तो रात बिरात परसीडण्ट बाबूके बँगलेपर पहुँचाने के लिए थानदारको और कौन औरत मिलती ? और नौकरीकी कफियतसे ही कैसे बच पाता ? और वरशीश भी कस मिलती ?"

दुर्गाके कहनेमें इतिहासका काफी सकेत था। भूपाल लजा गया।

इतनेमें गाँवके दोनो सिरोपर नगाड़ बज उठे। आफतकी इस घनी अँधेरी रातमे डुग डुगकी आवाज दिशा दिशामें फैल गयी। दखूने हाँक लगायी—आ हे ! आ हे ! साथ-ही-साथ सभी हाँक दे उठे—आ हे ! दूरपर अँधेरेमें जो रोशनी हवासे काँपती हुई मानो नाच रही थी वह कुछ अस्वाभाविक-सी तेजीसे काँप उठी। दखून फिर सामूहिक स्वरमें हाँक लगायी—आ हे—आ हे ! गाँवमें इतनेमें ही हलचल हो गयी थी। अँधेरी रातमें सब एक दूसरेको आवाज देने लगे। ऊँची आवाजमें पहरेकी घोषणा होने लगी। यह आवाज थी श्रीहरिके एठत कालू शेखकी। दोनो नगाड़े डुग-डुग बजते ही रहे।

बहारके अँधेरेमें वह जलती मशाल एक बार झुकी और मानो सहसा माटीके अन्दर छिप गयी। उन लोगोंने मशालको ओंधी माटीमें डालकर बुता दिया। और उधर एक नगाड़ा और कहीं बजने लगा।

दखूने कहा तुम घोष बाबूको खबर कर दो भूपाल ! नाहक क्या झमेलेमें पड़ोगे।

पाछेसे किसीका गम्भीर गला सुनाई दिया— भूपाल !'

लालटेन भी आ रही थी एक। भूपाल चौंक उठा—यह तो खुद घोष बाबू ! श्रीहरि करीब आया। हाथ जोड़कर भूपालने कहा "हुजूर !'

क्या बात है ?'

जी बहारमें जमात-बस्ता !'

'कहाँ ?

लगा कि मौलकिनीके बाँधपर। अबतक रोशनी जल रही थी। हमारे नगाड़ेकी आवाज और हाँक सुनकर बुझा दी है।

मुझे खबर क्यों नहीं दी तूने ?

दखूने कहा खबर भेजी ही जा रही थी कि तुम आ गये।

दखू चाचा ?

हाँ !

'हूँ ! कौन लोग थे कुछ पता चला ?

क्या पता चले ? लेकिन मशाल देखकर भूपाल कह रहा था, भल्ला लोग थे।"

बन्दूकमें कारतूस भरकर आसमानकी ओर लगातार दो आवाजें कर दीं श्रीहरिने। गोलीकी तीखी और ऊँची आवाजने अँधेरेका जैसे चीर फाड़ डाला। चैम्बरसे छोड़ी हुई कारतूसोंको निकालकर श्रीहरिने कहा, "देबू चाचा, यह सब तुम लोगोंके विरोधके नारेका नतीजा है।"

देबू भौंचक्का रह गया। हैरान-सा बोला, "विरोधके नारेका नतीजा ?"

"हाँ। देखुड़ियाके तिनकौड़ीकी कारस्तानी है। वह तुम लोगोंका एक पण्डा है। भल्लोंकी जमात बहुत पहले ही टूट चुकी थी। उसीने फिरसे जोड़ी है। मुझे खबर भी मिली। खेतमें काम करते-करते तिनकौड़ीने क्या कहा मालूम है? कहा, लगान बढ़ानेका मजा चखा देंगे। मेरा नाम लेकर कहा, उसे एक दिन मूली-सा मरोड़ दूँगा।"

देबूने धीरे भावसे ही कहा, "इन बातोंकी कोई कीमत नहीं है श्रीहरि। मैंने सुना, तुम भी तो कह रहे हो कि जो ज्यादा होशियारी करेंगे उन्हें गोलीसे उड़ा दोगे।"

इतनेमें पीछे थप्पड़की आवाज हुई, जैसे किसीने किसीको जोरसे चपत लगायी हो। और आवाजके साथ ही वहीं दुर्गा बोल उठी, "मेरा हाथ पकड़कर खींचते हो बदमाश पाजी!"

श्रीहरिने लालटेन उठाया। उसका लठैत कालू दुर्गाके सामने खड़ा था। श्रीहरि जरा हँसकर बोला, "दुर्गा ?"

दुर्गा साँपिन-सा फुफकार उठी, "तुम्हारा आदमी मेरा हाथ पकड़कर खींचता है ?"

श्रीहरिने कालूको डपट दिया, "कालू हट जा यहाँसे!" उसके बाद फिर जरा हँसकर बोला, "इतनी रातको तुम यहाँ कैसे ?" और तुरन्त उसने खुद ही उसका जवाब दे लिया, "ओ, देबू चाचाके साथ आयी हो ?"

देबू कुछ क्षण श्रीहरिकी ओर ताककर दुर्गासे बोला, "चल दुर्गा, घर चल! इतनी रातको यहाँ नहीं ठहरते। चलो, चलो!

सभी लोग चले गये। सिर्फ भूपाल श्रीहरिको छोड़कर नहीं जा सका।

श्रीहरिने कहा, "कल थानेमें डायरी लिखा देना। समझा ?"

"जी अच्छा हुजूर!"

"देखुड़ियाके तिनकौड़ीके नाम मैंने डायरी करा रखी है। दरोगाजीको याद दिला देना। मैं भी कल थानेको जाऊँगा।"

भूपाल भी जातिका बागदी है। उसकी पुलिसकी नौकरी बहुत दिनोंसे हो गयी। उसका मकान यहीं था। जगह भी ठीक मोरलिकी तालके बाँधपर

'यह कन्या न होती तो राज-विराज परमोइन्ट बाबूके बँगलेपर पहुँचाने के लिए धानेश्वरको और कौन योग्य मिलती? और दहेज भी कब मिलती? और नौकरीकी तरक्कियत हो कब पाता?'

इतनी कहनेमें ...की बातें ...था। सुनाई ...गया।

इतनेमें गाँव ...लगा ...पर नगाड़े बज उठे। जाड़ेकी इस घनी अँधेरी रातमें हुए दूसरी आवाज ...में ...लगी। दबूने हाँक लगायी—आ ह! आ ह! आस-पास सभी हाँक दे उठे—आ ह! दूसरपर अँधेरेमें जो ...हवाके ...चली हुई ...नाच रहा थी वह कुछ ...की तरह ...रही। ...फिर ...स्वरमें हाँक लगायी—आ ह—आ ह! गाँवमें इतनेमें ही हलचल हो गयी थी। अँधेरी रातमें सब एक-दूसरेको आवाज देने लगे। ऊँची आवाजमें ... होने लगा। यह आवाज थी श्रीहरिके लठैत ... की। दोनों नगाड़े ... बजते ही रहे।

...रास्तेमें वह जलती मशाल एक बार घूमी और मानो सहसा ...अन्दर छिप गयी। उन लोगोंने मशालकी ...में डालकर बुझा दिया। और उधर एक नगाड़ा और ... बजने लगा।

दबूने कहा 'तुम ... बाबूको खबर कर दो भूपाल! ...

'...किसीका गम्भीर ... सुनाई दिया— भूपाल!'

लालटेन ...आ रहा थी एक। भूपाल चौंक उठा—यह तो खुद ... बाबू! श्रीहरि करीब आया। हाथ जोड़कर भूपालने कहा 'हुजूर!'

'क्या बात है'

'...बहारमें ...-दस्ती!'

'कहाँ'

'...कि ...के बाँधपर। अबतक रास्ता ... रही था। हमारे नगाड़ोंकी आवाज और हाँक सुनकर बुझा दी है।'

'...खबर क्यों नहीं दी तूने'

दबूने कहा 'खबर अभी ही जा रही थी कि तुम आ गये।'

'दबू चाचा'

'हाँ!'

'हूँ! कौन लोग थे कुछ पता चला?'

'कैसे पता चले? लेकिन मशाल देखकर भूपाल कह रहा था, ...लगते थे।'

बन्दूकमें कारतूस भरकर आसमानकी ओर लगातार दो आवाजें कर दी श्रीहरिने। गोलीकी तीखी और ऊँची आवाजने अँधेरेको जैसे चीर-फाड़ डाला। चेम्बरसे छोड़ी हुई कारतूसको निकालकर श्रीहरिने कहा, "देबू चाचा, यह सब तुम लोगोंके विरोधके नारेका नतीजा है।"

देबू भौंचक्का रह गया। हैरान-सा बोला, "विरोधके नारेका नतीजा?"

"हाँ! दलुडियाके तिनकौड़ीकी कारस्तानी है। वह तुम लोगोंका एक पण्डा है। भल्लाकी जमात बहुत पहले ही टूट चुकी थी। उसीने फिरसे जोड़ी है। मुझे खबर भी मिली। खेतमें काम करते-करते तिनकौड़ीने क्या कहा मालूम है? कहा, लगान बढ़ानेका मजा चखा देंगे। मेरा नाम लेकर कहा उसे एक दिन मूली-सा मरोड़ दूँगा।

देबूने धीरे भावसे ही कहा, "इन बातोंकी कोई कीमत नहीं है श्रीहरि! मैंने सुना, तुम भी तो कह रहे हो कि जो ज्यादा होशियारी करेंगे उन्हें गोलीसे उड़ा दोगे!"

इतनेमें पीछे चटाककी आवाज हुई, जैसे किसीने किसीको जोरोंसे चपत लगायी हो। और आवाजके साथ ही वहीं दुर्गा बोल उठी, "मेरा हाथ पकड़कर खींचते हो, कम्बख्त पाजी!"

श्रीहरिने लालटेन उठायी। उसका लठैत कालू दुर्गाके सामने खड़ा था। श्रीहरि जरा हँसकर बोला, "दुर्गा?"

दुर्गा साँपिन-सी फुफकार उठी, "तुम्हारा आदमी मेरा हाथ पकड़कर खींचता है?"

श्रीहरिने कालूको डपट दिया, "कालू हट जा यहाँसे!" उसके बाद फिर जरा हँसकर बोला, "इतनी रातको तुम यहाँ कैसे?" और तुरन्त उसने खुद ही उसका जवाब ढूँढ़ लिया, "ओ, देबू चाचाके साथ आयी हो?"

देबू कुछ क्षण श्रीहरिकी ओर ताककर दुर्गासे बोला, "चल दुर्गा, घर चल! इतनी रातको मैदानमें नहीं घूमते। सतीश, चलो!"

सभी लोग चले गये। सिर्फ भूपाल श्रीहरिको छोड़कर नहीं जा सका।

श्रीहरिने कहा, "कल थानेमें डायरी लिखा देना! समझा?"

"जी, जैसा हुकुम!"

"दलुडियाके तिनकौड़ीके नाम मैं डायरी करा रहा हूँ। दरोगाजीको साथ लिवा देना। मैं भी कल थानेको जाऊँगा।"

भूपाल भी आखिरकार बागदी है। उसकी पुलिसकी नौकरी बहुत दिनोंकी हो गयी। उसका अन्दाज सही था। जगह भी ठीक मौलविनाके तालाबके बाँधपर

बरगदके नीचे और जो लोग जुटे थे वे भी भल्ला बागनी थे। लेकिन अगुआ तिनकौड़ी न था। श्रीहरिका अन्दाज गलत भी था, कुछ कारण भी था। तिनकौड़ी जातिका सद्गोप है। श्रीहरिसे दूरका रिश्ता भी पड़ता है। लेकिन श्रीहरिसे बहुत दिनोंसे अनबन है। तिनकौड़ी बड़ा गँवार है। दुनियामें वह किसीके भी आगे किसी खातिर सिर नहीं झुकाता। कंकनाके रूपपति बाबूसे लेकर श्रीहरि तक और उधर साहब-सूबासे लेकर दरोगा तक किसीको वह सिर नवाकर हाथ नहीं जोड़ता। इसके लिए उसे बहुत-बहुत झेलना पड़ा है।

देखुड़ियाके भल्ला बागदियोंका वह नेता जरूर है, लेकिन उनकी डकैती या चोरीसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं। इसके लिए वह भल्लाकी लानत मलामत करता है बहुत बार आपेसे बाहर होकर मार भी बैठता है। उसकी वह फजीहत, वह मार भल्ला लोग सहते हैं क्योंकि उनकी पापकी कमाईसे कोई नाता न रखते हुए भी उन लोगोंसे उसका अटूट सम्बन्ध है। आड़में वह हरगिज कभी उन्हें नहीं छोड़ता। डकैतीके मामलेमें बी० एल० केसमें वही उन लोगोंका सबसे बड़ा मददगार है, मामले मुकदमोंकी देख भाल और पैरवी वही करता है। सब-कुछ उनकी पापकी कमाईसे ही करता है, लेकिन कभी पाई पैसा भी मोलभाव नहीं होता। हाँ पैरवीके लिए जाता है तो उन्हीं पैसोंसे थोड़ा-बहुत भला-बुरा खाता है बीड़ाके बदले सिगरेट खरीदता है, और दूकानपर शराब भी पीता है। इससे ज्यादा और कुछ भी नहीं। जो बच जाता है, उसकी पाई-पाई लौटा देता है। सिर्फ इसीलिए लोगोंका यह खयाल है कि भल्लोंके इन पाप कर्मोंका भी नेता तिनकौड़ी ही है। पुलिसमें उसका नाम बहुत जगह दर्ज है। भल्लोंके प्रायः हर मामलेमें पुलिसने तिनकौड़ीको भी लपेटनेकी कोशिश की है, पर किसी भी तरहसे वह कारगर न हो सकी। भल्लोंमें ऐसे लोग बहुत कम हैं जो कबूल कर लें। कभी-कभार निरा कम उमरका नया हो कोई शायद जिसने पुलिसके डर या लालचसे कुछ स्वीकार कर लिया हो लेकिन किसीकी जबानसे भी कभी तिनकौड़ीका नाम नहीं निकला।

बी० एल० केस एसेमें पुलिसका एक अचूक हथियार है। लेकिन बी० एल० केस यानी बैड लाइवलीहुड' या गलत उपायोंसे रोटी कमानेके इस जुर्ममें तिनकौड़ीकी बाबत एक अड़चन आती थी—वह थी उसकी अपनी जोत जमा। जोत-जमा अच्छा ही था उसका। और गवार होते हुए भी तिनकौड़ी अपने आपमें खेतिहर बड़ा अच्छा है—इस बातसे इलाकेका कोई गवाह इनकार नहीं कर सका। इस बातके ब्रह्मास्त्र से कुछ प्रमाण हैं। जिलेके सदरमें कृषि और पशुओंकी जो प्रदर्शनी हुआ करती है उसमें गोभी, मूली आदिके लिए तिनकौड़ी

बहुत बार इनाम पा चुका है, प्रमाण-पत्र पा चुका है। दो-एक बार तगमा भी मिला है और, दुधारू गायके लिए भी प्रमाण-पत्र मिल चुके हैं। वह इन वस्तुओंको पेश कर देता है।

इतने दिनोंके बाद अब पुलिसकी कोशिश कारगर होनेकी आयी इसलिए कि ऐसा उपजाऊ हुए भी उसकी आसपास जोत जमा खतम हो आयी है, पचीस बीघेमें-से महज पाँच बीघे बच रहे हैं।

एक समय तिनकौड़ीको ऐसी प्रेरणा हुई थी कि अपने गाँवके अघोरेश्वर पेड़ तले रहनेवाले बाबा महादेवका एक शिवालय बनवा देंगे। उस समय उनके हाथमें कुछ रुपये भी आये थे। उनके गाँवकी कुछ सीमा मयूराक्षीके उस पार-तक पड़ी थी, जब सरकारने एक नया बाँध बनानेके लिए उस सीमाकी लगभग सारी जमीन एक सम्पत्ति सरकारके भूमि-अर्जन कानूनके अनुसार खरीद ली। उस क्षेत्रमें तिनकौड़ीकी भी कुछ जमीन थी, कुछ बाबा महादेवकी भी थी। बाबाकी जमीनकी कीमत बाबाके मालिक जमींदारने ले ली। खालि बाद रहाउ बहुत नहीं थी—कुल दो सौ रुपये। तिनकौड़ीको चारेक सौ मिले। इसके अलावा उसके घरमें धान भी काफी था। तिनकौड़ी उत्साहित होकर पेड़ तले रहनेवाले बाबाको गृहस्वामी बनानेके जतनमें जी-जानसे जुट गया। उसने जमींदारसे जाकर कहा, "बाबाकी जमीनका जो दाम मिला है उससे बाबाके सिरपर थोड़ी छाँह तैयार करा दी जाये।" जमींदारने कहा, "दो सौ रुपयोंमें शिवालय नहीं बनता।"

तिनकौड़ीको अदम्य उत्साह था। वह बोला, "इसके लिए हम चन्दा इकट्ठा करेंगे। कुछ आप दें। अलावा लोग मेहनत-मजूरी करके देंगे। किसी तरह हो ही जायगा, आप शुरू कर दें।"

जमींदार बाबू, "पहले तुम लोग श्रीगणेश करो, चन्दा वसूल... उसके बाद मैं भी रुपया दूँगा।'"

तिनकौड़ीने यही बात मान ली। कल्ला लोगोंके साथ शुरू कर दिया काम। कोई तीन हजार ईंटें पाथ दीं। और जाकर जमींदारसे कहा, 'ईंटें पकानेके लिए कोयला चाहिए। रुपये दीजिए!'

जमींदारने उसे भरोसा दिया, 'सीधे कोठीसे ही कोयला मँगवा देंगे।

कोयला आनेके पहले ही बारिश शुरू हो गयी। तीन हजार ईंटें गलकर फिर मिट्टीके ढेर बन गयीं। उसके बाद बार-बार तिनकौड़ीने चन्दा जोड़ा, पर कोयला नहीं मिल सका। मारे गुस्सेके जमींदारके पास जा धमका। कहा, नुकसान आपको भरना पड़ेगा।

जमीदारने तुरन्त उसे वहाँसे निकलवा दिया। चिढ़कर तिनकौड़ीने देवोत्तरके रुपयेके लिए जमीदारपर नालिश कर दी। दो सौ रुपये वसूलनेके लिए मुंसिफी कोर्टसे जजी तक लड़नेमें उसने साढ़े-तीन सौ रुपये खर्च किये। यहींसे उसकी ज़मीन बिकनी शुरू हुई। रुपये वसूल नहीं हुए। ऊपरसे जमीदारने मुकदमेका खर्च अदा कर लिया। लोगोंने तिनकौड़ीकी बेवकूफ़ीकी बेहद निन्दा की, पर तिनकौड़ीने इसके लिए कभी अफसोस नहीं किया। वह जैसा था, वैसा ही रहा, सिर्फ महादेवको प्रणाम करना छोड़ दिया। आजकल जितनी भी बार उधरसे गुज़रता है, बाबाको अँगूठा दिखा देता है।

देवाधिदेवके उद्धारकी इस चेष्टाके बाद भी जो बच रहा था, उससे भी उसकी ज़िन्दगी मजेमें चल जाती। लेकिन ठीक इसीके बाद शिवू दरोगाकी नाकपर घूँसा मारनेके मुकदमेमें उसे लगभग तीन बीघा जमीन और बचनी पड़ी। शिवू दरोगा उसके घरकी तलाशी लेने आया था। जब आपत्तिजनक कोई चीज नहीं मिली तो शिवू दरोगाके सिरपर खून सवार हो गया। खिसिया कर उसने तिनकौड़ाके घरमें चावल-दाल नमक-तेल जो कुछ भी सामान था बिखेरकर बराबर कर दिया। तलाशी लेनेमें तिनकौड़ीने कोई एतराज नहीं किया बल्कि वह हँस रहा था। लेकिन शिवू दरोगाका यह प्रलयकर ताण्डव देखकर वह भी पागल हो उठा। आव देखा न ताव, जमा दिया दरोगाकी नाकपर एक घूँसा। बड़ा सख्त घूँसा—दरोगाकी नाकपर-का ऐनक नाकको चूरते हुए उसपर गड़ गया। वह दाग दरोगाकी नाकपर आज भी बसा ही है। उसीपर पुलिसने उसपर मुकदमा किया। लगे लगे तिनकौड़ीने भी गैरकानूनी हरकतके लिए दरोगापर नालिश की। गाँवके सभी मल्लाने तिनकौड़ीकी ओर से गवाही दी बेखौफ होकर दरोगाके जोर जुल्मकी बात कह दी। पुलिस साहबने मामलेका मेट माट कर दिया। लेकिन तबतक तिनकौड़ीका और भी तीन बीघा बिक चुका था।

इस समय तिनकौड़ीपर विरोध आन्दोलनकी धुन सवार हो गयी। फिर भी भल्लोको लेकर श्रीहरिके यहाँ डाका डालने-जैसी मनोवृत्ति उसकी नहीं है। खेतपर उसने यह कहा जरूर था कि मूलीकी तरह एक दिन छिरूकी मरोड़ दूँगा। लेकिन वह महज़ बातकी बात थी। उसकी बातका ढंग-ढर्रा ही ऐसा है। यहाँतक कि अपना स्त्रीके भी जरा जोरसे बोलनेपर वह चिल्ला उठता है—'गले पर लात रखकर वह लताड़ मारूँगा कि

इस भयावना रातमें नगाड़ेकी चोट सुनकर तिनकौड़ीकी बीबी जग गयी थी। तिनकौड़ीकी नींद गजबकी है। खा-पीकर बिस्तरपर लेटते ही उसकी आँखें

मुँद जाती है और दो-तीन ही मिनिटके अन्दर उसकी नाक बजने लगती है। उसकी नाकका बजना भी कुछ ऐसा-वैसा नहीं है। जितनी ही अजीब उसकी आवाज होती है उतना ही गुरुगम्भीर होता है उसका गर्जन। रातकी गाँवकी सुनसान गलीमें यह आवाज तिनकौड़ीके मकानसे कमसे कम आधी रस्सी दूर तक सुनाई पड़ती है। एक बार इस थानेका नया जमादार जब पहले दिन देखु टियाकी 'राउण्ड' में निकला तो तिनकौड़ीके घरसे कोई आधी रस्सीके फ़ासलेपर चौकपर ठिठक गया। चौकीदारसे कहा, "ऐ, रुक जा!"

चौकीदार कुछ समझ नहीं सका। उसके लिए यह कोई नयी बात नहीं थी। उसने अकचकाकर पूछा, "जी?"

जमादार दो क़दम पीछे हटकर चारों तरफ़ देखता हुआ यह निश्चय करने की कोशिश कर रहा था कि यह आवाज कहाँसे आ रही है। दाँत पीसकर बोला, "साँप! हरामजादा, सुन नहीं रहा है, गुर्रा रहा है!" उसके बाद बोला, "शायद साँप-नेवलेकी लड़ाई हो रही है। सुन रहा है?"

चौकीदार अब समझा। हँसकर बोला "जी नहीं!"

"नहीं? यह थप्पड़ जमाऊँगा कि..."

"जी, यह तिनकौड़ीकी नाक बज रही है।"

"नाक बज रही है?"

"जी हाँ! तिनकौड़ी मण्डलकी!"

आँखें फाड़कर दरोग़ाने फिर एक बार पूछा, "नाक बज रही है?"

अबकी चौकीदारसे हँसी रोकते न बना। खुक-खुक करता हँसते हुए उसने कहा, "जी हाँ! नाक बज रही है!"

"कौन तिनकौड़ी? जो पुलिस सामायन है?"

"जी!"

"रोज उसे पुकारता है?"

चौकीदार चुप रह गया। वह उसे कभी नहीं पुकारता है। उसकी नाकका बजना ही उसके घरमें हाजिरीका प्रमाण [illegible] यही सुनकर चला जाता है।

दरोग़ाने कहा — "रहने दो! कम्बख्तको मत पुकारा करो। जिस दिन नाक न बजे उस दिन थाना।" और कुछ देर बाद बोला, "साला बड़ा गुणी मालूम होता है रे!"

ऐसी नींद है तिनकौड़ीकी। जाड़ा हो या धूप नहीं। लेकिन आज इतना पढ़ना

रातमें नगाड़की आवाज सुनकर उसकी स्त्री लक्ष्मीमणि स्थिर नहीं रह सकी। खेतिहरकी बेटी—वह इस तरहसे नगाड़ा पिटनेका मतलब समझती है। उसे लगा कि मयूराक्षीमें बाढ़ आ गयी है। तिनकौड़ीके एक लड़का है, एक लड़की। लड़कीकी उम्र कोई सोलह साल है लड़केकी चौदह। उनकी भी नींद टूट गयी थी। लड़की माँके ही साथ सोया करती है। लड़का सोता है बगलके कमरेमें। तिनकौड़ी बाहरके बरामदेपर सोया रहता है। लाठी और दाव उसके बगलमें रखा रहता है।

दरवाजा खोलकर लक्ष्मीमणि बाहर आयी। ठेलकर तिनकौड़ीको जगाया—"अजी ओ, सुनते हो, ओ जी ?"

ठेलनेसे तिनकौड़ी चिल्लाकर उठ बैठा—"ऐ कौन है ?"—और झट उसने दाव उठा लेनेके लिए हाथ बढ़ाया।

लक्ष्मीमणि जरा पीछे हट गयी, बोली, "अरे, मैं हूँ, मैं। अजी

"कौन ? लक्ष्मी ?"

"हाँ।

"क्या है ?"

"नगाड़ा बज रहा है। लगता है बाढ़ आयी है।"

"बाढ़ ?

"वह सुनो नगाड़ा।"

तिनकौड़ीने कान लगाकर सुना कहा "हूँ।

लक्ष्मी बोली "घर-द्वार सँभालें ?"

तिनकौड़ीने जवाब नहीं दिया। इस मौकेमें ही वह बरामदेके छप्परपर चढ़ गया वहाँसे कोठेके छप्परपर और फिर ध्यानसे सुनने लगा। नगाड़ा बज रहा था। हाँकें भी लग रही थीं। मगर यह हाँक तो बाढ़की नहीं। आ है!—यह हाँक तो चौकीदारों जैसी है। मयूराक्षीसे तो कोई आवाज भी नहीं आ रही है। नदीमें गरज नहीं है। फिर तो डकैतीके खतरेका नगाड़ा पिट रहा है। कौन है ? कौन हैं ये ?

उसके गाँवके गलेपर भी चौकीदारने हाँक लगायी—"आ है!"

तिनकौड़ीने बार बार अपने ही तईं गरदन हिलाकर कहा "हुँ! हुँ! हुँ!" डकैतीके खौफसे सारे गाँवमें नगाड़ा बज रहा है और देखुड़ियाके मल्लोंमें सुग

सुगाहट भी नहीं। वे लोग लाठी लेकर नहीं निकले हैं—बदमाश। उसने छप्परपरसे ही हाँक मारी—आ है।

चौकीदारने पूछा 'मण्डलजी ?'

"हाँ, ठहर जा।'—तिनकौड़ी कोठेके छप्परसे छलाँग मारकर बरामदेके छप्परपर आया, वहाँसे उछलकर एकबारगी आँगनमें। अब उसे देर नहीं बरदाश्त हो रही थी। दरवाजा खोलकर वह बाहर निकला। पूछा, "मल्ला टोलेका कौन-कौन नहीं है रे? पुकारकर देखा है?

चौकीदार जातिका मल्ला ही था। उसने धीमे धीमे कहा, 'राम तो जरूर ही नहीं है। गोविन्द रंगलल्वा (रंगलाल) विन्दावन (वृन्दावन) तारनी—ये सब भी नहीं है। इनके सिवा और लोग घरपर ही है।'

आज तो कोई रौण्ड में नहीं जायेगा थानेसे?

'जी नहीं।"

तिनकौड़ी आप ही आप दाँत पीसने लगा। उधर जमे हुए अन्धकारको चीरती हुई दो-दो गोलियाँ छूटनेकी आवाज मयूराक्षीके किनारेसे होकर निकल गयी। तिनकौड़ीने चकित होकर कहा, बन्दूककी आवाज?

जी!'

पीछेसे तिनकौड़ीके बेटेने पुकारा—'बाबूजी!

बेटा गौर और बेटी सोना—बापको दोनों बड़े प्यारे हैं। गौर मिडिल स्कूलमें पढ़ता है बापके साथ खेतीका काम भी करता है। लड़केमें बड़ी धार लगी है, नहीं तो तिनकौड़ी उसे बी० ए० एम० ए० तक पढ़ाता। बीच-बीचमें अफसोस करके कहता है, काश गौर मेरी बेटी और सोना बेटा होती!—तब ही सोना बड़ा अक्लमन्द लड़का है। लोअर प्रायमरीका इम्तहान देकर उसने दो रुपयेकी माहवारी छात्रवृत्ति पायी थी। परन्तु और आगे बढ़नेकी जुगत नहीं बैठी उसकी। तो भी वह अपने बड़े भाईकी किताबें लेकर आज भी पढ़ा करती है घरके काम धन्धोंमें माँका हाथ भी बँटाती है। देखनेमें बहुत ही अच्छी लड़की है मगर अभागिनी है। सात ही सालकी उम्रमें विधवा हो गया है। तिनकौड़ीकी यह जो क्षुब्ध कामना है उसमें गहरा यह दुःख भी छिपा हुआ है। सोना अगर लड़का होती और गौर होता लड़की तो उसे बेटीके वैधव्यका दुःख नहीं सहना पड़ता। गौर आखिर दोनोंकी किस्मत लेकर तो पैदा नहीं होता। बेटा गौर उसे बड़ा प्यारा था। वह बापके ही समान बलवान है। रात रहते ही बापके साथ मैदान जाता है नौ बजे तक उसका मदद करता है उसके बाद नहाकर खाकर कसबेके स्कूलमें पढ़ने जाता है। यादुआका स्कूल है, इसलिए तिनकौड़ीने

ने उसे कनाके स्कूलमें नहीं दाखिल कराया। जो बाबू लोग देवनाकी भी जायदाद हड़प लेते हैं, उनके स्कूलमें पढ़नेसे बच्चा परायी दौलत हजम करना सीखेगा—तिनकौड़ीका ऐसा खयाल है! चार बजे स्कूलसे लौटकर गौर फिर शाम तक बापकी सहायता करता है। शामके बाद आकर लालटेन जलाकर दस बजे रात तक पढ़ता है।

लड़केकी पुकारपर तिनकौड़ीने कहा "क्या है बेटे?"

"घर-द्वार सँभालना नहीं होगा?"

"नहीं! तुम लोग सो जाओ जाकर, मैं आया! डरनेकी कोई बात नहीं है!"—फिर चौकीदार रतनसे उसने कहा "चल, रतन!"

गाँवके बाहर बहारके किनारे खड़ा होकर तिनकौड़ी बोला, "रतन!"

'जी!"

"सन् अठारहकी बाढ़ याद है?"

सन् अठारहकी बाढ़ मयूराक्षीके किनारे बसनेवाले नहीं भूल सकते। जिन्होंने वह बाढ़ अपनी आँखों देखी है, वे तो नहीं ही भूलेंगे जिन्होंने देखी नहीं है उन्होंने कहानी सुनी है और वह कहानी भूलनेकी नहीं। रतन बागदीके लिए सन अठारहकी बाढ़ उसके जीवनकी एक विशेष घटना है। वह बाढ़ रातको आयी थी और बहुत अचानक आयी थी। उस समय रतनका घर गाँवके छोरपर था—मयूराक्षीके बहुत नजदीक। बाढ़ ऐसी अचानक आयी कि रतनके लिए महज बाल-बच्चोंके साथ खाली हाथ भी भाग सकना सम्भव नहीं हुआ। लाचार उसे घरके छप्परपर चढ़कर बैठना पड़ा था। भारको घर बह गया और छप्पर बाढ़में बह चला। भयंकर बहाव! रतन खुद तो तैरकर अपनी जान बचा सकता था, लेकिन बीवी-बेटेको लेकर उस धारामें तैरना उसके वशकी बात न थी। उस रोज़ तिनकौड़ी और वह राम भल्ला बहुत-सी चमड़ेकी रस्सियाँ बाँधकर एक एक करके तैरते हुए आये थे और रस्सीसे उस छप्परको बाँधा था। यही नहीं, ऐन वक्तपर रतनकी बीवी डगमगाती हुई बाढ़के पानीमें गिर पड़ी। राम भल्ला और तिनकौड़ीने झट से पानीमें कूदकर उसे भी खींचकर निकाला था। वह बात रतन भूल सकता है भला! रातके अँधेरेमें हाथ बढ़ाकर उसने तिनकौड़ीके पाँव छुए और उस हाथको अपने कपालसे लगाकर कहा, *'भला वह मैं भूल सकता हूँ मण्डलजी? आप तो—"*

'अपनी बात नहीं, मैं तो रामाकी कह रहा हूँ। सही-सलामत लौट आये वह!'

रतनने कहा 'वह देखिए, मेड़ोपर-से काले-काले सब जा रहे हैं वे।"

पिछली रातकी उस घटनाके बाद श्रीहरि घोषने बाकी रात जगकर बिता दी। जमात बस्ती देखकर वह सोचमें पड़ गया। उसे लग रहा था कि पंचग्रामके सारे लोग षड्यन्त्र रचकर उसे घेर लेना चाहते हैं। ये सब उसे पीसकर मार डालना चाहते हैं। दूसरोंकी उन्नतिसे कुढ़नेवाले ये डाही लोग। पिछले जन्मके पुण्य और इस जन्मके कर्मफलसे लक्ष्मीने उसपर कृपा की है। उसके घरमें उन्होंने अपने चरणोंकी धूल दी है।—यह कसूर क्या उसीका है? उसने क्या लक्ष्मीजीको औरोंके यहाँ जानेको मना किया है? इस इलाकेके लिए तो उसने कुछ कम नहीं किया है। प्रायमरी स्कूलका भवन बनवा दिया है। सड़क बनवा दी है, कुआँ बनवाया है, तालाब खुदवाया है, मिट्टीके चण्डीमण्डपको उसीने पक्का बनवाया है, लोगोंके माता पिताके श्राद्धमें कन्या-दानमें, अभावमें वही तो रुपया कर्ज देता है धान देता है! ये एहसान फरामोश यह भी नहीं सोचते। उसके खिलाफ कौन क्या कहता है श्रीहरि उन सबकी जानकारी रखता है।

ये कृतघ्न लोग कहते हैं—स्कूलका भवन तो बोर्ड ही बनवा देता। आखिर हम लोग भी तो टैक्स देते हैं।

अरे मूर्खो! टैक्सके रुपये ही कितने मिलते हैं?

कहते हैं—न होता तो हमारे बच्चे पेड़ तले ही पढ़ते। यही ठीक था।

रास्तेके बारेमें भी ये यही कहते हैं।

चण्डीमण्डपके बारेमें कहते हैं—वह तो श्रीहरिकी कचहरी है।

कचहरी नहीं श्रीहरि घोषकी ठाकुरबाड़ी। चण्डीमण्डप जब जमींदारका है और श्रीहरिने जब गाँवका जमींदारी-स्वत्व खरीदा है तो वह हजार बार उसका है। कानूनने जब उसे स्वत्व दिया है और सरकार जब उस स्वत्वका रक्षक है, तो उसे उखाड़नेवाले तुम कौन होते हो? देबू घोषके यहाँकी बैठकमें न्यायरत्नके पोतेने 'न्याय' यह कहा है कि जब चण्डीमण्डप बना तो जमींदार ही नहीं था। उस गाँवके लोगोंने बनवाया था गाँववालोंकी ही सम्पत्ति था चण्डीमण्डप। न्यायरत्नजी देवता हैं मगर उनके इस पोतेको पर उग आये हैं। पुलिस उसके ऊपर कसकर नजर रखती है। चण्डीमण्डप अगर गाँववालोंका था तो उन लोगोंने उसपर जमींदारका दखल क्यों होने दिया?

तालाब श्रीहरिने खुदवाया, लोग उसका पानी पीते है, पर कहते यह हैं कि पानी श्रीहरिका थोडे ही है। पानी तो मेघका है। श्रीहरिने मछली खानेके लिए पोखर खुदवाया है, आम कटहल खानेके लिए चारों तरफ बगीचे लगवाये है—हम लोगोंके लिए नही। अगर मना करे, तो हम पोखरेका पानी नही पियेंगे।

उन्हें मना ही कर देना चाहिए। नही ऐसा वह कभी नही करेगा। अगला जन्म भी तो है। आनेवाले जन्ममें वह इस पुण्यके साथ पैदा होगा। अगले जन्ममें वह राजा होगा।

कर्जकी बाबत लोग कहते है—कर्ज देता है सूद लेता है।

गजब है! यह बात एहसान फरामोशोंके ही योग्य है। अजी जनाब उस आफतकी घडीमें देता कौन है? कर्ज रकम ही सूद देना पडता है।—यही कानूनकी बात है यही शास्त्रका नियम है। हुँ पाखण्डी अकृतज्ञ लोग!

सोचते-सोचते श्रीहरि तीन चिलम तम्बाकू पी गया। आजकल उसे चिलम खुद नही चढानी पडती है उसकी बीबी भी नही चढाती नौकर रख लिया है, वही चढाता है।

सवेरे ही वह जक्शन रवाना हुआ। थानेमें बीती रातकी जमाट बस्तीकी डायरी लिखा देनी थी। किसी औरसे यह काम करानेको मन नही माना। उसका कारिन्दा आदमी पक्का है। फिर भी उसने खुद जाना ही ठीक समझा। दुनियामें धार बहुत सी चीजोंको काटती है, पर भार नही होनेसे बहुत बार धारसे काम नही होता। मामूली चाटसे नाली काटी जा सकती है, लेकिन बलिदानके लिए भारी दावकी जरूरत पडती है। खुद अपने जानेसे दरोगा बातको जितना महत्त्व देगा कारिन्देके जानेसे उसके सौ हिस्सेका एक हिस्सा भी नही देगा।

टप्पर लगाकर बैलगाडी तयार की गयी। आजकल वह जक्शन तक पैदल शायद ही जाता-आता है। गाडीके साथ चला कालू शेख। कालू शेखने पगडी बाँधी। गाडीपर श्रीहरिने कुछ आम, एक धौद मतबान केला और कुछ अच्छा कटहल रख लिया। बडे-बडे और तन्दुरुस्त दोनो बैल देखनेमें ठीक एक-से थे। दोनोका रंग सफेद, गलेमें कौडियोंकी मालाके साथ छोटी छोटी घण्टिया। टुन टुन घण्टी बजाते हुए दोनो बैल तेजीसे बढ चले।

श्रीहरि सोचने लगा कि डायरीमें किस किसका नाम लिखाये? तिनकौडीका नाम तो देना ही पडेगा। थानेका दरोगा खुद भी वह नाम कहेगा। शायद पुलिसवाले फिरसे तिनकौडीपर बी०एल० केस करनेकी तयारी कर रहे

हैं। दरोगाने खुद कहा है वह आदमी अपने-आप डकैत न भी हो, डकैतोंका माल न भी रखता हो तो भी जब वह भल्लाकी पैरवी करता है, तो उसकी साँठ-गाँठ जरूर होगी उनसे।

भल्लामें राम भल्ला ही नेता। दूसरे भल्लोंका नाम छानबीनसे बाद पुलिस खुद निकालेगी। और किसका नाम? रहम खाँका? उसपर भी पुलिसकी निगाह है। भल्ला न होनेसे भल्ला डकैतोंके साथ नहीं रहे ऐसी कोई बात नहीं। रयतोंके विरोध-आन्दोलनमें मुसलमानोंमें उसी आदमीको सबसे ज्यादा उत्साह है। और वह आदमी भी बाहियात है। लिहाजा हड़तालियोंमें जो खूँखार हैं, उन लोगोंने इस मौकेसे अगर उसके घर डाका डालनेकी सोची हो तो उनसे रहमका लगाव रहना कुछ अजीब नहीं है। भल्ला प्रधान डाकुओंमें मुसलमान भी रहते हैं मुसलमान प्रधान डाकू-दलमें दो एक भल्लाके होनेका भी पता चला है। तिनकौड़ी, रहम और——?

गालेमें एक हलचल होने लगनेसे उसकी चिन्ताका सूत्र बिखर गया। आह भरके सोच जाहिर करते ही उसने देखा कि गाली रास्तेके मोड़पर मुड़ रही है। उसके चेहरेपर हँसी फूटी——अच्छे बैलोंका लक्षण ही यही है। रुपये भी तो कुछ कम नहीं लगे। जोड़ेका दाम साढ़े-तीन सौ रुपये। उसके मनकी बात पूरी न हो सकी। सामने ही अनिरुद्ध लुहारका बरामदा था बरामदेपर लुहार-बहू मोटी-सी गाल्ले एक लड़केको छातीसे कमरपर चिपकाये हुए है। वह लड़का जी जान से अपनेको छुड़ाना लिए एक हाथसे उसका गाटा पकड़े हुए है और दूसरे हाथसे उसे ठेल रहा है। लुहार-बहूके माथेपर घूँघट नहीं है देहका आवरण भी अस्त-व्यस्त आँखोंमें पागल-सी नजर दुबला पीला मुखड़ा लहूके उच्छ्वाससे थम थम कर रहा है।

श्रीहरिका कलेजा एक बार जोर-जोरसे धड़क उठा। उसके दिलमें बहुत दिन पहलेका छिपा हुआ उस उसकी बहुत दिनोंकी दबी वासना उमगकर उच्छृंखल हो उठी। उसने तुरन्त अपनेको जब्त किया। जमींदार है वह, आना माना आदमी है और अब वह पाप नहीं करता। पापके घर लक्ष्मी नहीं रहती। फिर भी वह अस्त-व्यस्त घूँघट रहित पद्मको उसका देखना रहा।

इतनेमें पद्मकी नजर भी उसपर पड़ी बल्कि गाड़ी पहुँची गुम गालेकी तरफ जो देखा कि श्रीहरिपर नजर पड़ी कभी छिपा पाले उस एकदम मुँह मुड़ा है। उसने तुरन्त उस लड़केको छोड़ दिया। वह लड़का बड़ी दुर्निगा था। सबेरे यह बच्चा धीरे आया था। आज उसने पद्मसे पी। आनेके दिन उस सबेरे मारे आयी। भार आनकी यज्ञ ना पी। पहले पहल बाहर दिन

पंचग्राम

खाने-पीनेकी खासी तयारी करता थो। लेकिन अबकी कुछ हुआ हवाया नहीं था—यह देखकर वह भागा जा रहा था। मुँहमे कुछ वाला नही। शायद शाम आ गयी थी। नज़रबद यतीन बाबू जब यहाँ था, तो फतिंगाको भी भरपूर खानेको मिलता था। इसीलिए वह यहा पडा रहता था। आज माँजीने बारम्बार अनुरोध किया यही रहनेका और अतम उसे या जकडकर पकड लिया था।

छुटकारा जो मिला, फतिगा बरामदेसे कूदकर बा-बो करके भागा। पदम अपनेको सँभालकर अदर चली गयी। बलगाडी भी वहाँसे पार हो गयी।

श्रीहरिके जीमें बहुत-सी बातें आयी। अनिरुद्ध लुहार शतान ह। अच्छा ही हुआ। उसे जेल काटनी पडी और अतम गाँव घर छोडकर भागना पडा। उस समय लुहारिनपर श्रीहरिकी लोभी नजर थी, आज भी शायद। लेकिन इस औरतका चलता कसे ▮। सुना ह देवू धान देता ह। क्यो? देवू क्या धान देता ह? और यह लेती ही क्यो ह। धान तो वह भी दे सकता ह। बहुतोंको वह धान दान देता ह। लेकिन लुहार-बहू उसका धान कभी नही लेती। और उसीसे क्या, देवूके सिवा वह किसीसे भी धान नही लेगी।

गाँवके बाहर, कक्ना और उसके गाँवके बीचमें एक बड़ा-सा नाला पडता ह। दोनो गावोकी बरसातका पानी उसी नालेसे होकर मयूराक्षीमें जाकर गिरता ह। ज्यादा वर्षा हानेसे यह नाला ही एक छोटी मोटी नदी बन जाता ह। उस समय इस नालेकी वजहसे एक गाँवसे दूसरे गाँव जाना एक दुष्कर काम हो जाता ह। फिलहाल जक्शन शहरके कलवालाने, गद्दीवालाने उसपर एक पुलिया बना देनेके लिए यूनियन बोर्डसे कहा ह। उन लोगोंने काफी मददका वचन दिया ह। वह पुलिया बन जानेसे बरसातके दिनोमे भी इधरका धान चावल रेल पुलसे होकर जक्शन जा सकेगा।

श्रीहरिने अपने मनमें ही कहा 'मै इसमें अडचन डालूँगा। देखता हूँ कि पुलिया कसे बनती ह। म इन गाववालोको खाने बिना मारूँगा।

इस समय भी नालेमें कमर भर पानी तेज धारसे बह रहा ह। कल शायद तरने लायक पानी हुआ था। नालेके दोना तरफ केवाल-सी माटी जम गयी ह। गाडी नालेमें उतरी। उन माटी जमी जगहामें घुटने भर कादो था। श्रीहरिके बैल मजबूत ह गाडीको खींचकर पार ले गये। इस कीचमें कम्बख्त किसानाके हड्डी पजर निकले बलाको गाडियाँ जब फँसेंगी तो कमसे कम एक बेला तो यही बीत जायेगी। वे लाग खुद भी पहियोमें कधा लगाकर गाडी ठेलेंगे, पीठ धनुप-सी ऐंठ जायेगी कादा पसीने और पानीसे भूत-जसी शक्ल बन जायेगी।—श्री हरिका चेहरा गम्भीरता भरे क्रोधसे थमथम करने लगा।

नाला पार करके कुछ ही दूर जानेपर रेल-पुल। श्रीहरिकी गाडी उस पुल-पर पहुंची। उत्तर दक्षिण लम्बा, पुराने युगका खिलानवाला पुल। एक तरफ पत्थरके असंख्य टुकडोंके बीचसे रेलकी लाइन चली गयी है लाइनके किनारे किनारे दूसरी तरफ आदमियोंके चलनेका रास्ता। श्रीहरिके दोनों जवान बैल लाइन देखकर चौंक उठे फास फास करके बारबार गरदन हिलाने लगे। छोटी ही उम्रसे गँवई-गाँवमें किसी गरीबके यहां, माटीके घर माटीके नम रास्तेपर शान्त टाल्के सूनेपनमें वे पले अभी कुछ मास पहले ही श्रीहरिके घरमें आये हैं। यह ईंट-पत्थरकी सडक लोहेकी चकचक करती पटरियाँ—ये सब चीजें उनके लिए अजीब अचरज सी है। अनजान वातावरणमें भय और विस्मयसे दोनों बैल घायल हो गये। पुल पार करके घाट पार करना पडगा।

श्रीहरिने गाडीवानसे कहा — हाँकते चलो। कहकर वह हँसा। जंक्शन शहर उन लोगोंके लिए भी आश्चर्य है। उसकी उम्र पैंतालीस हो गयी। यह रेल लाइन अवश्य बहुत दिनोंकी है स्टेशन उस समय एक छोटा-सा स्टेशन था। गाँव भी निरा गँवई था। उसकी उम्र जब बारह-तेरह सालकी हुई तो स्टेशन बडा स्टेशन बन गया—जंक्शन। दोनों शाखा लाइनें निकली। यह सब उसे याद है। तुममें श्रीहरि मूल लाइनकी गाडीपर चढकर कई बार गया नहान गया है—आजिमगंज नगर। उस समय इस स्टेशनपर कुछ भी नहीं मिलता था स्टेशनके पास सिर्फ मूडी, मूडकी बताशे मिलते थे। उस समय बाबुओंका गाँव इस इलाकेमें बाजारवाला गाँव था। अच्छी मिठाई मनिहारीके सामान कपडे खरीदनेके लिए लोग बहाँ जाया करते थे। उसके साथ-ही-साथ स्टेशन जंक्शन हो गया। कई नये इमारतें बनीं दूर तक लाइनें हाथके रेलयार्ड बना कारखाना सिगनलके खम्भे खडे हुए बहुत बडा मुसाफिरखाना बना। जाने कहाँसे ला-लाकरके जमाया आ पहुँचे कलकत्ता बोलपुर बनवाकर इधरका धान, चावल उडद सरसों आलू मछली-तरकारी चढ लगा दिये। मँगायी भी कितनी चीजें—हर तरहका कपडा कल-पुरजे औजार मसाले, मनिहारीकी दुर्लभ वस्तुएँ! लालटेन उसने पहली दूकानमें सजा पसन्द खरीदी थी। लालटेन दियासलाई, काँचकी दावात निबवाली होल्डर कलम, रानीगंज की टिकिया हड्डीकी मूठवाली छुरी विलायती कैंची कारखानेमें ढाली गयी लोहेकी कड़ाही, टोल बाने कपडेवाला छाता पालिश किया हुआ जूता यानी हर चीज कारखानेके बने सुनार मार सरजाम विलायती गन्ना गन्ना कुदाल फाल तक। धन-धान्य कलें लग गयी हैं—धान-कल तेल-कल आटा-कल! दौड गया परसा जीता उठ गया। छोटे मामोंका आदर बडा आडम्बर

और भागी धन्य लोग कारखानामें जा जुटे।

श्रीहरिकी गाड़ी स्टेशनके अहातेके पाससे जा रही थी। अजीब गन्ध आ रही थी तेज-गुन्धी हर तरहका मसाला—धनिया, तेजपत्ता, मिर्च, काली मिर्च, लौंगका गन्ध एकमें मिल गयी थी। उन सबमें तम्बाकूकी तीखी गन्ध पहचानमें आ रही थी। पासके धान-कलसे सीझे धानकी गन्ध आकर उसमें मिल रही थी। स्टेशन यार्डमें रह रहकर साँस रोकी गन्ध आ जाती थी कोयलेके धुएँकी। इन सारी चीजोंसे रेल-गोदामके चारों तरफकी माटी ढँक गयी थी।

गाड़ीवान अचानक बोल उठा, "अरे बाप रे! गाठें कितनी हैं?"

श्रीहरिने गरदन बढ़ाकर देखा सचमुच कपड़ेकी दस-बारह बड़ी-बड़ी गाठें पड़ी थीं। बगलमें टाटकी कोई पचास गाठें पड़ी थीं। गाड़ीवानने उन सबको ही कपड़ेकी गाठ समझ लिया था। एक तरफ पड़े थे गाठें कई बक्स। नये कपड़े और टाटकी गन्धके साथ दवाकी झाँसवाली गन्ध उठ रही थी और उनसे मिली थी चायकी पत्तियोंकी गन्ध।

गोदामसे धमाधमकी आवाज आ रही थी मालगाड़ीसे सामान उतारे जा रहे थे। रेल-यार्डमें इंजनकी स्टीमकी आवाज सीटीकी आवाज, तेजीसे चलते हुए बीस-पचास सौ टेम-सी चक्कोंकी आवाज कारखानेकी आवाज मोटर बसकी घर घर मनुष्यके कलरवसे चारों ओर मुखरित।

दिन दिन शहर बढ़ रहा है। रास्तेके दोनों किनारे पक्के मकान बढ़ते ही चले जा रहे हैं। फाटकपर नाम लिये हुए ढंगके इकतल्ला, दुतल्ला मकान, दूकानोंपर विज्ञापन दीवारोंपर विज्ञापन।

गाड़ीवान बोल उठा "उफ कबूतरोंकी भीड़ तो देखिए!"—लगभग दो सौ कबूतर रास्तेपर अनाजके दाने बीन-बीनकर खा रहे थे। लोगोंको या गाड़ी देखकर भी नहीं उड़ते जरा खिसक भर जाते थे। यह जवान शहर उनके लिए भी इतनी चीज है। श्रीहरिको एकाएक एक बात याद आयी—यहींसे कुछ कलवाले और महाजन मकान उनके थाना जमींदारके खिलाफ रयतोंको उकसा रहे हैं इसका पता करना होगा। वह उनको जानता है। उन लोगोंके कियेसे रयत लोगोंका मिजाज इतना बढ़ गया है। छोटे लोग तो कारखानेका काम पा जानेसे खेती छोड़ बैठे हैं। उनपर दया करो कि वे कम्पनी मालिक कारखानेमें नौकरी कर रहे हैं। कलके मालिक उनकी जान बचाते हैं। जितनोंके पास जो उसका धान खड़ा ही पड़ा रह गया कहा नहीं जा सकता। खेती-बारी करना धीरे धीरे कष्टकर होता जा रहा है। खेतिहरोंका यही लोग दामन थामे हैं जमींदारसे विराग होनेपर उनकी तरफदारी करके अपना उल्लू सीधा करते हैं। और

ये बेवकूफ गल जाते हैं, दाम्न लेते ह, उपजके समय पाच रुपयेकी चीज तीन रुपयेमें दते हैं। फिर भी मूर्खोको होश नही। इतना सब होकर भी यह ग़नीमत ह कि ये मिलवाले, गद्दीवाले धान कर्ज नही देते, रुपया देते ह। धानके लिए उन कम्बख्तोको आज भी जमींदार-महाजनके दरवाजे जाना पडता हैं।

गाडी रास्तेसे मुडकर थानेके अहातेके फाटकपर पहुँची। दरोगाने हँसकर कहा, "अरे, घोष बाबू! क्या खबर है? यहाँ किधर?'

श्रीहरिने विनयसे कहा, "जी, हुजूरके ही दरबारमें आया हूँ। आप लोग बचायें तो बचायें, वरना जान-माल्से हो जानेकी नौबत ।"

"सो क्या?"

"खबर तो मिली होगी कि कल रात मौलक्किनीके बरगदतले जमाट-बस्ती हुई थी? भूपाल और रतन नहीं आये?"

"नहीं तो!"—कहकर हँसते हुए दरोग़ाने कहा, "और साहब, थाना पुलिसको अधिकार ही नहीं तो हम करें क्या? अब तो मालिक आप ही लोग ह—यूनियन बाड। आज भूपाल और रतनके बोर्डके कामकी बारी ह। वहाँका काम-काज करके सब आयेंगे।'

"मैने उन्हें बार-बार सवेरे ही आ जानेको कहा था।'

'बठिए, बठिए! सुनता हूँ सब ।"

श्रीहरिने कालू शेखसे कहा, 'वह सब उतार द!"

दरोग़ाने तिरछी निगाहें उन चाज़ोंपर घुमाते हुए पूछा, "चाय तो पियेंगे न?" बरामदपर खडे होकर उन्होंने उस पारके दूकानवालेको आवाज़ दी—"ऐ, दो कप चाय, जल्दी!"

श्रीहरिको ले जाकर व दफ़्तरमें बठे। चाय पीकर बाले, 'सिगरेट निकालिए। सिगरेट सुलगाकर कल्की बात सुनूँ!'

श्रीहरि खुद भी सिगरेट नहीं पीता, लेकिन रखता ह। दरोग़ा हाकिम जब पहुँचते हैं तो निकालकर देता ह। कहीं बाहर जाता ह तो साथ रखता ह। आज भी लेता आया था। उसने सिगरेटकी डिबिया निकाला। दरोग़ाने कान्स्टेबुलसे कहा, "दरवाज़ा लगा दो!"

लगभग घण्टे भर बाद श्रीहरि थानके दफ़्तरसे बाहर निकला। दरोग़ा भी बाहर निकले और कहा, 'यह आपने ठीक ही किया ह कोई ग़ल्ती नहीं हुई है, अन्याय भी नहीं, ठीक किया ह!'

श्रीहरि जरा हँसा सूखी हँसी।

उसने पिछली रातकी जमाट-बस्तीकी डायरी कराया, साथ हो जिनपर

उसे सन्देह था उनका नाम भी लिखाया। राम भल्ला, तिनकौडी मण्डल, रहम शेखके नाम तो बताये ही, ऊपरसे देबू घोषका भी नाम बता दिया। उसपर भी सन्देह है। यह सारा मामला हो अगर रयतोंके विरोध आन्दोलनका फेरा है, तो देबूको छोडा नहीं जा सकता। सारे-कुछकी जड देबू ही है—वही सब किसीको सरपर उठाये हुए है पीछेसे सबको प्रेरित करता है।

दरोगाने पहले तो अचरज दिखाया 'यह भी सम्भव है घोष बाबू? देबू घोष हरगिज?''

इसपर लाचार होकर श्रीहरिने कल उतनी रातको उस दुर्योगमें भी गाँवके बाहर हमदर्द दुर्गाको देबूके साथ देखनेवाली बातका जिक्र किया। कहा, 'देबूका पता हो गया है दरोगाजी।''

''हूँ!''

'सिर्फ दुर्गा ही नहीं, उसने अब अनिरुद्ध लुहारकी स्त्राके भी भरण पोपण का भार लिया है मालूम है?'

दरोगाने जरा देर श्रीहरिकी ओर ताककर और खस-खस करके सब कुछ लिख लिया। बोले फिर तो आपने ठीक ही सन्देह किया है।''

श्रीहरि चौंका— आपने देबूका नाम लिख लिया क्या?''

'हाँ! जब नतिक गिरावट आ गयी, तो अनुमान ठीक ही है।'

नहीं, नहीं! हाँ भी जरा भला तरहसे जानने सुननेके बाद ही लिखना ठीक होता!'

दरोगाने हँसकर बार-बार उससे कहा, ''आपसे कोई अन्याय नहीं हुआ है। आपने ठीक ही पकडा है और ठीक ही लिखाया है।''

लौटते हुए दो चार गद्दीवाले महाजनों और मिल मालिकोंके पास भी वह गया। लेकिन कुछ ठीक खबर नहीं मिली। केवल एक मिलवालेने कहा, ''हम लोग रुपया देंगे, घोषबाबू! जमीनका हिसाब लगाकर रुपया देंगे। आप जमींदारासे रयतोंकी लडाई है यही तो हमारे लाभका मौसम है।''—वह घमण्डसे हँसा।

श्रीहरि मन ही मन नाराज हुआ। लेकिन जबानसे कुछ नहीं बोला। वह भी जरा हँसा।

मिलवाला भला आदमी जरा नाटे कदका था बडे आदमीका बेटा। जक्शन शहरमें उसकी दो मिलें हैं—एक धानकी, एक आटेकी। बहुत-कुछ साहबी ठाट-बाट बातचीत साफ साफ घमण्डकी थोडी बू लिये हुए। वही फिर बोला, ''कारखानेके मजदूरोंके लिए आप लोग भी तो हमसे कम हंगामा नहीं करते!

बात-बातमें अपनी तरफसे मजदूरोंको रोक लेते हैं। रयतोंसे कहा करते हैं—मिलोंमें काम करने मत जाओ, गद्दीवालोंका दादन नहीं ले सकते, उनके हाथ धान नहीं बेच सकते। अब उनसे आप लोगोंका विरोध शुरू हुआ है, हम लोगोंके लिए यही तो मौका है उन लोगोंको और भी अपना बनानेका!"

श्रीहरिका हृदय चोट खाये कुढ़े जिलेके सांपकी तरह चक्कर खा रहा था। फिर भी किसी तरह अपनेको जब्त करके नमस्ते कहते हुए वह उठ खड़ा हुआ।

मिलवालेने कहा, "कुछ खयाल मत कीजिएगा, मैंने साफ बातें कही हैं।"

गरदन हिलाकर श्रीहरि गाड़ीपर चढ़ गया। मिलवाला बाहर निकलकर फिर बोला, "आप चाहते क्या हैं? हम रुपये न दें, तो रुपयेके बिना रैयत मुकदमा नहीं लड़ सकेंगे और लाचार कुछ तसफिया कर-करा लेंगे। या कि हम रुपये दें उन्हें? रयत आपसे लड़ा करें, आखिरकार तो उन्हें हारना ही है, एक बार सब-कुछ गँवाकर ही हारेंगे। इसमें आपको और भी सहूलियत होगी!"—वह आदमी चिन-जैसा हँसने लगा।

श्रीहरिने कोई जवाब न देकर गाड़ीवानसे कहा "कवना चल!"

मिलवालेने हँसकर पूछा, "जमींदार कान्फ्रेंस है क्या?"

श्रीहरिने चकित आँखों इस बार मिलवालेकी तरफ ताका। उसके बाद वह धीरे धीरे गाड़ीपर सवार हो गया। पूँछ उमेठे जानेसे तेज बैल गाड़ीको लेकर घूमते हुए चल पड़े।

मिलके फाटकके सामनेसे कुछ औरतें उधर देख रही थीं। श्रीहरिने देखा, उसीके गाँवकी माँची और बाउरी औरतें थीं। अपने पाँवोंसे वे धीरे-धीरे धानको फैला रही थीं और गला मिलाकर गीत गाती जा रही थीं।

श्रीहरि कवनाके मुकर्जी बाबूकी कचहरीमें पहुँचा।

मुकर्जी लखपती हैं। सालमें लाखसे ज्यादाकी आमदनी है उनकी। सिर्फ इसी इलाकेके नहीं, पूरे जिलेके प्रधान धनी हैं। कवना बैसे भले लोगोंका बड़ा पुराना गाँव है। लेकिन कवनाका आज जो रूप है, जिलेमें उसका जो नाम है वह इस मुकर्जी परिवारकी कीर्तिके कारण ही। बड़े-बड़े मकान, अपने लिए बाग-महल, साहब-सूबोंके लिए अतिथि भवन, बनारसमें मन्दिर, स्कूल, अस्पताल, बालिका विद्यालय, पक्के घाट बंधे बड़े-बड़े पोखर आदि—बहुत बड़ी कीर्ति है मुकर्जी बाबूकी। जमींदारीकी जो भी आमदनी है सब दयालुतार। दयोत्सवमें हाथी उन मस्यानोंमें सज सज्जा है। साहबोंके लिए मुर्गी खरीदी जाती है, शराब खरीदी जाती है, कार्यकर्ताओंको तनख्वाह दी जाती है, गमटा नाचनेवाली बाईजी आती हैं रामायण-भागवतका पाठ करनेवाले आते हैं।

बाबुओंके लडके-वाले भी रग रूप बनाकर थिएटर करते ह । देवोत्तरकी आमदनी भी बहुत ह । वाजिब आमदनीके अलावा भी ऊपरी आय ह । देवोत्तरके हर लेन दनमें एक पैसेके हिसाबसे देवताका पावना । देनदारको रुपया चुकाते समय रुपये में एक पैसा ज्यादा देना पडता ह । रुपया लेते वक्त रुपयेमें एक पैसा कम लेना पडता ह । मुखर्जी बाबू हिसाबी और बुद्धिमान् आदमी ह । श्रीहरिने पाँव छूकर उनका प्रणाम किया ।

मुखर्जी बाबू बोले "वही तो तुम अचानक आ पहुँचे । मने सोचा था, कोई दिन ठीक करके दूसर दूसरे जमीदारोको भी खबर भेजूगा । सब मिलकर विचार करके कोई रास्ता निकाला जाय ।'

श्रीहरिने कहा, ' म आपसे राय लेने आया हूँ । और-और जो जमींदार ह, उनसे कुछ होना हवाना नही ह । आप ता सब जानते ही ह ।'

मुखर्जी बाबूने कहा "इसीलिए तो ।'

श्रीहरि उनकी तरफ ताकता रहा ।

मुखर्जी बाबू बोले ' वे सब खानदानी जमीदार ह । उह जिद चढ जाय तो लगान बढोत्तरीका मुकदमा जरूर करेंगे । उह जिद चढा दनी होगी ।'

श्रीहरिने हँसते हुए नम्रतासे कहा, ' एक होकर रयत लोग लगान देना बन्द कर देंगे तो कितने मुकदमे करेंगे लोग ?"

' तुम रुपयोका इन्तजाम कर रखो । जो छोटे मोटे ह उनको रुपया तुम दना और जो बडे हैं उनका भार मुझपर रहा । रुपयाकी वसूली जायदादसे ही होगी ।

श्रीहरि अवाक हो गया ।

मुखर्जी बाबू बोले "इसमें करनेको खास कुछ नही ह सिफ एक काम करो । तुम ता धानका कारबार करते हो ? अबकी धान दना बन्द कर दो । किसी खेतिहरको धान मत देना । —इतना कहकर उन्होने गद्दी घरके कर्मचारियोको आवाज लगाकर कहा "कौन ह उधर, जरा पजिका तो दे जाओ ।'

पजिका देखकर बोले, " हू ! मुसलमानोके रमजानका महीना आ रहा ह, रोजेका महीना ! रोजेके अन्तिम दिन इदुल्फित्र । धान मत देना, मुसलमानोको काबू करनेम ज्यादा दिन नही लगेंगे । —हसकर वे पुन बोले, 'भोजन मयस्सर न हो तो बाप भी वशम हो जाता ह ।'

श्रीहरिने प्रणाम करके कहा ' असी आना ! तो अभी म जाऊ ?

मुखर्जी बाबूने हँसते हुए आशीर्वाद दिया "मगल हो तुम्हारा ! डरना मत । जरा समझ-बूझकर चलना । पासमें रुपये ह तुम्हे डर किस बातका ? हाँ,

एक बात और। शिवकालीपुरके लगानकी किस्त नियमसे तो दे रहे हो तुम ?'

"जी हाँ, पाई-पाई चुका दी है।"

"सरकारका राजस्व तुम देते हो कि जमींदार देता है ?"

श्रीहरिने समझ लिया। हँसकर बोला, "आश्विनकी किस्तमें अब और नहीं दूँगा।"

रास्तेपर आकर श्रीहरिने देखा कि रास्तेके पास ही गाँवकी भीड़ जमा हो गयी है। तिनकौड़ी मण्डल हाथमें एक पैना लिये आग-बबूला हुआ खड़ा है, उसके सामने सर झुकाये बैठा है एक कम उमरका मल्ला। उसकी पीठपर पनेका एक निशान लम्बी मोटी रस्सीकी तरह उभर आया है।

श्रीहरिने क्रुद्ध होकर कहा, ' हुआ क्या ? उसे इस तरहसे मारा क्या ?'

तिनकौड़ीने कहा, "कुछ नहीं हुआ, तुम जा रहे हो अपनी राह जाओ !"

श्रीहरिने मल्लासे पूछा, ' ऐ छोकरे, नाम क्या है तेरा ?"

उसने उठकर प्रणाम किया। कहा, "जी, मैं मल्ला हूँ !"

"हाँ, हाँ, नाम क्या है?'

' जी, छिनाम मल्ला !"

किसने मारा है तुझे ? '

छिरामने सर गुजाकर कहा, "जी, मारा तो किसीने नहीं है।'

' मारा नहीं है ? पीठपर यह निशान कैसा है ? '

' जी नहीं, वह कुछ नहीं है।"

"कुछ नहीं ?"

"जी नहीं।"

तिनकौड़ीने निहायत उपेक्षासे ही फिर कहा, ' जाओ, जाओ, जहाँ जा रहे हो जाओ ! तुम्हें हाकिमी करनेकी नहीं जरूरत है। मारा है तो ठीक किया है। इसे यह समझेगा और मैं समझूँगा।'

घर पहुँचते ही श्रीहरिने इस घटनाको लिखकर थानेमें मारफत थाने भेज दिया।

आठ

तिनकौड़ीने जिस मौजेका बन्दोबस्त लिया था वह उसमेंसे एक था, जो रातको गाँवमें मुसाफिर थे। रात सवेरे बैठक बातें-वातें जो छाया मनियाँ चलीं

आ रही थी, उनमें यह छिदाम भी था। तिनकौड़ी यह सोच भी नहीं सकता था कि यह छोकरा भी उन लोगोंके साथ हो सकता है। राम भल्ला प्रौढ़ हो चुका है। इस इलाकेमें उसके जैसा लठैत और तेज दौड़नेवाला दूसरा आदमी नहीं है। एक बारका जिक्र है, वह साँझको शहरसे चला, यहाँ आकर आधी रातमें डकैती की और बादमें चार घण्टेके अन्दर ही-अन्दर फिर जाकर सदर शहरमें हाजिर हो गया। जिन्दगीमें तीनेक बार जेलकी सजा भी भोग चुका है। तारिणी वृन्दावन गोविन्द रंगलाल—ये भी कुछ मामूली नहीं हैं। ये सभी रामकी जवानीके दिनोंके साथी हैं। बूढ़े हो चले, फिर भी बाघ हैं। उन सबोंके साथ यह लौंडा जा जुटा है यह जानकर तिनकौड़ीके अचरज और क्रोधका ठिकाना न रहा। लम्बा छरहरा कोमल-कोमल सा यह छोकरा दो साल पहले तक भी मनसा भसानके दलमें बिहुला बनकर गाया करता था।

कागा रे बिहुला का सन्देसा लेकर जा!"

दो ही सालमें उस छोकरेमें यह परिवर्तन आ गया! छुटपनमें ही उसका बाप मर गया था। माँने धन्धे-धन्धे करके उसे पाला-पोसा। उस समय तिनकौड़ीने ही उसे घोरईका काम दिलाया था। दस-बारह घरकी गौओंको चराया करता। एक गाय चरानेकी मजदूरी दो पैसे माहवार थी। दस-बारह घरकी तीस चालीस गौओंके लिए महीनेमें एक सवा रुपया मिल जाता था। घर घरसे रोज मूड़ीके बदले पाव-पाव भर चावल मिलता, दशहरेपर हर घरसे एक धोती। उस छिदामका यह परिवर्तन देखकर तिनकौड़ी आपेसे बाहर हो गया। लेकिन रातको वह पकड़में नहीं आ सका। तिनकौड़ीका गला सुना कि रात ही घरसे रफूचक्कर हो गया था।

राम तथा दूसरे लोगोंसे रात हा कहा सुनी हो चुकी थी। बल्कि कहा सुनी कहना ठीक नहीं होगा क्योंकि बकता वह खुद ही रहा था। हजार धिक्कार देते हुए उसने कहा था 'छि! छि! इतनी सजाके बाद भी तुम लोगोंको होश नहीं हुआ रे! राम अभी उस रोज ही तो तू छूटकर आया है शायद पिछले कातिकमें, और यह सावन है। इसी बीच फिर? तुमसे मैं कहूँ क्या? छि! छि!'

रामने सिर खुजाते हुए हँसकर कहा 'ओह मण्डल बेहद नाराज हो गया है। बैठो बैठो। अबे ऐ तारनी, एक बोतल ला निकालकर।'

'नहीं नहीं नहीं! कसम रही अबसे अगर तुम लोगोंकी शकल देखूँ मैं! —तिनकौड़ी तुरन्त घरकी तरफ मुड़ गया।

'अरे भई मण्डल मत जाओ। सुनो तो, मण्डल!

"नहीं, नहीं !"

"नहीं क्या, सुनो ! नहीं लौटोगे ? खैर ! तुमसे मेरा नाता खतम !"

अब तिनकौड़ीको लौटना ही पड़ा। खासी नाराजगीके साथ लौटकर बोला, "क्या कहता है, कह ? आखिर कहेगा भी क्या ? कहनेको है ही क्या तेरे पास ?"

रामने कहा, "तुमने अपना सरबस तो जमींदारसे मुकदमा लड़नेमें बरबाद कर दिया। तुम्हीं कहो अब किसके दरवाजेपर जाऊँ, खाऊँ क्या ?'

"मर जा, मर जा, तू मर जा !"

"इससे तो जेल जाना ही अच्छा है ! —रामकी जोरकी हँसीसे दुर्योगकी वह अँधेरी रात सिहर उठी।

तो इसीलिए डकैती करेगा !"

रामने फिर मुसकराकर कहा, "उसके सिवाय और करें क्या कहो ? तमाम मण्डल टोलेमें चुटकी भर अनाज नहीं है। तुम सदा देते आये हो, इस बार तुम्हारे यहाँ भी नदारद ! गोविन्दके यहाँ तीन दिनसे चूल्हा ही नहीं जला। बिल्लाकी पतोहू मरते भाग गयी जाते हुई कह गयी—भूखी रहकर भतारका घर करनेसे रही ! खेतीका समय सरपर आ गया है। तुम लोग हड़तालके पीछे हो। जमींदार धान देनको तयार नहीं। महाजनके पास गया था। बोला, 'लगान वसूलीकी रसीद लाओ तो देंगे।' अब हम करें तो क्या करें ?'

तिनकौड़ी इस बातका जवाब नहीं दे पाया।

रामने हँसकर ही कहा, 'कई दिन निजामलीपुर होकर आया-गया। देखा छिरू पालके यहाँ धान और धन मस मस कर रखा है। बरुआ लोगोंको प्यादा बहाल किया है। माला हाथमें लाठी लिये मूँछपर ताव देता रहता है। यह सब देख-सुनकर हमने आपसमें तय किया उसी सालेके यहाँ हाथ मारा जाये। हम लोगोंका भी पेट भर और इस विरोधमें आन्दोलनका भी एक किनारा हो।'

"फिर ?"—तिनकौड़ीने व्यंग भरी परवाहसे कहा।

'फिर तो सब मालूम ही है तुम्हें ! बम्बल्लकी चोट पड़ती तो मामला मुकदमा नहीं करता, कर पाता क्या ?"

'अब सूअर उसका तो जो होना था होता। तुम लोगोंका क्या होता यह बता ?'

"सो देखा जाता ! —राम ठठाकर बेकी हँसी हँसने लगा।

तिनकौड़ीने टसपर गाली दी 'सूअर हो ! सूअर हो तुम लोग ! इस बार अगाड़ पिछाड़ सूअर-जैसे उसका खयाल नहीं भन्न सकता तुम लोग भी टोर बन गये हो सूअर !'

अबकी सब लोग जोरसे हँसने लगे। यह सूअरकी गाली तिनकौड़ीके नम मिजाजकी गाली है।

रामने कहा, 'अबे तारनी, तुझे बोतल लानेको कहा था न? क्या हुआ?"

'न, न रहने दो!"—तिनकौड़ीने बाधा दी।

"क्यों, रहने क्यों दूँ?"

"तुम लोगोंके घरमें इस कदर अनाज खत्म है, खाना नहीं नसीब हो रहा है, यह मुझसे कहा क्यों नहीं? सच ही गोविन्दके यहाँ तीन दिनसे चूल्हा नहीं जला?"

गोविन्दने झुककर तिनकौड़ीके पाँवोंपर हाथ रखकर कहा "तुम्हारे पैर छूकर कहता हूँ।"

वृन्दावनने एक लम्बी निःश्वास फेंका—'बेटेकी बहू भाग गयी मण्डल! लानेके लिए बेटेको भेजा था तो कहा—भूखे रहकर अधपेटा खाकर मैं नहीं रह सकती। ऐसे भतारकी मुझे कोई गरज नहीं।"

तिनकौड़ीने भी एक बड़ी लम्बी उसाँस ली। मन ही मन उसने अपनेको धिक्कारा। एक पत्थरके मोहमें उसने अपना सब गँवा दिया। शिवको अब वह पत्थर कहा करता है। जितनी बार भी उधरसे जाता-आता है शिवको अपना अँगूठा दिखा देता है। पत्थर नहीं तो और क्या है? जमींदार उसको जायदादके रुपये हजम कर गया था—पत्थरने उसका क्या किया? और वह उस पत्थरके लिए मन्दिर बनवाने गया था—उसीकी जमीन खिंच खिंचा गयी।

नहीं तो उसे फिक्र किस बातकी थी? अपने पचीस बीघा खेतमें प्रति बीघा चार बीसकी दरसे एकसौ बीस यानी ढाई-सौ मन धान हर साल घरमें आता। पुकारो तो आवाज दे ऐसी जमीन थी उसकी। उसीकी उपजसे सारे भल्ला टोले का अभाव मिटता था। कुसाइतमें उसने देवोत्तर रुपयेके लिए जमींदारपर नालिश की थी। और यह मुकदमा जो है एक मजेकी मशीन है। हारो तो दिवालिया होंगे ही जीतो तो भी वही। वकील, मुख्तार मुहर्रिर, अमला पेशकार, प्यादा यहाँतक कि अदालतके सामनेका वह बरगद भी एक ही शोर मचाता है—रुपया रुपया। बरगदके नीचे एक पत्थरको सिन्दूरसे पोतकर एक ब्राह्मण बैठा रहता है। तावीज बेचता है। उस तावीजसे, कहते हैं मामलेमें जरूरसे जरूर जीत होती है। जो जीतता है, वह भी तावीज लेता है जो हारता है वह भी। तिनकौड़ीने भी एक तावीज लिया था, हर तारीखपर एक पैसा देकर सिन्दूरका टीका भी लगवाता था तो भी हार गया। हारनेपर बहुत गरम होकर वह उस ब्राह्मणके पास गया था। कैफियत तलब की थी। ब्राह्मणने उसकी

तरफ ताकते हुए कहा था, "अशुद्ध कपड़ेमें तावीज पहननेसे क्या फल मिलता है बाबा? कसम खाकर कहो तो सही कि तुमने अशुद्ध कपड़में नहीं पहना था?"

तिनकौड़ी इसका जवाब नहीं दे पाया था। लेकिन उस ब्राह्मणकी धोखेबाजीका गुस्सा उसका नहीं गया।

अभी उसके घरका धान नहीके बराबर है। जितना है, उतनेसे उसीका साल यानी नयी फसल होने तक—नहीं निकलेगा। तिसपर बढ़ोत्तरीवाला मुकदमा आ रहा है। यह मुकदमा किये बिना कोई चारा नहीं। जमींदार कहता है, फसलका कीमत बढ़ गयी है। लिहाजा कानूनन वह लगान बढ़ानेका हकदार है। प्रजा कहती है, फसलका दाम बढ़ा है तो खतीका खर्च भी बढ़ गया है। इसके अलावा बाढ़ सूखा आदिके कारण उपज पहलेसे कहीं ज्यादा बरबाद होती है। लिहाजा जमींदार तो ज्यादा लगान नहीं ही पायेगा, प्रजा भी कम पायेगी। कानूनमें दाना ही है। भाड़में जाये कानून! सोच-सोचकर भी इस गोरख धन्धेका अन्त नहीं मिलता। जो होना होगा, होगा! वह दिल ढालकर सीधा उठ गया। बोला, "राम, कल शामको आ जाना। एक-एक दिन धान मैं दूँगा। उसके बाद जो होगा, देखा जायेगा।"

रामने कहा, "देनेको कहते हो तो देना। मगर तुम्हारा अपना क्या होगा?"

'उसके लिए अभीसे सोचकर क्या करना? होगा सो होगा।'

'तो मेरे हिस्सेका आधा-आधा गोविन्द और विन्नूको दे देना।"

"क्या, तुझे जरूरत नहीं है?'

हँसकर राम बोला, 'अभी मेरा काम चल जायेगा।'

"चल जायेगा? यानी तू "

'तुम्हारा इनाम। अबकी जेलसे आनेके बाद कभी कुछ नहीं लिया है। अपना लिहाज, पहलेका ही है।'

'पहलेका? मुझे बुद्धू समझता है तू? तीन सालकी सजा काटकर निकला है आठ-नौ महीने हुए वही रुपया अभीतक है?"

गुप्त इनाम! जहाँ बच्चोंको गाड़ते हैं, उसी बाँधके ताड़के नीचे काम चलाव गाड़कर रख थे। चौबीस रुपये लिया था इनाम—अगर बहुत ही जरूरत पड़ जाये कभी, तो आषाढ़के महीनेमें जब जवानकी कमरमें दमका मारू बजे तो बाँधके इस कोनेमें ताड़के पत्ता माया देखना जाकर! लेकिन वह भी मुरगा ताड़के पेड़पर चढ़कर उसको चाटकर गाजने लगी। आषाढ़में जब दमका मारू

बजा था, तो ताड़के छोरकी छाह जहाँ पड़ी थी, रुपये ठीक वहींपर गाड़े थे। मैंने इस आषाढ़में खोदकर देखा, ठीक ही रुपये थे। मेरा कुछ दिन चल जायेगा।"

तिनकौड़ी अब खुश हुए बिना न रह सका। कहा, "तुम बाघ हो भया!—कहकर वह उठा। आते आते भी बोला, 'तुम कल आना—गोविंद, विंदा तारनी—कल सामको आना। मगर खबरदार! अबसे यह हरकत नहीं। भला न होगा।"

तिनकौड़ीको आज अचानक कंकनाकी बहारमें छिदाम मिल गया। सुबह उसने तिनकौड़ीको अपने गाँवके खेतमें काम करते देखा था। सो वह मजदूरीकी तलाशमें महुग्राम शिवकालीपुर, कुसुमपुर पार होकर कंकनाकी तरफ आया था। कंकना भले लोगोंका गाँव है। वहाके लोग केवल जमीन के मालिक हैं। बहुत-से लोग अपने यहाँ हल-बैल रखकर हलवाहेसे खेती कराते हैं। और बहुत-से लोग आसपासके गाँवोंके खेतिहरोंसे खेत बटाईमें लगा देते हैं। खेती करके फसल काटकर भागीदार धानका बोझा कंधेपर ढोकर बाबुओंके यहाँ पहुँचाते हैं। आधा हिस्सा मालिक पाता है, आधा बटाईदार। ऐसे ही एक बटाईदारके यहाँ छिदाम मजूरा रह गया था। एसेमें वहाँ तिनकौड़ी जा धमका।

उसके द्वारमें एक बज्जात गोरू है। वह तमाम दिन तो बड़े अच्छे ढंगसे रहता है, लेकिन साझको जब गुहालमें घुसनेका समय होता है, सो एक-ब-एक पूँछ उठाकर घोड़ेकी तरह चारों पैर उठाकर सरपट भागता है। रात भर मन माना चर-चराकर भोरको घर वापस आता है और शांत स्वभावसे या तो सो जाता है या खड़ा-खड़ा पागुर करता रहता है। कल शामको जो भागा, सो आज अभीतक घरपर नहीं पहुंचा। यह बड़ी अस्वाभाविक बात थी। जलपान करने बैठा तो पता चला कि वह कंकनाके बाबुओंके यहाँ बाँध लिया गया है। बाबुओं के फूलका पौधा खा गया था। इसके लिए उसपर इस बुरी तरह मार पड़ी कि कई जगह फटकर खून बह निकला। तिनकौड़ी तुरन्त उठा और पैना हाथमें लिये कंकनाकी ओर चल पड़ा। हठात छिदामपर नजर पड़ गयी। भागनेकी गुंजाइश न था। एक तो बाबुओंपर गुस्सेमें वह गर-गर कर रहा था, फिर छिदाम बुलानेपर भी कल घरपर नहीं मिला था, सो डरता डरता छिदाम ज्यों ही उसकी ओर बढ़ा कि उसने उसकी पीठपर खूब कसकर पैना जमा दिया—'हरामजादा!'

छिदामने दोनों हाथोंसे उसके दोनों पैर पकड़ लिये। मुँहसे पीड़ा-सूचक उफ तक नहीं किया, न ही कोई प्रतिवाद किया।

तिनकौड़ीने एक लाठी और जमायी—"पाजी ! सूअर !"

ठीक इसी वक्त श्रीहरिकी गाड़ी आ पहुँची।—

छोकरेको कुछ दूर तक वह खींचते हुए ले गया और उसकी कलाईको दबाकर बोला, "छुड़ा तो ले !"

छिदाम अवाक् होकर उसकी ओर ताकने लगा।

फटकारकर तिनकौड़ीने कहा, "छुड़ा ! छुड़ा तो देखूं ! हरामजादे, सूअर, तूने जो रातको राम मल्लाके साथ जाना सीखा है, तुझे कितनी ताकत हो गयी है मैं देखूं जरा ! छुड़ा, छुड़ा ले !"

छोकरेके होंठोंपर मुसकराहट आयी, बोला, "भला छुड़ा सकता हूँ मैं !"

'फिर रे, सूअरका बच्चा !"

"करूं क्या, कहिए ? घरमें दाना नहीं है। घोरईगिरीका वह चलन लगानेने उठा दिया। तिसपर माँने रिश्ता ठीक किया है मेरा, पैसा चाहिए। मैंने राम काकासे कहा। उसने कहा—'तो क्या करेगा, हम लोगोंके साथ निकलना सीख।"

"हुं !"—तिनकौड़ीने उसका हाथ छोड़ दिया।

उधरसे कोई हँका रहा था—"हेई-हेई ! अरे ओ तिनू भया !"

"कौन है ?"—तिनकौड़ी और छिदामने पलटकर देखा। रास्तेके उस नालेमें किसीकी गाड़ी अटक गयी थी। निमपुरका दूकानदार वृन्दावन दत्त हँका रहा था। वे दोनों जल्दी-जल्दी गये। कीच-लगी गाड़ीके दोनों पहिये धँस गये थे। वृन्दावन जवानीसे माल लेकर आ रहा था। पन्द्रह-सोलह मन माल था, बैल दोनों ही बूढ़े एक तो कांदोमें बैठ गया था। तिनकौड़ी वृन्दावनपर बहुत खिसिया उठा। कहा, "खूब व्यापार करना सीखा है ! बनिये जो इतने कंजूस होते हैं, इस बातका सबूत तुमने ही दिया है वृन्दावन ! इन बूढ़े बैलोंको छोड़कर दो अच्छे बैल नहीं खरीद सकते ? नहीं, रुपया जो खर्च हो जायेगा !"

दत्तने कहा, "अरे खरीदूँगा खरीदूँगा। ले अभी जरा सहारा तो दे दे भया ! हाँ रे—क्या नाम है तेरा—बेटे, तू बैलकी जगह जरा गाड़ीके जुए में कंधा लगा। हरामजादा बैल ऐसा बदमाश है—कीचमें लेट गया, देखो तो जरा। कम्बख्तका खाना कहीं का तो ! ले ऐ दादा ! तिनू भया !'

खीजकर ही तिनूने कहा, "पकड़ रे छिदाम ! मुझसे बनेगा ? तू न हो तो कन्धेमें हाथ लगा !"

"जी नहीं आप पहिये सम्हालें !"—कहकर छिदामने गाड़ीके सामने हाथ भींजकर छातीसे जोर लगाया। तिनकौड़ी हटाकर रह गया। दुबला-पतला छिदाम का शरीर मानो पत्थरका हो गया। खुद कमर ठेलते हुए उसने समझा कि

छिदाम किस भयंकर ताक्तसे गाडीको खींच रहा है। गोविं ठेल रहा था सीधा तनकर, एडीसे चोटी तक पके बासकी खूटी-सा सीधा। एक तरफ बैल, गाडीवान और खुद वृन्दावन ठेल रहा था। फिर भी छिदामकी ओरका हिस्सा पहले उठा।

कमरसे दो पैसे निकालकर दत्तने छिदामको दिये कहा, "किसी दिन आना, घरसे दो मुट्ठी मूढी ले आना!"

छिदामके हाथसे पैसे छीनकर तिनकौडीने दत्तकी तरफ फेंक दिये। कहा, "साझको मुझसे भेंट करना! खबरदार, इस कंजूसके ये दो पैसे मत लेना!"

हनहनाते हुए चलते चलते तिनकौडी छिदामकी ही सोचने लगा—काश, इस छोकरेको पेट भर भोजन मयस्सर होता, फिर तो एक असुर ही होता यह।

कहावत है—'रामसे ही खैर नहीं, ऊपरसे सुग्रीवका सहयोग। गोरूको मारने और रोक रखनेके कारण झगडनेमें तिनकौडी अकेले ही एकमो था, रास्तेमें रहम शेख आ जुटा।

रहम जक्शनसे लौट रहा था। सावनकी धूपमें पसीनेसे लथपथ—बदनपर पडी चादरसे हवा कर रहा था। तिनकौडीका पोशाक बिलकुल खेतपर काम करनेवाली थी पहनावेमें मोटे सूतकी पाच हाथवाली धोती, तमाम बदनमें कादो तो लगा ही हुआ था, फिर दत्तकी गाडीको जो निकाला, सो कीचड-कादोमें नहाये भैंसे सा हो गया था—हाथमें था पैना।

रहमने ही कहा "अरे ओ तिनू भाई, ऐसी शक्लमें कहा चले? लगता है, सीधे खेतसे उठकर चल पडे हो।'

तिनकौडीने कहा, जरा ककना जा रहा हूँ। कम्बख्त बाबुओंसे जरा मुलाकात कर आऊ। मेरे एक गोरूको सालोंने बेतरह पीटा है—खून कर दिया है।

खून कर दिया है?' —रहम जोशमें आ गया।

'बाबुओंके फल्का गाछ खाया है। साले फूलकी माला पहनेंगे। इसीलिए सोचा जरा देख आऊं।'

चलो मैं भी साथ चलता हूँ।'

इतना दर बाद तिनकौडीने पूछा तुमने आज हल नहीं जोता?'

खतीके दिनोंमें खेतिहर हल नही जोत यह ताज्जुबकी बात है। इस समय एक दिनका दाम कितना है। एक ही खेतमें आजकी गाडी हुई गाछी, कलकी गाडी हुई गाछीसे कमसे कम बीस-पचीस दाने धान ज्यादा देगी।

रहमने कहा पूछो मत भया। अल्लाहकी दुनियाको शैतानोंने दखल कर लिया है। जो धरम करम करे उसीपर मार! खतीके समय धान चुक गया।

खोच-तानकर किसी तरह सावन निकलेगा। ऊपरसे तेहवार। सबकी नौबत। बाल-बच्चोंको कपड़ा-लत्ता देना होगा। करें क्या, कहो? शामको इसीलिए गया था।"

तिनकौड़ीने कहा, "हाँ, हाँ, तुम लोगोंका तो रोजा चल रहा है एक महीने तक है न?"

"हाँ! रमजानका पूरा महीना। बीचमें पूर्णिमा। उसके बाद अमोसिया। अमासियाके बाद चाँद दीखेगा, तब रोजा ठण्डा होगा। इदुलफितर-का परब।"

तिनकौड़ी इस त्योहारके बारेमें जानता था। बोला, "यह तो तुम लोगोंका बहुत बड़ा तेहवार है?"

"हाँ, इदुलफितर बहुत बड़ा त्योहार है। खाना पीना होता है, गरीबोंको खैरात देनी होती है, नाते-रिश्तेदार-मेहमानोंको खिलाना पड़ता है। बहुत खरच है तिनकौड़ी भाई! मगर देखो, आधा बरसात—घरमें अनाज नहीं, टेंटमें पैसे नहीं!"

तिनकौड़ीने लम्बी निःश्वास छोड़ते हुए कहा, "यह बात बोलने क्या हो रहम भाई! हमारे सबके लोगोंका एक ही हाल है। किसीके घर खाना नहीं है। जमींदार धान नहीं देगा। कहता है, बढ़ोत्तरी दो तो दूँगा। महाजन कहता है—ब्याज-वसूलीकी रसीद दाखिल करो, कागज लिखो।

"हम लोगोंका तो इसपर भी तेहवार सरपर है।"

तिनकौड़ी इसका क्या जवाब दे, वह चुपचाप चलने लगा।

रहमने कहा, "लेकिन तुम लोगोंके सब तेहवार फसलके समय होते हैं। दुर्गापूजा—वह ठीक क्वारमें ही होगी। हम लोगोंके महीने खिसकते रहते हैं तो बड़ा गोलमाल हो जाता है।"

तिनकौड़ीने कहा "हाँ, तुम्हारे महीने पीछे खिसकते रहते हैं।"

"हाँ, बहुत बेंच है भैया! किस किसी साल ऐसी मुसीबत होती है कि क्या बताऊँ! यही समझ लो कि मेरे ऊपर जो कर्ज है उसका आधा तेहवारोंके ही चलते है। इज्जत आबरू है, इदुलफितर मुहर्रममें दस रुपया खर्च न करो तो लोग मानेंगे क्या?"

तिनकौड़ीने कहा "सो तो है। हाँ हम दुर्गा-पूजा, काली-पूजामें खर्च न करें तो कौन मानता है? जो जिस लायक है उस उसके हिसाबसे खर्च तो करना ही पड़ता।"

अमावसके पक्षमें दोनोंका मन जाने कैसा भारी भारी हो आया। जब व

पुनश्चा

दोना कक्नाके बाबुओंके यहाँ पहुँचे तो उस भारी मनके ही कारण जाते ही लका काण्ड नहीं कर बठे। सामने जो नौकर मिला उससे पूछा, 'बाबू कहाँ हैं? उनसे कहो, देखुडियाका मण्डल आया ह।" क्रोधका पागलपन न होते हुए भी उसने यह गम्भीरताके साथ ही कहा।

उसी समय दरवाजा खोलकर घरके मालिक बाहर निकले—एक तरुण भद्र पुरुष। उन्होंने मीठे मीठे ही कहा "तिनकौडी मण्डल तुम्ही हो?"

'हाँ! आपने मेरे गोरूका मार मारकर जख्मी क्यो बनाया? और उसे पकडकर ही किस कानूनसे रखा ह?'—थोडा थोडा करके तिनकौडी उत्ताप सचय कर रहा था।

रहमने कहा 'सुना मारकर लहू-लुहान कर दिया ह? ब्राह्मण हो तुम?"

भले आदमीने विनयसे कहा 'सुनो, मैं दोष मानता हूँ। मगर इतना मानो कि यह काम मेरे हुक्मसे नहीं हुआ ह। एक नया माली था गुस्सेमें वह ऐसा कर बठा। मने उसे जवाब भी दे दिया ह।'

तिनकौडी और रहम दोनो ही अवाक रह गये। कक्नाके बाबू इतना मुलायम होकर इस सज्जनतासे किसानसे बात करते ह—यह उन्हें बडे आश्चय की बात लगी।

उन भले आदमीने फिर कहा, देखो गोरूको चोट आयी थी। यदि वह दोष माननेकी मेरी इच्छा न होती ता म उसी हालतमें उसे भगा देता उसे बाँधकर नहीं रखता सेवा जतन नहीं करता।'

वास्तवमें उसकी हिफाजत की गयी थी। एक सींग टूट जानेसे लहू बह आया था। दवा लगाकर वहा पट्टी बाँध दी गयी थी। नाँदमें माड, भूसा खली अभी बच ही रही थी। देखकर तिनकौडी और रहम दोनो जने खुश हुए। खरी-खोटी कुछ नहीं कही।

भले आदमीने अनुरोध किया— मुँह हाथ धोकर जलपान कर लो।"

तिनकौडी उनके अनुरोधको टाल न सका। रहमने हसकर कहा, "मेरा तो रोजा ह।

तिनकौडीने पूछा आप लोग तो कलकत्ता रहते ह?'

वे बोले 'हाँ।"

रहमने सिर हिलाकर कहा 'हूँ!'—यानी तभी ऐसा व्यवहार ह।

तिनकौडीने बताशे खाकर पानी पिया। पूछा, यहाँ कब आये ह?'

पाँचक दिन हुए।'

'अभी रहेंगे?'

"ना ! धान बेचने आया हूँ, बिकते ही यहाँसे चला जाऊँगा।"

"धान बेचेंगे ? बेच देंगे ?"

"हाँ, दर इस समय ऊँचा हुआ ह, बेच दूँगा। हम लोग कलकत्ते रहते ह। वहाँ चावल खरीदकर खाते हैं। यहा रखकर क्या करेंगे ? हर साल बेच दिया करते है।"

"बच दते हं ? तो—" तिनकौडी बात पूरी नही कर सका।

रहमने कहा, "तो दादन क्यों नही देते ? फसल होनेपर सवाया डयोढ़ा जिस दरपर हो द देंगे।"

तिनकौडीने कहा 'जो हाँ ! हम ही क्या, इससे इस इलाकेके लोग जी जायँ, दिन रातकर आपका भला मनायेंगे।'

बाबूने कहा, "नही भया, ऐसे झमेलेमें म नही पडता।'

रहमने कहा "छँटाक भर धान आपका नही डूबेगा।'

"नहीं ! म किसीका उपकार भी करना नही चाहता और सूदसे भी मुझे मतलब नही।'

रहमने कहा 'सुनिए बाबू सुनिए—"

उसकी बात पूरी होनेके पहले ही बाबू अन्दर चले गये। कहते गये, "नही, नही, इन सबमें मैं नही पडता!'

ये अवाक हो गये थे। इस किस्मके आदमीसे भेंट नही थी उनकी। यहाँके सूदखोर महाजनको य समझते हं जुल्मी जमींदारको भी जानते ह लेकिन शहरवाली इस तरहका आदमी उनके लिए समझके पर ह। सूद भी नहीं लेगा, उपकार भी नही करेगा! ऐसेको वे कहें क्या ? भला या बुरा ? कलकत्तेमें इस किस्मके आदमी कम नही ह उनसे इसके पहले रहम और तिनकौडीका परिचय नही हुआ। ये लोग हर साल इसी तरहसे धान बेचकर चले जाते ह।

तिनकौडीने दीर्घ नि श्वास छोडा। बोला 'ये लोग भलेमें भी नही, बुरेमें भी नही।"

रहम समझ नहीं पाया कि इस आदमीके लिए क्या कहे ? जालिमको कायम करनेके अपराधमें मालिकको बरदास्त करता ह धनी होने हुए किसानोंके आगे बगूर मानता ह मगर इतना धान रहते किसीको देना नहीं चाहता! सूदका लोभ नहीं! ऐसे आदमीका क्या कहे कुछ ठाह न पाकर बोला 'जाइए जाय! चलो घर चलें! इलाकेमें यही हमारी बडा भा ह। जरा कदम बढ़ा कर चलो।

"बठक ! उस दिन सुना, देबू गुरुजी गया था, तुम लोगोकी बठक हुई थी। फिर बठक ? हडतालकी ह क्या ?"

'अबकी पेटकी बैठक ह। धानका बन्दोबस्त होना चाहिए न ! दौलतने छिरूके साथ साँठ-गाँठ कर ली ह, धान नही देगा। इसीका कोई इन्तजाम करना होगा। इधर तेहवार सरपर ह !'

'फिर तुम सवेरे सवेरे गये कहाँ थे ?"

'जक्शन। बठकके लिए एक बेला तो काम बन्द ही रहेगा। इसीलिए जक्शन गया था। मिलवाला कलकत्तेका बाबू घर बना रहा ह उसे अच्छा ताडका पेड चाहिए। उसी सिलसिलेमें गया था। खेतमें वह एक पेड ह न ! दादाके हाथका लगाया हुआ ह वही देनेके लिए कहा ह।'

दूरसे अजान सुनाई पड रही थी। रहमने व्यस्त होकर कहा, तुम जाओ, भाई ! म चलता हूँ। आज जुम्मेकी नमाज ह।

इरशादके यहाँ बठक हो रही थी। सारे मुसलमान खेतिहर मौजूद थे। सबके चेहरेपर चिन्ताकी छाप। सबके घरका धान चुक गया था। भदई होनेमे अभी दो महीनेकी देर ह। दो महीनेकी खुराक चाहिए। अनाजके लिए दौडते फिरनेका भी फुरसत नही। खतोमें पानी भर गया ह। खेतीका समय निकला जा रहा ह पानीके नीचे खादवाली मिट्टी गलकर चन्दन सी हो गयी ह। सारी वैहारसे एक सोंधी गन्ध उठ रही ह। मोटीके पौधे रोज अँगुलीके एक एक पोर जितना बढ रहे ह। यह क्या खेतिहरके बठे रहनेका समय ह !

तिनकौडी भी गोरूको एक पेडमें बाधकर बठकमे कुछ हटकर बठ गया। उसे फिर धानके लिए इसी तरह घूमना पडेगा। खेतीका काम बन्द रहेगा। सावनके दस दिन निकल गये। खेतीके थोडे ही दिन बच रहे हैं। 'सावनका पूरा, भादोका बारा इस बीच जो बवा सो मारा।' पूरा सावन ही खेतीका सबसे अच्छा समय ह। आगे भादोके बारह दिन तक किसी तरह चल सकता ह। उसके बाद बोना और बेगार खटना समान ही ह। क्वारके तीस तक धानके पौधोका बढना बन्द हो जाता ह। अन्दर अन्दर बालियाँ बनकर बीस दिनके अन्दर फूट निकलती ह। उसके बाद धानको पुष्ट होनेमे तेरह दिन लगते ह। क्वारके तीस तक ही धानका बढना खत्म। अभी एक एक दिनका दाम जो लाख-लाख रुपया ह !

मुसीबत इस बार उन लोगोसे भी ज्यादा रहम भाई वगरहकी ह। घरमें

दानेका नाम नहीं, खेतीका समय और ऊपरसे तेहवार। जिस साल दुर्गापूजा आश्विनके शुरूमें होती है, उस साल वह दुर्गत होती है कि कहनेकी नहीं। फिर भी उस समय थोड़ी-बहुत भदई हो जाती है। तिनकौड़ीने मन-ही-मन कहा—हाय भगवान, पर्व-तेहवारके दिन क्या इसी तरहसे रखने थे! मुसलमान किसान बेचारे अपने इदुल्फित्र पर्वके प्रति गाढ़ी श्रद्धा रखनेके बावजूद उत्साह नहीं पा रहे हैं, सब चिन्तित हो पड़े हैं।

मुसल्मानोंके पर्व-तेहवार चान्द्र वर्षसे निर्धारित होते हैं, इसलिए सौर-प्रभावसे चालित ऋतुचक्रसे उन पर्वोंका कोई सम्बन्ध नहीं होता। अरब देशमें यह धर्म प्रवर्तित हुआ। वहाँ चान्द्रमास गणनामें कोई असुविधा नहीं थी। जलते रेगिस्तानमें सौर-सम्बन्धका बहिष्कार करके मीठी चाँदनीमें जीवनको ज्यादा स्फूर्ति मिली। लोगोंकी अधिकतर संगतिके ऊपर टिड्डियोंके उत्पात, पहाड़ घिरे, बालू-पत्थरवाली मिट्टीके देश अरबमें कृषिकी प्रधानता तो क्या प्रभाव तक बिलकुल नहीं है। लिहाजा आग बरसानेवाले सूरज और वर्षिम्यविहीन ऋतु-चक्रसे सम्बन्ध न रखकर वर्ष गणनामें असुविधा नहीं हुई। भयंकर गरमीमें कुछ दिनके लिए थोड़ी-बहुत वर्षा और कुहासेसे आनेवाली सर्दीसे जीवनमें ऋतुओं की मधुरता और कमकका कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता, यह स्वाभाविक है। फल-सम्पदा सिर्फ एक है—खजूर, वह वर्ष भर सूखा ही रहता है। खाद्यमें जहाँ अन्नके बजाय मांसकी प्रधानता है, और खाने लायक पशुओंके जीवनसे भी जहाँ ऋतुचक्रका कोई सम्बन्ध नहीं है, वहाँ चान्द्र-गणनासे महीना पीछे हो जाता है, पर उसमें संगतिका तारतम्य नहीं होता। वहाँके पर्व चाँदकी स्निग्ध किरणोंके बीच तारतम्यहीन समारोहमें प्राणोंके उच्छ्वास-भर भर जाते हैं। लेकिन कृषि प्रधान बंगालमें खेतीपर पूर्णतया निर्भर रहनेवाले मुसल्मान किसानोंको स्थानोपयोगी काल-गणनाकी इस असंगतिसे बड़ी असुविधामें पड़ना पड़ता है। अगहन पूस-माघ फागुनमें जब इदुल्फित्र मुहर्रम होती है तो जिस आनन्दकी उमंगमें व मस्त हो जाते हैं उसमें अतिशयता होती है। आषाढ़ सावन भादोंके कठिन अभावमें, खेतोंकी व्यस्ततामें ये पर्व उल्लास-भरे बीत जाते हैं—पूरा मायका अनिच्छया कुछ-कुछ उनकी प्रतिक्रिया होती है। अबकी रमजान सावनकी अँजोरियामें पड़ा है भादोंकी अँजोरियाके आरम्भमें रमजान होगा। इधर खेतीका समय किसानके घरमें पूसका सजोया हुआ खाद्य खत्म हो गया है उधर जमींदारकी लगान बढ़ानेका विरोध और फिर इदुल्फित्र! त्योहारके दिन दान-खैरात करना पड़ता है साधु-फकीर, सगे-सम्बन्धियोंको खिलाना पड़ता है बाल-बच्चोंको नये कपड़े देने पड़ते हैं—बच्चोंकी टोपी, रंगीन

कुरता, नवशाकार कपड़ा और सुंदर सा एक रूमाल पाकर कामल मुखड़े हँसीसे खिल पड़ें—तब तो ! तभी तो पव सार्थक होगा, जीवन सार्थक होगा !

मक्तबका मौलवी इरशाद मियाँ इन लोगोंका नेता है। वह सोच रहा था, इतने इतने लोगोंका कौन उपाय होगा ? कभी-कभी वह को आपरेटिव बैंककी सोचता था।

को-ऑपरेटिव बैंक ! यहाँके को ऑपरेटिव बैंकका चेयरमन हैं कंकनाके लखपति मुखर्जी बाबूका बड़ा लड़का। सेक्रेटरी वहींका कोई दूसरा बाबू है। उसके गाँवका चमड़ेका व्यवसायी धनी दौलत हाजी शिवकालीपुरका श्रीहरि घोष मेम्बर हैं।

इरशादने फिर भी कहा ' एक दरख्वास्त देकर तो देखें।'

रहमने कहा सुनो इरशाद जरा इधर सुनो।'

रहमने एक बात तिनकौड़ीसे नहीं कही थी। वह बात चूँकि अपनी थी इसलिए नहीं कही थी। जंक्शनके कारखानेवाले कलकत्तेके बाबूने कहा है कि रुपया मैं दे सकता हूँ। लेकिन मेरे साथ पक्की लिखा-पढ़ी करनी होगी कि जो मुझसे रुपया लेंगे उन्हें मेरे रुपयेके बराबर धान सबसे पहले अदा करना होगा। और चूँकि मैं इस आढ़ेम रुपया दूँगा, इसलिए तुम्हें शपथ करके कहना पड़ेगा कि हम जब भी धान बेचेंगे, आपके ही हाथ बेचेंगे।'

"दर ?'

यह सब, चाचा, तुम्हारे गये बिना तय नहीं होगा। पाँच आदमीके साथ एक दिन साहबको चलो।"

कुछ ही देरमें कानाफूसी शुरू हो गयी। तिनकौड़ीने सुन लिया। वह तुरंत उठ पड़ा।

यह खबर पाकर वह खुशी-खुशी घर लौटा। खैर ! एक उपाय मिल गया। दाम मिले तो और चाहिए क्या ? सोना उगलनेवाली जमीन उसके हाथकी खेती—फिक्र क्या है ! काश आज अपनी सारी जमीन होती ! पत्थरके लिए सब गया जाये ! फिर कर लेगा वह। इसी बार कई आदमियोंका बटया लिया है। कातिकके महीनेमें नदीका पानी जब हट जायेगा तो बाप-बेटे मिलकर चौर को काट-कूटकर अच्छा-खासा खेत बना लेंगे। समयसे पहले आलू मटर गोभी उपजायेगा वह उसमें। जैसे भी हो रुपया एक बार कमाना ही पड़ेगा। आखिर गौरको वह दे क्या जायेगा ? गौरसे भी ज्यादा चिंता उसे सोना बिटियाकी थी। सोनेकी प्रतिमा-सी लड़की नाम उसने गलत थोड़े ही रखा है ! उसीके फूटे नसीबसे बेचारी बिटिया सात सालकी उम्रमें विधवा हो गयी। उसका

कोई उपाय करना पड़ेगा। उसके नाम कुछ जमीन पक्के तौरपर लिख देना उसका सबसे बड़ा काम है।

घर पहुँचते ही सोनाने झिड़की दी, "यह तुम्हारा बड़ा अन्याय है, बाबूजी! हल-बैल खेतमें छोड़कर वहीं घुटने तक उठी हुई धोती पहने कलकत्ता चले गये! बेला झुक गया, न खाना न पीना—"

तिनकौड़ी हा हा करके हँसा। बोला, 'अरे बाप रे, देखता हूँ बुढ़िया माँ बन गयी है तू!"

'बाबूलोगोंसे झगड़ आये न ?"

"नहीं रे, नहीं! वह आदमी अच्छा है। कलकत्तेमें रहता है न! मीठे-मीठे ही बोला। मगर—गलती हो गयी। गोलका बड़ा जतन किया। मुझे जलपान कराया। लेकिन हाँ, रुपयेके अलावा और कुछ भी नहीं पहचानता। उफ धान कितना है रे सोना! सब बेच डालेगा।'

सोना चुप हो गयी। वह अगर अपना धान बेच डाले तो कोई क्या कर सकता है! हमारा नहीं है लेकिन उससे बाबूका क्या ?

सोनाकी माँ बोली, "सुनते हो, निश्चिन्तीपुरका देबू गुरुजी आया था।"

'देबू गुरुजी ?"

"हाँ!

'किसलिए? कुछ काम पड़ा है ?

'मैंने तो बात नहीं की, सोनाने ही की थी। बता सोना, क्या कहा।"

सोना बोली, "वह गये हैं—मैं फिर आकर उन्हींसे बताऊँगा।"

माँने कहा, 'लेकिन बात तो बड़ी देर तक की तूने ?'

सोनाने लजाकर कहा, "मुझसे पढ़नेकी बात कह रहे थे।

तिनकौड़ी उत्साहित हो उठा, "पढ़नेकी बात! कुछ पूछा था? तू बता सकी ?'

लजाती हुई गरदन झुकाकर सोनाने बताया, 'सब जवाब दिया।"—उसने बात जोड़ी 'मुझसे कह रहे थे कि यू० पा० की वजीफा इम्तहान क्यों नहीं दे रही हो।

तो तू देती क्यों नहीं है सोना! —तिनकौड़ीके उत्साहका ठिकाना नहीं रहा। 'कंकनाके बालिका विद्यालयमें बाबुओंकी लड़कियाँ पढ़ती हैं, सोना भी क्यों न पढ़े! ठीक है, देबू तो फिर आयगा, उससे राय करना है।

फसलमें शून्न गुरु होगा। आज सावन शुक्ल दशमी है कल एकादशी। विष्णुकी द्वादशयात्रामें-स अन्यतम यह हिंदोल-यात्रा एकादशीसे शुरु होती है। और पूर्णिमाके दिन सत्म होती है। मामूली गृहस्थोंके यहाँ झूलनका खास कुछ उत्सव नहीं होता। सिर्फ पूर्णिमाके दिन हल चलाना मना है। आसमानमें फिर बादल घिर आये हैं। गरमी भी खूब है। लगता है, बारिश होगी। अबकी बारिश अँजोरिया पाखमें शुरू हुई है। बंगालके किसानोंकी इसपर पैनी नजर रहती है। आपारूस ही वे इसपर गौर करते रहते हैं कि इस साल बारिश किस पक्षमें शुरू होती है। हर साल बारिशका एक निश्चित समय देखा जाता है। जिस साल बारिश अँधेरिया पाखसे शुरू होती है, उस साल कृष्णपक्षके बीच बीचमें शुरू होकर पूर्णतिथि यानी अमावस्यामें जोरोंकी बारिश हो जाती है। और शुक्लपक्षके शुरुके कई दिन हल्की वर्षाके बाद बादल छंट जाते हैं। दस-पन्द्रह दिन या अठारह दिन सूखा रहनेके बाद फिर जोरोंसे बारिश होती है। अतिवृष्टिमें अवश्य इसका व्यतिक्रम देखनेमें आता है। क्योंकि वह दोनों भी ऋतुचक्रकी स्वाभाविक गतिकी अस्वाभाविक अवस्था है, नियममें अनियम व्यतिक्रम।

अबकी वर्षा शुक्लपक्षमें उतरी। दशमीको आसमान बादलोंसे घिरा। बूँदा बांदी भी हो रही है। पूर्णिमाको शायद जोरोंकी वर्षा हो। वर्षा इस बार ज्यादा है, फिर भी मोटा मोटी अच्छी ही कही जायेगी। सावनमें पानीने जलमय कर दिया। सावन कर्कट राशिका महीना है सूर्य इस समय कर्कट राशिमें रहते हैं। वचन है— कर्कट छरकट, सिंह (अर्थात भाद्रमें) शुखा कन्या (अर्थात आश्विनमें) कानें-कान। 'बिना वायुके तुला (अर्थात कार्तिकमें) कहो तो कहां रखोगे धान।'

धानके आसार अच्छे हैं। पानीका गुण भी अच्छा है। किसी किसी साल पानी अच्छा पड़नेपर भी देखा जाता है कि धानके पौधे वैसे जोरदार नहीं होते खासी उपजाऊ जमीनमें भी नहीं। लेकिन इस बार इन कुछ दिनोंमें ही धानके पौधोंने खासा जोर पकड़ा है। ऐसी वर्षा किसानोंके लिए सुखकी होती है। *बैहारमें भरपूर पानी खेतोंमें लकलक पौधे, दलदल माटी—और क्या चाहिए।* प्रकृतिके आयोजनकी प्रचुरतामें अपनी श्रम करनेकी शक्तिका योग दे पाये कि हुआ।

ऐसी वर्षामें किसान मछलीकी तरह खेतमें कूद पड़ता है। मुँह-अँधेरे ही

खेत जाता है। कलेवेके समय यानी दस बजे एक बार हल छोड़कर खेतकी मेड़ पर बैठकर पाच सेर सामान अँटनेवाले पुरखोंके बड़े कटोरेमें मूढ़ी-गुड़ खाता है, उसके बाद एक चिलम खूब बड़ा तम्बाकू पीकर फिर हलकी मूठ पकड़ता है। एकसे दो बजेके अन्दर हल खोल देता है और फिर तीन घण्टा यानी दोसे पाँच तक फावड़ा चलाता है। पाँच बजेके बाद घर लौटता है। नहा-खाकर फिर खेत जाता है माटी उखाड़नेके लिए। काँदा-पानीमें घुटना गाड़कर दाना हाथोंमें मोटी उखाड़ता है। रातके दस बजे माथेपर मोटाका बहुत बड़ा बोझा लिये घर लौटता है। ऐसा वर्षामें बहार सुबहसे दस बजे रात तक हँसी-खुशी आनन्दसे मुखर रहती है। तीस-पैंतीसकी उम्रका हर किसान—उसका गला चाहे जैसा भी हो, जी खोलकर गीत गाता है। यह गीत साँझके बाद ज्यादा सुनाई पड़ता है और सुनाई पड़ता है हर तरहका गीत।

देबून उदास है। इस बार ऐसी वर्षा है, मगर खेतोंमें गीतोंकी गूँज नहीं। ऐसी वर्षाके बावजूद हर किसानका काम एक बेला बन्द रहता है। उनके घरमें धान नहीं है। देबूने अपनी उम्रके अनुभव है कि बरसातमें किसी साल किसानों के घर अनाज नहीं रहता है। लेकिन उसने सुना है कि पहले रहता था। बूढ़े द्वारिका चौधरीने एक दिन यतीन बाबूसे जो बात कही थी, देबूको वह बात याद आयी।

"उस समय गऊ ब्याती थी तो दूध बाँटता था, रास्तेके किनारे आम-वट हलके बगीचे लगाता था, पोखर-तालाब खुदवाता था देवताकी प्रतिष्ठा करता था—

बच्चोंको सुलानेकी लोरी है—

चन्दा चन्दा,

डाल नीम का फन्दा,

गाय वियाये दूधा दूँगी,

भात जीमन थाली दूँगी।

भात नसीब न होता तो भातकी थाली काहेको देती? और क्या भी दिया करता? धानसे बढ़कर धन नहीं।

गोहल भरा धान, मुहाल्में गोलें पोखरमें मछली घरके ईंटे-पीछे पेड़-पौधे, घर-गलियोंको गोदोंमें बच्चे—ऐसे ही घरोंमें लक्ष्मी रहता था। पहले घर घरमें यह सब था। नहीं था तो य बातें आयी कहाँसे? आज इस पचग्राममें यह सब दिखता है तो एक आध्रहरिके ही घरमें। कङ्कनाके बाबुओंके यहाँ लक्ष्मी है लेकिन वह सब नहीं है। जंक्शनमें लक्ष्मी है, किन्तु वहाँका लक्ष्मीका रूप ही और है।

कस्बाके बाबुओंकी फिर भी जमीन है, जमींदारी है। जंक्शनमें गद्दी है, कल-कारखाना है—खेत-खलिहानसे कोई वास्ता नहीं। धान वहाँ लक्ष्मी नहीं, ढेरों पड़ा है, जूतोंसे ठोकरें लगाकर धानकी निरख परख होती है। अमावस्या-पूर्णिमा तिथिको बृहस्पतिवारको सुबह शाम धान बिकता है और फिर भी लक्ष्मी वहाँ दासी बनी खट रही है। चंचललक्ष्मीके व्रतकी कथामें आता है—एक बार एक ब्राह्मणके खेतसे तिलके फूल तोड़कर लक्ष्मीने कानमें पहन लिये थे। इसके लिए लक्ष्मीको ब्राह्मणके यहाँ खटना पड़ा था। इन गद्दीवाले कल-कारखानेवालोंका क्या कर्ज खाया है लक्ष्मीने, कौन जाने!"

कुछ किसान बहारसे शोर-गुल करते हुए लौट रहे थे। शोर-गुल तो रोज ही करते हैं, आज मानो कुछ ज्यादा था। देबूने लालटेनकी बत्तीको जरा उकसा दिया। ये लोग देबूके दरवाजेपर आकर अपने-आप ही रुक गये।

"गोड़ लागी गुरुजी!

"कहाँ है?" सतीशने पूछा।

"हाँ!"—देबूने कहा, "आज शोर गुल जरा ज्यादा सा लगा! किसीसे लड़ाई झगड़ा हो गया क्या?"

"जी नहीं!"

'झगड़ा नहीं गुरुजी!'

जी सतीश आज बाल बाल बच गया!"—उत्तेजित स्वरमें पातूने कहा।

पातू दुसाधका भाई, सब कुछ गँवा बैठा है, पेट नहीं भरता है, इसलिए पुश्तैनी पेशा छोड़ दिया है। इन दिनों मजदूरी करता है। आज वह सतीशके ही बटैया खेतमें काम कर रहा था।

"बाल-बाल बच गया? क्यों क्या हुआ?'

"जी, साँप! काला करैत, दो हाथ लम्बा होगा!"

सतीशने हँसकर कहा, "जी हाँ! समझिए जाने कैसे मोटीकी खुली अँटियामें मुँह डाले हुए था। मुझे क्या पता! अँटिया बाँधनेके लिए कमरकर पकड़ी खूब कसकर पकड़ी थी समझ लें, नहीं तो खैर नहीं थी। उसके मुँहको ही दबा दिया था मैंने, सो हाथमें लपेट लगाया। मैंने हँसियासे काट डाला। क्या करता?'

घटना ऐसी कुछ असाधारण गम्भीर नहीं थी। कछारमें काले करैत बहुत हैं। हर साल दो चार मारे जाते हैं। मारे तभी जाते हैं जब मुठभेड़ हो जाती है, नहीं तो वे मेड़ोंके बिलोंमें रहते हैं। खेतोंमें किसान काम करते हैं। अयाचित भावसे कोई किसीपर हमला नहीं करता। मारे साँप ही ज्यादा जाते हैं,

असावधानीसे ही कभी कोई आदमी चपेटमें आ जाता है।

पातूने कहा, "सतीश भैयाको अब माँ मनसावे[1] थानपर माथा चढ़ाना चाहिए। आपकी क्या राय है?"

सतीशने कहा, "सो होगा। चलो, तुम लोग चलो आगे! मैं भी आता हूँ।"—और और लोग पहले चले गये। सतीश उठ गया।

देवूने पूछा, "कुछ कहना है सतीश?"

"जी हाँ! आपको न कहूँ तो और किसे कहूँ?"

"कहो।"

"जी, धानकी कह रहा था।"

देवूने कहा, "यही तो सोच रहा हूँ, सतीश!"

"जी, अब तो बिलकुल नहीं चल रहा है, गुरुजी!"

देवू चुप रहा।

सतीश बोला, "एकाध जनकी बात नहीं। पाँच-पाँच गाँवके सब लोग। कुसुमपुरके लोगोंका तो त्योहार भी है आज। मन देखा, खेतोंमें एक भी हल नहीं आया।"

देवूने एक लम्बा निःश्वास फेंका। कहा "उपाय तो कुछ-न-कुछ करना ही पड़ेगा, सतीश! मैं रात दिन सोच रहा हूँ। खैर, तुम लोग सोचो मत। कोई-न कोई उपाय होगा ही।"

सतीशने प्रणाम करते हुए कहा, "बस, तब क्या फिक्र है! आप भरोसा दें तो हो गया।"—और फिर वह चला गया।

देवू यामन ही सोच रहा था। नाम हो क्या, आज कई दिनोंसे उसकी इस चिन्ताका विराम नहीं था। जमाट-बस्ता जिस दिन हुई थी, वह उसी रातसे बहुत चिन्तित हो पड़ा है। जमाट-बस्ती करनेवाले चाहे भल्ले हों, चाहे हाड़ी लोग या कि मुसलमानोंके उस तरहके लोग—उनमें उनका अपराध जितना सत्य है, उससे भी बड़ा सत्य है भूख, अन्नकी बेतरह कमी। अपराध करनेवाले लोग समाजके स्थायी वाशिन्दे हैं, बारहों महीने हैं वे, और दुर्योग, अँधेरा—वह भी है। लेकिन यह अपराध वे सदा नहीं करते, खास करके कातिकसे फागुन तक इसकी नौबत नहीं होती। कातिकसे फागुन तक यहाँ सबकी हालत अच्छी रहती है। उस समय ऐसा घृणित पाप करना तो दूर रहा ये लोग व्रत करते हैं,

[1] मनसा—साँपोंकी देवी।

पुण्यकी कामनासे खुशी खुशी उपवास करते हैं, भिखमंगोंको भीख देते हैं, डकैताके नाती, डकैतके बेटे—ये सब डकैत उस समय डकैती नही करते। अपराध-वृत्तिसे भी बडी है अभावकी ज्वाला। मन ही मन उसने लक्ष्मीको प्रणाम करते हुए कहा—देवी, तुम रहस्यमयी हो! तुम्हारे रहनेसे भी आफत है नही रहनेसे भी आफत। कस्बामें तुम बंद हो। वहाँ तुम्हारी ही बदौलत बाबू लोग बाबू ह। वे लोग तरह-तरहके छल प्रपचसे गरीबोका सरवस हडप लेते ह—लगानके सूदमें कर्जके सूदमे सूद-दर-सूदमें, यहातक कि लोगोको गलत तरीकेसे दबानेके लिए वे झूठे मामले मुकदमेसे भी नहीं हिचकते इन बातोको वे अधर्म नही मानते। इस सबकी जडमें भी तुम्ही हो। और ये भल्ले लोग डकैती करते ह—जिसके खानदानम पुश्तासे किसीने कभी डकैती नही की, ऐसा कोरा आदमी भी डकैतीमें साथ देता ह—उसका कारण तुम्हारा अभाव ह। हे माँ तुम्हारे अभावसे ही इन अभागामे ऐसी पाप-वृत्ति जाग उठी ह। जब जाग उठी है तो खैर नही। किस दिन किस गाँवमें डकैती पड जायेगी कोई ठीक नही रहता। उस दिन वह इसीके लिए तिनकौडीके यहा गया था। उससे तो भेंट न हो सकी उसकी बेटासे भेंट हुई। लडकी जसी श्रीसम्पन्न है वैसी ही बुद्धिमती भी।

तिनकौडीसे भेंट नही हुई लेकिन देखुरियाके लोगोकी दयनीय दशा वह अपनी आँखो देख आया ह। न केवल देखुरियाकी, बदतर हालत सारे इलाके की ही ह गोकि इतनी अच्छी बारिश हुई, धानकी कमी नही होनी चाहिए। ऐसेमें महाजन बुलाकर कर्ज देता ह। इस बार लगान विरोधी आदोलनके कारण महाजनोने धान उधार देना बन्द कर दिया ह। श्रीहरिका बन्द करना तो जरूरी ही ह। वह पेटकी मार मारकर रयतोको कायदेमे लाना चाहता ह। दूसरे महाजनोने बन्द किया ह जमीदारके डरसे और सूद बढानेकी नीयतसे। इसके सिवा दिये धानके बाकी रह जानेका भी डर ह। सभी गावोसे खेतिहर आने लगे—किया क्या जाये गुरजी!

देबू उन्हें क्या जवाब दे?

व लोग फिर भी कहते—कोई उपाय कीजिए नही तो खेती होनेसे रही और बाल-बच्चे भूखा मर जायेंगे।

आज अचानक ही उसने सतीशको भरामा द दिया। सतीश खुश होकर चला गया। लेकिन देबूने बडी अकबकाहट महसूस की। वह बेचन हो उठा। उसे लगा कि जिम्मेदारी जस और भी भारी हो गयी।

इतनेमें घने अँधेरेमें खूब तातवर कोई आदमी पैरोकी जारासे आवाज

करता हुआ करीबके मोडसे मुडकर देवूके दरवाजेके सामने आ खडा हुआ। माथेमें मुरैठा, हाथमे लाठी। फिर भी तिनकौडीको पहचाननेमें देवूको देर न लगी। व्यस्त होकर बोला, 'तिनू चाचा! आओ, आओ!"

तिनू बरामदेपर चढा, धप्पसे चौकीपर बैठ गया, बोला, "हाँ, आ गया। सोना कह रही थी, उस रोज तुम गये थे। लेकिन इधर कई रोज म वक्त ही न निकाल पाया।"

देवने कहा, "हाँ, कुछ कहना था।"

"कहो! मुझे भी कुछ बात करनी ह।"

देवूने कहा, "उस दिनकी जमाट-बस्तीके बारेमें मालूम ह?"

"मालूम ह। उन कम्बख्तोको मने बडा डाँटा ह। तुमसे कहनेम क्या ह, यह उन भल्लोकी ही करतूत है।"

"श्रीहरिने थानेमें शायद आपका भी नाम लिखाया है।'

तिनकौडी ठठाकर हँस पडा। हँसीको जब्त करके बोला, 'वह बदनामी तो अपनी ह ही भया, उसकी मैं परवाह नही करता। भगवान् ह, म अगर पाप नही करता तो मेरा कोई कुछ नही बिगाड सकेगा।'

दवू हँसा। बोला, "हा तो ठीक ह! फिर भी थोडा होशियार हो जाना अच्छा ह।"

"और क्या होशियार होनेको कहते हो? खेती बारी करता हूँ, मेहनत मशक्कत करता हूँ, खाता पीता हूँ, सोता हू। इससे ज्यादा और क्या सावधान होना है?"

इस बातका जवाब देवू नही दे सका। बात तो सही ह। अच्छे उपायोसे कोई अपनी घर गिरस्ती करे और फिर भी उसपर सन्देहका बोझा लाद दिया जाये तो वह क्या करे? सच्ची राहपर चलते हुए दुनियादारी करनेसे ज्यादा सावधान और किस तरहसे हुआ जा सकता ह?

"वह साला छिरू जो जीमें आये, करे। जेल होगा और क्या! मुझे मालूम ह कि साले बा० एल० करनेकी फिराकमें ह। मैं उसकी चिन्ता नही करता। मेरा गौर सयाना हो गया हैं, मजेमे घर चला लेगा। न होगा तो मैं कुछ दिन जेलकी ही रोटियाँ खा आऊँगा।"—कहकर तिनकौडी फिर जोरोंसे हँस पडा।

देवू समझ गया कि तिनकौडी कुछ उत्तेजित हो गया ह। सो साथ-साथ वह भी जरा हँसा।

एकाएक तिनकौडीकी हँसी थम गयी। एक दीर्घ निःश्वास छोडते हुए उसने

कहा, "यह भगवान् भगवान बिल्कुल गलत है, देबू ! होता तो भला तुम्हारा वैसा सोनेका संसार बरबाद हो जाता ? या कि मेरी सोना-जैसी सोनेकी प्रतिमा सात सालकी उम्रमें विधवा हो जाती ? मैंने उस पत्थरके लिए क्या कम किया ? हुआ क्या ? मेरे ही रुपये गये, जमीन गयी । मैं साला गया बन गया । यह भगवान-वगवान सरासर झूठ है, धोखा है ।'

देबूने श्रद्धाके साथ तिरस्कार किया, "छि चाचा आप-जैसे आदमीको ऐसी बात जबानसे नहीं निकालनी चाहिए !"

"क्यों ?

भगवान क्या ऐसी मामूली सी घटनासे पहचानमें आते हैं ? दु:ख देकर वे आदमीको कसौटीपर कसते हैं ।"

अहा-हा ! तुम्हारे भगवान् तो बड़े रसिक आदमी हैं ! क्या, वे सुख देकर क्या नहीं कसते कसौटीपर ? दु:ख देकर इम्तहान लेनेका शौक क्या है ?"

'वह भी करते हैं वे । कंकनाके बाबुओंको देखिए । वहाँ उन्होंने सुखसे परीक्षा ली है ।'

'उससे उनका बुरा क्या हुआ है ?

'मगर आप क्या कंकनाके बाबुओं-सा होना चाहते हैं ? उन सब बाबुओं जैसे—शैतान, चरित्रहीन पाखण्डी ? तमाम लोग गालियाँ देते हैं । मौत ताकमें बैठी है । जिसके मरनेसे सारे ही लोग कहेंगे—पाप खसका हुआ, जानमें जान आयी । तिनकौड़ी चाचा जिसके मरनेसे लोग रोते नहीं, हँसते हैं, उससे बढ़कर अभागा भी कोई है ! काना लँगड़ा—जिसका दुनियामें कोई नहीं, वह मरकर रास्तेपर पड़ा रहता है, उसे देखकर भी लोगोंकी आँखोंमें पानी आता है । और जिनके यहाँ हजारों हजार लाखों लाख रुपये हैं, जमींदारी है, कारोबार है, बन्धु परिवार है हाथी घोड़ा है, उनके मर जानेसे लोग कहते हैं, हम जी गये ! इसीमें सोच लीजिए !'

तिनकौड़ी इसपर चुप रहा । देबूकी इन तीखी बातोंने उसके हृदयमें प्रवेश करके उसकी अभिमान विमुख भगवत् प्रीतिको तिरस्कार सान्त्वना और आवेगसे आकुल कर दिया । लेकिन ऐसे आवेगके उच्छवासमें वह बड़ा संयत आदमी है । जिस दिन सोना विधवा हुई उस दिन भी किसीने उसकी आँखोंमें एक बूँद आँसू नहीं देखा । कुछ देर चुप रहकर उसने सिर्फ एक उसास ली । उसके बाद बोला—"तुम्हारा भला होगा बेटा, तुम्हारा भला होगा ! भगवान् तुम्हारे ऊपर दया करेंगे !'

देबू चुप था ।

तिनकौडीने कहा, 'तुम्हारे पास किसलिए आया हूँ सो सुनो।"

"कहिए।"

"धान।"

"धानका तो अभी कोई उपाय ही नही सूझा, चाचा! दो चार जनेकी बात नहीं, पाँच-पाच गाँवोंके आदमी!"

"कुसुमपुरके मुसल्मानोंने धानकी जुगत कर ली है। धान नही, रुपया। रुपये कर्ज लेकर धान खरीद लाये हैं। आज खेतोमें शेखोका एक भी हल नहीं उतरा।"

देवू अचम्भेमें आ गया।

तिनकौडीने कहा, "जक्शनके कारखानेवालेने रुपया दिया, गद्दीवालेसे धान खरीदा। कारखानेवाला चावल भी देनेको तैयार ह। लेकिन उसमें कुटाईकी मजूरी तो काट लेगा, और, फिर भूसा, कूडा। कारखानेका चावल भी समझो कैसा होता ह। वह हमारे मुँहको नही रुचेगा। उससे अच्छा तो रुपया लेना ही ह।"

देवूने कहा, कुसुमपुरके सबने दादन लिया?

हाँ! दस-पन्द्रह बीस पचीस—जो जैसा आदमी ह! कई दिन पहलेसे ही ठीक कर लिया था, किसीसे कहा नही। मैं उस दिन उन लोगोंकी बैठकमें था, सुन लिया।'

देवूने कहा, "वही तो!'—उसने एक लम्बा नि श्वास छोडा।

"म भी गया था बातचीत कर आया। तुम बल्कि कल-परसो चलो। म तुम्हारा नाम कह आया हूँ। बोला—उसकी क्या जरूरत है? अपनी बात तुम लोग आप करो। देवू गुरजीको रुपया नही चाहिए। अकेला आदमी ह और घरमें धान भी ह।"

"मुझसे कारखानेवालाकी मुलाकात हुई, चाचा! मेरे पास तो आदमी भेजा था।"

"तुमसे बातचीत हुई ह?"

'हुई ह। मैं शतपर राजी नहीं हो सका।'

"क्यो?

'जोडकर देखा है आपने कि क्या कर्ज सिरपर लदता ह? मने हिसाब लगाकर देखा ह। डेवढ़ा सूद बहुत ह। उन रुपयोंमें जो धान खरीदिएगा, पूसमें धान बेचने वक्त ठीक उसका डबल धान लगेगा।'

"मगर उसके सिवा उपाय भी क्या है, कहो?"

देवू कुछ देर चुप रहकर बोला, "अभी म सोचकर किसी निश्चयपर नहीं पहुँच पाया हूँ, तिनू चाचा !"

"लेकिन इधर पेटके लिए अनाज जो नही रहा ! जन मजूर धान धान करके जान खाये जा रहे ह ! और इन भल्लोका ही क्या करूँ ?"

"आज तो म कुछ कह नही पाऊँगा, चाचा ! कल जरा न्यायरत्नजीके यहाँ जाऊँगा । फिर जसा होगा बताऊँगा ।"

तिनकौडीने लम्बी उसाँस ली । जक्शनसे वह खूब खुश होकर लौटा था । वह खुशी इतनी अधिक थी कि इसी रात देवूको वह खबर देनेका लोभ रोक नही सका । कुछ देर चुप रहकर बोला, "तो आज म चलू !"

देबू स्वय भी उठ खडा हुआ ।

बरामदेसे उतरकर तिनकौडी फिर मुडकर खडा हो गया । कहा "हा, एक बात और ।"

कहिए ।'

"अपनी सोनाकी कह रहा था । उसे तो उस दिन देखा ह तुमने ?'

हा, बडी अच्छी लडकी ह मुझे बहुत अच्छी लगी !"

'कुछ पूछा बूछा था ? बता पायी ?"

देबूने निश्छल बडाई करके कहा "लडकी आपकी बडी बुद्धिमान ह । उसने अपने आप ही जो पढा ह मने देखा, वह उसीसे अगर यु० पी० की परीक्षा दे तो वत्ति पा लेगी ।

तिनूने उदास होकर कहा "अपना नसीब बेटा, उसका म क्या करूँ कुछ सोच नही पाता । खर वह इम्तहान द तो बुरा क्या ह ?"

'बुरा क्या ? म कहता हूँ उससे आपकी बेटीका भविष्य अच्छा होगा ।"

तिनून उसके दोना हाथ दबाकर कहा, ' बीच-बीचमें आकर उसे थोडा बहुत बताते रहना, बेटे !'

"ठीक ह । बीच बीचमें आऊँगा । '

तिनू खुश हो गया 'बस बस ! फिर तो सोना फस्ट आयेगी, यह म जोर देकर कह सकता हू ।

तिनू चला गया । लालटेनको मद्धिम करके देबू फिर सोचने लगा । सब लोगाकी चिता । लगान बढनके मामलेमें लाग पागल-से हो उठे ह । तिनकौडीने आज जो रास्ता बताया, उस रास्तसे लोगाका सर्वनाश होगा, इसमें कोई शक

हो! वह अपनी नजरमें उन लोगोंका भविष्य साफ देख पा रहा है। उनके स सर्वनाशका भागी उसे बनना पड़ेगा।

रोजकी तरह पातू अपनी स्त्रीके साथ वहाँ सोने आया। पूछा, "दुर्गा नहीं ायी है, गुरुजी?"

"नहीं तो!"

"अच्छा! बड़ी बदमाश है! साक्षवी ही निकली है—"

घूँघटकी आड़से पातूकी बीवीने कहा, "कमाऊ बहन ठहरी, रोजगारको ग़्कली है!"

पातू उबल पड़ा। बोला, "हरामजादी कहींकी, तू कहाँ थी अबतक? ोपालवाली बात किसीको मालूम नहीं है क्या?'

देबूने खिजलाकर कहा, "पातू!'

'गुरुजी!"—तभी पास ही के पेड़ तलेसे किसीने मन्द स्वरमें पुकारा।

"कौन?"

"मैं हूँ ताराचरण!'

"ताराचरण? क्या बात है रे?"—देबू उठकर गया।

ताराचरणकी बातका ढंग डरी हो ऐसा है। वह धीमे धीमे बोलता है जैसे बड़ी गुप्त बात कह रहा हो। अवश्य ही ऐसी आदत उसे गुप्त बातें कहते कहते ही हुई है। जातिका नाई, हर घरमें उसका बेरोक आना-जाना। यों जाते-आते रहनेसे हर घरका कुछ-कुछ छिपा हुआ तथ्य उसके कानों तक आ जाता है। उसी तथ्यको जरूरतके मुताबिक दूसरोंको बताकर आदमीकी दाहकी धार चढ़ी कौतूहल-वृत्तिको तृप्त करके अपना काम बना लेता है। और उसके भी मनकी बात जानकर औरों तक पहुँचा देता है। इलाकेके सारे गोपनीय तथ्य सबसे पहले वही जानता है। थानेके दरोगासे लेकर छिरू घोष, और फिर देबूसे लेकर तिन-कौड़ी मण्डल—यहाँतक कि महाग्रामके न्यायरत्नके यहाँकी भी बहुतेरी बातें ताराचरणको मालूम है। हर कोई उसे सन्देहकी नजरसे देखता है। वह हँसता है। सन्देहकी नजरसे देखनेके बावजूद लोग ताराचरणसे कुछ छिपा नहीं पाते। लेकिन इलाके भरमें दो आदमियोंकी ताराचरण श्रद्धा करता है—एक हैं महाग्रामके न्यायरत्न और दूसरे देबू घोष।

देबू जैसे ही उसके पास पहुँचा, ताराचरणने कहा, "दोनों दोनोंकी हालत बहुत खराब है अब तब है। जरा चलिए।'

"हालत अब-तब है? किसने कहा?'

"जी, मैं घोष बाबूकी कचहरीमें गया था। लौट रहा था कि रास्तेमें दुर्गासे

भेंट हो गयी। बोली—राँगा दीदी बहुत बीमार हैं। आपसे एक बार जानेके लिए कहा है उसने।"

रांगा दीदीके कोई बाल-बच्चा नहीं, खेतिहर सदगोपकी बेटी है। इस समय वह सत्तर सालकी बुढ़िया है। देबूकी उमके लाग उसे राँगा दीदी कहते हैं। वही बुढ़िया अरमरा रही है। देबूने पानूसे कहा, "पानू, तुम सो जाओ! मैं अभी आता हूँ।"

राँगा दीदीसे देबूका एक मधुर सम्बन्ध है। वह जब चण्डीमण्डपमें पाठशाला चलाता था, तो नहानेके समय रोज बुढ़िया बुहारू लाकर चण्डीमण्डपको साफ कर दिया करती थी। परलोकके लिए पुण्य सचय करनेका यही काम था। सुख दुःखकी कितनी ही बातें बुढ़ियासे होती थी तब। सेटलमेण्टके हंगामेमें उस बार जब वह गिरफ्तार हुआ था, तब जो बुढ़िया भावावेगमें आयी थी, देबूको वह याद आया। वह जेलमें था तो बुढ़िया बिलूकी सदा खोज-खबर लेती रही। निकट आत्मीयजन-सी निश्छल थी ममता उसकी। बिलूका देहान्त हो जानेके बाद सारे दिन उसके मुँहकी ओर देखती हुई बैठी रहती थी। उसकी धुँधली आँखोंकी सजल दृष्टि जीवनमें वह कभी नहीं भूल पायेगा।

पीछेसे ताराचरणने कहा, "थोड़ा घूमकर चलना ही ठीक रहेगा, गुरुजी।"

"क्यों?"

"घोषकी कचहरीके सामनेसे जानेसे गोलमाल हो जायेगा।"

"गोलमाल?—देबू अचम्भेमें आ गया। एक बुढ़िया मर रही है, वहाँ गोलमालका क्या डर? आत्मीय और स्वजनहीन बुढ़िया मरनेको बैठी है अपने पीछे किसीको छोड़कर नहीं जा रही है, इसका कितना दुःख है उसे। मरनेके बाद दुनियामें कोई उसका नाम नहीं लेगा, उसके लिए एक बूँद आँसू नहीं बहायेगा। आज तो उसकी मरण-शय्याके पास सारे गाँवका इकट्ठा होना चाहिए। बुढ़िया यह देखकर मरे कि सारे गाँवके लोग उसके अपने हैं। उसने कहा "इसमें लुकना छिपना क्या है ताराचरण? गोलमालका डर कैसा?'

जरा हँसकर ताराचरणने कहा 'जी हैं गुरुजी। बुढ़ियाका कोई वारिस तो है नहीं। बुढ़ियाके मरते ही श्रीहरि घोष मुस्तैद हो जायेगा। कहेगा, बुढ़िया मर गयी। वमेरी जायदाद रुपये पैसेका मालिक जमींदार है। आइए इस गलीसे चलिए।

अब देबूको खयाल हुआ। तारारचरण ठीक बोला है, पक्का आदमी है वह, अजाब हिसाब है उसका, अनोखी है उसकी अभिज्ञता। जिसका वारिस नहीं, उसकी सम्पत्तिका मालिक जमींदार होता है। दरअसल हकदार तो राजा होता

ह या राजशक्ति लेकिन यहाँ राजशक्तिने अपना अधिकार जमींदारको इस तरहसे सौंप दिया है कि हुक्म-हुकुम, नीचे ऊपर सब-कुछका मालिक जमींदार हो है। खेत रैयत जोतते हैं उन रयतासे लगान वसूल करके जमींदार देता है। काम वह इतना ही करता है। लेकिन नीचे अगर खान निकल आये तो जमींदार पाता है नदीकी मछली और गाछ जमींदार पाता है। जमींदार खाता-पीता है, सोता है कृपा करके कुछ दान ध्यान करता है। नदीपर बाँध बाँधनेके लिए खर्च कोई देता है, सिंचाईके लिए तालाब खुदवा देता है, मगर जमींदार तुरन्त दावा कर बैठता है कि लगान बढ़ानेका हक हो गया है उसका।

जिसके वारिस नहीं है, उसकी जायदादके असली मालिक हैं देशवासी। राजा या राजशक्ति उनके प्रतिनिधिके रूपमें सभी साधारण कामोंका प्रबन्ध करती है। इसीलिए सभी आम सम्पत्तिका मालिक था राजा। इसीलिए चण्डी मण्डपको आम लोगोंने बनवाकर कहा—राजाका है, इसीलिए देवताका सेवायत राजा था इसीलिए लावारिस प्रजाकी जायदाद सरकारके जिम्मे चली जाती थी। ये सब बातें देबूने न्यायरत्न और विश्वनाथसे सुन रखी थीं। उनका भाग्य! राजा आज अपना सारा अधिकार जमींदारको दिये बैठा है। जमींदारने दिया है ठेकेदारको। देबूने निःश्वास फेंका। लेकिन आज वह या छिपकर किस अधिकारसे जाये? वह ठिठक गया।

ताराचरणने कहा "गुरुजी, आइए!"

गलीके उस सिरेपर किसीने कहा—'परामाणिक, गुरुजी आ रहे हैं?" गला दुर्गाका था।

ताराचरणने रुककर कहा, "रुक क्या गये?"

"और भी दो चार आदमियोंको बुला लो ताराचरण!'

"पीछे बुलाना। पहले तुम आओ जमाई!"—दुर्गा आगे बढ़ आयी।

देबूने कहा, 'लेकिन तू कैसे आ पहुँची?'

धीमेसे दुर्गाने कहा, 'लुहार-बहूके यहाँ आयी थी। कई दिनोंसे थोड़ा थोड़ा बुखार आ रहा था राँगा दीदीको। लुहार-बहू आया जाया करती थी एक लोटा पानी ढारकर सिरहाने रख आती थी। राँगा दीदीने भी मुसीबतमें लुहार बहूका जतन किया था। मैं दीदीको गाय दूध दिया करती थी, लुहार बहू दूध गरम करके उसे दे आती थी। बचे हुए दूधको मैं बेच देती थी। आज दोपहरको गयी तो देखा बेचारीको होश नहीं है। लुहार-बहूने माथेपर हाथ रखकर देखा बहुत तेज बुखार था। तीसरे पहर फिर हम दोनों गयी तो पाया, बुढ़ियाके दाँती लग गयी है। आँख मुँहमें पानीके छींटे देते देते दाँती छूटी,

मगर बेहोशीमें बड़बड़ाने लगी। इस कदर पसीना छूट रहा है कि हाथ-पाँव ठण्डे होते आ रहे हैं।"

देबूने कहा, "डाक्टरको बुलाना चाहिए था। ताराचरण तुम जरा जाओ। मेरा नाम बताकर जगन घोषको बुला लाओ।"

"नहीं!"—दुर्गाने रोका। कहा "हम लोगोंने कहा था, तो रांगा दीदीने मना कर दिया।"

'मना कर दिया? होशमें आ गयी क्या?"

'हाँ थोड़ी देर पहले होशमें आयी है। बोली डाक्टर-वैद्यकी जरूरत नहीं है दुरगा तू अब छिनालपना न कर। बुलाना है तो देबाको बुला। मगर मैं लुहार-बहूको अकेली छोड़कर जा भी नहीं पा रही थी और कोई आदमी भी नहीं मिल रहा था। आखिर परामाणिकसे बुला लानेको कहा।

देबूने जरा सोचा फिर कहा 'नहीं! ताराचरण तुम एक बार डाक्टरको बुला ही लाओ।"

बुढ़ियाकी आखिरी अवस्था ही है। हाथ पाँवके किनारे बर्फकी तरह ठण्डे हो रहे हैं। धुँधली आँखें और भी धुँधली हो आयी हैं। बुढ़ियाके सिरहाने उसके मुँहकी तरफ पदम बैठी थी देबूको देखकर उसने घूँघट काढ़ लिया। बुढ़ियाका स्थान उसके जीवनसे भी काफी जुड़ा हुआ था। वह अक्सर खोज पूछ करती गाली गलौज भी देती और फिर नमक तेल दाल—पद्मको जब जो घटता उसके आकर उधार पैसा माँगनेसे ही वह दे देती। वापस देती तो ले लेती किन्तु विलम्ब होनेसे कभी कुछ बोलती नहीं। घरमें खीरा केला, लौकी—जब जो होता बुढ़िया उसे दिया करती थी। बुढ़ियाको जब कभी खास कुछ खानेका जी होता तो उसके सामान पद्मके बरामदेपर रख जाती—मेरे लिए बना देना। सामान अकेली उसीके लिए नहीं कई आदमियोंके लिए काफी होता। आजीवन दूध गायठा बेचकर गाय बकरी पोस-बेचकर बुढ़ियाने अच्छी सी पूँजी जोड़ी थी। अवस्था उसकी निहायत बुरी नहीं है। लोग कहते हैं बुढ़ियाके पास बड़ी रकम है। पैकार हर वर्ष लेखा देता है कि मने ही बुढ़ियासे पाँच-पाँच बछड़े खरीदे हैं। पाँच बछड़ोंकी कीमत तीन सौ रुपये है। और बकरा वगैरह तो बराबर लेता रहता है। इसके रुपयोंका हिसाब नहीं।

देबू उसके करीब जाकर बैठा। पुकारा 'रांगा दीदी!

दुर्गाने कहा जोरसे पुकारो। अब सुन नहीं पाती है।"

देबूने फिर जोरसे ही पुकारा 'रांगा दीदी! रांगा दीदी!'

बुढ़िया बुझती हुई नजरोंसे उसकी ओर ताक रही थी। देबूने कहा, 'मैं

—देवू । बुढियाकी निगाहाम फिर भी कोई फर्क नहीं आया । अब देवूने उसके कानके बिलकुल पास जोरसे कहा, ' मै देवा हूँ, रागा दीदी देवा !"

अवकी बुढियाने धीमे धीमे रुक रुककर कहा, "देवा ! देवू भाई !"

"हाँ !"

बुढियाने हँसकर कहा, "म चली भया !"

दूसरे ही क्षण उसके दोना पीले होठ काँपने लगे, धुली हुई आखोंमें पानी भर आया । बोली, ' अब तुम लोगाको नही देख पाऊँगी ।"—फिर जरा रुककर अजीब हँसी हँसकर बोली, "त्रिलूसे—तेरी त्रिलूसे क्या कहूँगी, बता, वही तो जा रही हूँ !"

दस

पदम जमीनपर पट लेटी बूढी रांगा दीदीके लिए रो रही थी । बुढिया सच ही उसे प्यार करती थी । पदमको दिनोसे अच्छी तरह रोनेका कारण नही मिला । दुनियामें कहनेको उसका अपना एक ही था—अनिरुद्ध वह कबका उसे छोडकर चल दिया । उसके लिए अब रोना आता भी नही । यतीन लडके सा कुछ दिनाके लिए रहा था । उसके चले जानेके बाद पदम कई दिना तक रोयी थी । उसकी याद आ जानसे आज भी आखें भर आती हैं, लेकिन खूब जी भरकर नही रा पाती ।

बुढिया रातके अतिम पहरमें गुजरी । मरनेसे पहले जगन डाक्टर आदि पाँच जनोने उससे पूछा था, ' दीदी, श्राद्ध-श्राद्ध तो करना होगा । रुपये-पैसे कहाँ रखे ह, बता दो हम सब उससे श्राद्ध करेंगे तुम्हारा । और जिस मदमें जसा खच करनेको कहोगी, वही करेंगे ।"

बुढियान जवाब नही दिया । करवट ले ली । लेकिन डॉक्टरके आनेसे पहले ही उसने देवूसे कहा था उस समय वहा केवल वह और दुर्गा थी । कहा था ' देवा, सोलह कोडी (कोडी = बीस) रुपये मेरे पास ह—मेरे ठीक सिरहानेके नीचे जमीनमें गडे ह । जसा-तसा श्राद्ध कर देना मेरा और बाकी तू ले लेना, पाँच बीस लुहारनीको दे देना ।"

दूसराकी जवाबदेही ये क्यों दें ? इन लोगोंने खोज पुकार किया, यह इनका अपराध नहीं है। दूसरोंने खोज-खबर नहीं ली, इसकी कैफियत इनके जिम्मे नहीं है।''

''इन्होंने आपको खबर दी घोष बाबूको क्यों नहीं दी ?''

''कानूनमें ऐसा कुछ दर्ज है क्या कि ऐसी स्थितिमें घोषको यानी जमींदारको ही खबर देनी पड़ेगी ? इन लोगोंने मुझे बुलवाया, मैंने डाक्टरको बुलवाया, मरनेके बाद भूपाल चौकीदारसे थानेमें खबर भिजवायी। इसमें बार-बार घोष बाबूका नाम क्यों आ रहा है ?''

इस बार जगन डॉक्टर आगे आकर बोला ''मरते समय मैंने गंगा दीदीको देखा था। उसकी मौत स्वाभाविक मौत है। बुढ़ापा था और ऊपरसे बुखार। उसी बुखारमें वह चल बसी। आप लोगोंको कोई शुबहा हो तो लाश भेज दें। लाशकी जाँच कराकर यह साबित करें कि मौत अस्वाभाविक है, उसके बाद ये पचेले करें। फाँसी-सूली जो होनी होगी, होगी पसलेमें।''

श्रीहरिने कहा, 'ठीक है, यही हो। क्यों जमादार साहब ?'

जमादार इतना साहस नहीं कर सका। बेजरूरत और फिर पूरा-पूरा सबूत न रहनेके बावजूद मौतको अस्वाभाविक बताकर लाशकी जाँचके लिए आगे बढ़ानेसे कैफियत उसीको देनी पड़ेगी। फिर भी अपनी ज़िद उसने पूरी तरह नहीं छोड़ी। जक्शन शहरसे श्रीहरिसे कहकर एक एम० बी० डाक्टरको बुलवा भेजा और इस तरह हंगामेको कुछ देर और जिलाकर रखा।

जक्शनका डॉक्टर आया। देख सुनकर उसने जरा चकित होकर ही कहा, ''इसे अस्वाभाविक मृत्यु कहनेकी वजह क्या है, सुनूँ जरा ?

श्रीहरि इसका कोई जवाब नहीं दे पाया। जवाब जमादारने दिया, 'मतलब कि बुढ़ियाके पास रुपया है न ! देबू घोष और दुर्गा मोचिन यह कह रहे हैं कि बुढ़िया उसमें-से सौ रुपये लुहार बहूको और बाकी देबूको दे गयी है।'

डाक्टरको इसमें भी कोई वैसी बात नहीं मिली। बोला, 'ठीक तो है।''

ठीक तो नहीं डाक्टर साहब ! इसमें जरा खटपट मामला है। मतलब कि आजकल देबू घोष ही लुहार-बहूका भरण-पोषण करता है। बीचमें यह दुर्गा मोचिन है। अब बात यों है कि बुढ़ियाके मरनेके वक्त सिर्फ दुर्गा और लुहार बहू ही आयी। आकर उन्होंने देबू घोषको बुलवाया। देबूने आकर डॉक्टरको बुलवाया। लेकिन बुढ़ियाकी जबानी वसीयतनामा डाक्टरके आनेसे पहले ही हो गया। इसपर सन्देहकी गुंजाइश नहीं है क्या ?''

हँसकर डॉक्टरने कहा, "वह तो वसीयतके बारेमें हो सकता है। लेकिन अस्वाभाविक मृत्यु बताकर मामलेको नाहक ही—मेरा ख्याल है बिना जरूरत आप लोग पेचीदा बना रहे हैं।"

'बिना जरूरत कह रहे हैं आप?"

"हाँ! और फिर जगन बाबू भी तो वहाँ मौजूद थे।"

"खैर! शवका दाह-संस्कार करें। रुपये-पैसे, चीज-असबाब, गाय-गोरू हम थानेमें जमा कर लेंगे। बादमें अगर उनपर देबू घोष और लुहार-बहूका वाजिब हक हो तो वे अदालतमें समझ लेंगे।"

रांगा दीदीके सत्कारमें देबूने श्रीहरि घोषका जरा भी दखल नहीं देने दिया। कहा, "उसके बदनमें सोना-दाना नहीं है। रांगा दीदीकी देह अब न तो किसीकी प्रजा है, न ही किसीकी देनदार। जमींदारके नाते हम लोग तुमको उसका दाह-संस्कार नहीं करने देंगे। अगर तुम जाति भाईके नाते आना चाहते हो तो आओ और दस जने जिस तरहसे कन्धा लगा रहे हैं, तुम भी लगाओ। मुँहमें आग मैं दूँगा। यह वह मुझसे कह गयी है। इसके लिए मैं उसकी जायदाद या दौलतका दावा नहीं करूँगा।"

श्रीहरि उठ खड़ा हुआ। कहा, "काल्लू तू यहीं बैठ। नमस्ते जमादार साहब, मैं अब चलता हूँ। आप सभी चीजोंकी फिहरिस्त बनाकर जाइएगा। और जानेके पहले चाय पीते जाइएगा।"

श्रीहरिके या चले जानेको लोगोंने उसका भाग जाना ही समझ लिया। सबसे ज्यादा खुश जगन घोष हुआ था। लेकिन उससे भी ज्यादा खुश थी पदम। उस जानवर-सी शक्लवाले आदमीको देखते ही वह सिहर उठती है। उस दिनकी उसकी उस अपलक दृष्टिमें साँप-से देखते रहनेकी बात याद आ जाती है। लेकिन फिर भी वह देबूके प्रति उमग नहीं सकी। लोग जब देबूकी तारीफ कर रहे थे तो वह घूँघटकी ओटमें आठ विचराये हुए थी। देबूके प्रति जीवनमें उसे यही पहला विराग था। देबू गुरुजीके लिए उसके मनमें श्रद्धा प्रीति, कृतज्ञता, करुणाकी सीमा नहीं थी। लेकिन देबूके उस दिनके आचरणसे वह उससे विरक्त हो उठी।

उसने सबके सामने रुपयेकी बात जाहिर क्या कर दी? दुर्गाने कहा "जमाई पत्थर है पत्थर! गुरुजीको रुपयोंकी जरूरत नहीं, मगर पद्मको तो है जरूरत। उसका पति उसे कहींका न रखकर छोड़ गया है। दो मुट्ठी दानेका ठिकाना नहीं। उस अगर कोई दया करके रुपया दे गयी तो धार्मिक और बैरागी बनकर देबूने उससे वंचित कर दिया उसे। देबूका मां-पहनकर वह कबतक

रहेगी ? क्या रहेगी ? देबू उसका होता कौन है ?"

रांगा दीदी बेचारी सीधी औरत थी। उसने कितनी बार पदमसे कहा था, "अरी ऐ पद्म, देबाका जरा अच्छी तरह आदर जतन करना। बड़ा बदनसीब है वह उसे जरा अपना बना लेना।"

पदमके सामने ही देबूसे बोली थी 'देबा, शादी-ब्याह अगर न करेगा, तो कमसे कम सेवा-जतनके लिए तो कोई चाहिए ही भया! तूने पदमको बचाया है तो वही तेरी सेवा-जतन करे। बल्कि उसे तू अपने घर ही ले जा। नाहक ही दो जगह क्यों रसोई-पानी हो। और हाय जलाकर तू ही क्यों पका चुराकर खाता है।"

देबू गुरुजीने गुरुजीकी तरह ही गम्भीर होकर कहा था 'नहीं दीदी, मितनी अपने ही घर रहेगी।"

बुढ़ियाने फिर भी उम्मीद नहीं छोड़ी थी। पदमसे कहा था 'तू जरा अच्छी तरहसे इसकी सेवा जतन करना! समझी?'

सेवा-जतनका आग्रह बहुत होते हुए भी वह वैसा कर नहीं पायी। देबूने ही उसे इसका मौका नहीं दिया तो वही दबूकी दयाका अन्न ऐसे क्यों खाये? रांगा दीदीके रुपये उसे मिल जाते तो वह कहीं चली जाती। इसीलिए वह बुढ़ियाके लिए इस तरहसे रो रही थी।

दुर्गाने आंगनमें आवाज दी 'कहां है री दुहारन्-बहू?"

पदम उठी। आखें पोंछकर कहा यहां हूँ बहन!"

समीप जाकर दुर्गाने कहा 'रो रही थी, क्यों? तो तुमने सुन लिया लगता है?'

पद्मने हैरतमें आकर कहा "क्या?'—अचानक ऐसा क्या घट गया जिसे सुनकर वह और थोड़ा रो सकती है? अनिरुद्धकी कोई खबर आयी है क्या? या यतीनके बारेमें गुरुजीके पास कोई बुरी खबर आयी है?—या कि कलिंगा जंक्शनमें रेलसे कट गया?

दुर्गाका चेहरा उत्तेजनासे तमतमा रहा था।

बात क्या है दुर्गा? क्या है—बोल?'

"छिरू पालने तुमको और देबू गुरुजीका अजात कर दिया है!"—दुर्गाने होंठ टेढ़ा करके कहा। उत्तेजना क्रोध और घृणासे उसने श्रीहरिके लिए वही पुराना नाम छिरू पाल ही कहा।

अजात करेगा? मुझको और गुरुजीको?

"हाँ, तुमको और गुरुजीको।"—हँसकर दुर्गा बोली, 'तुम्हारा भाग

अच्छा ह। लेकिन वरो मैं भी न री जाऊँगी।"

एकटक दुर्गाकी तरफ ताकती हुई पदम बोली "यही कहा ह? किसने कहा?"

"घोप वाबूने—थजी छिरू पालने! उसने कभी मोचिनकी जूठी शराव पी ह, मोचिनके घरमें रात वितायी ह मोचिनके पैरा पड़ा है। रागा दीदीका किरिया-करम होगा, उसमें पाच गाँवके जाति भोत आयेंगे, ब्राह्मण आयेंगे, वही तुम लोगाका विचार होगा। तुम लोग पतित किये जाओगे।"

धीमेसे हँसकर पदमने पूछा, "और तू?"

"मै?"—दुर्गा खिलखिलाकर हँस पड़ी।—'म! —दुर्गाकी वह हँसी थम ही नहीं रही थी। जैसे बाध तोड़कर लगातार बाढ़की नदी कल-कल हसी हँसती ह वसी ही उच्छ्वसित हँसी। उसमें जितना ही कौतुक था, उतनी ही थी हिकारत। कुछ देर तक वह हसती रही। उसके बाद बोली, 'म उस दिन कन्धेमें एक ढाक लटकाकर बजाऊँगी और नाचूँगी, अपनी सारी काली करतूतें उघारूँगी। सतीश भयासे एक गीत बनवा लूँगी। ब्राम्हन, कायथ, जमींदार, महाजन—सबका नाम ले-लेकर कहूँगी और छिरू पालकी करतूतें मेरे उस गीतकी टेक होंगी।'

दुर्गा मानो सच ही नाचने लगी। पद्मको भी ऐसे ही नाचनेकी इच्छा होने लगी। बोली, 'मुझे भी अपने साथ ले लेना बहन म कांसी बजाऊँगी तेरे साथ।'

कुछ देरके बाद दुर्गाने कहा "अब जाती हूँ जरा जमाईको यह बता आऊँ। और वह वैन ही नाचते नाचते चली गयी।

सुनकर गुरुजी करेगा क्या? पद्मको भी बड़ा कौतूहल हुआ और साथ ही उसे बहुत ज्यादा कौतुक महसूस हुआ। खर! आज न देख सकी न सही। पाँच गाँवके समाजपति लोग जब आयेंगे और इसका विचार होगा, तब तो देखूँगी ही। उस दिन देखूं गुरुजी क्या कहेगा? क्या करेगा वह? तीखे और तेज गलेसे वह इसका प्रतिवाद करेगा—लगेगा वह लम्बा आदमी आगकी लपट-सा जल रहा ह। लेकिन पाच-पाँच गाँवोंके जाति भाई नवशाखाके जाने माने लोग भला उससे मानेंगे? यह बात पदम जोरके साथ कह सकती ह कि लोग नहीं मानेंगे। इलाकेके लोग श्रीहरिसे देबू घोषको कई गुना ज्यादा मानते हैं यह बात बहुत सत्य ह फिर भी लोग देबूकी बातको सच नहीं मानेंगे। लोगोंको वह पहचान चुका ह। हर आदमी जब उसकी तरफ ताककर देखता ह तो उसकी निगाहमें क्या होता ह उसे वह जानता ह। व लोग ऐसी एक

परायी युवतीका नाहक ही भरण-पोषण करनेकी रस भरी बातको हायो-हाथ प्रमाण पानेके बाद भी यकीन नही करेंगे—ऐसा भी कभी होता ह ? आसमानसे अगर देवगण भी पुकारकर कहें कि यह झठ हैं तो लोग देवताओकी बातको भी झूठ ही कहगे। और फिर श्रीहरि घोष पूरी-मिठाईका भोज करेगा। खास करके पके बालोंवाले बुड्ढे रट् रहकर सिर हिलाते हुए कहेंगे— उहूँ, अरे बाबा, सागसे मछली नही ढाँकी जा सकती !' वसेमें पण्डित क्या करेगा ? हो सकता ह् वह मुझे छोडकर प्रायश्चित्त करे ! कौन जाने ? गुरुजीके बारेमें ऐसा सोचते हुए उसे तकलीफ हुइ।

गुरुजी चाहे उस न छोडें लेकिन अब वही गुरजोकी सब सहायता अस्वीकार करेगी। उसस अब कोई भी नाता वह नहीं रखेगी। उस पचायतके सामने ही घूँघट हटाकर वह दुर्गाकी तरह होठ टेढा करके यह बात कहेगी—'गुरुजी भले आदमी ह्। वे तुम लोगो-जसे नहीं ह्। उनकी निगाहमे मिट्टीके तेलकी ढिबरी-जसी कालिख नहीं पडती। और मेरे लिए गडबड घोटाला मत करो। मै चली जाऊँगी जाऊगी नहीं जा रही हूँ यह गाँव छोडकर चली जा रही हूँ। किसीकी दयाका अन्न अब म नही खाऊँगी। तुम लोगोकी पचायतको म नही मानती, नहीं मानती नही मानती।'

क्या माने ? किसलिए माने ? घोषने चोरी चोरी जब उसके खेतका धान काट लिया था तो पचायतने उसका क्या किया ? घोषके जुल्मोसे उसका पति कहीका नहीं रहा—पचायतने उसका क्या किया ? उसका पति घर छोडकर चला गया—किसने उसकी खोज की ? उसे भोजन मयस्सर नही, पचायतने क मुट्ठी दाना दिया उसे ? उसके बचावका कौन सा इन्तजाम किया ह् पचायतन ? उसके पतिको लौटा लायें तो जाने। उसकी जो जायदाद श्रीहरिने हडप ली ह्, उसे पचायत लौटवा दे तो वह माने। नहीं तो क्यों माने ?

देबू गुरुजी पत्थर ह। दुर्गा कहती ह पत्थर ह् वह। नहीं होता तो भला वह अपनेको उसके पैरापर बेच देती ! उसे देखकर उसके कलेजेके अन्दर झलमला उठता ह्, जसे वर्षाकी इस रातमें जुगनू भरा पेड झलमल करता ह् मगर दूसरे ही क्षण बुझ जाता ह्। आज वह सारा कुछ झर जाये झर जाये ! देबूने दिया आजसे वह नही खायगी। वह फिर माटीपर औंधी पडकर रोने लगी।

दुर्गा गयी तो देखा गुरुजी नहीं हं। दरवाजेपर ताला पडा है। बाहरकी चौकीपर एक कुत्ता सोया ह ! प्राण उड गये थे उसके। गुरुजी लौटेगा तो वही

बैठेगा, ज्यादा थका हुआ हो तो शायद वहीपर लेट भी जाये। उसकी बिल्लू दीदीके अरमानोंका घर। एक ढेला मारकर उसने कुत्तेको भगा दिया। वह घोरई छोरा खलिहानमें मनकी उमगसे सातवें सुरमें जी खोलकर गा उठा—

मत रो मेरी दिलवर जनिया री,
ला दूँगा सिकडीवाला म नय।

मरे यह छोरा। उम्र भी क्या होगी? पन्द्रह पार करके सोलहमें गया होगा। इसीमें दिलवर जनियाका रोना चुपानेके लिए सिकडीवाले नथका सपना देखना शुरू कर दिया ह। उसे कुछ खरी-खोटी सुनानेका लोभ दुर्गा जब्त नहीं कर सकी। वह खलिहानमें जा पहुँची। छोकरा मगन मन गा रहा था और पुआलकी अटिया खस-खस करके काटता जा रहा था। दुर्गाके परोंकी आहट उसे सुनाई ही न पडी। दुर्गाने हँसकर कहा, "अबे ओ, ओ दिलवर जनिया!"

पलटते ही दुर्गाको देखकर वह हँस पडा और गाना बन्द करके अपने-आप ही खुक-खुक करके हँसने लगा।

दुर्गाने हँसकर कहा 'मैं तेरे पास सिकडीवाले नथके लिए आयी हूँ। देगा?'

छोरेने शर्मसे सिर झुका लिया। कहा, 'धत्त!"

'क्या, मुझसे चुमौना कर ले न! बस, सिकडीवाला नथ देनेसे ही हो जायेगा।"

छोकरा इस बार हँसते हँसते लोटपोट हो गया।

दुर्गाने कहा, "हाय राम, गला दबाओ तो अभी दूध निकलेगा, मगर जरा गीतका ढग दख लो!"

छोकरा भवें नचाकर बोला, "हाय राम नहीं, अब मैं चुमौना करूँगा।"

"किससे रे?'

"हूं! देखना, इसी क्वारमें देख लेना!"

"भौज खिलायेगा न?'

"मालिकसे रुपयके लिए कहा ह।"

तेरा मालिक गया कहाँ ह?'

अब उसे हिम्मत आयी। बेवकूफ-सा बोला, "देखकर एक बार जो जुडाने आयी थी शायद?'

देबूके प्रति दुर्गाके अनुरागकी बात कुछ छिपी नहीं थी। जबानसे तो वह नहीं कहती कुछ, लेकिन उसके काम उसके व्यवहारमें जरा भी सकोच नहीं विषय नहीं। हर किसीको नजर आता है उसका अनुराग। इसके सिवा दुर्गाकी

माँ दुर्गाके इस अनुरागका गाँव भरमें ढिंढोरा पीटती फिरती है। इसी नाहक प्रीतिके चलते ही उसकी अभागिन बेटी हाथकी लक्ष्मीको पैरोंसे ठुकराती है, इस दुःखको वह कहाँ रखे ? ककनाके बाबुओंके बगीचेके माली लोग इतने दिनोंतक आ-आकर निराश हो गये, अब नहीं आते। अवश्य बेटीकी कमाईसे उसे खास कोई मतलब नहीं दो मुट्ठी अन्न मिलनेसे ही उसका चल जाता है, लेकिन उसे देखकर खुशी तो होती ! इसीलिए इतना क्षोभ है ! दुर्गाकी माँके मुँहसे शिकायतकी यह कहानी इस छोकरेने भी सुन रखी है। दुर्गाके तानेका बदला वही कहकर उसने चुका लिया।

लेकिन दुर्गा नाराज न हुई उसने मजा लिया। हँसकर बोली, "अरे रे मुँहझौंसा ठहर तू, आने दे गुरुजीको ! मैं कहती हूँ उनसे कि तूने यह कहा है।"

छोकरेका मुँह अब सूख गया। बोला, 'मालिक नहीं हैं। वे कुसुमपुर गये हैं वहाँसे ककना जायेंगे।'

'आखिर लौटेंगे तो ?

छोकरेने कहा हो सकता है ककनासे जंक्शन जायें। हो सकता है सदर चले जायें। आज और कल न लौटें शायद ! परसों भी लौटेंगे कि नहीं क्या पता !'

दुर्गाने अचरजसे कहा "जंक्शन जायेंगे सदर जायेंगे परसों भी न लौटें शायद ! आखिर क्या क्या हुआ है रे ?

दुर्गाको परेशानीमें पड़ी देख छोकरेकी जानमें जान आयी। दुर्गाने अब वह पचड़ा छोड़ दिया। छोकरेने गम्भीर होकर कहा, 'मालिकका रवैया मालिकको ही ठीक है। क्या पता बाबा झगड़ा यहाँ दूसरे दूसरेसे हुआ और दौड़े मालिक! वहाँ राम श्याममें मारपीट हुई और दौड़े यहाँसे मेरे मालिक ! कुसुमपुरके शेखोंसे शायद ककनाके बाबुओंका दंगा हुआ है मालिक दौड़े-दौड़े गये हैं।"

ककनाके बाबुओंसे कुसुमपुरके शेखोंका दंगा हुआ है ? किस बाबूसे ? किस शेखसे ? काहेका दंगा ?

ककनाके बड़े बाबू और रहम शेखसे। वही गट्टा गट्टा सा चेहरा, यह दाढ़ी—उसी दोसजोस।'

दंगा क्या हो गया ?'

'यह क्या पता ! शेखने बाबुओंका ताड़का पेड़ काट लिया है या क्या काट लिया है, बाबुओंने इसीलिए उसे पकड़वा मँगाया और खम्भेसे बाँध दिया। शेख लोग जमात बनाकर ककना पहुँच गये। देखुड़ियाके तिनकौड़ी

पाल आया था—बादके आगे बहनेवाला कतवार, मालिकने चादर ली और चले गये।"

"जवगन जायेंगे, सदर जायेंगे—यह तुमसे किसने कहा ?"

"देवुडियाके उसी पालने ! उसने कहा कि कंकनाके थानेमें लिखाना होगा, उसके बाद सदरमें जाकर नालिश करनी होगी।"

बडी देर तक दुर्गा चुप खडी रही। फिर अपने घर गयी। आवाज दी, "बहू !"

पातूकी स्त्री बाहर आयी।

"भया किस खेतमें काम करनेके लिए गया है ?"

"अमरकुण्डाके बहारमें।"

दुर्गा अमरकुण्डाके बहारकी तरफ चल पडी। वहां जाकर पातूसे कहा, "तू जाकर जरा दम आ भया ! मैं धान रोप दूँगी।"

पातू सतीशकी मजदूरी कर रहा था, उसने कोई एतराज नहीं किया। अपने साफ कपडेको ठीकसे कमरमें लपेटकर दुर्गा धानकी गोछी गाडने लगी। औरतें भी धान रोपती हैं, पुरुषोंके सामने ही बडी फुर्तीसे रोपती चली जाती हैं। कभी दुर्गाने भी रोपा है, छोटी उम्रमें अपने भयाके खेतमें वह धान रोपती थी। अब अवश्य बहुत दिनसे वह अभ्यास छूट गया है। इसीलिए शुरूकी कुछ गोछियां गडनेमें जरा अडचन पडी, फिर ठीक हो गया। पानी भरे खेतमें अपनी रेशमा चूडियावाली कलाई डुबाकर पानी और चूडियोंसे एक खासी मीठी आवाज निकालती हुई तेजीसे एक सीधमें गोछियां गाडती जाने लगी।

अकेली वही नहीं, खेतोंमें बहुत सारी औरतें धान रोप रही थीं। नन्हे बच्चोंको साफ-सुथरी मेडपर सुला दिया था। घटा घिरे आसमानसे रह रहकर फुहियाँ पड रही थीं। ताडके पत्तेको गीली मिट्टीमें गाडकर बच्चोंके माथेपर छाह कर दी थी। असीम आनन्दसे किसान दम्पति अविराम काम करते जा रहे थे। पति हल चला रहे थे पत्नियां धान रोप रही थीं मजबूत हाथोंसे पति फावडा चला रहे थे, स्त्रियां पावोंसे खेतकी मेड बांध रही थीं। बारिशसे सारा शरीर भीगा हुआ कीचोंसे लथपथ। बीच-बीचमें धूप निकल आती कीचो-पानी सूखकर दर-दर पसीना बहने लगता बीतते सावनकी पुरवामें सिरके बालोंके गुच्छे उड रहे थे। पुरुष-कण्ठके मीठे सुरके गीत दूर दूर तक गूंजकर खो-खो जाते थे।

धान रोपते रोपते औरतें एक एक डग पीछे हट रही थीं, एक तालपर पाँव उठा रख रही थीं, हाथ भी एक ही साथ उठते गिरते थे। एक ही साथ उनके रूपा जस्तेके कंगन बज-बज उठते थे। थककर मर्द जब गाना बन्द कर देते तो

थे उसकी थादकी कडी शुरू कर देती, या कोई दूसरा गोत उसीके जवाबमें गाने लगती। पञ्चग्रामक दूर तक फले हुए वेंहारम सैकडो खेतिहर और मजूर खेतीमें जुटे थे, विशेष रुपस सताल स्त्रियाँ कामम जुटी हुई थी। उन सबोंके बीच धान रोपती हुई दुर्गा बीच-बीचमें कवनाके रास्तेकी तरफ ताक लेती थी।

ग्यारह

सारा इलाका एक ही दिनम महज कुछ घण्टोम उत्तेजनासे चचल हो उठा। मामूली खेतिहर रयतकी भी मान-मर्यादाका हक है देशके शासन-तन्त्रके आगे जमींदार, धनी महाजन और उनकी मान मर्यादामें कोई फक नही ह इस बातको साफ साफ समझ न पाते हुए भी इसका कुछ आभास उन्हें था। मामलेका कुसुमपुरके मौलवी इरशाद और देवूने पेचीदा बना दिया ह।

रहमने तिनकौडीस उस दिन ताडका एक पेड बेचनेका जिक्र किया था। इदुलफितर सिरपर था और सावन भादोका अभाव ऊपरसे, परेशान होकर वह धान या रुपया कज लेनेके फिराकमें इधर उधर चक्कर काट रहा था। तभी उसे खबर मिली कि जक्शन शहरमें कलकत्तेके कारखानेवालेके कारखानेमें एक नया शेड बनेगा। शेडके लिए अच्छा पका हुआ ताडका पेड चाहिए। यह खबर उसे अपने गावके आरा चलानेवालोंसे मिली। आरेवाले अबू सेखने उससे कहा, ' बडे भाई, सोना डागाके बहारवाले सीठीके खेतम जो ताड ह, उसे बेच दो न ! कारखानेवाला काफी दाम दे रहा ह। तीस रुपयेम तो शक ही नही।"

गाय बकरीके पकार जसे इस बातकी खोज रखते ह कि किसके और कहाँ अच्छे मवेशी ह उसी प्रकार ये लकडी चीरनेवाले भी अच्छे पेडोंकी खोज खबर रखते ह। आदत भी कहिए और जरूरत भी। किसीका भी नया मकान बननेको हो तो वही हाजिर हो जात ह। घरम लगनेवाली लकडी चीर देनेका ठेका लेते ह वही पेडकी कमी पडी तो बता देते ह कि काम लायक अच्छा पेड कहाँ मिलेगा। कारखानवालेका बहुत बडा शेड बन रहा ह उसके छप्परके लिए ताडका पेड चाहिए, मामूलीस ज्यादा लम्बा पेड और केवल बडा ही नही,

बिल्कुल सीधा और आदिसे अन्त तक साल्वाला पेड होना चाहिए, पक्का पेड ! उमीसे लोहेके 'टी' और एंगिल्का काम चलाना होगा। लोहे और लकडीका हिसाब लगाकर कारखानेवालेने देखा कि यहा जिस दामपर लकडीकी खरीद बिक्री होती ह उससे तीन गुना ज्यादा दाम देनेसे भी उसका आधा खर्च बच जायेगा। उसने आम दरसे दूनेका ऐलान कर दिया। उस पेडपर अबूकी नजर थी। यहाकी दरसे उस पेडका दाम पन्द्रहसे ज्यादा नही होता। इसीलिए उसने बीस कहा।

और किसी वक्त अगर कोई यह बात कहता तो रहम सुना देता—'मेरे पेटमें आग लगी है या लछमी रूठी ह मुझसे कि म वह गाछ बेंचूँ। शैतान कहींका, भाग !'

वह पेड उसे बडा प्यारा था। उसे उसके दादाने लगाया था। जाने कहाँ किस कुटुम्बीके यहाँ गया था, वहीसे एक बहुत बडा पक्का ताड ले आया था। ताडका रस जसा मीठा था, उतनी ही मीठी थी उसकी सुगन्ध। आमतौरसे ताडमें तीन गुठलिया होती ह, इसमें चार थी। सोना डागाकी ऊँची परतीमें मिट्टी काटकर उसने उसी समय खेत तयार किया था। उसीकी मेडपर उसने चारो गुठलिया गाड दी। पेड एक ही हुआ। तीन पुश्तसे वह पेड बढता आया, खूब हुआ, नीचेसे ऊपर तक साल ही साल ! फिर खुले समतलमें होनेकी वजहसे पेडको तीरकी तरह सीधा ऊपर उठनेका मौका मिला। इसे बेचनेकी कभी कल्पना भी न की थी रहमने। लेकिन इस बार वह बहुत आडे पड गया, पन्द्रहके बदले बीस रुपये कीमत भी लुभावनी थी। इसीलिए अबूकी बातको सुनकर वह चुप रहा। उसे एक बात और लगी, अबूने जब बीस कहा ह तो निश्चय ही उसने कुछ हाथमें रखकर कहा ह। इसीलिए उस दिन वह खुद ही कारखाने वालेके पास गया था। कारखानेवालेने पेडकी जानकारी पहले ही हासिल कर ली थी और उसने अपने हिसाबसे एक ही बात कह दी, 'उसे बेचो तो म तीस रुपये दूँगा।'

'तीस रुपये !'—रहम हरान रह गया।

'राजी हो, तो रुपय ले जाओ। मोल भाव म नहीं करता। इससे ज्यादा मैं और कुछ नही कहूँगा।'

रहम राजी हो गया। खेतीका वक्त निकलता जा रहा था। घरमें अनाज खतम हो चला था। जन मजूरको धान देना पडता ह। वे खुराकीके लिए परेशान हो रहे थे। धान न मिले तो क्या खाकर खेतीमें खटेंगे वे ? ऊपरसे रमजान का महीना रोजेके दिन करीब आते जा रहे थे। बच्चे-बच्ची और बीबी कितनी

उम्मीदें किये हुए थे कि नये कपड़े मिलेंगे। ऐसेमें राजी हुए बिना उपाय भी क्या था? एक उपाय था जमींदारके आगे झुक जाना, बढ़ा हुआ लगान देना। लेकिन यह तो उससे हरगिज न होगा! बात दी तो जातिका भी हल्फ लिया। वादा खिलाफी होगी तो उसका ईमान कहाँ रहेगा? रमजानका पाक महीना, रोजा रख रहा है, ईमान तोड़नेकी गुनाह वह नहीं कर सकता।

वहीं कारखानेवालेसे उसकी दादनकी बात भी हुई थी। मिलके गोदाममें और बाहर धानकी ढेरियाँ देखकर रहम अपनेको जब्त नहीं कर सका। बोला, "हमें कुछ धान दादन दीजिए न? पूस माघमें ले लीजिएगा, सूद समेत!"

कुछ देर उसकी ओर देखते हुए कारखानेवालेने कहा, "धान नहीं, रुपये दे सकता हूँ।"

"रुपये लेकर हम क्या करेंगे बाबू? हमें तो धान चाहिए धान!"

"धानसे ही रुपये होते हैं, रुपयेसे ही धान। रुपयेसे धान खरीद लेना।"

"वह भी तो आपसे ही खरीदेंगे न!"

"नहीं, मैं धान नहीं चावल बेचता हूँ। वह भी दस-पाँच मन नहीं दो चार सौ मनसे कम होनेपर नहीं बेचता। रुपये लेकर यहाँके गद्दीवालोंसे खरीद लेना।"

बड़ी देर चुपचाप सोचकर रहमने पूछा, "सूद कितना लेंगे रुपयेपर?"

"सूद नहीं लूँगा, पूस माघमें उतने ही रुपयेका धान देना होगा। उस समय धानकी जो दर होगी, उससे रुपयेमें एक आना कम देना होगा। एक बात और है।"

"वह क्या?"

"जो लोग मुझसे दादन लेंगे वे दूसरेके हाथ धान नहीं बेच पायेंगे। इसकी कोई लिखा-पढ़ी तो नहीं रहेगी, मगर वचन देना होगा। तुम लोग मुसलमान हो, ईमानपर बात देनी होगी।"

तब रहमने कहा था, "अच्छा, आपसमें राय मशविरा करके बतायेंगे।"

"ठीक है।" मिलवाला मन ही मन हँसा था—"दादनके रुपये आज ही ले जा सकते हो।"

"जी, परसों आऊँगा। तभी सब ठीक कर जाऊँगा।"

बठकमें दादनकी बात तय पायी गयी और रहमने ताड़का पेड़ बेचनेका निश्चय कर लिया। लेकिन उसकी दोनों बीवियाँ ताड़के पेड़के लिए रो पड़ीं

थी—उफ इतना मीठा ताड। कितने लोग उनके यहाँ ताड मागने आते हैं। भादोंमें ताड पककर खुद ही गिर पडते हैं। भोरहरेमें ही गरीब-गुरबोंके बच्चे उसे चुन ले जाते ह। गिरे हुए ताडपर इतर किसीकी मिल्कियत नही होती। इसीलिए रहम पकने-पकनेको होते ही ताड कटवाकर घर ले आता ह। तकलीफ उसे भी खूब हो रही थी। मगर उपाय क्या था? उस दिन आकर गाछका दाम वह ले आया। रुपये दादन लेनेकी बात भी पक्की कर आया।

लेकिन एक बातका रहमको खयाल न रहा और असल बात वही थी। बात थी पेडकी मिल्कियतकी। तीन पुश्तमें मिल्कियतमें हेर-फेर हो गया इसका उसे खयाल भी न था। उसके दादाने जमीदारसे परती बन्दोबस्त लेकर अपने हाथसे खेत तैयार किया था। लेकिन उसका बाप अपने अन्तिम दिनोंमें कर्जके कारण कमनाथ मुकर्जी बाबूको वह जमीन बेच गया था। मुकर्जी लोग बहुत बडे महाजन ह—लखपति। इस तरह कर्जसे इलाकेकी बहुत जमीन उनके हाथ आयी ह, हजारो-हजार बीघा। इतनी जमीनमें खुद खेती करना किसीके लिए भी मुमकिन नहीं। फिर वे किसान भी नही, असलमें वे महाजन जमीदार हैं। इसीलिए उनकी सारी जमीन बटाईदारीमें लगी हुई थी। फसलके वक्त बाबू लोगोंके आदमी आते समझ-बूझकर अपना हिस्सा ले जाते। जमीन बेच देनेके बाद रहमके बापने बाबुओंसे वह जमीन बटाईमें खेती करनेके लिए ले रखी थी। बापके मर जानेके बाद रहम भी उसे जोत रहा ह। एक दिनके लिए भी कभी यह खयाल उसे न आया कि जमीन उसकी अपनी नही ह। लगानके बदले उपजका हिस्सा दिया करता, बस यही। उसी हिसाबसे वह जमीनकी देख रेख करता ह, जमीनमें कुछ करना-कराना हुआ तो मजदूर रखकर सदा उसीने कर करा लिया—उसके लिए बाबुओंने कभी रुपया माँगनेकी याद नहीं रही। यों सदा सबसे कहता आया कि यह मेरी बपौती जमीन ह मनमें भी उसे अपनी ही समझता रहा ह। उसी जमानेके धानसे सदा नवान्न करता आया ह। ताडके इस पेडको जब उसने बेचा तो एक बार भी यह बात उसके मनमें नहीं आयी कि पेड उसका नही ह, दूसरेका पेड बेचकर वह अन्याय कर रहा ह।

मिलवाला पेडको काटकर उठा ले गया, उसके बाद आज सबेरे अचानक रहमके यहाँ चपरासी आ पहुँचा— बाबूने बुलाया ह फौरन चलो।'

रहमने बर्रोंकी सानी लगायी थी, उनका खाना खत्म हो, इस इतजारमें था वह। उसने कहा कहना बाबूसे, उस बेला आऊँगा।'

'उँहूँ इसी वक्त जाना पडेगा।'

रहम मातब्बर किसान ठहरा, तिसपर गँवार। उखड गया— 'इसी वक्त

जाना होगाके माने ? मैं क्या तेरे बाबूका खरीदा हुआ गुलाम हूँ।"

चपरासीने रहमका हाथ धर दबाया। दबाना था कि ज़ोरावर रहमने चपरासीके गालपर ज़ोरका एक तमाचा जड़ दिया—"यह हिमाक़त, मेरे बदनपर हाथ।"

वह ज़मीदारका चपरासी था, इन्द्रके ऐरावत-सा घमण्ड, वैसे ही झूमते हुए चला करता था। इलाकेमें कोई उसे इस तरहसे तमाचा भी लगा सकता है, यह वह सोच भी नहीं सकता था। तमाचेसे सिर चक्करा ज़रूर गया, लेकिन सँभल कर वह गुर्राया। रहमने तुरत दूसरे गालपर भी एक तमाचा लगाया और बरामदेपर से लाठी उठाकर बड़े तावसे पलटकर खड़ा हो गया।

अब चपरासीको होश आया। उसने और कुछ नहीं कहा-सुना वापस चला गया जाकर ज़मीदारके परोंपर लोट पड़ा। रहमके तमाचेसे सूजे हुए गालपर आँसू ढुलक आये। बोला, 'अब यह नौकरी मुझसे नहीं चलेगी हुज़ूर। माफ कीजिए।'

सुन सुनाकर बाबू तो आग-बबूला हो उठे। फौरन पाँच-पाँच लठत भेजे गये। वे लठत रहमको खेतसे ही पकड़ ले गये। अपनी शक्ति और ऐश्वर्य दिखाते हुए सम्राट आलमगीरने जैसे पर्वतमूषिक' शिवाजीसे भेंट की थी बाबूने ठीक वैसे ही रहमसे भेंट की। उनके निजी बठकेके बरामदेपर रहमको हाज़िर किया गया। वहाँ प्यादे चपरासी पचकार गुमाश्ते गमगम कर रहे थे। बाबू आरामसे ओठँगकर गरचेसे गुड़गुड़ी पी रहे थे।

रहम सलाम करके खड़ा हो गया। बाबू बोले ही नहीं।

मुड़कर उसने बैठने योग्य किसी जगहकी खोज की मगर कुछ कुरसियोंके सिवा वहाँ कुछ नहीं था। ज़मीनपर बैठनेको उसका जी नहीं चाह रहा था। उसके आत्माभिमानको ठेस लगी। पश्चिम बंगालके जिस भी मुसलमान किसानके पास थोड़ी बहुत ज़मीन जिरात है उन सबको यह आत्माभिमान है। आखिर कोई कबतक खड़ा रह सकता है ? और फिर किसीने उससे कोई बात तक न की। चारों तरफ लोगोंकी ऐसी मौन उपेक्षा और बाबूका यों इस अन्दाजसे तम्बाकू पीना और कुछ नहीं उसका अपमान करनेके लिए है यह समझनेमें भी उसे देर न लगी।

उसने इस बार बड़े ज़ोरसे सलाम कहकर अपना अस्तित्व मुस्तसरमें जता दिया।

रहमने कहा 'यह खनीका समय है। हमारे लिए बैठनेका यह समय नहीं। कहना है सो कहिए।"

बाबू उठ बठे। बोले, "मेरे चपरासीको तुमने तमाचा मारा है ?"

"उसने मेरा हाथ क्या पकडा ? मेरी क्या इज्जत नही है ? चपरासी मेरे बदनमें हाथ लगानेवाला कौन होता है ?"

गरदन मोडकर टेढी हँसी हसते हुए बाबूने कहा, 'यहा जितने चपरासी हैं सब अगर तुम्हे दो दो चपत लगायें तो तुम क्या कर सकते हो ?"

रहम गुस्सेसे बोल नही पाया सिर्फ एक बेमानी आवाज करके रह गया।

एक चपरासीने तुरत उसके मुँहपर एक चपत मार दी—'चुप, बेअदब कहींका !"

रहमने तशमें आकर हाथ उठाया पर तीन चार जनाने मिलकर उसका हाथ पकड लिया—'चुप। बठ यहीं बठ जा।'

सबने दबाव देकर उसे वही बठा दिया। रहम समझ गया, जोर चाहे जितना हो उसके भीतर, इसने लोगोके आगे वह बेकार है कोई कीमत नही उसकी। क्रोध और कुलनसे एक बार उसने चपरासीकी तरफ ताका। पन्द्रह चपरासी थे, जिनमेंसे दस उसके जाति भाई—मुसलमान थे। रमजानका महीना, रोजा रखा था फिर भी उसका यो अपमान करनेमे उन्हें हिचक न हुई। रमजान उदयापनके समय इन्ही लोगोसे गले मिलना होगा। धरतीकी ओर नजर किये वह चुप बठा रहा।

तिनकौडीके बारेमे देबूके हरवाहे छोकरेने दुर्गासे कहा था—"बाढके आगे रहनेवाला कतवार। तिनकौडी कतवार है या नही, नही कह सकता, पर हर जगह वह सबसे पहले हाजिर हो जाता है। लिहाजा तिनकौडीको बाढका अगला बहाव कहना ही ठीक होगा। लोगोकी जबानसे खबर चारो तरफ फैल गयी। कुसुमपुरके और भी कई मुसलमान खेतिहर रहमकी जमीनके आसपास खेतोंमें काम कर रहे थे। उन्होने यह सब देखा, पर हल छोडकर जा नही सके। तिनकौडी उन सबसे कुछ दूर था। दूरसे देखकर वह अन्दाज नहीं लगा सका कि माजरा क्या है। कुछ लोग आये और रहम भाई हल-बैल छोडकर चला गया। लेकिन आनेवाले लोगोके मुरठने उसे चौकन्ना कर दिया। उसने झट हलवाहेको हल थमाया और जा पहुँचा, पता किया और भागा भागा कुसुमपुर गया। इरशादको खबर देकर कहा, "देखो, खोज-खबर लो।

इरशादने सोचमें पडकर कहा "वही तो !"

सोच विचारकर इरशादने एक आदमी भेज दिया। उस आदमीने आकर

सही-सही वाक़या जो बताया तो इरशाद आपसे बाहर हो गया। सबको बुलवाया और कहा "तुम सब मेरे साथ चलोगे? हम सब रहम भाईको छीनकर ले आयेंगे।"

पचास-साठ किसान एक साथ उछल पड़े।

मुसलमानोंका यह साहस जो है बहुत हद तक वह साम्प्रदायिक भावनाकी देन है। ऊपरसे अनाज, असमयका गरीबोंसे सतायी हुई ज़िन्दगीका विक्षोभ, जो शासन-पीड़नसे नहीं जाता, हृदयमें सोया रहता है वही विक्षोभ उन्हें एक समवेदनाके क्षेत्रमें स्वयं सगठित कर देता है। इनका यह असन्तोष ज़मींदारके खिलाफ़ हड़ताल करनेकी दशामें कुछ दिनसे भड़कता आ रहा था, जैसे ज्वालामुखीके खुले मुँहपर आग उगलनेके आगे धुँआ आ जाता है।

वे जमात बनाकर चल पड़े रहमको छुड़ाकर लायेंगे। उन सबका जाति भाई उन्हीं पाचमन्से एक जाना-माना आदमी, उन सबका रहम भाई! सब इरशादके पीछे हो लिये। तिनकौड़ी उसी समय शिवकालीपुरकी तरफ़ लपका, देबूकी ज़रूरत है इस समय।

ज़मींदारकी कचहरीमें इस तरहसे जमात बनाकर लोग और भी कई बार जा चुके हैं। स्थिति भी बहुत-कुछ एक ही प्रकारकी। ज़मींदार-द्वारा सज़ा पाये हुए आदमीको छुड़ानेके लिए गाँव भरके लोग जुट आये। आरज़ मिन्नत की, बहुत-बहुत खुशामद दरामद गल्ती-कसूर कबूल किया, माफ़ी माँगी और छुटकारेका अर्ज़ किया। लेकिन आज ये लोग और ही मूर्ति, और ही मनोभाव लेकर हाज़िर हुए थे।

पूरी जमात कचहरीके प्रांगणमें पहुँची। आगे-आगे इरशाद। बरामदेपर ज़मींदार साहब कुरसीसे उठ खड़े हुए चुपचाप अपनी शक्ल उन्होंने दिखा दी। उन्हें पता है कि उनकी शक्ल देखकर इलाकेके लोग डरसे सन्न रह जाते हैं। चपरासी लोग गुमानके साथ सज धजकर खड़े हो गये। जिनकी पगड़ी खुली थी उन्होंने माथेपर पगड़ी बाँध ली।

जमात बरामदेकी सीढ़ीके पास जाकर चुपचाप खड़ी हो गयी। ज़मींदारने गम्भीर स्वरमें ललकारा कौन? कहाँके हो तुम लोग? क्या चाहते हो?'—उन्होंने सोचा था—कहते ही आगे आनके लिए उनमें धक्कमधुक्की शुरू हो जायेगी, हर कोई उन्हें अपना सलाम दिखा देना चाहेगा एक साथ पचास-साठ आदमी झुक जायेंगे। मिट्टीसे टकराकर उनके सलामकी प्रतिध्वनि बरामदेपर आयेगी—सलाम हुज़ूर!

लेकिन जमात चुप थी। मामूली सी खुशी-खुशी, चंचलता भी मानो नजर आयी।

जमीदारने फिर उसी स्वरमें कहा, "जो कहना हो, सिरिश्तेमें जाकर कहो।"

अब इरशाद सीधे ऊपर पहुँच गया। निहायत मामूली-सा एक सलाम करके बोला, "सलाम! जरूरत आपसे ही है।"

"एक ही साथ बहुत-सी अर्जियां हैं क्या? अभी मुझे फुरसत नहीं है। जरूरत हो तो—"

इरशादने बीच ही में टोका, "आपने चपरासी भेजकर रहम चाचाको इस तरहसे पकड़वा क्यों मँगाया है? उसे यहाँ रोक क्या रखा है?"

जमींदार और रहम इस बार एक साथ ही गरज उठे।

जमींदारने रोषसे पुकारा, 'चपरासी! किसन सिंह! जाविद अली!"

रहम खड़ा होकर चीख उठा, "मेरे मुँहपर तमाचा मारा है, गरदन दबाकर जबरदस्ती बिठाला है, मेरी आबरूपर हमला किया है!"

चपरासी किसनसिंह गरजा, "ऐ रहम अली, बैठे रहो!"

जाविद जरा आगे बढ़ आया, दूसरे चपरासियाने अपनी-अपनी लाठी सँभाल ली।

इरशाद चीख उठा, "खबरदार!"

उसके साथ-साथ सारी जमात चिल्ला पड़ी, बहुत बातोंमें कोई खास बात समझमें नहीं आयी, सामूहिक शब्दोंके एक शोरने सिर्फ एक जबरदस्त विरोध जाहिर कर दिया।

दूसरा क्षण एक अजीब सन्नाटेका क्षण। दोनों तरफके लोग एक-दूसरेको टकसे देखते रहे।

उस सन्नाटेको तोड़ते हुए पहले जमींदारने बात की। पहले वे भौंचक्के-से रह गये थे। रयत, गरीब लोग—ये अचानक ऐसे कैसे हो उठे! दूसरे ही क्षण उन्हें लगा, कुत्ते भी कभी-कभी पागल हो जाते हैं। वह उनका मरण रोग जरूर है पर अभी उस रोगका जहर उनके दाँतोंमें फैला हुआ है। उनका दाँत गड़ जाये तो मालिकको भी मरना पड़ेगा। उन्होंने सावधान हो जानेके लिए ही कहा, 'किसनसिंह, बन्दूक निकालो।'

उसके बाद लोगोंकी तरफ घूमकर बोले, 'तुम लोग दंगा करनेकी कोशिश करोगे तो मैं गोली चलाऊँगा।"

मार मारका शोर उठ ही रहा था कि पीछेसे एक तेज और ऊँची आवाजमें

सुनाई पडा, "नही भाइयो, हम सब दगा करोके लिए नही आये हैं। हम अपने रहम चाचाको छुडा ले जानेके लिए आये हैं। आओ रहम चाचा, उठकर चले आओ।"

सबने देखा, नीचेकी भीडके बगलसे भीडको पार करता हुआ देवू घोप साढियापर चढ रहा ह। सारी भीड एक साथ बोल उठी, "चले आओ चाचा! चले आओ! बडे भाई! रहम भाई! चले आओ!"

चपरासियोने जमीदारकी ओर देखा। आविदको उम्मीद हुई कि ऐसी हालतमें उनके मुँहसे कोई जोरदार धमकी या चपरासियोंको कडा बपरवाह हुक्म मिलेगा। लेकिन बाबूने सिफ इतना ही कहा, "रहमने चोरीसे मेरा ताड का पेड बेच दिया है। म उस थाने भिजवाऊगा।

देवूने कहा, "आप थानेमें खबर भेज दीजिए, ले जाना होगा तो दरोगा पकडकर ले जायेगा। थानेको खबर भेजे बिना अपने चपरासीसे गिरफ्तार करानेका अधिकार आपको नही ह। आपकी कचहरी न तो सरकारी थाना ह, न हाजत ही। चले आयो चाचा, चलो!"

रहम खडा था। उसका हाथ पकडकर देवू बरामदेसे उतरने लगा। इर शाद उनके साथ हो लिया। देवूने जनतासे कहा, 'चलो भाइयो लौट चलो।

जगली कुत्ते और हिरन जमात बनाकर रहते ह, भैंसे, बाघ और सिंह नही। यह जीवोका एक धम ह। शक्ति जहा असमान अधिकतासे एक स्थानपर जमा होती ह वहा एक होकर निडर रहनेकी प्रवत्ति स्वाभाविक ह। आदिम जातियो म शारीरिक बलमें बलवानसे अपने बचावके लिए कमजोरोने एक होकर उसे शिकस्त देनी चाही थी। आग चलकर बलवानको ही अपना दलपति बनाकर सम्मान देनेके परिवतनमें दलके सभाके प्रति कत्तव्यका बोझा उसके कधोपर लादनेके कौशलका आविष्कार किया था। फिर भी जमातमें बलवानके प्रति ईर्ष्या सदासे थी और ह। धनकी शक्तिके आविष्कारके बादसे धनपतियोंसे शौयवालोने हार मान ली ह। धनपतियोके इशारेपर ही आज एक देशकी शौय शक्ति दूसरे देशकी शौय-शक्तिसे लडती है मित्रता करती ह। लेकिन एक ही देशके छोटे बडे धनपतियोमें भी परस्पर ईर्ष्या पुराने नियमसे जारी ह एकके विनाशमे दूसरेको सुखी होती ह। इस समय वसे ही ईर्ष्यालु व्यक्तिका एक प्रतिनिधि आकर उनके सामने हाजिर हो गया।

कङ्कनाके ही एक मध्यवित्त जमीदारके नायबने आकर देवू और इरशादको बुलाया। वह इन लोगोके लिए ही रास्तेमे खडा था। बोला, 'बाबूने आप लोगो के पास भेजा ह।'

भवें सिकोडकर देवूने कहा, "क्यो ?"

"वावू इससे बडे दुखी हुए है। छि ! यह क्या आदमीका काम है ! पैसा हो जाये तो क्या इसी तरह लोगोके सिरपर पैर रखकर चलना चाहिए ।"

इरशादने कहा, "वावूको हम लोगोंका सलाम कहिए ।"

"वावूने कहा है थानेमें डायरी कराना न भूलिए। नही तो इसके बाद आप ही लोगोंको हगामेमें डालेगा। यहींसे सीधे थानेमें चले जाइए।"

इरशादने देवूकी तरफ देखा। देवूको नजरबन्द यतीन बाबूकी बात याद आयी। गाछ काटनेके हगामेमें उस बार यतीन वावूने भी थानेमें डायरी लिखाने के लिए कहा था। कहा था, मजिस्ट्रेट साहबको, कमिश्नर साहबको दो तार भेज दो।

नायब बोला, "डायरी इस तरहसे कराओ कि चपरासी लोग गलेमें गमछा लगाकर खेतसे खीच लाये, कचहरीमें मारा पीटा और खम्भेसे बाध रखा। जब तुम सब वहा पहुँचे तो गोली छोडी। खुशकिस्मतीसे गोली किसीको लगी नही।'

देवू अवाक होकर उस नायबकी तरफ देखता रहा 'इस नायबके मामूली से जमीदारसे भी लगान बढानेका विरोध कुछ-कुछ है उन्हें। इस मामलेमें ये भी मुखर्जी वावूसे जा मिले है और वहो छिपकर हमें राय देकर उनसे दुश्मनी कर रहे है। "

इरशाद तथा और लोग खुश हो गये। इरशादने कहा, 'नायबजी कुछ बुरा नही बता रहे है देवू भाई।'

नायबने कहा, 'मै चला, जाने कौन कहाँ देख ले। हजार हो, आखाकी दाम तो है ही। लेकिन हा, जो कहा वही कीजिए।"—वह चला गया।

इरशादने कहा, 'देवू भाई, तुम तो कुछ कह नहीं रहे हो।'

देवूने सिर्फ इतना ही कहा, 'नायबजी जो कहा वही करना चाहते हो इरशाद भाई ?'

रहमने कहा, "हाँ भया ! नायबने ठीक ही कहा है।'

'डायरी लिखानेमें मै असहमत नहीं हूँ। लेकिन यह गलेमें गमछा लगाना, खम्भेसे बाँधना, गोली छोडना—यह भी लिखाओगे ?"

हा, इससे मुकदमेको बल मिलेगा।"

'लेकिन ये बातें तो झूठी है रहम चाचा!'

रहम और इरशाद अवाक हो गये। रहम मामले मुकदमेका आदमी है। इरशादने खुद तो मामला किया नही लेकिन दोस्त हाजीके साथ टोले-पडोसके लोगोंके मामले मुकदमेमे राय-मशविरा देता है परवा करता है। पूरा-पूरा सच

कहनेसे दुनियामें मामला मुकदमा नहीं हो सकता, इसका उन्हें पूरा तजुर्बा है।

रहमने कहा, देबू चाचा, तुम बच्चेके बच्चे ही रह गये।"

देबूने कहा, तो फिर जो करना हो, तुम लोग कर आओ चाचा! इरशाद भाई जा रहा है, मैं अपने घर जाता हूँ।"

"घर जाओगे?

"हाँ! और समय मैं तुम लोगोंके साथ ही रहा हूँ। लेकिन इसे तुम्हीं लोग कर आओ।

इरशाद और रहम मन ही मन थोड़ा नाराज हो गये। बोले 'जरूर जाओ!"

कई दिनके बाद। डायरी और टेलिग्राम दोनों करा दिये गये। साथ ही चारों तरफ—क्या हिन्दू क्या मुसलमान—सभी रैयत खूब उत्तेजित हो उठे। लगान बढ़नेके विरोधमें किये जानेवाले आन्दोलनकी तैयारी इस आकस्मिक घटनासे आपसे-आप बड़ी जोरदार हो गयी। इससे लगानकी बढ़ोतरीके लेखे जोखेका आर्थिक नफा नुकसान प्रजाके लिए बिल्कुल तुच्छ हो गया। इसने एकाएक उनकी इहलौकिक और पारलौकिक सारी चिंताओं और कर्मोको आच्छादित कर लिया। हानि लाभके अलावा भी एक और चीज होती है—जिद। दलगत स्वार्थ और नीतिके नाते उनकी वह जिद और भी बलवती हो उठी।

इस उत्तेजित जीवन प्रवाहके बहावसे देबू एकाएक मानो एक किनारे जा रहा। अपने बरामदेकी चौकीपर बैठा यही सोच रहा था वह। दुर्गा उसे पंचायत की बात बता गयी थी। पहले वह उदास-सा हँसा था। लेकिन इन्हीं कई दिनों में उसे और पदमको लेकर बस्तीमें तरह-तरहकी आलोचनाएं शुरू हो गयी थीं। बहुत लोगोंकी बहुत-बहुत तरहकी बातोंका आभास उसे मिल रहा था।

आज फिर तिनकौड़ी आकर कह गया, "लोग क्या कह रहे हैं, मालूम है भया?"

लोग जो कह रहे थे, देबूको मालूम था। वह चुप रहा। हँसा।

तिनकौड़ीने जोशमें आकर कहा, "हँसो मत बेटे! तुम तो हर बातमें हँस देते हो यह मुझे अच्छा नहीं लगता।"

देबू तो भी हँसकर ही बोला, 'लोग कहते हैं तो मैं उसका क्या करूँ?"

उसका प्रतिकार क्या किया जा सकता है, यह तिनकौड़ीको नहीं मालूम। लेकिन उसने अधीर होकर कहा, 'लोगोंको नरकमें भी जगह नहीं मिलेगी यह बात मैं कुसुमपुरवालोंसे कह आया हूँ।"

"कुसुमपुरके लोग भी यही कह रहे हैं क्या ?"

"वही तो कह रहे हैं। कह रहे ह कि देवूने मुखर्जी बाबुओंमें भीतर-ही-भीतर साजिश की ह। नहीं तो डायरी लिखानेमें वह साथ क्यो नही गया।"

सुनकर देवूका सारा शरीर हिम हो गया मानो।

तिनकौडी बोला, "यह भी कह रहे हैं कि देवू जब कचहरी पहुँचा, उसी वक्त बाबूने देवूको कनखी मार दी। इसीसे देवू आधी राहसे लौट आया।"

देवू जसे पत्थर हो गया, कोई जवाब नही दिया उसने। काठका मारा-सा बठा रहा।

बारह

खबर और भी विस्तारसे ताराचरण नाईसे मिली। उसके यजमान पाँचा गाँवोंमें ह। वह नियमसे आता-जाता ह। बयान करनेके बाद उसने सिर सुजलाकर कहा, "और क्या कहूँ गुरुजी।

देवू आदमीमें गलत विश्वासकी बात सोचने लगा।

ताराचरणने फिर कहा "कलजुगमें किसीका भला नही करना चाहिए।" ताराचरण इन मामलोंमें निर्विकार आदमी ह। परायी निन्दा सुनते-सुनते उसके मनमें जमे ठेला पड गया ह। फिर भी देवूके बारेमें ऐसी घटनासे वह पीडाका अनुभव किये बिना न रह सका।

देवूने कहा, इस बीच न्यायरत्नजीके यहाँ गये थे ?

"गया था। उन्होंने भी यह सुना ह।"

'सुना ह ?"

'हाँ, घोष एक दिन उनके यहाँ भी गये थे न।'

'कौन ? श्रीहरि ?'

'हाँ। वह खूब पड गया ह पीछे। कल देखिएगा उसका मजा जरा।'

'मजा ?

पाँच गाँवोंमें-से कंकना-कुसुमपुरको छोडकर दूसर गाँवोंके मातबर मण्डलोंकी करनी-करतूत कल देख लीजिए। घोष कल धान गाला खोलेगा।'

'तो श्रीहरि धान देगा ?

"जी ! जिन लोगोंने पचग्रामी मजलिसके कहनेपर घोषकी हाँमें हाँ मिलायी ह घोष उन सबको धान दगा। बहुतेरे लोग बेशक राजी नही हुए हैं लेकिन जाने माने लोग झुक गये है। मण्डलोंमें-से सिर्फ तिनकौडीने कहा है—मैं इन बातोंमे नही हू।"

देबू फिर जरा देर चुप रहा। आज मानो उसके दिमागमें आग जल उठी है। उसके मनमें तरह-तरहकी उन्मत्त इच्छाएँ जगने लगी। जीमें आया देबु डियाके उन खूँखार भल्लोंका नेता बनकर इलाकेके मातबरोंको मटियामेट कर दे। सबसे पहले श्रीहरिको, उसका सरबस लूटकर, उसकी आँखें फोडकर उसके घरमें आग लगवा दे।

ताराचरण बोला "खेतीका समय है। धानकी कमी न होती तो ऐसा नही होता। हडतालके लिए तो मातबर लोग ही उछल पडे थे आपको तो वही लोग खीच ले गये। लेकिन धान मिलना बन्द होते ही सब मन-ही मन हाय हाय करने लगे। इधर आपको समाजसे अलग करनेके लिए पचायत बुलानेकी नीयतसे जैसे ही श्रीहरि मण्डलोंके घर गया कि मण्डलोंने सोचा यही मौका ह, और सब झुक गये। इसके सिवा "

'इसके सिवा ?"—एकटक देखते हुए देबूने पूछा।

"इसके सिवा"—ताराचरण फिर जरा रुककर बोला 'आजके लोगोंको तो आप जानते ही है। सुभाव चरित्तर भ जनोंका ठीक है ? लुहार बहू और दुर्गाके बारेमें सुनकर सब रस ले रहे ह।

हूँ ! इस सम्बन्धमें न्यायरत्न महाशयने क्या कहा मालूम ह ? तुमने कहा न कि श्रीहरि वहाँ गया था।

दोनों हाथ जोडकर प्रणाम करते हुए तारोचरणने कहा, ठाकुर बाबा ? —वह हँसा। हसकर बोला ठाकुर बाबाने कहा—अहा, कितना अच्छा कहा ! आखिर पण्डितकी बात ठहरी ! मने कण्ठ कर ली थी ठहरिए याद कर लूँ !'

जरा सोचकर वह हताश होकर बोला न याद नही आ रहा है। हाँ, लेकिन यह कहा ह कि इस बातसे मुझे अलग रखो। तुम पालसे घोष हुए हो, बहुत बडे पण्डित तो खुद ही हो तुम। जो करना हो कंकनाके बाबुओंसे मिल मिलाकर करो।

दरअसल न्यायरत्नने कहा था 'मेरे दिन लद गये घोष ! म अब तुम लोगोंका खारिज विधाता हू। मेरी विधिसे अब तुम्हारा काम नही चलेगा ! और विधि विधान म देता भी नही।' —उसके बाद हँसकर कहा, 'कंकनाके बाबुओं

के पास आया। तुम लोगोंके वही महामहोपाध्याय हैं। तुम पालसे घोष बन बैठे, एक उपाध्याय तो तुम स्वयं हो।'

देवू सात्त्वनासे माना जुड़ा गया। बड़ी देर चुप रहकर उसने अपनी उन्मत्तताको शान्त किया। छि, यह सब सोच क्या रहा हूँ मैं!

ताराचरणने कहा, "कंकनाके बाबुओंकी चूँकि बात आ गयी, इसलिए कहता हूँ कुसुमपुरके गोशाल मामलेमें आपके बारेमें ये बातें किसने उड़ायी हैं, मालूम है? खुद उन्हीं बाबुओंने!"

"बाबुओंने? क्या उड़ाया है?"

"हाँ, बाबुओंके नायबने खुद इरशादसे कहा है। कहा कि कचहरी पहुँचते ही देवूने आँख दबाकर बाबूको इशारा कर दिया था कि यह हंगामा आगे नहीं बढ़ेगा। मैं ठीक किये देता हूँ।—नहीं तो बाबू रहमको नहीं छोड़ते। बाबूने भी इशारेसे देवूको पंजा दिखाया। यानी हाँ, ठीक कर दो। पाँच सौ रुपये दूँगा।

देवू हैरान रह गया। बाबूके नायबने ऐसा कहा!

देवू अवाक् चाहे हो बात सच थी। मुखर्जी बाबू-सा पैनी अक्लके आदमी वास्तवमें विरले ही हैं। मुसलमान लोग जब जमाव बाँधकर जा धमके, तो वे थोड़ा विचलित हुए सोचा, दंगा हंगामा होगा। लेकिन उससे वे डर नहीं। बल्कि उन्होंने तो वैसा ही चाहा था। कुछ दरबान चपरासी मारे जाते, कुछ मुसलमान किसानोंकी जानें जाती, खुद तो वे दूरकी मदत्से आखिर बच ही जाते। इसके बाद मुकदमेंमें—घर आकर लूट-पाट और दंगा करनेके जुर्ममें उन किसानोंको तबाह कर देते। लेकिन देवूने पहुँचते ही सब उलट-पलट कर दिया। देवूके बारेमें उन्होंने सुन रखा था, जो सुना था उससे देवूकी मर्यादा और व्यक्तित्वका एक ऐसा रूप निखरा था कि उसके सामने उन-जैसे आदमीको भी सिमट जाना पड़ा। कारण, देवूने अपने जीवनमें जो किया, वे वह न कर सके। देवू उन्हें मन्त्रमुग्ध करके, भीड़को शान्त करके पल भरमें रहमको लेकर चला गया। वे बड़े चिंतित हो गये। सारा कसूर उनके कन्धेपर आ पड़ा।

इतनेमें उनके कानों दूसरेके नायब-द्वारा उन लोगोंका कान फूँके जानेकी बात पहुँची। यह भी सुना कि देवूने झूठी डायरी लिखाना और तार भेजना नहीं चाहा, इसीलिए वह थाने नहीं गया। तुरन्त उनके दिमागमें बिजलीकी कौंध-सी एक सूझ आयी। आत्मीय स्वभावका वे खूब जानते हैं। देवूकी बात वे निश्चित रूपसे नहीं कह सकते, पर पाँच सौ रुपयेका लोभ इनमें-से और कोई नहीं पी सकेगा इसे वे निश्चित समझ रहे थे। इसमें, यह अपवाह फैलाकर उसकी

जनप्रियताको ठेस लगायी जाये तो कैसा रहे? उन्होंने तुरन्त अपने नायबको जवानी डायरी दर्ज करानेके लिए थाने भेज दिया और उससे कह दिया कि यह झूठी बात इरशाद और रहमके कानोंमें डाल दे। जनता उत्तेजनासे अधीर थी। उसीका यकीन कर लिया। रहम और इरशादको पहले तो दुविधा हुई इसपर, पर एकबारगी इसे झाड़कर फेंक न सके।

अधबहिया कुरता पहनकर देवू उसी दोपहरमें घरसे निकल पड़ा। तारा चरणने अन्दाज लगा लिया कि वह कहाँ जा रहा है। तो भी पूछा, 'इस दोपहरमें कहाँ चले?'

जरा न्यायरत्नजीको एक बार प्रणाम कर आऊँ ताराचरण! नहीं तो मेरे मनकी धधकती आग बुझेगी नहीं।"—देवू रास्तेपर उतर पड़ा।

अपना छाता उसे देते हुए ताराचरणने कहा, "छाता ले जाइए। धूप बड़ी कड़ी है!"

देवूने कुछ कहा नहीं, छाता लेकर चलना शुरू कर दिया। सप्तग्रामके सुदूर प्रसारी बहारसे होकर रास्ता। अभी अभी सावन खतम हुआ है। भादोंकी शुरुआत। धान रोपनेका काम करीब करीब खतम हो चुका है। खास करके जो लोग कुछ सम्पन्न हैं उनकी रोपनी कई दिन पहले ही खतम हो चुकी है। धान की कमीसे उनका काम नहीं रुका, बल्कि ऊपरसे उन्होंने नकद मजूरे लगाये। जिनके खेतोंमें इसी बीच पौधे जम आये थे, उनके खेतोंमें निडानी चल रही थी। फैले हुए बहारमें धानकी हरियालीकी बहार थी। आज देवूने किसी भी तरफ ताककर नहीं देखा चलता रहा।

एक बहुत बड़े अचम्भेकी घटनाने भी आज उसके हृदयको नहीं छुआ। इतने बड़े बहारमें—अभी भी बहुत से लोग काम कर रहे थे पहले हर आदमी उससे दो एक बात करके ही उसे आगे जाने देता। दूरके आदमी उसे पुकारकर रोका करते करीब आकर बातचीत करते थे। लेकिन आज बहुत कम आदमियों ने ही उससे बात की। आज सिर्फ सतीश बाउरी देवुड़ियाके दो एक भल्ला और एकाध और आदमीने उससे बातचीत की। उसके जाति-गोतवाले देवूको अनमना देखकर सिर झुकाये अपना काम करते रहे। तिनकौड़ी आज खेतमें नहीं था।

देवूको इसका खयाल ही न हुआ। पहले तो बेहिसाब गुस्सेसे मनकी प्रतिहिंसा आदिम युगकी भयंकरता लिये जाग पड़ी थी। लेकिन न्यायरत्नजीकी सान्त्वना भरी वाणीसे निर्मम होकर उसके जीकी जमी हुई शिकायतें वैसे ही गलकर झर गयी, जैसे ठण्डी हवाके झोंकेसे छूकर वर्षाऋतुके मेघ। उस समय

उसकी आँखोंमें बरबस आसू बह आये थे, न्यायरत्नके सामने उसने बड़े कष्टसे उन आसुओंको जब्त किया था। राहमें भी आज वह डूबता हुआ-सा जा रहा था, जैसे अपना ख्याल ही न हो।

न्यायरत्न पूजा-पाठ करके अपने गृह-देवताके घरसे बाहर निकल रहे थे। देबूको देखते ही मुसकराकर बोले "आओ गुरुजी, आओ!"

देबूके होंठ थर थर काँप उठे। उस आदमीको देखते ही दुनियाके हृदयहीन अविचारकी सारी वेदना मानो उमगकर उथल पड़ी, बच्चेके अभिमानकी नाई।

आग्रहके साथ न्यायरत्नने कहा, "बठो, बैठो! धूपसे चेहरा और आँखें सुख हो रही ह पसीनेसे मानो नहा गये हो।"—देबूके हाथके मुड़े छातेको देखकर बोले, "छाता अभी भी भीगा ही दख रहा हूँ। सवेरे अच्छी बारिश हुई थी। उसके बाद एक पहर तो सूय दवताने भास्करका रूप धारण किया! लगता ह तुमने छाता लगाया ही नही गुरुजी, ठण्डे-ठण्डे आते!"

देबू अबतक अपनेको जब्त किये हुए था। न्यायरत्नकी युक्ति और मीमांसा सुनकर उसके मुँहपर विनमकी हलकी हँसी निखर आयी। झुककर वह बोला, 'आपके चरणोंकी धूल लूँ?'

"यानी मुझे छुओगे या नही, यह पूछ रहे हो? सामने ही देख रहे हो, मेरा पूजा-पाठ समाप्त हो चुका ह। तुम पण्डित हो, खुद सोच लो।'

लेकिन देबू किसी निर्णयपर नही पहुँच सका। वह उनकी तरफ देखता ही रह गया। न्यायरत्नने देवताके निर्माल्य सहित अपना हाथ देबूके माथेपर रखा। कहा, 'मेरे चरणोंकी धूलसे पहले भगवान्का आशीर्वाद लो। गुरुजी, मैं चूँकि उनकी पूजा करता हूँ, इसीलिए छुत छातका खयाल रखता हूँ। जो वस्त्र जितना ही स्वच्छ होता ह, उसमें स्पर्श उतनी ही शीघ्रतासे सक्रामित होता ह न। इसीलिए सावधानीसे रहता हूँ। नही तो मुझे यह हिमाकत क्या हो कि म तुम्हें नही छुऊँगा?'

देबूने न्यायरत्नके परापर माथा रखा।

स्नेहसे न्यायरत्न बोले, "उठो गुरुजी, उठो!'—कहकर अन्दरकी ओर मुँह करके उन्होने आवाज दी "भा—भो—राजन! भया!"

देबूने अकुलाकर पूछा, 'विशू भाई आया ह क्या?"

'हाँ!' न्यायरत्न हँसे।

क्या ह दादाजी?'—विश्वनाथ बाहर निकला, और देबूको देखकर बोल उठा अरे देबू भाई! इतनी धूपमें?'

यायरत्न हँसकर बोले, "देख रहे हो गुरुजी ? राज्ञीसे बातोंमें निमग्न राजा का मन अचानक पुकार लेनेसे कैसा कुढ गया है, देख रहे हो ?"

विश्वनाथ शरमाया नहीं। बोला, "आपके देवता झूलनमें मग्न होंगे। राज्ञी उसीके लिए परेशान है। इस बेचारेको तरफ ताकनेको उसे फुरसत नहीं है मुनिवर !"

"मेरे देवताके प्रसादसे पूर्णिमाकी इस रातमें तुम भी झूला झूलोगे राजन् ! तुमने कमरमें झूलेकी डोरी डाली है—मैंने झाककर देखा है। मेरे देवताके झूलनके बहाने ही तुम्हें कलकत्तेसे आनेका मौका मिला है, यह मत भूल जाओ। मैं अवश्य तुम्हारे सात दिनके बाद आनेपर भी कुछ नहीं कहता। लेकिन तुम हर बार मेरे देवताके प्रति भक्तिकी छलना करके कैफियत देना नहीं भूलते हो राजन !'

अबकी विश्वनाथ हँसने लगा। देबूने एक निःश्वास छोड़ा। उसे बिलूकी याद आ गयी। झूलनमें उन लोगोंने भी एक बार झूला डाला था।

न्यायरत्नने कहा "जया अगर व्यस्त हो तो गुरुजीके लिए तुम्हीं एक ग्लास शरबत बनाकर ले आओ तो !'

देबूने व्यस्त होकर कहा, "नहीं-नहीं-नहीं !"

न्यायरत्नने कहा, 'गृहस्थके अतिथि-सत्कारके धर्ममें बाधा नहीं देनी चाहिए। —फिर विश्वनाथसे कहा "जाओ भैया, गुरुजीको बड़ी प्यास लगी है, बड़ा थके थके से हैं।'

कुछ देरके बाद न्यायरत्नने कहा, 'मैंने सब सुना है गुरुजी !

देबू उनके पाँवोंपर हाथ रखे ही बैठा था, उनकी ओर देखकर बोला, "मैं क्या करूँ कहिए ?

न्यायरत्न चुप रहे। विश्वनाथ पास ही चुपचाप बैठा था। उसने जिज्ञासा-भरी आखोंसे उनकी तरफ ताका।

देबूने फिर पूछा 'मैं क्या करूँ कहिए ?

न्यायरत्नने कहा बोलनेका अधिकार मैंने अपनेसे ही बहुत पहले छोड़ दिया है। शशिके मरनेके दिन मैंने अनुभव किया था कि समय बदल गया है पात्र भी बदल गये हैं। तबसे मैं भूतकालका मन और तन लिये छायाकी तरह वर्तमानमें पड़ा हूँ। उस रोजसे मैं केवल देखता रहता हूँ, विश्वनाथ तकको कुछ नहीं कहता।

एक लम्बा निःश्वास फेंककर वे चुप हो रहे। देबू उनके मुँहकी तरफ देखता हुआ जैसे चुपचाप बैठा था, वैसे ही बैठा रहा। न्यायरत्नने फिर कहा, 'देखो,

बोलनेका अधिकार अब मुझे सच ही नहीं है। जिन्हें मैंने शशिके समयसे देखा है, आजके लोग उनसे भी स्वतन्त्र हैं। लोगोंकी नैतिक रीढ़ टूट गयी है।"

विश्वनाथ अब बोला, "उनके तो शरीरकी ही रीढ़ टूट गयी है दादाजी! नैतिक रीढ़ कहाँसे रहेगी? अभाव ही तो अनियम है, नियम न रहे तो नीति किसके सहारे टिकेगी, कहिए? चोरी और लूटमें जिसका सब जाता है वह बहुत होगा वह नीतिको मानकर चोरी नहीं करेगा, परन्तु भीख माँगे बगैर उसे गुज़र कहाँ? भीखसे हीनताका बड़ा निकटका सम्बन्ध है। और, हीनतासे नीतिके विरोधकी चिरन्तन कह सकते हैं।"

न्यायरत्न हँसकर बोले "समयसे वही सत्य हो उठा है। शायद महाकाल का यही इरादा हो। नहीं तो दीनता—चाहे वह कठोरतम दीनता ही क्यों न हो—उसके होते हुए भी हीनताकी छूतसे बचकर चलनेकी साधना ही तो महत्तम थी। कृच्छ्र साधनासे, सर्वस्व त्यागसे भगवानको पाया जा सके या नहीं, सांसारिक दीनता और अभावोंकी मलिनतासे मुक्त करके मनुष्यता एक दिन विजय विभूषित हुई थी।"

विश्वनाथने कहा, "आपके पहलेके जिन लोगोंने इसे सम्भव बनाया था उन्हीं लोगोंने तो उस शिक्षाको सार्वजनीन नहीं होने दिया दादाजी! यह उसी का नतीजा है। मणिको पाकर उसे फेंका जा सकता है लेकिन जिसने मणि पाया नहीं, वह फेंकेगा कैसे? लोभ ही बस रोकेगा?'

न्यायरत्नने पोतेकी तरफ देखकर कहा, "बात तुम बहुत सोचकर कहा करते हो भैया! असंयत या बेमानी बात ही तुम नहीं बोलते!"

विश्वनाथने देखा दादाके दृष्टिकोणमें प्रखरता बड़ी क्षीण आभामें चमक रही है। स्वूने भी इसे ग़ौर किया था, लेकिन किसकी कौन-सी बातसे न्यायरत्न ऐसे हो उठे अन्दाज़ नहीं कर सका।

विश्वनाथने हँसकर कहा "मेरे पूर्ववर्ती सामने मौजूद हैं, मैं अब रंगमंचके नेपथ्यमें चला जाता हूँ। इसीलिए आपके पूर्वगामी कहा।"

न्यायरत्न भी हँसे—पौत्र और टेम हँसी। बोले "कुरुक्षेत्रकी लड़ाईमें कर्णके दिव्य अस्त्रोंके सामने पार्थ-सारथिने रथके दोनों घोड़ोंके घुटने टेकवाकर रथीका मान बचाया था। अर्जुनको पीछे भी नहीं हटना पड़ा और कर्णका महास्त्र भी बेकार हुआ। वाक्-युद्धमें तुम कुशल हो विश्वनाथ!"

विश्वनाथ अब जरा नाराज़ हो उठा। इसके बाद न्यायरत्न जो बोलेंगे वह हो सकता है बड़ा-जैसा निष्ठुर हो या कि इच्छामृत्यु पानेवाले तीरोंकी सेजपर सोये भीष्मकी अंतिम इच्छा-जैसा कुछ मार्मिक, करुण। लेकिन न्यायरत्नने ऐसा

कुछ भी नहा कहा, गम्दन झुकाकर सिफ अपने इष्टदेवताको पुकारा—
'नारायण ! नारायण !''

क्षण भर बाद ही वे सीधे होकर बठ गये, जसे अपनी सोयी हुई शक्तिको सीधा करके जमा लिया हो। फिर देवूकी ओर मुडकर बोले "सोचकर देखो गुरुजी ! मेरा उपदेश लोगे कि अपने इस नये ठाकुरका उपदेश लोगे ?''

विश्वनाथ सीधा होकर बठ गया। बोला, "म जिस समाजका ठाकुर बनूँगा दादाजी, उस समाजमें देबू गुरुजी आप-जैसा ही पूवगामी होगा। उस समाजके पतनके साथ ही-साथ या तो देवू काशीवास करेगा या आप-जसा द्रष्टा होकर बैठा रहेगा।''

न्यायरत्न हँसकर बोले 'तो अपना पोथी-पत्र और शास्त्र-ग्रन्थ फेककर घर को साफ सुथरा कर डालूँ, क्यो ? मेरे देवताका तब तो अहोभाग्य ! पक्का नाट्य मंदिर बनेगा ! तुमने ही उस दिन कहा था—यह युग वणिको एव धनिकोंका है। बात बिल्कुल सत्य ह। इस अचलके समाजपति मुखर्जीकी इज्जत इस बात का सबूत ह।'

विश्वनाथने हसकर टोका, 'आप नाराज हो गये दादाजी ! आपकी बातें युक्तिहीन हुई जा रही ह। मने उस दिन और भी बातें कही थी, उन्हें आप भूल गये।''

न्यायरत्न चौंककर बोले, भूला नहीं हूँ ! तुम्हारा वह धमहीन इहलोक सवस्व साम्यवाद !''

'धमहीन नही ह। लेकिन हा आप लोग जिसे धमके नामसे मानते आये ह, वह धम नही ह। आचार ही जिसका सारा कुछ ह वह धम नही, न्यायनिष्ठ सत्यमय जीवन धारा है। आपके बाहरी अनुष्ठानो और ध्यानयोगके बदले हम विज्ञान योग द्वारा परम रहस्यकी खोज करेंगे। उसकी हम श्रद्धा करेंगे, पूजा नही करेंगे।

न्यायरत्नने गम्भीर स्वरम कहा 'विश्वनाथ !''

"दादाजी !'

"तो तुम मेरे बाद मेरे भगवानकी पूजा नही करोगे ?'

विश्वनाथने कहा, पहले आप देवू गुरुजीसे बात खत्म कर लें।''

न्यायरत्न देवूकी ओर मुखातिब हुए ! देवूका चेहरा फीका पड गया था। उसको लेकर न्यायरत्नके जीवनमें फिर कौन-सी आग जल उठी ? बीस-बाईस साल पहले नीतिके वितकमें विरोधकी एक आग जल उठी थी ! उस आगस

गिरस्ती झुलस गयी थी। न्यायरत्नके इकलौते बेटे, विश्वनाथके पिताने क्षोभ और अभिमानसे आत्महत्या कर ली थी।

देबूको चुप देखकर न्यायरत्नने कहा, "गुरुजी!"

देबू बोला, "आज मैं चलता हूँ ठाकुर महाशय!"

"चले जाओगे? क्यों?"

"फिर किसी दिन आऊँगा।"

"मेरे और विश्वनाथके बीच होनेवाली बातचीतसे चकित हो गये?" न्यायरत्न हँसे—"नहीं-नहीं, उसकी चिन्ता न करो तुम! पूछो, तुम क्या पूछना चाहते हो?"

देबूने कहा, "मैं क्या करूँ? श्रीहरि पंचायत बुलाकर मुझे समाजसे निकाल देना चाहता है, गलत बदनामी देकर—"

"हाँ, अब याद आया। ठीक है। पंचायत तुम्हें बुलाये, तुम जाना, विनयके साथ कहना—'मैंने कोई अन्याय नहीं किया है। इसपर भी पंचायत अगर सजा ही देनेको तैयार है तो, मुझे स्वीकार है। मगर अपने एक मित्रकी बेपनाह स्त्रीको मैं छोड नहीं सकता।' इसपर पंचायत जो करे, करे। न्यायके लिए दु:ख कष्ट झेलना।"

विश्वनाथ हँस उठा।

न्यायरत्नने पूछा, "तुम हँस पड़े विश्वनाथ? तुम लोगोंके न्यायमें क्या उस स्त्रीको त्याग देना उचित है?"

"आप हम लोगोंपर अन्याय कर रहे हैं दादाजी! आपने हम लोगोंके न्यायको अपने न्यायसे उल्टा यानी अन्याय मान लिया है। मगर इस स्थितिमें जो आप कह रहे हैं, वही हमारा न्याय भी कहता है। मैं हँसा यह सुनकर कि पंचायत जातिसे बाहर निकाल देगी और दु:ख कष्ट होगा।"

"गरज कि तुम यह कहना चाहते हो कि पंचायत पतित नहीं करेगी या करेगी भी तो दु:ख-कष्ट नहीं होगा!"

"पंचायत पतित जरूर करेगी, क्योंकि उस पंचायतके पीछे उसके समाजका धनी श्रीहरि घोष है, घोषकी धन-दौलत है। परन्तु आपने जितने कष्टको सोचा है उतना कष्ट नहीं होगा।"

न्यायरत्न हँसकर बोले "तुम अभी भी निरे बच्चे ही हो विश्वनाथ!

"बुढ़ापेका मैं दावा नहीं करता दादाजी! उसमें मेरी रुचि भी नहीं है। पर आप सोच देखिए पंचायत कर क्या सकती है? आपने पिछले जमानेकी सोचकर कहा है। उस जमानेमें समाज अलग कर देता था, तो आदमीका नाई

धोबी, पुरोहित, बन्ई, लुहार—सब बन्द हो जाता था। उसका कम-जीवन और धम-जीवन—दोनो ठप पड जाते थे। समाजके इस हुक्मके खिलाफ कोई उसकी मदद करता तो उसे भी सजा मिलती थी। दूसरे गाँवसे भी कोई सहायता नहीं मिलती थी। आज तो धोबी नाई पुरोहित ही समाजके नियम मानकर नही चलते। पैसा दीजिए और काम करा लीजिए। उस युगमें ऐसा करनेसे उन्हें दण्ड दिया जाता अब ठीक उल्टा है। धोबी नाई लुहार बढई अगर काम करनेसे इनकार कर दें तो हम लोग ही आफ़तमें पड जायेंगे और कही उन्हें ज्यादा तग किया गया तो या तो वे गाव छोडकर कही चल देंगे या पुश्तनी पेशा छोड देंगे। भई देवू इनकी क्या बात है! जक्शन शहरसे एक उस्तरा खरीद लेना एक साबुन। वह भी न बने तो जक्शनमें ही डेरा ले लेना। न तो तुम्हें दाढी ही रखनी होगी न मला कपडा ही पहनना पडेगा। जक्शन पचायतकी चौहद्दीसे बाहर है।

देवू अवाक होकर विश्वनाथकी ओर ताकने लगा। न्यायरत्नने कुछ देर तक उसकी तरफ देखा और कहा तुम अब रगमचके नेपथ्यमें नही हो भया तुम मचपर आ गये हो। मैं ही विधि प्रस्थान करना भूल गया और तद्रामें पडा मचपर रह गया हूँ।

विश्वनाथने कहा कमसे कम महाग्रामके महासभापतिके नाते जब आपके पास लोग आते है तो यह बात बहुत मन्द लगती है। देशम नयी पचायतें बन गयी—यूनियन बाड यूनियन कोट वब वे टक्स लेते हैं फैसला करते है मजा देते है। इसके बाद भी लोग जब तुम्हें महासभापतिजी कह कहते हैं तो यात्रा-पार्टीके राजाकी बात याद हो आती है।"

न्यायरत्न बोले नहीं-नहीं विदूषक! यात्रा-पार्टीका राजा नहीं हूँ! मैं वास्तवमें राज्यभ्रष्ट राजा हूँ। अपना राज जानेके बारेमें मैं सचेतन हूँ। म यहा उस गय राज्यके मोहमें नही पडा हूँ जानता हूँ कि वह नही लौटनेका। फिर भी हू मेरे पास छिने सम्पत्की धरोहर है। कुलका मन्त्र कुलका परिचय कुलकी कीर्तियाका प्राचीन इतिहास! तुम लोग उसे सँभाल लो तो हँसते-हँसते मर जाऊँगा। नहीं लोगे तो भी दुख न होगा। सब उनको सौंपकर चला जाऊँगा।

इसी वक्त अन्दर घरके दरवाजेपर आकर खडी हुई जया। उसने कहा "दादाजी आप एक बार मन स्थिर-समय लें आकर उस समय अगर कोई चीज न मिले तो क्या होगा कहिए तो? और फिर हम आप—न होगा तो उपवास कर लेंगे लेकिन औराका तो खाना-पीना है। टोल्का वह छोटा-सा लडका

इसी बीच इस उस बहाने दो-तीन बार रसोईमें घूम गया। बेचारेका मुँह सूख गया है।

'चलो, चलता हूँ।'

"आप लोगोंमें इतनी बातें क्या हो रहा है ?"

"शिवकालीपुरके गुरुजी आये है, उन्हींसे बात कर रहा था।'

देबू न्यायरत्नकी ओटमें उनके पाँवोंके पास बैठा था। जया उसे देख नहीं सकी। ददिया ससुरके कहनेस देबूके वहा होनेके बारेमें सचेतन होकर उसने घूँघटको जरा खास लिया। कहा, "गुरुजीसे कहिए यही थोड़ा प्रसाद पाकर जायेंगे। बेला काफी हो चुका है।"

देबूने धीमेसे कहा, 'मेरा आज पूणमासीका उपवास है"

"ठीक है तब अभी विश्राम करो। रातमें मूरत्ना देखकर ठाकुरजीका प्रसाद पाना। रातको बल्कि यही रह जाना।

देबू ऊबन्सा उठा था, दादा-पोतेकी पेचीदी बातोंमे हाफ उठा था वह। और फिर, घरमें काम भी था हलवाहे चरवाहे उसका इतजार कर रहे होगे।

उसने हाथ जोड़कर कहा, "उस बेला म फिर आऊँगा। चरवाहेके यहा भोजनका ठिकाना नहीं है हलवाहेका भी वही हाल है। देते लेते भी धान देकर नही आया। तिसपर आज पूणमासी है, बेचारेको उधार पैसा भी नही मिलेगा। चावल देनेकी कही थी। वे मेरी राह देख रहे होगे।'

रास्तेपर उतरा तो देबू मनम उलझ गया। अपनी सोचकर नही, न्यायरत्न और विश्वनाथकी बातोंसे। उसने अपनेको बार बार धिक्कारा कि वह आखिर न्यायरत्नके पास दौड़ा-दौड़ा आया ही क्या ? जीमें आया कि इसी रास्ते होकर वह गाँव छोड कहीं और चला जाये। न्यायरत्नका इतना अच्छा घर-ससार, विश्वनाथ-जसा पोता जया-जसी पोत-बहू और अजय-जसा परपोता, कितना सुख है! शायद हो कि यह सारा-कुछ अशान्तिकी आगमें जल जाये। नहीं तो न्यायरत्न शायद घर-द्वार छोडकर काशी चले जायें या फिर विश्वनाथ ही बाल-बच्चो सहित घर छोडकर चला जायेगा। यह भी हो सकता है कि वह अकेला ही घरसे चला जाये। ठीक-ठीक न समझ पाया हो चाहे पर देबूने इतना तो समझ ही लिया कि विशू भाई किस रास्ते दौड़ पड़ा है। और उसके अजामका अन्दाज लगाना भी कठिन नहीं है। आपसके इस द्वन्द्वसे विशू भाई और जोरसे उस राहपर चल पड़ेगा, बिना सोचे-समझे। उसके बाद या तो अन्डमान या कैदखाने मठा ऐसी सोनेकी प्रतिमा-सी स्त्री चादके टुकड़े-सा बच्चा !

"अरे ! गुरुजी ! इस भरी दुपहरियामें इधर ? कहाँ जायेंगे ?"

चौंककर देबूने देखा—पूछनेवाला देखुड़ियाका रामभल्ला था। हँसकर देबू बोला, 'रामचरण ?"

"जी हाँ ! इस कुवलामें कहाँ जायेंगे ?'

"महाग्राम गया था—न्यायरत्नजीके यहाँ। घर लौट रहा हूँ।'

"घर जायेंगे तो इधरसे ?"

देबूने चारों तरफ गौरसे देखा। अरे, अनमना होकर वह गलत रास्तेपर आ गया ! सामने मयूराक्षीका बाँध। बहाँसे बायें न मुड़कर वह सीधा चला आया। बाँधके उस पार श्मशान शिवकालीपुर, महाग्राम और देखुड़ियाके गाँवोंका दाह-संस्कार यहीं होता है। उसकी बिलू, उसका मुन्ना—देखनेमें वे जया और अजयसे बहुत बुरे न थे, गुणमें भी कम न थे—वह बिलू और मुन्ना इसी श्मशानमें सो गये ! कोई निशानी नहीं रही, राख भी जाने कब घुल गयी—मगर वह जगह है। वहाँ बैठनेको उसका जी चाहा। दिनोंसे वह उनके लिए रोया नहीं है। पाँच गाँवोंके हजारों लोगोंकी जिम्मेदारीका बोझा उठाये उसीमें मशगूल था इज्जत-आबरूके ही लोभसे, हाँ, इज्जत आबरूके ही लोभसे, और क्या ! सब कुछ भूलकर वह माते हुए आदमी-सा भटकता फिर रहा था, सोचता था कि बहुत बड़ा काम कर रहा है। आज इज्जत आबरूकी जगह लोग उसके सारे बदनपर कालिख पोतनेको तयार है ! इसीलिए आज बिलू और मुन्नने उस राह भुलाकर बुलाया है। स्त्री और बच्चेकी तसवीर उसकी आँखोंमें झलमला उठी।

रामने फिर पूछा, 'कहाँ जायेंगे सरकार ? —दिन दोपहरमें एक पण्डित आदमी गाँवका रास्ता भूल जायेगा—यह बात वह सोच ही न सका।

देबूने कहा 'जरा श्मशानकी तरफ जाऊँगा।"

"श्मशान ?'

हाँ ! काम है।

राम अवाक् हो गया।

देबूने कहा तुम मेरा एक काम कर दोगे जरा ?'

जी कहें !'

देबूने जेवस डोरीमें बँधी कुछ कुंजियाँ निकालकर कहा, "ये चाबियाँ लेकर तुम—' वहीं तो वह देगा किसे ?—जरा सोचकर बोला, ये चाबियाँ तुम अनिरुद्ध लुहारकी बहूको दे देना। कहना—भण्डारसे आठ सेर चावल निकालकर दो सेर सेर चरवाह छोरको और तीन-तीन सेर करके छह सेर दाना हलवाहोंको दे

देगी। मुझे लौटनेमें देर होगी। तुरत जानेकी जरूरत नहीं, अपना काम धाम कर लो।"

रामने कहा, "काम मेरा आजका हो गया। पुनमासी है। हल तो बन्द है, जिन खेतोंमें पहले रोप चुका था, उनमें निडानी कर रहा था। मगर धूप इतनी तेज है कि कर नहीं पा रहा हूँ। मैं अभी ही जाता हूँ। लेकिन आप मसानमें जाकर क्या करेंगे ?"

"काम है थोड़ा।'—देबू बाँधकी तरफ बढ़ा।

रामको फिर भी तसल्ली नहीं हुई। देबूका रवैया उसे बड़ा रहस्यमय लगा। देबूके बारेमें इधर जो अफ़वाहें उड़ रही थीं, उसे सब-कुछ मालूम था। पद्मकी बाबत भी और रहम तथा कंकनाके बाबुओंके झगड़ेमें जो बातें उठी हैं वे भी। पद्मवाली बातको तो वह किसी कसूरमें नहीं गिनता। विधुर जवान पढ़ा लिखा आदमी—उसे अगर वह पति-द्वारा छोड़ी हुई स्त्री जँच ही गयी, उसे वह प्यार ही करने लगा तो कौन-सा गुनाह हो गया ? और कंकनाके बाबुओंने जो इल्ज़ाम लगाया है उसपर वह यकीन नहीं करता। तिलकौड़ीने तो हलफ़ तक उठाकर यह कहा है। और तिनकौड़ी तो बेशक पद्मवाली बातका भी विश्वास नहीं करता।

इसीलिए, सब जान-सुनकर भी देबूको और कुछ देर रोककर अन्दरकी थाहनेके लिए बोला, "आप कुसुमपुरकी सभामें नहीं गये ?'

'कुसुमपुरकी सभा ? काहेकी सभा ?"

'जी, वहाँ आज बहुत बड़ी सभा है। तिन्नू भया गया है। बाबुओंसे रहमका जो हंगामा हुआ है उसपर, विरोध-आन्दोलनपर—"

देबूने धीमेसे हँसकर कहा, 'मैं अब इन बातोंमें नहीं पड़ता राम भाई !"

राम चुप रह गया। बादमें बोला, "मसानमें क्या करेंगे आप ? चिल-चिलाती दोपहर, न खाया है न पिया है। चलिए, घर चलिए।"

इसी वक्त किसीकी हाँक सुनाई दी। किसानकी हाँक, ऊँचे गलेसे भी लम्बी हाँक ! राम मुड़कर खड़ा हो गया। हाँककी आखिरी ध्वनि साफ थी। रामने कानके पीछे अपनी हथेलीकी ओट डालकर सुना और कहा, "तिनू भया मुझीको ही बुला रहा है। और तुरत उसने मुँहके दोनों ओर हाथकी तलहथी आड़े रखकर जवाब दिया, 'ए—ए।"

तिनू तेज़ीसे चला आ रहा था। जाते-जाते देबू भी ठिठक गया—माजरा क्या है ?

तिनू बहुत उत्तेजित था। करीब आनेपर ऐसी जगहमें रामके साथ देबूको

देखकर उसने कोई अचरज नहीं दिखाया। अचरज दिखाने लायक हालत नहीं थी उसके मनकी। वह बोला, "अच्छा ही हुआ कि देवू चाचा भी हैं! मैं तुम्हारे ही यहां होता हुआ आ रहा हूँ। तुम मिले नहीं। कुसुमपुरके शेखाने बडा झमेला खडा कर दिया भैया! रामा, तुम लोग लाठी भाला सँभालो।"

देवूने आश्चर्यसे पूछा, 'क्यों? हो क्या गया?"

"पूछो मत भैया! आज उन लोगोंने सभा बुलायी थी। सभामें तुम्हें नहीं बुलाया मैं भी नहीं जाता। लेकिन सोचा—चलो कुछ खरी खोटी सुना आऊँ। गया, तो देखा वहां भारी हंगामा था! सुना कंकनाके बाबुओंने शायद कुसुमपुर बस्तीको जला डालनेकी कही है। वह पहले हिंदुओंकी बस्ती थी। वहां फिरसे हिंदुओंको बसाया जायेगा।

'हैं! उसके बाद?

उसके बाद बहुत-बहुत बातें! मेरे ही यहाँ चलो न, बताता हूँ! प्याससे मेरी छाती सूख रही है।'

बोलते-बोलते वह चलने लगा। राम और देवू भी साथ-साथ बढ चले।

तिनकौड़ीने कहा 'डाक्टर जगन वगन—विरोध आन्दोलनके नेता लोग सब वहां गये थे सिर्फ पंचायतवाले मण्डल लोग ही नहीं गये। तुमने तो सुना ही है तुम्हें अलग करनेके लिए इस समय साले छिरूसे उनकी खूब पटने लगी है! ध्यान देना न छिरू!'

'सुना है। लेकिन कुसुमपुरका क्या हुआ?"

'हम लोगोंने कहा बाबू लोग तुम लोगोंका घर फूँक डालेंगे तो तुम लोग बाबुओंसे निबटो। दूसरे हिंदुओंको उससे क्या है। वे बोले—बाबू लोग यहां हिंदुओंको बसायेंगे धर्ममें सारे हिंदू एक हो जायेंगे।' आते वक्त फिर यह सुना—! ओ सोना बिटिया!"

वे लोग तिनकौड़ीके दरवाजेपर पहुँच चुके थे।—

देवूने पूछा, हां और क्या सुना?

'कहता हूँ ठहरो एक लोटा पानी पी लूं पहले।'

सोना दरवाजा खोलकर बाहर निकली। तिनकौड़ीकी विधवा बेटी। तन्दुरुस्त बदन सुन्दर मुखड़ा, गोरा रंग। उस पन्द्रह सोलह सालकी लड़कीको देखकर विधवा कौन कहेगा! किशोरी कुमारी-जैसी सपना भरी निगाह आँखोंमें, चेहरेपर कहीं किसी भी रेखामें वेदना या उदासीनताका आभास नहीं। वह बाहर आयी हाथमें एक किताब थी। देवूको देखकर वह लजा गयी और किताबको पीछे छिपा लिया।

ऐसी उलझन भरी चिंता और उलझनें होते हुए भी देवूने हँसकर कहा, 'किताब छिपा क्या दी? कौन सी किताब पढ़ रही थी?"

अन्दर जाते हुए तिलकौडीने कहा, "सोना बिटिया, जरा देवूको शरबत बनाकर दे।"

"नहीं-नहीं! पूर्णमासीका उपवास है आज। शरबत एक बार पी चुका हूँ।"

"तो जरा हवा कर दे। गजबकी गरमी! पसीनेसे नहा रहा है।"

सोना जल्दी जल्दी पखा ले आयी। देवूने कहा "पखा मुझे दो।"

"नहीं, मैं झल देती हूँ।"

"नहीं-नहीं, मुझे दो। तुम तो बल्कि किताब ले आओ, देखूँ क्या पढ़ रही थी। जाओ।"

सकुचाती हुई सोनाने किताब लाकर देवूके हाथमें दे दी। एक पाठ्य-पुस्तक थी—साहित्यकी, जाने माने लेखकोंकी छात्रोपयोगी रचनाओंका सग्रह निबन्ध, कहानी कविता, जीवनी।

देवूने पूछा "कौन-सा पढ़ रही थी?"

सोनाने नजर झुकाकर कहा, "ऐसे ही एक पद्य पढ़ रही थी।"

देवूने हँसकर कहा, "पद्य नहीं कहते कविता कहो। कौन-सी?"

सोना जरा देर चुप रही। फिर बोली, "रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी एक कविता।"

देवूने किताबके पन्ने पलटे कि अपने आप ही एक कविता निकल आयी। देर तक किताबका कोई पन्ना खुला होता है तो किताब खोलनेपर वह पन्ना आप ही खुल जाता है। देवूने देखा कविताके अन्तमें कविका नाम लिखा था—रवीन्द्रनाथ ठाकुर। शीर्षक था—स्वामी लाभ। नीचे कोष्ठकमें छोटे अक्षरोंमें लिखा था भक्तमाल'। पूछा, यही था शायद?'

गरदन हिलाकर सोनाने हामी भरी।

देवूने मिठास भरे स्वरमें कहा "पढ़ो तो, सुनूँ जरा।—किताब उसने सोनाकी तरफ बढ़ा दी।'

राम भल्लाने कहा, 'बिटिया रामायण इतनी अच्छी पढ़ती है सुन्हो! अहा हा, जी जुड़ा जाता है!'

देवूने हँसते हुए कहा, 'पढ़ो-पढ़ो।"

सोना धीमेसे बोली, बाबूजीको खानेके लिए देना है। मैं जाती हूँ'—

हकर वह अन्दर चली गयी। शरमायी हुई उस लड़कीको देखकर देबू स्नेहसे सा। उसके बाद उसने कविता पढ़ी—

एक बार तुलसीदास निर्जन श्मशान में बैठे थे।

देखा, मरे हुए पति के चरणों तले सती बैठी है
उन्हीं के साथ एक ही चिता पर जल मरने का सकल्प,
तुलसीदास ने कहा, 'माता, कहाँ जाने का यह इतना आयोजन?'

हाथ जोड़कर बोली, 'पति मिलें तो स्वर्ग नहीं चाहिए।'

तुलसीदास बोले मैं कहता हूँ घर लौट चलो,
आज से महीने भर बाद अपने पति को वापस पाओगी।
रमणी आशा से श्मशान छोड़ घर लौटी
और तुलसीदास जाह्नवी के तीर पर निस्तब्ध रात्रि में जागते रहे।

एक महीनेके बाद पड़ोसियाने जाकर उससे पूछा, 'तुलसीके मन्त्रका क्या फल निकला? उस स्त्रीने हसकर कहा, मुझे अपना पति मिल गया मिल गया।'

सुनकर बोले सब लोग बोलो तो है किस घरमे?'

नारी बोली स्वामी मेरे हैं अहरह अन्तरमें।

कविता खत्म करके देबू मौन हो गया। सोनाको देखकर उस जिस बातकी याद नहीं आयी वही बात याद आ गयी। सोना विधवा है सात सालकी उम्रमें वह विधवा हो गयी थी। सिर झुकाकर वह चुपचाप चली गयी, उस समय उसके उस झुके मुखकी भंगिमा और धीर चाल्म वह जिस बातका अनुभव नहीं कर सका अब उसीका स्पष्ट अनुभव उसने किया। अनुभव किया उसकी चुपचाप पलती गहरी विरह-वेदनाको। उसने एक गहरी उसांस ली। तुलसीदास जैसा उसे भी कोई मन्त्र आता होता तो वह सोनाको बताता। तिनकौड़ी खुद कहा करता है—सोना मेरी सोनेकी प्रतिमा है। बात गलत नहीं है। देबूकी आखें डबडबा आयीं।

इसी समय तिनकौड़ी अन्दरसे बाहर आया। बाहर आते ही उसने कहना शुरू किया, समय भया यह पेंच जो है, इसे तुम्हारे दौलत सीखने लगाया। वह शायद मुखर्जी बाबुओंके यहां गया था। बाबुओंने उसीसे कहा।"

तेरह

कनाके मुखर्जी बाबूने ठीक क्या नही कहा था।

दौलत शेखको उन्होंने बुलवाया था। शेख धनी है। बहरहाल, उसका चमड़ेका व्यवसाय चल निकला है और जम गया है। अपनी जातिका न हो चाहे, आजके समाजमें धनी धनीमें सौविवताका एक नाता होता है। उसीसे मुखर्जी बाबुओंसे, श्रीहरिसे या दूसरे जमींदार महाजनासे हाजी दौलतका सौहार्द है। इसके अलावा दौलत मुखर्जी बाबुओंका एक विशिष्ट रैयत है। उनकी बहीम दौलत शेखके लगानका अब काफी मोटा है। और धनी दौलतसे गाँववालोंकी बनती नहीं, इसका भी उन्हें पता है। इसीलिए शेखको उन्होंने बुलवाया था।

जक्शन शहर थानेके दरोगाजी और जमादार साहब क्रमसे बढते हुए पत्थर की तरह भारी और मौन होते जा रहे थे। डायरी कराना होता तो लिख लेते कुछ बोलते नहीं। मुखर्जी बाबूके यहाँसे दस-पन्द्रह सेरकी एक मछली भेजी गयी थी। उसे उन लोगोंने वापस भेज दिया। नायबको साफ लफ्ज़ोंमें कह दिया, 'जिस तरहकी गरम हवा बह रही है जनाब उसमें हजम नही होगी। मजिस्ट्रेटको कमिश्नरको तार गया है। बाप रे! सुना है मिनिस्टरके पास भी तार जा रहा है। मेहरबानी करके अब यह सब मत लाया करें।''

परसों यूनियन बोर्डके निरीक्षणके लिए सरकिल ऑफीसर आये हुए थे। वे—वही क्या सभी सरकारी कर्मचारी—एस० डी० ओ०, डी० एस० पी०, कभी कभी मजिस्टेट और पुलिस साहब भी इस इलाकेमें आते तो कंकनाके बाबुओंके अँगरेजी ढँगसे सजे देवोत्तर गेस्ट-हाउसमें ठहरते, उनका आतिथ्य स्वीकार करते। सरकारमें बाबुओंका अच्छा नाम-धाम है काम भी उन लोगोंने जन-सेवाका बहुत किया है—स्कूल अस्पताल बालिका विद्यालय उन्ही लोगोंका बनवाया हुआ है। सरकारी कामोंके लिए चन्देकी बहीम उनका नाम सबसे ऊपर ही रहता है। वे लोग जिस रास्तेसे चला करते है, वह रास्ता बाहरी तौरपर साफ-साफ कानूनका रास्ता है। रुपया कर्ज देते है, सूद लेते है। लगान बाकी पड जाये तो बेरहम बाकर सूद वसूल लेते हैं नालिश करते है। लगान बढाने वाले मामलेमें भी व अदालतके ही सहारे चल रहे है। गैरकानूनी वसूली भी काफी बहुत है शायद लेकिन वह भी कानूनके गंगाजलके छीटोंसे ऐसी शुद्ध हो जाती है कि उसकी अशुद्धता अथवा अशुद्धताका क्या कोई बात ही नहीं उठती, मसलन, देवोत्तरका धर्मादा खारिज-फीकी बाबत अतिरिक्त अनायमी

इत्यादि। इस वसूलीमें उनकी जोर जबरदस्ती नही है। हाँ, धर्मादा नही देनेसे न तो रुपया देते है न लेते है। नही लेना या नही देना अपनी इच्छापर ह। यह कोई गरकानूनी नही। और आखिरकार लाचार होकर अदालतकी शरण लेते है, दूसरोको अदालत जानेपर मजबूर करत ह। लिहाजा जो कानूनके उस्तरेकी धारसे चलते ह उनसे सिर घुटवानेके लिए थोडा-बहुत खून वह जाने को लोगोने मान लिया ह। इसके सिवा बाबुओकी सरकार भक्तिका जिक्र लॉर्ड कानवालिसके जमानेसे आज तक जिलेके सभी साहब विशेष रूपस कर गये ह। इसलिए राजभक्त बाबुओकी अतिथि शालामें आतिथ्य स्वीकारको वे बुरा नही मानते। लेकिन ताज्जुब परसो सरकिल ऑफीसर यहाँ आये और वे बाबुओके गेस्ट-हाउसमें नही ठहरे। मुखर्जी बाबू दो वजहोंसे चौंके। देश-कालका कहाँ क्या बदल गया ह इसे व नही जान सके। रयतोके तारका महत्त्व माना बहुत बढ गया ह। मुकदमोके कूट कौशल प्रजाकी सघ शक्तिके सामने आज गोया कम जोर पड गये ह। लेकिन आजसे पतीस साल पहल यहाँसे छह मील दूरके एक जमीदार रयतोकी भीडपर गोली चलाकर तुरत घोडेसे सदर पहुचे और सलाम भेजकर साहबको प्रणाम किया—इस घटनाके समय वे सदरमें ही थे। रैयताका मामला ठप गया था। घर बठे ही उन्होने यह अनुभव किया कि राजशक्ति मानो सगठित प्रजाका तार पाकर चचल हो उठी ह। और इससे वे भी चचल हो उठे।

[1] देवूकी इतनी जमातमे शामिल करनेपर भी खास नतीजा नही निकला। बिलकुल ही नही निकला—सा नही लेकिन जितना निकला उसका खास कोई मतलब नहीं था कमसे कम उन्हें ऐसा लगा। काफी सोच विचार करके उन्होने दौलत शेखको बुलवा भेजा।

शेखकी उम्र साठस ज्यादा हो चुकी ह मगर शरीर अभी समथ ह। मझोले कदके एक घोडेपर चढकर जाता आता ह। उसी घोडेपर शेख बाबुओकी कचहरीमें पहुचा। बाबूने सादर बिठाया।

दौलत भी रहम और इरशादका अच्छी निगाहोंस नहीं देखता। कहा गलती आपस थोडी-सी हो गयी ह बाबू। उसन चालीस पेड काट लिया—चालीके इलजाममें नालिश ठोक देते।

बाबूने कहा नालिश तो ठोकना ही ह। अभी तुम्हें इसलिए बुलाया ह कि तुम अपने गाँवके मातबर हो। लोगोको यह समझा दो कि वे जो कर रहे हैं अच्छा नही कर रहे ह। इससे मेरा कुछ नही बिगडेगा। साहब पल्टनकी भी आयें तो बिना मुकदमेके मेरा कुछ नही कर सकते। मामला हाईकोर्ट तक

जाता है। झूठा नालिश वहाँ नहीं टिकेगी। और फिर हाईकोटका मामला धान बेचकर नहीं चलता।

अपनी दाढ़ीपर हाथ फेरते हुए शेखने कहा, "सुनिए बाबू, मुझसे कहना आपका बेकार है। रहम शेख बदमाश और बदतमीज है, इरशादने दो हरफ़ पढ़ना लिखना सीख लिया है, नामके आगे मौल्वी लिखता है। फ़र्ज नहीं जानता, कलमा नहीं जानता, अपनेको मामिन कहता है। मैं हज करके आया हूँ हाजी हूँ। साठवां उम्र हुई। मुझका कहता है कि यह बुढ्ढा सूदखोर है लोगोंको ठगता है—वह हाजी नहीं, काफ़िर है। मेरे कहनेसे वे लोग नहीं सुनेंगे।'

बाबूने कहा, "ठीक है। तुम गाँवके एक जाने माने आदमी हो। हम लोगोंसे तुम्हारा बहुत दिनोंका अच्छा सरोकार है, इसीलिए तुमसे कहा। बादमें तुम मुझे दोष मत देना। रहम, इरशाद और उनके साथ और जो लोग हैं, मैं उन्हें यहाँसे उजाड़ दूँगा।"—कहकर मुखर्जी बाबू उठकर चले गये। दौलत शेखसे और बात तक नहीं की। उन्हें लगा कि हाजी जानकर इस मामलेसे अलग रहना चाहता है। कंकनाके छोटे-बड़े दूसरे समानधर्माओंकी तरह शेख भी उनके उजलतमें होनेका मजा ले रहा है।

दौलत शेख जरा देर बैठा फिर उठ गया। इस अवहेलाकी उसे बड़ी चोट लगी। बूढ़े घोड़ेकी पीठपर सवार लौटते हुए बार-बार उसके जीमें यही होने लगा कि वह भी रहम और इरशादका साथ दे। जिन्दगीमें बड़ी मामूली अवस्थासे वह धनी बना, बड़ी मेहनत की, बहुतोंसे कारबार किया बहुतोंका मन उसे जुगाना पड़ा। मनुष्यको समझनेकी एक योग्यता उसे हो आया थी। उसने खूब समझा कि आज रहम और इरशाद उसे नहीं मानते, वह उन्हें मना नहीं सकता—इस बातको जानकर ही मुखर्जीने उसका आदर करनेकी जरूरत नहीं समझी। आज एक अड़चन खड़ा करके रहम और इरशाद-जैसे मामूली आदमी बाबूके आगे उससे भी बड़े आदमी बन बैठे हैं। एकाएक उसके जीमें आया कि रहम और इरशादको वही अपनी मुट्ठीमें कर ले तो इलाकेके इस धुरंधर बाबूको बंसीके काँटेमें फँसे हंगर (एक प्रकारकी बड़ी मछली) की तरह खिला सकता है। उसे हँसी आयी। यह मुखर्जी बाबू शेर था एकाएक मानो स्यार हो गया है। जब उसने दौलतसे यह कहा कि रहम इरशाद और उसके साथियोंको यहाँसे उजाड़ दूँगा उस समय उसके गलेकी आवाज़ तक हल्की पड़ गयी थी। धमकी महज़ मौखिक है। उसका चेहरा तक फीका पड़ गया था। हाय-हाय रे मुखर्जी बाबू! समझ गया, तुम बापकी शाल ओढ़े

रहते हो दरअसल हो तुम भेडा। तुम रहम और इरशादसे डरते हो? फु फु।

घोडेकी पीठपर बठे हाजीने कई बार फु फु किया। इरसाद रहम? वकत क्या ह उनकी? मुखर्जी बाबू जितना पैसा उसके पास रहा होता तो जाने कबका उन असम्य बदनमीजोको साफ कर दिया होता। आदमीकी खालकी सफाई नही करनी चाहिए, वरना उन लोगोकी खालकी सफाई कराकर अपने कारबारके चमडेमें मिला देता! वक्त क्या ह इरशादकी, रहमकी?

बस्ती पहुचकर दौलत शेख अवाक हो गया। बस्तीमें लोगोकी बेहिसाब भीड। शिवकालीपुर महाग्राम, देखुडियाके हिन्दू किसान इकट्ठे हुए हैं, गांवके मुसलमान खेतिहर ह बीचम इरशाद रहम शिवकालीपुरका जगन डाक्टर, देखुडियाका तिनकौडी। उसने घोडेकी लगाम खीच ली। दवू घोष नही था। मुखर्जी बाबूने वह चाल बेजा नही चली। उधर श्रीहरिने भा अच्छी चाल खेली है। वह छोकरा पस्त हो गया ह।

जगन डॉक्टर मुहफट आदमी ह। धनियासे उसे बडी चिढ ह। दौलत शेखको खडा होते देख हँसकर उसने मजाक किया 'शेखजी, कबना गये थे क्या? मुखर्जी बाबूके यहाँ? वाह वाह!'

मौजूद लोगोमें हसीकी कानाफूसी होने लगी।

शेखका तलवेसे सिर तक जल उठा। इस ढीठ डॉक्टरकी बोलचाल ही ऐसी ह। लेकिन ये मामूली खेतिहर—जो उस रोज तक भी धानके लिए कुत्तेकी तरह दरवाजेपर दुम हिला गये ह—वे लोग भी उसका मजाक उडा रहे ह। उसके जीमें आया कि इन अभागोको मुखर्जीका वह सकल्प सुना दे।

रहमने हँसकर कहा क्यो बडे भाई बोल नही रहे है?'

जगनने कहा 'शेखजी देख रहे ह कि यहाँ ह कौन-कौन! कल फिर बाबूको बताना होगा न जाकर! रिपोट देनी होगी।'

दौलतकी आँखें लहक उठी। वह हाजी ह हज करके लौटा ह, मुसलमान समाजम उसका एक सम्मान ह आखिर। आज तक रहम और इरशाद ही उसकी खिल्ली उडाया करते थे। कहत थे रुपया रहनसे ही जहाजका टिकिट कटाकर मक्का शरीफ जाया जा सकता ह। हजसे लौटकर भा वह सूद कमाता ह लोगो की जायदाद हडपता ह—हजका पुण्य उसका नष्ट हो चुका ह। हम उसे नही मानत। उनकी वही हिकारत लोगोम भी फल गयी ह। उसने यह साफ महसूस

किया कि इस बातका यो फन्ना उसे सोचकर कहाँ उतारना चाहता है। इलाकेके हिंदू लोग भी उसकी हँसी उडाते हैं।

इरशादने कहा, "क्यों चाचा, गरीबोंसे बात तक नहीं!"

दौलतने कहा, 'मैं कहूँ क्या इरशाद कहते शर्म आती है।'

जगन बोल उठा, "बाप रे, जब कहते शेखजीको शर्म आ रही है तो जाने क्या बात होगी!"

दौलतने कहा "मैं तुमसे नही बोलता डॉक्टर! मैं कह रहा हूँ रहमसे इरशादसे, अपने जाति भाइयोंसे। हम लोगोंपर बहुत बड़ी आफत है! मैं क्या यों ही दौड़ा दौड़ा आया? सुनो रहम तुम भी सुनो इरशाद आज मुखर्जी बाबूने मुझसे कहा—दौलत, तुम अपने जाति भाइयोंसे कह देना अगर वे इस हंगामेका सहज ही निबटारा नही कर लेते, तो मैं सारे कुसुमपुरको जलाकर राख कर दूँगा।'

गावके लोगोंके बदले 'जाति भाइ' और जो हंगामा करेंगे उनके बदले सारा कुसुमपुर' कहकर दौलतने रहम इरशादको अपना बनानेकी कोशिश की।

रहम निपट गँवार ठहरा। तुरन्त पूछ बैठा, "सारे कुसुमपुरको आग लगा देगा?"

इरशादने हँसकर कहा, 'आप तो मियाँ जाने माने आदमी हैं, बाबुओंसे गले-गले है। सारा कुसुमपुर जल जानेपर भी आप महफूज रहेंगे। आपको क्या परवाह पडी है?"

"नही, मेरी भी रिहाई नहीं, मने कहा—मैं तो बूढा हो गया बाबू! मेरे अब के दिन है? मुसलमान होकर मुसलमानोंकी तबाही मैं नही देख सकता। बाबूने कहा—फिर तो तुम भी नहीं बचोगे। सुनो दौलत, कुसुमपुरमें मैं हिंदुओंकी बस्ती बसाऊँगा। तब यही जगन डाक्टर यहाँ आकर घर बसायेगा। देवू घोष भी आयेगा। तिनकौड़ी आयेगा। आया समझमें?"

तत्काल उसमें जादू-सा हो गया।

संघबद्ध जनता परस्पर अलग-अलग हो गयी। दो हिस्सोंमें बँटकर पहले वेदना भरी निगाहसे एक-दूसरेको देखा, फिर देखा सम्पूर्ण नजरसे।

जगनने विरोधमें कुछ कहना चाहा पर सिर्फ 'हरगिज नही' के सिवा और कोई बात उसे ढूँढे नहीं मिली।

रहम उठ खड़ा हुआ। शरीरमें भरपूर कूवत, बड़ा बिगड़ैल स्वभाव, तिसपर रोजेके उपवाससे दिमाग गर्म और स्नायु तीखी हो गयी थी। वह

बिगड उठा। वह चीख उठा—"तो इलाकेकी हिंदू बस्तियोंको हम खाक कर देंगे।"

शोर-गुल्में सभा टूट गयी।

रमजानका पाक महीना। रम्जका मतलब ह तपी हुई हवा। रमजानमें उपवासके कठिन साधनको आगम आदमीका पाप जलकर राख हो जाता ह, आगमें जसे लोहेकी जग गल जाती ह, भूखकी आगम तपकर वैसे ही आदमी पाक साफ हो जाता ह—यही शास्त्रका उद्देश्य ह। उपवाससे भुने मुसलमानोके मनमे दौलतकी बातका बारूदखानेपर चिनगारी-जसा असर हुआ।

हिंदुओंमें भी उत्तेजना कम नही फैली। गाँव गाँवमें लोगोंकी जुटान होने लगी।

दिन दिन नयी नयी अफवाहें फलने लगी। बडी खतरनाक अफवाहें। ये कहासे उडी, इसकी खोज किसीने नही ली, सम्भव और असम्भवका विचार नही किया। दोनो सम्प्रदायोंके लोग उत्तेजित ही होते चले गये।

थानेमें डायरीपर डायरी। तारपर तार जाने लगे—मजिस्ट्रेट साहबके पास, कमिश्नरके पास मुसलिम लीगके दफ्तरमें, हिंदू महासभाको। बाबुओंकी मोटर बरसातके कादो-पानीमे भी गावोका चक्कर काटने लगी। गाडीपर बाबूका नायब और बाबूका वकील। सारे हिंदू सम्प्रदायपर आफत। बाबुओंके नाट्य मन्दिरमें सभा होगी। कुसुमपुरकी मसजिदमें मुसलमान लोगोंकी बैठक। पास पडोसके गाँवोके मुसलमानोको खबर भेजी गयी। दौलत शेख रहमके पास बठ गया।

अकेले इरशाद ही जसे धीरे धीरे बुझने लगा। वह विशेष बोलता नही। चुप चाप बठकर सुना करता। इरशाद दुनियाम अकेला ही ह। उसकी बीवी ससुराल नही आती। कुछ मील दूरके एक गावमें एक खाते पीते हुए मुसलमान परिवारमे उसकी शादी हुई थी। उसके साले कोई वकील ह कोई मुख्तार। उनके घरकी लडकी आकर इरशादके गरीबखानेमें नही रह सकती। उन सालोका और लडकीके बापका कहना था कि इरशाद उनमें से किसीका मुहर्रिर बनकर वहीं रहे। शहरम उन्हींके डेरेपर रहे काम-काज करे। लेकिन इरशाद ने इसे मजूर नही किया। उसकी बीवी इसीलिए नही आती। इरशाद भी नही जाता। तलाक देनेमें उसे कोई एतराज नही ह। पर उसका कहना ह कि मैं तलाककी दरखास्त नही दूगा देनी हो तो बीबी ही दे। घर बठे वह सारी बातोंकी गहराईमें डूबकर समझनेकी कोशिश करता। रहम चाचा अभी भी नही

समय सका कि क्यासे क्या हो गया! सारी बस्ती दौलत शेखकी मुट्ठीमें चली गयी।

देखते-ही-देखते दौलत बहुत बडा धार्मिक बन गया। रोजेके दिनों दान करना होता है गरीब-गरबोंको आटा घी, किसमिस या उसी दामका चावल दाल देना पडता है। धनियोंके लिए सोना रूपा दान करनेका निर्देश है धर्मग्रन्थ का। धनी दौलत शास्त्रके इस निर्देशका पालन करता था अपने चरवाहे-हलवाहे को दान देकर। सेर-सेर भर चावल देकर वह एक ही ढेलेसे दो शिकार करता था। त्योहारकी त्योहारी भी होती और खुदातालाके दरबारमें पुण्यका भी दावा होता। इसके लिए गाँववाले दौलतकी निन्दा करते रहे हैं, उससे घृणा करते रहे हैं। दौलतको इन सबकी खबर होती। मगर उसने कभी इसकी परवाह नहीं की। इस बार उसी दौलतने यह ऐलान कर दिया है और लोग बेशर्मकी नाई नाचसे यही कहते फिरने लगे कि अबकी शेखजी धनी आदमियों-जैसा दान-पुण्य करेगा। उसकी दहलीजसे अर्थी प्रार्थी कोई निराश नहीं लौटेगा। रमजानकी सत्ताईसवीं रातको शबेकदरका जागरण रखेगा, बस्ती भरके लोगोंको खिलायेगा। भूखे लोग उसी रातकी इन्तजारमें हा किये बैठे हैं। खुद रहम चाचा तक उत्साहित हो उठा है। कहता है—अब शेखकी मति पलटी है।

इरशादने दीर्घ निःश्वास फेंका। दौलतने रहमसे कहा है कि अगर मुकदमा होगा, रुपयोंकी जरूरत पड़ेगी तो मैं दूँगा।

इरशादको हँसी आयी। छुटपनमें बच्चोंकी किताबमें उसने एक कहानी पढी थी—मगरके घरका न्योता। कहानीके अन्तमें जो तसवीर थी, वह अभी भी इरशादकी आँखोंमें तर रही है—सारे आमन्त्रितोंको निगलकर अपनी तोंद मोटी किये मगर महाराज गुडगुडी पी रहे हैं।

"इरशाद! बापजान! इरशाद!"—उत्तेजित-से रहमने आवाज दी।

दीर्घ निःश्वास छोडते हुए इरशादने कहा 'आइए चाचा! अन्दर आइए!'

"अरे बापजान तुम्हीं बाहर आओ! जल्दी देखो देखो!'

'क्या है?"—इरशाद जल्दीसे बाहर निकला।

'देखो!"

इरशादको कुछ दिखाई नहीं दिया। उसे केवल बहुतोंके एक साथ आनेकी आहट-सी मिली पैरोंकी। दूसरे ही क्षण रास्तेके मोडमें घूमकर दिखाई दिये हथियार बन्द सिपाही दो चार नहीं लगभग पचास। वे मार्च करते हुए राहकी धूल उडाते चले गये। थानेका जमादार भी उन सिपाहियोंके साथ था। उसने इरशाद और रहमको दिखाते हुए सिपाहियोंके नेतासे कुछ कहा।

रहमने पूछा, "हम लोगोंको दिखाकर उसने क्या कहा, बताओ तो ?"

इरशाद जरा हँसा, कुछ बोला नहीं।

रहमने कहा, "पचास सैनिक आ रहे हैं बापजान! साथमें एक डिप्टी। देखो क्या होता है!"

खास कुछ हुआ नहीं।

डिप्टी साहबके बीच बचावसे विवाद खत्म हो गया। कंकनाके मुखर्जी बाबूने कुसुमपुरकी मसजिदमें पचास रुपयेकी मिठाई भिजवा दी। रहमको बुलवाया और अपने सामने बेंचपर बिठलाकर कहा कुछ खयाल मत करना रहम।'

दौलत शेख भी था। वह बोला आप भी क्या कहते हैं! रैयत और जमींदार—बेटा और बाप। बेटेसे कसूर बने तो बाप शासन करता है और सयाना लड़का हो तो वह भी नाराज होता है। बाप फिरसे प्यार करता है कि गुस्सा जाता रहता है।

इस आदरसे रहम भी गल गया। वह भी बोला, "हुजूरको बहुत बहुत सलाम! हुजूर हम लोगोंका भी कसूर माफ करें।"

इरशादको बुलाया नहीं गया। वह गया भी नहीं। रहमने अनुरोध किया था। पर इरशादने कहा बुजुर्ग शेखजी जा रहे हैं, आप जा रहे हैं। मेरी तबीयत ठीक नहीं है चाचा!'

दौलत और रहम चले गये।

थोड़ी देरके बाद इरशादकी बुलाहट आयी। थानेसे एक सिपाही आया। इरशाद चौंका! फिर कुरता पहना सिरपर टोपी रखी और सिपाहीके साथ चला गया।

थानेपर पहुँचा तो देखा, और एक आदमीको बुलाया गया था। थानेके बरामदेपर देबू खड़ा था।

देबू भाई! —थानेके बरामदेपर आमने-सामने खड़े हो देबूको उसने निःसंकोच भाई कहा। उस दिनकी बात सोचकर भी उसे हिचक नहीं हुई।

देबूने हँसते हुए कहा, आओ भाई!

इरशाद जरा देर चुप रहा फिर लम्बा निःश्वास फेंककर बोला,"सब बेकार हो गया देबू भाई, सब बरबाद हो गया!'

देबूने कहा 'मगर करना क्या है ? उपाय क्या है उसका ?

इरशाद कुछ देर चुप रहा। फिर बोला, "तुम्हारे प्रति मुझसे कसूर बन पड़ा है, देबू भाई!"

देबूने उसका हाथ अपने हाथमें ले लिया। बोला, "हमारे शास्त्रोंमें क्या लिखा है मालूम है? सुखमें दुखमें राजाके दरबारमें मसानमें अकालमें, राजक्रान्तिमें जो समीप रहते हैं, साथ रहते हैं, वही असली मित्र है। दोस्तके लिए दोस्तसे भूल हो ही जाती है, उसके लिए माफी मांगनेकी जरूरत नहीं है भाई!"—देबू अपनी स्वभाव-सुलभ हँसी हँसा।

इरशादने उसकी ओर देखा। इसी वक्त उन्हें बुलाया गया। डिप्टी साहब अजीब ढंगसे उन दोनोंकी ओर देखते रहे—एकटक। उसके बाद कहा, 'लीडरी हो रही है?"

प्रतिवादमें देबू जाने क्या कुछ कहने जा रहा था।

डिप्टी साहबने कहा 'ठहरो!"

फिर बोले "अबकी खूब बच गये लेकिन आइन्दाके लिए होशियार!'

दोनों एक साथ थानेसे बाहर निकले। थानेकी इस घटनासे लोगोंके जीको चोट पहुँची। धमकीके सिवा बात कुछ नहीं हुई लेकिन जिस अजीब नजरसे डिप्टी साहब उन्हें घूर रहे थे, वह नजर दरोगा, जमादार सिपाही—यहाँतक कि चौकीदारकी भी नजरमें फूट उठी थी।

दोनों चुपचाप ही चल रहे थे। छोटे-से शहरकी भीड़ और हलचल भरी सड़कको चुपचाप पार करके दोनों मयूराक्षीके रेल पुलपर पहुँचे। पुल पार किया मयूराक्षीके बाँधका रास्ता पकड़ा। सूना रास्ता। बरसातके पानीसे बाँधके दोनों ओरके सरपत हरे और घने होकर दीवार-से खड़े थे। चलते चलते हठात् इरशादने ऊपरकी ओर नजर करके हाथ फैलाकर कहा "खुदा तुम भी तो कुछ जानते हो! सब कुछ देख रहे हो! तुम्हीं इसका विचार करना। यदि मुझसे कसूर हुआ हो तो ऐ खुदाताला, तुम मुझको सजा देना, मेरी नजर छीन लेना, जिससे मैं दर दरका भिखारी बन जाऊँ। ला इलाह इल्लल्लाह तुम्हारे सिवा मेरा कोई नहीं! तुम्हीं विचार करना। रोजा रखा है। तुम्हारा गुलाम हूँ मैं। हाथ जोड़कर तुमसे कहता हूँ—इसका विचार करना! तुम्हारे इन्साफसे जो कसूरवार हो उन बेईमानोंके सिरपर "

इरशादका गला रुँध गया।

देबू पास ही खड़ा था। इरशाद भाईकी मार्मिक पीड़ाका गहन अनुभव किया। वचोट उसे भी कम नहीं थी। लेकिन उसने सब-कुछ सह गया है। कानूनगो द्वारा की गयी उसकी तौहीन जल विल और मुन्नेकी मौत, हाल ही

में उसके नामपर लगाये गये दो-दो घिनौने लाछन, छिरू पालकी साजिश—सबने उसे उस संवेदनशील कर दिया है, ठीक उसी हिसाबसे सहनशील भी। अभी अभी उस रात भी ऐसी ही कठोर जलनसे उसके जीमें आग भड़क उठी थी लेकिन कुछ ही क्षणाम वह बुझ गयी। उस दिनसे मानो वह और भी प्रशान्त हो गया है। देवू समझ गया इरशाद विपक्षवालाका सराप रहा है। उसकी पीठपर हाथ रखकर गहरे स्नेहसे बोला, 'छोड़ो भी इरशाद भाई!"

इरशादने उसकी तरफ ताका।

देवूने कहा किसीको गाली-सराप नहीं देना चाहिए भाई!"

इरशादकी आखें दप्-दप् जल रही थी।

देवूने मुसकराकर कहा 'अगर स्वयं भगवानकी नजरमें अपराध करें, पाप करें तो उनसे प्रार्थना करनी चाहिए—मुझे सजा दे। उस सजाका माथा नवा कर कबूल करना चाहिए। लेकिन कोई और पाप करे, हमारा नुकसान करे, तो भगवानसे कहना चाहिए— भगवान उसे क्षमा कर दो। माफ कर दो।

इरशाद स्थिर आँखोंसे देवूको देख रहा था। उसकी जलती हुई आँखोंमे आंसूकी दो गरम बूँदें ढुलक पड़ी।

देवूने कहा, चलो। धूप चढ आयी रोजा है। कदम बढाकर चलो।

चादरकी कोरसे आखें पोछकर इरशादने उसास ली।

हमारी बस्ती होकर चलो। मेरे यहा बैठकर जरा सुस्ता लेना ठण्डे हो लेना फिर घर जाना।

इरशाद फीका हँसकर बोला चलो!'

बस्तीमें जब घुसे तो सडकें लोगोंसे भरी थी। गावोंके रास्ते आम-तौरसे सूने ही रहते हैं। अस्वाभाविक भीड देखकर देवू और इरशाद चौंक उठे। इरशादने कहा माजरा क्या है देवू भाई?

देवू इतनेमें सब समझ गया था। लेकिन भीड सिर्फ आत्मियोकी ही न थी, रास्तेके किनारे पेड़-तले गाडियाँ भी जम गयी थी। देवूने कहा चलो देखना! कोई आफत नहीं है। —वह मुसकराया।

इरशाद भी आखिर खेतिहरका बेटा है। स्वाभाविक बात होती तो वह झट समझ जाता। लेकिन आज उसका मन और मस्तिष्क उदभ्रान्त हो गया था।

राहकी भीड पार करके जानेपर कुछ ही फासलेपर श्रीहरिका घर पड़ा। खलिहानके फाटकको श्रीहरिने पक्का करवा दिया है। चौड़े फाटकसे गाड़ी तक अन्दर आ सकती है। फाटकसे अन्दरकी तरफ उँगलीका इशारा करके देवूने कहा वह देखो!

खलिहानके साफ़ सुथरे आँगनमें घरकी ऊँचाईके बराबर धानकी ढेरी लगी हुई थी। भादोंके साफ़ आसमानमें सूरजकी तेज धूपसे शरत्‌की आभा फूट रही थी। उस शुभ्रोज्ज्वल धूपकी झाईसे सिन्दूरमुखी धानकी ढेरी सोने-सी झलमला रही थी।

श्रीहरि एक कुरसीपर बैठा था। एक आदमीने उसे छाता ओढा रखा था। बीचमें काटा खडा था—बांसकी तिकाठीपर। धानकी तौल हो रही थी—रामेजी राम, रामेजी राम दो, दो ए राम दो, दो ए राम तीन

गाँव-गाँवके सण्डल मातवर लोग घेरे बैठे थे। बाहरी दीवारकी परछतीकी छाँहमें आस लगाये गरीब खेतिहरोंकी भीड खडी थी। देबूको देखकर सबने सिर झुका लिया।

देबूने किसीसे कुछ कहा नहीं। इरशादके साथ वह अपने बरामदेपर पहुँचा। वहासे उसने सुना, जगन डाक्टर जोरोंसे लोगोंको गालियाँ दे रहा है—चडांके पर चाटनेवाले कुत्ते! बेईमान! विश्वासघातक! कमीने!

घरके अन्दरसे बाहर आयी दुर्गा। इरशादको देखकर उसे अचम्भा हुआ। बोली, "अरे, कुसुमपुरके पण्डित मियां!"

इरशादने कहा, "हां! तुम अच्छी तो हो?"

दुर्गाने कहा, हां, ठीक हूं!'—उसके बाद देबूकी तरफ़ देखकर हँसती हुई बोली, "उधरसे आये, देखते हुए आये?"

"क्या?"

"घोषके यहाँकी भीड?"

"हां!"

"हां नहीं, इसकी मुसीबत तुम्हें झेलनी पडेगी। यह सारा इन्तजाम तुम्हारे लिए हो रहा है।"

देबू हँसा।

दुर्गाने कहा 'हँसोकी बात नहीं। दोनों दोनोंका सराप करीब आ गया है। पचायत बैठेगी।'

देबू ज़रा और हँसा। उसके बाद अन्दरसे एक बाल्टी पानी और एक लोटा लाकर इरशादके सामने रखते हुए बोला 'मुँह-हाथ धो लो। रोजेका उपवास है, पानी पीनेकी गुंजाइश तो है नहीं!"

इरशादने कहा, 'कुल्ला तक करनेकी मुमानियत है।"

देबू एक पंखा लेकर अपने और साथ ही-साथ इरशादको भी झलने लगा।

दुर्गाने कहा, "मुझे दीजिए गुरुजी, मैं दोनोंको झल देती हूँ।

चौदह

पचग्रामके जीवन समुद्रमे लहरोंका एक प्रचण्ड उफान सा आया था। वह उफान टुकडोंमें टूटकर छितरा गया। समुद्रके अन्दर ही अन्दर जो धारा वह रही थी उसमें तरगोंकी अस्वाभाविक उमडने फूलकर आवेग ला दिया था, एक भयानक आवर्तन और आलोडनका खिचाव नीचेके पानीको उपर खीच लाना चाहता था। समुद्रकी अन्तर्धाराके आकर्षणसे ही वह उफान टूट गया। उत्साह और स्फूर्तिहीन जीवन-यात्राके दिन फिर किसी तरहसे कटने लगे। खेतोंमें रोपाईका काम खत्म हो चुका था। किसान सुबह खेत जाते और निडानीमें जुट जाते। हाथके ऊँचे धानके पौधाम घुटन गाडकर वे घास-पातकी सफाई करते हुए धानोको ठेलकर आगे बढते जाते—इस तरफसे उस तरफ तक और फिर उस तरफसे इस तरफ तक। बहारमे मेडोपर खड होनेसे लगता कि कोई आदमी ही नही ह।

माथेपर भादोकी कडी धूप। तन-बदनसे झरझर झरता पसीना। धानके धारवाले पत्तोंमे बदन कट-कट जाता। तो भी उनके मन उम्मीदासे भरे रहते—खेताम खडे तेज और सब्ज पौधोकी परछाइ ही उनके मनापर पडती। ढाई पहर खेताम काम करके तब घर लौटते। नहा-खाकर छोटे छोटे अड्डोपर बठे चिलम पीते, गपशप करते। गपशपका खास विषय होता बीते हगामेकी चर्चा और देबू पदम सवाद। दोना ही बातें बडी रोचक और उत्तेजक होती लेकिन मजेकी बात यह कि ऐसे विषयपर बातबात जमती नहीं। क्या नही जमती—यह कोई समझ नही पाता। सीताको अयोध्याकी प्रजा जानती चीन्हती न थी—यह बात नही, तो भी अशोक-वनमे बन्दीकी हालतम जो गुजरा होगा, उस सम्बन्धमें बहुत सारी कुत्सित कल्पनाए करके वह बौरा उठी महज बौरानेके लिए ही। लेकिन लकाके राक्षस नही बौराये। हा उन्होने सीताकी अग्नि परीक्षा देखी थी। मन्दोदरीकी बातपर राक्षस मतवाले नही हुए। इसलिए कि उस मतवालेपनके आनन्दका अनुभव करनेवाली उनकी मानसिकता लकाकी लडाईमें मर गयी थी। वसे ही शायद इस इलाकेके लोगोमें कोई भी आलोचना जम नही रही थी। आषाढकी रथ-यात्रासे लेकर भादोके कुछ दिन मानो हवा पर सवार हो उड गय। पचग्राममें इतने बडे बहारकी खेती पूरी हो गयी—हजार-दो हजार लोगान कामकाज किया, मगर किसी दिन कोई झम्प नही हुई मारपीट नही हुई। और भी अचम्भेकी बात कि इस बार मोरा धानकी अटिया नामद ही चोरी गयी! सताके समय वसा उत्साह! कल्पनासे रगी हुई

कसी-कसी उम्मीदें! बहारमें इस साल चार ही पाच गीत सुननेको मिले। बाउरी कवि सतीशका गीत ही सबसे ज्यादा मशहूर हुआ—

कलिकाल औचक ही गया।
दु ख के घर सुख ने उसरा बाधा गया।
काई किसीकी मेड न काटे
खेत का पानी खेत के बाटे
पराई आर को चाटे पर ने बनाया।
गाली गुफ्ता बिल्कुल भूले
भाई बिरादर गले-मले
यह अपटन भले भले किसने घटाया।
दीन सतीश कहे कर जोडे
तेरह सौ छत्तीस साल आया।

सतीशका खयाल था खेती-बारी हो चुकनेपर भमान-दलकी महफिलके लिए ऐसे गीत और बना लेगा। लेकिन रापना खतम हो चुकनेपर भी बाउरी डोम टोलेका भमान-दल जम नहीं पाया। लडकोंकी जमात मौलसिरी-तले लालटेन जलाये जमती थी, ढोलक बजाती हुई—लेकिन बडे कुछ खास नहीं आते। इलाकेके मरके लागोंमें एक अलसाया बिखरावका लक्षण है।

अँधरिया पाख। देबू अपन आसारेकी चौकीपर लालटेन जलाये बठा रहता। चुपचाप सोचा करता। कुसुमपुरके लोगोंने उसपर घूस लेनेकी घिनौनी तोहमत लगायी थी। इरशादने भूठ-सच समझा। उसने देबूके सामने इसे माना और आकर स्नेह-सने शब्दोंमें दिलासा दे गया। उस तोहमतकी ग्लानि देबूके मनमें पुँछ चुकी थी। उसका उसे कोई गम नहीं रहा। श्रीहरिने उसके ऊपर पदम और दुर्गाको लकर वाहियात लाछन लगाया, वह अभी भी पचायत बठानेका भुगतम लगा हुआ था—उसका भी उसे काई दु ख, कोई गम काई गुस्सा नहीं। स्वय न्यायरत्न महाशयन उसे आशीवाद दिया है। पचायत अगर उसे जातिसे बाहर भी कर दे तो उसे दु ख न होगा। उससे वह बिल्कुल नहीं डरता। लेकिन दु ख उसे इस बातका था कि इलाकेवालोंने धमकी शपथ लेकर जिस घटको बठाया था उस घटको उन्हीं लोगोंने चूर चूर कर दिया। यह मामूली-सा भूल चाल व नहीं करते। लोगोंने उसे जो कुछ भी कहा, कहा उसमें भी काई हर्ज नहीं था। उसे अलग करके भी वह काम होता। मगर एक ही ग्रस्तीके चलते

सब चौपट हो गया।

चौपट हो कहिए। उस हंगामेको दबानेके सिलसिलेमें कुसुमपुरके दोखोंसे बकनाके बाबुओंका लगान बढनेवाला मामला भी मिट गया। दौलत और रहमके माध्यमसे बढोत्तरीवाला काम होने लगा। रुपयेमें दो आनेकी बढोत्तरी। यह कुछ वैसा बुरा नहीं हुआ। लेकिन यह भी तय पाया है कि जमीन बढनेकी भी बढोत्तरी देनी होगी। यह बात सुनने या देखनेमें वैसी बुरी नहीं लगती। रैयत पांच बीघेका दस रुपया लगान देते हैं। उसकी जगह यदि छह बीघे हो तो ज्यादा एक बीघेका लगान रयतको देना है। जमींदारका वाजिब पावना होता है। यह कानून, न्याय, धर्म सब दृष्टिसे संगत है। लेकिन इसमें गोलमाल बहुत है। जमींदारके सिरिश्तेमें बहुत बार जमीनका लेखा ठीक नहीं रहता। नापकी गलती तो है ही, उस समयके नापका मान भी आजसे अलग था।

दौलतका लगान जिस दरसे बढेगा या बढ़ा, यह अभी किसीको नहीं मालूम।

रहमने उसी दरसे बढोत्तरी दी। गुमाश्ताके पास बैठकर बीच-बचाव करने का सम्मान पाकर ही वह सारा-कुछ भूल गया।

कुसुमपुरमें बढी दरसे लगान देनेसे इनकार अकेले इरशादने किया।

शिवकालीपुरमें श्रीहरि घोषके सिरिश्तेमें भी बढोत्तरीकी बातचीत पक्की हो गयी। मुखर्जी बाबूकी खींची लकीरपर ही लकीर खींचेंगे लोग। इस बस्तीमें जगन तथा दो एक जने तने हुए थे। बूढे द्वारिका चौधरी इस विरोध आन्दोलनके साथ कभी नहीं रहे लेकिन पुराने आभिजात्यकी मर्यादाके नाते वे बढोत्तरी देनेको राजी नहीं हुए। अपने निश्चयपर वे अडिग थे।

दखुडियामें रहा एक तिनकौडी। भल्ले लाग भी है मगर उनके पास जमीन ही कितनी है। किसीके पास दो बीघा, किसीके पास बहुत हुई तो पाँच। किसी किसीके पास दस-पन्द्रह कट्ठा ही।

श्रीहरि घोषके यहां बैठक हुआ करती। एकके बदले अब दो गुमाश्ते। एकको अभी सामयिक तौरपर रखना पडा है। बढोत्तरीका कागज पत्तर तैयार हो रहा है। घोष बैठा तम्बाकू पिया करता। हरीश भवेश आदि मातबर आते। बीच-बीचमें पंचायतवाले मण्डल लोग भी आते। दो चार ब्राह्मण-पण्डित भी अपने चरणोंकी धूल दिया करते। शास्त्रकी चर्चा होती। श्रीहरिके उत्साहका अन्त नहीं। अपने गाँवकी तरक्कीकी योजना वह सबके साथ सबके सामने कहता—

दुर्गापूजा महायज्ञ है। अगले साल वह चण्डीमण्डपमें दुर्गापूजाका समारोह करेगा। सुनकर सब उत्साहित हो उठे। गाँवमें माता दशभुजा आयेंगी—इससे तो गाँवका ही मंगल होगा। या दर्शन पूजाके लिए बच्चोंको द्वारिका चौधरीके यहाँ ले जाना पड़ता है, कंकनाके बाबुओंके यहाँ ले जाना पड़ता है?

"वही तो!"—श्रीहरि इसपर उमगकर कहता 'इसीलिए तो! चण्डी-मण्डपमें पूजा होगी, आप दस लोग आयेंगे, बैठेंगे, पूजा करायेंगे। बच्चे खुशी मनायेंगे, प्रसाद पायेंगे। एक रोज गाँवके जाति गोतोंको भोजन कराया जायेगा एक दिन होगा ब्राह्मण भोजन। अष्टमीकी रातको पूरियाँ। नवमीकी पूजाके दिन गाँवके गरीबोंको भरपेट खिचड़ी, जो जितना खा सके। विजयादशमीकी रातको प्रतिमा विसर्जनके समय आतिशबाजी।"

लोग बाग थोड़ा और उत्साहित हो उठते। कोई ब्राह्मण पण्डित वहाँ मौजूद होता तो संस्कृतका कोई श्लोक सुनाकर श्रीहरिकी इस योजनाकी राज-कीर्तिके साथ तुलना करता हुआ कहता, 'दुर्गापूजा कलियुगका अश्वमेध है। यज्ञ करने-का भार तो राजा हो का है, जरूर करो! भगवान्ने जब तुम्हें इस गाँवकी जमींदारी दी है, देवी लक्ष्मीने जब तुम्हारे यहाँ चरण रखे हैं तो यह तो तुम्हींको करना होगा।"

श्रीहरि सहसा गम्भीर हो उठता। कहता "भगवान मुझसे करायेंगे, मैं करूँगा यह तो है ही। करना मुझे पड़ेगा ही। मगर बात या है कि कभी-कभी मेरे जीमें होता है नहीं करूँगा इस गाँवमें मैं कोई काम नहीं करूँगा, क्या करूँ कहिए? कुछ दिनोंसे लोगोंने मेरे साथ कैसा सलूक किया, कहिए तो? अरे बाबा, राजाका राज है। उनके राज्यमें मैंने जमींदारी ली है। उन्होंने बहुतेरी ऐसेंका अख्तियार मुझे दिया है। अख्तियार दिया है, इसीलिए मैंने माँग की है। नहीं देंगे नहीं देंगे कहकर एक गँवई गँवार छोकरेकी बातपर सब उछलने लगे। मुसलमानोंने साठ गाँठ करके अन्त तक क्या किया, जरा देखिए तो सही!"

सब चुप रहते। सारी बातें याद आ जातीं। स्वस्थ जीवनकी उमगोंका स्वाद, स्वस्थ आत्म शक्तिके क्षणिक निडर प्रकाशकी सोयी स्मृति मनमें जाग उठती। कोई सिर झुका लेता, किसीकी नजर श्रीहरिके चेहरेपर-से फिसलकर जमीनमें गड़ जाती।

श्रीहरि बोलता जाता "खैर, भले भले सब बीत गया, अच्छा ही हुआ। भगवान मालिक हैं समझ गये, उन्होंने ही बचा लिया।"

"बेशक! भगवान ही मालिक हैं!'

"और क्या! मगर भगवान खुद तो कुछ करते नहीं। वे लोगोंके जरिये ही कराते हैं। किसी किसीको भार देते हैं वे। उनका वह भार पाकर जो काम नहीं करता, वह स्वार्थी है, अमानव है; जन्मान्तरमें उसकी दुर्गतिका अन्त नहीं रहता। उसकी उपेक्षामें समाज छार-खार हो जाता है।"

ब्राह्मण इसपर हामी भरते, बेशक! राजा, राजकर्मचारी, समाजपति—ये लोग अगर अपना कर्तव्य न करें तो प्रजा कष्ट पाती है, समाज जहन्नुममें चला जाता है। कहावत है, राजाके बिना राज अनाथ।"

श्रीहरि कहता, इस गाँवमें बदमाशी करके अब किसीको रिहाई नहीं मिलेगी। जो शैतान हैं, बदमाश हैं, जरूरत होगी तो मैं उन्हें गाँवसे निकाल दूँगा।

अपनी लम्बी योजनाके बारेमें वह कहता जाता, इस अंचलमें नवशाखा समाजकी पंचायतका मैं पुनर्गठन करूँगा, कदाचार, व्यभिचार, धर्महीनताका दमन करूँगा। देवताकी कीर्ति रखनेके लिए कानूनसम्मत प्रबन्ध करूँगा।'—देवता, धर्म और समाजके उद्धार और रक्षाकी योजना वह जबानी आँकता जाता।

वह कहता, आप लोग सिर्फ मेरी पीठपर खड़े रहें। कुछ करना नहीं पड़ेगा आप लोगोंको, मेरी पीठपर रहें और सिर्फ यह कहें कि हाँ, हम तुम्हारे साथ हैं। और फिर दक्षिणके जिलेमें मन ठीक किये देता हूँ। आँधी-पानी आयेगा तो आये, सिर मुकाकर झेल लूँगा, ख़र्चकी जरूरत होगी करूँगा। पाँच सात क़िस्म लगाकर नालिश ठानने रहनेसे कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो, एक हाथ जाम निकल जायगी। बीवी-बच्चे जाते हैं, फिर होते हैं। कितना देखेंगे?'

वह उँगलीपर गिनता हुआ बोलता जाता कि किस किसके बीवी-बच्चे मरे, किस किसने फिरसे शादी की और फिर बाल-बच्चे हुए। सचमुच ही पता चलता कि इस गाँवके तीस आदमियोंकी स्त्रियोंका अन्तकाल हुआ और उनमेंसे अट्ठारहने शादी की। पाँच आदमियोंके बीवी बच्चे दोनों मरे। उनमेंसे चारने फिरसे बीवी-बच्चे पा गये। हुआ नहीं है एक देबू घोषके, उसने शादी नहीं की।

लेकिन —श्रीहरि इसपर कहता, सम्पत्ति-लक्ष्मी चली जाती है तो फिर नहीं लौटती। बड़ी कठिन देवी है वह! और रतन चाहे कितना ही बड़ा हो, हर क़िस्त बाक़ी लगानकी नालिश होती रहे तो जायदाद उसकी जाकर ही रहेगी।

चुप हुए-से लोग मिट्टीके खिलौने-से हो जाते। श्रीहरि उनका मददगार है,

वे सब उसीके समथक ह्। श्रीहरि कह रहा ह कि उन्ही लोगोके बलपर उसे बल ह, फिर भी उन्हें लगता कि उन-जैसे वेबस और दु खी इस दुनियामें और नही हैं। एकाएक भवेश ऊपरको मुँह किये भगवान्को पुकार उठता—गोविन्द! गोविन्द! तुम्हारा ही भरोसा ह प्रभो!

श्रीहरि कहता, "लोग इसी बातको भूल जाते हैं! सोचते हैं हम ही मालिक हैं! हमसे दूसरा कोई नही ह। अरे बाबा, फिर तो भगवान तुझे राजा ही के घर भेजते।"

सभी उठनेके लिए व्यग्र हो जाते, अपने अपने कामकी बात यथासम्भव सक्षेपमें विनम्रतापूर्वक प्रकट करते।

"मेरी जोतकी खरीदवाला वह पुराना कागज मिल गया ह श्रीहरि! जमीन जो बढ रही ह, उसका मतलब यह हुआ कि उसमें आबादी जमीन तुम्हारी बारह बीघे ही थी, उसके अलावा घास-वेंटकी पाच बीघे थी। अब बाबूजीने घास-वेंट साफ करके पूरीकी पूरी जमीन अच्छी बना ली ह। इसीसे तुम्हारे मत्रहकी जगह बीस बीघे हो गये।"

"खैर, सहूलियतसे कभी दिखाइएगा।"

ब्राह्मण कहते, "हमारा दो बीघा ब्राह्मणोत्तर मालकी जमीनम घुस गया ह।"

"ठीक ह, रसूद ले आइएगा।"

सब उठ जाते। श्रीहरि थोडा सिरिश्तेका काम देखता। उसके बाद खा-पीकर सोचता—अबकी बार मैं लोकल बोर्डमें खडा हूँगा। लोकल बोर्डमें खडे हुए बिना इधरके रास्तो घाटोका सुधार असम्भव ह। शिवकालीपुर और कक्नाके बीचके उस नालेपर पुलिया बनवाना निहायत जरूरी ह। और इन लोगोपर नाराज होनसे क्या होगा? ये सब अबोध, अभागे ह। इनपर नाराज होना और घासपर नाराज होना एक ही ह।

उसकी नजर एकाएक एक खिडकीपर जा ठहरती ह! रोज ही जा ठहरती ह! उस खिडकीसे अनिरुद्ध लुहारका घर दिखता है। वह रोज ही खिडकी खोलकर उधर देखता। अँधेरेमें कुछ अन्दाज नही होता, लेकिन हाँ, कभी-कभी यह नजर आ जाता ह कि मिट्टीके तेलकी ढिबरी हाथमें लिये छरहरी-सी लुहार-बहू घरमें इधरसे उधर आ-जा रही ह।

अपने ओसारेपर बठा देबुडियाका तिनकौडो सारे इलाकेके लोगोको व्यग्य भरी गालियाँ दिया करता। उसकी गालियोंमें श्राप नही होता, गुस्सा भी नहीं

होता, होती सिर्फ उपेक्षा और ताना। वह मालगुजारीकी बढोत्तरी नहीं देगा। भूपाल उसे बुलाने आया था, उसने आदरके साथ नमस्कार करके कहा था, "एक बार आइएगा मण्डलजी! बढोत्तरीका कोई किनारा किया जायेगा। मण्डल लोग सब आयेंगे। आप जरा—"

भूपालने अचानक देखा कि तिनकौडी उसे बडी कठोर नजरसे देख रहा है। वह ठिठक गया और कई कदम पीछे हट आया। मण्डल महाशय सहसा चीतेकी तरह उसपर झपट पडें तो कोई आश्चर्य नहीं।

तिनकौडीके चेहरेकी पेशियाँ अब धीरे धीरे हिलने लगी। नाककी नोक फूल उठी—दोनों तरफ आधे चाँदके आकारकी दो बाकी रेखाएँ फूट उठी। होठका ऊपरवाला हिस्सा जरा उलट गया। बेहद घृणासे उसने पूछा "कहा जाऊँगा ?"

"जी ?"

"पूछता हू कहा जाना होगा ?"

"जी घोष बाबूकी कचहरीमें !"

"अरे कम्बख्त बेंगके बच्चेकी दुम गिर जाती है तो बेंग ही होता है हाथी नहीं होता। छिरू पाल घोष बन गया, ठीक है! अब यह बाबू और क्या है रे ? और यह कचहरी ही क्या ?"

भूपालको जवाब देनेका साहस नहीं हुआ।

तिनकौडीने हाथ बढाकर उगलीसे रास्ता दिखाते हुए कहा "जा, भाग जा यहासे।"

भूपाल लौटकर जा ही रहा था कि खडा हो गया हिम्मत बटोरकर बोला "इसमें मेरा कौन-सा कसूर है ? मैं तो हुकमका बन्दा हूँ। मुझसे उन्होंने कहा मैं आ गया। मुझपर क्या—"

तिनकौडी अब उठ खडा हुआ बोला, "हुकमका बन्दा! कम्बख्त छछुन्दरका गुलाम चमगादड कहीका—निकल जा, कहता हू निकल जा।"

भूपालने भागकर जान बचायी। लेकिन तिनकौडीकी बातपर उसे गुस्सा नहीं आया। ग्राम भरके भल्ला, बागदी, बाउरी डोम इन लोगोंसे तिनकौडीका खासा अपनापन है। उसे कोई परहेज नहीं है, सबके घर जाता है बैठता है, गपशप करता है चिलम हाथमें लेकर तम्बाकू पीता है। एक समय वह मनसा गानके दलमें भी इन लोगोंके साथ गीत गाता फिरता था। आज भी सबसे मजाक करता है गालियाँ बकता है कोई उससे निगडता बिगडता नहीं। भूपाल बल्कि रास्तेमें मन-ही मन कौतुकसे थोडा हँसा। गाली मण्डलने खासी दी।

छछुंदरका गुलाम चमगादड यानी घोप छछूंदर है। उसे अपने चमगादड होनेमें आपत्ति नहीं, लेकिन घोपको छछूंदर बनाया—इसी कौतुकसे वह हँसा।

भादोकी कृष्णपक्षकी रात। बीच-बीचमें बादल घिर आते, ठण्डी हवाके झोके, पेड़-पौधोंके घने पत्तोंकी सन-सन आवाज उठती, गड्ढे डाबरमें मढक टर टर करते, झींगुरकी अविराम झों नी, कभी कभी फुहियाकी बारिश। तिनकौड़ी ओसारेपर अँधेरेमें बठा तम्बाकू पी रहा था और गालियाँ बक रहा था। राम भल्ला और तारणी भल्ला बठे सुन रहे थे।

'सियार हैं, गीदड। साले सब गीदड हैं। समझ गये राम—गीदड हैं सब।"

राम और तारणी अधेरेमें ही समझदारकी नाइं जोर-जोरसे गरदन हिलाकर कहते, "और क्या।'

तिनकौड़ीको कोई भी गाली जँच नहीं रही थी। बोल उठा, "साले सियार भी नहीं है। सियार तो कमसे कम बकरी भेंडका मार सकता है पगलाकर काट भी खाता है। ये सब फोक सियार हैं।"

अन्दर लालटेन जलाकर गौर और सोना पढ रहे थे। बापकी उपमाएँ सुन कर वे हँस रहे थे।

'भालूके बेटे, साले उल्लू।'

सोनासे अब रहा नहीं गया। वह खिलखिलाकर हँस पडी।

तिनकौड़ीने डाँटा, 'गौर ऊंघ रहा है?"

गौरने हँसकर कहा, 'नहीं तो।'

"तो, तो फिर सोना हँस क्या रही थी?"

गौरने कहा, "सोना आपकी बातें सुनकर हँस रही है।"

'मेरी बातें सुनकर?"—तिनकौड़ीने एक गहरी साँस लेकर कहा, 'यह हँसनेकी बात नहीं है बिटिया। बड़े दुःखसे कह रहा हूँ, बडी जलनसे। तू बच्ची है, क्या समझेगी।"

सोना सहम गयी। कहा, 'नहीं बाबूजी, उसके लिए नहीं।"—जरा चुप रहकर फिर सकोचके साथ ही कहा, तुमने कहा न, भालूका बच्चा उल्लू! इसलिए। भालूके पेटमें उल्लू होता है?'

अबकी तिनकौड़ी भी हँस उठा, 'अरे हाँ, हाँ! मेरी ही गल्ती है।'

अबकी राम और तारणी भी हँसा। अन्दर सोना और गौर भी एक नाक

फिर हँसे। सोनाकी पैनी अक्लसे तिनकौडी जरा खुश भी हुआ। बोला, "जरा मनसाकी पाचाली पढ सोना! हम सब सुनें।"—इस प्रसगमें ही वह दोहराता ह—"बेकारके कामोम दिन गया और रात गयी सोकर, राधा और कृष्णको भजा नही जीवन भर!—रात दिन इन साले भटोकी सोचकर क्या होगा? भेंड हैं सब भेंड। समझे रामा, गीदडका देखकर भेड आँख बद कर लेती ह। सोचती ह जब हम गीदडको नही देख रही ह तो गीदड भी हम लोगोको नही देख रहा है। साला सियार बेपरवाह हो जाता ह, झट दबोच लेता ह और गरदन तोड देता ह। यह ठीक वही हुआ। कम्बख्त छिरू पाल और सिफ छिरू पाल ही क्या, कङ्कनाके बाबू तक धूत गीदड हैं और ये सब ह भेंड। मटामट सबकी गरदन तोड रहे ह।'

अबकी सही गाली पाकर तिनकौडी खुश हो गया।

सोनाने अदरसे पूछा, 'कौन सी जगहसे पढू?'

मनसाकी पाचाली तिनकौडीको कण्ठस्थ ह। किसी समय वह उसका मूल गायक था। उसी समय उसने कलकत्तेसे छपी हुई किताब मँगवायी थी। उस समय भसानवाला दल पाचाली दल था, तिनकौडीने ही उसे तोडकर यात्रा दल सा बनाया था। वह बनता था चाद बनिया कभी-कभी गोधाकी भूमिका भी अदा करता था। चाद बनकर ऊबड खाबड डालकी एक लाठी लिये 'हेमतालकी लाठी-सा वीर रसका अभिनय करके वह महफिलको मात कर देता था। जब जब मचपर आता कहता—

जिन हाथो से पूजी मने महाचण्डिका जननी।
उनसे कभी नही पूजूँगा म 'चँगमूडी कानी॥'

उसके बाद सनकाके सामने गम्भीर होकर कहता—चन्द्रधरकी चौदह नावें डूब गयी मेरे छह छह बेटे जहरके असरसे काले पडकर अकाल ही कालके गालम चले गये—सब उसी कानी चँगमूडी की बदौलत। उसने मेरा महाज्ञान हर लिया। बधु धन्वतरिको मार डाला। जो भी बच रहा ह वह भी जाये। मगर मैं फिर भी—फिर भी उसकी पूजा नही करूँगा। नही-नही-नही।

आज उसने कहा, पढ किसी एक जगहसे।

रामने कहा सोना बिटिया उस जगहसे पढा। वही कलेके थम्भाको बाँधकर उसपर मर लखीन्दरको लिये विहुला बह चली। जरा सुरसे पढो।"

तिनकौडीन बता दिया,' वहास पढ साना वहांसे जहा चन्द्रधर कह रहा ह—

'बलियाको जो पा जाऊ म कहा एक भी बार।
मर सुतों का बदला ले लूँ उसे उसी क्षण मार॥'

सोनाने वहीसे सस्वर पढ़ना शुरू किया—

विलाप करती हुई विहुला अपने विवाहके साज सिंगार उतार फेंकती है, हाथका कंगना उतारा, बाजूबन्द खोला, कानका कुण्डल, नाकका बेसर उतार दिया, माँगके सिन्दूरको पोंछ दिया। कोहबरमें सोनेके डिब्बेमें पान भरा था, सबको फेंक-फाँककर विहुला लखीन्दरके शवको अपनी गोदमें उठाकर अनिर्दिष्ट दिशाकी ओर वह चली।

वह वह चली। कौवा रोने लगा वह उसका सवाद उसकी माके पास ले गया। अन्य पक्षी भी रोने लगे। पशु रोने लगे। नावकी गंधसे स्यार आये लेकिन विहुलाका रोना देखकर वे भी रोते रोते लौट गये।

तिनकौड़ी, राम तारिणी भी रोने लगे। सोनाका गला भी भारी हो आया। वह भी रह रहकर आंसू पोंछने लगी। अध्याय खत्म हो गया, तो तिनकौड़ीने कहा, "आज अब रहने दे बिटिया।"

सोनाने पोथी बन्द की। उस माथेसे लगाकर रख दिया और अन्दर चली गयी। गौर कुछ पहले ही सो गया था। राम और तारिणी भी उठ खड़े हुए।

'आज अब चलता हूँ मण्डल।'

अनमने तिनकौड़ीने जरा चौंककर ही कहा, 'हाँ।"

अँधेरेकी तरफ ताकता हुआ वह बैठा रहा। मनपर एक भार-सा था। रात बिस्तरपर लेटकर उसे नींद नहीं आयी। घोर अँधेरी रात। रिमझिम वर्षा। चारों ओर सन्नाटा। तमाम लोग बेखबर सो रहे हैं। उन लोगोंने पेटके लिए इज्जतकी बलि दी और निश्चिन्त हो गये हैं। उनके लिए श्रीहरि घोषका गोला खुल गया है कंकनाके बाबुओंका गोला खुल गया है, दौलत शेखका गोला खुल गया है। लेकिन उस कोई नहीं देनेवाला। उसने इस बार शहरके कल्वालेसे रुपये लेकर धान खरीदा था। उस धानका थोड़ा-बहुत उसने भल्लाको दिया। धान और चाहिए। बड़े आदमी उस जमींदारसे झगड़कर चौदह नावें उसकी डूब गयीं। पचीस बीघा बपौती ता जमीन थी, उसमें-से बीस बीघा जाती रही, पाँच बीघा ही बच रही है। विहुलाकी तरह उसकी प्यारी चिड़िया सोना कोहबरमें ही विधवा होकर अथाहमें वह रही है। आजके जमानेमें लखीन्दर नहीं बचता। कोई उपाय नहीं! कोई उपाय नहीं!! अचानक उस एक बात याद आ गयी—शहरमें आजकल भले घरोंमें भी विधवा विवाह होता है। उसने निःश्वास छोड़ा। यह बात उसने अपनी स्त्रीसे एक बार कही भी थी। लेकिन सोनाने अपनी माँसे कहा—नहीं माँ, छि! दूसरी एक तरकीब है कि सोनाको लिखाया पढ़ाया जाय। जंक्शनमें उसने स्त्री डॉक्टरको देखा है, स्कूलकी मास्टरनियोंको

देगा ह । पढ लिखकर मोना भी अगर ऐसी हो सके । आसारेपर लेटे लेटेवह सोचता रहा ।

अँधेरिया पाखके आकाशमें चाद उगा । मेघोंकी छायामें चाँदनी रातकी शवल भोर रात-सी हो गयी । बीच बीचमें गलतीसे कौए बोल उठने लगे—बसेरेसे मुँह निकालकर डने फड़फड़ाने लगे ।

तिनकौड़ीने मनके सकल्पको मजबूत किया । यह सकल्प उसका बहुत दिनोंसे ह लेकिन किसी भी प्रकारसे वह उसे रूप नही दे पा रहा है । कल ही वह देबूसे राय मशविरा करके जो भी हो, कोई व्यवस्था करेगा ।

"मण्डलजी ! अरे ओ मण्डलजी !"

तिनकौड़ीकी नाक न बजनेकी वजहसे आज चौकीदारने उसे पुकारा ।

कुसुमपुरके मुसलमानोंको दौलत शेखसे धान उधार मिल गया । सारा दिन रोजा और तो भी दिन भर खेतोंमें काम-काज करके उसने जमीदारके सिरिश्तेमें मालगुजारीकी बढोत्तरीका उलझा हुआ हिसाब किया । शामको रोजा खोलकर वह गहरी नींद सो गया ।

इरशाद रोजा तोडनेके समय रोज शामको किसी गरीब जाति भाईको कुछ खिलाकर तब अपने खाता । उसके मनमें जोर नहीं रह गया ह । हर वक्त एक अव्यक्त पीडा उसे जलाया करती ह । देबू भाईने उस जो कही थी, वह बात याद करके भी वह अपने मनको मना नही पाता ।

वह नजराके सामने साफ देख रहा ह कि हो क्या रहा ह । जो हो रहा ह, वही नही, बल्कि क्या होगा, वह भी उसकी नजरोंम साफ दिखाई दे रहा ह ।

दौलतका कर्ज जानमारू ह । उससे कर्ज लेकर कलवालेका कर्ज चुकाया गया । कुछ ही वर्षोंम इस कर्जके चलते सारी जायदाद दौलतके कब्जेमें चली जायेगी । कलवालेके कर्जमें धानपर बीतता लेकिन दौलतका कर्ज सूद मूल सहित मूँगेके द्वीप-सा दिन दिन बढ़ता रहेगा । कुछ ही वर्षोंम सारे गाँवकी जमीनका मालिक दौलत हो जायगा । रहम चाचाको भी दौलतका मालगुजारी देनी पडेगी ।

अधेरी रातम आसमानकी ओर ताककर उसने ईश्वरको पुकारा अल्लाह नूराहयात ! तुम इसका विचार करो । प्रतिकार करो । गरीबोंको बचाओ ।

यह प्रार्थना उसकी अपने लिए नहीं थी । उसने तय कर लिया था कि वह गाँव छोडकर चला जायगा । अपनी ससुरालकी बुलाहटको वह अब अनसुनी नही करेगा ! जायगा । काम भी करगा, पढ़ेगा भी । मक्तिब पास करके मुख्तारी पढ़ेगा, मुख्तार होकर ही अपने गाँव लौटेगा । उससे पहले नहीं । उसके बाद वह

लोहा लेगा। दौलत, मकनाने बाबू, श्रीहरि घोष—एक-एक दुश्मनके खिलाफ़ जिहाद बोलेगा।

महाग्रामके न्यायरत्न बैठकर सोचा करते।

चण्डीमण्डपमें लालटेन जलती होती, कुम्हार लोग दुर्गाकी प्रतिमा गढ़ते होते और अजय वहाँ बैठा रहता। उतना छोटा सा बच्चा उसकी भी आँखोंमें नींद नहीं! बड़े ध्यानसे वह प्रतिमाका बनना देखा करता। शशिशेखर भी इसी तरहसे देखा करता था विश्वनाथ भी देखता था। अजय भी देख रहा है। टोले-मुहल्लेके बच्चे भीड़ लगाये खड़े होते। सदा इसी तरह भीड़ लगाते हैं। लेकिन यह खड़ा होना वह खड़ा होना नहीं है यानी बचपनमें वे लोग जो मन लिये खड़े हुआ करते थे, यह वह नहीं है।

भरा-पूरा गाँव महाग्राम—धन धान्यसे भरा खुशहाल पंचग्राम—लेकिन न उत्सव, न समारोह। प्राणोंकी आवेगमयी धारा धीरे धीरे छीजती चली जा रही है। सम्पदा गयी, लोगोंका स्वास्थ्य गया वर्णाश्रम समाज-व्यवस्था मिट चली जातिगत धर्म जाता रहा—किसीने खो दिया किसीने छोड़ दिया। आज ही सवेरे कई विधवा स्त्रियाँ आयी थीं। धान कूटकर अपना गुजारा चलाती थीं वे। लेकिन जबसे मिलमें चावलकी मिल हो गयी अब उन्हें इतना कम काम मिलने लगा है कि उससे उनके खाने-कपड़ेकी समस्या भी नहीं हल होती। उन्होंने सिर्फ सुना। सुनकर उसाँस ली, लेकिन तत्काल कोई उपाय नहीं बता सके। अभी भी सोचकर किसी नतीजेपर नहीं आ पाये।

इसपर वे बहुत पहलेसे ही सचेत हैं। कभी कठोर निष्ठाके साथ उन्होंने समाज धर्मको अछूता रखनेकी कोशिश की थी। विदेशी मनोभावको दूर रखनेकी चेष्टा की थी, लेकिन कालके प्रभावसे उनका अपना बेटा ही शत्रु और विद्रोही बना। उसके बाद भी उन्होंने उम्मीद की थी कि समाज-व्यवस्था बिखरती है तो बिखरे, अगर धर्म स्थिर रहे तो फिर एक दिन सब लौट आयेगा। आज तो स्वयं ईश्वर भी मानो खोते जा रहे हैं।

उनका पोता विश्वनाथ समयके धर्मसे नास्तिक हो गया जड़वादी।

विश्वनाथ आ चुका था। दस्तूर सिलसिलेमें उस दिन जो चर्चा हुई उस चर्चामें उसने कहा था कि "मेरी जिन्दगीका रास्ता, मेरा आदर्श, मेरा मत आपसे बिलकुल अलग है। मेरे लिए आपको तकलीफ होगी दादाजी। उससे बेहतर है कि जया और अजयको लेकर "

न्यायरत्नने कहा, "नहीं-नहीं भया, जाओ मत। हमारे मत और पथ अलग हों, तो क्या हम दोनो एक जगह रह भी नही सकेंगे ?"

विश्वनाथने उनके पैरोंकी धूल लेकर कहा, "आपने बचा लिया दादाजी। जया और अजय आपके पास रहें और म "

"और तुम ? तुम क्या ?"

'म ?"—विश्वनाथ हँसा 'मेरा कार्यक्षेत्र दिना दिन जैसा बढ़ता जा रहा है, वैसा ही जटिल होता जा रहा ह दादाजी।"

"तुम यहीं, अपने गाँवमें ही रहकर काम काज करो।"

'मेरा कर्मक्षेत्र सारा देश ही ह। आखिर मैं आप-जैसे महामहोपाध्यायका पोता हूँ, मेरा कर्मक्षेत्र तो विराट होगा ही। यहाँका काम देबू करेगा, धीरे धीरे उसके साथ और भी लोग आयेंगे—आप देखिएगा। मनुष्य दबकर मर सकता ह मगर उसकी मनुष्यता पीढ़ियोंमें नहीं मरती। उसकी अ तरात्मा उठना चाहती है। उठकर ही रहेगी। आपकी समाज-व्यवस्थाने करोड़ों करोड़ लोगोंको मार डाला है—इसीलिए उन लोगोंके एक साथ सिर उठानेमें वह व्यवस्था चौपीर हो गयी ह। वह एक दिन टूटकर बिखरेगी। हमारे पुरखोंने समाजका मगल ही सोचना चाहा था, म इस बातपर स देह नहीं करता। लेकिन धीरे धीरे उसके अ दर बहुतेरी भूलें घुस गयी ह। उसी भूलका प्रायश्चित्त कर लेनेके लिए हम लोग इस समाजको तोड़ेंगे धर्मको बदलेंगे।"

पिछले दिन होते तो न्यायरत्न ज्वालामुखीकी तरह आग उगलते। लेकिन शशिकी मृत्युके बाद्स वे निरासक्त साता और द्रष्टा रह गये ह। लम्बा नि श्वास छोड़कर उन्होंने एक फीकी हँसी हँसी।

विश्वनाथ कह गया—'एक बहुत ही जोरदार राजनतिक आदोलन आ रहा ह दादाजी। मेरा कलकत्तेसे बाहर रहना नहीं चल सकता। जयासे आप कुछ भी मत कहिएगा। और आप अपने देवताकी सेवाका एक पक्का ब दोबस्त करें। टोलका किसी लड़केको देवता या सम्पत्ति लिख पढ़ दें।'

न्यायरत्नने उसकी ओर देखकर पूछा म अगर यह भार जयाको सौंपूँ तो इसमें कोई आपत्ति होगी तुम्हें ?"

विश्वनाथने जरा सोचकर कहा "दे सकते ह आप। क्योंकि वह मेरे धर्म-को कभी नहीं अपना सकेगी।'

अंधकार दिगन्तकी ओर देखते हुए न्यायरत्न यही सोच रहे थे और

त्रिजलीकी कौंधमें आभास देख रहे थे। जाने किस दूर-दूरान्तरकी हवासे मेघ जमकर बरसने लगे। वहाँ बिजली कौंध रही थी। उसीका आभास पल पल मिल रहा था। बादलकी गरज नहीं सुनाई पड रहा था। इतनी दूरी तय करके थानेम शब्द तरग क्रमश क्षीण होकर निःशब्दतामें खो जाती थी। इसमें अस्वाभाविकता कुछ नही थी। भादो होते हुए भी समय वर्षाका था। कई रोज पहले इधर बडी वर्षा हुई। बादलोंसे घिरे आकाशम मेघोंकी गरज और बिजली की चमकका विराम नही था। आज फिर बादल दिखाई दिये। मेघोंके टुकडोंकी आवा-जाई जारी थी। इस समय दिगन्तमें बादलोंका आभास रहता ही ह और सदा ही इस समय दूरान्तरके मेघोंकी विद्युत छटा रातके अँधेरेमें पल-पल आभासित हुआ करती ह। यह खेल न्यायरत्न आजीवन देखते आये हैं। लेकिन उन्होंने आज ऋतु रूपके इस स्वाभाविक विकासमें सहसा कुछ अस्वाभाविक, कुछ असाधारण-सा देखा। उन्हें खुद ऐसा ही लगा।

गहरे शास्त्रज्ञ और निष्ठावान् हिन्दू। वास्तविक जगतके वर्तमान और अतीतको लेखा लगाकर उसीके अकफलको ध्रुव भविष्य और अखण्ड सत्य नही मान सकते। उससे भी कुछ अधिक, उसके सिवा भी कुछके अस्तित्वपर उन्हें अगाध विश्वास था, बीच बीचमें उसे मानो व प्रत्यक्ष करते—सारी इन्द्रियों, सारे मनसे अनुभव तक करते। वह आकस्मिकताकी नाइ अप्रत्याशित भावसे जटिल रहस्यके परदेम छिपकर आता और 'वास्तववाद'के जोड घटाव-गुणा भागमें अकफलको उलट-पलट कर जाता।

विश्वनाथ कहता— हिसाब लगाकर हम सूरजके आकारको बता सकते हैं उसका वजन बता सकते ह।"

'कहा जा सकता हो शायद। ज्योतिषी लोग हिसाबसे ग्रहोंका सस्थान बताते हैं। यह पुरानी बात ह। नये सिरेसे सूरज और दूसरे ग्रहोंकी लम्बाई-चौडाई तुम लोगोंने बतायी हैं। लेकिन यह आकडा ही क्या सूरजका आकार और वजन ह? करोडो करोड मन—।' न्यायरत्न हँसे थे। कहा था—' जो आदमी दो मनका बोझा ढो सकता ह, उसके माथेपर चार मन लाद देनेसे उसकी गरदन टूट जाती ह भैया! लिहाजा दो दूना चार मनका हिसाब बताने पर भी उसे इसकी जानकारी नहीं होती कि चार मन कितना भारी होता हैं। इसे तो अनुभूतिसे ही प्रत्यक्ष करना पडता ह। जिसे अतीन्द्रियकी अनुभूति नहीं ह निर्मूल होनेपर भी सवनत्वका आँकडा उसके लिए बेकार हैं। जिसे वह अनुभूति हैं, वह समझ सकता ह कि आजका आँकडा कल बदल जाता ह। सूरज छीजता हैं बढता ह। अकके अतीतको इस इन्द्रियातीतकी अनुभूतिस

प्रत्यक्ष करना पड़ता है।"

विश्वनाथने कोई उत्तर नहीं दिया।

विश्वनाथने समझा, निष्ठावान हिन्दू ब्राह्मणका संस्कार होनेके कारण ही न्यायरत्न ऐसी बात कह रहे हैं। उनके उस संस्कारको तितर बितर कर देने जैसा तर्क भी उसके पास था, लेकिन स्नेहशील बूढ़े आदमीको जो ज्यादा दुखानेकी उसे इच्छा नहीं हुई। वह चुप ही रहा। सिर्फ हल्की सी मुसकराहट उसके चेहरेपर खेल गयी थी।

न्यायरत्नने भी इस आलोचनाको और नहीं बढ़ाया। विश्वनाथ स्थिर था—दृढ़प्रतिज्ञ। अब वे सिर्फ द्रष्टा रह गये। अँधेरी रातमें बैठे न्यायरत्न सिर्फ यही सोचते। सोचते कि पता नहीं अजय कैसा होगा!

कोई उथल पुथल होनेवाली है न्यायरत्न बीच-बीचमें इसका साफ आभास पाया करते। यह नये कुरुक्षेत्रकी भूमिका है। पृथ्वी मानो नयी गीताकी वाणीके लिए उन्मुख हो रही है।

फिर भी उन्हें विश्वनाथके लिए पीड़ा महसूस होती। वह इस उथल-पुथल में कूद पड़नेके लिए योद्धाकी तरह तैयार हो रहा है।

जयाका चेहरा, अजयका चेहरा याद करके उनकी आँखोंके कोनेमें आँसूकी बूँदें आ गयीं। दूसरे ही क्षण आँखें पोछकर वे हँसे।

संसारमें मायाका प्रभाव धन्य है। मन ही मन उन्होंने महामायाको प्रणाम किया।

पन्द्रह

एक जना और भी जागा करती। वह थी पद्म। अँधेरी रातमें घरके अन्दरका अँधेरा और भी गाढ़ा हो उठता। पद्म अँधेरेमें आँखें पसारे जगी रहती। बिखरी बिखरी चिन्ताएँ—सारीकी सारी वेदनाके एक एकरस सुरमें गुथी हुई!

उफ कैसा अँधेरा! हाथको हाथ नहीं सूझता!

गाँवके लोग नींदमें बेखबर। कहीं शब्द नहीं कोई आहट नहीं। केवल मेढककी बोली। जैसे हजारों मेढक एक ही साथ बोल रहे हों। दो बड़े मेढक

होड लगाकर एक साथ ही चीख रहे थे। यह बोला तो वह चुप। वह चुप कि यह बोला। बात कर रहा हो गोया। एक मद, दूसरी उसकी स्त्री। मेंढक पानीमें चला खुशी खुशी पानीमें तरता हुआ खुराककी खोजमें—तेजीसे, तीर-के समान। मेंढकी बच्चोंको लिये पीछे रह गयी है नन्हें कोमल पैरोंसे इस तेजीसे पानी काटकर जानेकी क्षमता उनमें नहीं है। मेंढकी उन्हें छोडकर जा नहीं सकती। वह कह रही है—

मत जा रे मत जा रे बेंगा छोड हमें यों पीछे
अतल में अथाह में केवल अपनी आँखें मीचे
बच्चा कच्चा लेकर।

बेंगाने गम्भीर गले की डाट सुनायी—

मर जा मर जा, कसी आफत क्या पुकारती पीछे?
बच्चे लाकर किया कृतारथ या ढकेल कर नीचे
शामत लायी ब्याह कर।

मद ऐसे ही होते हैं। गुस्सेमें कितना प्यार! उसके बाद पलटकर भी नहीं देखता। अनिरुद्ध गया तो कहकर भी नहीं गया। कौंएसे सन्देशा तक नहीं भेजा। एक पोस्टकार्ड। कीमत भी क्या उसकी! अचानक खयाल आया, वह जिन्दा भी है या कि मर गया? नहीं, वह जरूर मर गया है। जिन्दा होता तो कभी न-कभी खबर लेता। ये बेंगा ऐसे ही मरा करते हैं। सोल मछलीके बच्चोंके लोभसे, केकडेके बच्चोंके लालचसे दौड पडता है। साँप ताक लगाये बैठा रहता है धर दबाता है। बरसेमें भी वह हँसी। उस वक्त बेंगाका रोना कैसा!

"अरी ओ बेंगी, मुझे यमने पकड लिया।"

पद्म अँधेरेमें हँसते-हँसते लोटपोट हो गया।

बाहर बिजली चमक उठी। उसकी छटा खिडकी दरवाजेकी फाँकोंमें, दीवारोंकी फाँकमें छप्परके छेदोंमें घरके अन्दर छिटक गयी। ओह, कैसी छटा!

दूसरे ही क्षण अन्दरका अँधेरा दूना हो गया। पद्मने उस अँधेरेमें चारों ओर देखा। कुछ नजर नहीं आ रहा था, लेकिन बिजलीकी एक ही कौंधमें सब दिख गया। शिवकालीपुरके लुहारका घर चलनी हो गया है छप्परमें असंख्य छेद अब ढहकर माटीमें मिल जायेगा। लुहार मर गया, उसका घर ढह गया, अब रह गयी केवल उसकी स्त्री। लेकिन लुहार मर गया, यही बात ठीक-ठीक कौन कह सकता है?

बेंगा क्या सभी मरता है? सोन मछलीके बच्चोंको खाते-खाते और आगे निकल जाता है, आखिर नदीमें जा पहुँचता है। वहां राहू-बगलाके अण्डे मिलते हैं, मछलीके जोरोंका दगल। नदीके किनारेकी बेंगीसे भेंट हो जाती है और फिर वह वहीं जम जाता है। और ऐसा भी होता है कि तमाम रात चरकर बेंगा सबेरे लौटता है। लौटकर देखा कि बेंगी गायब है। उसे गाँवका गेहुअन चट कर गया है। बच्चोंमें-से भी बहुतोंको खा गया है, बहुत-से किलबिलाकर इधर-उधर चले गये हैं। कितनी बेंगी तो बच्चोंको छोड़कर भाग जाती है। पतिंगाकी माँ! वह पतिंगा! फिर माता दबूका ही देख लो न। मितनी चल बसी। मीतान किसीकी तरफ नजर उठाकर भला देखा भी!

रांगा दीदीकी याद आ गयी। कितना हँसी मजाक करती थी वह! कितना क्या कहती। उस गाली देती। कहती मर जा, मर जा। अच्छी तरहसे सेवा-जतन नहीं कर सकती है।

एक दिन पन्मने हँसकर कहा था—'मुझसे नहीं बनेगा। तुम बल्कि एक दिन कोशिश कर देखो दीदी!

अरे! मेरी उमर होती—' रांगा दीदीने एक बार पिच करके कहा, 'तो देखना दवा मेरे पैरों लोटता रहता। जरा इस बुढ़ापेमें मेरे रंगकी बहार तो देख!'' वही एक उसकी हमदर्द थी। तुरत दुर्गाका खयाल हो आया। एक हमदर्द वह है! दुर्गा कहती है— गुरुजी पत्थर हैं।'' पत्थर हँसता नहीं, पत्थर रोता नहीं, पत्थर बोलता नहीं, पत्थर चलता नहीं। पत्थर उसने बहुत देखा। मौलसिरीके नीचे देवीका भी पत्थर देखा, शिवको देखा, कालीको देखा। उनके चरणोंपर बहुत माथा भी कूटा किया। हाथमें गलेमें अभी भी तावीजोंका बोझा पड़ा ही हुआ है।

पण्डित भी पत्थर हैं। अच्छा ही हुआ—लागोंने पत्थरपर कलककी कालिख पोत दी! खूब हुआ। खुशी हुई।

बाहर डैने फड़फड़ानेकी आवाज हुई। कौआ बोल रहा था। सवेरा हो गया क्या? अहा तब तो जान बच जाये। खिड़कीके पासकी खिड़कीको खोलकर वह अवाक् हो गयी। आह हा कैसी रात! कब चाँद निकल आया है। हल्की बदलीकी परतोंमें दब चाँदनी वह रोशनी—नीलाम्बरी पहने गोरी बहू-सी।

दरवाजा खोलकर वह ओसारेपर निकली।

चारों ओर सन्नाटा। ऊपरसे ओसारेमें अजीब लग रहा था। बेंगनाकी

माटी भीगकर नम हो गयी थी—फिर भी चादी सी चादनीमें झकमक कर रही थी। कहीं कोई कचरा, कहीं कोई पावका निशान नहीं। दक्खिनवारी ओसारेपर कहीं कोई चीज नहीं—यों ही पडा है। ओसारा कितना बडा लग रहा है! गिरा घर कूडा-कचरासे भरा रहता है—मरे आदमी जसा। छप्परपर फूस नहीं रहती, दीवारें दह जाती हैं, खिडकी-दरवाजा टूट गिरता है—जैसे लाशके सिरपर बाल नहीं रहता, मास नहीं रहता आखोंके गड्ढे, मुँह हा किये रहता है! और यह घर झकमक कर रहा है। छप्परपर अभी भी फूस है, खिडकी-दरवाजे पुराने हो गये हैं फिर भी ठीक हैं। हैं नहीं सिर्फ तो कहीं आदमीकी निशानी। न तो परके निशान हैं, न कोई चीज-वस्तु। कुरता, जूता, छडी, हुक्का, चिलम, चिलमकी राख—सब उसी दखिनवारी ओसारेपर रहता था। लोगोंके अँगनामें बच्चोंका घरौंदा होता है जबतक यतीन रहा, पतिंगा और गोबरा था—उस समय अँगनामें कैसी-कैसी अजीबोगरीब चीजें पडी रहती थीं! अब कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं! लगता है, यह घर भूखकी ज्वालासे चुपचाप मर रहा है—जैसे खानेके लिए हा किये हुए है—लोगोंके कम कोलाहलसे लोगोंके चीज-वस्तुसे उसका पेट भर दो। अकेले पदमको चबा-चूसकर तृप्तिकी बात तो दूर, वह जिन्दा भी नहीं रह पा रहा है। आगनके एक ओर जाने किसके पाव-की छाप पडी है! दुर्गाके पावकी होगी! शामको वह आयी थी। और दिन तो वह यहीं सोया करती है। आज नहीं आयी।

शायद ! घिनसे पदमका बदन री री कर उठा। शायद नकना गयी हो। या कि जवरान! कल पूछनेसे ही कह देगी। शर्म या झिझक उसे है ही नहीं। हँस हँसकर बिस्तारसे सब बता देगी। वह दम्भसे ही कहती है कि 'बहन, पेटके लिए बांदीगिरी भी नहीं कर सकती, भीख भी नहीं माँग सकती।'

यह भीखवाली बात उसे गडी। भीखकी याद आते ही उसे लगती छि। वह भीखके दाने खाती है। भीखके भातके सिवा और क्या! गुरुजीसे यह सहायता लेनेका उसे हक क्या है? उसे अपनी विस्मृतपर एक विद भरी कुढन हुई। और वह कुढन उसी समय आसमानपर फलती हुई बदलीकी तरह अनिरुद्धपर जा पडी, उसके बाद पडी श्रीहरिपर फिर जा पडी देबू घोषपर। वही उससे ऐसा क्या करती है? क्या?

दुर्गा कुछ झूठ नहीं कहती। कहती है, 'गुरुजीको देखनेसे माया होती है। अहा, बिलू दीदीका पति! नहीं तो उसपर माया कैसी! वह भी कोई मद है? लुहार-बहू, उसकी क्या है बात?' उसके बाद पिच् करके कहती—'मुझे

उसका अफसोस नही ह बहन। बाम्हन, कायथ, सदगाप जमीदार, परसीडेण्ट, हाकिम, दरागा जाने कितने।' वह खिलखिलाकर हँसी। बोली, 'मैं हूँ मोचिन। मेरी जातिके लोगोको कोई पाँव छूकर प्रणाम नही करने देते, घरम नही जाने देते। और इधर मेरे ही पाँवोपर लोटते ह सब। बगलमें बठकर दुलारते ह मानो स्वर्गमें पहुँचा दते ह—तुमसे कहूँ क्या बहन।'—आगे वह बाल ही नही पाती, हसते हँसते लोट पोट हो जाती।

दुर्गा शायद आज भी अभिसारमें निकली ह। शायद हो कि उसके चरणों पर कोई जाना माना, सम्पन्न आदमी लोट रहा हो। शायद वकना गयी हो। वहाके बगीचेके कितने ही अनुभव सुनाये ह उसने। बगीचेमें चादनीमें दुर्गाका हाथ पकडकर टहलनेका शौक होता ह बाबुओंको। गरमियोमें मयूराक्षीमें नहाने जाते ह। आज भी कदाचित वैसी ही कोई नयी अभिलाषा लिये लौटे। कल ही वह नयी खूबसूरत साडीमें दीखेगी—कलाईमें नयी चूडियाँ होगी। यह सन्देह सत्य नही भी हो सकता ह। क्योंकि दुर्गा अब वह दुर्गा नहीं रही। आजकल वह अभिसारमें विशेष नहीं जाती। कहती है— उसस अब ऊब आ गयी है बहन। मगर करूँ क्या पेटकी मार बडी मार होती ह। और फिर मेरे ना कहने से ही क्या लोग जान छोडते है? तुमसे कहूँ क्या लुहार बहू भले घरका जवान, शामसे ही घरके पिछवाडे आकर खडा रहता है। खरोंचेपर ढेला मारकर अपनी मौजूदगी बताता ह। परोंखा खोलकर देखती हूँ कि साफ सुथरे कपडे पहने पेड तले अँधेरेमें खडा ह। आधी रातम भी कोठेकी खिडकीपर चढ जाता ह, कभी कभी तो सींखचा तोडकर डकतकी तरह अन्दर भी आ पहुँचता ह।

बाप रे! पदम सिहर उठी। उसका सारा शरीर थर थर करके काप उठा। इक जानवर! पशु! दूसरे ही क्षण उसके होठोपर हसी दौड गयी। उसके सिरहाने दाव रखा हुआ ह। निडर हो वह रेलिंगपर भार दकर मेघ मलीन चादनीकी ओर ताकने लगा। भादोकी इस उमसमें भला खिडकी दरवाजा बन्द करके अन्दर सोया जा सकता ह? मन्द मीठी हवा बडी भली लगती ह। तन जुडा जाता ह। चादपर होकर स्याह-सफेद हल्की बदलियाँ निकलती जा रही थीं। कभी प्रकाश कभी अँधेरा।

वह चौंक उठी। कौन? दखिनवारी बाखारके उस कोने वह बडा साफ धुधला सा खडा ह चोर-सा? कौन ह वह? पदमका कलेजा धक्क उठा। वह चुपकेसे अन्दर गयी। दाव लिये दरवाजेपर आकर खडी हो गयी। वह आदमी थिर खडा था। छिरू पाल? वह होता तो क्या ऐसा स्थिर खडा रहता? लम्बा सा आदमी कौन? गुरुजी? हाँ गुरुजी-सरीखा ही लगता ह। उसके दिलकी

धड़कनकी गति बदल गयी। धड़कन नहीं गयी, लेकिन धड़कनमें जो भय विह्वलता थी, वह जाती रही। पत्थर गल गया। लाख हो, हो तुम बँगाकी जाति! यहाँ, बेचारा आया तो है पर सकुचाया हो खड़ा है।

पदम धीरे धीरे उतरी। गुरुजी वैसा ही स्थिर खड़ा था। पदम आगे बढ़ी। दबे गलेसे आवाज दी—"गुरुजी ?

नहीं। गुरुजी नहीं! ओसारेके उस कोने छप्परपर एक बड़ा-सा छेद हो गया है। उसी छेदसे चाँदकी रोशनी पड़ रही थी, लम्बी सी, ठीक जैसे कोनेमें कोई लम्बा आदमी खड़ा हो!

दरवाजेपर धक्का कौन दे रहा है? दरवाजा हरेल रहा है! हा! इस धक्केमें खासा इशारा है। पदमने आकर दरवाजेकी फाकसे झाँका। उसके बाद आवाज दी—"कौन? कौन? कौन?"

देवू बिस्तरपर लेटा जग रहा था। सोच रहा था। सामनेकी खुली खिड़कीमें अचानक ऐसा लगा उसके घरके पासवाले रास्तेके उस पार हरसिंगार के नीचे सादा-सफेद सा कोई शायद खड़ा है। कौन? देवू उठ बैठा चौंका कोई स्त्री! आसमानमें एक जगह मेघ जम आये थे। पानी बरसने लगा था। पत्तों पर टप-टपकी आवाज हो रही थी। इतनी रात गये पानी-बदलीमें आकर कौन खड़ी है?

दुर्गा? एक उसीका ठिकाना नहीं वह सब-कुछ कर सकती है। पर सच ही क्या वही है? वह सब कर सकती है, फिर भी देवूको इस बातपर विश्वास नहीं हो पाया कि वह उसके झरोखेके पास अकारण ही या आकर खड़ी होगी। आवाज दी—'दुर्गा?"

मूरतने जवाब नहीं दिया। हिली तक नहीं।

कौन है? दुर्गा होती तो क्या जवाब नहीं देती? तो? तो?

एकाएक उसके जीमें आया—तो क्या यह मेरी गुजरी हुई बिलू है? हरसिंगार-तले झर हुए फूलोंमें खड़ी-खड़ी अपलक आँखों उसे देखने आयी है। हो सकता है, वह रोज ही इस तरह देख जाया करती हो। दुनियाकी फ़िक्रमें अनमना देवू शायद उसे देख नहीं पाता हो! वह रोती है और रो रोकर लौट जाती है। देवूको कोई सन्देह नहीं रह गया। उसने पुकारा— बिलू? बिलू?"

वह मूरत जरा चंचल-सी हुई मानो थोड़ा—एक पलके लिए।

देवूका शरीर रोमांचित हो उठा कलेजा एक अनिर्वचनीय आवेगसे भर

उठा। पार्थिव और अपार्थिव—दोनों ही प्रकारकी कामनाके अघोर आनन्दसे वह दरवाजा खोलकर आसारेमें रास्तेपर उतरा—रास्तेको पार करके हरसिंगार तले मूर्तिके पास जाकर खड़ा हुआ और व्यग्रतासे हाथ बढ़ाकर उस मूरतके हाथको पकड़ लिया। उसका भ्रम तुरत टूट गया। हाड़ मासका स्थूल शरीर—स्निग्ध और गरम स्पर्श—स्पर्शमें बिजलीका प्रवाह! कलाईमें नब्ज धड़क रही है—कौन है यह? उसने हैरान होकर पूछा "कौन?"

आसमानमें काला बादल जम आया था। आसमान ढँक गया था। चाँदनी लगभग डूब गयी थी। चारों ओर अँधेरा। देबूने फिर पूछा "कौन?" आभास इंगितसे मनकी चेतनासे उसे पहचानते हुए भी पूछा "कौन?"

पदमने अपना घूँघट उतार दिया। पूरी नजरसे देबूको देखकर उसने कहा, "मैं हूँ।"

"लुहार-बहू?"

"हाँ। तुम्हारी मितनी।"—पदम हँसी।

देबूके अन्दर एक कपकँपी दौड़ गयी। वह कुछ बोल नहीं सका। दबे गलेसे फुसफुसाकर पदमने कहा, "मैं आयी हूँ गुरुजी!"

देबू एकटक उसकी ओर देखता रह गया।

पदमके स्वरमें कोई संकोच नहीं था—उसके हृदयमें कामनाका प्रबल आवेग स्नायुग्राम आकुल उत्तेजना नस-नसमें दौड़ती रक्तधारामें बढ़ती हुई गरमी! उसने कहा "मैं आ गयी मितवा! उस घरमें मुझसे और रहा नहीं गया। मैं अब तुम्हारे यहाँ रहूँगी! दोनों मिलकर नया घर बसायेंगे! तुम्हारा मुन्ना फिरसे मेरी गोदीमें लौट आयगा। लोग जो चाहें सो कहें। न होगा तो हम दोनों चले जायेंगे दूर कहीं।"

और वह हाँफ उठी।

देबू वहीं ही काठका मारा-सा खड़ा रह गया।

कुछ क्षण रुककर देबूने जिनामुवी नाई कहा मितवा!

उसने एक लम्बा निःश्वास फेंका। सचेतन होनेकी कोशिश की। उसके बाद कहा, "जोरोंकी बारिश आ रही है। घर जाओ लुहार-बहू।"

वह वहाँ रुका नहीं। पलटा। घरके अन्दर गया। दरवाजा बन्द किया और कुण्डीको लगानेके लिए उठाया—

उसी हालतमें ठक खड़ा रह गया। उसे खयाल भी नहीं रहा कि कुण्डी पर हाथ रखे वह इस तरह कबतक खड़ा रहा। खयाल तब आया, जब बिजली की एक तेज-तीखी कौंधस—नीलाभ चमकसे उसकी आँखें चौंधिया गयीं। उसी

क्षण गाज गरजनसे चारो तरफ जैसे हिल उठा। बरसती धारासे पत्तोपर आवाज होने लगी। सब हो जोरोकी बारिश आ गयी। देवू चौंककर फिर किवाड खोलकर बाहर निकला। ओसारेपर खडे होकर उधरके हरसिंगारकी तरफ देखा—कुछ नजर नही आया। यहाँतक कि वह गाछ भी नही दिखाई दिया। घनी बारिशमें घने काले बादलोंकी छायामे सब-कुछ डूब गया था। मितनी जरूर चली गयी होगी। अब वह खडी होगी भला या कि खडी रह सकती है! फिर भी वह ओसारेसे उतरकर हरसिंगारकी तरफ लपका। कोई नही। उस बारिशमें ही वह कुछ देर खडा रहा। एक बार दो एक कदम बढा भी। लेकिन तुरत लौट पडा। घर लौटकर एक लम्बी उसास ली। गीले कपडे बदलकर चुपचाप बैठ गया। बदनसीब औरत! इसका कोई उपाय करना जरूरी है। मगर कौन-सा उपाय? उसे याद आयी वह कविता, जो सोना उस दिन पढ रही थी—स्वामीलाभ। तुलसीदासने जो मन्त्र उस विधवाको दिया था, वह मन्त्र वह कहाँ पायेगा?

बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही थी।

सुबह काफी दरसे नीद टूटी। बडी रात तक उसे नीद नही आयी। शायद रातके अन्तिम पहर तक वह जग ही रहा था। वर्षा अभी भी थमी नही थी। आसमानमें बादल छाये थे। हवा भी मन्थर बहने लगी थी। लगता है एक बादल उतरा। देवू उस हरसिंगारकी ओर ताकता हुआ खडा रहा। रातकी बातें मनमें घुमडने लगी। लम्बा निश्वास छोडकर उसने उधरसे नजर फेर ली। अभागिन! दुनियामें कुछ बदनसीब औरतें ऐसी होती है, जिनकी दुःख-दुर्गतिका कोई प्रतिकार नही। जो उसका प्रतिकार करना चाहते है उसके दुर्भाग्यकी आँचमें वे भी झुलस जाते है। अनिरुद्ध घरसे चल दिया, उसकी जगह जायदाद भी गयी—यह सब इस औरतके दुर्भाग्यसे ही हुआ। उसने उसे सहारा दिया सो बदनसीबीकी लपटें उसकी ओर भी लपकी चली आ रही है। श्रीहरि उसे पचायती सजाकी आगके घेरेमें घेरना चाह रहा है। परसो पचायत बैठेगी। चारो ओर खबर भेजी गयी है। घोषने तयारियाँ खूब की है। उसने रांगा दीदी का एक वारिस खडा किया है। श्राद्ध वही करगा। उसी मौकेपर पचायत बैठेगी। रांगा दीदीका श्राद्ध परसो है। और इस औरतने उसे जलाकर खाक करनेके लिए बारूदकी रगीन मशाल-जैसी पापकी आग जलायी है। देवूने उसे अपने आदर्श, अपने सस्कारके अनुसार पवित्रता और सयमसे अनुप्राणित करनेका

संकल्प किया। अब वह लुहार-बहूके घर हरगिज नहीं जायेगा। छाता खोलकर वह बाहरकी तरफ चल पड़ा।

रात जोरोंकी बारिश हो चुकी थी। गांवके नालोंसे खल-खल करता हुआ पानी बह रहा था। गड्ढे पोखरे पहलेसे ही भरे हुए थे। तिसपर रात इतनी बारिश हुई। सब छलक पड़े। जिन नालोंसे पोखरोंमें पानी आता था, उनसे पानी बाहर निकलने लगा। जगन अपनी खिड़की गड़हियाके पास खड़ा था। गड़हियाका पानी बह रहा था सो वह घरके पश्चिमसे नालेके मुँहपर बाँसकी चचरी गड़वा रहा था। आजकल जगन भी देबूसे विशेष बोलता चालता नहीं है। वह इस पंचायतमें नहीं है। पंचायतमें उसके रहनेकी बात भी नहीं। डॉक्टर जातिका कायस्थ है—नवशाखा समाजकी पंचायतसे उसका क्या नाता? फिर भी गाँवके समाजका है, गाँववासीकी हैसियतसे उसकी राय, उसके सहयोगका एक महत्व है। और फिर जब वह डॉक्टर है पुराने सम्मानित परिवारका है तो वह महत्त्व कुछ विशेष ही है। लेकिन डॉक्टर उस पंचायतमें नहीं है जिसे श्रीहरिने बुलाया है। डॉक्टरने लुहार-बहूवाली बातको सच मान लिया है। निहायत नजर मिल गयी इसलिए डॉक्टरने सूखे भावसे कहा खेत चले? देबूने हँसकर कहा हाँ। चचरी डलवा रहे हो?'

'हाँ। जीरा डाला है। कुछ बड़ी मछलियाँ भी है।'—उसके बाद आसमानकी ओर देखकर बोला जो ढंग है आसमानका, हवा जिस तरहसे उड़ती पुड़ती बह रही है—लगता है फिर पानी आयेगा। अब पानी आया तो चचरीसे भी कुछ नहीं होनेका।''

देबूने भी आसमानकी तरफ देखा— हूँऽ।'

लगभग सभी गृहस्थ जिन्हें पोखर गड़हिया है, नालेके मुँहपर चचरी की रोक डाल रहे थे। ग्रामीण जीवनमें खेत धान गेहूं आलू, ईख, शाक-सब्जी गाय-गोरूकी तरह पोखरकी मछली भी जरूरी चीज है। लोग-बाग बारहो महीने भात तो है ही, अतिथि-कुटुम्बके आये गये उसीसे मान बचता है। पेट का बच्चा घरकी गाय और पोखरकी मछली—गृहस्थीके सौभाग्यका लक्षण है।

सदगोप-टोलेके बाद बाउरी डोम और मोची टोला। इनके टोले गाँवके छोरपर हैं और कुछ नीचे बसे हैं। गाँवका सारा पानी उसी टोलेसे निकलता है। टोलेके ठीक बीचो-बीच एक बालू भरा रास्ता या नाला निकल गया है—उसी रास्ते बहकर पानी पंचग्रामकी बहारमें गिरता है। टोला पानीसे लग भग भर गया था। कहीं घुटन भर कहीं घुट्ठी भर पानी। टोलेमें मर्द सूरत कोई नहीं सब खेतोंमें जा चुके थे। इस जोरकी वर्षासे धानका तो नुकसान

होगा ही—पानीके तीखे बहावसे मेड़ें टूटेंगी, खेतोंमें बालू भर जायेगा। उन जगहोंमें सब मिट्टी डालने गये थे। स्त्रियाँ और बच्चे हाथ-जाल और टोकरियोंसे मछली मारनेमें मशगूल। बच्चोंको तो त्योहार-सा हो गया है। कोई तैर रहा है तो कोई कूद रहा है। कुछ बड़ी उमरके लड़के ताड़के धड़का एक टुकड़ा कहींसे उठाकर नौका विहार कर रहे थे। कई जनोंके घरकी दीवार भी धँस गयी थी।

देबूका मन उसे दुर्गाके लिए इधर खींच लाया था। उसका खयाल था—दुर्गाके जरिये वह लुहार-बहूकी खोज-खबर लेगा। दुर्गासे खोलकर कुछ बतानेकी ख्वाहिश नहीं थी। इशारेसे कुछ बातें जानने और जनानेकी थी। तमाम रात सोचकर उसने यही तय किया था कि रातकी घटनाका कोई जिक्र न करके वह लुहार-बहूको मन्त्र दिलानेका प्रस्ताव करेगा। कहेगा—'देखो, मनुष्यके भाग्य फलको मानना ही पड़ता है। आदमीके बहू-बेटा जाता है, औरतके पति-पुत्र जाता है—रह जाता है केवल धर्म। धर्मको अगर मनुष्य न छोड़े तो धर्म उसे नहीं छोड़ता। जो धर्मका दामन थामे रहता है, वह दुःखके होते हुए भी सुख चाहे नहीं, शान्ति अवश्य पाता है। उस लोकमें गति मिलती है, दूसरे जन्ममें भाग्य प्रसन्न होता है। तुम अब दीक्षा लो। मैं तुम्हारे गुरुको खबर भेजता हूँ। दीक्षा लो। मन्त्रका जाप करो, नेम करो, व्रत करो। इससे मनको शान्ति मिलेगी।'

दुर्गाके घरपर पहुँचकर उसने आवाज दी—'दुर्गा!'

दुर्गाकी माँ एक छोटा-सा कपड़ा पहने हुई थी—उससे सिरपर घूँघट नहीं डाला जा सकता। उसने जल्दी-जल्दी एक फटा अँगोछा माथेपर रखकर कहा, 'वह तो तड़के ही उठकर निकल गयी है भया। कल रात उसका सिर दुख रहा था। रात उस लुहारिनके यहाँ सोने नहीं गयी। जगकर वसे ही भाव-भावझालोके ही यहाँ गयी है।

पातूकी वह बिल्लैया-सी बीवी अन्दरसे पानी उपछ रही थी। फूटे छप्परसे पानी गिरते रहनेसे अन्दर गड्ढा हो गया था।

लौटते वक्त वह अनिरुद्धके घरकी तरफसे बस्तीमें घुसा। बस्तीका यह हिस्सा उधरसे कुछ ऊँचा है। इस तरफ नमी पानी नहीं जमता। लेकिन आज इधर ही पानी जम गया था। घुट्टी डूब जाती थी। उधर राँगा दीदीके घरकी दीवार भीतकी तरफ भीगी हुई थी। कारण ठीक-ठीक उसकी समझमें नहीं आया। वह लुहारके घरके सामने खड़ा होकर पुकारने लगा—"दुर्गा? अरी दुर्गा है?'

किसीने जवाब नही दिया। फिर आवाज़ दी। इसपर भी जवाब न मिला तो वह अन्दर गया। अन्दर भी कही किसीकी आहट नही थी। ऊपरके कमरेका दरवाज़ा खुला पडा था। दखिनवारी घरके एक कोने छप्परके छेदमे लगातार पानी पडते रहनेसे दीवारका एक कोना धँस गया था। कादों माटीसे एकाकार हो रहा था वह। उसने फिर एक बार पुकारा। इस बार कहा, "मितनी हो? मितनी?'

मितनी कहकर ही पुकारा उसने, क्योकि उस अभागिनकी बदनसीबीको भी तो सोचे बिना नही रहा जाता। वह इस दशकी बाल विधवा जैसी अभागिन है। संयम बडी चीज है, यही सबसे उत्तम उपाय है—इसमें उसे सन्देह नही—लेकिन इन सबकी वचना भी तो बडी दर्दनाक है। देबू जिस युगमें पैदा हुआ है और उसने जो शिक्षा-संस्कार पाया है, उससे महत्त्वके लिहाज़से उसे ये दोनो ही दिशाएँ समान लगती हैं। फिलहाल उसने शरच्चन्द्रकी किताबें पढी हैं। पढनेसे ऐसी अभागिन औरतोंके प्रति उसकी दृष्टि बदल गयी है। कल रात वह संयमकी ओर ही झुक पडा था। उस समय उसने पुराने विधानके अनुसार कठोर विचारककी तरह उसका विचार करना चाहा था। आज अभी वह करुणाकी ओर झुक गया। और उसने फिर आवाज़ दी—'मितनी हो? मितनी?'

इसपर भी जवाब नही। हो सकता है, दुर्गाके साथ वह घाटकी तरफ गयी हो। लौट आया। रास्तेका पानी क्रमशः बढ रहा था। जिनके घर एन रास्तेके किनारे पडते थे, उनमें से कुछ लोग अपने अपने ओसारेपर मायूस-से बठे थे। पास ही कही हरेन घोषाल अगरजीमे चिल्लाता चला आ रहा था। सबसे पहले हरीश और भवेश चाचासे भेंट हुई। देबूने कहा, "आपके टोलेमें इतना पानी! चाचा!

वे कुछ कहे इसके पहले ही हरेनने पुकारा—'कम हियर, सी, सी। सी विथ योर ओन आइज़। द ज़मीदार—श्रीहरि घोष एस्क्वायर—मेम्बर ऑव द यूनियन बोर्ड—हज़ डन् इट।"

देबू आगे बढा। देखा, नालेका पानी श्रीहरिके पोखरेमें न घुसे इसलिए श्रीहरिने नालेके ऊपर एक बाध बंधवा दिया है। पानीको ऊँचेकी ओर मोड दिया है। नतीजा है कि पानी ऊँचेकी तरफ जा नही पा रहा है और टोलेमें हो भर गया है।

देबू कुछ देर खडा सोचता रहा। उसके बाद पूछा, "घरमें कुदाली है?'

"कुदाली?' लेकिन क्या होगा—यह सोचकर घोषालका मुँह सूख गया।

"हाँ! कुदाली या कुछ भी लाओ। ले आओ।'

सूखे चेहरेसे घोपालने पूछा "बाध काटनेसे फौजदारी तो न होगी ?"

"नहो। जाओ, ले आओ।"

"बट, देयर इज कालू शेख। ही इज ए डेंजरस मन।"

"ले आओ, तुम ले तो आओ। न लाना हो तो कहो, म अपने घरसे ले आऊँ।"—देवू तनकर खडा हो गया था। उसका छरहरा बदन थर थर काप रहा था। घोपाल घरके अन्दरसे छोटी-सी कुदाली ले आया। लाकर देवूकी तरफ उसे बढा दिया। देवूने खुले छातेको मोडकर घोपालके बरामदेपर रख दिया, कपडेको समेटा और हाथमें कुदाली लिये बाँधपर चढकर खडा हो गया। चिल्लाकर बोला, "हम लोगोका घर-द्वार डूबा जा रहा है। यह बाध गैर कानूनी ह—किसने बाधा बतायें। म इसे काटे दे रहा हूँ।"

श्रीहरिके फाटकसे कालू शेख बाहर निकल आया। उसके पीछे-पीछे श्रीहरि भी। देवूने कुदाली चलायी—चोट और फिर चोट।

श्रीहरिने पुकारकर कहा, "ठहरो खुद मेरा ही आदमी काट देता ह। देवू चाचा तुम उतर जाओ। अपने पोखरेके मुँहपर मने बडा-सा बाध बनवा लिया—उसीके लिए पानीको बन्द किया था। बाँध बँध गया। अरे ऐ, जा काट दे। जल्दी-जल्दी जा।"

पाच-सात मजूरे दौडे आये। इसी गाँवके मजूरे थे। देवूको दूसरे सबने छोड दिया था, लेकिन इन लोगोने नही छोडा था। एकने श्रद्धाके साथ कहा, "आप उतर आइए गुरुजी, हम लोग काट देते ह।"

देवूने कुदाली घोपालके ओसारेपर रख दी। अपना छाता उठाया और घरकी ओर चल पडा। श्रीहरिके ही बगलसे जाना था। उसने मुसकराकर कहा, "चाचा!"

देवू खडा हो गया। मुडकर देखने लगा।

श्रीहरि उसके करीब आकर धीमेसे कहने लगा—"अनिरुद्धकी स्त्रीसे तुम्हारा झगडा ह क्या ?"

देवूके दिमागमें आग लग गयी। भवें सिकुड आयी—आखोंमें जैसे छूरीकी पैनी धार चमक गयी। फिर भी उसने अपनेको शान्त करके कहा, "मतलब ?'

"मतलब कि कल रात—डेढ या दो बजे होंगे, मूसलाधार पानी पड रहा था। मेरी नीद टूट गयी। खिडकीसे छींटे आ रह थे। म खिडकी बन्द करने लगा। देखा, रास्तेपर कोई खडा ह। आवाज दी—कौन ? औरतके गलेका जवाब मिला—म हूँ। मन सोचा, किसीको कुछ हुआ ह। जल्दी-जल्दी उतरा। देखा, लुहार-बहू ह। उसने मुझसे कहा—'आपके यहाँ तो दाई-नौकरानी कई हैं।

मुझे भी कोई जगह देंगे अपने यहाँ ?' मैंने पूछा—'सो क्या ? तुम तो देबू चाचाके पास थी न ? वह तुम्हारा आदर जतन नहीं करते हैं, ऐसी तो बात नहीं है।' उसने मेरी बातका जवाब नहीं दिया। बोली—'आप अगर अपने यहाँ नहीं रखेंगे तो मैं चली जाऊँगी—जिधर ये दो आँखें ले जायेंगी, चली जाऊँगी।' करता क्या चाचा, कहा, 'खैर आओ।' " यह कहकर श्रीहरि गर्वसे हँसने लगा मगर देबूको काठ मार गया।

श्रीहरिने फिर कहा 'अच्छा ही हुआ चाचा। भूतनी तुम्हारे कन्धेसे उतर गयी। अब उस मोचिन छोरीसे कह देना कि तुम्हारे यहाँ आया-जाया न करे। पचायतको मैं समझा-बुझा दूँगा। प्रायश्चित्त कर लो। शादी-ब्याह करो। मैं अच्छी-सी लड़की देख देता हूँ।'

देबू स्थिर खड़ा था। वह श्रीहरिकी सारी बातें सुन नहीं रहा था—अचरज और गुस्सेकी उत्तेजनाको जी-जानसे जब्त कर रहा था। किसी तरहसे अपनेको रोक करके उसने कहा, "अच्छा मैं जाता हूँ।"

सोलह

पद्मके जीवनकी रुँधी हुई कामना—वह कामना जो अबतक उसके मनके अन्दर ही घुमड़ा करती थी एकाएक उसके मनके धोखेसे गुप्त दरवाजेसे बाहर निकल पड़ी। और वह निकली भी सहस्रमुखी होकर। आदमीको जो चाहिए, एक नारी जो चाहती है—जिस भावनाकी तरंगसे नारीके एक एक देह-कोषमें, एक-एक लोम-कूपमें, चेतनाके हर स्तरमें स्पन्दित होती है उसी भावनेका दावा था उसका। देहकी भूख पेटकी भूख। पति-पुत्र, अन्न धन, सुख सम्पद् घर-गिरस्ती। वह अपने एकाधिकारमें नितान्त अपने रूपमें यह सब चाहती थी। इन कामनाओंको कठोर संयमसे कृच्छ साधनासे उसने बहुत दबाया। नेम-व्रत किया उपवास रखती रही लेकिन उसकी प्राण शक्तिकी उमंग किसी भी प्रकार से दबाये नहीं दबी। मनके गोपनमें बहुत-बहुत कल्पनाएं बहुत-बहुत संकल्प माटीके नीचे पड़े अंकुर से छिपे थे उस दिन अचानक जिन्दगीपर स्वतन्त्र चिन्तन और कर्म-क्षेत्रपर पड़े संस्कारके पत्थरके किसी छेदसे निकल पड़े। चाँदनीकी रेखाको भ्रमसे आदमी समझकर वह नीचे उतरी थी। उसके बाद हवासे दर

वाजा हिला, तो उसमें उसने किसीका इशारा महसूस किया। दावको हाथमें लेकर ही उसने दरवाजा खोला था। दरवाजेके सामने कोई नहीं था, लेकिन उसे लगा जैसे कोई जल्दीसे खिसक गया हो। उसीकी तलाशमें वह रास्तेपर निकली। वह जितना ही बढ़ती गयी, उसकी कल्पनाका आगन्तुक कभी मरुभूमि की मरीचिका-सा टूटता गया और आखिरकार उसे उसी हरसिंगारके नीचे ले जाकर खड़ा कर दिया। करीबमें देवूके घरपर जो नजर पड़ी, तो उसके हाथका दाव आप-ही-आप छूटकर गिर पड़ा।

देवूके घरके सामने खड़े होते ही उसकी चेतना लौटी। मगर तबतक उसके जीवनकी जलनसे पली घुटी हुई कामना गुफासे छूट पड़े झरनेकी नाइं हजारा धारामें धरतीपर आना चाहने लगी थी। उथली हुई वासनाका डर नहीं, सकोच नहीं। उसके सर्वांगमें, लावालाव्य जीव-देह कोषमें खिल खिल हँसी उठ रही थी, नस-नसमें कल-कल गीत गूँज उठा था असख्य और अपार सुखसे, ध्यान दमे प्राण उमड पड़े थे, घर गिरस्ती-सन्ततिकी खिलती आती कल्पनामें वह विभोर हो गया था। उसने देवूसे अपनी बात कही—वह बात, जिसे अपने मन की साँकल खोलकर भूलसे भी किसीसे नहीं कही थी इशारेसे भी नहीं बताया था।

देवूके निरासक्त निष्ठुर उपदेशसे वह चौंकी—"जोरोंकी बारिश आ रही है। घर जाओ लुहार-बहू।"

इस अन-उमगे और कठोर ठुकराहटके अपमानसे वह अधीर हो उठी। रुकावट पानेसे आवगमयी धाराका स्रोत जैसे किनारे तोड़कर बह जाता है वैसे ही वह देवूको छोड़ उछलकर श्रीहरिके अजाने तटकी तरफ दौड़ पड़ी। सोचा भी नहीं कि श्रीहरिके पास मरुभूमि-जैसा विशाल चौर है बालूका—वहाँ पानीकी धारा कल-कल करती हुई खेल नहीं पाती, खो जाती है। उसने अपना भविष्य नहीं सोचा, अपना भला-बुरा नहीं सोचा, सीधे श्रीहरिके यहाँ चली गयी।

उसके कोठाघरके पिछवारे जाकर खड़ी हुई। श्रीहरिने ठीक ही कहा, वह जग ही रहा था। लेकिन पद्म उसी समयसे सो रही थी। अचेतनकी नाइं बेखबर सो रही थी वह। देवूके तेज गलेने अचानक उसकी नींद निद्रित चेतनामें जागरणकी धड़कन जगायी। जगकर उसने देखा कि देवू और श्रीहरि आमने सामने खड़े बातें कर रहे हैं। उसने चारों तरफ निगाह दौड़ायी। अब उसने समझा कि वह कहाँ है। रातकी बात किसी बुरे सपनेकी तरह धीरे धीरे उसके मनमें आयी।—लेकिन अब उपाय?

दुर्गा देबूके ही यहा बैठी थी। वह खबर ही देनेके लिए गयी थी कि लुहार-बहू घरपर नही है।

सुनकर देबूने मुस्तसरमें कहा, "मालूम है।"

देबूका चेहरा देखकर दुर्गाको और कुछ बोलनेका साहस नही हुआ। वह चुप होकर बैठी रही।

देबूने कहा "अभी तू घर जा दुर्गा। पीछे सब बताऊँगा।"

दुर्गा उठ खडी हुई।

देबूने फिर कहा "नही। बैठ, सुन! तुझे अगर असुविधा न हो तो तू मेरे यहा रह न दुर्गा।"

दुर्गा अवाक होकर देबूके मुँहकी ओर ताकने लगी।—गुरुजी यह क्या कहा है।

देबूने कहा, "घर-द्वारमें झाडू नही लगता लीपना नही होता। यह कम्बख्त चरवाहा छोरा ऐसा पाजी हो गया है! तू यह सारा काम काज किया कर। यही खाना। तनख्वाह लेगी तो वह भी दूँगा।"

घोडेको जैसे यक व यक चाबुक लगा हो, दुर्गा चौकन्नी हो गयी। बोली, "नौकरानीका काम तो मुझसे नही होता गुरुजी, अपना घर बुहारनेके लिए भाभीको रोज सेर भर चावल दिया करती हूँ।"

देबूने उसकी तरफ देखा, फिर बोला, "नौकरानी क्यो? तू तो बिलूकी दीदी कहा करती थी। साली-जैसी रह यहा। तनख्वाह कहना भूल हो गयी। आखिर हाथ-खर्चकी भी तो जरूरत होती है!"

दुर्गा भौंचक्का-सी उसकी ओर ताकती रही।

देबूने कहा, "परसों पंचायत बैठेगी दुर्गा। कमसे कम ये दिन तो तू मेरे यहाँ रह।

अबकी दुर्गाने माजरेको समझा। हँस पडी। उसे बडा कौतुक हुआ। पंचायतमें उसके और गुरुजीके बारेमें मजेकी आलोचनाएँ होगी। देबूने गम्भीर होकर ही पूछा "तो क्या कहती है बता?"

"कुजी दो। झाडू-बुहारू लगा दूँ।"—और कुंजीके लिए उसने हाथ बढ़ाया।

देबूने उसे कुंजी दे दी। कहा "घडेमें पानी है या नही, देख तो?"

"पानी!—दुर्गाने कहा "पानी मै क्या देखूँ? तुम देखो।"

देबू बोला "न, तू ही देख। न हो तो ले आना। यतीन बाबूका वहा याद है? और तू मुझसे जैसी स्नेह-श्रद्धा करती है, वह तो किसीकी माँ-बहनसे

कम नहीं हूं। म तेरे हाथका पानी पिऊँगा। मैं जाति नहीं मानता। मैं पंचायत को यह साफ-साफ सुना दूँगा।'

"नहीं। मुझसे यह न होगा जमाई। मेरे हाथका पानी—ब्रजनाथ ब्राह्मन कायथ-बाबू लोग छिपकर पीते हैं मजेमें। शराबमें मिला देती हूँ पी लेते हैं। उनके मुँहमें गिलास लगा देती हूँ। मगर म तुम्हें नहीं दे सकती गुरुजी।"—दुर्गाकी आखोंमें आसू आ गया। उसे छिपानेके लिए ही वह झट घूम गयी और दरवाजे-का ताला खोलने लगी।

देबू जरा हँसा और चुप हो रहा।

आसमानकी बदली छँट रही थी। थोड़ी-सी धूप निकली। फिर बादलसे ढँक गयी। फिर बादल छटकर धूप निकली। बारिश थम गयी।

'दण्डवत गुरुजी।"—सतीश बाउरीने प्रणाम किया। उसके साथ बाउरी मोची, हलवाहे मजूरे और भी कई जने थे। सारा शरीर भीग गया था। भीग भीग-कर काला रंग तक फीका हो गया था। पाँवके किनारे उँगलियोंकी फाँकें हाथके तलवे लगा-जमे सफेद हो गये थे। उँगलियोंकी नोक चुपस गयी थी।

देबूने नमस्कार किया। सिर्फ बातमें उन्हें तुष्ट करनेके लिए पूछा 'क्या हाल है पानीका?

'बहारमें बाढ़ उमड़ आयी है। धान-पान डूब गया। गोछियाँ उखाड़ देखे जायगी। बड़ा नुकसान कर दिया गुरुजी।'

दुःखकी ये बातें कुछ देबूको सुनानेके लिए सतीश व्यग्र था। उसे सुनाये बिना उस मन्ताप नहीं था माना।

देबूने दिलासा देकर कहा 'दो दिन धूप उगेगी कि पौधे ताजे हो जायेंगे। जरा इस बाढ़को निकल जाने दो जहा जहाकी गोछिया उखड़ गयी हैं, फिरसे लगा देना।'

सतीशको भरोसा नहीं हुआ। बोला, 'उम्मीद थी कि अबकी दो मुट्ठी फसल होगी। सो पानीका जो हाल है।

"हं तो क्या हुआ। बहाव बह जाने द। अबकी बरसात अच्छी रही। दिनमें धूप होती है रातमें पानी। फसल इस बार अच्छी होगी। पानी भी अन्त तक होगा।

वह सही ■। मगर इतना पानी भी तो ठीक नहीं।

देबूके मनमें औचक ही एक बात खेल गया। नदी। मयूराक्षी। उसने अकुलाकर पूछा, 'नदीका क्या हाल है?

'जी, बड़ा खतरनाक है। लेकिन फेन बह रहा है। अब इसपर यदि वह

उफनाये, बाढ़ आ जाये तो सब साफ हो जायेगा।"

'बांधकी क्या हालत है? देखी है?"—भवें सिकोड़कर देबूने पूछा।

सिर झुकाकर सतीशने कहा, "पिछले साल बाढ़ नहीं आयी थी न! उससे पहले भी नहीं!"—उसके बाद आप ही एक अनुमान-सा करके कहा "बाँध तो आपका ठीक ही है। और बाँध तोड़कर इधर बाढ़ नहीं आयेगी। वैसा हो तो यह धरती ही नहीं रहेगी।"—कहकर सतीशने जरा पारमार्थिक हँसी हँसी।

देबूने जवाब नहीं दिया। उसका मन विरक्तिसे भर गया। ये लोग अपना भविष्य सोचकर कुछ नहीं करते—कुछ नहीं करेंगे।

सतीशने प्रणाम करके कहा, "अब चलूँ गुरुजी, वहीं सुबहका निकला हूँ।" कहते-कहते वह हँस पड़ा। हँसकर बोला—'तमाम रात भीगता रहा हूँ। उसपर सुबहसे यह बहाव तोड़नेमें हल्कान-हरान हो गया। चलूँ। इसके बाद तो फिर एक बार पल्हें* लेकर निकलना है। उफ मछलीमय हो गयी है बहार!'

दूसरे एकने कहा 'कुसुमपुरके शेखने बरछासे सात सेरकी एक कतला मार ली।"

एक और बोला 'कंकनाके बाबुओंका नारायण तालाब बह गया।"

इस बीच देबू उठ खड़ा हुआ।

पदमकी इस शोचनीय परिणतिसे उसे चोट पहुँची थी। उसकी अपनी शिक्षा संस्कार ज्ञान-बुद्धिके अनुसार सोलहों आने दोष पदमका ही है, वह बिल्कुल निर्दोष है। उसने उसे स्नेह किया, विधवा भाई-बहूकी नाई सम्मानके साथ उसके रोटी-कपड़का भार भरसक उठाता रहा। बीती रात निम्न समयसे मीठी बातें कहकर उसने उसे लौटाया है, उसमें अन्याय क्या हुआ? थोड़े दिन पद्मके नामपर ही उसपर नाहमत लगाकर झूठी बदनामी देकर उसे समाजसे अलग कर देनेपर तुला हुआ है। उसने इसकी भी परवाह नहीं की। निडर होकर पंचायत का मुराबला करनेको तयार था। फिर उसकी गलती कहाँ है?

लेकिन फिर भी मन नहीं मान रहा था। मनुष्यको अपनी बहन और बेटी की ऐसी दुर्दशाके लिए गहरी पीड़ा और शर्ममें अपनी जिम बेवस विवशताके अपराधका बोध होता है, पद्मके लिए पीड़ा और शर्मके साथ-साथ अक्षमताका वही अपराध-बोध भी उस एक अजानी पीड़ा-सा पीड़ित कर रहा था। दुःख, पीड़ा, लज्जा—सब उसी अक्षमताके अपराध बोधका रूपान्तर है। उसका मन

* दबाकर मछली फँसानेका टोकरी-सी चीज।

हजार तर्कसे निर्दोष साबित होनेके बावजूद उसी पीडासे पीडित हो रहा था। दुर्गाको अपने घरमे रहनेके लिए कहकर, उसके हाथका पानी पीनेको कह बागी बननेके जोरसे मनको उत्तेजित करके भी उसे उस वेदनासे छुटकारा नही मिला। सो बाढ रोधी बाँधको महत्त्व देकर देबू बाधको देखनेके लिए निकल पडा—महज उस आत्मपीडनसे बचनेके लिए। दुर्गासे कहा, 'दुर्गा, म आकर रसोई चढा दूँगा। तुझे अपने घर-वर जाना हो तो इस बीच हो आ।"

दुर्गाने हरान होकर पूछा, "इस समय कहाँ चले? दुनियामें फिर किसे कहीं तकलीफ हुई?'

गम्भीर होकर देबूने कहा "मयूराक्षीमें बाढ बढ रही ह। देख आऊँ।"

दुगाने अवाक होकर गालपर हाथ रखा।

देबूने भत्रोपर बल डालकर कहा 'क्या हो गया?'

"क्या हो गया? रानेको जी चाह रहा है, यो रोकर जी नही भर रहा ह राजाके हाथी मरा है उसका गला पकडकर रो आयें—वही हाल ह। म पूछती हूँ, बाँध तोडकर बाढ कब आयी है?"

"रुक मत! म आया।' —और हाथमें छाता लेकर देबू निकल पडा।

दुगाने गलत नही कहा। काफी चौडा बाध। उसके दोनो ओरके सरपत-काशी जडोसे जकडकर बाँधकी माटी अटूट बन गयी ह। दस-बीस सालमें कभी ज़ोरा-का ज्वार आती ह, तो थोडा-बहुत टूटता ज़रूर ह बाध, जिसे बादम मिट्टी डाल कर ठीक कर दिया जाता ह। लेकिन कोई इस बातकी फिक्र नही करता कि वर्षाके पहलेसे ही बाँध कहीपर टूटा हुआ ह।

लेकिन पहले फिक्र करते थे लोग। बाँध बाधनेकी व्यवस्था थी।

देबूने उन्ही बातोको अपने मनमें खूब बडा कर लिया और बाधकी चिन्ता को ही एकमात्र चिन्ता बनाकर बाहर निकल पडा।

आधे चाँदके आकारकी इस पचग्राम बहारके छोरपर धनुषके प्रत्यचाकी तरह पहाडी नदी मयूराक्षी बहती ह। पहाडी औरत-जसा ही स्वभाव! यो ठीक ही रहती ह। पानी घटता-बढता रहता ह। लेकिन जगली स्वभावके नाते हू-हू करके अचानक बाढ आ जाती ह—फिर उसी जल्दीसे घट भी जाती ह। उससे खास कोई नुकसान नही होता। बहारके एक किनारे बाढसे बचावका बाँध बना है—उसीमें बाढका वेग थमता ह। वह बाध महज पचग्रामका चोहद्दी तककी ही महदूद नही ह। पचग्रामकी सीमाको पार करके नदीके किनारे किनारे बहुत दूर तक चला गया ह। इस बाँधको किसने बाँधा, कब बाँधा—कोई नहीं कह सकता। लोग उसे 'पच जांगाल' कहते ह। पच यानी पच

पाण्डव। माता कुन्तीको लेकर जब वे छिपते फिर रहे थे, तो इधर मयूराक्षीमें बाढ़ आयी थी। गाव घर बह गये थे धान डूब गया था। लोगोंकी दुःख दुर्दशा का अन्त नहीं था। राजाकी लड़की रानी—पाण्डव जननीकी आँखोंमें लोगोंकी दुर्दशा देख पानी भर आया। लड़कोंने पूछा—'रो क्यों रही हो मा?' माने अपनी उँगलीसे लोगोंकी दुर्गति दिखा दी। युधिष्ठिरने कहा— तो इसके लिए रोती क्या हो? जहा तुम्हारी आँखोंमें आँसू आये वहा लोगोंकी दुर्दशा रह सकती है भला या रही है? हम लोग ऐसा उपाय किये देते हैं कि बाढ़से यहाँके लोगोंका कभी नुकसान न हो।' और पाचों भाई बाध बाधने लगे। बाँध बन गया। किसानोंको बुलाकर पाण्डव कहते गये— देखो भया, बाध हमने बाँध दिया। इसकी रख वालीका भार तुम लोगोंपर रहा। हर साल बरसातमें—रथयात्रा, अम्बुवाची, नागपचमी आदिपर जब हल जोतना बन्द रहता है—हर कोई कुदाल-टोकरी लेकर आया करना और अपने-अपने गावकी सीमापर हर आदमी पाच-पाच टोकरी मिट्टी डाल आया करना। तीन दिन—तीन पचे पन्द्रह टोकरी।

यही प्रथा चली आ रही थी। जबसे गाँवका मालिक जमींदार हुआ—अरती-परती खाल-खन्दक घासकर-वनकर, जलकर फलकर, पत्ता-पत्ता यहाँ तक कि ऊपर और जमीनके नीचेके हक हुकुमका मालिक हुआ—तभीसे यह बाध जमींदारकी खास सम्पत्ति हो गया—उसके हुक्मके बिना बाँधपर मिट्टी डालने या काटनेका अधिकार किसीको न रहा। इस प्रथाके उठ जानेके बाद जमींदार बेगार पकड़कर बाँधकी मरम्मत कराते थे। अब बाध टूटनेपर उस रिवाजके मुताबिक उसे बाधनेका खर्च कुछ जमींदार देता है कुछ रयत लोग देते हैं। हर साल बाँधपर मिट्टी डालनेकी जिम्मेदारी लोग भूल बैठे हैं। बाध टूटेगा तो मजिस्ट्रेटके पास दरख्वास्त भेजी जायेगी, पड़ताल होगी एस्टिमेट होगा, रयत और जमींदारको नोटिस भेजा जायेगा और तब बाँध धीरे धीरे बँधता रहेगा।

पचग्रामकी दूर तक फैली हुई बहार पानीमें डूब गयी थी। अन्दाजसे मेंडो की पगडण्डी पकड़ देबू चला जा रहा था। रात जो घनी घटा घिर आयी थी, वह घटा अभी बहुत कुछ छँट गयी थी। तीखी धूप निकल आयी थी। धूपकी छटासे सारी बहार आईने-सी झकमक कर रही थी। धानके पौधे खास दिखाई नहीं दे रहे थे।

पानी कहीं घुटन भर, कहीं कमर भर। बरसातके पानीकी निकासीके लिए जो दो नाले हैं उनमें छाती भर पानी था। बहाव भी खूब तेज। लेकिन बहारमें बहाव मन्थर था, लगभग थिर सा लग रहा था। उस मन्थर पानीको चीरती हुई एक-एक रुखा बड़ी तेजीसे चली जा रही थी। उस रुखाके पीछे-पीछे

दौड़ रहे थे लोग—हाथमें पलुई या बरछा लिये हुए। ये रसाएँ मछलियाँ थी—बड़ी-बड़ी मछलियाँ। बाँधमें मछली मारनेवाले लोगोंकी भीड़—औरत, मर्द, बच्चे बूढ़े सब।

समूची बैहार पार करके देवू बाँधपर पहुँचा। उसे याद आ गया कि जहाँसे वह बाँधपर चढ़ेगा, उसीके उस पार नीचे मयूराक्षीके चौरपर मसान है। उसके मुन्ने और बिलूकी चिता! आज बिलू रही होती तो ऐसा न हुआ होता। पद्म-की यह गति नहीं होती। जो मन्त्र वह नहीं जानता, उसकी बिलू वह मन्त्र जानती थी। बिलू होती तो लुहार बहूको देवू अपने ही घर रख सकता था। हँसती हुई बिलू अपने मुन्नेको उसकी गोदमें दे देती। साँझ बिहान उसके कानमें मन्त्र देती रहती। सुबह उसे दुर्गाका नाम स्मरण कराती। कृष्णके सौ नाम सिखाती। पुण्यश्लोक नामका स्मरण करना सिखाती। पुण्यश्लोक नलराजा, पुण्यश्लोक धर्मराज युधिष्ठिर पुण्यश्लोक जनार्दन-नारायण, सभी पुण्योंके आधार! नामको उस कहानियाँ सुनाया करती—सतीकी कहानी, सीताकी कहानी, सावित्रीकी कहानी! लुहार-बहूकी सारी भूख, सारे लोभ, सारी लोलुपता जाती रहती।

वह बाँधपर चढ़ गया। हवास सरपतके जंगलमें सर-सर सन्-सनकी आवाज़ हो रही थी। उस सन्-सन् आवाज़के साथ ही एक और आवाज़ हो रही थी नदीकी! नदीमें एक आवाज़-सी हो रही थी। यह आवाज़ तो अच्छी नहीं! उस ओरके सरपत-वनकी ओरको ठेलकर देवूने नदीकी तरफ ताका। ओह, मयूराक्षी तो भयंकर हो उठी है! भीषण रूप धारण किया है! इस पार बाँधके किनारेसे लेकर उस पार जंक्शन तक पानी-ही-पानी है। लाल गँदीला पानी! दोनों किनारोंके बीच कुटिल घूर्णियाँ उठाती हुई मयूराक्षी तीव्र वेगसे बहती जा रही है। गेरुआ रंगके पानीपर फेन बहता आ रहा है। पश्चिमसे पूरब जहाँ तक नज़र जाती—फेन और फेन। इन सबके साथ नदीमें जगी थी एक गरज। देवू बाँधके किनारे तक उतरा। वहाँ खड़े होकर पैनी नज़रसे बाँधपर गौर किया। इधर उधर देखते हुए एकाएक दिखाई दिया कि सरपत वनके पास चींटी-मकोड़े जमा हैं। बड़े-बड़े मकोड़े तनापर लाखों-लाख पतिंगे चले जा रहे हैं। अपने पाँवोंकी तरफ देखा। पाँवकी सुपती भर पानीमें थी, इसीमें पानी घुट्टी तक आ गया। फिर देवू बाँधपर चढ़ गया। बाँध किस हालतमें है, यह देखनेके लिए वह आगे बढ़ा।

नदीमें अभी जो बाढ़ थी, उससे ज्यादा खतरा नहीं था। वर्षामें नदीमें बाढ़ स्वाभाविक है। लेकिन यह भादों है। भादोंके महीनेमें बाढ़ आनेसे महा

मारी होती है। डाककी वचन है—'चैतमें कुआ, भादोम बाढ । कहाँ-कहा मृतकाको गाड !' भादोकी बाढ़से उपज सडती ह, मारा पडता ह। गरीब भूखे मरते ह। बाढके बाद ही फलते ह सक्रामक रोग, बुखार, काला मलेरिया। छोटी मोटी बाढका भी नतीजा कम बुरा नही होता। लेकिन देबू आज जिस बाढकी सोच रहा था, वह बाढ बडी ही भयकर होती ह। हडपा बाढ—कोई-कोई घोडा-बाढ भी कहते हैं। वह बाढ हडहडाती हुई उसी तरह दौडती आती ह, जसे जगली घोडोका एक दल ही एक साथ हिनहिनाता हुआ दौडा आ रहा हो। कई फुट ऊची उ मत्त जलराशि उमडती घुमडती एकाएक दोनो किनाराको छाप लेती ह—किनारोको तोडकर खेत-बहार, गाव घर, पोखर बगीचेको डुबाती हुई सब तहस-नहस करक चली जाती ह। लग रहा था कि वही हडपा या घोडा-बाढ आयेगी।

मयूराक्षीक लिए यह बाढ नयी नहीं ह। पहाडी नदियोम एसी बाढ कभी कभी आ जाती ह। जिस पहाडसे नदी निकली होती ह, उस पहाडपर जोरोकी बारिश होनेस वह पानी ढालवेंसे पूरे वगके साथ नीचेकी ओर दौड पडता ह। मयूराक्षीमें यह बाढ आ चुकी ह।

पचीस-तीस साल पहले एक बार आयी थी शायद। उस बाढकी याद लोग आज भी नही भूले ह। जिन नये लोगोने उस बाढको देखा नही वह उसके विक्रमके चिह्नको देखकर सिहर उठते हैं। देखुडियाके नीच मील भर पूरबम मयूराक्षीने मोड लिया ह। उस मोडपर अभी भी बालूका एक पहाड-सा धू धू करता रहता ह। एक बहुत बडा बगीचा ह आमका—उस बाढके बादसे उस बगीचेका नाम पड गया ह 'गलागडा' बगीचा। बगीचके पुराने पेडोकी डाल-बहुल भाटी ही बालूके स्तूपपर अभी रह गयी ह। बाढ़ने पेडाका गले तक बालूमें गाड दिया। उस बगीचेके बाद ही 'भसाडहर' की दूर तक परती रत, जिसपर आज भी घास नही उगती। असाडहर हरी भरी भूमिपर ग्वालोका एक छोटा-सा गाँव था। मयूराक्षीक हरियाली भर चौरकी घासस व गाए भसें पाला करत थ। उस बाढम ग्वालोका वह गाँव गायब ही हो गया। मयूराक्षीका बाढम, जब दोनो किनार पानीसे एकाकार हो जात, जो भैंसें ग्वालोंके बच्चोको अपनी पीठपर लिये मजेमें इस पार-उस पार आती जाती थी, उस बारकी हडपा-बाढमें व भसें भी निरी बेबस सी किसी तरह अपनी नाक भर पानीस बाहर रखकर बह गयी थी।

अबकी फिर क्या वही बाढ आ रही ह? शिवकालीपुरक सामने बाढका पानी बाँधपर ठहरा गया था। चीटियान पेडोपर शरण ली थी। मुहम

लाखा लाख अण्डे। चीटियाँ ही नही, लाखोकी तादादमें किस्म किस्मके कीडे। बाँधपर उनके बसेर थे। बाढ आनेके पहले ही ये कैसे समझ लेते ह ! पानी बरसनेका होता ह तो ये नीची जगहोंसे कहीं ऊँचाईपर चले जाते ह। वसे ही बाढ आनेके पहले भी ये समझ जाते ह और ऊपर चढ जाते हैं। आम तौरसे बाधके ऊपर शरण लेते ह। अबकी वे पेडापर चढे जा रहे ह। एक अचरज यह भी ह कि जब चीटियाँ अण्डे लिये ऊपर उठती हैं तो चीटियाकी दूसरी जमात उनपर हमला करती ह—अण्डे छीन लेती ह। इस बार वसी लडाई तक नही हुई। एक रास्तेसे आते हुए रेखूने वैसी दो ही झडपें देखी। यहाँ जिन्होंने हमला किया वे पेडापर रहते ह—पेडपर रहनेवाले कीडे। जो नीचेसे ऊपर जा रही थी, वे मानो बेहद बेबस-सी। बाढसे बहते हुए छप्परोपर आदमी और साप जसे निर्जीव से पड रहते हैं उनकी भी वैसी ही हालत ह।

बाँधकी हालत भी अच्छी न थी। जमानेसे किसीने देखा नही। असल्य छेदोंने बाँधमें पानी घुस रहा था, चूहाने गढे खोद दिये ह। इन गड्ढोको बन्द करनेका उपाय नहीं ह। चूहे बडे वाहियात होते ह। अनाजके दुश्मन घरके शत्रु—उनसे दुनियाका कोई उपकार नही होता। बाँधमें अन्दर ही अन्दर सुरगें काटकर शायद उसे पोला कर दिया ह। बाँध बहुत चौडा ह और सरपतोकी जडसे मिट्टीके सहारे बँधा होनेसे मामूली बाढम उसका कुछ नही बिगडता। लेकिन पगले बहावमें जसी एक गरज जगी ह वह अगर उसके मनका भ्रम न हो—तो मयूराक्षीके पाटसे सोयी हुई राक्षसी जाग पडेगी। इस बार थोडा बाढ ही आयेगी। और उस बाढमें यह पुराना बाध जिसकी मरम्मत नही की गयी है—नही टिक सकेगा।

आसमानमें फिर मेघ घिर आये।

हवा चल रही थी। फुहियाँ बरसने लगी। हवाके वेगमें वे फुहिया कुहरे-सी उडती दिखाई देने लगी। यह बदली सहज ही नही छँटनेकी, ऐसा लगा। दुर्भाग्य ह—सिर्फ उन सबोका दुर्भाग्य। एडी चोटीके पसीनेसे सना किया छातीके लहूसे सींचा हुआ धान सड जायेगा, बस्ती बह जायेगी घर द्वार खण्ड हरोमें बदल जायेंगे, तमाम एक हाहाकार मच जायेगा। लोगाके पापका प्रायश्चित्त—उसे एक बात याद आ गयी,—लोग कहते ह पहलेके लोग पुण्यात्मा थे। लेकिन उस समय भी तो ऐसी हडपा-बाढ आती थी। इसी तरहसे अनाज सडता था घर-द्वार धराशायी होते थे। लोग हाहाकार करते थे। सोचते-सोचते महाग्रामकी सरहद पार करके वह दलुडियाकी सीमामें पहुँच गया।

बाँधपर दो आदमी खड़े थे। सिरपर छाता नहीं। सारा बदन भीगा हुआ। एकके हाथमें लाठी-जैसी कोई चीज, दूसरेके हाथमें जाने क्या—ठीकसे अन्दाज नहीं लगाया जा सका। कुहासा-सी बारिशने उनकी साफ पहचान को धुँधला कर रखा था। देबू कुछ आगे बढ़ा तो पहचानमें आया। एक तो तिनकौड़ी था। और दूसरा राम भल्ला। तिनकौड़ीके हाथमें बरछा था, रामके हाथमें पलुई। वे दोनों मछलीकी ताकमें थे।

देबूने करीब जाकर कहा "मछली मारनेको निकले हो ?"

तिनकौड़ी नदीकी तरफ बड़े ध्यानसे देखता हुआ खड़ा था। नजर घुमाये बिना ही बोला "हाँ निकला था। मगर नदीके पास पहुँचा, तो लगातार गाँगाकी आवाज सुनाई पड़ी। नदी गरज रही है।"

रामने कहा, "एक एक करके मैंने दो लाठियाँ गाड़ी—दोनों डूब गयीं—वह देखिए। दूसरीपर भी बाढ़ चढ़ गया। लच्छन अच्छे नहीं हैं गुरुजी !"

देबूने कहा "मैं भी वही सोच रहा हूँ। गरज मैंने भी सुनी। सोच रहा था शायद मेरा भ्रम हो।"

"उँहूँ ! भ्रम नहीं। तुमने ठीक ही सुना है।"

"बाँधकी हालत कैसी है ? चूहोंने अन्दर-ही अन्दर चलनी बना दिया है।"

रामने कहा "उससे कुछ नहीं बिगड़ेगा। असल में डर है आपके कुसुमपुरके पास। बकुलाके पास बाँध फट गया है।"

"फट गया है ?"

"एकबारगी इस पार उस पार। वह सेमलका पेड़ धाम बाबुआने काट लिया ! तबसे फटा है। वह पहाड़-सा पेड़ बाँधके ऊपर ही गिरा था न। तिस पर अब उसकी जड़ें सड़ गयीं। लोगोंने जलानेके लिए उन जड़ोंको निकाल लिया। वहींपर डर है। उस जगहकी मरम्मत नहीं की गयी तो उस मिट्टीको मयूराक्षी भूरे-जैसी चाट जायेगी।"

देबूने पूछा "चलिएगा तिनू चाचा ?"

तिनू तुरत तैयार हो गया। अबतक मानो यह बात नहीं पा रहा था। लोग उसे हड़बड़िया कहते हैं। हो-हो करना स्वभाव है उसका। रामने भी वही कहा है। उनमें पहले ही बात हो चुकी है आपसमें। तिनकौड़ी उसी वक्त चलनेको तैयार हो गया था लेकिन रामने कहा— चलोगे तो सही। मुझे कह रहे हो, चलो चलता हूँ। मगर चलके करोगे क्या—यह तो सुनूँ ? कोई आयेगा भी बाँध बाँधने ?

"नहीं आयेंगे ?"

"तुम्हारी बातपर भला क्या आने लगे। उससे तो अच्छा है कि लोगोंको खबर कर दो। सब अपना-अपना घर सँभालेंगे, मचान बाधेंगे। चुपचाप बैठे रहो। चलो, बल्कि हम अपना घर सँभालें। मचान बाध लें। भगवान करें, राता रात बाढ आये और सब सालोंको बहा ले जाये।'

तिनकौड़ीको इसपर एतराज नहीं हुआ। खुश होकर बोला, "तूने बेजा नहीं कहा रामा, ठीक ही कहा है। वही हो तो इन सूअरके बच्चोंके लिए ठीक है। सूअरके बच्चे हैं सब! पेट पालनेके लिए फिर सब साला जाकर उसी छिष्ट पालके घूरेमें मुँह लगाया।'

देबूने ताकीद की—"चलिए चाचा, देर हो रही है।"

देखुडियाकी सीमाके बाद महाग्राम उसके बाद शिवकालीपुर उसके बाद कुसुमपुर। कुसुमपुरके बाद कङ्कनाकी सीमासे जो मिलनेकी जगह है वहींपर बाधमें दरार पड गयी है बड़ी सी। पहले यहाँपर सेमलका एक विशाल पेड था। जिन दिनों देबू स्कूलमें पढता था, उसे इस पेडको देखते ही याद आ जाता था—'अस्ति गोदावरीतीरे विशाल शाल्मलीतरु।' पेडपर अनगिनती जगली तोते रहते थे। देबूकी उम्र तो कम थी, तिनकौडी और राम तकन बचपनमें उस पेडसे तोतोंके बच्चे उतारे थे।

सेमलके तख्ते बडे हलके होते हैं और तख्तोंको खूब पतला चीरनेसे भी नहीं फटते। इसलिए पालकी बनानेके लिए सेमलके तख्ते ही ज्यादा कामके होते हैं। कङ्कनाके बाबुओंकी जमींदारी बहुत है—सुदूर गँवई गाँवोंमें भी। बीसवीं सदीके उनतीस साल गुजर गये अभी भी सभी गाँवों तक बैलगाडी जाने लायक भी रास्ता नहीं है बल्कि पहले रास्ते थे, कच्चे रास्ते—खेतोंसे होकर गाडी जाने-की लीक। बरसातमें कीचड़ हो जाता और जाड़ोंमें गाड़ीके पहियों कुचलकर खुरों से चूर होकर धूल उड़ा करती। उस गो पथ कहते हो थे। उनसे होकर खेतोंसे धान घर लाया जाता था। तब दूसरे गाँवको जाया जाता था। उसकी देख-रेख पचायत करती थी। लेकिन अधिकांशमें जमींदारोंने गोचर परती जमीनके साथ-साथ गो-पथका भी बन्दोबस्त कर दिया है। जमीनके लोभी किसानोंने भी अपने अगल-बगलके गो-पथोंको हडप लिया है। अब यूनियन बोर्डका पक्का रास्ता को पुन है इधर ध्यान देनेकी उसे फुरसत भी नहीं। लिहाजा मोटर-बग्घीके इस जमानेमें भी जमींदारको पालकीकी जरूरत रह गयी है। पालकी बनानेके लिए उस सेमलके पेडको काटा गया था।

एक युगके सम्बन्धको तोडकर जब वह मट्टीका माटीपर गिरा तो उसकी बलीस नाडियोंने खिचावसे बाँधका कुछ हिस्सा फटकर बैठ गया। तबसे बाँध

वहाँ फटा पडा है। ऊपर दरार है, नीचे दुरुस्त ह। बाढ साधारणतया ऊपरको नहीं उठती। इसीलिए उसपर किसीका ध्यान नही गया। इस बार बाढ हू-हू करके ऊपरका बढ रही ह। बाँधकी उस दरारको देखकर देबू, तिनकौडी और रामन परस्पर एक-दूसरेको ओर निहारा। तीनोंकी आखोंमें था एक शका भरा मौन प्रश्न।

तिनकौडीने कहा, यह तो दो-तीन जनेके बूतेकी बात नही है भया!"

रामने हँसकर कहा, "बाढ इस कदर बढ रही है कि जबतक लोगोको बुलाओगे तबतक विसजन होनेवाली काली मैया-जसा बाध कतरा जायेगा!"

तिनकौडी गाली दे उठा— हरामजादा हसनेमें शम नही आती?"

रामको बेहद कौतुक हुआ। वह हो हो करके हँस उठा। घर कहनेको उमे एक झोपडा ह और धनके नामपर कुछ थाली-बरतन, टिनका एक पिटारा कुछ कथरिया एक हुक्का और कुछ लाठी भाले। इस प्रौढावस्थामें भी वह भीम-सा बलवान ह, और तैरनेमें मगर। न तो उसे कोई खतरा है, न ही गाँव के गृहस्थोपर कोई ममता। ये लोग उससे डरते ह, नफरत करते हैं सतानेमें मदद पहुँचाते हैं—श्री०पल० बेसम गवाही देत ह। इसलिए उनकी बेहद दुदशा हो तो भी वह मुडकर उन्हे नही देखता। उन लोगोकी दुर्गतिसे रामको अपार खुशी होती। वह हँसते-हसते बेहाल हो गया।

देबू दरारें पडे बाधको आर देखकर सोच रहा था।

बेशक आजमे पचग्राम बह जायेगा। उसके अन्तरकी आँखोम आफतके चपेटेमें आये इलाकेकी तसवीर तर गयी। रामसी मयूराक्षी युग-युगसे पचग्रामकी शस्य-सम्पदा घर-द्वार बहा ले जाती ह। परन्तु उस युगम लोगोकी हालत और थी। मनुष्यके बदनमें असुरका बल था। खेतिहरोंके हाथमें आठ सेर वजनकी कुदाली होती थी। गाँवम एकता थी। मयूराक्षी बाधको तोडकर सब बहा ले जाती थी। बलवान गाववाले फिरसे बाँध बना लेते थे खेतोम भर आय बालूको उठा फेंकते थे। उस समयके बल भी उन मनुष्यों-जसे ही मजबूत होते थे—उन्ही बलोंसे फिर खेत जोतते, दूसरे ही साल बेहिसाब फसल होती। फिरसे नये घर बन जाते सुन्दर। गाँव नये ढगसे सज जाते—बुढिया मालकिनीके मर जाने पर नयी गृहिणीको सजायी हुई गिरस्तीकी शक्ल हो जाती थी गाँवकी। लेकिन यह समय ही और ह। भूखे किसानोंक बदनमें कूवत नहीं खानेकी कमीसे बल भी दुबले और कमजोर हो गये हैं। अब अगर खेतोम बालू भर जाये, तो वह बालू खेतोम ही पडा रह जायेगा। खेत बलुआहे हो जायेंगे। टूटे घर मरम्मत करके झोंपडे हागे मरनेके दिनकी ओर ताकते हुए लोग किसी तरहस

उसमें सिर छिपा सकेंगे, बस इतना ही! इस मुसीबतकी घडीमें पुकारनेपर लोग आयेंगे जरूर लेकिन मुसीबतके आ पहुँचनेपर बाघ बाधनेके लिए कोई नहीं आयेगा। मनुष्योंकी एकताकी डण्ठलको किसने कहा काट दिया है अब बाधा नही जा सकता। फिर भी इस समय—इस समय पुकारनेसे लोग आ भी सकते हैं!

उसने कहा, 'तिनू चाचा, लोगोंको जुटाना ही होगा। आप देखुडिया और महाग्राम जाइए। म कुसुमपुर और शिवकालीपुर जाता हूँ।'

तिनूने कहा, "रामा, तू अपना नगाडा लाकर पीट।"

रामने कहा, "नाहक ही नगाडा पिटवाकर मेरा हाथ दुखवाओगे मण्डल—कोई नही आयेगा।"

तिनू बोला, "हूँ, तू सब जानता है! भल्ला लोग भी नही आयेंगे।"

रामने कहा, 'दला अपने गावके भल्लाको छोडो, वे आयेंगे। मगर और तो एक भी आदमी नहीं आयेगा—देख लेना।"

सत्रह

रामका कहा ही सच निकला। सम्पन्न किसान कोई नही आया। आये केवल गरीब बेचारे। दो ही एक जने और आये जिनमें-से मुख्य था इरशाद।

देबू दौडता हुआ कुसुमपुर गया था। इरशाद अपने घरसे बाहर निकल रहा था। कल अमावस्या! रमजानके महीनेका आखिरी दिन। चाँद देखनेके बाद ईद मुबारक। इदुल्फ़ित्र। रोजाके उपवास-व्रतका उद्यापन। इस पर्वमें नये कपडे चाहिए, सुगन्ध चाहिए मिठाई चाहिए। इरशाद अवशन शहर जानेके लिए निकला था। तबतक दौडता हुआ देबू पहुँचा। बाजारका काम स्थगित करके इरशाद देबूके साथ निकल पडा। गाँवके धराम कोई सुगहाल खेतिहर लगभग नहीं ही था। सभी शहर गये थे। सब उसी बाँध होकर गये, बाँधका हाल देखकर उन्हें फ़िक्र भी हुई—लेकिन त्योहार सिरपर था, उस उत्सवकी कल्पनामें व उस चिन्ताको टाल गये। इरशाद घर घर गया। ग़रीब गुरबे घरपर थे। पैसे न होनसे वे बाजार नही गये थे। वे तुरत अपने-अपने घरसे निकल पडे।

उधर बाँधपर खडा राम नगाडा पीट रहा था।

शिवकालीपुरसे सतीश, पातू और उसके सगी-साथी निकले। किसान कोई नही आया। शायद चण्डीमण्डपमें श्रीहरिकी कोई बठक थी।

देखुडियाके लोग पहले ही आ पहुँचे थे। कई एक आदमी महाग्रामसे आये। कुल मिलाकर पचासेक आदमी। इधर बाढका पानी इसी बीच लगभग एक हाथ बढ गया। बाँधकी उस दरारके एक गढेसे बाढका पानी रेंगता हुआ बहार-में घुसने लगा था। पचास आदमी बाधपर कलेजेके बल पड गये।

सुरग-जैसे गढेका हाल बडा टेढा होता है। बाधके उस पार उसका मुँह कहा है उसे खोज निकाले बिना किसी भी प्रकारसे वह बन्द नही होनेका। पचास जोडी आखें नदीकी बाल्को ताकने लगी पानी बाँधपर कहाँ चक्कर खा रहा है घुरनपाककी तरह।

घुरनपाक वैसा एक नही था कोई दस बारह। मतलब कि दस बारह मुँह। इधर भी पता चला कि पानी एक जगहसे नही, कमसे कम दस जगहसे निकल रहा है। दरारकी मिट्टी गल गलकर गिर रही है और दरार चौडी होती जा रही है। बाँधकी मिट्टी नीचेकी ओर सरकती जा रही है।

तिनकौडीने कहा, खडे रहनेसे कुछ न होगा।"

जगन बोला तब जुट जाओ काममें।"

हरेन उत्तेजनामे आज हिन्दी ही बोल रहा था—'जल्दी। जल्दी। देबू खुद दरारके पास जाकर खडा हुआ। बोला इरशाद भाई, कुछेक खूँटेकी जरूरत है। पेडकी डाल काट डालो। सतीश, मिट्टी लाओ तुम।"

बहारके साफ पानीपर-से पाटल रगका एक अजगर मानो भूखा मुँह फलाये दौडता हुआ बढ रहा हा।

बाँधके गढेको काटकर वहींपर डालके खूट गाट दिये। ताडके डमटोले मिलाकर उसीपर टोकरियोंसे झपाझप माटी डाली जा रही थी। पचास आदमीमें-से महज दो—जगन और सतीश ही खडे थे। अडतालीस आदमीकी मेहनतमें जरा भी कोताही नही थी। कुछ लोग मिट्टी काटकर टोकरियाँ भर रहे थे कुछ लोग ढो रहे थे। देबू इरशाद, तिनकौडी तथा और भी कई जन उन खूटोंका सभाले खडे थे जो बाढके स्रोतसे टेढे हो रहे थे।

— मिट्टी। मिट्टी।

ताडके पत्तोंसे घेर खूँटोंको बाढके वेगसे रोके रहनेमें हाथकी शिराएँ और पेशियाँ जमती-सी जा रही थीं—लगता था अब फट जायेंगी। दाँतपर दाँत धरे देबू चिल्ला पडा— मिट्टी। मिट्टी।

राम भल्लाका चेहरा भयकर हो उठा—वसा ही भयकर, जसा कि

अँधेरी रातमें हाथमें घातक हथियार लिये हो जाता है। उसने तिनकौडीसे कहा, "जरा पकडो!" और वह झट पीछे पलट गया। और पैरोंकी टेक तथा पीठका सहारा देकर घेरेको ठेले रहा। कहा, 'हाँ गिराओ अब मिट्टी।'

इरशाद हाँफ रहा था। महीने भरसे वह नियमित रोजा रखता आ रहा था। आज भी उपवास किये हुए था। देवूने कहा, इरशाद भाई तुम छोड दो। ऊपर जाकर थोडी देर बैठ जाओ।'

इरशाद हँसा लेकिन उसने घेरको छोडा नहीं। झप-झप मिट्टी गिर रही थी। कभी आसमानमें मेघ घिर आते थे, कभी धूप निकल आती थी।

सूरज एक बार बदलीसे निकला कि उसकी ओर देखकर इरशादने कहा, "थोडा देर थाम लो। मैं अभी आता हूँ। नमाजका वक्त बीत रहा है।'

बेला झुक आयी थी। आदमीके आकारसे डेढ गुनी लम्बी छाया पड रही थी। नमाजका वक्त बीता जा रहा था। देवूने राम भल्लाकी तरह घेरमें पीठ लगाकर कहा, "तुम जाओ।'

जी-जानसे लोग टोकरी-टोकरी मिट्टी डालते जा रहे थे। मिट्टी क्या, कीचड! टोकरियाके पाकसे गलकर गिरते हुए कादोसे उनके सिरसे कमर तक लिपट रहे थे। कादो-जैसी मिट्टीसे वैसा काम भी नहीं बन रहा था। बहावमें वह तुरत गल जाती थी। और उधर मयूराक्षी फूल-फूलकर हाँफ रही थी। बाढका पानी बढ रहा था, तेज हवासे उस बहावमें सिहरन-सी जाग रही थी।

नदीकी गरज साफ सुनाई दे रही थी। तीखी धाराकी कल-कलको डुबाती हुई एक गरज-सी उठ रही थी।

रोलर-सा घूमता घुमडता पानी। पानीपर फेनका जमाव। फेनपर कचरोंका ढेर सिर्फ कचरा ही नहीं, फूस, छोटी-मोटी सूखी डाल भी बहती जा रही थी।

हरेनने अचानक उंगलीके इशारेके साथ साथ कहा, "डाक्टर एक, बन छप्पर!"—छाटे घरका एक छप्पर बहता जा रहा था 'देयर, दयर—वह, यहाँ। वह एक ओर। बाइ गाड, एक बिग पेडका कुदा।"

छप्पर, पेडका कटा कुंदा बाँस, फूस—सब बहता जा रहा था। ऊपरकी तरफका बाईं ओर बह गया।

जगन डॉक्टर घबराकर चीख उठा—"गया! गया!'

तिनकौडी अबतक पत्थरकी मूरत बना चुपचाप अपनी सारी ताकत लगाकर घेरको सम्हाले हुए था। उसने देवूका हाथ पकडकर कहा बगलसे खिसक

जाओ। नहीं रुकेगा, छोड दो। रामा, छोड दे। बेकार है कोशिश। देवू, हट जाओ। नहीं तो पानीके वेगसे मिट्टीमें गड जाओगे। लो—गया-गया।"

गया! बाढके भीषण दबावसे बाँधकी वह दरार बढी और वह हिस्सा जोरोंकी आवाजके साथ बहारमें गिर पडा। राम बगल होकर खडा हो गया। तिनकौडी पानीमें बुडकी लगाकर तैरता हुआ बह गया और देवू पानीमें खो गया!

जगन चिल्ला उठा—"देवू! देवू!"

राम भल्ला देखते ही देखते पानीमें कूद पडा।

इरशादका नमाज पढना खतम ही हुआ था। वह कुछ क्षण अचम्भेमें खडा रहा और चीख पडा— देवू भाई!

मजूरे हाय-हाय करने लगे। सतीश बाउरी, पातू बजनिया भी उस बहाव में कूद पडे।

पीछे बाँधकी दरार चौडी होने लगी। गेरुए रंगका पानी हड-हड करता हुआ और ज्यादा घुसने लगा। बहारके साफ पानीपर मटमैला पानी बैशाखी बादलकी तरह फूल फूलकर चारों तरफ फैलने लगा। देखते-ही देखते पानी घुटने भरसे कमर भर हो गया। अब इरशाद भी पानीमें कूद पडा।

बाढका मूल स्रोत पूरबकी ओर दौड रहा था। मयूराक्षीकी धाराके समानान्तर। बगलसे दबाव डालता हुआ वह गाँवोंकी तरफ बढने लगा। बहारके साफ पानीको चीरता हुआ मूल स्रोत बडे वेगसे कुसुमपुरकी सीमा पार करके शिवकालीपुर शिवकालीपुरसे महाग्राम, महाग्रामके बाद देखुडिया, देखुडियाकी सीमा पार करके पचग्रामकी बहारके उस पार रेतीला भसाडहर— गलागाड बगीचेके बगलसे मयूराक्षीमें जाकर गिरेगा।

राम उस स्रोतके साथ ही साथ जा रहा था। रह रहकर सिर उठाता और फिर गोता मार देता। तिनकौडी भी चला जा रहा था। वह जब जब पानीसे सिर निकाल रहा था, चीख पडता था— 'हा भगवान!"

बाढके पानीमें मिट्टीके अन्दर कीट-पतंग बहते जा रहे थे। एक गेहुँअन तैरता हुआ तिनकौडीके बगलसे निकल गया। तिनकौडीने तुरत डुबकी मारी। बाम्हन सेतारे गडहे डूब गये थे। साँप कोई आश्रय खोज रहा था। कोई पेड या कोई ऊँची जगह। आदमी भी मिल जाये तो जकड लेगा इस समय। जकडकर बचना चाहेगा। कीट-पतंगोंकी तो सीमा नहीं। दोन-पत्तोंपर लाखों लाल चींटियाँ। मुँहमें अण्डे। अण्डेकी माया अभी भी छोड नहीं सकी है।

कुसुमपुरमें गार मच गया—गाँवके किनारे तक बाढ पहुँच गयी। शिव

कालीपुरमें भी बाढ घुस गयी। बाउरी और मोची टोलेमें तो पानी पहलेसे ही जमा था—बाढका पानी पहुँच जानेसे लगभग कमर भर पानी हो गया। सतीश और पानूके सिवा सभी अपने टोलेमें लौट गये। इसी बीच बहुतोंके घरमें पानी घुस गया। बरतन भाण्डे सिरपर रखे गाय-बकरोंको डोरीमें बाधकर औरतें पुरुषोंके ही इन्तजारमें खडी थीं। उनके जाते ही चलो चलोकी धूम पड गयी।

गाव भी है और सदासे नदी भी ह। बाढ भी आती ह गाव भी बहता ह। लेकिन सबसे पहले यह हरिजनोंकी बस्ती ही बहती ह। घर-द्वार डूब जाते ह। वाशिन्दे ऐसे ही भागते ह। यह भी तय रहता कि बहा जाकर पनाह लेंगे। उनके बाप-दादे भी वही पनाह लेते थे। गावके उत्तरकी ओरका मैदान ऊँचा ह। बस मदानमें पुराने समयका एक भटा हुआ तालाब ह। उसी उत्तर-पश्चिम कोनेमें अजुनका एक बहुत बडा पेड ह। उसी पेडके नीचे ऐसेमें आश्रय लेते थे, आज भी वे वहीं चले।

दुर्गाकी माँ बडी देरसे चीख-पुकार कर रही थी। दुर्गा सबरेसे देबूके यहा थी। देबू जो निकला सो लौटा नही। बडी देर तक उसकी राह देखकर वह अपने घर लौटी। लौटकर कोठेपर चली गयी। तबसे उतरी ही नही। अपनी छातीके नीचे तकिया रखकर रँगीली औंधी लेटी बाट देख रही थी। और गीतकी एक कडी गुनगुना रही थी—कलकिनी राधाके लिए कन्हैयाको धूलमें लोटना पडा।

दुर्गाकी माँने बार-बार पुकारा—'ए दुर्गा, बाढ आ रही ह। घर द्वार सँभाल। चल बल्कि हम लोग तालाबके बाधपर चलें।'

दुर्गाने कई बार तो कोई जवाब ही नहीं दिया। फिर एक बार बोली—"भयाको लौट आने दो। उसके बाद वह फिर गाने लगी

म इस पार खडी, उस पार है और कोई
बीच में बहती नदी पार कौन करे, यही पडी
कहा हो कन्हैया?

इतनेमें वहाँसे लौटे हुए लोगोंका शोरगुल सुनाई पडा। वह समझ गयी, गुरुजीने ओंग लिये नाहक ही ये लोग बाढसे लडकर आखिर हारकर लौट आये। वह जरा हसी 'हुँ, गुरुजीको खा-पीकर और तो कोई काम नहीं बाढ रोकने गया था!—' दुर्गाकी माँ नीचेसे चिल्लायी— दुर्गा—ओ दुरगा।'

'तालाबके बाधपर जा न तू। हरामजादी मरनेके डरसे ही मर गयी।

"अरी मर्गी!'

"तो फिर ऐसे चिल्ला क्या रही है ?"

इस बार दुर्गाकी माँने रोकर कहा—"अरी जमाई गुरुजी बह गया री !"

दुर्गा दौड़कर नीचे आयी— कौन ? कौन बह गया ?"

' जमाई गुरुजी ! बाढ़के चपेटमें आ गया।"

दुर्गा बाहर निकल गयी। गहरा रक्ताल्प पानी। उस पानीको पार करके कहाँ जायगी वह और जाकर भी क्या करेगी ? अपने मनको उसने दिलासा दिया—देबू कुछ कमजोर मर्द नहीं है। तैरना भी आता है उसे ! लेकिन बाँध तोड़नेवाली बाढ़का बहाव—उफ बड़ा भयंकर होता है वह ! बरगदका पेड़ सामने आ जाये तो उखाड़ फेंकती है जड़ समेत—जमीनकी छातीको चीरकर गड्ढा बना देती है।—सोचते सोचते ही वह राहके पानीमें उतर पड़ी। कमरसे भी ज्यादा पानी था। मुहल्ला इसी बीच खाली हो गया था। केवल मुखिया घरके चालियोंमें बैठा था। बतखें बाढ़के पानीमें तैर रही थीं। एक टूटी दीवारपर कुछ बकरियाँ खड़ी थीं। हठात् उसने देखा कि एक आदमी पानी ठेलते हुए एक घरसे निकलकर दूसरे घरमें घुसा। इस मुसीबतमें भी वह हँसी। रतना बाउरी ! कमबख्त छिछोरा चोर है। वह खोजता फिर रहा था कि छूटा हुआ कहीं कुछ मिल जाये। वह आगे बढ़ी।

"एह गुरुजी बह गया !'

जाते-जाते वह पलटकर खड़ी हो गयी। पुकारकर कहा "भया जबतक नहीं आ जाता, तू ऊपर चढ़कर बैठ जा मां ! भाभी तू भी ऊपर जा। चीज बतुस ऊपर उठा ले।'

माँने कहा आखिर घरके नीचे दबकर मरूँ ?'

नया घर है। इतनी जल्दी नहीं गिरेगा। '

तू कहाँ चली ?

मैं आती हूँ।"

वह और न रुकी। चली गयी।

दिनकी रोशनी ढलती जा रही थी। दुर्गा पानी चीरती हुई आगे बढ़ी। अपना टोला पार करके वह भले लोगोंके टोलेमें पहुँची। वहाँ पानी बहुत कम था। कमर भर पानी घटने भर हो गया। लेकिन इतना कम हो नहीं रहेगा पानी। बाढ़ बढ़ती जा रही थी। इस टोलेके घर भी कुछ ऊँची सतहपर है रास्तेसे सीढ़ी चढ़कर घरमें जाना होता है। घरके ओसारे आदि कुछ और ऊँचे है। सीढ़ियाँ डूब गयी थी—अब अँगनामें पानी पहुँच जायेगा। गाँवमें बहुत जोरका शोरगुल मचा था। बाल-बच्चे, गाय गोरु सरो-सामानके लिए भल

गृहस्थ लोग परेशान हो रहे थे। उन बाहरी डोम मोचियोंकी तरह एक घोरेमें सारी गिरस्ती भरकर निकल पड़नेका कोई उपाय नहीं था। इतनी ही देरमें चण्डीमण्डप स्त्रियोंसे भर चुका था। बाढ़के समय व सदा चण्डीमण्डपमें ही आश्रय लेती ह।

पहले चण्डीमण्डप माटीका बना था। कमरे-कमरे भी अच्छे नहीं थे। अबकी इस विपत्तिमें भी आराम है—चण्डीमण्डप पक्केका बन गया ह। साफ़-सुथरा। कमरे भी अच्छे। फिर भी सबको चण्डीमण्डपमें घुसनेका भरोसा नहीं हो रहा था। जान घोष क्या कहे—यही सोचकर जागा पीछा कर रहे थे सभी। लेकिन श्रीहरिने खुद ही सबसे कहा। बदनपर चादर डालकर वह सभी परिवारोंकी सुख-सुविधाकी तदबीर करता फिर रहा था। मीठे शब्दोंमें सबसे कहता चल रहा था—"घबरानेकी क्या बात ह? चण्डीमण्डप ह मेरा घर ह। मैं सब खोल देता हूँ।"

श्रीहरिकी इन बातोंमें कोई छल-कपट नहीं था। गावके इतने इतने लोग जब एक अचानक आयी विपत्तिके शिकार हैं तो वह निश्छल दयासे ही गल गया। न केवल चण्डीमण्डप वह अपना घर-द्वार भी खोल देनेको तयार हो गया। य घर-द्वार श्रीहरिके बापके समय बने थे और उसी समय घरोंको बाढ़से बचने योग्य बनाया गया था। काफी मिट्टी डालकर सतह ऊँची की गयी थी। उसपर भी छाती भर उचाई तक नींव थी घरकी। इधर श्रीहरिने दीवारोंमें अन्दरसे इटोंकी चुनाई करा दी थी। ओसारा पक्का यहाँतक कि आँगनको भी पक्का कर दिया है। उसके नये बठकेकी नीव तो इकतरफा-असी ऊँची ह। फिलहाल श्रीहरिने एक गोशाला बनवायी ह—बहुत बड़ी गोशाला। उसपर भी छप्पर बनवा दिया ह। उसमें भी बहुतोंके लिए जगह हो जायगी। उसका भी फ़र्श वगरह पक्का ह। उस इतनी इतनी जगह होते गाँववालोंको कष्ट होगा?

श्रीहरिकी माँ—बहरहाल श्रीहरिकी गम्भीरता और आभिजात्य देखकर पहलेकी तरह गाली-गलौज या चीख-पुकार करनेकी हिम्मत नहीं करती, खुद भी वह मानो बहुत बदल गयी ह—इज्जत-आराम पाकर वह भी बहुत-कुछ प्रसन्न-सा हो गयी ह। तो भी श्रीहरिके ऐसे संकल्पका उसने विरोध किया—नहीं बेटे, यह नहीं होनेका। म तुम्हें ऐसा नहीं करने दूँगी। करोगे तो म सिर फोड़ लूँगी अपना।"

श्रीहरिको उस समय वाद विवादकी फुरसत नहीं थी। इतने इतने लोगोंके आश्रयकी व्यवस्था करनी थी। मन ही मन वह एक बात और सोच रहा था—लोगोंको खिलाने पिलानेकी बात। जिन लोगोंको आश्रय देगा—उनके खाने-पीने

का इतजाम न करना क्या उस-जैसे आदमीके लिए शोभन होगा ? माँके कहने का उसने बहुत सक्षेपमें जवाब दिया—"छि मा !"

छि क्या बेटे। काहेकी छि ? तुम्हें तबाह करनेके लिए जिन लोगोने आन्दोलन किया ह उन्हें बचानेकी तुम्हें क्या पडी ह ? तुम्ह कैसी गरज ?"

श्रीहरि हँसा। कोई जवाब नही दिया उसने। मा तो बेटेकी वह हँसी देख कर ही चुप हो गयी। हालाँकि वह सन्तुष्ट होकर ही चुप रही। बेटेके गौरवसे उसने अपनेको गौरवान्वित समझा। जमीदारकी मा होनेसे उसमें भी बहुत परिवर्तन आ गया ह। इतने इतने लोगोके ब्याह सफेदके वे मालिक हैं, यह क्या कम गौरवकी बात ह ? लोग उसे राजाकी माँ कहते हैं। उसने मनमें साफ साफ यह अनुभव किया कि ईश्वरकी दया और आशीर्वाद उसके बेटे-पोते, उसकी सारी सम्पन्न घर गिरस्तीपर पडा ह तथा उसे और भी समृद्ध कर रहा है। श्रीहरि भी ठीक यही सोचता था।

मयूराक्षी सदासे ह सदा रहेगी। उसमें बाढ भी आयेगी। लोगोंकी आफत में उसके बेटे पोते मुसीबतजदोको इसी प्रकारसे पनाह दिया करेंगे। सब लोग आ-आकर कहेंगे—सौभाग्य कहिए कि घोष बाबू चण्डीमण्डप बनवा गये थे। उस समय भी उसका नाम होगा।'

इसीलिए श्रीहरि खुद चण्डीमण्डपम पहुँचा। मीठे शब्दोमें सबका स्वागत किया सबको भरोसा दिया घबरानेकी क्या बात ह चण्डीमण्डप ह। मेरा घर ह। म सब ख्याल देता हू।'

परिवार सहित खेतिहर गृहस्थ आ-आकर आश्रय लेने लगे। श्रीहरिका गुण गाने लगे। एकने कहा—'गाँवमें सौभाग्यशाली पुरुषका पदा होना गाँवका ही बड भाग ह। यही मण्डप गदके मारे किच किच रहा करता था और अब देखो—राजमहल भी जसे !

श्रीहरिने हसकर कहा 'तुम लोग मेरे कुछ निराने तो हो नही। सभी जाति गोत हो। अपने हो। यह सब-कुछ ता तुम्ही लोगोका ह।

दुर्गा रास्तेपर पानीमें ही खडा था। इस टोलेको पार करनेके बाद फिर बहार। पानी इस बीच घुटनके उपर तक बढ गया। बहारमें तरने लायक पानी था। और इधर बेला ढलती आ रही थी। गुरुजीको खबर लेकर अभीतक कोई नही लौटा। तो क्या गुरुजी बह ही गया ? उसकी आखोमें बरबस आँसू छलक आये। उसका जमाई गुरुजी—पाँच-पाँच गाँवके लोगोने जिसे धन्य धन्य कहा दूसरोंके लिए जिसने अपने सोनेके ससारको खाक हो जाने दिया गरीब दुखियाका अपना, अनाथाका सहारा—जिसने न्यायके सिवा कभी अन्याय नही

किया, वह गुरुजी बह गया ? और ये लोग उसका नाम तक नहीं ले रहे हैं ?

वह पानीमें आगे बढ़ी। गाँवके उस छोरपर रास्तेपर खड़ी रहेगी। विशाल बहार। फिर भी तो यह नजर आयेगा कि कोई आ रहा है या नहीं। जमाई गुरुजी वहां भी होगा, तो पूरबकी ही ओर वहां होगा। आखिर लोग बाग तो लौटेंगे! उन्हें दूरसे पुकारकर कुछ भी पहले तो खबर मिलेगी। दुर्गा बस्तीके पूर्वी छोरपर जाकर खड़ी हो गयी। अकेलेमें वह फफक-फफककर रोयी मन-ही मन बार-बार लुहार-बहूको गाली देने लगी। वह दहेमारी इस तरहसे गुरुजीके चेहरेपर कालिख पोतकर, उसकी हेठी कराकर चली नहीं गयी होती तो गुरुजी इस तरहसे बहारकी तरफ नहीं जाता। उसे तो गुरुजीका हाव भाव मालूम है। वह उसके हर कदमका मतलब समझ सकती है।

गाँवमें कोई आदमी तेजीसे पानी काटता हुआ आ रहा था। दुर्गाने मुँह फेर कर देखा। कुसुमपुरका रहम शेख। उसीने पूछा—

"कौन, दुर्गा है क्या ?"

"हाँ।"

"अरी, देबू बाबाकी कोई खबर मिली ?"—शेखके स्वरमें बड़ी घबराहट थी। इत्तफ़ाकसे देबूसे उसका दुराव हो गया है। रहम अभी जमींदारका आदमी है। अभी भी जमींदारकी ही तरफसे काम करता है। दौलतसे भी खूब पटरी बठती है। देबूकी चर्चा आनेपर उसके खिलाफ ही बोलता है। लेकिन देबूकी विपत्तिका समाचार सुनकर वह स्थिर नहीं रह सका। भागा भागा आ रहा है। वह घरमें नहीं था, वरना बाँध टूटनेकी सुनते ही देबू वगैरहके साथ हो आता। ताड़ बेचनेके जो पैसे उसके पास थे, उन्हीं पैसोंको लेकर वह सबेरे ही जंक्शन बाजार गया था। रेलका पुल पार करते वक्त ही बाढ़ देखकर उसे थोड़ा खौफ़ हुआ था। बाँध टूटनेकी खबर उसे बाजारमें ही मिली। दौड़ते दौड़ते जब वह लौटा, तबतक पानी उसके भी गाँवमें घुस चुका था। उसके घरके औरत-बच्चोंने दौलतके यहाँ पनाह ली थी। गाँवके लगभग सभी मातबरोंका परिवार वहीं था। मामूली खेतिहर लोगोंने मसजिदमें शरण ली। और जो मेहनत-मशक्कत करके रोजी रोटी कमाते हैं ऐसे लोग बस्तीके पच्छिमवाले टीलेपर चले गये थे। वहींपर इस गाँवके पुरनिया महापुरुष गुलमुहम्मद साहबकी कब्रके पास। कब्रपर मौलसिरीका एक घना-सा पेड़ है, उसी पेड़की छायामें। उन्हें खबर देने गया कि रहमको देबूके बारेमें मालूम हुआ। सुनकर वह चंचल तो हो गया।

एक ही क्षणमें उसे ऐसा लगा, मानो देबूके सामने उसने कितना अपराध किया है। उस समय जोशमें, लोगोंकी जबानी देबूके घूस लेनेकी बातपर विश्वास

करनेके बावजूद रहमके मनके कोनेमें एक सन्देह था—देबूको उसने बहुत छोटी उम्रसे जो देखा था—उस उसने प्यार किया था। उस सन्देहकी बुनियाद वही जानना वही प्यार ही था। लेकिन उस सन्देहको भी अबतक सिर उठानेका मौका नही मिला। दंगावाले मामलेकी सुलहमें जमीदारने उसे इज्जत दी। वही इज्जत पत्थरकी नाइं अबतक उस सन्देहको दबाये रही। आज यह जो खबर मिली इसने उस पत्थरको ठेलकर हटा दिया और वह सन्देह प्रबल होकर जाग पड़ा। देबू—जो इस तरहसे अपनी जान कुर्बान कर सकता है—वह वैसा शैतान हरगिज नही हो सकता। उसने जमीदारसे हरगिज रुपया नही लिया है। ऐसा आदमी ही नही है वह। वह बाबुओंकी चालबाजी थी। वह अगर बाबुओंका आदमी होता तो क्या कंकणाके इस इतने बड़े मामलेमें कभी भी किसी वक्त भी वहाँ दिखाई नही पड़ता? वह अगर इतना ही स्वार्थी है तो इस हिम्मतके साथ बाँधकी दरारपर जाकर क्यों खड़ा हो गया? सो, रहम वहींसे भागा भागा आया।

रहमके पूछते ही दुर्गाकी आखोंसे झर झर आंसू झरने लगा। इतनी देरके बाद एक आदमीने उसके जमाई पुरजोकी सुध तो ली!

रहमने बहुत ही परेशान होकर पूछा—"दुर्गा?"

दुर्गा बोल नहीं सकी। गरदन हिलाकर ही उसने जताया, "नही, कोई खबर नहीं मिली।"

और रहम उसी दम पानीमें उतर पड़ा। दुर्गाने कहा "रुकिए शेखजी, मैं भी चलूँगी।"

रहमने कहा "चल! मगर तैरने भर पानी है। इतना तैर सकेगी?"

कपड़को कसकर दुर्गा बढ़ चली।

रहम बोला "ठहर! वह देख—महाग्रामसे कुछ लोग निकले हैं।"

बाढ़के पानीमें डूबी हुई जमीनको बायें छोड़ते हुए महाग्रामके पास-पास कुछ लोग आ रहे थे। गाँवके किनारे वहाँतक अपना कम पानी है। बीच बँहारमें तो तैराव भर पानी है। ऊपरसे धारा भी।

रहमने वहींसे हाँक लगा दी। लेकिन उसकी भी आवाज बार-बार रुंध आती थी। दिन भर रोजेका उपवास। गला सूख रहा था। अपने गलेकी कम जोरीको समझकर रहमने कहा, "दुर्गा तू भी पुकार।"

दुर्गा भी रहमके साथ-साथ जी जानसे पुकारने लगी। कहीं न पाकू सतीश, जगन डॉक्टर ही हो! कहीं वे आकर यह कहें कि देबूका पता नहीं चला!

वही लोग थे। हाँकका जवाब आया। रहमने कहा, 'हा, वही लोग ह। इरशाद जसा गला लग रहा ह।"

अबका उसने नाम लेकर आवाज दी—"इ र शा द!"

जवाब मिला—'हा।"

थोडी ही देरमें वे लोग आ पहुँचे। इरशाद, सतीश, पातू हरेन और देवुडियाका एक भल्ला।

रहमने पूछा—' इरशाद गुरुजी? देवू चाचा मिला?'

लम्बा नि श्वास छोडकर इरशादने कहा मिला। पानीके वगसे गिर पडनेके कारण माथेमें चोट आयी है। होश नही ह।"

दुर्गाने पूछा—"कहा, इरशाद मिया, गुरुजी कहा ह?"

देवुडियामें। उसीके आसपास राम भल्लाने उसे खींचकर निकाला है।'

"बच तो जायेगा न?'

'जगन डाक्टर ह। दो भल्ला वकना गये ह अगर वहाका डाक्टर आ जाये। छिदाम भल्ला जगन डॉक्टरका बग ले जानेके लिए आया ह।'

दुर्गाने कहा, 'म भी जाऊँगी।"

चण्डीमण्डप लोगासे भर गया था। वे लोग शोरगुल मचा रहे थे। अपने अपने सरो-सामान सहेजकर सब रात बिताने योग्य जगहके लिए लड झगड भी रहे थे। बच्चोने चिल्ल पा मचानी शुरू कर दी थी। किसीका किसीकी तरफ ताकनेकी फुरसत नही थी। ये लोग जसे ही चण्डीमण्डपके पास पहुँचे कि कुछ लोग दौडकर इनके पास आये।

"घोपाल, गुरुजीका क्या समाचार ह? गुरुजी, हमारा गुरुजी?"

'सतीश ऐ सतीश?"

"पातू, बता न?'

चण्डीमण्डपम स्त्रियान सब छोड छाडकर इधर ध्यान दिया। चुपचाप प्रतीक्षा करने लगी।

हरनने गरम होकर कहा, 'ह्वाट इज दट टु यू? इसस तुम्हें क्या मतलब? सेलफिश पीपुल सब!"

इरशादन कहा, "वडी-वडी कठिनाईके बाद गुरुजी मिला ह। मगर हालत खतरनाक ह।'

चण्डीमण्डपके सारे लोग मानो पत्थर हो गये। मौनको भग करके एक

नारी कण्ठ गूँजा। एक प्रौढ़ाने काली मैयाके चरणोंमें माथा पीट-पीटकर बड़े ही आर्त्त स्वरमें कहा—"उसे बचा दो मैया, उसे बचा दो! देबूको तुम बचा दो। वह सोने-जैसा लड़का है। हे मा काली! तुम मालिक हो, उसे बचा दो!"

उन ठक-से खड़े लोगोंमें प्रार्थनाकी गूँज उठी—'माँ माँ! बचा लो माँ!'

औरतें रह रहकर आँखें पोंछ रही थीं।

साँझ हो गयी। जगन डाक्टरका दवावाला बैग लेकर वह भल्ला जवान जा रहा था उसके पीछे पीछे जा रही थी दुर्गा। वह भी मन ही मन कह रही थी— बचा दो मा, बचा दो। जमाई गुरुजीको बचा दो। अबकी पूजामें म दायें-बायें आड़ा बकरा चढ़ाऊँगी।'

उसकी आँखोंमें रह रहकर आँसू आ जाता था। अपने मनको दिलासा दे रही थी, आशासे कलेजा मजबूत करना चाहती थी कि—गुरुजी जरूर बच जायेगा! इतने इतने लोग, सारे गाँवके ही लोग जिसके लिए देवीके चरणोंमें सिर पीट रहे हैं उसका बुरा हो सकता है भला? कुछ ही देर पहले, जब लोग घोषकी खुशामदें कर रहे थे, तो उनके कलेजेके अन्दरसे ऐसा निःश्वास कहा निकल रहा था! आँखोंसे आँसू कहाँ निकला! वह तो आड़े आकर बड़ेके आश्रयमें सिर छिपाकर—हया शरमको पीकर उसकी झूठी खुशामदें कर रहे थे। वह बात उनके प्राणोंकी बात नहीं। हरगिज नहीं। उनके प्राणोंकी बात यही है। आशासे टपाटप आँसू क्या यों ही निकल सकता है? मनुष्यके ओछेपनसे ही दुर्गाका जीवनका घनिष्ठ परिचय है। उसने मनुष्यको कभी अच्छा नहीं समझा। आज उसे लगा—आदमी अच्छे होते हैं आदमी जरूर अच्छे होते हैं! बड़ी मुसीबतमें, बड़े अभावोंमें पड़कर ही वे बुरे होते हैं। उसपर भी उनके हृदयमें भलापन रहता है। स्वार्थके लिए भी किसीसे लड़नेपर जी दुखता है। पाप करनेसे उसे दाग होती है।

आदमी अच्छे होते हैं। देबू गुरुजीको लोग भूले नहीं हैं। गुरुजी बच जायगा!

'कौन हो भई कौन जा रहे हो?'—पीछेसे मारो गलीसे किसीने पूछा। भल्ला जवानने मुँह उधर करके कहा "हम लोग हैं?'

'तुम लोग कौन?'

अबकी वह छोरा चिढ़ गया। बोला 'तुम कौन हो?

डाँटके स्वरमें पुकार आयी— ठहर जा।

"नहीं।"

"ए।"

छोकरा हँस पड़ा, मगर उसने चलना नहीं बन्द किया। दुर्गा शंकित हो उठी। पीछेके उस आदमीने कहा "अबे साला!"

छोकरा इस बार पलटकर खड़ा हो गया। बोला, "ज़रा इधरको आ जाओ जीजाजी देखूँ जरा तुम्हें!"

"कौन है तू?"

"तू कौन है?"

"मैं कालू-शेख हूँ। घोष बाबूका चपरासी। ठहर जा तू।"

"मैं हूँ जावन भल्ला। तुम्हारे घोष बाबूको मैं कुछ धारता नहीं।"

तुम्हारे साथ वह औरत कौन है? औरत?"

दुर्गाने तीखे स्वरमें कहा, "मैं दुरगा हूँ।"

"दुरगा?"

"हाँ।"

कालू जरा चुप रहा। फिर बोला, "अच्छा जाओ।"

कालू पद्मकी खोजमें निकला था। वह घोषके घरमें नहीं थी। गाँवकी हलचल जो हुई, वह उसी समय कहाँ चल दी, किसीको पता नहीं। शामको श्रीहरिको इसका पता चला और तब वह मारे गुस्सेके पागल हो उठा। उसकी खोजके लिए उसने कालूको भूपालको भेजा।

पद्म भाग गया। पिछली रात, एक अस्वस्थ मानसिक स्थितिमें प्यासा पागल जैसे कीचमें कूद पड़ता है वह वैसे ही श्रीहरिके दरवाजेके सामने गयी और उसीके घरमें चली गयी। आज सुबहसे उसके पछतावेकी हद न थी। उसके जीवनकी कामना महज खून मासके शरीरकी ही कामना न थी, पेटके लिए अन्नकी कामना ही न थी, वह थी उसके मनकी फूली हुई कामना जो पुत्रकी परिणतिमें अपनेको सार्थक करना चाहती है। अन्न वह सिर्फ अपना पेट भरनेके लिए नहीं चाहती, अन्नपूर्णा होकर उसे परोसना चाहती है अपने पुत्रके पत्तलपर, पुरुषके पत्तलपर! उसकी कामना बहुत थी। श्रीहरिके यहाँ रहनेका मतलब समझकर वह सवेरेसे छटपटा उठी थी। इधर साँझ हुई और उधर बाढ़से विपन्न लोगोंकी भीड़ हुई। उसी मौकेसे वह निकलकर चली गयी। गाँवके दक्खिन पानी पूरबमें पानी, पच्छिममें भी वही। सो वह उत्तरको बहारमें अँधेरेमें छिपकर अपनी अजानी मंजिलकी ओर चल पड़ी—वह चाहे जहाँ हो।

उस भल्ला छोकरेके पीछे पीछे दुर्गा चली जा रही थी।

बहारमें बाढका पानी और बढ गया था। तीसरे पहर जहा कमर भर पानी था, वहा अब छाती भर हो आया। अब शिवकालीपुरके खेतिहरोके भी घरमें पानी घुस रहा था। वे दोनो महाग्राम होकर चले। महाग्रामके रास्तेमें भी घुटने भरसे ज्यादा पानी था। बाढका यह हाल कि लगता था—घण्टे दो घण्टेमें खेतिहरोके घरमे भी पानी घुस जायेगा। महाग्राम एक समयमें समृद्धिशाली गाव था। खण्डहरोकी वहा भरमार है। माटीके अम्बारसे लगे है। उन्ही ऊचे स्तूपापर पिछले दिनोके लोगाके लगाये पेडोको छायामें लोगोने आश्रय लिया था। न्यायरत्नके चण्डीमण्डप और घरमे जितने लोग आ सके उन्होंने उन सबको शरण दी।

दखुडियाम एक तिनकोडीके ही घरका भरोसा था। उसका घर बहुत ऊँचा है। ज्यादातर लोगोने वही शरण ली थी। बहुत-से लोग दूसरे गाँवमें भाग गये। भल्ला लोगोम-से बहुतेरे अभीतक बाँधपर ही बठे थे। बैठे थे कि कोई लकडी बहकर आती हो, तो पकडें। राम तारणी आदिने रातको भी वही रहनेका तय किया था। कितने बडे बडोका घर गिरेगा। लकडीका सन्दूक भी बहकर आ सकता है। बाबू लोग भी बहकर आ सकते है—जिनके कुरतेमें सोने के बटन होगे उँगलीमें हीरेकी अगूठी होगी जेबमें होगी नोटोकी गड्डी। कमर की गजियामें मुहरें भरी होगी। लेकिन बारी-बारीसे एक एक आदमी तिनकौडी के यहाँ रहेगा। गुरुजी बीमार है—जानें कब क्या जरूरत पडे।

जगन डॉक्टर तिनकौडीके ओसारेपर बैठा था।

जीवनन ले जाकर दवाका बग वहींपर रखा।

दुर्गाने अकुलाकर पूछा—'डाक्टर बाबू जमाई गुरुजी कैसे है?'

डॉक्टरने बग खोला। सुईका सरजाम निकालते हुए कहा 'बकबक मत कर, बैठ।'

ऐन इसी वक्त अन्दरसे देवूकी आवाज सुनाई पडी—कौन? कौन?

दोनों अन्दरकी ओर लपके। देवूने आँख खोली थी। उसके सिरहाने बैठी तिनकौडीकी बेटी सोना सेवा कर रही थी। सुर्ख आँखोकी बिमार निगाहसे उसकी ओर ताककर—हठात दोनो हाथोसे सोनाका झोटा पकडकर उसके चेहरेको अपने सामने खींचकर देवू कह रहा था—कौन?—कौन?

सोनाके प्राण मानो उडे जा रहे थे। मगर बडा धीरज था उसे। वह चुपचाप देवूके हाथ छुडानेकी कोशिश कर रही थी।

देवूने फिर कहा बिलू? बिलू? कब आयी तुम? बिलू।

जगनने देवूके हाथ दबाकर सोनाका बाल छुडा दिया।

दुर्गाने पुकारा—"जमाई-गुरुजी!"

जगनने धीमेसे कहा, 'मत पुकार। विकारमें बक रहा है।'

अठारह

मयूराक्षीकी सर्वग्रासी बाढकी भीषणतासे इलाका तबाह हो गया। पिछले पचीस वर्षोंमें ऐसी काल बाढ—यह घोडा-बाढ नहीं आयी। पंचग्रामकी उस सुदूर प्रसारी बैहारमें शस्यका कोई चिह्न ही न रहा लगभग। कुछ पौधे तो बाढ बहा ले गयी। जो बचे सो सड गये। बदबू उठ रही थी। बहारका पानी तक हरा हो गया था। बाँधके किनारे, जिससे होकर बाढका बहाव बहा था, किसानोंने जमीनको जोत-जोतकर खाद डालकर चन्दन-सा मुलायम और सन्तान वती माताकी छाती-सा खाद रससे उर्वर बनाया था—उन खेतोंमें अनउपजाऊ चिट चिट माटी जाम उठी थी कुछ खेतोंमें बालूकी ढेरी जम गयी थी।

गाँवके किनारे किनारे जहाँ पानीका बहाव नहीं था जो खेत थे वे बादमें डूबे और सबसे पहले ही बाढसे निकल आये—उन खेतोंमें थोडा-बहुत शस्य रह गया था। मगर उसकी भी हालत शोचनीय थी। उनकी ठीक वही दशा थी जो दशा अकाल और महामारीसे किसी प्रकारसे बचे हुए लोगोंकी होती है। अब बस्तीके घरोंके गिर जाने, बठ जानेकी बारी थी। कुछ घर तो बाढके समय ही धस गये थे, लेकिन बाढके बाद ज्यादा बठ रहे थे। बाढमें घर इसी तरहसे ज्यादा टूटते हैं। घरकी दीवारोंकी नींव पानीमें भीगकर नम हो जाती है। इसके बाद जब पानी निकल जाता है और धूप उग आती है, तो फूलकर दीवारें धँस जाती है। लगभग पचास फी-सदी घर गिर गये। पूस-पुआल बह गये गोचर भूमिकी घास पानीमें डूबी रही, इसलिए सड गयी। गाय-गोरू भेंड-बकरीका अनाहार आरम्भ हो गया। मौका मिलते ही वे उत्तरको ओर भागे। मयूराक्षी पूरब-पच्छिम बहती है। किनारेके सभी गावोंकी उत्तरी बहार ऊँची है। यह बहार सदा उपेक्षित पडी रहती है। वही बहार पानीमें नहीं डूबी। इस बार चूँकि काफी बारिश हुई इसलिए वहाँ फसल काफी अच्छी थी। गाय

गोरू, भेंड-बकरियाँ दौड़कर उसी बहारमें जाना चाहती। अबकी उत्तरी बहार ही लोगोंका भरोसा था, मगर उधर खेत बहुत कम था।

श्रीहरि घोष अपने बैठकेमें बैठकर तम्बाकू पी रहा था। अपने कारिंदा दासजीसे वह यही सब बातें कर रहा था। दास शिकायत करके कह रहा था— 'लगानकी बढ़ोत्तरीका आपसी निबटारा बड़ा बेजा हुआ, बहुत बेजा।"

उसका कहना था—'आपसी निबटारा न करके अगर मुकदमा करनेके संकल्पपर ही अडिग रहा जाता तो बिना मेहनत एकतरफा डिगरी होती। यानी रैयतकी ओरसे बिना किसी झमेलेके ही डिगरी हो जाती। ऐसी हालतमें अगर अदालतकी तरफसे आपसी मेल मिलाप कराया जाता, तो भी बड़ा लाभ होता। अदालतके बिना आपसी निबटारेसे रुपयेमें दो आनेसे ज्यादाकी बढ़ोत्तरी नहीं होती। होनेसे अदालत उसे नहीं मानती। लेकिन मुकदमेसे या नालिश करके आपसी समझौता कर लेनेसे बढ़ोत्तरी ज्यादा हो सकती है। ऐसा कि रुपयेमें आठ आने तककी नजीर है।

श्रीहरिको बात याद आयी। लेकिन कंकनाके बाबूने जो सब गुड़-गोबर कर दिया! जिस बुरी साइतमें रहमसे हंगामा हुआ।

दासने कहा रियायाके संकल्पका घड़ा बाढ़के पानीमें बह जाता। फिर तो पेटकी गरजसे आपके ही दरवाजे आकर वे पड़ जाते। कलवालेने उस समय बहारका धान देखकर रुपया देना चाहा था। लेकिन इस बाढ़के बाद वह किसीको धेला भी नहीं देता।'

श्रीहरि जरा हँसा—तनिककी हँसी। वह जानता है। उसके ऊँची बुनियादके घरको बाढ़ कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकी। धानकी मोरियाँ ज्योंकी त्यों नदी उसके आँगनकी शोभा बढ़ा रही थी। उसने कल्पना की कि पाँच सात गाँवोंके लोग उसके खलिहानके उस फाटकपर भिखमंगे जैसे हाथ जोड़कर गये हैं।— धान चाहिए। उनके बाल-बच्चे भूखे हैं, बहारमें एक भी बीजके धानका पौधा नहीं।

भादोंके अभी भी पंद्रह दिन बाकी बचे थे अभी भी रात दिन करारी मेहनत की जाय तो थोड़ी-बहुत जमीनमें खेती हो सकती है। बीज छींटनेसे कुछ ही दिनमें बीजका पौधा उग आयगा। उन बीजोंसे जिसने जितना बो खेती कर सके तो फिर भी कुछ मिल मिला जायगा। कमसे कम चारमेंसे एकमें भी धानकी बाली होगा। श्रीहरिकी अपनी जमीन बहुत है। अमरकुण्डा बैहारके जो सरन अच्छे खेत हैं लगभग सब उसीके हैं। उन खेतोंमें जहाँतक बन सके खेती करानेकी तैयारी उसने शुरू भी कर दी थी। जो भी हो जाये लाभ ही है।

आषाढका रोपा नामका है। गर्ज कि आषाढमें खेती करने योग्य पानी कम ही होता है रोपा भी कम होता है। हो भी तो शस्यसे ज्यादा पत्ता ही होता है। खेती सावनमें अच्छी होती है। उपज भी होती है और आम तौरसे यहां खेतीके लायक बारिश सावनमें ही होती है। सावनमें न होकर भादोंमें बारिश हो तो वह वृष्टि अनावृष्टिकी होती है। उस समय फसल होनेकी बात भी नहीं उठती। पौधको फलनेका मौका नहीं मिलता। लिहाजा जितने पौधे रोपे जाते हैं, गिनकर उतनी ही बालियाँ होती हैं। और कहावत है क्वारमें बोना किसलिए? यह भादोंका महीना है। अभी भी पन्द्रह दिन हैं भादोंके। अभी भी धान रोपा जा सके तो पौधा पीछे एक एक बाली मिलेगी। खेतिहरोंको रोपनेके लिए, खानेके लिए धान चाहिए।

श्रीहरि बेरहम नहीं होगा। वह लोगोंको धान देगा। अपनी मोरियाँ खाली करके देगा। कल्पनाशील वाबो उसने देखा कि लोग धान कर्ज लेनेके कागज पर सही बनाकर दे रहे हैं। और मुक्तकण्ठने उसकी जय जयकार करके लोगोंने और भी एक कागज लिख दिया अदेखा—उसके एहसानका कागज। एकाएक उसने इन सबमें अमोघ विचारका विधान देखा। गम्भीर होकर बोल उठा—'हे हरि। तुम्हीं सत्य हो।'

राजा ईश्वरका प्रतिभू है। सभी देवताके अंशसे राजाका जन्म होता है। धरती भगवान्‌की है। भगवानका प्रतिभू राजा पृथ्वीका शासन करता है। पृथ्वीकी भूमि उसकी है—सारी सम्पदा उसकी है। राजाका प्रतिभू है जमीदार। राजाने ही जमीदारको राजाका अधिकार दिया है—तुम्हीं लगान वसूल करना शासन करना। राजाके ही नियमसे प्रजा भूमिके लिए कर देती है राजाके बराबर ही राजाके प्रतिभूको मानती है। रैयतोंने उस विधानको नहीं माना था। इसीलिए उन्हें बाढकी ऐसी भयंकर सजा उनसे मिली। अब उसके इम्तहानकी बारी है। विपत्तिमें प्रजाकी रक्षा करना राजाका कर्त्तव्य है। राजाके प्रतिभूके नाते वह कर्त्तव्य उसपर आ पड़ा है। वह अगर उस कर्त्तव्यका पालन न करे तो वे रिहाई नहीं देंगे। श्रीहरि उन सबको धान देगा। अपने कर्त्तव्यकी उपेक्षा नहीं करेगा। दोनों हाथ जोड़कर उसने भगवान्‌को प्रणाम किया। उन्होंने उसके भण्डारको भरा-पूरा बनाया है। देनेको बाकी ही क्या रखा है?—जगह जमीन बगीचा तालाब घर—अन्त-अन्तमें जिस चीजकी उसे कल्पना तक नहीं थी यह जमीदारी भी उन्होंने उसे दी है। गुहाल भर गाय-गोरू खलिहान भरी मोरियाँ लोहेके सन्दूकमें भरा रुपया, सोना नोट—दोनों हाथोंसे दिया है। उसके जीवनकी सारी ही कामनाएँ उन्होंने पूरी की हैं—पापकी कामना तक

पूरी करके अजीब ढगसे उस पापके प्रभावसे उसे बचाया है। अनिरुद्धसे जब उसका विरोध हुआ तभीसे उसे यह ख्वाहिश थी कि अनिरुद्धकी जोत ज़मीन छीनकर उसे देश निकाला दे और उसकी बीवीको नौकरानी रखे। अनिरुद्धकी ज़मीन उसे मिल गयी है—अनिरुद्ध घर छोड़कर चला भी गया। अनिरुद्धकी बीवी भी अपनी इच्छासे ही उसके यहाँ आ पहुँची थी। खैर, वह भाग गयी सो अच्छा ही हुआ। भगवान्‌ने उसे बचा लिया है।

अब देबू घोषको सबक सिखाना होगा। और भी कई लोग हैं—जगन डाक्टर, हरन घोषाल तिनकौड़ी पाल, सतीश बाउरी, पातू बजनिया दुर्गा मोचिन। तिनकौड़ीका तो इन्तजाम हो गया है। सतीश पातू—ये तो चींटी हैं। लेकिन हाँ, दुर्गाको खासी सजा देनी पड़ेगी। जगन हरेनको तो वह कुछ लगाता ही नहीं। उन दोनोंकी तो कोई वक्त ही नहीं। देबूके लिए भी पहलेसे ही इन्तजाम किया गया है। इस बाढ़के आ जानेसे ही नहीं हो पाया। अब एक दिन पचायत बुला लेनी होगी। देबू अब बहुत-कुछ ठीक हो चुका है, और भी थोड़ा हो ले। देखुड़ियासे अपने घर आ जाये। उसे चण्डीमण्डपमें बुलवाकर पचग्रामके लोगोंके सामने उसका विचार होगा।

कालू शेख आया। सलाम बजाकर उसने एक चिट्ठी, दो पैकेट और एक अखबार दे दिया। आजकल डाक लेनेके लिए रोज उसका आदमी कंकनाके डाकघर जाया करता है। यह उसने कंकनाके बाबुओंसे सीखा है। अखबारमें पढ़कर चिट्ठी लिख करके वह सूचीपत्र मँगवाया करता है। चिट्ठी-पत्तरसे कम ही वास्ता है। वकील मुख्तारके यहाँसे मुकदमाकी खबर आती है। और आता है एक दैनिक समाचार पत्र। चिट्ठीमें एक मुकदमेकी तारीख थी। चिट्ठी दास बाबूको देकर श्रीहरि अखबार खोलकर बैठ गया। अखबारकी मोटे अक्षरोंवाली हैड लाइनोंपर निगाह दौड़ाते हुए एकाएक खबर देखकर वह चौंका। मोटे मोटे अक्षरोंमें लिखा था—मयूराक्षी नदीमें भयंकर बाढ़। साँस रोककर वह उस खबरको पढ़ गया।

देबू भी अवाक् हो गया।

वह बहुत हद तक स्वस्थ हो चुका था, लेकिन कमजोरी अभी थी। कंकनाके अस्पतालके डॉक्टरकी चिकित्सा जगन डॉक्टरके जतन और सोनाकी सेवासे वह स्वस्थ हो उठा। कल उसे पथ्य मिला। आज वह बिछौनेपर ओठँगकर बैठा था। बैठकर अपनी बात सोच रहा था जानेसे हो चला गया होता, तो

ठीक था। अब नही रहा जाता। कमजोर और थके शरीरसे लेटे-लेटे उसे लग रहा था कि धरतीका स्वाद, गंध, वर्ण सब खत्म हो गया है। क्यों? उसका जीना आखिर किसलिए? जीनेका खयाल होते ही उसे अपने घरका ध्यान हो आता। सूना, सन्नाटा पडा, धूलिसे भरा घर! कि तिनकौडीका बेटा गौर हाफ्ता हुआ आया—"गुरुजी!"

"गौर?" देवूको अचम्भा हुआ—'बात क्या है गौर? स्कूलसे लौट आये?"

गौर जकशनके स्कूलमें पढता है। स्कूलकी छुट्टीका यह समय नही था। एक अखबार देवूके सामने रखते हुए गौरने कहा 'देखिए।"

'क्या है? देवू अखबारपर झुक गया। शीर्षक देखा— मयूराक्षीमें भयकर बाढ!' अखबारके किसी निजी सवाददाताने लिखा था। बाढकी भीषणताका जिक्र करते हुए लिखा था— शिवकालीपुरके तरुण समाजसेवी देवनाथ घोषने बाढके खतरेको रोकनेकी हर कोशिश की लेकिन कोई नतीजा नही निकला। बाध बाधनेकी चेष्टा करते हुए वे बाढमें बह गये। बडी-बडी मुश्किलसे उनकी जान बची है। इसके बाद इलाकेके नुकसानका उल्लेख करते हुए लिखा था— इलाकेके लोग बे घर-बारके हो गये हैं। सकडे साठ घर गिर गये। घरका अनाज और सारी सामग्रियाँ बह गयी। उन्हें जीनेका कोई सहारा नही रह गया। खडी फसलकी जो उम्मीद थी, वह भी सड-गल गयी। बहुतोंके गाय-गोरू भी बह गये। यही अत नही बाढ और अकालकी अभिन्न महामारीकी भी आशका है। उनके जीनेके लिए तुरत खाद्यकी जरूरत है, भविष्यके सहारेके लिए बीज धानकी आवश्यकता है। महामारीसे बचनेके लिए प्रतिषेधककी व्यवस्था जरूरी है। नही तो देशका यह हिस्सा मरघटमें बदल जायेगा। मुसीबतज़दा उन लोगोंको बचानेकी जिम्मेदारी देशवासियोंकी हैं। उसी जिम्मेदारीके लिए देशवासियोंसे अपील है। वहाके लोगोंकी सहायताके लिए एक 'बाढ राहत समिति' कायम की गयी है, जिस समितिकी अध्यक्षताका भार उस इलाकेके एकनिष्ठ सेवक श्री देवनाथ घोषको सौंपा गया है। लोगोंकी यथासाध्य सहायता देवताके आशीर्वादके समान ही स्वीकार की जायेगी।'

देवू अवाक हो गया! माजरा क्या है! अखबारमें यह सब किसने लिखा? समाजसेवी—एकनिष्ठ सेवक! देशके लाखों लाख लोगो तक इस खबरकी घोषणा किसने की?—अखबारको एक तरफ हटाकर खुली खिडकीसे बाहरकी ओर देखते हुए वह चितामें डूब गया।

गौरने अखबार लेकर वह खबर बहुतोंको पढ़कर सुनायी। जिसने सुनी, वही अवाक रह गया। दंगके अखबारने देवूकी जय-जयकार की है, इससे लोग खुश हुए। श्रीहरि देवूको समाजसे निकालनेकी कोशिश कर रहा है, मजबूर होकर लोगोंको श्रीहरिकी रायसे ही राय मिलानी पड़ेगी। फिर भी लोगोंको खुशी हुई। उन्होंने बार बार आपसमें इस बातकी ताईद की—"बात तो सही है। सही सही ही लिखा है—इसमें जरा भी झूठ नहीं। हमारा देवू तो संन्यासी है—लोगोंके दुःखसे दुःखी, लोगोंके सुखसे सुखी।"

तिनकौड़ीने बिगड़कर बेरहमीसे लोगोंकी लानत-मलामत की। कहा, "अरे दोमुँहे साँप तुम लोग चुप रहो। कुत्तेकी तरह जब जिसके पास गये, उसीके तलवे चाटे और पूँछ हिलायी! देवूकी तारीफ करनेवाले तुम कौन होते हो? तुम लोग छिरू पालके पास जाओ, और दल बनाकर देवूको समाजसे पतित करो जाकर। जाओ जाकर अपने छिरूसे कहो कि अखबारने देवूके लिए क्या लिखा है?

तिनकौड़ीकी गाली गलौज लोगोंने चुपचाप सुनी—सिर नवाकर स्वीकारा। एकने कहा, 'मण्डलजी पेट पापी है, क्या करें, कहो? तुम जो कह रहे हो, बिलकुल बजा है।

'पेट मुझे नहीं है? मेरे बाल-बच्चे नहीं हैं?'

इस बातका कोई जवाब लोग नहीं दे पाये। तिनकौड़ी पापी पेटकी परवाह नहीं करता उसे वह जीत गया है—इसे ये लोग मानते हैं और इसके लिए उसकी तारीफ करते हैं। और फिर कभी-कभी तिनकौड़ीके इस तने रहनेकी वास्तविकतासे अनजान होना बताकर उसकी निंदा करके अपनी असमर्थताकी लाजको ढँकते हैं, आत्मग्लानिसे बचनेकी कोशिश करते हैं। बहुत बार सोचते भी हैं कि हम भी तिनकौड़ीकी तरह पेटके लिए सिर नहीं झुकायेंगे। कोशिश भी बहुत करते हैं परन्तु पेट शत्रुके नागपाशका बंधन ऐसा है कि उसके कठिन दबाव और जहरीले निःश्वाससे जर्जर होकर सब तुरंत बिखर जाता है। इसीसे फिर हिम्मत नहीं होती।

बाप दादा और उनने भी पुरखे इस बड़े अनुभवसे अपनी संतानोंको बार-बार होशियार कर गये हैं कि, 'सिर पत्थरसे सख्त नहीं होता—उसे ठोकना मत।' पेटसे बड़ा कुछ भी नहीं, भूखसे बड़ा पीड़ा दूसरी नहीं। पेटका अनादर खतरा हरगिज मत मोल लेना। ये बातें उनकी नसोंमें लहू साथ बहती हैं। उनके पेटका अन्न तो श्रीहरिके ही यहाँ है—श्रीहरिकी उपेक्षा वे कैसे करें? फिर भी कभी-कभी वे झगड़ना चाहते हैं? उनके कलेजेमें कहीं और एक इच्छा छिपी। एक अंतरतम कामना—वह कामना कभी-कभी सिर उठाकर कहती

है—"न, और नहीं। इससे तो मौत अच्छी है!"

इस बार विराट आन्दोलनके वक्त उनकी वह इच्छा एक बार जग पड़ी थी। वे खिलाफमें खड़े हो गये थे, पर तुरत टूट गये। जितनी देर तक वे खड़े रह सकते थे या जितनी देर तक खड़े रह सकनेकी बात थी—न उससे भी कम समयमें टूट बिखरे! जाने कैसे, वहाँके लोगोंके साथ दंगा होनेकी नौबत आ गयी, सदरसे सरकारी फौज आ पहुँची। पुश्तोंसे जो भय उनमें संचित होता आया था, उस भयसे वे घबरा उठे। ऊपरसे श्रीहरिने दानोंका लोभ दिखा दिया। बस, वे टिक नहीं सके। टिककर भी क्या होता? क्या कर लेते वे? इस धक्केके बाद श्रीहरिके सिवा उनके जीनेका सहारा जो नहीं था! श्रीहरिकी बातोंपर स्याह-को सफेद और सफेदको स्याह कहे बिना उपाय क्या है! कोई इस पेट-दुश्मनको जिला लो, झटपट खानेकी फिक्रसे बरी कर दो फिर देखो वे क्या नहीं कर सकते हैं।

तिनकौड़ीकी गालियोंका अन्त नहीं हो रहा था—"डरपोक गीदड़, लोभी, बैल, बेवकूफ, भेंड़ कहींके! अपने पेटमें छुरा मारो! मर जाओ। मर जाओ। निकम्मे साँप—जरा भी जहर नहीं! मर जाओ!"

देबुन्नियाका ही रहनेवाला, तिनकौड़ीके एक जाति भाईने कहा—"मर जायँ तब तो अच्छा ही हो भाई तिनू। लेकिन मर जायँ कहनेसे ही तो मरना नहीं होता! तुमने तेजकी बात कही, जहरकी बात! तेज या जहर क्या यों ही रहता है भाई! विषय नहीं रहनेसे विष भी नहीं रहता, तेज भी नहीं!"

तिनकौड़ी झुँझला उठा—"विषय! मेरा विषय है? क्या है कितना है? विषय—रुपया—!"

उसने कहा, "हाँ हाँ तिनू भैया विषय—रुपया। कभी मुझमें भी तेज था, विष था। याद है, मन और, तुमने कंकनाके निताई बाबूको पीटा था? वह देवल रायकी गोविन्दको बहकाने यहीं आया करता था! मैंने ही तुम्हें बुलाया था। आगे-आगे मैं ही था। निताईपर वह मार पड़ी कि वह छह महीने तक भोगता रहा और आखिर मर ही गया—याद है? वैसा हमने गाँवकी इज्जतके लिए किया था। उस समय तेज था विष था। उस समय अपनी गिरस्ती जमी जमायी थी। पिताजीके पचास बीघा खेत था। तीन हल चलते थे। घरमें हम पाँच भाई थे—तीन हलवाहे। उस समय तेज था विष था। उसके बाद पाँचों भाई जुदा हुए। हिस्सेमें जमीन मिली दस बीघे। पाँच बाल-बच्चे। क्या खुद खायें और क्या बाल-बच्चोंके मुँहमें दें? श्रीहरिके सामने हाथ न फैलाऊँ तो और क्या करूँ कहो? इसपर तेज और विष रह सकता है?"

यह किया क्या ? यह भार उससे ढाया नहीं जायेगा। अब वह छुटकारा चाहता है। उसकी जिन्दगी अब हाँफ उठी है। थकावट ऊब, करुणासे उसका जी भर गया है। दो-तीन दिन और निकल जायें तिनकौड़ी चाचाके यहाँसे वह चला जायेगा। तिनकौड़ीका ऋण इस जीवनमें चुकाया नहीं जा सकेगा। राम मल्लाने बाढ़के प्रखर स्रोतसे उसे खींचकर निकाला है। कुसुमपुरके उस छोरसे वह तीन-तीन गाँवोंको पार करके देवुड़िया तक बहता आया था। उसके बाद तिनकौड़ी उसे अपने घर ले आया। लाकर मिल-जुलकर जो सेवा-शुश्रूषा की उसकी तुलना नहीं। तिनकौड़ीकी स्त्री और सोनाने माँ-बहन-जैसी सेवा की। गौरने भी सहोदर भाई-जैसा जतन किया। तिनकौड़ीने अपने चाचा-जैसा किया। मगर यह सब उससे बरदाश्त नहीं हो रहा था। किसी तरह अपने दोनों पाँवोंपर खड़ा हो सके, तो चला जाये। इस हार्दिक स्नेहका सेवा-जतन उसे बेड़ी-सा लग रहा था। कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। खुली खिड़कीसे बाहर दिखाई पड़ रहे थे लोगोंके टूटे घर बाढ़के पानीसे भरे हुए भागोंके खेत, रास्तेके दोनों ओर बाँसके कीचड़-सनी झाड़ी-झुरमुटें पेड़-पौधे गाँवका पगडण्डी—जहाँ गाँवसे बाहर हो बैहारमें जा मिली है वहाँसे पचग्रामकी बहारका पानी-कादो भरा एक हिस्सा, सूनी-सपाट बहार। लेकिन उन सबसे उसकी चिन्तामें कोई चंचलता नहीं आ रही थी। उससे अब नहीं बनता। नहीं बनेगा।

'देवू भया!'—गौर आया। उसके हाथमें वही अखबार था।

देवूने उसकी ओर नजर घुमाकर कहा, 'कहो।"

'यह क्या लिखा है देवू भया ? यह ना—?'

क्या ?'

'यह महापर।'—अखबारको उसके बिछावनपर रखकर गौर बोला "यह!'

"ऐसा सब क्या है कि समझ नहीं सके ? क्या है, देखूँ!'

गौर अप्रतिभ हो गया। बोला "मैं नहीं। मने भी तो कहा, यह ऐसा कठिन क्या है ? माना वह रही है।'

'कौन-सी जगह ?

यह जो है 'इन सारी मुसीबतजदा नर-नारियोंकी रक्षाकी जिम्मेदारी देशवासियोंपर है। उस जिम्मेदारीको उठानेकी क्षमता अपार है। सो माना वह रही है'—यही तो पूछा है सोना। आ न सोना आ!

देवूने भी स्नेहसे कहा, 'आओ सोना आओ!'

सोना करीब आ गयी।

देबूने कहा, "इसका मतलब तो कुछ कठिन नहीं है।"

सोनाने धीमेसे कहा, "जिम्मेदारी क्या लिया, मैंने अचानक यह पूछा। यह तो लागोंसे भीख माँगना है। जिसे इच्छा होगी, देगा। नहीं इच्छा होगी, नहीं देगा। यह तो जिम्मेदारी नहीं।"

उसकी बातोंने देबूके दिमागमें अजीब ढंगसे चोट की। "वही तो!" सोनाने कहा, "और, बाढ़ हमारे यहाँ आयी, इसके लिए दूसरी जगहके लोगों की जिम्मेदारी क्यों होगी?"

देबू अवाक् हो गया। इस बुद्धिमती लड़कीके अर्थ-बोधके सूक्ष्म तारतम्यको देख देबू अचरजसे उसकी ओर ताकने लगा। लेकिन देबूकी वह नजर देख सोना जरा अप्रतिभ हुई। बोली, "मैं समझ नहीं सकी" और फिर लजाकर वह चली गयी। देबू तबतक भी अवाक् हो सोच रहा था। इसपर तो उसने गौर नहीं किया था। बात तो सही है कि ऐसे अजाने कुछ गाँवोंकी दुःख दुर्दशापर दूर-दूरके लोगोंको दया हो सकती है, मगर उनकी जिम्मेदारी कैसी? जिम्मेदारी! महत्त्व और व्यापकतामें यह शब्द उसकी अनुभूतिमें बहुत बड़ा हो उठा। साथ-ही-साथ यह पंचग्राम भी परिधिमें बढ़कर विराट हो गया।

उसने आवाज दी—"सोना?"

गौर उन कई पंक्तियोंको बठा फिर फिर पढ़ रहा था। उसके मनमें भी इसका खटका लगा था। वह बोला "सोना तो चली गयी!"

"आ! खर। उसे बुलाओ तो जरा।"

बुलाना नहीं पड़ा। सोना आप ही आ गयी। हाथमें गरम दूधका कटोरा और पानीका गिलास। कटोरेको रखकर बोली "पी लीजिए।"

देबूने कहा "तुमने ठीक ही समझा है सोना। गलत नहीं सोचा। तुम्हारी सूझसे मुझे खुशी हुई है।"

शरमाकर सोनाने सिर झुका लिया।

देबूने कहा "तुमने रवीन्द्रनाथकी 'नगरलक्ष्मी' कविता पढ़ी है? वही— श्रावस्तीपुरमें जब पड़ा अकाल वाली? पढ़ी है?"

सोनाने कहा "नहीं।"

"गौर तुमने भी नहीं पढ़ी?"

"नहीं।"

"तो सुनो!"

सोनाने टोका "पहले आप दूध पी लीजिए। ठण्डा हो जायेगा।"

दूध पीकर कुल्ला करके देबू पूरी कविता पढ़ गया।

सोना बोली "मुझे यह कविता लिख दीजिएगा ?"

देवूने कहा, "तुम्हें वह किताब में इनाम दूँगा।"

सोनाका चेहरा दमक उठा।

"गुरुजी हैं ?" तभी किसीने बाहरसे पुकारा।

गौरने उझककर देखा, डाकिया है।

देवूने कहा, "आओ। चिट्ठी है क्या ?"

"मनीऑर्डर। चिट्ठी।"

"मनीऑर्डर।"

विश्वनाथ बाबूने पचास रुपये भेजे हैं।

चिट्ठी भी लिखी थी। यानी कि यह सारा कुछ विश्वनाथका ही किया है। लिखा है, "दादाजीके पत्रसे मुझे सब मालूम हुआ। पचास रुपये भेज रहा हूँ। और भी रुपये जमा कर रहा हूँ। तुम्हारे पास बहुत सारे मनीआर्डर जायेंगे। हम लोग भी कई आदमी जायेंगे। काम शुरू कर दो।"

रुपये लेकर देवू चिन्तामें पड़ गया। विश्वनाथने लिखा है, 'काम शुरू कर दो।' इन पचास रुपयोंसे वह कौन-सा काम करेगा ? गौरसे पूछा, "चाचा कहाँ गये, जरा देखो तो गौर।"

'दस मिल-जुलकर करिए काज। हारे जीते नहीं न लाज।"

बहुत सोच विचारकर देवूने दसकी राय लेकर ही काम किया। इस काममें उसने एक पुराने आदमीमें नये आदमीका आविष्कार किया। बहुत न सही, थोड़ा चकित हुआ। तिनू चाचाका बेटा गौर। स्वस्थ और सबल लड़का, लेकिन शान्त और सीधा। बुद्धि वास्तवमें उसे बहुत कम है। उसी गौरमें उसने एक अनोखे गुणका आविष्कार किया। स्कूलमें पढ़ता है वह। स्कूलके छात्रोंको देवू खूब अच्छी तरह जानता है। खुद भी वह उत्साही छात्र रहा था और गौरसे कम उम्रका था, फिर भी बहुतेर लड़कोंसे उसका सांवका रहा। एक तरहके लड़के होते हैं, जो पढ़नेमें अच्छे होते हैं, काम-काजमें भी लगन होती है। और एक प्रकारके लड़के ऐसे होते हैं जो पढ़नेमें वैसे नहीं होते मगर बड़े पुरजोर होते हैं, काम-काजमें बड़े उत्साही। इन दोनोंके बीच स्थितिवाले लड़के भी होते हैं, जिनमें एक बात है एक नहीं है। और फिर ऐसे भी लड़के हैं, जो दोनोंमें ही पीछे रहते हैं, जिनके जीवनकी गति कछुए-सी होती है। उसका खयाल था—गौर यह अंतिम प्रकारका लड़का है। लेकिन आज उसने अपना एक अनोखा

परिचय दिया। वह तिनकौड़ीका लड़का है, उसके लिए यह परिचय स्वाभाविक ही है। इसके साथ काम करनेके सिलसिलेमें उसने मामा बतानेका इसकी शक्ति लेकर आत्मप्रकाश किया।

तिनकौड़ीने कहा था — जो लोग हम लोगोंका बाकायदा हैं उन्हींको ठीक ला, घर द्वार इसे देकर काम शुरू करो।

देबूने कहा — और जाना बुलाकर जाने, कुछ किया जाये। तुम तो अन्तमें जाने और क्या करें।

तिनकौड़ीने कहा — कहना ठेंगा। कहेंगा फिर क्या? किसी साहेबका हम कुछ पाते हैं क्या? रुपया क्या किसीके बापका है? और बुलाओगे तो किसे?"

देबूने हँसकर कहा, "मैं कहता हूँ जगन डॉक्टर, हरेन इरशाद, रहीम— इन कुछ लोगोंको।"

'रहीम? नहीं रहमको नहीं बुला सकते। जो आदमी दलसे अलग होकर जमींदारसे जा मिला है, उस बुजदिलको कतई नहीं।'

'आप सोच देखिए चाचा। आदमीसे भूल-चूक होती ही है। आदमीको नीच कर अपमानसे वह अपना होता है और ठेलकर हटा देनेसे बिराना बन जाता है।'

तिनकौड़ी चुप बैठा रहा। कोई जवाब नहीं दिया उसने। बात उसे जँची नहीं।

देबूने पूछा — तो किसे भेजूँ, कहिए तो? राम नहीं मिलता?'

गौर बैठा था। नजदीक आकर बोला, "मैं जाऊँगा भैया।'

'तुम जाओगे?'

'हाँ। राम जातिका भल्ला है न। उसके बुलाने जानेपर कोई कुछ सोचे तो?"

तिनकौड़ी गरज उठा— सोचेगा? कौन क्या सोचेगा? किस सालेको खानेको न्योता दे रहा हूँ कि कोई कुछ सोचेगा?" एक बहाना पाकर उसके मनकी अकुलाहट निकल पड़ी।

गौर ठिठुक गया। देबूने कहा — नहीं-नहीं, गौरने ठीक ही कहा है चाचा।"

'ठीक कहा है तो जाय, मरे!' कहकर तिनकौड़ी उठकर चला गया।

देबू चुप रहा। बापकी राय नहीं है तो बेटेको भेजनेमें उसे हिचक हुई।

गौरने कहा, 'देबू भैया, जाऊँ न?'

'जाओगे? लेकिन तिनू चाचा —"

'बाबूजीने तो जानेको कहा है!"

"कहाँ? जानेको कहाँ कहा? वे तो नाराज होकर चले गये।"

सोना आयी। हँसकर बोली "जी नही। बाबूजी वैसे ही बोलते है। 'मर जा, भाड़म जा'—यह सब बाबूजी यो ही कहते है।'

गौरने कहा, "कहते नही है तो केवल सोनाको।

गौर लौट आया। बताया कि सबको खबर कर दी है। अपनी अक्ल लगा कर उसने बूढ़े द्वारिका चौधरीको भी जाकर कह दिया। देवूने खुश होकर कहा, "अच्छा ही किया। बूढ़े चौधरी बड़े पक्के आदमी है और उन्हीका खयाल न आया।' गौरने कहा, "महाग्रामके न्यायरत्नजीसे भी कह आया हूँ। देवू भया।"

देवूने हैरान होकर कहा, "अरे, उन्हें क्यों आनेके लिए कहना चाहिए? तुमने किया क्या यह! क्या कहा उनसे?"

गौर बोला "उनसे मेरी मुलाकात नही हुई। उनके घरपर कह दिया है। कहा कि हमारे घरपर आज बैठक है। बाप्के बारेमें बठक। मैं वही कहने आया हूँ।

सोना हँसते हँसते बेहाल हो गयी—"बापकी भी बठक होती है!"

तीसरे पहर सभी लोग आये। जगन, हरेन इरशाद, रहम और उनके साथ और भी बहुत-से लोग। सतीश और पातू आया। दुर्गा भी आयी। वह रोज ही आया करती है। देवूके घरकी कुंजी उसीके पास है। वह घर द्वार झाड़ती-बुहारती है देखती-सुनती है। बूढ़े द्वारिका चौधरी भी पधारे। पैदल आते नही बना तो बैलगाड़ीपर चढ़कर आये। मुश्किल यह हो गयी कि तिनकौड़ी नही था। वह जो निकला था सो लौटा ही नही।

बूढ़ेने कहा, 'बेटा देवू, खोज-खबर तो मैं दोनो वक्त लेता रहता हूँ। किन्तु खुद मैं आ नहीं सका। फिर हँसकर बोले, 'अब दूसरी तरफ खीच रहा है न, इधर कदम नही बढ़ा पाता। मगर तुम्हारी बुलाहट हुई तो इधरका खिंचाव हुआ। पैदल नही चल सका—बैलगाड़ीपर आया हूँ।'

देवू बोला, 'मेरी सेहतका हाल देख रहे है न, नही तो—"

हाँ हाँ! यह मैं समझता हूँ भैया। लेकिन बात है कि ज़रा जल्दी ही कर लो—"

बस-बस! काम तो वैसा कुछ है नही। सिर्फ तिनकौड़ी चाचाके लिए। खैर। न हो तो हम लोग गुरू कर दें तबतक।

देवूने लोगोंसे सब बताया। कागज और मनीऑर्डरका कूपन दिखाया। सबके सामने रुपये रखकर बोला 'अब आप लोग कहिए कि किया क्या जाये?'

जगनने कहा, 'गरीबोंको मिलाओ। जिसे कुछ भी नहीं है, उसे दो।"

हरेनने कहा, 'आइ सपोर्ट इट।"

देबूने पूछा, 'चौधरीजी ?"

चौधरी बोले 'बात तो डॉक्टरने अच्छी ही कही। मगर मैं कह रहा था कि अभी भी पन्द्रह दिनका समय है मंडौवाका। इन रुपयोंसे यदि बीज धान खरीद लिया जाता—"

रहम और इरशाद साथ-साथ बोल उठे—"यह बहुत अच्छी, सलाह है।"

जगनने कहा, 'ये गरीब बेचारे भूखे मरेंगे न ?'

देबूने कहा, "इन पचास रुपयोंसे उन्हें कितने दिन बचाओगे ?"

'इससे चार सौ रुपये आयेंगे।'

'तो उन रुपयोंमें-से देना।'

गौरने देबूके कानमें फुसफुसाकर कहा, 'अच्छा देबू भैया, हम लड़के लोग अगर उन गाँवोंसे, जहाँ बाढ़ नहीं आयी है, भीख माँगकर लायें तो ?

गौरकी सूझसे देबूको हैरत हुई।

ठीक इसी समय प्रशान्त स्वरकी आवाज सुनाई पड़ी—गुरुजी है ?'

न्यायरत्न! उनके स्वागतमें सादर सब खड़े हो गये। न्यायरत्न अन्दर आये। जरा हँसकर बोले 'मुझे आनेमें कुछ देर हो गयी।'

देबूने उन्हें प्रणाम किया। बोला, 'एक बातके लिए मुझे माफ करना होगा। मैंने इसके लिए आपको कष्ट देनेके लिए नहीं कहा था। तिनकौड़ीके लड़के गौरने अपनी बुद्धि खर्च करके यह करतूत कर दी।"

तिनकौड़ीके बेटेको मैं आशीर्वाद देता हूँ। तुम लोगोंने देवताकी सेवाके लिए पुण्यका यज्ञ शुरू किया है, उस यज्ञमें हिस्सा लेनेके लिए मुझे बुलाकर उसने अच्छा ही किया है।"

गौरने झुककर उनके चरणोंमें प्रणाम किया।

न्यायरत्न बोले, 'और तिनकौड़ीकी बिटिया कहाँ है ? बड़ी भली लड़की है। मुझे थोड़ा-सा पानी चाहिए। पैर धोना है।

हाथमें पानीका डोल और लोटा लिये सोना बाहर आयी। उन्हें प्रणाम करके बोली, 'मैं चरण धो देती हूँ।'

न्यायरत्नने कहा, 'मैं कुछ अन्न ले आया हूँ गुरुजी।" और फिर अपनी चादरकी गाँठसे उन्होंने दस रुपयेका नोट निकालकर दिया।

सारी बातें सुन-सुनाकर उन्होंने भी कहा कि 'पहले बीज धान देना ही ठीक रहेगा। बीजके लिए मैं भी कुछ धान देकर सहायता करूँगा गुरुजी।'

जब सब लोग उठ पड़े तो दुर्गा बोली, "घर कब चलोगे जमाई-गुरुजी? मुझसे अब नहीं चलता। अपने घरकी कुंजी तुम सँभालो।"

देबू बोला, "मैं कल या परसों आऊँगा। दो दिन अभी और रखो।"

दुर्गाने कपड़ेसे आँखें पोंछीं। बोला, "घर बिलू दीदीका है। न बिलू दीदी हैं, न मुन्ना। जानेको जी नहीं चाहता। तिसपर तुम भी नहीं हो। घर जैसे निगलने दौड़ता है।"

इतनेमें तिनकौड़ी लौटा। पीठपर बड़ी-सी एक बवला मछली थी। वजनमें आधे मनकी रही होगी। अठारह सेरसे तो हरगिज़ कम नहीं। धड़ामसे उसे नीचे पटककर बोला, "उफ़ इसके पीछे कोई कोस भर भागना पड़ा। अरे ओ भई, तुम लोग जरा रुक जाओ—थोड़ी-थोड़ी मछली ले जाना। डॉक्टर, इरशाद, रहम, ज़रा रुक जाओ भाई, रुक जाओ।"

उन्नीस

पन्द्रह ही दिनके अन्दर इलाकेमें एक हलचल-सी मच गयी। दो घटनाएँ घट गयीं। श्रीहरि घोषने पंचायत बुलाकर देबूको समाजसे पतित कर दिया। दूसरी ओर बाढ़-सहायता-समिति एक रूप लेकर खड़ी हो गयी। उस समितिकी वजहसे ही एक धूम मच गयी। न्यायरत्नके पोतेने अखबारमें बाढ़की खबर छपवा दी। कलकत्ता, बर्दवान, मुर्शिदाबाद, ढाका आदि बड़े-बड़े शहरोंसे वे चन्दा इकट्ठा कर रहे हैं। शहर ही नहीं, गाँवोंसे भी लोग रुपया भेजने लगे। जाने कितने अजाने गाँवोंसे देबूके नाम पाँच-पाँच दस-दस रुपयेके मनीऑर्डर आने लगे। पन्द्रह-बीस दिनके अन्दर ही देबूके पास प्रायः पाँच सौ रुपये जमा हो गये। जिनके घर गिर गये थे, उन्हें घरके लिए मदद दी जायेगी। इसी बीच बीज धान बाँटा जा चुका था। जिससे जैसा बन पा रहा था—खेत आबाद कर रहा था।

भादोंकी सकरात बीत गयी। आज क्वारकी पहली थी। क्वारका रोपना किसलिए? मगर लोग अभी भी रोपते ही जा रहे थे। महीनेके पहले पाँच दिनको पिछले ही महीनेमें गिना जाता है। इस बार भादोंका महीना उनतीस ही दिनका था। लेकिन आफत यह थी कि लोगोंके घरमें खानेको नहीं था। उसपर शुरू हो गया कँप-कँपीके साथ मलेरिया बुखार—फिर भी भाग्य ही

चाहिए कि हवा नहीं देना। घर घर हरगिजारस पत्तोंने रस पीनेका एक नया काम बन गया। भादोंमें गरम होनेपर हरसिंगार तथा पत्तोंमें लग जाते हैं फूल लग जाते हैं। अबकी उनसे पहले ही यह। फूल नहीं आयेंगे। अगर बुखार नहीं पैदा होता तो या ही कुछ ज्यादा होता। काला मलेरिया! या इन्फ्लुएंजा इस समय हर साल ही कुछ-न-कुछ होता है। लेकिन बाउरी पाड़ेमें इस बार-का अवसर रूपमें पड़ा। कस्बा और जंक्शन शहरके अस्पतालमें बिना दामके दवा मिलती है। मगर मरीजोंका काम डाक्टरके रोगीको इतनी दूर लेकर जाना आसान काम नहीं। अगर डॉक्टर रोगीको देखनेका कुछ नहीं लेता। दवाका दाम लगता है। न लें तो उसका भी नहीं बन पाता है, हाँ, मगर सुन बताया कि कलकत्ताकी यूनियन सभा दूसरा दवाएँ आ रही हैं। एक डॉक्टर और दवाके लिए जिलेमें भी दरख्वास्त भेजी गयी है।

लोगोंके आतंकका ठिकाना नहीं रहा। उस रोज बूढ़े हरीशने देवूसे कहा — भई, जो बाप-दादोंके जमानेमें नहीं देखा वही देख रहा हूँ।

भयाने कहा — ठीक कह रहे हो काका। गजब देखा। बाढ़ तो इससे पहले भी बहुत बार आयी है।"

नदियोंका देश है बंगाल। ऋतुओंमें यहाँ वर्षा प्रबल है। बाढ़ थोड़ी-बहुत हर साल ही आती है। इस पहाड़ी नदी मयूराक्षीमें भी बीस तीस सालके हेर फेरसे ऐसी ही तबाह करनेवाली बाढ़ आती है। गाँव बह जाते हैं खेत डूब जाते हैं—लोग यह दृश्य देखा ही करते हैं। पिछले दिनों ऐसी बाढ़के बाद देशमें एक दुःसमय आया करता था। वैसे बुरे दिनोंमें गाँवके धनी और जमींदार लोगोंकी मदद किया करते थे। धनी और अच्छी हालतवाले गृहस्थ गरीबोंको खानेके लिए देते थे, धनी लोग कम या बिना सूदके धान उधार दिया करते थे। जमींदार उस किस्तका लगान नहीं वसूलते थे। लगान बाकी पड़ जाता था तो सूद नहीं लेते थे। दयालु जमींदार लगानमें कुछ माफी देते थे। कोई-कोई साल भरका ही लगान छोड़ देते थे। इतना जरूर था कि उन दिनों खेतिहरोंकी हालत आजसे बहुत अच्छी थी। टुकड़ोंमें इस तरह जायदाद बँटकर गृहस्थ इतने गरीब नहीं हो गये थे। कुछ महीने वे कष्ट झेलते और फिर धीरे धीरे सँभल जाते।

गरीब-गुरबोंकी यानी बाउरी डोम मोचियोंकी दुर्दशा जैसी तब थी वैसी अभी भी है। इस तरहकी घटनाएँ घट जानेके बाद महामारी उन्हीं लोगोंमें ज्यादा फैलती है। भीखके सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं रह जाता इसलिए लोग गाँव छोड़कर अन्यत्र चल देते। हालत सुधरनेपर बाप दादाकी जगहकी ममतासे बहुतेरे लोग फिर लौट आते। ऐसी नौबत आनेपर भरे-पूरे गृहस्थ सरकारसे

तक़ावी लेते, उन पैसोंसे तालाब खुदवाते, खेत तयार करते और गरीब लोग उन्हींकी मजदूरी करते।

हरीनने कहा, "अरे भई उन लोगोंका समय तो अब अच्छा है। नहीको पार किया कि जवरान। वीसियों चिमनियोंसे धुआं उठ रहा है। पहुँच गये कि मजदूरी मिल गयी—मजदूरी मिली कि पैसे मिले। मगर ये कम्बख्त जायेंगे सो नहीं।

भवेशने कहा, "नहीं गये हैं, सो खैर समझो चाचा। वरना कामरा-चरवाहे नहीं मिलते।"

हरीन बोला यह ठीक कहा तुमने। मगर अब नहीं रहेंगे भया—अब सब जायेंगे। पेटकी जलन बड़ी बुरी होती है।"

भवेशने कहा देवू तो जी-जानसे जुट गया है। स्कूलके छोकरे गीत गाते हुए गाव-गावमें भीख माँगते फिर रहे हैं—चावल कपड़ा पैसा।"

गौरने कानो-कान देवूसे जो कहा था उस बातने कामका रूप लिया। एक एक वयस्क आदमीके नेतृत्वमें लड़कोंकी जमात गाँव-गाँवसे माँगकर कपड़े, अन्न रुपये-पैसे लाने लगी। इतने ही दिनोंमें पन्द्रह-बीस मन चावल जमा हो गया। भले लोगोंके किसी गाँवमें औरतोंने जेवर तक उतारकर दिया है। बहुत ज्यादा कीमती जेवर नहीं यही अँगूठी कानकी बाली नाककी कील आदि। य सारी बातें इस इलाकेके लोगोंको अनोखी सी लग रही थीं। लोगोंके यहां जब भिखमंगे माँगने जाते हैं तो लोग देना नहीं चाहते—दो-टूक सुना देते हैं। कितनी चिरौरी कितना निहोरा विनती करनी पड़ती है उन्हें। और फिर इस माँगनेमें उस भीख की दीनता भी नहीं है। बल्कि यहां जो लोग सहायता ले रहे हैं, उन्हें भी दीनता की वह आंच नहीं छू जाती। इस सारे कुछमें एक अनोखी तसल्ली का भाव छिपा हो मानो। पहले गये-गुज़रे लोग अपनी गरीबीके नाते भीख माँगनेमें एक अपराधकी ग्लानिका अनुभव करते थे। इसमें मानो उस अपराधका ज़रा भी अनुभव नहीं होता।

भवेशने कहा "मगर इन कम्बख्त छोटे लोगोंका मिज़ाज बेहद बढ़ गया है। सहायता-समितिसे चावल पा-पाकर उनका दिमाग क्या हो गया है देखा है? परसों मेरा घोरई छोरा नहीं आया एक बार। मैं उसके टोलेमें गया। मैंने सोचा तबीयत-अबीयत खराब हो गयी हो शायद। वहाँ सुना, वह तिनकौड़ीके बेटे गौर के साथ किसी कामसे शहर गया है। मुझे गुस्सा आ गया। गुस्सेकी बात है या नहीं तुम्हीं बताओ। इसपर मैंने कहा—ना अब उस काम-काज नहीं करना है। मैं जवाब देता हूँ। इसपर उस छोरेकी माँने क्या कहा जानते हो? कहा, तो बाबू

हम करें क्या ? गुरुजी वगैरह इस मुसीबतमें लोगोंको गाना दे रहे हैं। उनका कोई काम हो तो मैं न करें। आपको जवाब ही देना है तो दे दीजिए।

हरीश हँसकर बोला — ऐसा होता है। सनातन होता आया है। सुनो मण्डल—हम लोग उस समय छोटे थे। तेरह चौदह वर्ष रहे होंगे। उस समय रामदास गुसाइं आया था। सुना है नाम ?'

भवेशने प्रणाम करके कहा — अरे बाप रे! मैंने तो देखा है!'

हरीशने कहा — देखा है ?'

हाँ! इसी क्लोको बनी जटा। उस समय भवेश यहाँ रहते नहीं थे। बीच बीचमें आते थे।'

कहा कहो। मैं उसकी कह रहा हूँ उस समय गुसाइंजी यहाँ रहते थे— कंकनाके उस तरफ मयूराक्षीके किनार। उन्होंने यहाँ महोत्सवकी धूम कर दी। लोग अपने सिरपर ढोकर दो-दस मन चावल पहुँचा आते थे। गरीब हो दुःखी हो सबको जी भर खाना मिलता था—केवल मुँहसे इतना कहना पड़ता था—कहो भई राम नाम सीताराम। गुसाइंजी गरीब-दुखियारे माँ-बाप थे। उस समय गरीबोंका मिजाज इसी तरह सातवें आसमानपर चढ़ गया था। जमींदार गृहस्थ कोई काम करते कि फ़ौरन गुसाइंसे जाकर एककी दस लगाते। और गुसाइं उसी बातपर जमींदारसे गृहस्थसे झगड़ जाते। अन्तमें कंकनाके बाबुओंसे ठन गयी। गुसाइं लड़में बहुत दिनों तक रहे। आखिरकार एक दिन एक नाचवाली आकर हाजिर हुई। उसने जाकर गुसाइंजीको पकड़ा। कंकनाके बाबुओंकी थी। कहा 'तुम शहरमें मेरे यहाँ रहे थे। मेरे बाकी रुपये दो। नहीं तो —।' इसी बातपर बड़ी फजीहत हुई। बिगड़कर गुसाइं चले गये। कहते गये कल्कि महाराज आये बिना दुष्टोंका दमन नहीं होगा। — बस इसके बाद फिर पहलेका वैसा—लोग फिर पैरों-तले रहने लगे। देख लेना, इसका भी यही हाल होगा।'

रामदास गुसाइंके पास वह जो रूपका व्यवसाय करनेवाली आयी सो लोगोंने उन्हें छोड़ दिया। लगातार तीन दिनों तक बनी-बनायी रसोई पड़ी रही कोई भी गरीब खानेके लिए नहीं गया। जिनके लिए उन्होंने जमींदारसे झगड़ा किया था वे लोग भी नहीं गये। गुस्से और क्षोभके मारे रामदास गुसाइं यह जगह ही छोड़कर चले गये। लेकिन इस समय एक परिवर्तन नजर आ रहा है। वह यह कि लुहार-बहू और दुर्गाको देबूसे लपेटकर लोगोंने बड़ी अफ़वाहें उड़ायी, पंचायतने देबूको अजाति कर दिया फिर भी लोगोंने देबूको नहीं छोड़ा।

देवूपर न्यायरत्नको अगाघ विश्वास है। लेकिन लोगोका वह वैसा विश्वास नही करते। इस विषयपर उन्होने भी सोचा है। कभी-कभी उन्हें लगता है कि समाजकी शृखला बिलकुल टूट गयी ह। और समाजके टूट जानेके साथ-साथ मनुष्यका घम विश्वास भी लोप हो रहा ह। यही कारण है कि नवशाख सम्प्रदाय-की पचायतने देवूको अजाति करनेका सकल्प तो किया, पर वह सफल नही हो सकी। इसी बीच एक रोज शिवकालीपुरके चण्डीमण्डपमें—बहरहाल श्रीहरि घोषकी ठाकुरवाडी—घोषके बुलाये नवशाख सम्प्रदायकी पचायत बठी थी। सद्गृहस्थोमें-से बहुतेरे उस पचायतमें आये थे। गरीब कतई आये हो नहीं सो बात नही। देवूको बुलाया गया था, लेकिन वह गया नही। कह दिया "लुहार-बहू श्रीहरि घोषके यहा ह। बेसहारा मित्र-पत्नीके नाते पहले वह उसकी सहायता किया करता था, पर अब उससे उसका कोई सम्बन्ध नही ह। दुर्गा उसे श्रद्धा भक्ति करती ह। दुर्गाका ननिहाल उसकी ससुरालमें ह। इस नाते दुर्गा उसकी स्त्रीको दीदी कहती थी और उसे जमाई-गुरुजी। दुर्गा उसके घर काम-काज करती ह और करती रहेगी। वह भी उसे सदा स्नेह-सहायता करता रहेगा। उसे कभी अलग नही कर सकता। बस, इतना ही कहना ह। इसपर पचायतको जो करना हो, करे।'

पचायतने देवूको पतित करार दिया।

समाज-द्वारा पतित किये जानेके बावजूद जन-साधारणने देवूसे नाता नही तोडा। लोग आते-जाते ह। देवूके यहा बैठते ह। पान-तम्बाखू चलता ह। खास तौरपर इस सहायता-समितिके चलते देवूसे लोगोका गहरा सहयोग ह। मामूली अवस्थावाले कुछ लोगोने तो साफ-साफ ऐलान ही कर दिया कि पचायतके फैसले-को हम नही मानते। ऐसे लोगोका नेता तिनकौडी ह।

न्यायरत्नने जिस दिन देवूको उपदेश दिया था, उस दिन उन्होंने अनुरूप कल्पना की थी। उन्होने सोचा था कि समाजके गहरे विरोधसे गुरुजीका धम जीवन उज्ज्वल हो उठेगा। ध्यान धारणा, पूजा-पाठसे देवूका रूप ही कुछ नया हो जायेगा, ऐसा उनका खयाल था। लेकिन उनकी वह कल्पना फली नहीं। देवू घोष सहायता-समिति-द्वारा कमके पथपर चल पडा। कम-पथसे भी धम जीवनकी ओर जाया जा सकता ह। लेकिन देवूके बारेमें एक बात सुनकर उन्हें बडी चोट लगी कि देवू दुर्गा मोचिनके हाथका पानी पीनेको भी तयार ह। उसने दुर्गासे यह कहा भी था, पर दुर्गा राजी न हुई।

वे कमको ही सामाजिक जीवनकी सजीवनी शक्ति मानत ह। लेकिन वह कम धम-वर्जित कम नहीं। धम-वर्जित कम सजीवनी-सुधा नही ह, वह उत्तेजक

गुधा है। यह बात नहीं—मगर तरुणता मान्य रस है।

न्यायरत्न इसके लिए चिन्तित हो पड़े हैं। इसका व्यवहार करते हैं। मानव रक्त उनमें यह उम्र, ढीठ हो उठा है। इन बातोंको न्यायरत्न ध्यान नहीं कर सके थे। समाजमें ऐसा ही ज्वार भाटा आया करता है। लोग इसी तरहसे एक बार ज्वारकी तरह उफनाते। और फिर एक बार भाटेकी तरह शान्त पड़ जाते हैं।

यह तो छोटा-सा परिणाम है। मगर इसमें ऐसे ही उफान आया और आती है। अपने ही जीवनमें उन्होंने ब्राह्मसमाजका आन्दोलन देखा है। हां उस समय और साधारण लोगोंमें ज़रा भी उत्साह नहीं हुई। इसके बाद आया स्वदेशी आन्दोलन। उस आन्दोलनकी भी दो-एक उफान दो-तीन ... गयी। यह स्वदेशी आन्दोलन जो था वही धर्मसे नाता न रखनेवाला पहला आन्दोलन था। इस आन्दोलनने एक काम तो किया है। धर्मसे उसका नाता हो चाहे न हो उसने एक नैतिक प्रभाव जरूर किया है।

अपने आरम्भिक जीवनमें उन्होंने जो देखा है वह दृश्य याद आया। प्रथम समाजपतिके आसनपर बैठकर उन्होंने मार्मिक पीड़ा महसूस की थी। उस समय जमींदारोंका बड़ा रौब-दाब था। वे लोग जबानसे तो उनका सम्मान करते थे श्रद्धा करते थे पर मन-ही-मन करते थे उपेक्षा। किसी साधारण व्यक्तिको कोई सजा देनी होती था तो उनको बुलाया जाता था। लेकिन खुद उनके व्यभिचारकी हद नहीं थी। शराब पीना तब शान्शौकत जायज था। जमींदारके बटनेमें 'कारणबस' जुल्म था। धनियोंके नवजवान सपूत शराबके नशेमें चूर रास्तोंपर लोगोंको गाली गलौज करते चलते थे। रातको केवल मध्यवित्तों और गरीबोंके दरवाजोंपर कामुकोंकी बपतियाँ पड़ा करती थी। साधारण लोग गूंग जानवरो जैसे थे। उनके घरकी हालत और भी शोचनीय थी। स्वदेशी आन्दोलनकी उस लहरने उसे बहुत कुछ धो-पोंछ दिया। लोगोंमें एक नीति-बोध जागा है।

न्यायरत्नने लम्बा निःश्वास छोड़ा। इस आन्दोलनकी लहर उनके शशि शेखरके कलेजेमें लगी थी। शशिमें कोई दुर्नीति नहीं थी। आन्दोलनने उसके धर्म विश्वासपर ठेस लगायी थी। वह ढीठ हो गया था। उसका नतीजा न्यायरत्नके जीवनमें बड़ा भयंकर होकर दिखाई दिया। और अब उसी आन्दोलनकी लहर विश्वनाथको लगी है। विश्वनाथने उनके मुंहपर ही कह दिया है—'मैं जाति नहीं मानता धर्म नहीं मानता, मैं समाजको तोड़ना चाहता हूँ। वह उनके वंशके उत्तराधिकार तकको नहीं मानना चाहता। न्याय-जैसी पत्नी—मगर उसे उसकी भी ममता नहीं। एक ज्वार-सा आया है—सर्वग्रासी ज्वार।

उन्होंने फिर लम्बा निःश्वास फेंका।

पंचग्राममें भी वही ज्वार भाटा चल रहा है। तरह-तरहकी घटनाओंमें लोग एक एक बार हो हल्ला मचाते हैं और फिर थीम जाते हैं। दल टूट जाता है। पहले ऐसी हर हलचलमें समाज धम हुआ करता था। उनके आरम्भिक जीवनमें एक हलचल मची थी—वह हलचल उन्हीके नेतृत्वमें चण्डीमण्डपमें बाबुओंकी मनमानीके खिलाफ हुई थी। सभी गांवोंकी औरतें चण्डीमण्डपमें जाया करती थी और उन दिनों बाबुओंके लड़के शराब पीकर वहाँ बड़ी बेहयाई करते थे। न्यायरत्नने ही लोगोंकी आरसे इसका विरोध किया था। उसके बाद हुई रामदास गुसाईवाली हलचल। उस हलचलमें भी वही अर्द्ध राम नाम'का नारा था। फिर सामाजिक बातोंके लिए बहुत हलचल हो गयी। दवूके खिलाफ ही तीन तीन बार हो-हल्ला हो चुका। पहला सेटलमेण्टके सिलसिलेमें। उसके बाद विरोध-आन्दोलन और उसके बाद यह बाढ सहायता-समिति। शुरूमें देवूसे उम्मीदें थी। लगान विरोधी आन्दोलनके वक्त तक भी उसपर वह प्रभाव था। लेकिन पंचायतसे अचानक वह गायब हो गया।

काल्धम युगधम! शशिके शोषणीय अनाचारने ठेस लगाकर उन्हें इस सम्बन्धमें सचेत कर दिया है। इसीलिए अब वे अपनेको डावाडोल होने नहीं देते हैं। जो ज्ञानसे अपनेको अलग करके कालकी लीलाको महज देखते जानेको वे कटिबद्ध हैं। जिसका जो नतीजा हो हो काल अपनेको जैसे प्रकट करे, करें—वे सिर्फ देखा करेंगे, निश्चेष्ट देखते रहेंगे।

नहीं तो, विश्वनाथने जब उस दिन उनके मुँहपर ही कहा—'अपने देवता और अपनी जायदादका बन्दोबस्त आप करें दादाजी'—उसी दिन वे उसे कठिन दण्ड देते, कठिन दण्ड। दादा होनेके नाते वे उसकी [illegible] अणु-परमाणुके मूल्यका दावा करते—जिसे उन्होंने अपने बेटे शशिशेखरको दिया था और शशिशेखर जिसे उसे दे गया है।

न्यायरत्नके खड़ाऊँकी आवाज सख्त हो गयी। अपना [illegible] समझा और समझकर गम्भीरतासे बोल उठे—'नारायण! नारायण!

विश्वनाथ काल तकको नहीं मानता। वह कहता है—'कालसे [illegible] लड़ाई है। इस कालको समाप्त करके भावी कालका [illegible] साधना है।"

'मूर्ख! —वे हँसकर बोले—'तो फिर [illegible] काल तो अनन्त है। उसके महज किसी खण्डका [illegible] नहीं चाहते, आगामी कालको चाहते हो। यह तो [illegible]

हुई। काला रूप नहीं देखना चाहते, सुन्दररूपके प्यासे हो! या कि ब्रजदुलालके बदले द्वारकानाथको चाहते हो।'

विश्वनाथने कहा था—'मैं किसी नायकको नहीं चाहता दादाजी। सबमें उपमाके लिए मैं किसीको चाहता हूँ—यह बात कहनेसे आपको लाभ क्या होगा? लोगोंको अब नाथ बर्दाश्त नहीं। इन नाथोंने दबाके—जब-जब जनताने उठनेकी कोशिश की है, अपने नायकत्वके दबावसे उसे पीस-पीस डाला है। इसी लिए अपना आगामी कल्पका रूप अ-नायकका रूप है। इन नाथोंकी बुनियाद उजाड़नेसे ही वर्तमान कालका अन्त होगा।'

बात सही है। इस पंचग्राममें भी जब-जब लोगोंने हो-हल्ला किया है, तब-तब इन जमींदार धनी समाज-नेताओंने उनका दमन किया है। इसे दमनके बावजूद कुछेक बात नहीं होता। विश्वनाथ कि मनुष्यके मनकी उमंग आदिकालसे ही उस अ-नायकत्वके कालको लाना चाहती है—पर वह काल आज भी नहीं आया। कितना काल बीत गया, कितना आगामी काल आया, लेकिन वह आगामी काल नहीं आया, जिसकी तुमने कल्पना की है। क्यों नहीं आया, मालूम है? कालके उस रूपका काल अभी भी नहीं आया है।'

इसपर विश्वनाथ जो कहता है उसे वे हरगिज नहीं मान पाते। उससे उनका विरोध यहींपर है। मगर निष्ठावान् ब्राह्मणका मन फिर टन-टन कर उठा। वे फिर बोल उठे—'नारायण! नारायण!'

डाकियाने आकर प्रणाम किया—'चिट्ठी।''

हाथमें चिट्ठी लिये न्यायरत्न नाट्यमन्दिरसे उतरे। उसे प्रकाशमें देखा। विश्वनाथकी चिट्ठी थी। न्यायरत्नको अभी भी चश्मेकी जरूरत नहीं पड़ती। मगर साल भरसे जरा ज्यादा रोशनीकी दरकार होती है और आँखोंको जरा सिकोड़कर पढ़ना पड़ता है। पोस्टकार्ड था। पढ़कर वे जरा चकित हुए—'कल्याणी!—किन्तु भाईने यह लिखा किसे है? उलटकर पता देखा। चिट्ठी जयाकी थी। न्यायरत्न अवाक् हो गये। जयाको विश्वनाथने पोस्टकार्डमें खत लिखा है। और सिर्फ दो चार पंक्तियाँ! 'मैं सकुशल हूँ। आशा है, तुम लोग भी सकुशल होगे। दो-ही चार दिनके बाद एक बार वहाँ आऊँगा। ठीक, अपने घर नहीं। दरअसल दान-सहायता समितिके कामसे जाना है। साथमें और भी दो चार जने जायेंगे। दादाजीको मेरा असंख्य प्रणाम कहना। तुम लोगोंको आशीर्वाद। बस।—विश्वनाथ

चिन्तित होकर ही न्यायरत्न अन्दर गये। पोस्टकार्डमें लिखे इस खतने उन्हें बड़ा विचलित कर दिया। वे उस दिन भी इतना विचलित नहीं हुए थे,

जिस दिन विश्वनाथने यह कहा था कि जयासे भी उसके मतका मेल नहीं होगा। मतका मेल तो नहीं है। जया उनके हाथोंकी गढ़ी हुई महाग्रामके न्यायरत्न-परिवारकी गृहिणी है। समाज टूट गया, धर्मका लोप हो चला है—सारी दुनियाका लोभ, अनाचार, अत्याचार—इस देशके लोग जर्जर होकर भयावना पराया धर्म या धर्महीन वैदेशिक जीवन-नीतिको अपनानेपर आमादा हैं, लेकिन उनके अन्तःपुरमें उनका धर्म अभी भी सुरक्षित है। जयाने अटूट निष्ठा और हार्दिक श्रद्धासे उनकी दीक्षा ली है। पोतेने भयानक परधर्मको अपनाया—इस चिन्तासे जब वे बेचैन हो उठते हैं, तो जयाकी ओर ताकनेसे उन्हें सान्त्वना मिलती है। विश्वनाथ जब उनसे तर्क करता है, अपनी कूट युक्तियोंसे उन्हें परास्त करना चाहता है, तब वे अपनी गहरी ऊबसे अपनेको संयत करके महाकालकी लीलाको सोच चुप रह जाते हैं और फिर उस चुप्पीके अन्तरालमें जयाकी याद आती है। जयाके लिए उन्हें बड़ी चिन्ता होती है। और जब विश्वनाथ कोई बहाना बनाकर पन्द्रह-बीस दिनोंका बीच देकर घर आता है, तो वही दुश्चिन्ता उनका भरोसा हो जाती है। विश्वनाथ गोविन्दजीके झूलनपर आस्था नहीं रखता, लेकिन उसी बहाने जयाके साथ झूलनका खेल खेलनेके लिए घर आता है। इसीलिए यह कहनेके बाद भी कि जयासे मतका मेल नहीं होगा, उनके हृदयमें भरोसा था। आगसे पाखियोंका मेल है या नहीं, कौन जाने—प्राण जिसे जलानेवाला दाहिका सम्बन्ध परस्पर विरोधी सम्बन्ध है—मगर तो भी पाँखी जल मरनेके लिए आते हैं। जयाके रूपको देखकर वे आश्वस्त होते हैं। लेकिन आज वे चिन्तित हो गये। विश्वनाथने जयाको पोस्टकार्डमें चिट्ठी लिखी है।

अन्दर जाकर उन्होंने आवाज दी—"रानी शकुन्तले।"

किसीने जवाब नहीं दिया। घरके चारों तरफ देखा। देखा कि भण्डारमें ताला लटक रहा है। दूसरे कमराका भी दरवाजा, खिड़की बन्द। न्यायरत्नको अचम्भा हुआ। ऐसे वक्त तो जया कहीं नहीं जाती।

उन्होंने फिर पुकारा—"अजय, अज्जो बापी।"

अजयने जवाब नहीं दिया। जवाब दिया घरके चरवाहेने—"जी आया।" उधरके चलिएसे सोये अजयको गोदीमें लिये वह छोरा जल्दीसे आया "जी, अज्जो सो गया है।"

"अजयकी माँ कहाँ गयी?"

"जी, बहूजी हमारे टोलेकी तरफ गयी है।"

"तुम्हारे टोलेकी तरफ?"—न्यायरत्न हैरान हो गये। जया बाउरी टोला

गयी है। उसकी भवें सिकुड़ गयीं।

छोटेने बताया, 'जी, ग्लेन बाउरीके बच्चेकी नाभी गिर रही है। उसकी बीबी ठाकुर बाबाके चरणामृतके लिए आयी थी। इसीलिए बड़जी वहाँ गया है।'

'नाभ गिर रही है! हुआ क्या है उसे?'

'सो क्या पता। हवा बयार लगी होगी।'

हवा-बयारसे मतलब भूत-चुड़ैलसे है। उस दुःखमें भी न्यायरत्न जरा हँसे। लोगोंका यह विश्वास आखिर नहीं गया।

इतनेमें जटा लौटे। नजदीक गोरा चबूतरा आया। न्यायरत्न बोले— इस पुकेरको तुमने स्नान किया?

जटाने धीरे और उदास स्वरमें कहा, "उसका बच्चा मर गया दादाजी!

"मर गया?"

"जी।"

"क्या हुआ था?"

"बुखार। मगर ऐसा बुखार तो मैंने नहीं देखा कभी।"

न्यायरत्नने परेशान होकर कहा, 'पहले तुम कपड़ा बदल लो। फिर सुनूँगा।" फिर भी जटा गयी नहीं। बोली — कल शामसे मामूली बुखार था। सवेरे भी वह चलता रहा था। जलपानके वक्तसे बुखार तेज हो गया। बेहोश हो गया। घण्टा भर पहले मूर्च्छित-सा हुआ। मैंने सुना — देबुडियामें भी परसों एक लड़का ऐसे ही मर गया। टोलेमें और भी तीन चार बच्चोंको ऐसा ही बुखार हुआ है। यह कैसा बुखार है दादाजी?"

बीस

मलेरिया इस बार महामारीका रूप लेकर आया। घर घर बुखार। चारों ओर लोग बीमार पड़े रहे हैं। कौन किसके मुँहमें पानी दे, ऐसी हालत है! वयस्कोंके लिए आफत घातक नहीं है, वे भोगकर हड्डियोंके ढाँचेसे ही ठीक हो जाते हैं। पाँच-सात दिन या चौदह दिन तक बुखारकी मियाद होती है। बच्चोंके लिए वह घातक है। पाँच सात सालके बच्चोंको बुखार हुआ नहीं कि बाप माँके माथेपर

आसमान टूट पडता है। तीन या पाँच दिनोंके अन्दर ही कोई आपदा आ उपस्थित होती है। बुखार एकाएक मयूराक्षीकी बाढ़ घोड़ा-बाढ़-सा ही एक बारगी बढ जाता है। लडका बेचारा सिर धुनने लगता है। उसके बाद उसके हाथ-पाँव खिंचने लगते हैं। बस-कुछ घण्टोंमें सब समाप्त। दस बच्चोंमें बहुत तो दो-तीन बचते हैं, सात-आठ मर जाते हैं।

परसों रातको पातू मोचीका बच्चा चल बसा। पातूकी बीबीके काफी उम्र तक कोई बच्चा नहीं हुआ। महज दो साल पहले उस बच्चेसे उसकी गोद भरी थी। लोग-बाग कहते हैं—वह बच्चा इस गाँवके हरेन्द्र घोषालसे पैदा हुआ है। लोग-बाग ही नहीं पातूकी माँ दुर्गा भी कहती है। घोषालसे अपनी स्त्रीके गुप्त प्रेमकी बात पातूको भी मालूम है। पहले जब पातूको चाकरान जमीन थी, वह ढाक बजाकर दो पैसे पैदा किया करता था। उस समय वह मातवर था। इज्जत आबरूकी तरफ सख्त नजर थी। उस समय दुर्गाकी बदचलनीसे उसे बडी शर्म आती थी। दुर्गाको उसने जाने कितनी बार झिडका था कभी कभी पीटा भी था। उस समय उसकी स्त्री भी एक अलग ही स्वभावकी थी। पातूसे वह बहुत डरती थी उसपर उसे गुमान भी थी। मोटी-ताजी बिलया सी वह हरदम घरके काम-काजमें घुर घुर करती रहती थी। उसकी सासने बहूको जवानीका रोजगार करनेके लिए बहुत-बहुत लोभ लालच दिखाया था, लेकिन उस समय बहू किसी भी प्रकारसे राजी नहीं हुई। उसके बाद श्रीहरि घोषके आक्रोशसे पातूके जीवनमें एक हेर-फेर आ गया। घर-द्वार गया, पातूने बजानेका पेशा छोडा, रोजम-जूरी शुरू की। इस हालतसे पातू कैसे बदल गया—यह स्वयं पातू भी नहीं जानता।

घरमें दाने नहीं रहनेसे दुर्गासे उधार-पुधार लेता। लिहाजा दुर्गापर डाट-फटकार करना छूट गया। उसके बाद एक दिन पातूकी माँने कहा, "पातू दुर्गा रातको कहना जाती है। अगर तू उसके साथ जाया कर तो बाबुओंसे तुझे भी तो बख्शीश मिले। और फिर वह अकेली जाती है किसी दिन रात बिरातमें कोई आपद विपद आये तो क्या होगा? आखिर तेरी तो माँके पेटकी बहन है।'

बाबुओंके अभिनयकी महफिलमें दुर्गाको साथ लेकर जाते-जाते पातू इसका भी आदी हो गया। इसी बीच एक दिन उसे पता चला कि उसकी स्त्री भी इस व्यवसायमें जुट गयी है। शामके बाद घोषालको टोलेके किसी एकान्तमें घूमते देखा जाने लगा और पातूकी बीबी भी उधरको जाती दिखाई पड़ने लगी। एक दिन पातूकी माँने अपनी आँखों देख लिया और चिल्ल-पो मचा उठी। दुर्गाने कहा, 'चुप हो जा माँ। घरकी बहू है छि।'

पातूने न तो गाँवको चुप होनेके लिए कहा और न बीवीको ही डाँटा-फटकारा। वह चुपचाप घरसे निकल गया। उसकी बीवी डरके मारे भाग गयी थी। कई दिनोंके बाद खुद पातू ही जाकर उसे लिवा लाया था। कुछ दिनोंके बाद पातूकी बीवीने उस बच्चेको जन्म दिया।

टोलेवालोंने कानाफूसी की— बच्चा देखनेमें घोषाल-जैसा हुआ है। रंग जरा साफ हुआ है।

लड़केकी शरारत देखकर पातूने भी बहुत बार कहा, 'बाम्हनकी अक्लकी मिलावट है न! कम्बख्तकी शरारत देखो जरा!"—और वह खोलकर हँस पड़ता।

बच्चेको वह प्यार करता था। तीन ही दिनके बुखारमें बच्चा चल बसा। दुर्गा भी उसे बहुत चाहती थी। उसने डॉक्टरसे दिखाया था। जगनको जब-जब भी बुलाया नकद रुपये दिये। नियमसे दवा खिलायी। फिर भी नहीं बचा वह।

अचम्भा इस बातका था कि इससे पातूकी स्त्री उतनी मायूस नहीं हुई जितना मायूस हुआ पातू। मोटे गलेसे पुक्का फाड़कर रोते हुए उसने समूचे मुहल्लेको बेकल कर दिया।

आफतकी उस रातमें सतीशने आकर उसे सँभाला दिलासा दिया। बाउरी और मोची टोलेमें सतीश मण्डल एक आदमी है। उसके हल है, घरमें दो मुट्ठी अन्नका ठिकाना है। मनसाके भसान दलका वही मातबर है, घेंटू दलका मूल गायक है, तरह-तरहके गीत जानता है, इसलिए हरिजन मुहल्लेके लोग उसे मानते हैं। उसीने बच्चेके शवके संस्कारका इन्तजाम किया। दूसरे दिन पातूको बुलाकर अपने घर लिवा ले गया, वहाँसे देवूके बैठकेमें ले गया।

देवूका बैठका इस समय सदा गुलजार रहता है। गाँवके तथा आस-पासके गाँवोंके बारह-तेरहसे लेकर अट्ठारह उन्नीस सालके लड़के आते-जाते ही रहते हैं, गुल-गपाड़ा करते रहते हैं। तिनकौड़ीका बेटा गौर उन सबोंका सरदार है। पातू भी कई दिनोंसे यहींके काममें लगा हुआ है। लड़कोंके साथ-साथ वह बोरा ढोता चलता है। गाँव गाँवसे मुट्ठियोंका चावल ढोकर ला देता। उसकी इस मुसीबतमें सहायता-समितिकी ओरसे चावल देनेकी व्यवस्था हो गयी। बात सतीशने उठायी।

देवू किसी गम्भीर चिन्तामें मग्न था। सतीशने ज्यों ही बात उठायी कि सचेत होकर उसने कहा, 'जरूर-जरूर। पातूका इन्तजाम करना ही होगा! जरूर!'

पातूके लिए चावलका इन्तजाम देवूने कर दिया। चावल ले जाया करती

दुगा। वह सुबह ही जमाई पण्डितके यहां जाती। बाहरसे घर गिरस्तीकी साफ-सफाई, काम-काज, जो भी होता, देबू यहाँ वह भरसक उतना ही करती, सहायता-समितिका चावल मापा करती। सवेरे जाती और दोपहरको खानेके वक्त लौटती। खा-पीकर जाती सो शामके बाद लौटती। इन दिनों वह सदा व्यस्त रहती है। बनाव सिंगारकी तरफ ध्यान देनेकी भी उसे फ़ुरसत नहीं।

वह सवेरे देबूके यहाँ गयी। पातूकी मा ओसारेपर बठी पोतेके लिए शिकायत करती हुई रो रही थी। उसकी शिकायत सबके ख़िलाफ़ थी। वह रो रही थी—"यह सवनाश दुर्गाके पापसे हुआ। और पापिन वह बाम्हनके शरीरमें पाप लगाकर अपने महापापकी भागिन बनी है। उसी पापसे इतना बड़ा अनय हुआ। मूरख गँवार पातूने देवस्थानमें ढाक बजाना छोड़ दिया है। देवताके शापसे ही उसका पोता मर गया। सारा गाव पापसे भर गया है। इसीलिए मयूराक्षीका बांध टूटा, बाढ़ बनकर बाढ़ आयी। इसीलिए महामारी-जसा यह बुखार आया है। गावके पापसे उसी बुखारमें उसका पोता मर गया पतिकुल, पुत्रकुल निवश हानेको है।"

टोलेमें यहाँ-वहाँ और भी कई घरोंमें रोना धोना चल रहा था। पातू घरके पिछवाड़े अकेले बठकर रो रहा था। आज सतीश नहीं था। दूसर किसीने बुलाया नहीं। वह भी नहीं गया।

रोना बन्द करके पातूकी माँ अचानक आयी। पातूके सामने बठकर हाथ हिलाती हुई बोली, "अब गजब मत कर बेटे, मत रो! दूसरेके बेटेके लिए अब अफ़सोस मत कर! उठ! उठकर कुछ इमलोल काट ला। घरकी टूटी दीवारोंको घेर ले। काम-काज कर।"

बाढ़में पातूके घरकी एक दीवार गिर गयी थी। दुर्गाके कोठाघरके निचले कमरेमें वह इस समय रह रहा था। उस कमरेका उपयोग अबतक पातूकी माँ किया करती थी।

पातूकी माँ बाली, 'रोग-शोकसे मेरे पंजरेकी हड्डियाँ झंझरी हो गयीं। रातको सोती हूँ और तुम दोनों फास-फास करके रोते हो, मुझे नींद नहीं आती। तुम लाग अपना घर बना लो। कितनोंके तो घर गिरे। सबने जैसा बना, बना बनू लिया अपना। तुम्हारा ही नहीं बन सका।

पातूकी माँने ग़लत नहीं कहा। बाढ़से बस्तीका कोई भी घर पूरा-पूरा साबित नहीं बचा था। किसीका ज्यादा किसीका कम नुक़सान हुआ। किसीकी पूरी, किसीकी अधूरी, तो किसीकी दो-दो दीवारें गिर गयी थीं। दो-चार आदमी का पूरा घर ही गिर पड़ा था। लेकिन इन बीस-पचीस दिनोंमें सबने कुछ-न-कुछ

व्यवस्था कर ली। किसीने बाँसके पत्तोंसे घेर लिया। जिसका फूसका पूरा घर ही गिर गया था, उन्होंने छप्पर बनाया और ताड़के पत्तोंकी पलानीसे घेरकर सिर छिपानेकी गुंजाइश कर ली। पाल बाबू—श्रीहरि घोषने दिल खोलकर लोगोंकी मदद की। यह भी कहा कि जिसको भी बाँसके पत्तोंकी जरूरत जिस दिन हो, काट ले। दाम या रुपयेके हिसाबसे उसने बहुतोंको बाँस भी दिया। लेकिन पातू श्रीहरि घोषके पास नहीं गया। जानकर भी घोष उसे देखा या नहीं, इस बातमें सन्देह है। यद्यपि सतीश बाउरीको उसने कुछ भी मदद नहीं दी। कह दिया, तुम तो ज्यादा गरीब नहीं हो!

सतीश अवाक् रह गया। वह कबसे आदमी बन गया? श्रीहरिने कहा 'पहले तुम छोटे मातबर थे अब नामवर हो। न केवल इस गाँवके बल्कि पंचग्रामके एक मातबर हो। सहायता-समिति तुम्हारे हाथमें है। तुम लोगोंकी मदद कर रहे हो, भला मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ!'

समझ-बूझकर सतीश वहाँसे उठ आया था।

लेकिन यह सुनकर पातू हँसा था। बोला—सतीश भाई, इस सालेकी मैं शकल तक नहीं देखता। सालेकी शकल देखनेसे पाप होता है। मैं मर भी जाऊँ मगर उसके दरवाजे नहीं जा सकता।'

पातू गया नहीं। दुर्गाके सूखे घरमें रसोई-पानीकी जगह मिल गयी तो अपने घरकी मरम्मतकी उसने चिन्ता भी नहीं की। रातमें उसके सोनेकी जगह भी ठीक-ठाक थी ही। देबूकी स्टेशन पर जानेके बादसे दुकान पातूके लिए वह नौकरी ठीक कर दी थी। शामको खा-पीकर वह अपने बीबी-बच्चोंके साथ देबूके यहाँ जाकर सोता। बच्चा मरनेके बाद कई दिनोंसे वे दुर्गाके ही यहाँ सो रहे थे। लिहाजा अपने घरकी मरम्मतकी कोई खास इच्छा ही उसकी नहीं थी। उसके मनकी जो इच्छाएँ थी वे भी बहुत पहले गायब हो चुकी थीं। रसोई पानी, खाने-बैठनेकी जगहके सिवा मनुष्यको जिस कारणसे घर बनानेकी जरूरत होती है वह पातूके नहीं है। घरमें वह रखेगा भी क्या? रखने-जैसा कोई चीज भी तो नहीं है उसे। इसके लिए घोषसे मुकदमा लड़नेमें उसके सारे बरतन बासन बिक गये। वह बजनिया है—पहले उसके दो ढाक थे, एक ढोल भी था। बजनियेके बिना मुनाफेका पेशा छोड़ देनेसे वह भी चला गया। पहले चमड़ा एक सहारा था—अब वह भी नहीं है। रुपये लेकर मवेशियोंके मरघटका बन्दोबस्त जमींदारने कर लिया है। वह कारबार भी अब नहीं रहा। कारबार नहीं रहा तो रुपये-पैसेकी आमदनी भी बन्द हो गयी। सो घरमें वह रखे भी क्या और घरको सजायेगा भी किस चीजसे? बपौती भार-कुठाले बिक जानेके

बादसे पुराने सन्दूक पिटारेकी तरह यह भी नाटर हो उसकी जिन्दगीको सारी जगहको घेरे हुए था। बाढ़ने घरकी एक तरफकी दीवार ढह गयी, मानो बाढ़के सालो बक्सके एक ओरको दीमकने चाट लिया। पातू न तो उसे अब हिलाना चाहता था न डुलाना। बाकीको भी दीमक चाट ले तो वह जो जाये मानो। बीच-बीचमें उसने यह सोचा कि यह घर गिर जाये तो इस जगहमें वह लौकी-काहड़ा लगाये। उससे काफी-कुछ होगा। कुछ खायेगा, कुछ बेचेगा।

माकी बात सुनकर पातूका मन दुःखसे, क्रोधसे जैसे जहरीला बन गया! तेल लगनेसे कटा घाव जैसे विषाक्त हो उठता है, वैसे ही पीड़ादायक विषाक्त हो गया। मांसे उसने कुछ नहीं कहा। वह वहाँसे उठकर चला गया।

जाये भी कहां! बस, सतीशका घर था। लेकिन चूंकि आज सतीश नहीं आया इसलिए रुककर वह वहां नहीं गया। दूसरा था देवूका बठका। लेकिन वह भी पातूको अच्छा नहीं लगा। वहां देशको छोड़कर दूसरी कोई बात ही नहीं होती। आज वह महज अपनी बात कहना, दूसरोंसे सुनना चाहता था कि सचमुच उसका दुःख कितना बड़ा और मार्मिक है। वह जानना चाहता है कि पातूके दुःखसे लोगोंको कितना दुःख हुआ है। देसकी बात, दस गाँवोंकी बात उसे इस समय सुहाती नहीं थी।

पातू बँहारकी ओर चला।

मगर बहारमें भी क्या है! सारी बहारको बाढ़ने बरबाद कर दिया है। कहीं बालू धू धू कर रही है तो कहीं गन्ढेमें पानी जमा है। जिन खेतोंका बसा कुछ नुकसान नहीं हुआ, वे चौबीर हो गये हैं उनमें तो हाड़-पंजरे निकल आये हैं। चारों ओर ऊँच-नीचे ऊबड़-खाबड़ कुछ खेतोंमें फिरसे धान जरूर बोया गया है। बाढ़की लायी हुई माटीकी उपजाऊ शक्तिसे धानके पौधे गजबके जोरदार हो उठे हैं। और भी बहुत-से खेत बोये जा सकते थे पर बीज नहीं था। बीज भी शायद मिलता, गुरुजीने बीजका प्रबन्ध किया था घोष भी देनेको तयार था। लेकिन मलेरियाने मानो खेतिहरोंकी हड्डी-पसली तोड़ दी।

—कि किसीके ऊँचे गलेका गीत सुनाई पड़ा। आवाज पहचानी हुई थी। सतीश-जैसा गला लग रहा था।—हाँ, सतीश ही है। मयूराक्षीके बाँधपर-से आ रहा है। गया कहाँ था सतीश? वह हँसा। सतीशकी हालत मोटा-मोटी अच्छी है। खाने हैं रहे हैं। काम ही कितना है उसे! किसी कामसे निकला होगा। काम बन गया, इसलिए खुशीसे गाता हुआ लौट रहा है। उसकी हालत

कुछ पानू-जैसी तो नहीं है! उसकी जमीन भी नहीं गयी है और वह या तबाह भी नहीं हुआ है। उसका बच्चा भी नहीं मरा। वह गान क्या नहीं गायेगा! पानूसे एक दीर्घ निःश्वास छोड़े बिना नहीं रहा गया।

"मा-लखी तुम करो अर मन गोशा बहुत बड़ा था। " अच्छा, तो सतीश गाकर माहात्म्य गा रहा है!—

"दीन-दरिद्र की लक्ष्मी यह शिव का है वाहन,
लुट रहे मा माता तो फल फूल उठे जीवन! "

पानूको देखकर सतीशने गाना बन्द कर दिया। बड़े दुःखसे साथ बोला, "रहम शेखके बैलका जोड़ा दोनोंका दोनों मर गया!'

पानू उसकी ओर ताकता रह गया।

सतीशने कहा, 'रात रहते ही मुझे बुला ले गया था। कुछ नहीं कर सका। शेख छाती पीट-पीटकर रो रहा है। अहा, क्या खूबसूरत थे दोनों बैल!"—कहते कहते सतीशकी भी आँखोंमें पानी भर आया। आँखें पोछकर उसने उसाँस ली।

पानूने पूछा, 'हुआ क्या था?"

गरदन हिलाकर सतीशने कहा 'समझ नहीं पाया। लेकिन हाँ, भाई बड़ा ही रोग था। कुसार जम बच्चोंकी पूँजी खत्म किये दे रहा है, यह रोग बस ही मवेशियोंको झाड़-पोछकर ले जायेगा। बड़ा बुरा है!"

सतीश बाउरी इलाकेका बहुत बड़ा गो-चिकित्सक भी है। इसीलिए रहम का बैल बीमार पड़ा तो उसने इसीको बुलाया।

रहम सच ही छाती पीटकर रो रहा था।

बड़े प्यार के रहमको ये बैल। अपनी जो स्थिति है, उससे भी ज्यादा पैसे देकर उन बैलोंको उसने छोटे से तभी खरीदा था। जतनसे पाला-पोसा। दवाई करते हुए जोतने योग्य बनाया। तन्दुरुस्त, मजबूत और सुन्दर बैल दोनों इलाकेमें रश्क करनेकी चीज थे। रहमने उन दोनोंका नाम भी रखा था—एकका प्रहलाद, दूसरेका अकाई। प्रहलाद और अकाई इलाकेके मशहूर बलवान् जवान थे। उन बैलोंका रहमको फख कितना था! अच्छी सड़कसे जब वह अपनी गाड़ी लिए जाता और लोगोंपर नजर पड़ती तो बैलोंके पटम पकड़के *अँगूठेको ऐंठकर लगाता और पीठपर उसली लगाकर नाकसे एक अजीब-सी* आवाज निकालकर बैलोंको दौड़ा देता। कहता—'शेरका बच्चा है, शेरका! अरबी घोड़ा!' कभी राहगीरोंको चिल्लाकर होशियार कर देता, हटो-बचो!

बरसातके दिनोंमें किसीकी गाड़ी कीदोंमें फँस जाता, जाड़ामें धानसे लदी

गाडी गड्ढे-चड्ढेमें गिर पडती, तो रहम अपने प्रहलाद और अकाईको लेकर वहा हाजिर हो जाता। उनकी गाडीके बैलोको खोलकर प्रहलाद और अकाईको जोत देता। ये दोनो बैल झट गाडीको निकाल देते। सबसे रहमके बडे-बडे दॉत आप ही चुपचाप निकल पडते। इलाकेमें श्रीहरि घोषके सिवा इतने अच्छे हल्के बैल और किसीके पास नही थे। श्रीहरिने अपने बैलोकी कीमत साढे तीन-सौ रुपये दी थी।

रहम छाती पीटकर रो रहा था।

रोये नही भला? बैल उसके लिए लायक लडकेसे भी ज्यादा थे। बडे आदर और बडे प्यारके थे—काम-काजमे उसके दो हाथ कहिए उन्हे। कन्धेपर खाट ढोते, कलेजेकी ताकत लगाकर खेत जोतते—योग्य लडके जिस तरह बूढे माँ बापको कन्धे-पीठपर उठाकर पाथर-पथडीके पीरका दर्शन करा लाते है ये बैल रहमको, उसके परिवारको गॉव-गॉव घुमा लाते थे, खेतकी फसल घर पहुँचाते थे। इस खौफनाक बाढमें खेतकी फसल सड गयी, सो भी प्रहलाद और अकाईकी मददसे रहमने अपनी आधीसे अधिक जमीनमें फिरसे धान रोप लिया। बाकी जमीनमें क्वारके महीनेमें खेतीकी सोच रखी थी। अब वह खेती कैसे करेगा? और जिन खेतोमें रोपा करा चुका है उसीकी फसल कैसे अपने घर लायेगा?

एक बार इदुज्जुहाके समय उसने इरशादसे एक कहानी सुनी थी।—'एक बड ही धार्मिक मुसलमानने कुर्बानी करनेकी सोची। उसने अच्छी तरहसे सोचकर देखा कि दुनियामें उसे सबसे प्यारी कौन सी चीज है। और उसने खेती करने-वाले अपने सबसे अच्छे बैलकी कुर्बानी की थी।' किस्सेको सुनकर उसका कलेजा धडक धडक उठा था। बार-बार उसे अपने प्रहलाद और अकाईकी याद आयी थी। दो तीन दिनो तक वह ठीकसे सो नही सका था।

रहम आदमी गँवार है। अक्ल उसकी उतनी तेज नही है, लेकिन उसके हृदयका आवेग बहुत प्रबल है। वह बिल्कुल बच्चेकी तरह रो रहा था। दूसरे-दूसरे मुसलमान खतिहर भी आये थे। वे भी वास्तवमें दुखी हुए—अहा, इतने अच्छे जानवर मर गये! वे लोग भी रहमके बैलोपर गावके होनेके नाते दूसरे गाँववालोके सामने नाज करते थे। दुर्गापूजाकी दशमीको बैलोकी एक प्रति योगिता होती है। घोडेकी दौड-जैसी दौडकी होड थी। मयूराक्षीके चौरपर लोग एक निश्चित जगहपरसे अपने बैलोको छोड देते है। पीछेसे जोरोसे ढाक बजता है। चौंककर बैल दौडना शुरू कर देते है। निश्चित जगहको जो बैल सबसे पहले पार कर लेता है, वही इलाकेका श्रेष्ठ बैल माना जाता है। उस बार

श्रीहरिके जीको यह सम्मान मिला था। दूसरे साल तिनकौड़ीने रहमके जोड़को ले गया था। कहा था, अरे भाई, मुझे उधार दे। मैं साल भर पालकर घमण्ड तोड़ दूँ।

रहमने ना नहीं किया। वह खुद मुसलमान है, पर बैल तो उसके घरके ही हैं—न हिन्दू न मुसलमान। और श्रीहरिका गुमान तोड़ देनेसे उन निरीह पशुओंको कुछ कम खुशी नहीं होगी। उस बार रहमके प्रहलादने सबको पछाड़ दी। प्रहलादके बाद श्रीहरिके बैल पहुँचे और उसके बाद रहमका अकाई।

इरशादने आकर रहमका हाथ पकड़ा— 'उठो चाचा उठो। क्या करोगे! [illegible] ऐसा ही होता है। फिर एक देखकर अच्छा बछड़ोंका जोड़ा खरीद लेना! फिर हो जायेंगे। इनसे भी अच्छे होंगे देख लेना!'

रहमने कहा, 'नहीं चाचाजान, अब नहीं होनेके। मेरे प्रहलाद और अकाई-जैसे नहीं होंगे। नहीं। और इरशाद—' आँसू भरी बड़ी आँखें उठाकर उसने कहा, 'मेरा इन हड्डियोंमें अब नहीं होनेका। मेरे है क्या? किससे होगा?'

इरशादने कहा, 'हाँ रुपयोंका इन्तजाम मैं करा दूँगा चाचा। मैं बयाना देता हूँ। उठो।'

ऐन वक्तपर तिनकौड़ी आ पहुँचा। बैलोंके मरनेकी खबर सुनकर वह दौड़ा आया था। उसे देखकर रहम फूट फूटकर रोने लगा— तिनू भाई मेरा सत्यानाश हो गया भैया!

तिनकौड़ी आँखें फाड़कर मरे हुए बैलोंको देख रहा था। वह प्रहलादकी लाशके पास जाकर बैठा। उसपर हाथ फेरा और एक लम्बी उसाँस लेकर बोला, "ओह, दोनों ऐरावत। आह, इन्द्रपात हो गया!" उसकी आँखोंसे टपाटप आँसूकी बूँदें चू पड़ीं।

आँखें पोंछकर बोला, "सुना महाग्राममें भी कई बैलोंको रोग हुआ है।"
खेतिहरोंने चौंककर पूछा, 'महाग्राम?'

'हाँ'—गरदन हिलाकर तिनकौड़ीने कहा, 'बच्चोंकी तरह गो-महामारी भी शुरू हो गयी, देखता हूँ। सतीश बाउरीने बताया, बीमारी कुछ समझमें ही नहीं आ रही है!'

इरशाद तथा दूसरे खेतिहर बहुत सोचमें पड़ गये।

तिनकौड़ीने कहा, "मवेशी डॉक्टरके लिए देबूने जिलेमें तार भेजा है। और हाँ इरशाद चाचा, देबूने तुम्हें जरूरसे जरूर जानेको कहा है। कल रात कलकत्तेसे विशू बाबू और दूसरे कौन-कौन तो आये हैं। तुम्हें जानेको कहा है। ज़रूर।"

अचानक जरा अजीब-सा हँसकर वह बोला—"मैंने महाग्राममें देखा, रमेन चटर्जी और दौलतका आदमी मोची टोलेमें घूम रहे हैं। मैं समझ गया, प्रह्लाद और सफाईकी माल छुड़ानेकी ताकीद करने गये हैं। इसीको कहते हैं, किसीका सर्वनाश और किसीको खुशी।"

रहम पागल-सा हो उठा— मैं मरघटमें इन्हें नहीं फेंकूँगा, माटीमें गाड़ दूँगा।"—उसके बाद इरशादका हाथ पकड़कर बोल उठा— इरशाद तो यह उन्हीं लोगोंका काम है।"

"क्या?"—इरशादने अचरजसे पूछा।

"मोचियोंसे उन लोगोंने जहर दिलवा दिया।"

तिनकौड़ीने निःश्वास छोड़ा। कहा, 'नहीं-नहीं भाई, यह जहर-वहर नहीं, बीमारी ही है। महामारी—गोरू-महामारी। उन लोगोंने मवशी-मरघट बन्दो बस्त लिया है, मुनाफा तो उन्हें होगा ही।"

इरशादने कहा, 'तो अभी मैं चलूँ चाचा। चूल्हेपर भात चढ़ा आया हूँ। जल जायेगा। तीसरे पहर जरा देबू भाईके पास जाना होगा। तिनू चाचाने बताया कि विशू भाई आया है। देखूँ क्या कहता है।

छमीर शेख बड़ा ही गरीब है। मजूरी करके गुजारा चलाता है। शरीरसे कमजोर। रोगी होनेसे मजदूरी भी कमी नहीं मिलती। यह दुस्सह अवस्था उसकी मदारी है। आदी हो गया है उसका। बीच-बीचमें भीख भी वह माँगता है। बाढ़के बाद यह 'सहायता-समिति' जो गुनी है इससे वह इरशादका बड़ा फरमाबरदार बन गया है। इरशादके पीछे-पीछे कुछ दूर जाकर कहा इरशाद भाई।"

इरशादने पलटकर देखा—"छमीर शेख!—क्या है छमीर?'

देबू गुरुजीके पास जाओगे? मेरे और कबीलेके लिए अगर दो कपड़े लिए कह दो। पुरानेसे भी काम चल जायेगा।'

इरशादने कह दिया—'अच्छा।'

इरशादने विशूको बहुत बार देखा है। लेकिन कभी खास बात-चीत नहीं हुई। विशू जब राजनाके स्कूलमें 'फर्स्ट क्लास में पढ़ता था, उसी समय इरशाद अपने ननिहालसे मिडिल पास करके वहाँ दाखिल हुआ था। उसमें वैसा फर्क नहीं था। इरशाद ही उससे लगभग साल भर बड़ा था। लेकिन फर्स्ट क्लास और फोर्थ क्लासका अन्तर स्कूल-जीवनमें इतना होता है कि दोनोंमें परिचय

जमनेरा मौरा नही मिला। उसके बाद दूरसाद मानसरा मौल्वी बना और धमकी बातोंमें मनमुटाव हो गया। सो यह विजूसे जरा विरूप हो गया। यद्यपि विजू हिन्दू—ब्राह्मण—पण्डितके परिवारका था। लेकिन विलायत दवूमें प्रतिष्ठित होनेके कारण उसका यह दुराव धीरे धीरे दूर होता जा रहा था। दवूसे विजूरायके बारेमें सुनकर यह हरा हो गया है। विजूमें कट्टरता जरा भी नहीं है। मुसलमान औरतोंके यहाँतक कि अछूतोंको छूकर भी वह नहाता नहीं है।

देबूने कहा था— तुम्हें देखते ही वह तुम्हारे हाथ पकड़ लेगा, तुम देख लेना इरशाद भाई।"

विजूके पत्र उसे बहुत अच्छे लगे। बाढ़के बाद बाढ़-सहायता-समितिका समाचार भेजकर जिस दिन उसने रुपये भेजे, उस दिन वह अवाक् रह गया। विश्वनाथसे उसका साक्षात् परिचय न होनेके बावजूद उसे लगा कि वह एक नयी किस्मका आदमी है। बकनाके बाबू-परिवारमें इस किस्मका लड़का कोई नहीं है। उसके जाने चौधुरी मियाँ मुसलमानोंके यहाँ भी नहीं, उसकी अपनी बस्तीमें तो नहीं ही है। उसे लगा विश्वनाथसे उसके मेल न होनेका कोई प्रश्न ही नहीं। देबूको लिखे उसके खतोंमें विश्वनाथकी बातचीतमें दोस्तोंका खासा सुर है जो पलमें दिलको छू लेता है। वह उसे देखनेका आग्रह लिये ही चला। सोच रहा था कि विश्वनाथ जब उसके हाथ पकड़ लेगा तो वह क्या कहेगा? विजू बाबू? कि भाई साहब? या कि विजू भाई? देबू तो विजू भाई कहता है। लेकिन तुरत ही उसका विजू भाई कहना क्या ठीक होगा?

देबूके घरके कुछ ही आगे जगन डॉक्टरका दवाखाना है। डॉक्टर एक कुरसी पर बैठा गम्भीर होकर बीड़ी पी रहा था। इरशादको जरा अचरज हुआ। डॉक्टर भी सहायता-समितिका एक पण्डा है। खास करके इस तरह घरवाले मलेरियाके समय सहायता समितिके नामसे जिस तरह लोगोंका इलाज कर रहा है उससे उसकी मन्द भी दयाके किसी मोटे अवसरसे कम नहीं है। आज विजू आया है और डॉक्टर यहाँ बैठा हुआ है! इरशादने कहा 'सलाम डॉक्टर।"

डाक्टरने भी कहा 'सलाम।"

हँसकर इरशादने कहा, 'क्या हाल है, आप बैठे हैं?'

'क्या करूँ, नाचूँ?"

इरशादको जरा चोट लगी। दुःखित विस्मयसे उसने जगनके मुँहकी तरफ़ देखा। जगनने कहा, "कहाँ जाओगे? देबूके यहाँ?"

नीरस कण्ठसे इरशाद बोला "हाँ, सुना विश्वनाथ आया है। एक बार महाग्राम जानेकी सोचता हूँ।"

"वह महाग्राममें नहीं है। जक्शनके डाक-बँगलेमें ठहरा है। देबू भी वहीं है।"

"जक्शनमें?"

"हाँ"—कहकर डॉक्टर बीड़ी फूँकने लगा। और फिर आगे बात नहीं की।

उससे कुछ आगे हरेन घोषालका घर। घोषाल उत्तेजित-सा अपने घरके सामने घूम रहा था। वह आप ही-आप संस्कृतका श्लोक बोल रहा था—'स्वधर्मे निधनं श्रेयः, परधर्मो भयावहः।'

इरशाद कुछ और हैरान हुआ। घोषाल भी नहीं गया है! उसने अचरजसे पूछा, "भई घोषाल, माजरा क्या है?"

उछलकर अपने ओसारेपर जाकर घोषालने कहा, "जाओ-जाओ, विशू बाबूने खाना परोसकर रखा है, खा आओ!"—और अन्दर जाकर उसने धड़ामसे दरवाजा बन्द कर लिया।

वहाँसे कुछ और आगे गाँवका चण्डीमण्डप है—श्रीहरि घोषकी ठाकुरबाड़ी। उस ठाकुरबाड़ीके नाटचमन्दिरमें खासी भीड़ जमा थी। श्रीहरि गम्भीर होकर पायचारी कर रहा था। पुरनिये लोग उदास-से बैठे थे। बात सिर्फ़ घोषका कारिन्दा दास कर रहा था—"कंकनाके बड़े बाबू तो अजगरकी तरह फुफकार रहे हैं—समझ गये? कह रहे हैं—मैं नहीं छोड़ता, चाहे महामहोपाध्याय हो, चाहे पीर हो, इसका उपाय मैं करके ही रहूँगा।"

इरशादको अब शुबहा नहीं रह गया। कुछ-न-कुछ गोलमाल जरूर हुआ है। वह सोचने लगा, कहाँ जाये? डॉक्टरने बताया—'विश्वनाथ जक्शनके डाक-बँगलेमें है। देबू वहीं है। जक्शन जाना ही ठीक रहेगा, मगर उससे पहले किससे ठीक-ठीक खबर मिल सकती है?'

कि उसकी नजर पड़ी, देबूके बरामदेपर दुर्गा खड़ी है। इरशाद जल्दीसे गया। पूछा, 'दुर्गा, देबू भाई कहाँ है?'

दुर्गाने उदास मुँहसे कहा, 'महाग्राम गया है, न्यायरत्नजीके यहाँ।"

'महाग्राम? लेकिन डॉक्टरने तो बताया कि जक्शन गया है?'

एक लम्बा निःश्वास छोड़कर दुर्गा बोली "वहाँसे न्यायरत्नजीके साथ महाग्राम गया है।"

इरशादको जरा चोट लगी। दु खित विस्मयसे उसने जगनके मुँहकी तरफ़ देखा। जगनने कहा, "कहा जाओगे ? देवूके यहा ?"

नीरस कण्ठमे इरशाद बोला, "हा, सुना विश्वनाथ आया है। एक वार महाग्राम जानेकी सोचता हूँ।'

"वह महाग्राममें नही है। जक्शनके डाक-वँगलेमे ठहरा है। देवू भी वही है।"

"जक्शनमें ?"

"हाँ"—कहकर डॉक्टर बीडो फूँकने लगा। और फिर आग बात नही की।

उससे कुछ आगे हरन घोपालका घर। घोपाल उत्तेजित-सा अपने घरके सामने घूम रहा था। वह आप ही-आप सस्कृतका श्लोक बोल रहा था—'स्वधर्मे निधन श्रेय, परधर्मो भयावह।'

इरशाद कुछ और हरान हुआ। घोपाल भी नही गया है। उसने अचरजसे पूछा, "भइ घोपाल, माजरा क्या ह ?"

उछलकर अपन ओसारेपर आकर घोपालने कहा "जाओ-जाओ, विघू बावूने खाना परोसकर रखा ह, खा आओ!"—और अन्दर आकर उसने धडामसे दरवाजा बन्द कर लिया।

वहाँसे कुछ और आगे गावका चण्डीमण्डप ह—श्रीहरि घोपकी ठाकुरबाडी। उस ठाकुरवाडाके नाटघर्मा दरमें खासी भीड जमा थी। श्रीहरि गम्भीर होकर पायचारी कर रहा था। पुरनिय लोग उदास-से बैठे थे। बात सिर्फ घोपका कारिन्दा दास कर रहा था—ककनाके बडे बावू तो अजगरकी तरह फुफकार रहे ह—'समझ गये ? वह रह हैं—म नही छोडता, चाहे महामहोपाध्याय हो, चाहे पीर हो, इसका उपाय म करके ही रहूँगा।"

इरशादको अब सुबहा नहा रह गया। कुछ न-कुछ गोलमाल जरूर हुआ है। वह सोचन लगा, कहाँ जाये ? डॉक्टरने बताया—'विश्वनाथ जक्शनके डाक बँगलेमें ह। दवू वही ह। जक्शन जाना ही ठीक रहेगा, मगर उससे पहले किससे ठीक-ठीक खबर मिल सकती ह ?'

कि उसकी नजर पडी, देवूके बरामदपर दुर्गा खडी ह। इरशाद जल्दीसे गया। पूछा, दुर्गा, दवू भाई कहा ह ?

दुर्गाने उदास मुहसे कहा, "महाग्राम गया ह न्यायरत्नजीके यहाँ।'

'महाग्राम ? लेकिन डॉक्टरने तो बताया कि जक्शन गया ह ?'

एक लम्बा निश्वास छोडकर दुर्गा बोली "बहाँसे न्यायरत्नजीके साथ महाग्राम गया ह।'

भ्रष्ट पातेको दम तोड़ते करुण और रौद्ररससे चचल और अभिभूत हो अपने अजानते ही जाने कब वे निरासक्त दर्शकके आसनसे अलग हो अभिनयके रगमचमें उतरकर खुद ही महाकालके क्रीडनक हो उठे।

कई दिनोंसे वे विश्वनाथकी प्रतीक्षामें थे। जयाको उसने एक पोस्टकार्डमें लिखा था कि कुछ लोगोंके साथ वह यहा आयेगा। न्यायरत्नने लिख भेजा था—'तुम लोग कितने जन आ रहे हो, लिखना। यह भी लिखना कि किसीके लिए कुछ खास व्यवस्थाकी जरूरत है या नहीं।" मगर विश्वनाथने उन्हें उस पत्रका जवाब नहीं दिया। कल शामको देबूने उन्हे सूचित किया था कि रातको डेढ बजेकी गाडीसे विशू भाई दूसरे कुछ कार्यकर्ताओंके साथ जक्शनमें उतरेगा। लेकिन यह लिखा है कि रहनेका इतजाम व जक्शनके डाकबगलेमें ही करेंगे।

न्यायरत्न मन-ही मन क्षुब्ध हुए थे। रातको घर आनेमें कौन-सी असुविधा होती? घरमें आज भी दो मेहमानोंके भोजन रखनेका नियम है। कोई नहीं आते हैं तो वह भोजन सबेर किसी गरीबको बुलाकर दे दिया जाता है। हर रोज सबेर गरीब दरवाजेपर आकर खडे रहते हैं। बासी ही, लेकिन यह उम्दा भोजन जूठा नहीं होता। गावके गरीब उसके लिए लुभाये रहते हैं। जयाने अन्न पारो बाध दी है। उसी घरमें विश्वनाथको रातमें अतिथियोंको लानेमें हिचक हुई। हो सकता है उसके मित्र सभ्रान्त हों। विश्वनाथने सोचा हो कि पुराने खयाल के गृहस्वामी उनका योग्य मर्यादा नहीं दे पायेंगे।

किन्तु जयाने इस बातको बहुत सहज-सरल बना दिया था। विश्वनाथके प्रति उसे सदेह होनेका आज तक कोई कारण नहीं मिला। विश्वनाथ दादाजीसे तर्क करता, उस तर्कका वह सिर पर कुछ नहीं समझती और वह शकित हो जाती। फिर तर्क समाप्त हो जानेपर दादा-पोताके स्वाभाविक व्यवहारको देख वह चैनकी साँस लेती। स्वामीसे कभी इसके बारेमें पूछनेपर विश्वनाथ उसे हँसकर टाल जाता। कहता, 'अजी वह सब हमारी पण्डिताऊ बकवास है। शास्त्रमें कहा गया है कि अजा युद्ध और ऋषि श्राद्ध आडम्बर और गुरुतामें एक ही जैसे होते हैं। सुभामें आराका तक वितर्क विचार सभा लेखी तो है—अब मारा कि तब मारा! सभा खत्म हुई कि विदाई माँगकर सब अपने-अपने घर चले गये। हम लोगोंका भी ठीक वही किस्सा है। सभा समाप्त हुई अब विदा करा तो। तुम भी तो मकान मालकिन हो!'—कहकर वह स्नेहसे पत्नीको पास खींच लेता। जया ब्राह्मण-पण्डितकी बेटी है—पन्नाई लिखाई ज्यादा नहीं की, तो भी अजा-युद्ध और ऋषि-श्राद्धकी उपमा सहित विश्वनाथकी युक्तिका वह रस लेती थी और तर्कके बुनियादी तत्वको भी कुछ कुछ भाँप लेती थी।

जयाने कितनी ही बार पूछा, "तुम करना क्या चाहते हो, कहो तो ?"

"माने ?"

"माने दादाजीके साथ तर्क करते हो, कहते हो कि ईश्वर नही है। जाति वाति नही मानते तुम ! छि, इतने बडे आदमीका पोता होकर ऐसा कहना चाहिए ?"

नही कहना चाहिए, क्यो ?"

नही। नही कहना चाहिए।"

स्त्रीकी ओर देखते हुए विश्वनाथ हँसता। न्यायरत्नने बहुत कम उम्रमें उसका ब्याह करा लिया था। विश्वनाथकी मा—न्यायरत्नकी पतोहू—बहुत पहले ही गुजर चुकी थी। न्यायरत्नकी स्त्री—विश्वनाथकी दादीके गुजर जानेके बाद ही जयाने इस घरकी गृहिणीका भार लिया था। उस समय उसकी उम्र मात्र सोलह सालकी थी। विश्वनाथ उसी साल मैट्रिक पास करके कालेजमें दाखिल हुआ था। उस समय वह भी दादाके प्रभावसे प्रभावित था। हॉस्टलमें रहता था। नियमसे सन्ध्या-आह्निक करता था। उस समय कोई उससे नास्तिकता की बात कहता तो वह गेहुअनके बच्चेकी तरह फन उठाकर फास कर उठता। ऐसा भी हुआ है कि कभी-कभी तर्कमें हारकर वह तमाम रात रोता रहा है। लेकिन उसके बाद धीरे धीरे विशाल महानगरीके रूप रस और दग दगके राजनैतिक इतिहासमें वह एक अनोखी ही अभिज्ञता प्राप्त करने लगा। इधर जब उसका वह परिवर्तन पूरा हुआ तो उसने जयाकी ओर निहारकर देखा उसने भी अपने जीवनमें एक परिणति-लाभ की थी। उसका किशोर मन गरम और गली हुई धातुकी तरह न्यायरत्नके घरकी धरनीके साँचेमें पडकर उसी रूपमें गढ उठा था। यही नही उसकी किशोरावस्थाका उत्ताप भी ठण्डा हो आया था। साँचेकी मूरतका उपादान सख्त हो चुका था, उसे गलाकर उस साँचेसे दूसरे साँचेमें ढालनेका उपाय नही था। अब अगर तोडकर नये सिरसे गढना हो तो साँचेको ही तोडना होगा। जया न्यायरत्नके साथ अभिन्न सा होकर जुड गयी थी। अगर जयाको तोडकर गढना हो तो पहले दादाजीको तोडना पडेगा। इसी लिए पत्नीसे छल करके विश्वनाथ दिन बिताता रहा है।

स्वामीका हँसते देख जया उसे तिरस्कार करती था। विश्वनाथ उसपर भी हँसता था। उस हँसीमें जयाको दिलासा मिलता था। उस हँसीका पतिकी अनुगतता समझकर वह पक्की घरनी-सी अपने-आप ही बका करती थी।

आज जयाने दादाजीसे कहा, 'आप बडे उतावले आदमी हैं दादाजी। आपने उससे सुना कि वह रात गाडीसे उतरकर जक्शनके डाकबगलेमें रहेगा,

तबसे चहलकदमी कर रहे हैं। वहाँ रहा तो क्या हुआ ?"

न्यायरत्नने फीकी हँसी हँसकर जयाकी तरफ ताका। उस हँसीका मतलब साफ साफ न समझते हुए भी उसका आँचरो जयाने समझा। उसने भी हँसकर कहा, "आप मुझे जितनी बेवकूफ समझते हैं दादाजी मैं उतनी बेवकूफ नहीं हूँ। वे लोग जंक्शनमें रात—डेढ़ दो बजे रातको उतरेंगे। उसके बाद वहाँसे रेल-पुल पार करके ककना, कुसुमपुर शिवकालीपुर—तीन-तीन गाँव पार करके आना होगा। उससे तो अच्छा है कि रात वहाँ रहेंगे सो-सवाकर सवेरे नावसे नदी पार करके सीधा चले आयेंगे।"

न्यायरत्नको भी यह युक्ति माननी पड़ी। जयाने बेमतलब नहीं कहा। इसके सिवा न्यायरत्नको आज जयाका बल ही सबसे बड़ा बल है। उनके साथ घनश्याम तक करके विश्वनाथ जब न्यायरत्नकी धर्मपरायणा जयाका आँचल पकड़कर हँसता हुआ घूमता था, तो वे मन ही मन हँसते थे। महायोगी महेश्वर मोहिनीके पीछे पीछे पागलकी तरह दौड़े थे। वैरागियोंमें श्रेष्ठ शिवजी उमाकी तपस्यासे कैलास लौट आये थे। उनकी जया तो एक ही साथ दोनों है—रूपमें वह मोहिनी है विश्वनाथकी सेवा-तपस्यामें उमा। जया ही एक भरोसा है। जयाकी बात सुनकर फिर उन्होंने उसकी ओर देखा—उसके चेहरे पर जरा भी उद्वेग नहीं था। न्यायरत्नको अब भरोसा हुआ। जयाकी युक्तिको विचार करके उन्होंने मान लिया—जयाने ठीक ही कहा है।

रातमें बिस्तरपर लेटे-लेटे उनका मन फिर विचलित हो उठा। युक्ति बड़ी सहज सरल थी। कहीं भी अविश्वास करनेकी गुंजाइश नहीं। लेकिन विश्वनाथने यह खबर उन्हें न देकर देबूको क्यों दी? वह आजकल जयाको पोस्टकार्डमें चिट्ठी क्या लिखता है? उन दोनोंके सम्बन्धका रंग क्या चिट्ठीकी भाषाकी तरह ही फीका हो गया है? लौकिक मूल्यके सिवा अन्य मूल्यका दावा नहीं रह गया?—दिमाग गरम हो गया। वे बाहर निकल आये।

"कौन? दादाजी?"—जयाकी आवाजसे वे चौंक उठे। उन्होंने देखा जयाकी खिड़कीकी फाँकमें रोशनीकी छटा जाग रही है। बोले—हाँ मैं ही हूँ। मगर तुम अभी भी जाग रही हो?"

दरवाजा खोलकर जया बाहर निकली। हँसकर बोली 'आपको नींद नहीं आ रही है क्या? अभी भी वही सब सोच रहे हैं?'

न्यायरत्नने अपनेको सँभालकर हँसते हुए कहा 'आनेवालेसे मिलनेके पहले सभी लोग नींद न आनेका रोग भोगते हैं रानी! शकुन्तला जिस दिन पतिके यहाँ गयी थी उसके पहलेवाली रात वह भी नहीं सोयी थी।"

जयाने हँसकर कहा, 'म गोविन्दजीके लिए चादर तयार कर रही थी।"

"गोविन्दजीके लिए चादर तयार कर रही थी? देखता हूँ मेरे गोविन्दजी-
 भी अब तुम छीन लोगी। तुम्हारे चारु मुख और सुचारु सेवासे तुम्हारे प्रेममें
 बिना रह सकते ह गोविन्दजी!"

जया सिर्फ चुपचाप हसी।

'चलो तो! देखूँ, कसी चादर तयार कर रही हो?

सुन्दर तशरका एक टुकडा। उसके चारो ओर सुनहली कोर लगायी जा
 ही थी। न्यायरत्नने कहा 'वाह बहुत अच्छी बनी ह।

हँसकर जया बोली कपडेके इस टुकडेको वे अपना रूमाल बनानेके लिए ले
 ाये थे। मने कहा, नही, रूमाल नही इससे गोविन्दजीकी चादर बनगी। जरी
 ा देना। और फिर फिर बनारसीका एक टुकडा नीले रगका। उससे राधा
 ानीकी ओढनी बना दूँगी। गोविन्दजीकी चादर बन गयी। अब राधारानीकी
 ोढनी बनाऊगी।'

न्यायरत्नका सारा हृदय आनन्दसे भर गया। उनके अपने भाग्यमें चाहे जो
 दा हो जयाका कभी अमगल नही हो सकता। कभी नही। लेकिन सुबह
 ोते ही न्यायरत्न फिर चचल हो उठे। उन्होने यह उम्मीद कर रखी थी कि
 ुबह विश्वनाथकी पुकारसे ही उनकी नीद खुलेगी। विश्वनाथ यहाँ आकर
 पने मित्रोको लानेके लिए गाडी भेजेगा। प्रात कृत्य खतम करके व टोलवाले
 रके छोरपर जा खडे हुए। वहाँसे गावका रास्ता दूर तक दिखाई पडता ह।

किसीके यहाँ रोनकी आवाज उठ रही थी। न्यायरत्नने एक लम्बा
 ने श्वास छोडा आह जाने—फिर किस बेचारीका लाल लुटा!'

जरा देर वसे ही खडे रहे। उसके बाद आकर अपनी चादर ली और रास्त
 ार उतर पडे। गावके छोरपर जाकर खडे हुए। पूरब क्षितिजपर जवाकुसुम
 ायान सूरजका उदय हुआ। चारो ओर सुनहला प्रकाश छिटक गया। दिशा
 दिशा प्रकाशमान! पचग्रामकी सूनी डहरसे यहाँ-वहाँ जमा हुए पानीपर ज्योति
 की छटासे प्रतिबिम्ब झिलमिला रहा था। मयूराक्षीके बाधपर सरपतकी
 झाडियाँ हवामें हिल रही थी। वह रहा शिवकालीपुर। इधर दक्खिन बाँधके
 किनारसे पगडण्डी। कही कोई नहीं। बहुत दूरपर—शायद शिवकालीपुरके
 पश्चिम कुछ हर खेतोमें काली काठियो-सी हिल रही थी। शायद हो कि खेतोंमें
 लोग काम कर रहे हो। न्यायरत्न पगडण्डीसे धीरे धीरे आगे बढे। इस उद्वेग
 में उन्होने मन ही मन अपने पोतेको बार-बार आशीर्वाद दिया। लोगोके लिए
 यह बडे सकटकी घडी ह। मुँहके कौर बाढमें बह गये लाग वे घर-बारके हो

गये, घर घर राग, आवारा-बाबासमें शोककी रुलाई—लोगोंके इस दारुण दुर्दिनमें विश्वनाथने जो कुछ किया—कर रहा है, वह महायज्ञ-जैसा है—पुण्य कर्म है। पुराने जमानेमें ऐसी मुसीबतके समय ऋषि मुनि यज्ञ करके मनुष्योंके मंगलके लिए देवताका आशीर्वाद प्राप्त करते थे। विश्वनाथ भी मानव मंगलकी वही साधना कर रहा है। उन्होंने मन-ही मन पोतेको बार-बार आशीर्वाद दिया—"धर्मपर तुम्हें मति हो, तुम धर्मको पहचानो, दीर्घायु हो! हमारा वंश उज्ज्वल हो!"

माथेके ऊपर सन-सनकी आवाज़ हुई। कुछ चकित-से होकर उन्होंने आसमानकी ओर देखा। उनका मन सिहर उठा। गोविन्द! गोविन्द! ऊपर गिद्धोंका झुण्ड मँडरा रहा था। धीरे धीरे वे आसमानसे उतर रहे थे। उतर रहे थे मयूराक्षीके चौरवाले मरघटपर। न्यायरत्न फिर सिहर उठे लाशोंने अब दाबों या दाह-संस्कार भी नहीं हो पा रहा है! कोई लाशको मसानमें यों ही फेंककर चला गया है!

फिर बाघके पार चौरपर वे उतरे। देखा मसानमें नहीं गिद्ध मवेशियोंके मरघटपर उतर रहे हैं। तीन लाशें पड़ी हुई थीं गाय बैलोंकी। एक दूध देने वाली पहलौठ गाय! पंचग्रामके गरीब गृहस्थ बेचारे तबाह हो गये! सभी शायद बरबाद हो जायेंगे। बच जायेंगे केवल दालान-कोठेमें रहनेवाले।

'ठाकुरजी इतने सबेरे कहाँ जायेंगे?'

अनमने न्यायरत्नने नज़र उठाकर सामने देखा—घाटकी नावका मल्लाह घाटी मरला नावसे सिर टेककर उन्हें प्रणाम कर रहा है।

मंगल हो। ज़रा उस पार जाना है।

नावको खींचकर माझीने किनारे लगाया।

डाकबँगला मयूराक्षीके पास ही था।

किनारेपर जाकर न्यायरत्नने विश्वनाथको आशीर्वाद दिया। उसके मित्रों की कल्पना की। उनकी आँखोंमें शिवकालीपुरके उस जवान नज़रबन्दकी तसवीर जाग उठी। उन्हें ऐसा लगा कि वे उस शौकीन बाबूको भी वहाँ देखेंगे।

डाकबँगलेके फाटकपर पहुँचते ही हँसीकी एक हलचल सुनाई पड़ी। जीकी उमड़ी हुई हँसी! जो लोग ऐसी हँसी नहीं हँस सकते वे भला तमाम फली हुई नाक भरी आवाजको पा सकते हैं? हाँ, यह बलवान प्राणोंकी हँसी थी!

न्यायरत्न डाकबँगलेके बरामदेपर गये। सामनेका दरवाजा बन्द था, लेकिन झरोखा सब दिखाई पड़ रहा था। एक मेजके चारों ओर पाँच-छह नौजवान बैठे थे। बीचमें चीनी मिट्टीकी एक रकाबीमें बिस्किट नहीं कुछ खाद्य

सामग्री थी। एक तरुणी चायका बरतन लिये खडी थी। ढगसे लग रहा था कि वह चली जा रही थी, लेकिन किसीने उसका हाथ पकडकर रोक लिया। जिसने हाथ पकडा था यद्यपि वह उधरको मुँह किये बैठा था, फिर भी न्यायरत्न चौंक उठे। कौन ? विश्वनाथ ? हाँ वही तो है॥

तरुणीने कहा छोडिए ! देखिए, बाहर कोई बूढे सज्जन खडे है।"

विश्वनाथने उसका हाथ छोडकर पीछे देखा।

"दादाजी ! आप यहा ! —विश्वनाथ उठा। उसके एक हाथमें अधखायी कोई चीज थी जिसे न्यायरत्न नही जानते। उसने तुरत पलटकर अपने मित्रोंसे कहा, "मेरे दादाजी।" तरुणी बगलके कमरेमें चली गयी।

सभी आगन्तुक कुरसी छोड खडे हो गये। घरमें देबू भी कहीं था। वह दरवाजा खोलकर बाहर आया और बोला "विशू चाय पीकर पीछेसे आ रहा है। चलिए, हम लोग तबतक चलें।"

न्यायरत्नने एक बार देबूकी ओर निहारा और फिर वे अन्दर चले गये। विश्वनाथके मित्रोंकी ओर वे अचम्भेसे ताकते रहे। पाचमें-से दोने विजातीय पोशाक पहन रखी थी। विश्वनाथके सभी मित्राने उन्हे प्रणाम किया।

विश्वनाथने कहा, 'मेरे दोस्त है ये। हम सब एक साथ काम करते है।"

न्यायरत्न बोले, 'तुम्हारे मित्रोका अपना अपना परिचय भी तो होगा भाई पहले परिचय बताओ। मै किसे क्या कहकर पुकारू ?

विश्वनाथने परिचय दिया— ये है प्रियव्रत सेन, ये अमर वसु ये पिटर परिमल राय—

पिटर परिमल ?'

'जी ये ईसाई है।

न्यायरत्न ठक रह गये। उन्होने सिर्फ एक बार चकित दृष्टिसे पोतको देखा।

और ये है अब्दुल हमीद।'

न्यायरत्नकी आँखें जरा और बडी हो गयी।

और ये जीवन वीरवशी।'

वीरवशी यानी डोम। न्यायरत्नने मेजकी तरफ ताका। एक ही बरतनमें खानेका सामान और वह सामान खत्म भी हुआ था। चायके सारे प्याले मेजपर रखे थे। उसी वक्त वह लडकी कमरेसे निकलकर वहा खडी हुई। उसके हाथमें धुली हुई बनियान और कुरता था।

और ये भी हमारी सहकर्मिणी है—अरुणा सेन। प्रियव्रतकी बहन।'

हँसकर उस लड़कीने न्यायरत्नको प्रणाम किया। पूछा, "आप विश्वनाथ बाबूके दादाजी हैं!"

न्यायरत्न बोले, "हाँ! हुआ, रहने दो।" उनकी आवाज लटपटा रही थी।

कुरता-बनियान विश्वनाथको देती हुई वह बोली, 'लीजिए, कुरता-बनियान बदल ता डालिए! सब तैयार हो गये हैं। चलना है।"

हमीदने एक कुरसी बढ़ा दी—कहा, "बैठिए आप।"

न्यायरत्नका संयम मानो चुका जा रहा था। सुख-दुःख महोतक कि शारीरिक कष्ट सहकर उसमें-से रस प्राप्त करनेकी उनकी शक्ति मानो खतम होती जा रही हो। शिरा-स्नायुओंमें एक कम्पन-सा प्रवाहित होने लगा। उस आवेगसे मन-मस्तिष्क आच्छन्न सा होने लगा। तो भी हमीदकी ओर देखकर फीकी हँसी हँसते हुए वे बैठ गये।

विश्वनाथ कुरता बनियान उतारकर साफ़ कुरता बनियान पहनने लगा। न्यायरत्न उसके खुले बदनको देखकर दंग रह गये। उसकी देह बाल विधवाकी नंगी कलाई-सी दीप्तिहीन हो रही थी। उसका गोरा रंग तक मलीन हो गया है! मलीन ही नहीं—नज़रमें गड़नेवाली एक लहनासे शोभाहीन। ओ, जनेऊ! विश्वनाथके गोरे शरीरको तिरछे घेरकर जनेऊकी जो महिमा, जो शोभा थी, उसीके नहीं होनेसे ऐसा लग रहा था! न्यायरत्नके शरीरका काँपना अब साफ झलकने लगा। अपने हाथको बढ़ाकर उन्होंने पुकारा—"गुरुजी! देबू गुरुजी?'

देबू आगेवाले दूर खड़ा था। वह झट आगे आया— जी?'

"लगता है, मेरी तबीयत खराब हो गयी है। मुझे तुम घर पहुँचा दोगे?"

यह सुनकर सभी व्यस्त हो गये। अरुणा क़रीब आयी—' बिस्तर लगा हूँ, आप लेटेंगे थोड़ा देर?"

"नहीं।"

विश्वनाथने समीप आकर कहा, "दादाजी!'

पीड़ावाली जगहका छूनेके लिए तैयार व्यक्तिको ददसे बोल्दी-बल्वाला रोगी जिस तरह हाथके इशारेसे मना करता है, वैसे ही कठिन भावसे न्यायरत्नने विश्वनाथकी ओर हाथ उठाया।

अरुणाने परेशान होकर पूछा, ' क्या हुआ?'

दूसरे लोग भी हैरान होकर उनकी ओर ताकने लगे।

न्यायरत्न आँखें बन्द किये बैठे थे। उनके कपालपर भौंहोंके बीचमें कुछ गहरी लकीरें जम आयी थीं। विश्वनाथ उनके पीड़ा विकल पीले चेहरेकी तरफ़ एकटक देख रहा था। उनकी हालतको वह समझ रहा था।

कुछ क्षणके बाद एक गहरा निःश्वास छोड़कर न्यायरत्नने आँखें खोली। जरा हँसकर बोले 'तुम लोगोंका भला हो भाई, म अब चलता हूँ।'

अरे! ऐसी हालतमें कहाँ जायेंगे?'—विश्वनाथका दोस्त पिटर परिमल परेशान होकर बोला।

"अब म ठीक हूँ।'

विश्वनाथने कहा म आपके साथ चलूँ?"

"नही।"—उन्होने देबूकी ओर निगाह करके कहा—'तुम जरा मेरी मदद करो गुरुजी कुछ दूर मुझे पहुचा दो।'

देबू त्रस्त-सा उनके पास आया। बोला, 'हाथ पकड लूँ?'

'नही नही!'—न्यायरत्न जोर लगाकर जरा हँसे—'सिर्फ कुछ दूर साथ चलो।' और वे बाहर निकल पडे। कमरा अस्वाभाविक रूपसे स्तब्ध और स्तम्भित हो गया। किसीसे कुछ बोलते न बना। जो-जानसे जिस बातको न्यायरत्न छिपा गये, सोचा वह बात उनके अन्तिम कुछ शब्दोंसे हँसीसे, कदम रखनेके ढगसे कही हो गयी।

विश्वनाथ चुपचाप बाहर निकला। न्यायरत्न डाकबँगलेके बगीचेके बिलकुल उस किनारे खडे थे। विश्वनाथ जसे ही उनके करीब पहुँचा, वे बोले 'अच्छा, जयाको? जयाको भेज दू तुम्हारे पास?

विश्वनाथने हँसते हुए कहा 'वह आयेगी नही।"

न्यायरत्नने कहा 'नही, उसे आनेको म मजबूर करूँगा।"

"मजबूर करनेसे आयेगी। लेकिन उसे सिर्फ दुःख पानेको ही यहा भेजेंगे।"

'जयाको तुम दुःख दोगे?

'म नही दूगा वह खुद दुःख पायेगी। सब देख-सुनकर उसके मनको आघात लगेगा जसा कि आपने पाया। कष्टके कारणको म आपके सामने कबूल करता हूँ। लेकिन उसी कष्टने स्वाभाविक तौरसे आपको इतना कातर नहीं किया ह। उस कष्टको लेकर आपने हृदयपर पत्थरकी तरह मारा ह। जया भी ठीक ऐसी ही चोट पायेगी। क्योंकि उसने आजतक आपकी पौत्र-बहू होनेकी ही कोशिश की ह। उसने यही जाना ह कि उसका एकमात्र परिचय यही ह। आज मेरे वास्तविक रूपसे नये सिरसे परिचय करना उसके लिए असम्भव ह। आपके कोशिश करनेपर भी उससे नही बनेगा।"

एक गहरी साँस लेकर न्यायरत्नने कहा "अपना कुल धर्म, वश-परिचय तक तुमने त्याग दिया है—जनेऊ फेंक दिया ह। तुम्हारे मुहसे ऐसी बात कुछ अप्रत्याशित नही हैं। कसूर मेरा ही ह। तुमने मुझसे छिपाया नही, अपने

स्वप्नका आभास तुमने पहले ही दिया था। फिर भी मैंने जयाको अपने पौत्र-वधू-के कर्त्तव्यमें डुबाये रखा था—तुम्हारी आध्यात्मिक क्रान्तिकी ओर ध्यान देनेका भी उसे अवसर नहीं दिया। लेकिन "

"कहिए।"

'नहीं। अब मेरा कुछ भी नहीं। आजसे तुम मेरे कोई नहीं। दोष, यहाँ तक कि अगर मुझे पाप लगे, तो लगे। जया मेरी पौत्र-वधू ही रहे। तुमसे अनुरोध है मरनेपर मेरे मुँहमें आग मत देना। मुखाग्निका अधिकार जयाका रहा।"

विश्वनाथ हँसा। बोला, 'वंचनाको मुसकराते हुए झेल लिया जाये तो वह मुक्ति हो जाती है। आप मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं उसे हँसते हुए सह सकूँ।' प्रणाम करनेके लिए उसने माथा नवाया।

न्यायरत्न पीछे हट गये। कहा, "हाँ-हाँ रहने दो। मैं आशीर्वाद देता हूँ तुम इसे हँसते हुए सहो।'—और वे मुड़कर चल पड़े। देबूने सिर झुकाकर उनके पीछे-पीछे चलना शुरू किया।

उसकी ओर देखकर विश्वनाथने हँसनेकी कोशिश की।

घाटपर पहुँचकर न्यायरत्न सहसा ठिठक गये। पीछे मुड़कर हाथ फैलाते हुए घबरायी और काँपती आवाजमें कहा, 'गुरुजी! गुरुजी!'

'जी!"—देबू दौड़ते हुए उनके पास जा खड़ा हुआ कि न्यायरत्न थर थर काँपते-काँपते क्वारकी धूपमें तपी नदीके बालूपर बैठ गये।

कुछ ही घण्टोंमें बात पाँचों गाँवोंमें फैल गयी। अभाव, रोग शोकसे पीड़ित लोग भी डरसे सिहर उठे। कुछ अच्छी अवस्थावाले लोग इस अनाचारके प्रतिकारके लिए मुस्तैदीसे जुट गये।

इरशादसे देबूकी रास्तेमें ही भेंट हो गयी।

देबू गहरी चिन्तामें डूबा हुआ सिर झुकाकर राह चल रहा था। इरशादसे आमने-सामने भेंट हो गयी, सिर उठाकर देबूने उसे देखा, अच्छी तरहसे एक बार पलक गिरायी और मानो अपनेको सचेत कर लिया। उसके बाद बोला, 'इरशाद भाई?"

"हाँ! मैंने सुना तुम महाग्राम गये थे। दुर्गाने बताया।"

एक गहरा निःश्वास छोड़कर देबूने कहा, 'हाँ वहींसे लौट रहा हूँ।"

'सुना, न्यायरत्नजी सिर घूम जानेसे घाटपर गिर पड़े थे। अब कैसे हैं?"

हल्का-सा हँसकर देबूने कहा, 'क्से है वही जानें। बाहरमे तो मुझे अच्छा नही लगा। थरथराकर नदीके घाटपर बठ पडे। म उन्हें सहारा देकर उठानेके लिए गया। जरा देर बठे रहकर वे आप ही उठे। मयूराक्षीके पानीसे हाथ मुँह धोया। फिर जरा हँसकर बोले, 'सर चकरा गया था गुरुजी। अब सँभाल लिया है।' घर पहुँचकर उन्होने मुझे जलपान कराया, नहाया, पूजा की। मैं वही बैठा था। बोले, 'यही भोजन कर लेना गुरजी।' हाथ जोडकर मैं ना-ना करता रह गया, वे हरगिज न माने और आखिरमें खाना पडा। चलते वक्त मुझसे कहा, तुम्हें मेरा एक काम करना होगा। मेरी जमीन जगह सम्पत्ति जो कुछ ह, उसका भार लेना पडगा। बटया लगाना हो, ठीकापर देना हो, जो भी करता हो, करना। मुझे गुजारे भरका चावल और बाकी धान बेंचकर रुपये काशी भेज देना।

इरशादने पूछा "तो उन्होने काशी जानेका तय किया ह?

"हा! अपने देवता विश भाईके स्त्री-बच्चोंको लेकर काशी चले जायेंगे। कल, चाहे परसो।"

'विशू बाबूने आकर कुछ कहा नही? आये भी नही?"

जरा चुप रहकर देबूने कहा 'यही तो मैं सोच रहा था इरशाद भाई।'

"क्या?'

विशू भाईसे अब कोई नाता नही रखूँगा। रुपये पैसेका हिसाब निताब आज ही उसे समझा दूँगा। " इरशाद चुप रहा।

देबूने कहा, एक तुम्हारे जाति भाई भी आये ह—अब्दुल हमीद। मैंने देखा वे भी विशूभाई-से ही ह। नामके ही मुसलमान। जाति धरम नही।'

बाईस

कई दिनोंके बाद।

लोग बाढ़की वजहसे आफतके मारे बीमारीसे जजर और शोकसे कातर थे। भूख और अचिकित्साके उनके होश गुम हो गये थे। मवेशियोंकी महामारी फलनेसे उनकी सम्पदाका एक बहुत बडा हिस्सा खतम होता जा रहा था। भयानक रूप धारण करके मौत उनके सामने आ खडी हुई थी। लेकिन तो भी वे

बातें भूलकर वे इस नये सघातसे चचल हो उठे। न्यायरत्नजीका पोता धर्म को नहीं मानता, जाति नहीं मानता, ईश्वरको नहीं मानता। उसने जनेऊ उतार फेंका है! न्यायरत्नजी अपने परपोते और उसकी माको लेकर इस दु ख और शर्मसे घर छोडकर चले गये। इस दु ख और शर्मका हिस्सा मानो उनका हो। यही नहीं, इसे लोगोंने पचग्रामके बहुत बडे अमगलकी सूचना समझी। लोग हाय-हाय कर उठे, आशकासे सिहर उठे। बहुतोंने आसू तक बहाया। कहा, पाव हिस्सा जो बच रहा था धर्म, वह भी खत्म हो गया। कलियुग हो गया पूरा! यह सारा विनाश जो हो रहा है, उसका कारण इसी अनाचारमें निहित है।

इस अफसोस, इस दु खसे उन लोगोंने मौतकी कामना की या नहीं, नहीं मालूम। लेकिन वैसी ही किसी प्रेरणासे उन्होंने सहायता समितिसे नाता तोड लिया, जिससे उनकी मौत निश्चित थी। ऐसे दु ख-कष्टके समय, अनाहार और रोगसे मौतको अपने सामने प्रत्यक्ष होते देख भी भोजन और दवा लेनेसे इनकार करना मरना नहीं तो और क्या है?

न्यायरत्नके जानेके दूसरे दिन सवेरे विश्वनाथ आया था। देवूने हिसाब पत्तर समझ लेनेका अनुरोध किया था। विश्वनाथने कहा "तुम जरा ज्यादती कर रहे हो देबू भाई! हमसे नाता नहीं रखना चाहते हो मत रखो। लेकिन यहाँकी मददके लिए देशके चन्देसे जो सहायता-समिति बनी है उसका कौन-सा कसूर है?"

देवूने हाथ जोडकर कहा "मुझे माफ करो विशू भाई।"

आज विश्वनाथ फिर आया। सहायता समितिको कई दिनोंसे वह खुद ही चलानेकी चेष्टा कर रहा था।

देबूने आज भी कहा, "मुझे माफ करो। कई दिनों तक कोशिश करके देख तो लिया, चावल लेने कोई नहीं आया।"

सच ही कोई नहीं आया। गाव गाँव खबर कर दी गयी—चावल ही नहीं, दवा भी मिलेगी। कलकत्तेसे डाक्टर भी आया है। तो भी कोई दवाके लिए नहीं आया।

विश्वनाथ चुप होकर बैठा रहा।

कई दिनों तक उसने हर कोशिश की। लेकिन अजीब है लोग। कछुआ जब गरदन समेत अपना मुँह खोलकर अन्दर समेट लेता है, तो उसे किसी भी प्रकारसे खींचकर बाहर नहीं निकाला जा सकता। वैसे ही इन लोगोंने अपनेको समेट लिया था। जडता कहकर विश्वनाथ इसकी हँसी नहीं उडा सका। इसमें सहने-

की जिस एक शक्तिका अनोखा परिचय है उसकी उसने कद्र की श्रद्धा की। जिन लोगोंने सहनेकी यह शक्ति पायी है, परम्परासे जिनकी नसोंमें यह शक्ति बहती है वे लोग अगर जाग पड़ें तो कोई सन्देह नहीं कि वह एक विराट शक्तिका अजेय जागरण होगा। जिस प्रकारसे जिसकी पुकारसे वह जागेगी, कच्छपावतारकी तरह सारी धरतीका भार ढोनेके लिए जागेगी वैसी पुकार वह नहीं पुकार सका। शायद इसीलिए उसकी पुकारपर लोग नहीं जागे।

उसने उस वीर-वंशी यानी उस पढ़े लिखे डोम मित्रको लेकर गाँव गाँवके हरिजन टोलेमें बैठक करनेकी भरसक कोशिश की। बैठक होती तो क्या होता नहीं कहा जा सकता। पर बैठक हो नहीं पायी। भू-स्वामियोंने बैठक नहीं होने दी। नहीं होने दी कंकनाके बाबुओंने, ठाकुर घोषने—जिन लोगोंने विश्वनाथके अनाचारसे न्यायरत्नको सामाजिक दण्ड देनेका निश्चय किया था। हाटवाली जगह जमींदारकी गाँवका चण्डीमण्डप जमींदारका धर्मराज तले जो मौलसिरी का पेड़ है उसके नीचेकी माटी भी जमींदारकी। जो भी जितनी भी परती जमीन है यहाँतक कि नदीका बालू भी उन्हीं लोगोंका है। विश्वनाथ यहीं पला-बढ़ा बचपनसे यहींका धूल-कादो उसे लगा, वह भी सोचकर हैरान है कि उसने अपने ऊपर इतनी परायी धूल मली! पंचग्रामके लोग जिन्दा हैं, राह चलते हैं—दूसरोंकी माटीपर। अपना कहनेको उनके पास घरके आँगनके सिवा और कुछ भी नहीं है। व्यवहारके अधिकारकी बात होती है। लेकिन अदालतके एक परवानेसे जमींदारने उस अधिकारसे भी वंचित कर दिया। दरख्वास्त देकर अदालतसे एक हुक्मनामा ले आया—अमुक-अमुक जगहमें सभा करनेकी मनाही की जाती है। न माननेपर अनधिकार प्रवेशके जुर्ममें मुजरिम बनाया जायेगा।

विश्वनाथकी टोलीने इस हुक्मको टालनेकी सोची थी। जाने क्या सोचकर वह विचार छोड़ दिया। कलकत्ते बाकी लोग कलकत्ते लौट गये। विश्वनाथ देबूका सहायता-समितिका भार देनेके लिए आया था। देबूने कहा 'विशू भाई मुझे तुम रिहाई दो। तुम न्यायरत्नके पोते हो, तुम जो भी करो तुम्हारे वंशका पुण्यफल तुम्हारी रक्षा करेगा। मगर मैं तो मारा जाऊँगा।'

विश्वनाथने मुसकराकर कहा यह तुम्हारी गलत धारणा है भाई! मगर, खैर! मैं अब इस समितिसे अपना सारा सम्बन्ध तोड़ लेता हूँ। और सब तो चले ही गये मैं भी आज ही चला जाऊँगा। मुझसे कोई नाता नहीं रहनेसे तो लोगोंको एतराज नहीं होगा।

देबूने कोई जवाब नहीं दिया। सिर झुकाये बैठा रहा।

देबू!

फीका हँसकर देबूने कहा, "विशू भाई !"

विश्वनाथ बोला, "अब इसमें ना न करो।"

"हो सकता है कि लोग फिर भी सहायता-समितिमें न आयें।"

"आयेंगे ! " विश्वनाथने हँसकर कहा "न आयें तो तुम्हें समझा-बुझाकर उन्हें लाना होगा। और तुमसे यह होगा भी। रुपये पैसे तो आखिर जाति समझकर लोगोंके हाथमें नहीं जाते। चण्डालके घरका रुपया ब्राह्मणके पास पहुँचते ही शुद्ध हो जाता है।"

देबूने काँटा चुभने-जैसी एक तीखी चोट महसूस की। उसने विश्वनाथकी ओर ताका। अजीब है विश्वनाथका मुखड़ा ! उसमें जरा भी कहीं ऐसा कुछ नहीं है, जिसे देखकर बैर हो या कि गुस्सा आये। उसने विश्वनाथका हाथ पकड़कर कहा, "तुमने ऐसा काम किया क्यों भाई ?"

विश्वनाथने जवाब नहीं दिया। अपनी जैसी आदत थी, चुपचाप हँसा।

देबूने कहा "कलकत्तेके बाबू लोग ब्राह्मण होते हुए भी साहबोंके साथ एक मेजपर खाना खाते हैं, शराब पीते हैं अजाति कुजाति औरतोंके साथ व्यभिचार करते हैं। हम लोग उनसे नफरत करते हैं। हाड़ी डोम चमार राहुके सिरसगे तक उनसे घृणा करते हैं। डरसे कुछ कह तो नहीं पाते लेकिन मन-ही मन घृणा करते हैं। वे ब्राह्मण भी नहीं हैं। उनका धरम भी नहीं है। लेकिन रोग दुःख, शोक यहाँतक कि मरण तकमें तुम्हीं लोग हमारे भरोसा थे। न्यायरत्न महाशयके पैरोंकी धूलसे हमारे सारे पाप धुल गये सारे दुःख पुँछ गये। जब जब सोचता था कि एक दिन भगवान आयेंगे, धरतीके पापियोंका नाश करके सत्ययुग कायम करेंगे, तब-तब मुझे न्यायरत्नका मुखड़ा याद हो आता था। अब हम कैसे जियेंगे ? किनके भरोसे अपना कलेजा मजबूत करेंगे ?"

विश्वनाथने कहा, "अपने भरोसे कलेजा मजबूत करो देबू। जो बातें तुमने कहीं, उनपर बहुत-कुछ कहा जा सकता है। वह सब तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा। सिर्फ एक बात कह दूँ। जिस युगमें मेरे दादा-जैसे ब्राह्मण राजाके अन्यायका विचार करते थे, उनके आँख दिखानेसे बड़े लोग डरसे माटीमें गड़ जाते थे, वह युग अब लद गया। इस जमानेमें अभाव पड़े तो या तो खुद ही संगठित करके उसे मिटानेका प्रयास करो या जो लोग आज देशकी रखवालीका भार लिये बैठे हैं उन तक आवाज पहुँचाओ। रोग हो तो दवा और इलाजके लिए उन्हींको दबाओ। अकाल मृत्यु हो तो आँखें तरेरकर उनसे कहो तुम सबके इन्तजाममें ऐसी मौत क्यों होती है ? दुःख शोकमें भगवानको पुकारनेकी जरूरत पड़े तो

खुद ही पुकारो, 'यायरत्नकी आवश्यकता अब नहीं रही। इसीलिए उस खान दानका होते हुए भी म ऐसा हो गया हूँ। दादाजी मन्त्र विसजनके बाद माटीकी मूरतकी नाइ बठे थे, इसीलिए चले गये।'

देवूने एक लम्बी उसाँस लेकर कहा, 'विशू भाई, तुमने बहुत पढ़ा लिखा। तुम हमारे आचायके वशधर हो, बडा भरोसा था कि तुम हम लोगोंको बचा ओगे। लेकिन—

हँसकर विश्वनाथने कहा, 'मने कहा तो, और लोग तुम्हे आशीर्वादके बल पर बचायेंगे। वह भरोसा धोखा ह देवू भाई! वह धोखा अगर तुम लोगोंका मेरे लिये टूट गया, तो अच्छा ही हुआ। खर! म अभी चलता हूँ।'

लेकिन विशू भाई "

'जिस दिन सच ही बुलाओगे आऊँगा। शायद हो कि खुद ही आऊँ।" विश्वनाथ तेजीसे आगे बढा। जरा दूर आकर एक मोडमें ओझल हो गया।

रास्तेमें वह रुका। किसी किसीने उसकी राह रोकी। थोडी ही दूरपर महाग्राम दीखा। वह उसके घरके कोठेका छप्पर नजर आ रहा ह। वह रहा घना और हरा भरा गुलमुहरका पेड। जरा देर एकटक देखता रहा और फिर सिर झुकाकर चल पडा। किस आकर्षणसे जो वह अपने दादा, अपनी स्त्री जया पुत्र अजय और घर-द्वार छोडकर यो निकल पडा ह, यह सोचकर कभी-कभी उसे खुद ही हरान हो जाना पडता ह। इस राहपर चलनेकी उत्तेजना अजीब है।

छोटे ठाकुर!

'कौन?'—चौंककर विश्वनाथने चारों ओर देखा।

रास्तेके बायें बहारमें एक पोखरके पारवाले आमके बगीचेमें एक औरत खडी थी।

विश्वनाथने फिर पूछा "कौन?" बगीचेके पुराने पेडोंकी छायाने नीचे अँधेरा-सा कर रखा था। और फिर पेडकी नीचे झुकी डालमें उसका आधा चेहरा छिप गया था पहचानमें नहीं आ रहा था।

बगीचेसे बाहर निकली दुर्गा।

विश्वनाथने पुकारा—'दुर्गा?

जी हाँ।'

यहाँ?'

जी खेत आयी थी। देखा कि आप जा रहे ह।

हाँ म जा रहा हू।

'एकबारगी गाँव घर छोडकर चले जा रहे ह आप?'

विश्वनाथने उसके मुँहकी ओर ताका। दुर्गाके चेहरेपर उदासीकी छाया पडी थी। विश्वनाथने हँसकर कहा "जरूरत पडते ही फिर आऊँगा।'

एक लम्बा नि श्वास छोडकर दुर्गा हँसी। कहा, 'आपको जरा प्रणाम कर लू। आपद विपत्के सिवा तो आप यहा आनेके नहीं। मैं कही उसके पहले ही मर जाऊँ।" आज वह बहुत दिनोके बाद खिलखिलाकर हँसी।

सम्मान रखते हुए उसने कुछ दूरसे प्रणाम किया। विश्वनाथने उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हुए कहा, 'म जाति-पाति नही मानता रे दुर्गा। मेरे पैरोपर हाथ रखनेमें इतना डरती क्यो ह ?"

दुर्गाने विश्वनाथके पैरोपर हाथ रखा। प्रणाम करके हँसते हुए बोली, "जाति-पाति क्यो नही मानते हैं ठाकुर? यहा एक नजरबन्द बाबू थे—वे भी नही मानते थे। मुझसे कहते थे, मेरे लिए पानी न हो तो, तुम्ही ला दिया करना दुगा।'

विश्वनाथ हँसा। बोला, "मुझे अभी प्यास नही लगी ह, नही ता तुमसे ही कहता कि एक गिलास पानी ला दे।'

दुर्गा फिर खिलखिलाकर हँस पडी। बोली, "तो आप मुझे अपने साथ ले चलिए। आपकी नौकरानीका काम करूँगी। झाड बुहारू करूँगी, आपकी सेवा करूँगी।

विश्वनाथ बोला, "मेरे घर-द्वार नही ह। यहीका घर पडा रहा। उससे अच्छा ह, तू यही रह। फिर जब आऊँगा तो तुझसे पानी माँगकर पी जाऊँगा।"

विश्वनाथ चला गया। दुर्गा एक उदास हँसी हँसकर वही खडी रही।

देबू चुप बैठा था।

विश्वनाथके घरसे जानेके बाद भी वह कुछ देर तक रास्तेकी तरफ ताकता हुआ खडा था। उसके बाद एक लम्बी उसाँस लेकर वही जो बैठा, सो बैठा ही ह।

न्यायरत्न चले गये। विश्वनाथ भी चला गया। उसके जीमें हुआ कि वह अकेला हो गया। इस दुनियामें वह अकेला ह। उसकी बिलू उसका मुन्ना जिस दिन गुजरा था, उस रातको न्यायरत्न आये थे। राजबन्दी यतीन था, वह बहुत पहले ही चला गया। उसके चले जानेसे भी उसे पीडा हुई थी, लेकिन अपनेको इतना असहाय उसने नही महसूस किया था। कई दिनोके बाद ही विश्वनाथ आया था। लेकिन आज वह सच ही अकेला ह। असहाय ह। बगलमें

सन्न होनेवाला कोई अपना आदमी नहीं, मुसीबतमें दिलासा देनेवाला कोई नहीं—ऐसा कोई नहीं जो सान्त्वनाके दो शब्द कहे। मगर कन्धेपर यह बोझ कैसा लद गया है। यह तो उतरना ही नहीं चाहता। उसकी आंखोंमें आंसू आ गया। कोई कारण नहीं था। उसने आंसू रोकनेकी कोई जरूरत नहीं समझी। गालमें धारा बहने लगी।

यह बोझा उतरनेके बजाय दिन दिन जैसे और बढ़ता ही जा रहा है। पहाड़-सा भारी हो गया आज। एकके बजाय पांच-पांच गांवका बोझा उसके कन्धेपर लद गया है। लगानकी बढ़ोत्तरीसे लेकर कुसुमपुरसे विरोध तक, उसके बाद यह प्रलयंकर बाढ़, फिर मलेरिया, फिर मवेशी-महामारी। अकेले क्या करे वह? कर क्या सकता है?

गुरुजी! रो रहे हो?"

देबूने पलटकर देखा जाने कब दुर्गा आ खड़ी हुई है।

'छोटे ठाकुर चले गये, इसलिए रो रहे हो?' दुर्गाने अँचरेसे अपनी आंखें पोंछी। कहा "तुम अगर नहीं कहते तो वे नहीं जाते।'

चादरके छोरसे आंखें पोंछकर देबूने कहा, 'मैंने उसे जानेको कहा है?"

दुर्गा बोली मैं घरके अन्दर ही थी, जब तुम लोग बातें कर रहे थे। मैंने सब सुना है। लोग आज चावल लेने नहीं आये—कल आते। कल नहीं तो परसों आते। पेटके लिए आदमी क्या नहीं करता है, कहो?" फिर हल्केसे हँसकर बोली, मेरा भया घोषालका रुपया हाथ पसारकर लेता है!"

देबू चुपचाप दुर्गाकी ओर ताकता रहा।

दुर्गा फिर बोली 'छोटे ठाकुरने जनेऊ फेंक दिया है। जाति नहीं मानते, धरम नहीं मानते। यह कहते हो न? द्वारिका चौधरीके बारेमें सुना?'

क्या? चौधरीजीको क्या हुआ?—देबू चौंका। चौधरी कुछ दिनोंसे बीमार हैं। न्यायरत्नकी विदाईके दिन भी नहीं आ सका। बूढ़ेकी बेशक उम्र हो गयी है। फिर भी उसकी मौतकी खबर देबूके लिए बहुत बड़ी चोट होगी। बड़ा भला है बूढ़ा। देबूको बड़ा स्नेह करता है।

दुर्गाने कहा, 'चौधरीजी ठाकुर बेंच रहे हैं।"

ठाकुर बेंच रहे हैं।

"हाँ। उनसे ठाकुरकी सेवा चल नहीं रही है। ऊपरसे बाढ़ने सब साफ कर दिया। पालने उनसे कहा है ठाकुर मुझको दे दीजिए, मैं पांच सौ रुपये दूँगा। पाल उस ठाकुरकी अपने यहाँ प्रतिष्ठा करेगा।"

"श्रीहरि?

दुर्गा जरा गरदन हिलाकर हँसी।

देबूने फिर पूछा 'चौधरीजी ठाकुर बेंच रहे हैं?'

"हां, बेंच रहे हैं। बात अभी पक्की हुई है। हजार हो, आखिर चौधरीजी मानी व्यक्ति हैं न। उन्होंने पालका हाथ पकड़कर कहा, "पाल यह बात किसीको मालूम न हो। कमसे कम जबतक मैं जिन्दा हूँ, तबतक और कहीसे लाया हूँ कहना।" पालने किसीसे कहा नहीं है।

"चौधरीजीने जब कहनेको मना किया है और पालने किसीसे कहा नहीं, तो तूने कैसे जाना?'—देबूको इसका हरगिज विश्वास नहीं हो रहा था। तर्कसे उसने दुर्गाकी बातको उड़ा देना चाहा। आखिरमें यही कहा, "तूने किसीसे गलत सुना है।"

हँसकर दुर्गा बोली, 'तुमसे मैं और क्या कहूँ गुरुजी, कहो?'

"क्यों?"

"मैं गलत नहीं सुनती।"—वह हँसी—"मेरी खबर पक्की है। याद नहीं है?'

"क्या?'

"तुम लोगोंकी बैठककी खबर जानकर नजरबन्द बाबूके यहां जमादार आया था? मुझे यह खबर पहले मालूम हो गयी थी।"

देबूको याद आ गया। दुर्गाने उस रोज समयपर खबर न दी होती, तो बड़ा बुरा होता। नजरबन्द बाबूको जेल हो जाता।

दुर्गाने हँसकर कहा, 'बिलू दीदीकी बहन होते हुए भी मैं तुम्हारा मन नहीं पा सकी और लाख करके लोग मेरा मन नहीं पा सके।"

देबूके चेहरेपर खीज झलकी। दुर्गाका यह मजाक खासकर मनकी ऐसी स्थितिमें, उसे जरा भी अच्छा न लगा। बोला, 'ठहर दुगा। यह मजाककी बात नहीं, न ही मजाकका समय है यह। मुझे यह बता कि तूने सुना किससे?"

कुछ क्षणोंके लिए दुर्गाने मुँह फेर लिया। उसके बाद फिर उसी अपनी स्वाभाविक हँसीके साथ कहा, 'अपना शमकी बात मैं कहूँ कैसे, भला बताओ! चौधरीजीके बेटेने मुझसे कहा है। कुछ दिनोंसे वह मेरे घरके आसपास चक्कर काट रहा है। परसों मन मजाकमें कहा—चौधरी मांग बदलेमें मैं सोनेका हार लूँगी। तो उसने कहा—वही दूँगा। बाबूजी जिस पालके हाथ ठाकुर बेंच रहे हैं, वह पांच सौ रुपये देगा। उसमें हार हो बनवा दूँगा।'

खड़ा होनेवाला कोई अपना आदमी नहीं, मुसीबतमें दिलासा देनेवाला भाई नहीं—ऐसा कोई नहीं जो सान्त्वनाके दो शब्द कहे। मगर कन्धेपर यह बोझ कैसा लद गया है। यह तो उतरना ही नहीं चाहता। उसकी आँखोंमें आँसू आ गया। कहीं कोई नहीं था। उसने आँसू रोकनेकी कोई जरूरत नहीं समझी। गालोंपर धारा बहने लगी।

यह बोझा उतरनेके बजाय दिन दिन जैसे और बढ़ता ही जा रहा है। पहाड़-सा भारी हो गया आज। एकके बजाय पाँच-पाँच गाँवका बोझा उसके कन्धेपर लद गया है। लगानकी बढ़ोत्तरीसे लेकर कुसुमपुरसे विरोध तय उसके बाद यह प्रलयकर बाढ़, फिर मलेरिया, फिर मवेशी-महामारी। अकेले क्या करे वह? कर क्या सकता है?

गुरुजी! रो रहे हो?"

देबूने पलटकर देखा, जाने कब दुर्गा आ खड़ी हुई है।

"छोटे ठाकुर चले गये, इसलिए रो रहे हो? दुर्गाने अँचरेसे अपनी आँखें पोंछी। कहा तुम अगर नहीं कहते तो वे नहीं जाते।"

चादरके छोरसे आँखें पोंछकर देबूने कहा, 'मने उसे जानेको कहा है?'

दुर्गा बोली म घरके अन्दर ही थी जब तुम लोग बातें कर रहे थे। मने सब सुना है। लोग आज चावल लेने नहीं आये—कल आते। कल नहीं तो परसों आते। पेटके लिए आदमी क्या नहीं करता है, कहो?' फिर हल्केसे हँसकर बोली, मेरा भया घोषालका रुपया हाथ पसारकर लेता है!"

देबू चुपचाप दुर्गाकी ओर ताकता रहा।

दुर्गा फिर बोली छोटे ठाकुरने जनऊ फेंक दिया है। जाति नहीं मानते, धरम नहीं मानते। यह कहते हो न? द्वारिका चौधरीके बारेम सुना?'

क्या? चौधरीजीको क्या हुआ? —देबू चौंका। चौधरी कुछ दिनोंसे बीमार है। न्यायरत्नकी विदाईके दिन भी नहीं आ सका। बूढ़ेकी बेशक उम्र हो गयी है। फिर भी उसकी मौतकी खबर देबूके लिए बहुत बड़ी चोट होगी। बड़ा भला है बूढ़ा। देबूका बड़ा स्नेह करता है।

दुर्गाने कहा, 'चौधरीजी ठाकुर बेंच रहे हैं।'

ठाकुर बेंच रहे हैं!

'हाँ। उनसे ठाकुरकी सेवा चल नहीं रही है। ऊपरसे बाढ़ने सब साफ कर दिया। पालने उनसे कहा है ठाकुर मुझको दे दीजिए, म पाँच सौ रुपये दूँगा। पाल उस ठाकुरकी अपने यहाँ प्रतिष्ठा करेगा।"

"श्रीहरि?

"नहीकी बात नहीं। डॉक्टर नही चाहते हों, तो वयको लाऊँ।"

"नही।"—चौधरीने बार-बार गरदन हिलाकर कहा "नही गुरुजी। जीना अब मैं नही चाहता।"—जरा चुप रहकर बोला, "न्यायरत्न काशी चले गये। पत्र-पड़ ही सुना है सब। डोलीमें चलकर अंतिम दर्शन करनेकी इच्छा थी। लेकिन लाजसे वह भी न हुआ। गुरुजी, मैंने किया क्या है मालूम है?"

देबू चौधरीकी ओर देखने लगा।

चौधरीके चेहरेपर कड़वी हँसी फूट उठी। बोले, "मैंने अपने लक्ष्मी जनार्दनको बेच दिया। श्रीहरिने खरीदा है।"

कमरेमें अजीब सन्नाटा भर गया। इतना कहकर चौधरी बड़ी देर तक चुप हो गया। देबू भी कुछ बोल नही सका।

घटा दरके बाद चौधरीने कहा, "लक्ष्मीके नही रहनेसे नारायण भी नहीं रहते है गुरुजी! मन लगा, देवता भी दौलतके ही देवता होते हैं। गरीबके यहाँ वे नहीं रहते। मैंने सपना देखा। सपनेमें ठाकुरने यही कहा।"

आश्चर्यसे देबूने उसी बातकी पुनरुक्ति की—"सपनेमें कहा?"

"हाँ" बड़ी देर तक बार बार रुकते हुए बीच बीचमें दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए चौधरी कहता गया—"एक दिन घरमें कुछ भी नही था। मुट्ठी भर अरवा चावल भी नही था कि नैवेद्यका प्रबंध हो, भोग तो दूरकी रही! लाचार बड़े लड़केको मैंने न्यायरत्न महोदयके पास महाग्राम भेजा। वह कम्बख्त गाँजा पीता है। आजकल बीच-बीचमें घोषके बैठकमें तम्बाखू पान भी जाता है, हो सकता है वहाँ नशा भी पीता हो। वह न्यायरत्नके यहाँ न जाकर घोषके यहाँ चला गया। घोषने अरवा चावल दिया और कहा, 'अपने बाबूजीसे कहना, ठाकुर मुझको दे दें। मैं ठाकुर प्रतिष्ठा करना चाहता हूँ। मैं पाँच सौ रुपये दक्षिणा दूँगा।' इस अभागेने आकर मुझसे सब बताया भी। मैं तुमसे क्या कहूँ देबू, मन जैसे अपना कलेजा फाड़कर ठाकुरसे मन ही-मन कहा—देवता मुझे धन दो। जी भरकर तुम्हारी सेवा करूँ। मुझे इस अपमानसे बचाओ। नही तो यह बताओ कि मैं करूँ क्या? रात सपना देखा। देखा कि श्रीहरिके यहाँ ठाकुर प्रतिष्ठा हो रही है। मैं श्रीहरिसे रुपया ले रहा हूँ। पहले तो लगा, मैं चिंतासे ऐसा सपना देख रहा हूँ। लेकिन क्या बताऊँ दूसरे दिन देखा कि हमारे पुरोहितजी कह रहे हैं—आप अपना ठाकुर श्रीहरिको ही दे दें। आप उन्हें रखकर क्या करेंगे? तीसरे दिन फिर देखा कि मैं अपने हाथों श्रीहरिको ठाकुर दे रहा हूँ। मैंने समझा—सोचकर भी देखा कि मेरे मरनेके बाद शायद हो कि लड़के ठाकुरकी नियमित पूजा भी छोड़ दें।' चौधरीने आगे हँसकर कहा 'और, रखेंगे भी

इस हालतमें भी चौधरीने हँसकर कहा, "आओ, बैठो।" और उन्होंने अपने दुबले हाथके इशारेसे दूर बिछी एक चटाई दिखा दी। इतनी ही देरमें उसने यह व्यवस्था करा रखी थी।

देबू बिछावनपर बैठ गया। बोला, "आप इतना ज्यादा बीमार पड गये हैं? लेकिन हम लोगोंको इसकी खबर भी नहीं लगी?"

चौधरी जरा मलिन हँसा। कहा, "फकीर जाता-आता है, उसकी खबर कौन रखता है? राजा-वजीर जाते हैं लोक-लश्कर शोर-गुल—लोग भीड लगाकर देखते हैं। बुड्ढेका जाना फकीरका ही जाना है!"

देबू चुप रह गया। अफसोस हुआ उसे। शर्म आयी कि उसने भी इतने दिनोंमें खोज नहीं ली।

चौधरीने कहा, "तुम चटाईपर बैठ जाओ गुरुजी। मेरे बिस्तर और बदनसे बडी बू आती है।

चौधरीके दुबले हाथको अपनी गोदीमें रखकर देबूने कहा, "जी नहीं, मैं बहुत ठीक हूँ।

फिर चौधरी बोले, "आशीर्वाद करता हूँ तुम्हारा मंगल हो। तुमसे दसकी भलाई हो।"

देबूने पूछा "इलाज कौन कर रहा है?'

इलाज! चौधरी हँसा "इलाज नहीं कराया। मैं खुद समझता हूँ—थोडा-बहुत नब्ज देखना तो आता ही है—अब ज्यादा दिन नहीं। औरतोंने जिद करके एक दिन वैद्यको बुलाया था। दवा भी दे गया है वह, पर दवा मैं खाता नहीं। नाहक ही पैसे खरचनेसे क्या लाभ? जरा पानी दो तो हाँ, वहीं।

देबूने जतनसे पानी पिलाया। मुँह पोंछ दिया। कहा, "न। दवा नहीं खाना ठीक नहीं हो रहा है।'

"पैसा नहीं है गुरुजी।

देबू भौंचक्का रह गया।

चौधरीने कहा 'बहुत पहलेसे ही अन्दरसे खोखला हो गया था। अबकी बाढ़ने तो और भी सब खतम कर दिया। धान जो था सब बह गया। कई दिन पहले जानेका एक बैल मर गया। एक जो रह गया वह भी मरा ही समझो। बड़े लड़केका हाल तो मालूम ही है—गंजेडी है। बदचलन है।

देबूने कहा 'कल डॉक्टर लिवा आऊँगा।'

"नहीं-नहीं।'

"नहींकी बात नहीं। डाक्टर नहीं चाहते हो तो वैद्यको लाऊँ।'

"नहीं।"—चौधरीने बार-बार गर्दन हिलाकर कहा, "नहीं गुरुजी। जीना अब मैं नहीं चाहता।"—जरा चुप रहकर बोले, 'न्यायरत्न काशी चले गये। पड़ोसमें ही सुना है सब। डोलीसे चलकर अन्तिम दर्शन करनेकी इच्छा थी। लेकिन लाजसे वह भी न हुआ। गुरुजी मैंने किया क्या है मालूम है?"

देबू चौधरीकी ओर देखने लगा।

चौधरीके चेहरेपर कड़वी हँसी फूट उठी। बोले "मैंने अपने लक्ष्मी जनार्दनको बेच दिया। श्रीहरिने खरीदा है।'

कमरेमें अजीब सन्नाटा भर गया। इतना कहकर चौधरी बड़ी देर तक चुप हो गया। देबू भी कुछ बोल नहीं सका।

बड़ी देरके बाद चौधरीने कहा, 'लक्ष्मीके नहीं रहनेसे नारायण भी नहीं रहते हैं गुरुजी। मैंने देखा देवता भी दौलतके ही देवता होते हैं। गरीबके यहां वे नहीं रहते। मैंने सपना देखा। सपनेमें ठाकुरने यही कहा।'

आश्चर्यसे देबूने उसी बातकी पुनरुक्ति की—"सपनेमें कहा?"

"हाँ।" बड़ी देर तक बार-बार रुकते हुए बीच-बीचमें दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए चौधरी कहता गया—"एक दिन घरमें कुछ भी नहीं था। मुट्ठी भर अरवा चावल भी नहीं था कि नैवेद्यका प्रबन्ध हो, भोग तो दूरकी रही। लाचार बड़े लड़केको मैंने न्यायरत्न महोदयके पास महाग्राम भेजा। वह कमबख्त गांजा पीता है। आजकल बीच-बीचमें घोषके बैठकेमें तम्बाकू पाने भी जाता है हो सकता है वहाँ नशा भी पीता हो। वह न्यायरत्नके यहाँ न जाकर घोषके यहाँ चला गया। घोषने अरवा चावल दिया और कहा, 'अपने बाबूजीसे कहना, ठाकुर मुझको दे दें। मैं ठाकुर प्रतिष्ठा करना चाहता हूँ। मैं पांच सौ रुपये दक्षिणा दूंगा।' इस अभागेने आकर मुझसे सब बताया भी। मैं तुमसे क्या कहूँ देबू मैंने जैसे अपना कलेजा फाड़कर ठाकुरसे मन ही-मन कहा—देवता, मुझे धन दो। जी भरकर तुम्हारी सेवा करूँ। मुझे इस अपमानसे बचाओ। नहीं तो यह बताओ कि मैं करूँ क्या? रात सपना देखा। देखा कि श्रीहरिके यहाँ ठाकुर प्रतिष्ठा हो रही है। मैं श्रीहरिसे रुपया ले रहा हूँ। पहले तो लगा, मैं चिन्तासे ऐसा सपना देख रहा हूँ। लेकिन क्या बताऊँ दूसरे दिन देखा कि हमारे पुरोहितजी कह रहे हैं—आप अपना ठाकुर श्रीहरिको ही दे दें। आप उन्हें रखकर क्या करेंगे? तीसरे दिन फिर देखा कि मैं अपने हाथों श्रीहरिको ठाकुर दे रहा हूँ। मैंने समझा—सोचकर भी देखा कि मेरे मरनेके बाद शायद हो कि लड़के ठाकुरकी नियमित पूजा भी छोड़ दें।' चौधरीने आगे हँसकर कहा, "और, रखेंगे भी

बस वे ? मुदको ही अन्न नसीब नहीं होगा। जो जमीन है, वह भी तो फेलाराम चौधरीके हाथ गिरवी है। सौ रुपया—वही सूद मूल समेत ढाई सौ हो गया है। सो मन बुनकर श्रीहरिने पाच सौ रुपये दिये। जमीनको छुड़ाया। मैं करता क्या देवू।'

देवू काठका मारा-सा बैठा रहा। जरा देर बाद एक दीर्घ नि श्वास छोड़कर बोला, "अच्छा, आज अभी चलता हूँ।'

'जाओगे ?"

जी। फिर आऊँगा।"

अच्छा जाओ।"

देर तक बात करके चौधरी थक गया था। एक गहरी सास लेकर उसने भी अबदाकी भाड आँखें बन्द कर लीं।

देवू चौधरीके घरसे एक क्षोभ लेकर आया था। पैसेके लिए कुल देवताको बेच दिया यह सुनकर जो क्षोभ जो दुख उसे हुआ वह क्षोभ वह दुख न्यायरत्नके घर छोड़कर चले जानेके क्षोभ दुखसे कुछ कम नहीं। अपने अत्यतम मित्र विशू भाईको उसने जिस तरहसे छोड दिया उसी तरहसे वह चौधरीको भी छोड देगा यही जतान आया था। मुँहपर चौधरीकी रुलाईके साथ खरी-खोटी सुनानेका सकल्प लेकर आया था—लेकिन लौटा दुखता हुआ दिल लिये हुए। चौधरीपर उसे कोई क्षोभ नहीं रह गया। मनमें बार-बार उसने देवताको दोष दिया। ऐसी हालतमें चौधरी और कर क्या सकता था ? अपने अगर उसके मनको भ्रम भी हो तो भी सभी ओरसे विचार करके लगा कि चौधरीने ठीक ही किया। आजीवन जिस देवताकी पूजा वह दुनियाकी उत्तम वस्तुओंसे करता रहा है षोडशोपचारसे करता रहा है अपनी गयी-बीती हालतमें यदि वह पूजा सम्भव नहीं और ऐसेमें उसने उस किसी धनीको दे दिया तो क्या बुरा किया ? अपना कर्तव्य ही किया उसने। लेकिन देवताने क्या किया ? अचानक उसे न्यायरत्नवाली कहानी याद आ गयी। दुख उनकी परीक्षा है।

नहीं नहीं ! आज वह विश्वव्यापी दुखको उनकी परीक्षा हरगिज नहीं मान सका। यह अकाल महामारीसे सारे देशको तबाह करके परीक्षा ?

रास्तेमें जाते हुए उस बाउरी टोलेमें औरतोंका रोना सुनाई पड़ा।

बायीं ओरके खेत साँय-साँय कर रहे थे। धान नगरद। कातिक आ रहा है। रबी बोनेका समय। लागोंमें दम नहीं और बल भी नहीं है। वह खेती भी सम्भव न हो शायद। उससे पहले है पूजा—दुर्गापूजा। अबकी पूजा भी

शायद न हो। न्यायरत्नने यहाँकी पूजा इस बार उनके टोल्का एक विद्यार्थी करेगा। उसीका इसका भार दे गये हैं वे। मगर उनके न होनेसे वह पूजा होगी भी? महाग्रामके दत्तोंने अपनी पूजा पिछली बार भीख मांगकर की थी। अबकी वह नहीं हो सकेगी। बच्चोंको नये कपड़े नहीं नसीब होंगे।

सब खतम हो गया, सब!

न्यायरत्न चले गये, चौधरीजी मरणासन्न हैं। पचग्राममें मातबर कहनेको कोई नहीं रह गया। बचपनमें उसने पुरनियोंसे सुना था—तिमुँहेसे सलाह लेनी चाहिए, यानी उससे जिसके तीन माथा हो। सुनकर उसके आश्चर्यकी सीमा नहीं रही थी। उसके बाद पता चला—तिमुँहा बहुत बूढ़ेको कहते हैं। झुककर वह बैठता है। अगल-बगल होते हैं घुटने, बीचमें चढ़ेल माथा। दूरसे देखनेपर तीन सिरवाला-सा दीखता है। आज तिमुँहेकी बात दूर रही, सलाह देनेवाला कोई पुरनिया ही नहीं रहा।

भूखा देश, कमजोर और रोग जर्जर लोग—अभिभावक विहीन समाज। देवता तक निर्दयी होकर सेवा भोगने लिए धनियोंके यहाँ चले जा रहे हैं। इस देशकी खैर है भला!

गहरे दुःख और निराशासे देबू टूट-सा पड़ा। भीख मांगनेपर भी इतने बड़े इलाकेको बचा सके, क्या मजाल! और उसे तुरत लगा, एक आदमी बचा सकता था, विश्व भाई शायद बचा लेता, लेकिन मनने ही उसे भगा दिया!

उसकी चिन्ताका सूत्र बिखर गया।

ढोल कैसा बज रहा है! आम तौरसे ढोल जमीन-नीलामकी घोषणामें बजता है। आजकल अवश्य यूनियन बोर्डके हाकिमोंके हुक्म भी ढोल बजाकर ही घोषित होते हैं। टैक्सके लिए कुर्की, टैक्स अदा करनेकी अंतिम तिथि टैक्स बकौतरी—हर तरहकी घोषणा। यह ढोल किस बातका? देबू तेजीसे आगे बढ़ा।

वहीं भूपाल चौकीदार एक मोचीके साथ ढोलपर घोषणा कर रहा था।

"काहेकी डौंडी पिट रही है भूपाल?"

"जी, टैक्सकी।"

"टैक्सकी? ऐसे समयमें टैक्स?"

"जी। लगानकी भी।"

देबूका सर्वांग क्या तो कर उठा! ऐसा दुर्दिन, और टैक्स? लगान?

लेकिन वह बात भूपालको कहनेसे क्या लाभ ? वह लम्बी डगें भरता हुआ भूपालको पीछे छोड बढ गया।

दुःखसे नहा, क्षोभ और क्रोधम उसके हृदयमें उथल-पुथल मच गयी।

कोई उपाय नही ? जीनेका क्या कोई उपाय नही ?

चण्डीमण्डपमें श्रीहरिका सिरिश्ता खुल गया है। गुमाश्ता दास बैठा है। कालू शेख धूनीकी आगमें बीडी सुलगा रहा है। भवेश और हरीशके हाथमें हुक्का है। महाजन फेलाराम और श्रीहरि मौलसिरीके नीचे खडे बातें कर रहे हैं—कोई गुपचुप बात ! किसीपर आफत ढानेकी सलाह चल रही है शायद।

देवूने अपनी चाल और तेज कर दी।

उसके ओसारेपर गौर चुपचाप बैठा है। यह एक लडका। बडा भला। घरके एकबारगी सामने पहुँचकर वह आश्चर्यमें पड गया। कोई आदमी उसकी चौकीपर सोया था। पतलूनवेमें हाफपैण्ट सस्ते दामकी कमीज और कोट। पैरोंमें फटे मोजे। जूते नये तो थे पर देखते ही समझमें आ जाता था कि कम कीमत वाले हैं। हैट भी था, उसे मुहपर रखकर वह मजेमें सो रहा था। चेहरा नजर नही आ रहा था। बगलमें टिनका एक सूटकेस पडा था।

देवूने गौरसे पूछा, "कौन है गौर ?"

गौरने कहा, 'सो तो नही जानता। मैं तो अभी अभी आया हूँ। देखा, इसी तरहसे सो रहा है।'

देवूने प्रश्न भरी निगाहसे उस आदमीकी ओर ताका।

गौरने कहा 'देवू भैया।'

क्या है ?

भीखके डिब्बे ले आया हूँ। खोलकर पैसे निकाल लें। और भी पाँच छह डिब्बे चाहिए। पाच-छह लडके और काम करेंगे।

देवूने मनमें एक अनोखी सान्त्वनाका अनुभव किया। ताला लगे छोटे-छोटे डिब्बे लेकर गौरकी टोली जंक्शन स्टेशनपर मुसाफिरोंसे भीख माँगती है। गौर वही भरे डिब्बे ले आया है। वह रहा है लडके बन गये हैं और भी डिब्बे चाहिए।

स्नेहसे उसने गौरका सिर सहला दिया।

गौरने कहा 'आज शामको एक बार हमारे यहाँ आयेंगे ?"

क्या ? कोई जरूरत है ? चाचाने बुलाया है ?'

नहीं। सोना इम्तहान देगी न ? दरख्वास्त लिख दीजिएगा। उसे कुछ पूछना-पाछना भी है।

"अच्छा, आऊँगा।"—गहरे स्नेहसे देबूने हामी भरी। गौर और सोना—लड़का और लड़की। दोनोंको सोचकर देबूने सान्त्वना सी पायी। ये जब बड़े होंगे, तो इलाकेकी हालत और तरहकी हो जायेगी।

घरके अन्दरसे निकली दुर्गा। बोली, "गनीमत है—लौट तो आये। खाना-पीना कब होगा?"

उसके शासनसे देबूको हँसे बिना न रहा गया। बोला, "चलो चलो।"

दुर्गा हँसकर बोली, "वह लो, मेहमान आया है।"

"मेहमान?"

"वह!"—दुर्गाने सोये हुए आदमीको दिखा दिया।

देबूको बात नये सिरेसे याद आयी। कहा—"वही तो! कौन है?"

"लुहार!"

"लुहार?"

"हाँ! अनिरुद्ध! नौकरी करके साहब बनकर आया है। हाय मरण!"

"अनिरुद्ध? अन्नी भाई?"

"हाँ!"

बातचीत होते रहनेसे और खास करके बार-बार अनिरुद्ध शब्दके उच्चारणसे अनिरुद्ध जग गया। मुँहपर से टोपी हटाकर पहले उसने देबूको देखा। फिर कहा, 'देबू भाई, राम राम।'

तेईस

देबूने पूछा, "इतने दिनों तक कहाँ थे अन्नी भाई?

जवाबमें उसने कहा, 'पद्म घर छोड़कर चली गयी?'

लम्बा निःश्वास छोड़कर देबूने सिर झुका लिया। उससे कुछ कहते नहीं बना। पद्मकी वह रक्षा नहीं कर सका। घर छोड़नेवाली लड़कीके पिता, पत्नीके पति, बहनके भाई घर छोड़नेका प्रसंग उठनेपर जिस तरहसे सिर झुकाकर बैठ जाते हैं चुपचाप, वह वैसे ही चुप हो रहा।

अनिरुद्धने कहा, 'शर्म कैसी? इसमें तुम्हारा क्या कसूर भाई?' फिर कुछ देर चुप रहकर, गरदन हिलाकर—मानो मनमें बहुत-बहुत सोच विचार करके

कहा "उसका भी कोई कसूर नहीं। जाने दो।" फिर अपनी छातीपर हाथ रखकर कहा "कसूर हमारा है। हमारा।"

देबू बोला, "एक चिट्ठी भी तो लिखी होती अनी भाई!"

अनिरुद्ध चुप हो गया। कुछ नहीं बोला वह।

दुर्गाने तकाजा किया— गुरुजी दोपहरी हो आयी—रसोई तो करो।"

और अनिरुद्धको देखकर हँसती हुई बोली, "मितवा भी तो यहीं खायेगा। क्या भई।"

देबू झट बोल उठा, "हाँ हाँ, यहीं खायगा। तुमने बात करना भी नहीं सीखा दुर्गा!"

दुर्गा खिलखिलाकर हँस पड़ी— अरे यह मेरा मितवा जो है! इसकी मेहमानदारी कैसी? कहो भी।"

अनिरुद्ध ठहाका मारकर हँसते हुए बोला, "मितनीने ठीक ही कहा है भाई!"

उसकी इस हँसीसे देबूने अस्वच्छ दता महसूस की। बोला, "तुम मुँह हाथ धो लो भाई। तेल गमछा लो, नहाओ। मैं रसोई कर लूँ।"

अन्दर जाकर उसने रसोईकी जुगत शुरू की। अनिरुद्ध! अभागा! एक जमानेके बाद लौटा मगर पद्म नहीं है! रही होती तो कितना आनन्द आता! आज पदमको वह अनिरुद्धके हाथो सौंपता—लड़कीके बापकी तरह बहनके बड़े भाईकी तरह! अभागिन पदम! संसारकी दलदलमें कहाँ धँस गयी, कौन जाने! उसकी अन्त्येष्टिके लिए कंकालका एक टुकड़ा भी नहीं मिलेगा!

अनिरुद्ध बाहर बक बक करता जा रहा था।

दोनों खाने बैठे तो अनिरुद्धने अपनी रामकहानी कही। "जेलखानेमें ही बड़ा अफसोस हुआ था, अपने ऊपर घृणा हो गयी थी। सोचा करता, गाँवमें मुँह कैसे दिखाऊँगा? और गाँवमें खाऊँगा भी क्या? वहाँ एक मिस्त्रीसे परिचय हुआ। मारपीटमें उसे सजा हुई थी। एक औरतके लिए दूसरे एक मिस्त्रीसे मारपीट हुई थी। उसीने मुझे सहारा दिया। उसने छूटकर जाते वक्त मुझे अपना पता दिया और कहा—छूटनेपर मेरे पास चले आना। मैं तुम्हें नौकरी दिला दूँगा। जेलसे निकला। सोचा गाँव नहीं जाऊँगा। जंक्शनमें खबर भेजकर पदमको बुलवा लूँगा। और उसे साथ लेकर चला जाऊँगा। लेकिन—।"

अनिरुद्ध हँसा। कपालपर हाथ रखकर बोला "मेरी तकदीर देबू भाई! बस तो महावन है न कहाँ जाते हो नेपाल? साथ जाता है कपाल! जंक्शनके बाहर खानेको एक औरत मिल गयी। दुर्गा जानती है—सावी, सावित्री नाम है उसका।

देखन-सुननेमें सामी हू, मुझसे " अनिरुद्ध फिर हँसा। उससे उस औरतकी पहले से ही जान-पहचान थी—जान-पहचानसे भी गाढा परिचय। वह कारखानेके बूढे खजानचीकी कृपापात्री थी। बुड्ढेसे वह रुपया काफी ऐंठती थी पर उससे प्रीति जरा भी न थी। उस समय बुडढेसे झगडकर वह शहरमें रुपका रोजगार करती थी।

अनिरुद्धने कहा, "उस औरतने मुझे छोडा ही नही। अपने डेरेपर ले गयी। शराब-शराब पिलायी। उसी दिन वह बूढा खजानची उसे मनाकर ले जानेके लिए आया। औरत तो जल भुन गयी। रात ही उसने मुझसे कहा—चलो हम लोग भाग चलें। देवू भाई इसका नशा क्या होता है तुम नही जानते। सो मैं उस नशेमें चला गया। कलकत्तेमें उस मिस्त्रीके यहाँ उतरा। उसके बाद "

उसके बाद अनिरुद्ध इतने दिनोकी लम्बी कहानी कहता गया— मिस्त्रीने कलमें नौकरी दिला दी। लुहारखानेमें मजूरेका काम। लुहारका लडका ठहरा फिर छातीमे गरीबीकी जलन—काम सीखनेमे देर नही हुई। मजूरसे लुहार लुहारसे फिटर। बारह आनेसे डेढ रुपया डेढ रुपयासे दो दो से ढाई और आज मजूरी है तीन रुपये रोज। ऊपरसे ओवरटाइम। उसके सिवा भी बाहर ठेकेका काम।'

आगे अनिरुद्धने कहा, "देवू भाई पेटभरके खाया, जी भरके पहना, शराब पी मौज मजा किया—सब कर-कराके भी छह-सौ पचहत्तर रुपये साथ लाया हूँ। सोचा था घर द्वारकी मरम्मत कराऊँगा जमीन खरीदूँगा। पदमको साथ ले जाऊगा। लेकिन ।" अनिरुद्धने दोनो ही हाथ उलटकर कहा फुर हो गयी।' और फिर वह चुप हो गया। देबूने भी कोई जवाब नही दिया। इन बातोंका जवाब भी क्या है ? दुर्गा कुछ ही दूरपर बैठी सब सुन रही थी। वह भी कुछ देर चुप रही। उसके बाद बोली, 'तो ? सादी करी है ?"

'अच्छी हा थी। लेकिन—।' आगे अनिरुद्धने हँसकर कहा 'कई दिन हुए, वह कही भाग गयी।'

"भाग गयी ?'

हाँ।"

'अभी अपनी बीवीकी याद आयी है ?'

'दुर्गाकी ओर ताककर उसने कहा लिहाजा गल्ती मेरी है यह तो मैं कबूल ही करता हूँ। लेकिन—'

'लेकिन क्या ?'

कहा "उसका भी कोई कसूर नहीं। जाने दो।" फिर अपनी छातीपर हाथ रखकर कहा, 'कसूर हमारा है। हमारा!

देवू बोला 'एक चिट्ठी भी तो लिखी होती अनी भाई!"

अनिरुद्ध चुप हो गया। कुछ नहीं बोला वह।

दुर्गाने तकाजा किया— गुरुजी दोपहरी हो आयी—रसोई तो करो।"

और अनिरुद्धको देखकर हँसती हुई बोली, 'मितवा भी तो यहीं खायेगा। क्यों भई!'

देवू झट बोल उठा, "हाँ-हाँ, यहीं खायेगा। तुमने बात करना भी नहीं सीखा दुर्गा!'

दुर्गा खिलखिलाकर हँस पड़ी— अरे यह मेरा मितवा जो है! इसकी महमानदारी कैसी? कहो भाई।"

अनिरुद्ध ठहाका मारकर हँसते हुए बोला 'मितनीने ठीक ही कहा है भाई।'

उसकी इस हँसीसे देवूने अस्वच्छन्दता महसूस की। बोला 'तुम मुँह हाथ धो लो भाई। तेल गमछा लो, नहाओ। मैं रसोई कर लूँ!"

अन्दर जाकर उसने रसोईकी जुगत शुरू की। अनिरुद्ध! अभागा! एक जमानेके बाद लौटा, मगर पदम नहीं है! रही होती तो कितना आनन्द आता! आज पदमको वह अनिरुद्धके हाथों सौंपता—लड़कीके बापकी तरह, बहनके बड़े भाईकी तरह! अभागिन पदम! संसारकी दल्दलमें कहाँ धँस गयी, कौन जाने! उसकी अन्त्येष्टिके लिए चकाल्का एक टुकड़ा भी नहीं मिलेगा!

अनिरुद्ध बाहर बक झक करता जा रहा था।

दोनों खाने बैठे तो अनिरुद्धने अपनी रामकहानी कही। जेलखानेमें ही बड़ा अफसोस हुआ था, अपने ऊपर घृणा हो गयी थी। सोचा करता गाँवमें मुँह कैसे दिखाऊँगा? और गाँवमें खाऊँगा भी क्या? वहाँ एक मिस्त्रीसे परिचय हुआ। मार-पीटमें उसे सजा हुई थी। एक औरतके लिए दूसरे एक मिस्त्रीसे मारपीट हुई थी। उसीने मुझे [illegible] दिया। उसने छूटकर जाते वक्त मुझे अपना पता दिया और कहा—छूटनेपर मेरे पास चले आना। मैं तुम्हें नौकरी दिला दूँगा। जेलसे निकला। सोचा गाँव नहीं जाऊँगा। जंक्शनसे खबर भेजकर पद्मको बुलवा लूँगा। और उसे साथ लेकर चला जाऊँगा। लेकिन—।"

अनिरुद्ध हँसा। कपालपर हाथ रखकर बोला "मेरी तकदीर देवू भाई! बस तो कहावत है न 'कहाँ जाते हो नेपाल? साथ जाता है कपाल'! जंक्शनके कार-खानेकी एक औरत मिल गयी। दुर्गा जानती है—सावी, सावित्री नाम है उसका।

१

देखन-सुननेमें खासी हैं, मुझसे " अनिरुद्ध फिर हँसा। उससे उस औरतकी पहले से ही जान-पहचान थी—जान-पहचानसे भी गाढ़ा परिचय। वह कारखानेके बूढ़े खजानचीकी कृपापात्री थी। बुड्ढेसे वह रुपया काफी ऐंठती थी पर उससे प्रीति जरा भी न थी। उस समय बुड्ढेसे झगड़कर वह शहरमें रुपया रोजगार करती थी।

अनिरुद्धने कहा "उस औरतने मुझे छोड़ा ही नहीं। अपने डेरेपर ले गयी। शराब-कबाब पिलायी। उसी दिन वह बूढ़ा खजानची उसे मनाकर ले जानेके लिए आया। औरत तो जल भुन गयी। रात ही उसने मुझसे कहा—चलो हम लोग भाग चलें। देबू भाई इसका नशा क्या होता है तुम नहीं जानते। सो मैं उस नशेमें चला गया। कलकत्तेमें उस मिस्त्रीके यहाँ उतरा। उसके बाद "

उसके बाद अनिरुद्ध इतने दिनोंकी लम्बी कहानी कहता गया— मिस्त्रीने कलमें नौकरी दिला दी। लुहारखानेमें मजूरेका काम। लुहारका लड़का ठहरा, फिर छाती में गरीबीकी जलन—काम सीखनेमें देर नहीं हुई। मजूरसे लुहार लुहारसे फिटर। बारह आनेसे डेढ़ रुपया, डेढ़ रुपयासे दो दो से ढाई और आज मजूरी है तीन रुपये रोज। ऊपरसे ओवरटाइम। उसके सिवा भी बाहर ठेकेका काम।'

आगे अनिरुद्धने कहा, "देबू भाई पेटभरके खाया, जी भरके पहना, शराब पी मौज मजा किया—सब कर-कराके भी छह-सौ पचहत्तर रुपये साथ लाया हूँ। सोचा था घर-द्वारकी मरम्मत कराऊँगा जमीन खरीदूँगा। पदमको साथ ले जाऊँगा। लेकिन ।' अनिरुद्धने दोनों ही हाथ उलटकर कहा फुर हो गयी।' और फिर वह चुप हो गया। देबूने भी कोई जवाब नहीं दिया। इन बातोंका जवाब भी क्या दे ? दुर्गा कुछ ही दूरपर बैठी सब सुन रही थी। वह भी कुछ देर चुप रहा। उसके बाद बोली, तो ? औरत कैसी है ?"

"अच्छी ही थी। लेकिन—। आगे अनिरुद्धने हँसकर कहा, 'कई दिन हुए वह कहीं भाग गयी।"

'भाग गयी ?"

' हाँ।"

जभी अपनी बीबीकी याद आयी है ?

दुर्गाकी ओर ताककर उसने कहा, निगोड़ा गलती मेरी है यह तो मैं कबूल ही करता हूँ। लेकिन—

लेकिन क्या ?'

"लेकिन वह छिरूके घर नही गयी होती तो मुझे कोई कष्ट नही होता। खर, वहाँसे भी चली गयी, इसमे म खुश हूँ।'

देवूने अपनी उसी शिकायतको दोहराया—'तुमने कोई चिट्ठी भी तो दी होती अनी भाई।'

अनिरुद्ध बोला "यह नशा क्या होता ह—मैंने कहा न—तुम जानते नही देवू भाई। म नशेमें चूर हो गया था। और फिर मेरे मनमे क्या था मालूम ह? मन ही-मन तो यह तय किये हुए था कि कमाकर हजार रुपये लिये बिना नही लौटूँगा। तुम लोगोको दग कर दूँगा।"

दुर्गाने कहा सो आये तो तुम्ही दग रह गये।"

नही"—अनिरुद्धन नकारते हुए कहा, 'नही। मनम ऐसा ही कुछ सोच करके ही आया था खानेको मयस्सर नही कपडे नसीब नही, पति लापता बाल-बच्चे नदारद और पन्मकी उम्र ठहरी जवानीकी! —यह मने हजारो बार सोचा ह दुगा। पर मुझे सबसे दु ख—"

"क्या?"

"न, वह अब नही कहूँगा।"

"क्यो, तुम्हें भी शम आती ह क्या?"

'शम?"—देवूकी ओर ताककर अनिरुद्धने कहा, "देवू भाईको बीवी बच्चा नही था उसीने उसे खाने-पहननेको दिया। हरामजादी उसीके परो आकर लौट क्यो नही गयी? म आज देवू भाईसे उसे माँगकर ले जाता। वह अगर जाना नही चाहती या कि देवू भाईको दु ख होता तो मैं मुसकराते हुए लौट जाता।

देवू बोल उठा— आह अनी भाई।'

वह खाना छोडकर उठ खडा हुआ।

देवूको तमाम दोपहर उस रातकी बात याद आती रही। ओसारेकी चौकी पर बैठकर वह थिर आँखो उस हरसिंगारको देखता रहा।

उसकी तन्मयतामें बाधा देकर दुर्गा बोली 'गुरुजी!'

ऐं! मुझसे कुछ कह रही ह?'

दुर्गाने कहा खूब कहा! गुरुजी और किसे कहते है!'

गौर कह गया था, देवू भयाको मेरे यहाँ जानेके लिए याद दिला देना। दरख्वास्त या क्या तो लिखना ह। बार-बार कह गया ह। तुमसे नही कहा क्या?

देवूको याद आ गया। सोना मिडिलका इम्तहान देगी। दरख्वास्त लिख
नी होगा। कुछ बता-वता देना होगा। सोनाका अगर जीवनका रास्ता पकड़ा
के तो एक बहुत बड़ा धर्म होगा। बड़ी अच्छी लड़की है। गौरकी ही बहन
न। देवूको हैरानी होती, ये दोनों ऐसे बने हुए?

तिनकौड़ीके यहाँ एक खासी जमघट जमी हुई थी। तिनकौड़ी माथेपर हाथ
से बैठा था। रामचरण तारनी वृन्दावन गोविन्द आदि कई जन बैठकर
म्याकू पी रहे थे। लेकिन सभी चुप थे। इनकी चुप्पीका एक खास अर्थ होता
। इनका स्वाभाविक रूप है—गरजना ठठाकर हँसना। तिनकौड़ीके चरित्रकी
नावट भी बहुत-कुछ इन्हीं-जैसी है। तिनकौड़ीके साथ इन सबकी जब जमायत
मती है, तो चौथाई मील दूरसे ही इनकी हँसी सुनाई पड़ती है। या कि
कलहकी आवाज—गरज। या फिर सामूहिक गीतका स्वर।
जमायतको सन्नाटेमें देख देवूको शंका हुई 'बात क्या है काका?"
तिनकौड़ीने सिर उठाया। देवूको देखकर कहा आओ बेटे।
देवूने कहा, "आज ऐसे चुपचाप क्यों है?'
राम भल्ला बोला "मण्डल भयाको वह अच्छी गया आज मर गयी
[illegible]जी।'
तिनकौड़ीने एक गहरा निःश्वास छोड़कर कहा, वही नहीं भैया हराम
[illegible] छिनाम घोष-टोलेमें डकैतीमें कल रात पकड़ा गया। बीसियों बार मैंने
[illegible] कहा था अबे हरामजादे, अभी तेरी उम्र कच्ची है। हजार हो अभी
[illegible]च्चा है तू। मत जाया कर। मगर कम्बख्तने सुना नहीं।'
"घोष-टोलेमें डकैतीमें पकड़ा गया? कहाँ वहाँ तो डकैतीकी नहीं सुनी।"
'इस घोष टोलेमें नहीं। मौलिक घोष-टोला—मुर्शिदाबादके पाँचहाटीके
[illegible]ाम। कोई-काई उस पाँचहाटी घोषपाड़ा भी कहते हैं।'
देवूके अचरजकी सीमा नहीं रही। पाँचहाटी बड़ा गाँव है। हफ्तेमें वहाँ
[illegible] दिन पैठ लगती है। इलाकेकी मशहूर हाट है। साग-सब्जीसे लेकर चावल
[illegible] मसाला-पाती यहाँतक कि गाय भैंस तक बिकती है। मौलिक घोष-टोला
भी देखा है। बुनियादी मौलिक उपाधिवाले कायस्थ जमींदार है। विशाल
मकान। लेकिन पाँचहाटी तो यहाँसे कमसे कम बारह कोस है—चौबीस मील।
डकैती करनेके लिए छिनाम इतनी दूर गया? उन्नीस-बीस सालका वह
[illegible]पिट-सा छोरा।

देबूने कहा, "वह तो यहाँसे बारह चौदह कोस है ?"

रामने बहुत सहज भावसे कहा, "हाँ, उतना तो होगा।"

इतनी दूर गया डकतीके लिए ? वह छोकरा, छिःराम ? कल तीसरे पहर भी तो मैंने उसे देखा था। मुझसे भेंट हुई थी।"

'हाँ। शामको निकला।'

तिनकौड़ी बोला 'वह हरामजादा पकड़ा गया। अब सारी बस्तीको परे शान करेगा। मुझे भी नहीं छोड़गा।'—उसने उसास ली।

देबू चौंक उठा। तिनकौड़ी-जसे आदमीके सिर थामकर बठनेका मतलब अब समझमें आया। कुछ क्षणोंमें अपनेको संभालकर उसने कहा, 'परेशान तो करेगा ही वह। लेकिन और उपाय भी तो नहीं है। सहना ही पड़ेगा। उससे डरना क्या है ? अदालत तो है। वहाँ झूठका सच नहीं चलता।"

तिनकौड़ी जरा हँसा।

रामने हँसते हुए कहा, गुरुजीने गलत नहीं कहा तिनू भया। तुम कोई फिक न करो। पुलिस हुज्जत करेगी। हो सकता है मजिस्टर दौरा सुपुर्द करे। लेकिन दौरेमें सब ठीक हो जायेगा।"

अचानक रातका अधरा जसे सिहर उठा। पास ही किसीका हृदय विदारक रोना सुनाई पड़ा। सभी चौंक उठे।

तिनकौड़ीने कहा "कौन है रे रामा ? कौन रो रहा है ?

रामकी चचलता इतनेमें ही ठण्डी पड़ गयी। कहा, "लगता है, रतनका बेटा गया।

तारनी बोला ' हाँ। वही लगता है।"

एकाएक तिनकौड़ी उठ खड़ा हुआ। क्षुब्ध और क्रोधसे बोला "आदमी आदमीका खून करता है तो उसे फाँसी होती है, लेकिन रोगको पकड़कर फाँसी दे तो देखूँ। चल रामा देखें जरा। जो होना होगा, सो तो होगा ही। उसके लिए सोचकर क्या करना।'

वह तेजीसे सबसे पहले ही चला गया। देबू जरा चकित हुआ। तिनकौड़ी की ऐसी डाँवाडोल हालत उसने कभी नहीं देखी। सभी चले गये। वह खड़ा रहा। सोचने लगा कि ' रतनके यहाँ वह जाय या नहीं ? अगर जायेगा, तो जिस कामके लिए आया है, वह नहीं हो सकेगा। सोनाकी परीक्षाकी दरख्वास्त देनेका भी ज्यादा समय नहीं रहा। और रतनके यहाँ जाकर भी क्या होगा ? क्या करेगा वह ? शोकातुर माँका हृदयवेधी रोना सुनने और उनकी मार्मिक पीड़ाको आँखोंसे देखनेके सिवा और कुछ नहीं कर सकेगा। न दुःख उससे और नहीं

दशा जायेगा। दु:ख देखते-देखते प्राण हाँफ उठे है। यहाँ उसने आनन्द पानेकी कल्पना की थी। बहुत-बहुत सोचा था। बुद्धिकी दमकवाली सोनासे कड़े-कड़े सवाल पूछूँगा। सोना पहले मूनी आँखों सोचती रहेगी कि एकाएक उसकी दोनों आँखें चेतनाकी चकचकतासे दीयेकी लौ-सी बल उठेंगी, होठोंपर मुसकान खेलने लगेगी और जवाब बता देगी। मैं उससे भी सख्त सवाल करूँगा, उसका जवाब सोना नहीं सोच पायेगी। तब उसकी आँखोंकी बुझती दमकको मैं जला दूँगा। कहूँगा, लो सुनो जवाब। मैं उत्तर कहता जाऊँगा, सोनाकी आँखोंमें चमक चमकेगी और उस बुद्धिमती लड़कीके चेहरेपर कौतूहलकी तृप्ति तथा श्रद्धा भरा विस्मय झलक पड़ेगा। गौर भी भौंचक्का सा सुनता रहेगा शायद। गौरकी बुद्धि वैसी पैनी नहीं है, पर उसकी प्राण शक्ति अशेष है। बीच-बीचमें उसकी उस प्राण शक्तिके स्फुरणका परस मिलेगा। सहायता-समितिके लिए सम्भवतः वह इसी बीच कोई नयी युक्ति सोचे बैठा है। पढ़ने-पढ़ानेके बीच ही बोल उठेगा—"देबू भया, मैं कह रहा था कि..."

कल्पनामें उसे मुक्तिका स्वाद मिला था। दु:खसे मुक्ति निराशासे मुक्ति—मुसीबतकी अमावस्याके अँधेरेके अवसानके बाद पूर्वी क्षितिजके छोरपर शुक्रताराके उन्मुक्त आश्वासन हो मानो! दु:खको अब वह नहीं सह पा रहा है। रह-रहकर जीमें आता है कि घर छोड़कर चला जाये। घर! अपने घरकी याद आनेपर उसे हँसी आती। उसका घर उसकी बिलू और मुन्नेके साथ ही जलकर खाक हो चुका है। जो है उसमें और पेड़ तलेमें कोई फर्क नहीं है। रास्तोंके किनारे पेड़ोंकी छायाकी कमी नहीं, एकको छोड़कर दूसरेके नीचे जानेमें नुकसान ही क्या है? लेकिन ये काम उसपर जैसे नशेकी तरह सवार हैं। नशेबाज जैसे सौंवा कर-करके भी नशा नहीं छोड़ सकता, नशेका समय आते ही फिर पी लेता है, उसका भी ठीक वही हाल है। सोचता, इस कर लेनेके बाद अब नहीं। यही आखिरी है। लेकिन उसके खतम होते-न होते दूसरे काममें हाथ डाल देता है।

देबूने एक निःश्वास छोड़ा। जो भाग्यवाले होते हैं, अँधेरी रातमें उनके सामने बिजली कौंध उठती है। बरसातके दिनकी बिजली—चमककी छटा आती है, गरजकी आवाज नहीं पहुँचती। भाग्यवान् अँधेरेमें भी राह देखकर चलते हैं। लेकिन अभागेके हाथकी बत्ती भी बुझ जाती है। उसके नसीबमें ऊपर की बिजलीकी छटाके बदले तूफानी हवा आती है। देबूने मन-ही-मन आनन्दका जो दीया जलाया था, वह तिनकौड़ी बगैरहकी दुश्चिन्ताके निःश्वास और बेटेके

मृत्युशोकमें रतन वागदीके ममभेदी आतनादकी तूफानी हवासे पल भरमें वुझ गया।

वह ओसारेपर चढा। देखा, गौर और सोना जहाँ पढते हैं, वहाँ कोई नही है। सिर्फ एक चटाई बिछी है और दीवटपर एक दीया जल रहा है।

उसने पुकारा—'गौर!'

किसीने जवाब नही दिया।

उसने फिर आवाज दी— गौर? ऐ गौर!"

इस बार धीरे धीरे आकर सोना सामने हुई।

देवूने कहा गौर कहाँ है? तुम्हारे इम्तहानकी दरख्वास्त लिख देनेके लिए कह आया था। कहा था कुछ बताना बताना है।'

सोना अवकी भी कुछ नही बोला। दीया सोनाके पीछे था। उसके सामने की ओर घनी छाया पडी थी। फिर भी देवूको लगा, सोनाकी आँखोंसे आँसूकी धारा बह रही है। वह विस्मयसे जरा रुककर बोला 'सोना!'

दबी रुलाईमें वह धीमेसे बोली, क्या होगा देवू भया?'

"किस बातका क्या होगा? क्या हुआ है?"

'बाबू जी '

"बाबू जी क्या? —कहते ही उसे तिनकौडीकी कही याद आ गयी। तिन कौडीने कहा था—थानेदारके डकैतीमें छिदाम पकडा गया। वह हरामजादा पकडाया अब सारी बस्तीको परेशान करेगा। मुझे भी नही छोडेगा।' देवू समझ गया, चर्चा अन्दर तक पहुँची है और औरतें तक आतंक हो गया है।

देवूने अभय और दिलासा दिया—'छिदामकी कह रही हो न? तो उससे डरना क्या? तिनू काकाको उस मामलेमें लपेटनेसे ही तो लपटा नही जा सकता। भगवान् है। अभी भी रात दिन होता है। सच झूठ कभी ढका नही रहता। इलाके भरके लोग गवाही देंगे कि तिनू काका वैसा आदमी नही है। पहले भी तो पुलिसने दो दो बार वी० एल० केस किया था—मगर कुछ भी तो नहीं कर सकी वह। इलाकेवालोंकी गवाहीको जज साहब टाल नही सकते।

सोनाकी रुलाई और बढ गयी। बोली, अबकी बाबूजी भी वास्तवमें उन्ही लोगोंकी जमातमें शामिल हो गया है।

एँ! कह क्या रही हो? —अचरजसे देवूको काठ मार गया।

सोना बोली, हम लोगोको पता नही था देवू भया! आज शामको राम

चाचा वगैरहने आकर बाबूजीसे चुपचाप कहा 'गजब हो गया भैया, छिदाम पकड़ा गया। हम लोगोंने सोचा, लोगोंने रपटा सो छोरा कहीं छिटक गया। मगर हरामजादा, पकड़ा ही गया।' बाबूजीने माथेपर हाथ रखकर कहा—रामा, तुम लोगोंने ही मुंह डुबाया। यह पाप कराया।'

देवू जैसे बुत बन गया। निर्वाक् निस्पंद।

सोनाने धीमेसे कहा, "कल तीसरे पहर बाबूजीने कहा मैं एक काममें जा रहा हूं। कल सवेरे लौटूंगा। पहले हो लौट सका तो भोर ही भोर तड़के लौटूंगा। सिपाही आवाज दे तो कह देना तबीयत खराब है सो रहा हूं।' सिपाहीने रात पुकारा नहीं। बाबूजी रातके आखिरी पहरमें लौटे। हांफ रहे थे। शराब पी थी। पाते तो खैर थे ही। हम कुछ समझ नहीं सके। श्यामा राम चाचाने जब कहा—'

सोनाका गला रुँध आया।

देवूने गहरी उसास ली 'खतम—सब खतम हो गया। चौधरीने ठाकुर बेंच दिया और तिनू काका आखिरमें डकैतोंसे जा मिला।'

आंचलसे आँखें पोंछकर सोना बोली, ये लोग जब डकैतीके बारेमें बो— रहे थे, तो गौर भया वहीं था। बाबूजीको पता नहीं था। मैं आयी तो भयान चुप रहनेका इशारा किया। मैं चुप खड़ी रही।'

फिर एक आवेग सोनाके गलेमें प्रबल हो उठा। बोली, 'भैया घरसे चले गये देवू भैया।"

देवू चौंका। बोला, "चला गया! क्या ?

'गुस्सेसे। दुःखसे। अभिमानसे। जाते वक्त कह गया कि बाबूजी पूछें तो कह देना, मैं घरसे चला जा रहा हूं। इस घरमें अब नहीं रहूंगा।'

चौबीस

एक रोज तिनकौड़ीने निष्कपट भावसे खुद ही स्वयंसे सारा कुछ खोलकर कहा। घरकी तलाशीमें कुछ नहीं मिला। लेकिन छिदाम जिन्दगीमें पहली बार डकैती करने गया और पकड़ा गया। वह पी नहीं सका। कबूल कर लिया। और जिसके घर डकैती हुई, उसके दो आदमियोंने तिनकौड़ी, राम और तारिणीको देखने ही

पहचान लिया। पुलिसकी पूछताछमें सोना भी सुनी-सुनाई कह गयी। तिनकौडी बुत बना अपनी बेटीको देखता रह गया।

मुकदमेकी सुनवाईके समय—तिनकौडी उस समय हाजतमें था—एक वकीलके साथ देबूने उससे भेंट की। उसी दिन तिनकौडीने उससे सब खोलकर कहा।

सब कुछ जान सुनकर भी देबूको तिनकौडीके मुकदमेकी पैरवी करनी पडी। इसके लिए अपने मनसे लडते लडते वह घायल हो गया। तिनू चाचाने डकैतोंके साथ डकैतीका पाप किया, उसकी पैरवी करना ठीक नहीं है। लेकिन दूसरी ओर सोना और उसकी माका मुँह देखकर वह किसी भी तरहसे अपनेको निरपेक्ष नहीं रख पा रहा था। महज ममताकी ही बात नहीं थी—तिनकौडीको अगर सजा हो जाये तो सोना और उसकी माके लिए उसे मुसीबतमें पडना होगा। ताना लोकोंमें उनकी देख भाल करनेवाला कोई नहीं है। गौर जो उस रोज शामको भागा, सो तबसे उसका भी कोई पता नहीं। जीवनमें ऐसी मुश्किल हालतमें देबू कभी नहीं पडा।

हर रातको अकेले सो चिन्ताओंमें उसे यही लगता कि घर छोडकर भाग जाना ही ठीक है। उसे मालूम है कि यहाँसे भागते ही उसे मुक्ति मिल जायेगी, मगर भागते भी नहीं बनता। इस बीच उसने सोना वगैरहको टालकर चलनेकी कोशिश की। तीन दिन तक वह उनके यहाँ गया नहीं। चौथे दिन अपनी माँ और एक भल्ला लडकेको लेकर सोना उसके आँगनमें आ खडी हुई। काँपती हुई आवाजमें पुकारा— देबू भैया!

देबू परेशान हो उठा। अपराधकी ग्लानिने मन ही-मन उसे चंचल कर दिया। वह बाहर निकला "सोना! चाचीजी! आइए। अरी ओ दुर्गा अरे कहाँ गये सब! अच्छा, यह रही चटाई, बैठिए।' बाहरकी चौकीपर जो चटाई पडी थी उसे लाकर नीचे बिछा दी।

सोनाकी माँ पहले देबूसे नहीं बोलती थी। अब घूँघटके अन्दरसे बोलती है। वह बोली, 'छोड दो बेटे, रहने दो।'

सोनाने देबूकी बिछाई चटाई उठा दी।

देबूने कहा, 'अरे उठाये क्या दे रही हो?'

सोनाने जरा हँसकर कहा 'आपने उलटी ही चटाई डाल दी। उल्टी चटाईपर नहीं बैठना चाहिए।' यह कहकर वह सीधी चटाई बिछाने लगी।

'ओ —अप्रतिभ होकर देबूने कहा 'आप लोग तकलीफ उठाकर आयी क्यों, सो तो कहिए? मैं तीन दिनोंसे जरूर जा नहीं सका। तबीयत ठीक नहीं थी। आज मैं जाता।

सोनाने कहा, "एक बात है देवू भैया!"

"कहो।"

"भैयाके लिए किसी अखबारमें विज्ञापन देना ठीक नहीं होगा? मैंने कल देखा, एकने 'लौट आओ' का विज्ञापन दिया था।"

"क्यों नहीं!"—यह बात देवूको ही याद नहीं थी। वह बोला, "ठीक कहा है तुमने। देखता हूँ लिखकर। आज ही डाकसे भेज दूँगा।"

सोनाने आँचलकी गाँठ निकालकर दो रुपये रख दिये और कहा 'क्या लगेगा मैं नहीं जानती। दो रुपयेसे हो जायेगा न?'

"रुपये तुम रखो। उसका इन्तजाम मैं करूँगा।"

घूँघटके अन्दरसे सोनाकी माँ बोली 'ये दो रुपये तुम रख लो बेटे! हम लोगोंके लिए तुमने बहुत किया है। समय-समयपर रुपया भी खर्च किया है, मैं जानती हूँ। ये रुपये मैं गौरके नामसे ले आयी हूँ।'

देवूने रुपये उठा लिये। सोनाकी माँने गलत नहीं कहा। परन्तु देवूने भूल करके भी कभी यह बात जाहिर नहीं होने दी। वे लोग सिर्फ सोनाके स्नेहालककी फीसके बारेमें ही जानते हैं। इम्तहान देनेका संकल्प सोनाका आज भी अटूट है। अजीब धुन है! उसने कहा था—'देवू भैया, बाबूजीकी तो हालत यह है! भैया चला गया। जो थोड़ी-सी जमीन है, वह भी नहीं रहेगी। उसके बाद हमारी क्या दशा होगी? दासीगिरी करके खाना होगा?"

देवू चुप था। इस बातका जवाब भी क्या दे?

सोना बोली, 'मैं जंक्शन गयी थी। वहाँके बालिका विद्यालयकी दीदीजी से भेंट हुई। उन्होंने मुझसे कहा, मिडिल पास कर लो, मैं तुम्हें अपने स्कूलमें रख लूँगी। छोटी बच्चियोंको पढ़ाना। दस रुपये माहवारपर जाना पड़ेगा। वेतन फिर बढ़ा देंगी।'

देवूने स्वयं भी महसूस किया है। सोनाके लिए इसके सिवा और कोई रास्ता नहीं दीखता। पहले जमानेमें इस रास्तेकी बात कोई सोच भी नहीं सकता था। विधवाका वही सनातन रास्ता था—बाप माँ या भाईके पास रहना और अगर कोई न हो तो रिश्तेदारके यहाँ काम करना। भूखके लिए ब्राह्मणके यहाँ या अछूतोंके स्वजातिके यहाँ रसोइयाका काम ही दूसरा उपाय था। एक और उपाय—अंतिम उपाय—जिसे सोचकर भी देवू सिहर उठता। उस भ्रष्टाचारिणी याद आ जाती, पद्मकी याद आ जाती। सोनाके ऐसे साहसपूर्ण कदमके लिए देवूने मन ही मन धन्यवाद दिया है उसकी तारीफ की है। सोचकर हैरान भी हुई कि परिवारका प्रभाव जीतकर उसने ऐसे मसलेकी प्रेरणा कैसे पायी?

पुरनिये कहते है—'समयकी महिमा ! कलिकाल !'

चण्डीमण्डपम घाटपर इसी बीच इसपर व्यग्य भरी आलोचना होने लगी थी।

देवूसे भी बहुतोने कहा, "गुरुजी, काम यह अच्छा नही हो रहा है। इसका नतीजा वादमें समझोगे। लोगोने बडे घिनौने इशारे किये।

लडकी बन-ठनकर जकशन नौकरी करने क्या जायेगी ? फिर तो वह जो जीमें आयेगा वही करेगी।"

देवू इसे नही मानता यह बात नही। जकशन विद्यालयकी ही एक शिक्षिका बडी बदनामी कमाकर गयी। सदर अस्पतालकी एक डॉक्टरनी और एक मुख्तार साहबकी कलक कहानी जिलेमें किसे मालूम नही ! लेकिन किसीके यहा नौकरानी बननेमें भी तो वैसे कलककी सम्भावनासे छुटकारा नही है ! जकशनकी मिलम भी तो बहुतेरी औरतें काम करने जाती है। वहाँ भी क्या वे बेदाग रहती है ? लेकिन लोग मानो इन बातोके आदी हो गये हैं। देवूके होठो पर कडवी हँसी फूट उठी थी। और फिर सोनापर उसे भरोसा है, उसे शिक्षाके लिए श्रद्धा है। उसे पक्का विश्वास है कि लिख-पढकर सोनाका जीवन और भी उज्ज्वल होगा।

तिनकौडीसे भी उसने सोनाके सकल्पकी बात कही। उसने भी कहा, "उसकी कोई बात नही घटे। तुम वही कर दो। उसकी ओरसे म निश्चित हो सकू तो मुझे कोइ चिता ही न रहे। मुझे कालापानी हो, चाहे फाँसी म हँसते हँसते झेल लूगा।'

देवू चुप हो गया। सोनाके प्रसगमें तिनकौडीने जैसे ही अपने अपराधकी बात उठायी उसने मनमें अशाति महसूस की।

तिनकौडीने निश्छल मनसे सब खोलकर कहा। कहा 'यह मेरे नसीबका फेर ही है भया। सच म रामा वगरहको इस पापके लिए गालिया देता रहा उन्हें मारा-पीटा भी, दो तीन महीने तक मुह देखना छोड दिया। जीवनम पराये पोखरेकी एकाध मछली छोडकर मने किसीका तिनका भी कभी नही लिया। और मेरी दुर्मति देखो ! मेरे नसीबने मानो गरदन पकडकर मुझे इस रास्तेपर ला रखा। वाढ तबाह कर गयी। म तुमसे क्या बताऊँ देवू पहले तो काँसा-पीतल बेचा उसके बाद चारो ओर अधेरा ! सोचा, तुम्हारी सहायता समितिकी शरण लू। मगर शर्म आयी। बीज धान लाया, उसका भी आधा सा गया। ऐसेमें एक दिन रामा आया। बोला, 'मण्डल भया अब तुम हमें कुछ नही कह पाओगे। हम लोग तुम्हारी समितिकी भीखपर अब नही जी सकते।

हम ल्ठैत हं, सदाके डाकू हं—सदा जोर-जुल्मका खाया हं। आज अब भीख नहीं ले सकते। भीखके अन्नकी रसोई गलेमें नहीं उतरती। हमारे नसीबमें जो होना होगा, होगा तुम हमारी ओरसे आखें बन्द कर लो। अपना उपाय हम आप कर लेंगे। मैंने कहा, 'जब मैं भीख ले सकता हूँ, तो तुम लोग क्यों नहीं ले सकोगे?' इसपर रामाने कहा 'हम तुमको भी भीखका भात नहीं खाने देंगे। तुम मण्डल हो तुमने, तुम्हारे बाप दादेने सदा अपना सिर ऊँचा रखा है—इसको बिलाया है—भीख लेनेमें तुम्हें शरम नहीं आती? बल्कि हम यह करें कि जिसके ज्यादा है उससे छीन लें—चलो।' मैने फिर भी कहा—'पाप है यह। ऐसा पाप नहीं करना चाहिए।' तब रामा बोला—'हम सब काली मयाका हुकुम लेकर जाते हं। पाप होता यह तो मया हुकुम क्यों देती? खैर! तुम काली मयाके माथेपर फूल चढ़ाओ। अगर वह फूल गिर पड़े तो समझना कि मयाकी आज्ञा है। और फूल न गिरे तो तुम मत जाना। उस रात मसानमें कालीपूजा हुई। मैने माथेपर फूल चढ़ाया और फूल गिर पड़ा।''

एक लम्बा निःश्वास छोड़कर तिनकौड़ी चुप हो गया। फिर हंसकर बोला 'मेरे नसीबमें यही था भया। मैं भी क्या करूँ? तुमने वकील रखा—ठीक ही किया। मगर तुम इसमें मत पड़ो। पुलिस तुम्हें झमेलेमें डालेगी। तुम बल्कि सोना बिटियाका कोई इन्तजाम कर दो अच्छा-सा। मैं निश्चिन्त हो जाऊँगा। मुझे वचन दो कि उसके लिए व्यवस्था कर दोगे?'

देबूका समर्थन सिर्फ जगन डॉक्टरने किया। डाक्टर दोष-गुणमें सच ही अच्छा आदमी है! जो उसे जँच जाता है, उसका वह निश्छल भावसे समर्थन करता है। और जो उसे बुरा लगता है उसे रोक पाये चाहे नहीं चीखकर आसमानको फाड़ते हुए वह दगा—'नहीं—नहीं। यह नहीं हो सकता।

अनिरुद्धने भी समर्थन किया।

कोई डेढ़ महीना हो गया अनिरुद्ध अभी यहीं है। नौकरीकी बात कहनेसे कहता, 'अरे, सुन! नौकरीकी क्या फिक्र! हथौड़ी पीटूंगा, पैसे कमाऊंगा। पग चुक जायेंगे तो चला जाऊँगा। परवाह क्या है मुझे! न बाल-बच्चे हैं, न घर गिरस्ती। एक ही बात यह साला सूटकेस है। हाथमें इसे उठाकर चल दूंगा!

उसने दुर्गाके यहाँ अड्डा गाड़ दिया है। ठीक दुर्गाके यहाँ नहीं पातूके यहाँ। वहीं उसका डेरा रहता है। देबू समझता है अनिरुद्ध दुर्गाको चाहता है। मगर दुर्गा अजीब बदल गयी है। वह उसको छाँह भी नहीं छूती। देबूके यहाँ काम करती है, खाती है। रातको जाकर अन्दरसे किवाड़ बन्द करके सो

रहती है। शुरूमें दुर्गाको लेकर देवूकी जो बदनामी फैली थी दुर्गाके ऐसे आचरणसे वह अपने-आप गायब हो गयी, जैसे सुबहके आकाशमें असमयके मेघकी गरज हो जाती है। तिसपर बाढ़के बाद देवूने जब सहायता-समिति कायम की देश-देशसे उसके नाम रुपये आने लगे—पाँच-गाँवके लड़कोंकी टोली उसके साथ आ जुटी—तिनकौड़ीके बेटे गौरसे लेकर जंक्शनके लड़कों तकने भीख मांगकर देवूका भण्डार भर दिया और देवूने भी उन सबकी मदद की—कुछ भीख देने-जैसी नहीं बल्कि ऐसी कि जैसे कोई अपना आदमी। मुसीबतमें खोज-खबर रखना देखे तो लोगोंने मन ही मन उसे आदरसे अपनाया। यह खूब भी महसूस थी कि उसके साथ अन्याय हुआ है। सामाजिक तौरपर देवू अभी तक अजाति ही बना हुआ है। पाँच गाँवोंके मण्डलोंकी पंचायतमें श्रीहरिने जो घोषणा की उसका किसीने जाहिरा विरोध भी नहीं किया। लेकिन यों मिलने जुलने चलने फिरनेमें देवूसे सबकी घनिष्ठता बनी हुई है बल्कि यह घनिष्ठता दिन दिन और गाढ़ी ही होती जा रही है। चण्डीमण्डपसे श्रीहरि सभा देखा करता। दो चार जनोंसे उसने कहा भी—"तुम जो देवूके यहाँ इतना आते जाते हो, पता है, वह समाजसे अलग कर दिया गया है।"

एक दिन श्रीहरिने रामनारायणसे पूछा था। वह श्रीहरिका तावेदार है। कमसे कम श्रीहरि ऐसा ही सोचता है। वह यूनियन बोर्डके प्रायमरी स्कूलका शिक्षक [illegible]। रामनारायण श्रीहरिकी खातिर भी करता है। लेकिन इस सम्बन्धमें उसने बड़ी नम्रताके साथ कहा — जी हाँ जाता आता हूँ। भाई-बन्द है। फिर इस दुर्दिनमें सहायता समितिमें मदद भी देनी पड़ी है। दस पाँच गाँवके लोग आते जाते हैं। मैं भी जाता हूँ बैठता हूँ बातें भी करता हूँ। समाजसे निकाला है पंचायतने लेकिन दस गाँवके लोग यदि उसे न मानें तो अकेले मुझे कहनेसे क्या लाभ?

श्रीहरि इसपर रुष्ट हो गया था। रुष्ट तो दस गाँवके लोगोंपर भी हुआ मगर वह रंजिश सबसे पहले रामनारायणपर ही पड़ी। यूनियन बोर्डका मेम्बर होनेके नाते दूसरे सदस्योंपर प्रभाव डालकर रामनारायणको नोटिस दिलवाया—तुम्हारी अयोग्यताके लिए तुम्हें एक महीनेका नोटिस दिया जाता है। उस नोटिसके जवाबमें देवूने बहुत-बहुत लोगोंकी सही बनवाकर एक दरख्वास्त जिला विद्यालय निरीक्षक तथा सर्किल अफसरके मारफत महकूमा-मण्डल पदाधिकारीके पास भेजी। रामनारायणकी योग्यताका सबूत देकर उस नोटिसको रद्द करा दिया।

श्रीहरिने तारा हज्जामसे भी कहा था कि तू देवूकी हजामत क्यों बनाता है? तारा बड़ा ही धूर्त है। यह बानू वह खूब जानता है। बोला 'जी, घोषक

बदले हजामत बनानेवाला पुराना नियम तो उठ गया है। या समझिए कि जो समाजसे पतित नहीं भी करार दिये गये हैं, उनमें-से भी बहुतेरे ऐसे है, जो खुद ही उस्तरेसे हजामत बनाया करते है, जबकि जाकर बनवा लिया करते है। पसे लेकर मैं भी ऐसे कितनोंकी हजामत बनाता हूँ। गुरुजी पसे देते है, मैं बना देता हूँ। आखिर मेरा भी तो पेट चलना चाहिए। आप तो हुजूर बहुत बडे आदमी है जिन्होने उस्तरा खरीदा है या जो दूसरे नाईसे हजामत बनवाते है, आप उन्हें मना तो कीजिए। फिर मैं हजार बार माथा नवाकर यह हुक्म मान लूगा—गुरुजीकी हजामत नही बनाऊँगा।"

श्रीहरिने इसपर ज्यादा शोर-गुल नही मचाया लेकिन साथ ही वह चुप भी नही बैठा। तिनकौडीके मामलेमें पुलिसकी भरसक मदद कर रहा है। तिनकौडी डकतीमें पकडा गया, इसकी उसे बडी खुशी है। यह खुशी वह छिपाता भी नही।

बात जब सच है, तो पुलिसकी मदद करनेके लिए देबूने श्रीहरिको दोष नही दिया। लेकिन चिन्ताके मारे अपने कारिन्दा गुमाश्ता दासजीसे मन्दसे वह झूठा गवाह खडा कर रहा था। दासने यह तो पुलिससे कहा है कि घटनाकी रात उसने लाठी लिये तिनकौडी और रामाको बाधपर से लौटते हुए अपनी आखो देखा है। उस दिन डेढ बजे रातकी गाडीसे उतरकर आते वक्त भटककर देखुडिया के पास जा निकला था।

यह सोचकर देबूका मन श्रीहरिके प्रति जहरीला हो उठा। घृणा भी होने लगी कि वह तिनकौडीके फसने जानेसे खुश है। देबू यह भी समझता था कि तिनकौडीको सजा हो जायेगी तो श्रीहरि एक बार सानाके पीछे पडेगा। इसका उसे आभास भी मिला था। श्रीहरिने तो कहा भी है कि—एक विधवा लडकी जूता पहनकर जवानके स्कूलमें मास्टरी करने जायेगी! देखता हू मैं, कैसे जाती है वह!'

शामको अपने ओसारेपर बैठकर देबू यही सब सोच रहा था। आज उसकी बैठकमें कोई नही आया। दूरपर ढाक बज रहा था। जगद्धात्रीकी प्रतिमाका विसर्जन था आज। कंकनाके बाबुओंके यहाँ तीन प्रतिमाएँ बैठती हैं। एक होड सी रहती है। मानो मिलानेके मामलेमें कौन कितना आगे रह सकता है और किसके यहाँ नाक मछली कितनी बनी पूजाके बाद भी कई दिनों तक इसकी चर्चा चलती रहती है। प्रतिमा विसर्जनके समय आतिशबाजीकी होड। 'सभी

लोग आतिशबाजी देखनेके लिए चल दिये थे। जगन डॉक्टर हरेन घोषाल तक पातूकी टोलीके साथ चल दिये थे। दुर्गा भी गयी थी। श्रीहरि साझसे पहले ही जा चुका था। उसकी टप्परवाली धानकी गाडी देबूके दरवाजेके सामने से ही गयी। घण्टियोंकी मालावाले तेज बल झूमते हुए निकल गये। गाडीके बगलसे लाल मुरैठा बाधे कालू शेख और चौकीदारकी नीली वर्दीमें भूपाल बागदी भी गया। श्रीहरि अब जमींदारकी कोटिका आदमी है। उसका खास प्योता था।

गाँवमें वही लोग रह गये थे, जो लाचार बूढे है या रोगी या शोकग्रस्त है। शोकग्रस्त तो इलाकेके प्राय सभी हैं। बाढके बाद मलेरियाने आकर हर घरमें कुछ न-कुछ गजब जरूर ढाया है। जिनपर अभी-अभी गाज गिरी थी, उन्हें छोड सभी गये। राशनी-बाजा आतिशबाजी देखनेकी खुशीमें सब देबूकी नजरके सामने से ही गये। प्यासा आदमी छातीके बल घुडकर जसे मरीचिकाके पीछे दौडता है, एक पलके झूठे आनदके लिए ये लोग वसे ही दौड। अभी-अभी मुँहपर कपडा ढाक एक आदमी गया। देबूने उसे भी पहचाना। उस टोलेका हरिहर था। परसा ही उसका एक लडका गुजर गया। देबूने उसाँस ली। उनके साथ अपनी याद आयी—बिलूकी मुनकी। बिलू और मुन्नेको वही कितना याद करता है? उसके होठोपर बाकी हसीकी एक लकीर खिच आयी। कितनी देर? शामको भी राज नहीं। लखा लगातेस महीनेमें एक बार भा नही शायद! काम और काम! दूसराका बोझा माथेपर उठाकर भूत बेगार खटता है। यह बोझ कब उतरेगा, पता नही!

लेकिन अब उतर जायेगा, लगता है।

सहायता-समितिके रुपये और गल्ले चुक गय। सहायता समितिकी जरूरत भी कम हो आयी। क्वार बीता, कातिक भी खत्म हो चला। थोडी बहुत फसल इसी बीच गृहस्थाके घर आ भी गयी। 'भादा धान भी कुछ-कुछ कटी। अग हनके आरम्भमें ही आयेगा नवीना धान फिर 'आमन। इधरकी बैहारोंमे पचग्रामकी बहार ही प्रधान है। उस बैहारमें अवश्य इस बार फसल नही है। लेकिन हर ग्रामके बगल बगल कुछ खेत हैं जहाँसे कुछ कुछ फसल आयेगी। फिलहाल अभावमें कमी होगी कुछ। दो महीनेके अरसेमें मलेरिया भी बहुत-कुछ सह गया। महामारीका तेज घट गया उसकी वह भयकरता नही रही। बच्चे बहुत मर। वयस्क भी कम नही मरे। गाय भसका पूजी लगभग आधी उजड गयी। जो मवेशी बचे थ, लोग उन्हीको लेकर खेतीमें जुत गय थे। एक इसका दो एक उसका लेकर लोग जोताईमें जुट गये।

देवू देखता और सोचता—आदमी भी अजीब है! गजबकी है इनकी सहनेकी शक्ति! अनोखी है इनकी जीनेकी, घर गिरस्ती करनेकी आकांक्षा! इतनी बड़ी मुसीबत आयी—बाढ़ राक्षसीकी लपलपाती जीभके चाटनेका चिह्न अंग-अंगमें पड़ा है, यह अभाव, यह रोग महामारीकी तबाही, खेतोंमें बालू गड्ढे—लोगोंने पल भरमें ही सब पोंछ डाला! पंचग्रामकी बहारको वह कल ही देख आया है। सोना वगैरहकी खोज-खबर लेनेके लिए देखुड़िया गया था। पंचग्रामकी बहारके बीचसे जो पगडण्डी गयी है उसके दोनों तरफ कुछ-कुछ खेती हुई है। अब चना, मसूर, गेहूँ जौ, सरसोंके बीज जुटाना ही सहायता-समितिकी अंतिम ज़िम्मेवारी रह गयी है। यह काम हो जानेपर वह समितिको खत्म कर देगा। वह बोझा सिरसे उतर जायेगा।

एक बोझा और था उसके सिरपर—तिनकौड़ीकी गिरस्ती। इस नयी ज़िम्मेदारीके कारण ही उसकी चिंताओंकी सीमा नहीं थी। तिनकौड़ीके मुकदमेके फैसलेमें अब देर नहीं है। महीने भरके अन्दर दौरा सुपुर्द और दौरेमें उसे सजा होगी ही। उसके बाद सोना और उसकी माँकी समस्या खड़ी होगी। यह ज़िम्मेवारी भी बहुत बड़ी है। श्रीहरिकी धमकी उसने सुनी है। किसीकी धमकीकी वह अब परवाह नहीं करता। वैसी धमकीसे उसके मनकी आग जल उठती है। उस दिन तारा हजामसे जो सुना, तो उसके जीमें आया, तिनकौड़ीको सजा होगी तो सोना और उसकी माँको वह अपने घर लाकर रखेगा। सोना जिस कदर मेहनत कर रही है और जैसी पैनी बुद्धि है उसकी, उससे लगता है कि वह मिडिल ज़रूर पास कर लेगी। कोशिश-पैरवी करके जंक्शनके स्कूलमें उसे नौकरी दिला देगा और ऐसा करेगा कि सोना मैट्रिक पास कर सके। श्रीहरिने कहा है—'विधवा लड़की जूता पहनकर अकड़कर पढ़ाने जाया करेगी, यह उसे बरदाश्त नहीं।' मगर वह सोनाको पढ़ी-लिखी लड़की-जैसी साज-पोशाक पहनायेगा। सादी कोरकी धोतीके बजाय रंगीन साड़ी पहनायेगा। विधवा! सोना विधवा किस बातकी? पाँच सालकी उम्रमें शादी हुई, सात सालकी उम्रमें विधवा हो गयी। ऐसी विधवाओंके ब्याहके लिए विद्यासागर महाशय जी-तोड़ कोशिश कर रहे हैं। कानून तक पास हो गया है। उस विद्यासागरकी उक्ति याद आयी—'हाय भारतके लोग! और कबतक तुम लोग मोहनिद्रा जड़ प्रमोद सेजपर सोये रहोगे? हाय, अबलाओ, नहीं कह सकता, तुम लोग किस पापसे भारतवर्षमें जन्म लेती हो।' देवू सोनाका नये सिरसे ब्याह करायेगा और

उन्हीं लोगोंको लेकर अपनी गिरस्ती बसायेगा।

ये बातें उसके उत्तेजित मनकी हैं। शान्त और स्वाभाविक अवस्थामें सोना वगैरहकी चिंता ही उसकी सबसे बड़ी चिंता हो गयी है। तय नहीं कर पा रहा है कि इन दो अभिभावक विहीन स्त्रियोंके लिए वह क्या प्रबन्ध करे। गौर रहा होता, तो वह निश्चिन्त था। दुःख और लाजसे वह कहां चला गया पता नहीं। कोई सुराग भी नहीं मिल सका। अखबारमें विज्ञापन भी दिया गया। उससे भी कोई नतीजा नहीं निकला। अचानक एक बात सूझ आयी उसे।

फट फुट आवाज। आतिशबाजी हो रही थी। वह, आसमानमें लाल नील रंगकी फुलझड़ी! आसमानतारा!

उपाय मिल गया! सहायता समितिका बोझा उतर जाये। अपनी जमीन अपना घर सोना और उसकी मांको देकर किसी रात वह चुपचाप चल देगा। बल्कि जंक्शनमें ही शिक्षिकाओंके आस-पास उन दोनोंके रहनेका इंतजाम कर देगा। सोना स्कूलमें नौकरी करेगी खेतीका भार सतीश बाउरीपर रहेगा—फसल वह सोनाको पहुंचा दिया करेगा। और फिर गौर क्या कभी लौटेगा ही नहीं? वह लौटेगा तो सारा भार वही लेगा।

इसके सिवाय छुटकारेका और कोई रास्ता नहीं है। यही करेगा, हां। दुनियादारीके बंधनसे उसे छुटकारा लेना ही होगा। प्राण हांफ उठे हैं। अब नहीं बनता। दूसरोंका बोझा उठाये भूतकी यह बेगारी अब नहीं चल सकेगी। अपने बीवी बच्चेको याद तक करनेकी फुरसत नहीं मिलती—शोमास्टर विरोध करके दिन काटना लिखा कल्कको गहना बनाना—यह सब अब बरदाश्त नहीं होता! अब वह चैनकी सांस लेकर गहरी शान्तिम, निरुद्वेग आनन्दमें समय बिताना चाहता है। अपने विचित्रताओंसे भरे वेदनातुर अतीतको छोड़कर वह इस गांवसे निकल पड़ेगा! जी भरकर अपनी बिलू अपने मुन्नेको याद करेगा, भगवानको पुकारेगा—मुन्ने और बिलूकी चिताओंको बंधवा देगा पक्के से और तीर्थाटन करेगा। हां श्मशानमें छोटी-सी चलिया बनवा देगा। आंधी-पानीमें, गरमीके दिनों धूपमें श्मशान-बन्धुओंका बड़ा कष्ट होता है। संगमरमरके एक पटियेमें खुदवा देगा—बिलू और मुन्नेकी यादमें।'

बिलू और मुन्ना! आज इन एकान्त क्षणोंमें वे मानो जी उठे हैं जाग उठे हैं। सामनेके उस हरसिंगार-पेड़की फांकोंमें चांदनी उतरी है—लगता है जैसे बिलू ही खड़ी है। पद्म-जैसी इशारा कर रही है। बिलू! मुन्ना!

देबू चौंक उठा। नामको ही अनमना हुआ था वह। हठात उसने देखा, हरसिंगारके नीचेसे कौन तो बाहर निकल आया। धप धप धुले कपड़ेमें कोई

स्त्री। बिलू! हा, वही तो। गोदमें बच्चा। मुनेको गोदमें लिये वह ओसारेपर आयी। देवूके सर्वांगमें एक सिहरन-सी उठी। नस-नसके खूनमें आगकी चिनगियाँ दौड़ी। वह चौकीपर बठा था। उछलकर अधे आवेगसे उसने बिलूको अपनी छातीमें खीच लिया—दबाकर चुम्बनोंसे उसे भर दिया। जी उठी, बिलू उसकी जी उठी॥

"अरे रे, जमाई! छोडो छोडो। पागल हो गये क्या?'

देवू चौंका। आतस्वरमें पूछा "कौन?'

"म हूँ। दुर्गा! तुम शायद '

"ऐं? दुर्गा?'—उसे छोड़कर देवू बुत बन गया।

दुर्गाने कहा घोपालका बच्चा मेलेमें बिछुड गया था। रो रहा था। उसीको गोदीमें ले आयी। मौत मेरी—दे आती हूँ।"

देवूने जवाब नही दिया। ओसारेपर ऐसा विवश बठा रहा जसे लकवा मार गया हो। दुर्गा चली गयी।

लौटकर दुर्गाने देखा देवू चौकीपर औंधा पड़ा ह।

वह कुछ देर चुप चाप खडी रही। चेहरेपर एक अजीब हँसी खेल गयी। धीमेसे पुकारा, "जमाई गुरुजी!'

देवू उठ बठा—'कौन दुर्गा?

'हाँ!"

"मुझे माफ़ करना दुर्गा मनमें कुछ ख़याल मत करना।

"क्यों, ख़याल क्या करने लगी मैं? —दुर्गा खिलखिलाकर हँसी! लोट पोट हो गयी।

'मुझे ऐसा लगा दुर्गा कि हरसिंगार तलेसे मेरी बिलू मुनेको गोदमें लिये चली आ रही ह। मने लपककर उसे छातीसे लगा लिया। अपनेको जब्त नही कर सका।"

दुर्गाने गहरा नि श्वास छोडा। बोली नही। चुपचाप ही उसने कमरेकी जजीर खोली। लालटेन लाकर चौकीपर रखते हुए बोली, 'अँधेरेम जाने क्या-क्या ख़याल आता ह। रोशनी लेकर बठो तो—।' कहते-कहते ही उसने लालटेनकी बत्ती और बढ़ा दी। तेज रोशनीमें देवूकी शक्ल देखकर वह अवाक् हो गयी। उसके बाद बोली "इसके लिए तुम रो रहे हो जमाई गुरुजी!

देवूकी आँखोंसे बहती हुई आसूकी धारा रोशनीमें चमक रही थी। मुसकराकर देवूने अपनी आँखें पोछ ली।

दुर्गाने कहा, 'तुमने मुझे छू लिया, इसी लिए रो रहे हो?'

देबूने कहा, "आज पहलेसे ही आँसू आ रहा है दुर्गा! बिलू और मुन्ने की याद आ गयी है। अचानक गोदमें बच्चा लिये तू आ गयी—मुझसे कभी तो गल्ती हो गयी! " देबूकी आँखोंसे फिर आँसू बहने लगा।

कुछ देर चुप रहकर दुर्गाने कहा, 'तुम्हारे-जैसे आदमीको क्या रोना चाहिए जमाई-गुरुजी ?"

हँसकर देबूने कहा 'रोना ही तो चाहिए। उसे क्या भूल सकता हूँ ?'

दुर्गाने कहा, वह नहीं कह रही मैं। कहती हूँ कि तुम्हारे-जैसा आदमी अगर रोयेगा तो गरीब दुखियोंके आँसू कौन पोछेगा ?

एक उसाँस लेकर देबू सामनेकी तरफ ताकने लगा।

उधर नदी किनारेका बाजा गाजा थम चुका था। दूरपर लोगोंकी आहट सुनाई दे रही थी। वह आहट बढ़ती आ रही थी।

दुर्गा बोली चूल्हेमें आँच देती हूँ। काफी रात हो गयी, उठो।"

न, आज अब कुछ नहीं खाऊँगा।

छि उठो। तुम्हारे मुँहसे ऐसी बात नहीं सोहती। नहीं उठोगे तो मैं तुम्हारे पैरों सिर पीटूँगी।'

खैर! चलो।'

—कि पास ही कहीं फिर ढोल बज उठा। हैरतमें आकर देबूने कहा 'यह फिर क्या है ?'

हँसकर दुर्गा बोली लुहार है, और क्या ?'

'अनिरुद्ध ?'

"हाँ। मसान देखने गया था। खूब हुल्लड़ मचाया है आज उसने! पक्की शराब ले आया था। टोलीवालोंको पिलाया। आज मंगल घण्टे गायी जायगी। लगता है वही शुरू हो गया।'

देबू हँसा। अनिरुद्धने इस बार आकर उस टोलीको खूब जमा लिया है। जमाया ही नहीं है बहुतोंको बहुत मदद भी की है।

दुर्गाने कहा सुना है भैया उसीके साथ काम करनेके लिए कलकत्ता जा रहा है।

यही सुना है एक दिन। अभी भाई ही बता रहा था।

और भी बहुतोंने पकड़ा है लुहारको। उसने कहा, भई सबको लेकर

आखिर मैं कहाँ जाऊँगा ? पालू मेरा पुराना साथी है इसे ले जाऊँगा। तुम लोग जक्शनकी मिलमें काम करो।"

"हाँ ?"

"हाँ। आज ही शामको तो—भमान देखने जानेसे पहले, खूब कल्-कल् कर रहे थे सब। सतीश भैया कह रहा था—अरे मिलमें क्या मजूरी करेगा ! दूसरे सब कह रहे थे—जरूर करेंगे, जरूर। तुम्हारले ठीक ही बताया है। पूछो मत। जो कूद-फाँद हुई ! नशेमें थे न सब !"

देवू चुप रहा। दुर्गाकी बातामें चिन्ताका विषय मिल गया उसे। मिलमें मजूरी करने जायेंगे ! जक्शनमें मिल बहुत दिनसे बना है। लेकिन आज तक गरीब-गुरबे या छोटी जातिका कोई वहाँ मजूरी करने नहीं गया। सन्ताल और दूसरी जगहके लोगों ही वहाँ खटते आये हैं। वहाँके मजूरोंकी हालत भी देवू को मालूम है। पैसे जरूर मिलते हैं, कामका वक्त भी बँधा-बँधाया होता है मगर वहाँ जो रवैया है कि उसमें गृहस्थोंका गृहधर्म बचना मुश्किल है। गृह भी नहीं, धर्म भी नहीं बचता। मिलवालोंने लाख कोशिश की हजार लोभ दिखाया पर गृहस्थोंमें-से किसीने उस रास्तेपर कदम नहीं बढ़ाया। काल-जैसी बाढ़में लोगोंका घर गया, अनिरुद्ध अपनी फूँकसे धरम भी उड़ा देगा क्या ?

दुर्गा बोली, "लो, फिर क्या सोचने लगे ? रसोई चढ़ाओ।'

देवू हाँड़ी लानेके लिए चला। दुर्गा बोली, 'ठहरो, ठहरो।'

"क्या हुआ ?"

"कपड़ा बदल लो।"

"क्यों ?"

लजायी-सी दुर्गा बोली, "हमको छू जो दिया है।"

देवूने बिना कुछ कहे चूल्हेपर हाँडी चढ़ा दी।

बाउरी टोलेमें शोर-गुल हो रहा था। नशेमें सब माते हुए हैं शायद। अनिरुद्धने मानो एक आँधी-सी उठा दी है। ढोल बज रहा है, गाना हो रहा है। गुलमाल रात। गाना साफ सुनाई दे रहा था। देवू डूब-सा गया।

दुर्गा बोल उठी— चूल्हेकी आग जो बुझ गयी ! और लकड़ी लगाओ।"

देवूने चूल्हेकी तरफ़ देखकर कहा 'दे दे न बाबा, तू ही डाल दे।'

एक पल बाद दुर्गाने कहा, न, तुम्ही दो।'

उधर गीत चल रहा था—

> भादों के महीने घिरा घोर है बादर।
> नद-नदी एकाकार, आठो आर जल।

देवूका मन कविकी तारीफमें मुखर हो उठा। 'आठों ओर जल'—केवल ऊर्ध्व और अध को छोड़ सभी तरफ पानी।

दुर्गा बोली, "इस बार-जैसी बाढ़ होती तो दईमारी बचती नहीं।"

देवूके मनमें औचक खिंची एक लकीर-सी चिन्ता जग उठी। फुल्लराका गीत जो छोकरा गा रहा था, उसकी आवाज ठीक लड़की-जैसी थी, साथ ही जोरदार भी थी। लग रहा था, फुल्लरा ही उस टोलेमें बैठी गा रही है। उस टोलेका हर घर तो फुल्लराका ही घर है। कोई फर्क नहीं। ताड़के पत्तेकी छौनी दीवार भी टूटी, रेंडकी खूँटी नहीं है केवल—खूँटी बांसकी है। दो एक के यहाँ बरगदकी डालकी भी खूँटी है।

आखिर गाना खत्म हुआ। देवूको खयाल आया—भात उतार लेना चाहिए। कहा, 'दुर्गा, भात हो गया शायद। उतार लूँ, क्या खयाल है?'

किसीने उत्तर नहीं दिया।

अचरजसे देवूने पुकारा, 'दुर्गा!'

किसीने जवाब न दिया। चली गयी? कब गयी? अभी तो थी!

दुर्गा!'

सच ही दुर्गा जाने कब चली गयी थी।

पचीस

कातिक बीत चला था। सर्दीका समय आ गया। लेकिन इस बार इसी समय अच्छी सर्दी पड़ गयी। सबरे कपनी-सी लगती है। भोरमें अब सूती चादरसे सर्दी नहीं जाती। कातिकमें लोग रजाई नहीं ओढ़ते हैं। क्योंकि कातिक महीनेमें रजाई ओढ़नेसे मरनेपर कुत्ता होना पड़ता है। फिर भी लोगोंने क्या रजाई निकाल ली। बाढ़में माटी इस कदर भीग गयी थी कि अभीतक सूख नहीं पायी। घनी छाँहवाले आम-कटहलके बगीचेकी माटीमें सील थी। बाउरी टोलेके लोगोंने घरमें डालमें मचान बाँध लिया था। सतीश परोंपर एक विलायती कम्बल डाल लेता है रजाई अभी नहीं ओढ़ता है।

पातूने कहा "कुत्ता बननेका गम नहीं है सतीश दादा। लेकिन हाँ, बड़े बड़े रोएँवाला विलायती कुत्ता बनें। मजेमें जजीर डालकर बड़े लोग पालेंगे।

दूध, भात, मास खानेको देंगे।"

अनिरुद्धने कहा, "अबे साले, राएँमें जूँ होगा, रोआ उठ जानेसे मरेगा। भगा देगा।"

"तो जिसे पाऊँगा, उसीको काट खाऊँगा।'

"तो डण्डाकी मारसे या गोली मारकर मार देगा।"

"बस, फिर तो कुत्ता जनमसे छुटकारा पा जाऊँगा! और कहीं देखो कुत्ता होऊँ तो तुम पाल लेना सतीश दादा।"

अनिरुद्धके आनेके बादसे ही पानूकी बोल चालका ढग ऐसा हो गया है। बग़ैर चिकोटी काटे बोल ही नहीं सकता। पानूकी बातसे सतीशको थोड़ी-बहुत चोट लगी।

कल रात बात कुछ और पक्की हो गयी। टोलेके तमाम औरत-मर्दोंने शराब पी और खूब हो-हल्ला किया। और अन्तमें मिलमें काम करनेकी बात एक प्रकारसे तय कर ली। सतीशने सबेरे विलायती कम्बल ओढ़कर हल जोतनेकी तयारी की। उसके टोलेमें सब मिलाकर कुल पाच हल थे। पहले अवश्य और ज्यादा थे। इस पानूके ही एक था। मवेशियोंकी यह जो महामारी हुई, उसमें पाच हलोंके दस बैलमें-से चार ही बच रहे। सतीशके ही दो रहे बाक़ी दो आदमियोंके एक-एक। उन दोनोंने भी रबी बोनेकी सोची थी। उनमें-से एकके यहाँ जाकर सतीशने ताक़ीद की—'चल, चक्का उग गया।"

अटलने कहा, 'हाय राम! लो, जरा मजेसे तम्बाकू पी लो। मैं कालाचांद-को बुला लूँ और बैल ले आऊँ।"

सतीश तम्बाकू पीनेके लिए बैठ गया।

अटल अकेला ही लौटा। बोला, सतीश दादा, तुम जाओ। आज मेरा जाना नहीं हो सका।'

'नही हो सका?'

अटलने कहा, 'साला कालाचांद नहीं आयेगा।"

नहीं जायेगा?'

"नहीं? जायेगा भी नहीं बैल भी नहीं देगा। बोला, 'मुझे खेती-बारी नहीं करनी है। अपना बैल मैं बेंच दूँगा। बने तो खरीद लो। सालेकी बात भी कैसा होती! कहा, पैसे निकालो, खोआ खाओ। मैं क्या तुम्हारा पराया हूँ?"

'हाँ! सालेपर भूत सवार है।'

"भूत ही सवार है! नहीं तो पुरखोंका ऐसा काम-काज, कुल धर्म कोई क्यों छोड़े? आ, ऐसे सुभरा, ऐसा पवित्र भी काम है कोई? सतो, गा-सवा ये

पवित्र काम है। काम करते जाओ—मालिकके घरका धान वेतन, कपडा—इसीसे गुजारा हो जायेगा! पानी-काँदामें कही मजदूरी करके जान नही देनी होगी। पहले-जसा सुख अब जरूर नही ह। पहले तो बीमार पडनेपर खेतिहर इलाज तक कराता था। और फिर खेतिहरसे लकडी-काठी, फूस-वूस तो मिलता ही ह। तीज-त्योहारमें कुछ मिलवा मिलाता ह ही। ऐसा आराम छोडकर लोग मिलमें खटनेके लिए कूद रहे हं। यह लुहार कुछ रुपये ले आया और पिला पिलाकर उसने सबका दिमाग खराब कर दिया। उसका भी कोई क़सूर नही ह। उसने कभी नही कहा। यह सनक पातूने ही चढायी है पातूने खुद ही कहा है कि मुझे ले चलो अनिरुद्ध। मैं तुम्हारे साथ जाऊँगा।'

अनिरुद्ध पातूको साथ ले जानेके लिए राजी हुआ था। पातू उसका बहुत दिनोका मनका आदमी ह। पातूके जब हल था, तो वही अनिरुद्धकी खेती करता था। और, वह दुर्गाका भाई ह।

अनिरुद्ध उसे ले जानेको तैयार हुआ कि सभी आकर नाचने लगे 'मुझे त चलिए। मुझे! मुझे!"

अनिरुद्धका मजा आया। उसने कहा, अरे भाई, सबको म कहा ले जाऊँ तुम लोग यही मिलमें जाकर काम करो। अनिरुद्धका क्या? उस न घर है, न घरनी न जमीन न कुछ। गाव और माँ एकसे होते हैं और उसने उस गाँवको ही छोड दिया है! मिलमें काम करनेकी राय दे दी।'

मिलमे मजदूरी! यह सोचते हुए भी सतीशका बदन सिहर उठता! गरीब छोटी क़ौमके ह तो क्या, आखिर गृहस्थ तो है। गृहस्थ भला मिलमें मजूरी करता ह।

सतीशने अटलसे कहा 'गोली मारो कालाचाँदको। तू मेरे साथ चल। तीन बलसे हम दोनो जितना कर सकेंगे करेंगे। चल।'

अटल चुप बठा था। वह भी पातूकी ही तरह कुछ सोच रहा था। उसन न तो जवाब दिया न हिला ही।

सतीशने पूछा, 'क्या इरादा ह चलेगा?

सतीशन सिर झुकाकर कहा, बादमें बखरा किस ढगसे होगा?

बखरा? पाँच जने जसा कहेंगे होगा।'

नही भया इसे तुम पहले ही तय कर दो।

'ठीक ह। गुरुजीके यहाँसे होते चलें। गुरुजी जो कहेंगे, वही करूँगा। उनका कहा तो मानोगे न?

गुरुजीके दरवाजेपर खासी भीड-सी लगी थी। श्रीहरि घोष भी खड़ा था। भारी गलेसे बड़े रोबके साथ वही कह रहा था, "काम तुम ठीक नहीं कर रहे हो देवू।"

श्रीहरि पहले देवूको देवू चाचा कहता था। आज सिर्फ देवू कह रहा था। लिहाजा वह देवूपर सख्त नाराज हुआ है—सतीश और अटलको इसमें शुबहा नहीं रहा।

गुरुजीने हँसकर ही कहा, "यह खबर सबेरे तुम धमकाने आये हो श्रीहरि?"

श्रीहरि ऐसे जवाबके लिए तैयार नहीं था। कुछ क्षणोंके लिए वह ठक-सा रह गया। उसके बाद बोला, "तुम समझ नहीं रहे हो कि तुम गाँवका कितना बड़ा नुकसान कर रहे हो!"

गुरुजीने कहा, "मैं गाँवका नुकसान कर रहा हूँ?"

"नहीं कर रहे हो? गाँवके सब लोग मिलमें जा रहे हैं। तुम उन्हें उसका रहे हो।"

देवू बोला, "नहीं। मैंने नहीं उसकाया है।"

"क्या नहीं उसकाया? तुमने अनिरुद्धको रहने दिया है। वही कर रहा है।"

"वह इसी गाँवका है। मेरे बचपनका साथी है। दो दिनके लिए आया है, मेरे यहाँ है। जबतक उसके जीमें आयेगा, रहेगा। वह क्या करता या नहीं करता है, उसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।"

श्रीहरिने कहा, "मालूम है तुम्हें, वह छोटी जातिके लोगोंके साथ शराब पीता है, खाता है। और वैसे आदमीको तुमने घरमें जगह दी है।"

देवूने कहा, "मैं अतिथिका जाति विचार नहीं करता। उसका जूठन भी मैं नहीं खाता। और फिर" देवूने हँसकर कहा, "मैं भी तो जातिसे निकाला हुआ ही हूँ श्रीहरि!"

श्रीहरि आगे बोल नहीं सका। खड़ा भी न रहा वह। घरकी ओर चला गया।

श्रीहरिके पीछे-पीछे आनेवालोंमेंसे हरीश आगे आकर बोला, "सुनो भैया देवू, सुनो।"

देवूने कहा, "कहिए।"

"चलो, तुम्हारे ओसारेपर बैठें। नहीं, घरके अन्दर ही चलो।"

देवूने आदरसे ही कहा, "चलिए। वह तो सौभाग्य है मेरा।"

घरके अन्दर जाकर हरीशने कहा, "वह अजाति-वजातिवाली बात रहने दो। वह महज यो ही है। तुम्हीं कहो, कभी किसीने कहा भी है कि देबू गुरुजी के यहां नहीं जायेंगे, वह अजाति है? या कि तुम्हारे घर आया नहीं हैं? वह सब हम लोग ठीक-ठाक कर देंगे।"

देबू चुप रहा।

हरीशने कहा, "श्रीहरि तो मुझसे कह रहा था कि आप देबूसे पूछिए, वह अगर राजी हो तो मेरे सालेकी एक बेटी है। लड़की बड़ी है। उससे शादीकी बात करें। अजाति! वह सब बेकार बात है।"

देबू बोला "ब्याहकी बात छोड़िए हरीश चाचा। और क्या कहना है?"

हरीशने कहा, "इस कामसे, तुम आज आओ भया। यह काम न करो। गांवमें मजूरा नहीं मिलेगा हलवाहा नहीं मिलेगा। बड़ी तकलीफ होगी लोगों को। गोबरकी टोकरी लोगोंको खुद माथेपर उठाकर खेत ले जानी होगी। उन लोगोंको तुम मना करो।

'ठीक तो है। आप लोग सबको बुलाकर कहें।'

'नहीं भया! वे लोग तुम्हें देवता जैसा मानते हैं!"

देबूने कहा, "सुनिए चाचा, मैंने उन लोगोंसे कुछ भी नहीं कहा है। कहा है अनिरुद्धने। पहले यो ही उड़ती सी खबर सुनी थी। कल रात सब ठीकसे सुना। मैंने सारी रात इसपर सोचा है। हिसाब लगाकर देखा—गांवमें जितने गृहस्थ हैं, उनसे पांचगुने ज्यादा लोग उन लोगोंके टोलेमें हैं। बहरहाल गृहस्थों का हालत इतनी बिगड़ गयी है कि जन मजूर रखनेवाले गृहस्थोंको उंगलियोंपर गिना जा सकता है। ज्यादा लोग तो दूसरे गांवके गृहस्थोंके यहां काम करते हैं। बाढ़के बाद तो दूसरे गांववालोंने भी जन मजूरको हटा दिया है। ऐसी दशामें ये लोग खायेंगे क्या? इन्हें खिलायेगा कौन?'

हरीश देर तक चुप बैठा रहा। उसके जवाबके इन्तजारमें देबू भी चुप रहा। जवाब न मिला, तो बोला 'तम्बाकू पियेंगे? भर लाऊं?"

हरीशने गरदन हिलाकर ना कर दिया। फिर एक लम्बा निःश्वास छोड़कर कहा, अच्छा, तो मैं चलता हूँ।

दरवाजेपर पहुँचकर वह फिर बोला, 'इस गाँवका जो नुकसान तुमने किया देबू, वह किसीने कभी नहीं किया। सर्वनाश कर दिया तुमने।"

देबूने कहा, मैंने उनसे मिलमें काम करनेके बारेमें कतई नहीं कहा है। आप यकीन न करें, यह और बात है।'

'लेकिन मना भी तो नहीं किया।

बनियाते हुए वे रास्तेपर आये। इसी वक्त चण्डीमण्डपसे श्रीहरिका गला सुनाई पडा—"उनसे कह दे, जो लोग मिलमें काम करने जायेंगे, उन्हें मेरी चाकरान जमीनमें बसने नहीं दिया जायेगा। मिलमें खटना हो तो मेरे गावसे चले जायें।'

कि चण्डीमण्डपसे झट पट कालू शेख उतरा। वह हाथमें लाठी लिये मुट्ठी बाँधे उन्हींके सामनेसे निकल गया।

श्रीहरिके इस हुक्मकी घोषणासे देबूके होंठोपर हँसी आ गयी थी। यह फिजूलका हुक्म है। उसे मालूम है कि लोग इसे नहीं मानेंगे। सेटलमेण्ट इतना तो कर गया है। लोगोंके हाथमें वह परचा देकर निरे कमजोर और डरपोक आदमीको भी यह बता गया है कि इस जमीनपर तुम्हारा यह हक है इतना अख्तियार है। पहले गृहस्थ लोग बाउरी, डोम, मांचियोंको अपनी जगहमें बसाया करते थे। वे गृहस्थोंके इस कामको उनकी अपार दया मानते थे। और उन गृहस्थोंके सुख दुःखमें वे अपने एक पवित्र कर्त्तव्यकी तरह हाथ बँटाया करते थे। इन लोगोंको पुश्त दर पुश्त यह धारणा ही नहीं थी कि धरतीपर उनकी भी जमीन हो सकती है। लिहाजा, जो उन्हें बसनेके लिए एक टुकडी जगह देता था वही उनका राजा होता था। कोई पारिवारिक झगडा होता तो निवटारेके लिए उसी राजाके पास जाते। उसका फसला मानते, उसकी दी हुई सजा सिर झुकाकर स्वीकार कर लेते। उसकी बेगारी करते भेंट देते। कभी राजा अपनी जगहसे हट जानेको कहता तो उनके परो पड जाते, रोते गिडगिडाते। इसपर भी दयाकी भीख नहीं मिलती, तो बाल-बच्चोंके साथ किसी दूसरे ऐसे राजाकी शरण जाते। शिवकालीपुरमें ये लोग जमींदारकी खास जमीनपर बसे हुए थे। उसी नाते श्रीहरि आज वैसा ही पुराना हुक्म जारी कर रहा था। लेकिन इस बीच समय जो बदल गया! ये लोग अब पहले जैसे कमजोर नहीं रहे। तिसपर सेटलमेण्टने उन्हें बता दिया कि इस जमीनपर तुम्हारा लिखित अधिकार है, वह जबानी-जमा खर्चसे नहीं जानेका। बात-बातमें वे परचा निकालते हैं। श्रीहरिके इस हुक्मसे कोई डरनेवाला नहीं है, यह देबू जानता था।

पिछली रात देबूकी जागते बीती। थका हुआ-सा था वह आँखोंमें जलन हो रही थी। दुर्गाको हरसिंगार तलेसे बच्चा गोदीमें लिये आते देख वह भारी भूल कर बैठा था। उसका अफसोस और इन लोगोंके मिलमें जानेकी बातसे जाने उसे क्या हो गया था कि नींद ही नहीं आयी।

ये दोनों बातें उसके दिमागमें ऐसी उलझ गयी कि उन्हें अलग-अलग पहचानने तकका उपाय नहीं रहा। माथेपर हाथ रखे ध्यानमग्नकी नाई वह

तमाम रात बठा सोचता रहा बिलू ! मुना ! उफ आज कसी भूल कर बठा वह ! दुर्गाको गोदमें बच्चा लिये आते देख उसे लगा, मुनेको गोदीमें लिये बिलू चली आ रही ह ! अभी भी वह उस दृश्यको भ्रम नही समझ पा रहा ह। बिलू और मुनाके बिना इस घरमें वह रह कैसे रहा ह ? किस जोर ह ? उसका कलेजा हाहाकार कर उठा था। पराया काम, देशका काम, सब भुतहा मामला ह। सोना और उसकी माँकी चिन्ता उनकी घर गिरस्तीका प्रबन्ध, सोनाके इम्तहानमें सहायता, तिनकौडीके मुकदमेकी पैरवी, सहायता समिति—इन्ही सब कामोंमें उसके दिन कटते ह। अब वह इन सबसे मुक्ति चाहता ह। यह सब अब ढोया नहीं जाता।

तिनकौडीका बोझा उतरनेमें अब विलम्ब नही ह। ऐसे मौकेसे अपनी भाइने बाउरी डोम-मोचियाको मिलमें जानेकी सलाह देकर अच्छा ही किया ह। वे लोग मिलमें ही चले जायें। सहायता-समितिका तीन हिस्सा काम तो उन्हीं लोगोंसे हैं। सारी जिन्दगी तो वह उन्ही लोगोंके लिए झेल रहा ह ! उसे याद आया, मयूराक्षीके बाँधपर ताडका पत्ता काटनेके कारण श्रीहरिसे लडाई हुई थी। श्रीहरिने उन लोगोंको पकडवाया था। उन्ही लोगोको छुडानेके लिए उसे मुनेके हाथका कंगन बन्धक देना पडा था। याद आया, रातमें न्यायरत्न उस वह कंगन वापस दे गये थे। उसी रात उन्होने देवूको ब्राह्मणवाली कहानीका आरम्भिक अंश भी सुनाया था। उसके बाद ही उसके टोलेमें हैजा फला था। लोगोंकी सेवामें जाकर वह उस महामारीका जहरीला दांत अपने साथ ले आया, जो दाँत पहले तो उसके मुनेके कलेजेमें चुभा फिर चुभा उसके कलेजेमें ! ओह ! वह सारा-कुछ सहकर भी वह उनकी सेवा करता आ रहा ह।

न्यायरत्नकी कही कहानी याद आयी—मछेरिनकी टोकरीमें शालग्राम शिला ! वह उन लोगोंको गलेमें आज भी मुलाये चल रहा ह। मगर हुआ क्या ? उसीका क्या हुआ ? उन बदनसीबोंका ही वह क्या कर सका ? हा बाढके बाद सहायता-समितिसे उन लोगोंका बहुत उपकार हुआ ह। पर उपकारसे वे कितने दिनों तक जिन्दा रहेंगे ? अन्न नही है वस्त्र नही ह घर गिरस्तीमें कोई साधन नहीं—सिर्फ दूसरोंकी मददपर जीना क्या जीना ह ? और दूसरोंकी मदद भी कबतक ? न, इससे मिलमें काम करना कहीं अच्छा ह। अपनी भाईने लोगोंके जीनेकी तरकीब बता दी ह। चौधरीने जबसे अपने गृह-देवताको बेंच दिया, तबसे गलेमें शालग्राम शिलाको ढोते फिरनेके आदर्शपर आस्था नही रह

१ 'पदचीमयन्त्र' में।

गयी। न्यायरत्नकी बातका उसे अविश्वास नहीं, पर मजेरियाकी टोकरीके बजाय देवता अब मूर्ति धारण करके प्रकट हों वह यह चाहता है। शायद हो कि तब उसे मुक्ति मिले। लेकिन उसकी मुक्तिके बाद शालग्राम शिलाकी सेवा कौन करेगा? तर्क करनेवाले शायद यह कहें—अरे बाबा तुम्हारे सिवा संसारमें करोड़ा-करोड़ लोग हैं। कहना सही है। लेकिन यह परीक्षा पुरानी हो गयी है। और ये बाउरी-डोम ही अगर शालग्राम शिला हों, तब तो सेवकसे देवताकी ही तादाद ज्यादा है। न, वे लोग अगर अपने-आप जीनेका उपाय नहीं कर सकेंगे तो किसीकी मजाल नहीं कि उन्हें बचाये। उससे अनिरुद्धका बताया उपाय ही ठीक है। इस उपायसे वे लोग अपने पसीनेकी कमाईपर खा-पहनकर जी सकेंगे। एक बातके लिए पहले उसे इसपर एतराज था। वहाँ जानेसे औरतों का धर्म नहीं बचेगा। मर्द भी नशेबाज और उच्छृंखल हो जायेंगे। लेकिन कल उसने सोचकर देखा, यह आशंका व्यर्थ न भी हो पर इसकी जितनी गम्भीरता उसने सोची थी, उतनी तो नहीं ही है। गाँवमें रहते हुए ही उनका धर्म कौन बचा हुआ है! उसे श्रीहरि चक्रवर्ती बाबू हरेन घोषालकी बात याद आयी भवेश और हरीशके जवानीके दिनोंकी भी कहानी उसने सुनी है। उस दिन द्वारका चौधरीके बेटे हरेकृष्णके बारेमें भी सुना। अभी भाईने जिन दिनों ऐसी हरकतें की थीं वह गाँवका ही था। यहाँकी औरतें बबनाके बाबुओंके यहाँ रोजाना काम करने जाती हैं। उसके बड़े-बड़े किस्से सुने जाते हैं। कल ही उसने सोच देखा, जिस पुण्यसे लोगोंका यह पाप जाता है, लोग जबतक उस पुण्यसे पुण्यवान नहीं होंगे तबतक सभी हालतमें यह पाप बना रहेगा। पापकी यह प्रवृत्ति गाँवमें रहनेसे भी रहेगी, बाहर जानेसे भी रहेगी। शकल भर बदलेगी।

खैर! अनिरुद्धके यहाँ अगर लोग मिलमें जाते हैं तो जायें। देबू उन्हें मना नहीं करेगा। उनकी दुःख-दुर्दशाके प्रतिकारका फिलहाल इससे कोई दूसरा अच्छा रास्ता नहीं है।

मिलके भी लोगोंको उसने देखा है। बहुतोंसे जान-पहचान भी है। वे अच्छे हैं। थोड़ा उच्छृंखल जरूर हैं। अनिरुद्ध इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। तो क्या हुआ! ज्यादा कमायें तो कुछ पसेरी पियें। लेकिन अनिरुद्धकी सेहत कितनी अच्छी हो गयी है। साहस कितना है उसमें। ये लोग भी वैसे ही हों। वह मना नहीं करेगा। कपिल बाबा उतरना चाहता है, वह उसमें बाधा नहीं डालेगा। उसे मुक्ति चाहिए।

वह बाधा भी देगा तो लोग नहीं सुनेंगे। यह बात कल रात ही लोगोंने उससे कह दी है। गीतका सुर सुनाई दे रहा था। एकाएक गीत थम गया और

एक जोराका कोलाहल-सा उठा। देवू अपने ओसारेपर सोच रहा था। कोलाहलमे चौंककर वह दौड पडा। ज्यादा पी लेनेसे ये कम्बख्त मार-पीट जरूर करेंगे। सभी बहादुर बन जाते है। लहू-लुहान हो जाते हैं। मनके दबे आक्रोश रातके अँधेरेमें साँप-से निकलकर फुफकार उठते हैं। बहुतेरे लोग तो मार-पीट करनेके लिए ही पीते है।

देवू गया। देखा, कुरुक्षेत्र मच गया है। नशेमें किसीको ठीकसे खडे होनेकी ताकत नही है। लडखडा रहे हैं सब। उसी हालतमें घूँसा-मुक्का चल रहा है आपसमें। दोस्त-दुश्मन समझनेका उपाय नही। एक जगह मामला सगीन-सा लगा। देवू लपका। वास्तवमें बात सगीन हो गयी थी। पातूने बैरहमीसे एक आदमीका गला धर-दबोचा था। वह खासा मजबूत जवान है। उसके हाथके दबावसे उस भले आदमीकी जीभ निकल आयी थी। देवू चिल्लाया— ऐ पातू छोड दे। छोड।'

पातू गरज उठा—"नही! नही छोडूँगा।"

देवूने इसके बाद दुविधा नहा की और तुरत उसने पातूके कन्धेपर जोराका एक घूँसा जमा दिया। पातूके हाथ खुल गये। छुटकारा पाते ही वह आदमी सिरपर पैर रखकर भागा, लेकिन पलटकर पातूने देवूपर ही हमला करना चाहा। देवूने उसे धक्का दिया— पातू ?

पातू अब सहम गया। नशीली आखसे पहचाननेकी कोशिश करता हुआ बोला, "कौन ?'

"मैं हूँ गुरुजी।"

'गुरुजी ?'—पातू तुरत बैठ गया। देवूके पाव छूकर प्रणाम किया— 'परनाम! आप ही विचार करें गुरुजी। बाम्हनका लडका है वह कम्बख्त हरदम मोची टोलेका चक्कर क्यो काटता है ?'

उधर हलचल तबतक थम आयी थी। सभी दबे गलेसे कहने लगे—"ऐ चुप हो जाओ। गुरुजी! अरे गुरुजी!" केवल एक कमजोर-सा आदमी उस समय भी अकेले ही शून्यमें घूसा चला रहा था। पातू कह रहा था— नही मानता मैं। तुम सालोकी बात म नही सुनता! जा!'

देवूने कहा, 'आखिर बात क्या है ? तुम लोगोने यह शुरू क्या किया है ? पातू बोला, "हम लोगोका कोई दोष नहीं है। बस यह सतीश! सारा दादा क्या है, कच्चू है!'

'क्या हुआ सतीश क्या किया तुमने ?"

उसने कहा मत जा। मत जा।"

"मुसीबत, मत जा क्या ?"

पातूने दोनों हाथ बाँधकर कहा, "आप मत मना करना गुरुजी। आपके पैरों पड़ता हूँ।"

"क्या ? क्या मना करूँगा ?"

"हम लोगोंने मिल्में जानेका तय कर लिया है। अनिरुद्ध सब ठीक कर देगा। म अवश्य उसके साथ कलकत्ता जाऊँगा। ये लोग मिल्में काम करेंगे। आप मत मना करियेगा।"

देबू हँसा।

पातूने कहा, "लेकिन हम लोग मान नहीं सकेंगे।"

देबूने पूछा, "तो सतीशने क्या किया ?"

"वह साला कह रहा ह कि मत जा। जानेसे गिरस्त धरम नही रहेगा। तेरे गिरस्त धरमकी ऐसीको तैसी। पटमें दाने नही तो कहता है धरमका उपवास किया ह! साला, भीख माँगकर खाना पड़ता है गिरस्त धरम!"

एकने कहा, "उस सालेकी जमीन है, हल है। हम लोगोंको खेत, हल-बल दे तो समझें। सो नहीं, अपने साला भर-पट खायेगा और हम लोग भीख माँग कर गिरस्त धरम करते रहेंगे।"

फिर पातू बोला, "और वह साला घोपाल।" सहसा जीभ काटकर प्रणाम करके माथेसे हाथ लगाकर बोला, "नही-नहीं। बाम्हन ह। आप ही कहो गुरुजी घोपाल मेरे यहाँ आता ह। सभी जानते ह। खर। आता है पैसा देता ह, धान देता ह, ठीक ह। लेकिन आखिर मेरी भी तो इज्जत ह। सो नहीं इधर हम लोगोंमें मार-पीट मची और कम्बख्त सबके सामने हमारे घरसे निकल पड़ा। और निकलकर नवाबी दिखाने लगा। इसीलिए उसका गला धर दबाया था।" उसके बाद आप ही-आप बोला, "ठहर-ठहर, जाता हूँ चला अनिरुद्धके साथ। तेरे प्रेमके मुँहमें राख डालता हूँ म। ठहर।"

लम्बा नि श्वास छोड़कर देबूने कहा, "अनिरुद्ध ह कहाँ ?"

"वह ह। सो रहा है।"

शराबके नशेमें अनिरुद्ध मौनसिरी तल ही पड गया था। नींद और नशेमें लगभग बेहोश पडा था। इतने घोरगुलमें भी वह जगा नही।

दबू सबको घर जानेको कहकर लौट आया था।

लोगोंने उससे कह भी दिया कि तुम मना मत करना। अनिरुद्धकी लुहाली दल सबने यही रास्ता अपनाना चाहा ह। भीख माँगकर गृहस्थ धमका अभिनय करना वे नहीं चाहत। कमाईका रास्ता रहते, पट भर खानका उपाय रहने वे

खरीदे हुए गुलामकी नाई रहना अधपेटा रहकर जीना नही चाहते। इसपर देवू उन्हें मना क्यों करे ? और फिर उनका बोझा कधेसे उतारना चाहता है, तो उसे वह थामे क्या रहे ? मुक्तिकी राहमें वह रोडा डालना नही चाहता। मुक्ति आना चाहती ह आये। बिलू और मुन्नाके बिना घर मरुभूमि सा खाँ-खाँ करता है। अब वह उन्हींको खोजमे निकलेगा। परलोकवासी आत्मा रूप धर-कर प्रियजनाके सामने आती है—एसे किस्से तो उसने बहुत सुने हैं।

सवेरे जगते ही आखें लाल पीली किये श्रीहरि उसे धमकाने आया था। वेचारा जमीदारका रोब दिखानेका लोभ रोक नही सका।

देबूने मिल-मालिकसे जाकर कह आनेकी सोची। सोचा, इनके कामका इतजाम करके शत ठीक कर आयेगा। और श्रीहरिने अगर इन्हें उजाडनेकी कोशिश की तो सबको लेकर खुद मजिस्ट्रेटके यहाँ जायेगा।

पातूने आकर प्रणाम किया। पातू अब वह रातका पातू नही था। इस समय वह निरा निरोह और शान्त आदमी था।

देवूने हँसकर कहा, आओ पातू !

और सिर खुजाते हुए पातू देवूके पास पहुँच गया।

'क्या खबर है, कहो ? —देवूने पूछा।

'कल रात "

हँसकर देवूने कहा 'याद है ?

सब नही। आप गये थे, है न ?'

'तुम्हें क्या खयाल आ रहा है ?

'लगता है कि गये थे।

'हाँ म गया था।'

सिर खुजाकर पातू बोला, मैंने क्या-क्या कहा था ?'

बेजा कुछ नही कहा तुमने। लेकिन मै नही जाता तो घोषालको मार ही डालते तुम। पातूने एक निःश्वास छोडकर कहा, 'दोष जरूर हो गया। लेकिन उसका भी दोष था। मजलिसके सामने मेरे घरसे उसका निकलना ठीक नही था।"

देवू चुप रहा। इस बातका क्या जवाब देता ?

पातूने कहा, गुरुजी ?

'कहो।"

"अब क्या कह रहे हैं ? कहिए।'

'इस बातका म क्या जवाब दूँ ?'

पातूने जीभ काटकर कहा राम राम ! वह बात नहीं।

"फिर ?"

पातू चकित हो गया—'आपने सुना नही ह ? मिलमे जानेकी वात ?"

"सुना ह !"—देवू उठकर बठ गया। कहा, "सुना ह। जाओ-जाओ तुम लोग। मने सोच देखा ह उसके सिवा दूसरा उपाय भी नही। मैं मना नही करूँगा।"

खुश होकर पातूने देवूके पराकी धूल ली। बोला, "मिल तो गुरुजी, उस पारमें बहुत पहले हो खुली ह। इतने दिनो तक हम लोग नही गये। दु ख हुआ, कष्ट हुआ, तो भी नही गये। मगर, अब नही सहा जाता।"

देवूने पूछा, "अन्नी भाई कहा है ?'

"वह मिल-मालिकसे वात पक्की करनेके लिए जक्शन गया ह।'

"ठीक है। तुम लाग वही करो।"

पातू चला गया। कुछ देरके वाद देवू भी उठा और जगन डॉक्टरके यहाँ गया। आवाज दी—"डाक्टर!'

डाक्टरके ओसारेपर अभी रोगियोकी भीड थी। मलेरियाका हमला हल्का जरूर हो आया था, मौतकी सख्या भी घट आयी थी, लेकिन पुराने रोगी हो तो बहुत ह। कई आदमी ओसारेपर बैठे काप रहे थे। एक आदमीने गाना शुरू कर दिया था—गाता हा चला जा रहा था—मुझे क्या हो गया वकुल फूल ?

डॉक्टर अन्दर दवा बनानेमे मशगूल था। देवूकी आवाज सुनकर बोला।

'देबू भाई ? आओ, यही अन्दर आ जाओ!"

कलई किये हुए एक बहुत बडे बरतनमें डॉक्टर दवाई तैयार कर रहा था। हँसकर बोला, पचारी दवा बना रहा हूँ। कुनन, फेरीपर क्लोर, मगसल्फ और सिनकोना। थोडा-सा लीवर आसनिक दलेसे अच्छा होता। मगर मिलता कहाँ ह ? एक-एक सोसी डुबाऊँगा और यही अमृत लोगोको दूँगा। हा, तो क्या खबर ह ?'

देवूने कहा "सहायता-समितिका जिम्मा तुम्हीको लेना पडगा। समय निकालकर जरा हिसाब किताब समझ लो। यही कहने आया था।"

"सो क्यों ?'

'हाँ भई। रुपये-पसे भी खास नहीं है। काम भी कम हो आया है। तिसपर म वाउरी-मोची कहने मिलमें काम करने जा रहे हैं। म अब छुटकारा चाहता हूँ भाई। एक वार तीर्थयात्राको निकलूँगा।'

"तीरथ जाओगे ?"—डॉक्टरके हाथ रुक गये। एक अजीब निगाहसे वह देवूकी तरफ ताकता रह गया। उस निगाहके सामने देवूको घुटन सी लगी। डाक्टरकी ठोडी सहसा काँपने लगी—रूखा और कटु बोलनेवाला डॉक्टर जगन उस कम्पनको सँभालकर बोल नहीं सका।

देवू हँसा। गहर स्नेहसे मानो अपना अपराध मानकर उसने हँसते हुए कहा, "हाँ भया। मेरे कंधेका बोझा तुम लोग उतार दो।"

डॉक्टरने अपनेको जब्त करके एक उसास ली।

देवूने कहा 'बस, तिनकौड़ी चाचाका झमेला चुका कि मुझे रिहाई मिली।"

छब्बीस

देवूके माथेका बोझा जल्दी ही उतर गया।

दिसम्बरके बीचोबीच तिनकौड़ीके दौरेकी सुनवाई खत्म हो गयी। उसके छुटकारेका कोई उपाय ही नहीं था। छिदामका कबूल कर लेना और सोनाकी गवाही शुरू होते ही उसने कसूर मान लिया। सोनाको वकीलने बहुत-बहुत जतनसे सिर्फ एक शब्द 'नहीं' सिखाया था। उसका तीन ही जवाब था—नहीं जानती याद नहीं और नहीं। पहले इजहारमें पूछे तो कहना क्या कहा है, याद नहीं है। राम और तिनकौड़ीमें कोई बातचीत होनेकी पूछें तो कहना—नहीं। ऐसा उसने नहीं सुना। लेकिन कठघरेमें खड़ी होकर हलफ उठानेके बाद सोना वसी तो हो गयी। सरकारी वकील पक्का घाघ था। मुकदमा चलाते चलाते माथा चन्देल हो गया था। रहा-सहा बाल पकना भी शुरू हो गया था। कब डाँटकर, कब मीठी बातोंसे काम निकालना पड़ता है—सब उसे मालूम है। लोक चरित्रके पक्के अनुभवी। हल्फ उठाते समय सोनाके उड़े हुए चेहरेको देखते ही उन्होंने कहा, देखो तुम ईश्वरके नामपर धरमके नामपर हल्फ ले रही हो। अगर सचको छिपाकर झूठ कहोगी, तो भगवान् तुमसे नाराज होंगे। उससे तुम्हारे बापका भी भला न होगा।' उसके बाद पूछा, तुमने यह बात एस० डी० ओ० से यहीं कही है ?

सोना खोई निगाहसे वकीलकी तरफ ताकती रही।

वकीलने डाटा—"बोलो। जवाब दो?"

सोनाकी शक्ल देखकर तिनकौड़ी तुरत कठघरेसे बोल उठा, "मैं अपना क़सूर मान लेता हूँ हुज़ूर। बिटियाको छुटकारा दीजिए।"

तिनकौड़ीने कसूर मान लिया। कहा कि मैंने गलती की है। घोष-टोलेकी डकैतीमें मैं शामिल था। मैं घरके अन्दर नहीं गया था। घाटी अगोर रहा था।

उसने फक़त अपना क़सूर माना। किसी दूसरेका नाम नहीं बताया। कहा, "मैं केवल छिदामको पहचानता हूँ। मुझे छिदाम ही बुलाकर ले गया था—जमातके लोगोंको वही जानता था। छिदामने बहुत दिनों तक मेरे यहाँ नौकरी की है। बाढ़के बाद लगभग भीखपर ही गुजारा चल रहा था। सहायता-समितिसे भीख लेते देख उसने मुझसे कहा—साथ चलोगे तो काफी हाथ लगेगा। मैं लोभ नहीं सँभाल सका। चला गया। बाकी जो लोग थे वे कहाँके थे, क्या नाम था उनका—मैं नहीं जानता। राम भल्लासे मेरी बातें हुई थी। उसने मुझे डाँटा था—तुम भले आदमीके लड़के हो आखिर यही किया! बस।"

मुखबिर बन जानेसे तिनकौड़ी शायद छूट जाता। लेकिन उसने वैसा नहीं किया। फिर भी जज साहबने उस ओरवालोंकी तुलनामें कम सज़ा दी, इसलिए कि उसने अपना अपराध कबूल कर लिया। तिनकौड़ीको चार साल सख्त कैदकी सज़ा सुनायी गयी। राम, तारणी आदिको ज्यादा बड़ी सज़ाएँ मिलीं—उन्हें छहसे सात साल तककी क़ैद हुई।

देबू अदालतसे बाहर निकल आया। घर। एक अप्रीतिकर घुटानेवाली जिम्मेदारीसे उसे छुटकारा मिल गया। इस दुःखमें भी उसे इस बातका सन्तोष रहा कि तिनकौड़ी चाचाने जैसा पाप किया था, वैसा ही उसने माँगकर उसकी सज़ा ले ली।

फैसलेके दिन वह अकेला ही आया था। सोना या तिनकौड़ीकी स्त्री नहीं आयी थी। सज़ा तो निश्चित ही थी, सिर्फ कितने दिनोंकी सज़ा हुई, इतना ही जानना था। यही उन सबोंको बता देना होगा।

लौटते वक्त वह विद्यालय निरीक्षकके दफ्तरमें गया—सोनाके परीक्षा-फलके बारेमें जानना था। परीक्षा-फल निकलनेमें अभी देर थी। फिर भी किसीसे अगर कुछ पता चल सके।

सोनाने मिडिलकी परीक्षा दी थी और अच्छी ही दी थी। जरा जवाब

लिखा था उसने उससे उसका उत्तीर्ण होना निश्चित था। हिसाबके सारे ही सवाल उसने ठीक किये थे।

देबूको उम्मीद थी कि वह छात्रवृत्ति पायेगी। मिडिलमें चार रुपयेकी वृत्ति मिलती है और चार साल तक मिलती है। वृत्ति मिलनेसे उसे जंक्शनके बालिका विद्यालयमें नौकरी मिल जायेगी। शिक्षिकाओंने भरोसा दिया है। सेक्रेटरीने भी कहा है। नौकरीके सिवा उसे पढ़नेकी भी सुविधा मिलेगी। ऐसा हो जायेगा तो उसके भविष्यके बारेमें देबू निश्चिन्त हो जायेगा। ज्ञानमें विद्यामें सोना वह मन्त्र पा लेगी, जो देबू उसे दे नहीं सका। यही नहीं, सम्मान सहित जीविका कमानेका उपाय पा जानेसे वह अपने जीवनको सार्थक कर सकेगा। कल्पनामें मानो वह उस सोनाके उज्ज्वल और हँसते हुए रूपको भी देख पाता है। देबूको बड़ा अच्छा लगता है। साफ सुथरे कपड़ोंमें, चेहरेपर शिक्षाकी दीप्ति लिये सोना मानो उसकी आँखोंके आगे हँसती हुई खड़ी होती है।

विद्यालय निरीक्षकके दफ्तरमें उसे अप्रत्याशित रूपसे खबर मिल गयी। जिला बालिका विद्यालयकी प्रधान शिक्षिका और सक्रेटरी बरामदेपर बातें कर रहे थे। देबू किसी जाने चीन्हे किरानीकी तलाशमें था। जब वह गाँवकी पाठशालामें पढ़ाता था तो दो-एक जनोंसे जान-पहचान थी। एकाएक उसके कानमें ये शब्द पहुँचे—शिक्षिका कह रही थी आप ही चिट्ठी लिखिए। आपकी चिट्ठीका कहीं अधिक महत्त्व होगा। आप स्कूलके सक्रेटरी हैं नामी वकील हैं—आपकी बातोंका उन्हें भरोसा होगा। गाँव घरकी लड़की, वृत्ति पानेपर भी सहज ही घर छोड़कर शहरमें पढ़ने नहीं आयेगी। अगर आप लिखें कि हास्टल पढ़ाई सब-कुछ मुफ्त और उसके सिवा भी हाथ-खर्चके लिए कुछ हम देंगे फिर हम खुद निगरानी रखेंगे तभी वह आ सकती है।'

टीक है वैसा ही लिख दूँगा मैं।'

हाँ। बहुत ही अच्छा नम्बर लाया है। बड़ी तेज लड़की है।

'स्वर्णमयी दासी। दखुड़िया पोस्ट कंकना। यही ठिकाना है न?'

हाँ। उसके बापका नाम तिनकौड़ी मण्डल है शायद। मैंने सुना वह डकैतीके जुर्ममें गिरफ्तार हुआ है। कैसी अजीब बात है, देखिए तो जरा। बाप टापू और बेटीको मिली छात्रवृत्ति।"

देबू आनन्दसे लगभग अधीर हो गया। आगे बढ़कर अपना परिचय देते हुए वह पूछने जा रहा था कि वे लोग क्या चाहते हैं? कि इतनेमें सक्रेटरी साहबने कहा मैं शिवकालीपुरके जमींदार श्रीहरि घोषको चिट्ठी लिखता हूँ। मैं उन्हें जानता हूँ।"

देवू ठिठक गया। वे चले गये तो उसकी भेंट एक जाने-सुने किरानीसे हो गयी। नमस्कार करके पूछा, "ये दोनो कौन थे ?"

'ये दोनो महिला यहाके बालिका विद्यालयकी प्रधान अध्यापिका है और वे सज्जन हैं सेक्रेटरी—राय साहब सुरेन्द्र बोस। वकील ह। क्यो, क्या बात ह ?"

"यो ही पूछ रहा हूँ। वे दोनो छात्रवृत्तिकी बातें कर रहे थे।"

"हाँ, आज वे वृत्तिके बारेमें जान गये। जिन लडकियोको वृत्ति मिली है, उन्हें वे अपने स्कूलमें लानेकी कोशिश करेंगे। इसीलिए पहले ही आकर पता लगा गये। हम दो चार दिनमें पता चलेगा। आप तो गुरुगिरी छोडकर खूब मातबरी कर रहे ह। सुना, एक डकतीके मुकदमेमें खूब आपने पैरवी की। क्या मिला-जुला ?'

देवूको लगा, किसीने अचानक उसकी पीठपर चाबुक मार दिया। सिरसे पाव तक सिहर उठा वह। लेकिन अपनेको जब्त करके उसने हँसकर कहा "अच्छा ही मिल रहा था। अब हजम करनेमें तकलीफ हो रही ह।

"हम लोगोको कुछ खिलाइए पिलाइए।'—दाँत निपोरकर वह हँसने लगा।

देवूने कहा "आप भी हजम नहीं कर सकेंगे।"—कहकर वह और खडा नहीं रहा। स्टेशनकी राह पकडी। शहरसे बाहर आनेपर थोडा-सा खुला मैदान। उस मदानके बाद स्टेशन। खुले सूने मैदानमें पहुँचकर उसने चनकी सास ली। आ, अब छुटकारा मिला। सहायता-समितिकी जिम्मेदारी गयी—डॉक्टरको हिसाब किताब समझा दिया। थोडे-से रुपये ह। तय पाया ह कि वे रुपये अभी जमा रहेंगे। वे रुपये उसने डाक्टरको ही दे दिये। इधर तिनकौडी का भी झमेला खत्म गया। सोनाको वृत्ति मिल गयी। वह जक्शनके स्कूलमें नौकरी भी करेगी—पढाई भी चलती रहेगी। शहरके स्कूलसे यह कहीं अच्छा होगा। खासकर उस स्कूलका सेक्रेटरी श्रीहरिका जाना-सुना ह वह मानता ह कि जमीदार ही देशका मालिक ह, वही पालनेवाला, हुक्म देनेवाला ह। ऐसेके स्कूलमें वह सोनाको नहीं रहने देगा। हरगिज नहीं। जक्शनका स्कूल घरसे करीब ह। वहाँ रहनेमें जगन डॉक्टर भी खोज-खबर लेता रहेगा। खर। सोना वगरहकी ओरसे भी वह एक प्रकारसे निश्चित हो गया। अब सचमुच ही उसे छुट्टी मिल गयी। आ जान बची।

जब वह जक्शनमें उतरा तो वेला बच नहीं रही थी। चक्का अस्त हो चुका था। मयूराक्षीके वालू भरे गर्मके पश्चिमी तरफ दिनकी रोशनी झिलमिल कर रही थी। जहाँ लग रहा था कि नदीके दोना तट एक बिन्दुपर मिलकर दिगन्तकी वन रेखामें खो गये है। मयूराक्षीमें पानी नहीं-सा है। इसी बीच वालूम जाडेका आभास। दुवली सी धारामें कही घुटने भर पानी। घाटपर आकर देवू हाथ मुँह धोकर थोडा बैठा। कुछ दिनोंसे उसके जीवनमे उदासी आ गयी है—वह उदासी आज जैसे रातके अन्तिम पहरकी नींद-सी उसे दबोच बैठी है। उसका मुन्नू पहले दिन मरा और उसके दूसरे ही दिन मरी उसकी बिलु। उस रोज रातके अंतिम पहरमे नींदने जसा दबोच लिया था उसे, आज उदासीने वैसे ही घर दवाया है। खैर काम उसका समाप्त हो गया। औरोंका बोझा गलेसे उतर गया—भूतकी बेगारी आजसे खत्म हो गयी। अब कोई काम नही, कोई जिम्मेदारी नही।

देवूको याद आ गया, उस रोज न्यायरत्न ठीक यहींपर बैठ पडे थे। उसने उदास आखों ऊपरकी तरफ ताका। मयूराक्षीकी धाराके बाद बालूकी ढेर, उसके बाद चौंर। चौंरपर इस बार खास खेती नही हुई—ऊपरकी माटी कटकर चौचीर हो गयी थी। चौंरपर बाध। बाधके उस पार पचग्रामकी बैहार। बाढके बाद फिर उसमें फसलके अंकुर उग आये थे। मगर नाम भरके ही लिए! आधे चाद के आकारमें बैहारको घेरकर पचग्राम! न कोई आहट न आवाज—जरा-जर्जर पाच गाव चाम हाडका बोझा लिये निस्तब्ध पडे।

साम घनी हो आयी। जाडेकी साँझकी किरणकी अंतिम आभा। इतनेमें ही ताप गायब हो गया। देवू उठा। पानी पार करके बालूसे होता हुआ वह बाधपर पहुँचा। सोनाके यहा समाचार देकर ही घर लौटना उसे ठीक जँचा। तिनकौडीको सजा ही होगी यह वे जानते है—फिर भी उत्सुकता लिये बैठे होंगे। आदमीका मन आशाकी हलकी-सी रेखाको भी पकडे रखना चाहता है। बहतेको तिनकेका सहारा—यह बात अतिरंजित है। लेकिन एक पतली-सी डालको पानेपर वह हरगिज नही छोडता यह सत्य है। सोना अभी भी उम्मीद किये बैठी है कि जब उसके बापने कसूर मान लिया है तो जज साहब जबानी डाँट-फटकार सुनाकर उसे छोड देंगे। सजा भी होगी तो कुछ महीनोंकी। इस समाचारसे उसे चोट पहुँचेगी पर उपाय क्या है? उसके वृत्ति पानेका भी समाचार वह देगा। और साथ-ही-साथ उसके भविष्यका पक्का प्रबंध भी कर देगा। सब काम चुका ही देना पडेगा। अब एक बार यहाँसे निकल पाये तो जी जाये।

अचानक वह ठिठक गया। लगा, गांवके पास चौरके जंगलमें मानो मौन की भाषामें कुछ लोग काना फूसी कर रहे हैं, हँसीसे मतवाले हो रहे हैं। पासमें ही श्मशान था। देबूके शरीरके रोंगटे खड़े हो गये। उसकी बिलू और मुन्ना यहीं हैं। तब क्या वही लोग हैं? हां, उनके शरीर तो हैं नहीं। कण्ठनली न होनेसे कलेजेकी बात हवाके प्रवाह सी लग रही है। हो सकता है मां बेटा खेलमें माते हों। उनका हँसना, उनकी कानाफूसीकी लहर शून्यलोकको भरकर पेड़ोंके माथे माथेपर उठ आयी है। अशरीरी आत्माएँ श्मशानके जंगलमें दौड़ती फिर रही हैं। खेलमें मशगूल होकर वे नाचते चल रहे हैं। उनके चलनेके वेगसे झाड़के झड़े हुए पत्तोंमें घूर्णी जगी है। शायद मुन्ना भागा है—उसे पकड़नेके लिए बिलू पीछे पीछे भाग रही है। वही बात है। उनकी उमगती चालका चिह्न—पत्तोंकी घूर्णी—इस पेड़की ओटसे उस पेड़की ओटको नाचता चल रहा है। देबू वहांसे एक डग भी बढ़ नहीं सका। एकदम अभिभूत हो गया वह। भय विस्मय आनन्द सबकी मिली-जुली एक अनोखी अनुभूति। जीमें हुआ, एक बार वह चीखे—बिलू, मुन्ने! लेकिन गलेमें आवाज ही नहीं निकली। लेकिन वे क्या देबूको देख नहीं पा रहे हैं? फिर उसकी मौजूदगीकी ऐसी उपेक्षा क्यों? क्या इसलिए कि वह दूसरेका बोझ ढोने, दसका काम करनेमें डूबा हुआ है? कुछ ही क्षणोंके बाद उन अशरीरियोंके परोंकी आहट गुम हो गयी। तो क्या उन्होंने उसे देख लिया? लगता है। अब वह शब्दहीन भाषाकी कानाफूसी नहीं है—मौन अभिमानका अविराम सुर। अब वे मानो बुला रहे हैं—आओ। आओ। शून्यमें, हवामें, पेड़ोंकी चोटियोंपर, पंचग्रामकी बहारमें भाषाविहीन वह आह्वान गूँज उठा है। हाँ, वही बुला रहे हैं। उसका सारा शरीर झिम झिम कर उठा। सारी शिराएँ मानो शिथिल हो आयीं। हाथ-पाँवकी उँगलियोंकी नोकोंमें स्पर्शका बोध नहीं रहा। ऐसी अवश विवश अवस्थामें वह कबतक खड़ा रहा, कौन जाने! कि दूरसे आती हुई क्षीण-सी एक ध्वनि क्रमशः स्पष्ट होने लगी। उस शब्दके स्पर्शसे जीवित मनुष्यके अस्तित्व-बोधकी अनुभूतिके साथ-साथ उसकी इन्द्रियाँ सचेतन हो आयीं। सुबहकी धूप और तापके स्पर्शसे मुँदे कमल-दलकी तरह खिलकर सजग हो गयी। अब उसका भ्रम जाता रहा। समझा कि यह बिलू और मुन्नेकी कानाफूसी नहीं—यह खेल हवा और पत्तोंका है। सर्दीकी हवासे झाड़के पत्तोंमें आवाज हो रही है। जंगलके झड़े पत्तोंमें घूर्णी उठ रही है। उधर, नदीसे किन्हींके गीतका सुर धीरे धीरे नजदीक आने लगा।

जाने कौन लोग तो गाते हुए इधर ही आ रहे थे। शुक्लपक्षकी चतुर्थी या पंचमीका एक टुकड़ा चाँद चाँदीके हँसिया-जैसा पश्चिम आकाशमें मद्धिम चमक

रहा था। बहुत बड़े कमरेमें जलते दीयेकी ज्योति-सी मटमैली चांदनी। धुँधली छायासे लोग आ रहे थे। बहुत-से लोग। औरत-मर्द, सभी। कि देबूको याद आया, ओ! ये मिल्से काम करके डोम-बाउरी लोग लौट रहे हैं। अब देबू चलने लगा। चलते चलते वह बिलू-मुनाकी नहीं, उन लोगोंकी बात सोचने लगा। उनकी बातोंसे उसे आज जो तसल्ली मिली वह भूलनेकी नहीं। उन सबका भला हो। उनकी मौजूदा हालतपर देबूको खुशी हुई। अभी डेढ ही महीने हुए, इनमें-से बहुतोंको राहत मिली। अभाव-अभियोग हैं लेकिन दोनो जून दो मुट्ठी खाना नसीब होता है। घर पहुँचते ही सब ढोल लेकर बैठ जायेंगे। इनके लिए अब देबू निश्चिन्त है। एक बोझा तो उतरा। अब आज ही सोना वगैरहका भी बोझा उतार आयेगा। बहुत ढोया, पर अब नहीं! भगवान्से उसने बहुत बार प्रार्थना की— हे भगवान्, मुझे मुक्ति दो। लेकिन मुक्ति नहीं मिली। बहुत बार बिलू और मुन्नेकी चितापर बैठकर रोना चाहा, नहीं रो पाया। लोग उसे पकड़कर लौटा ले गये। उसका जी अफसोससे भर गया। दिनों तक बिलू-मुन्नेको भुलाये रहकर उसकी हालत ऐसी हो गयी कि आज निर्जन श्मशानमें जैसे ही उनकी अशरीरी आत्माका आभास हुआ कि उसका मन, उसकी चेतना भयमें सिकुड़ गयी। मन-ही-मन वह मर-सा गया। जब इन आनेवालोंकी आहट मिली तो जानमें जान आयी। वह खुद ही अपनेपर छि छि कर उठा। संकल्प भी किया कि—न अब नहीं।

दखुड़िया बस्तीमें घुसते ही अँधेरमें किसीने कहा कौन? गुरुजी?

चिन्तामें डूबा हुआ देबू चौंका— कौन?

मैं हूँ—ताराचरण।'

"ताराचरण?"

"जी हां। आप शायद सदरसे लौट रहे है?

'हाँ।

तिनकौड़ीको सजा हो गयी? कितने दिनोंकी?"

चार साल।'

एक निःश्वास छोड़ते हुए ताराचरणने कहा, 'गजब हो गया गुरुजी एक घर ही चौपट हो गया। उसके बाद हँसकर बोला, 'बचा ही कौन-सा घर? आज रहम चाचाका भी सब गया।

'सब गया? मतलब?'

'दौलतका हुण्डनोट था। नालिश हुआ था। सूद और मूल बराबर। आज

अस्थावर गया। था भी क्या, ले देकर बहुत होगा, तो पचास रुपये। बाक़ी रुपयोंके लिए जमीन कुर्क। मालगुजारी भी बाकी पड़ी है।"

देवू चुप रहा। उसकी राह चलनेकी शक्ति भी मानो जाती रही।

तारानें कहा, "यह धक्का रहम चाचा सँभाल नहीं सकेगा।"—फिर एक क्षण चुप रहकर बोला, "आपसे एक बात पूछूं गुरुजी?"

"पूछो।"

"आप क्या तिनकौड़ीकी बिटियाका ब्याह करायेंगे? विधवा विवाह?"

भवें सिकोड़कर देवूने कहा, "तुमसे किसने कहा?"

ताराचरण चुप रहा।

देवूने जरा गरम होकर कहा, "ताराचरण?"

"जी?"

"यह अफवाह कौन फैला रहा है कहो तो? श्रीहरि?"

"जी नहीं।"

"फिर?"

ताराचरणने कहा, "घोपाल कह रहा था।"

"हरेन घोपाल?"

"हाँ।"

देवूके दिमागमें दपसे आग जल उठी। लेकिन वह क्या कहे, खोज नहीं पाया। जरा देर बाद बोला "ग़लत बात है ताराचरण। लेकिन हाँ, सोना तयार होती तो मैं उसका ब्याह करा देता।

देवू जब सोनाके यहाँ पहुँचा, तो माँ-बेटी रोशनी जलाये बैठी थी, चुपचाप।

सब कुछ सुनकर भी वे दोनों चुप बैठी रहीं। देर तक बाद कुछ कह नहीं सकीं।

उसके बाद देवूने सोनाको वृत्ति मिलनेकी बात बताया। यह सुनकर भी सोनाने माथा नहीं उठाया।

सोनाकी माँने ही एक उसाँस ली।

कुछ देर चुप रहकर देवूने कहा, "मैं आपके भविष्यकी सोच रहा था।"

सोनाकी माँने कहा, "तुम जो कहोगे, वही करूँगी। तुम्हारे सिवा हमारा अपना तो कोई है नहीं।"

ऐसी करुणाके साथ उसने ये बातें कही कि देवू उससे यह नहीं कह सका कि

अब मैं किसीका बोझा नहीं ढो सकूँगा। जरा देर चुप रहकर उसने कहा, "मैं तो अब यहां रहूँगा नहीं चाचीजी।"

'नहीं रहोगे ?

सोना चौंकी। इतनी देरके बाद वह अब बोली, 'कहाँ जायेंगे देवू भया ?"

'तीर्थ करने।'

तीर्थ करने ?"

"हाँ, तीर्थ करने। सूना घर अब मुझे अच्छा नहीं लगता है।"

सोना और कुछ नहीं कह सकी। वह माटीके खिलौना-सी मौन हो रही। कुछ देरमें रोशनीकी छटामें देवूकी नजर पड़ी—सोनाकी दोनों आखोंसे आसूकी धारा बह रही है। उसने मुँह फेर लिया। ममतामें उसे अविश्वास नहीं! प्राणोंमें उसके अपार ममता है। यहाके लोगोंको वह नितान्त अपना सगा-सा ही मानता है। एक श्रीहरिको छोड़कर किसीसे भी उसका मन मुटाव नहीं है। लोगोंकी तो बात ही क्या, यहाँके कुत्ते तक उसके आज्ञाकारी और प्रिय हैं। गाँवके कुछ कुत्ते जूठनके लोभसे फिलहाल जंक्शन चले गये हैं। आज भी उसे जंक्शनमें देखनेपर वे जरा खुशी जाहिर करते हैं—यह देवूको याद है। आज ही दो कुत्ते उसके साथ वहासे घाट तक आये थे। यहाके पेड़ पौधा, धूल-माटी तकपर उसे एक गहरी ममता है। इस गाँवके लिए कितनी ही बार उसने कितनी कितनी कल्पनाएँ की है! फुरसतके समय कितनी बार उसने नक्शा बनाकर यहाँकी घाट बाटकी नयी योजना बनायी है। कहाँ पुलिया बननेसे ठीक होगा वहाँकी ऊबड़ खाबड़ राहको समतल करनेसे सुविधा होगी, टेढ़ा रास्ता सीधा होनेसे ठीक होगा, बन्द रास्तेको दूसरे गाव तक जोड़ देनेसे अच्छा रहेगा—कितना सोच-सोचकर उसने नक्शा बनाया है। गाँवके और इलाकेके लोग भी उसे प्यार करते हैं—उसे मालूम है। वही लोग उसे अजाति भी कहते हैं उसपर कलंककी कालिख पोतते हैं, पीठ पीछे उसपर व्यंग्य कसते हैं—मगर तो भी वे उसे प्यार करते हैं। उस प्यारको देवू अपने हृदयकी गहराईसे अनुभव करता है। लेकिन उस ममताकी ओर पलटकर देखनेसे जाना न हो सकेगा। अपनेको संयत करके मुँह फेर कर उसने कहा 'तुम्हारे लिए जिस व्यवस्थाकी बात मैंने कही थी उसमें तुम्हें आपत्ति तो नहीं है ?"

जमीनकी तरफ ताकती हुई सोनाने दो एक बार होंठ हिलाया—कोई बात नहीं निकली।

देवू कहता गया—'मेरी यही इच्छा है। सोच देखो। इससे कोई अच्छी व्यवस्था तुम लोगोंकी नहीं हो सकती। जंक्शनके स्कूलमें नौकरी करोगी,

पढ़ोगी। तनख्वाह, वृत्ति आदिको मिलाकर पन्द्रह-सोलह रुपये हो जायेंगे। उन्हें थोड़ा दबानसे कुछ ज्यादा भी हो सकता है। अपनी जमीन मैंने सतीशको बँटया पर दे दी। वह तुम्हें हर महीने एक मन चावल दे जाया करेगा। स्वाधीन रहोगी। आगे मैट्रिक पास कर लोगी तो नौकरीमें और भी तरक्की होगी। लिखना-पढ़ना सीखनेसे मनका बल भी बढ़ेगा। फिर तो तुम्हीं कितनोंको आश्रय दोगी—लालन-पालन करोगी। और तबतक गौर भी जरूर लौट आयेगा।'

देबू चुप हो गया। सोनाके जवाबकी राह देखने लगा। लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। देबूने फिर पूछा, "चाचाजी ?"

एकाएक अनुगृहीतकी नाई मान लेने-जैसी सोनाकी माँने मान लिया—"तुम जो कह रहे हो, वही करेंगी बेटे !"

देबूने कहा "सोना ?"

'ठीक है !"—सोनाने मुख्तसर-सा उत्तर दे दिया।

मुँह घुमाकर देबूने सोनाकी तरफ देखा। वह अभीतक अपनेको सँभाल नहीं पायी थी। उसकी आँखोंके कोनेका आँसू अभीतक सूखा नहीं था।

देबू उठा। यह सब न जाननेके अभिनयमें ही ढँका रहे तो अच्छा। नहीं तो बहुतेरे रोयेंगे।

तीन दिनके बाद जब देबूने विदाई ली तो वास्तवमें बहुतेरे लोग रोये।

बाउरी लोग रोये। सतीशके दोनों होंठ काँप रहे थे आँखोंमें आँसू टलमल कर रहा था। वह बोला, "अब हम लोगोंका खयाल कौन करेगा गुरुजी ?"

पातू नहीं था। वह अनिरुद्धके साथ जा चुका था नहीं तो वह भी रोता। पातूकी माँ जोर-जोरसे रो पड़ी—'हाय री बिलू बेटी तेरे लिए मेरा जमाई संन्यासी हो गया।'

आश्चर्य था कि इनमें-से दुर्गा नहीं रोयी। खीजकर उसने मात्र कहा, "मौत मेरी ! तू यम भी।"

देबूके अपने-सगे रोये। रामनारायण रोया हरीश रोया श्रीहरिने कहा 'अहा आदमी बड़ा भला था। लेकिन अब देबू चाचाने अच्छा रास्ता चुन लिया है।

हरेन घोषाल भी रोया— ब्रदर फिर आना।

देबूसे एकान्तमें मिलकर जगन डॉक्टर भी रोया। कहा, मैंने भी जंक्शनमें जगह मुराद ली है। यहाँका सब बेंच-बाचकर वहीं चला जाऊँगा। इस गाँवमें अब

नही रहूँगा।"

इरशाद आया था। उसने भी आँसू बहाकर कहा, "देबू भाई, धरमके काम में बाधा नही डालनी चाहिए। मै मना नही करूँगा। खुदा ताला तुम्हारा भला ही करेंगे। लेकिन मेरा कोई दोस्त नही रहा।"

रहम नही आया। लेकिन वह भी रोया शायद। इरशादने ही कहा, "सुनकर रहम चाचाकी आखोमे झर-झर पानी बहने लगा। कहा इरशाद, तुम उसे मना करना। मै तबाह हो गया हूँ—यह शक्ल दिखानेमें शर्म आ रही है। नही तो मैं जाता, जाकर देबूसे कहता।"

मयूराक्षी पार करके वह एक बार पलटकर खड़ा हो गया। पचग्रामकी ओर ताकते हुए खड़ा हुआ। उस पारके घाटपर एक भीड खडी थी। देबू जा रहा है—लोग देख रहे थे। उनके पीछे बाँधपर कई जने थे। दूर—शिवकाली पुरके बाहर औरतें खडी थीं।

देबूको खयाल आया एक समय यह रिवाज था। उस समय कोई जाता था तो गावके लोग उसे विदा करने आते थे। पचग्राममें जब घर घर धान था जवान लोग थे, हँसी-खुशी थी, तो जब बूढे तीरथको जाते थे गाँवके लोग इसी तरह उन्हे विदा देने आते थे। धीरे धीरे वह रिवाज उठ गया। कहा जाये तो अपने-आप ही उठ गया। आज सुबहसे शाम तक खटनेके बाद भी लोगोको अन्न नही नसीब होता ताकत नही है—हड्डियोंके ढाचेसे लोग रोगसे मायूस, रोग से जजर हैं—फिर भी वे आये है। इतनी दूर चलनस बहुत-से लोग हाफ रहे है—तो भी आये है! निराशा भरी आँखोसे अपने जानेवाले मित्रको देख रहे है।

देबूने उनकी ओरसे मुँह फेर लिया। न, अब नही! हाथ उठाकर सबको नमस्कार करके उसने अतिम विदाई ली। वह अब नही लौटेगा। उसे मालूम है लौटनेपर भी अब पचग्रामको नहीं देख पायेगा। यहाँके लोगोका परित्राण नही। जिन्दगीके पेडकी जडमें कीडा लग गया है। पचग्रामकी मिट्टी रहेगी—लोग नही रहेंगे। पत्ते झडे हुए पेड-जैसे पचग्रामका रूप उसकी आँखोमें झलक उठा।

न वह अब वापस नही आयेगा।

आयी नही तो सिर्फ सोना और उसकी माँ। सोनाकी वजहसे उसकी माँ नही आ पायी। दुर्गाने बताया सोना रो रही है। उस दिन बापके कैद होने की सुनकर बिस्तरपर पडी मुँह गाडकर रोना जो शुरू किया सो तबसे लगातार रो रही है।'

देवू कुछ क्षणोंके लिए सन्न सा खड़ा रहा। जाते वक्त सोना और उसकी माको नही देख पाकर वह जरा दु खी हुआ। सोचा, उसने अच्छा ही किया। वह अब नहीं लौटेगा।

कई महीनोंके बाद।

देशमें, सारे भारतवर्षमें फिर देश प्रेमकी एक लहर सी आयी। जादू-मन्तर से मानो प्रत्येक प्रदीपमें रोशनी जल उठी। एक अनोखा जोश! उस जोशसे शहर गाव चपल हो उठे—गाँवोंके झोपडाको भी उसका स्पर्श लगा। सन् १९३० साल्का कानून भग आन्दोलन शुरू हो गया। पंचग्राममें भी जोश जागा।

जगन डॉक्टर जक्शन स्टेशन तक आया था। पहनावेमें खद्दरकी धोती कुरता, सिरपर टोपी। डॉक्टर भी उस जोशमें मतवाला था। जिला काँग्रेस कॅमिटीके सेक्रेटरी आये थे, वह उसीको विदाई देने आया था। गाडीपर उन्हें सवार करा दिया। गाडी चली गयी। जगन लौटा। कि किसीने उसकी पीठपर हाथ रखकर कहा, 'डॉक्टर!"

जगनने घूमकर देखा। आनन्द और उत्साहसे वह मानो लहक उठा। दोनों हाथ फैलाकर उसने देवूको छातीसे लगाकर बोला, "देवू भाई!"

"हाँ डॉक्टर मैं लौट आया।"

'आ! तुम लौटोगे म जानता था। म जानता था!"

हँसकर देवूने कहा, "जानते थे!'

"रोज ही तुम्हें याद करता रहा, रोज हजार बार तुम्हारा नाम लेता था। यह भला झूठा हो सकता है देवू भाई! हृत्यमे पुकारनेपर परलोकसे आकर मनुष्यकी आत्मा मिलती है तुम तो धरतीपर, इसी देशमें थे।' और डॉक्टर फिर जोरसे हँस पडा।

देवूने दीर्घ नि श्वास छोडकर कहा, "नही भाई मनुष्यकी आत्मा अब नही आती। तीन महीने तक निरन्तर पुकारते रहनेके बाद भी तो मैं कुछ नहीं देख पाया।'

इस बातमे डॉक्टर थोडा बुझा-बुझा-सा हो गया। चुपचाप चलते हुए वे नदीके घाटपर पहुँचे। देवूने कहा "जरा बैठो डॉक्टर।'

"बैठनेका समय नही है भाई। म चलूँ। आज मीटिंग है।

"मीटिंग?'

"काग्रेसकी मीटिंग। अपने यहाँ हम लोगोंने आन्दोलन शुरू कर दिया है न। आज शराबवन्दीकी मीटिंग है।"

देबू चमकती आखो डॉक्टरको देखता रहा।

डाक्टरने कहा, 'तुम गये। अचानक एक दिन बहुत बडा एक झण्डा लिये तिनकौडीका बेटा गौर आया। काग्रेसका झण्डा। बोला—छब्बीस जनवरीको उसे फहराना है।"

"गौर लौट आया है?"

"हा। वही तो अभी हमारे यहाँ काग्रेसका सेक्रेटरी है। यहाँसे भागकर वह काग्रेसका स्वयसेवक बन गया था। गाँवमें काम करनेके लिए लौट आया है। तुम्हें नही पाकर बेचारा बडा मायूस हो गया। कहा 'देबू भया नही है! यह सब करेगा कौन?' मुझसे रहा नही गया देबू भाई, उतर पडा मदानमें।' उत्साहसे उमगकर डॉक्टर वह कहानी कहता गया। कहा, 'घर घर चरखा चल रहा है। लगभग सभी बाउरी-मोचीने शराब पीना छोड दिया है। गाँवमे पचायत कायम की है। चारो ओर मीटिंगें हो रही है चलो, अपनी नजरसे देखना। अब तुम आ गये न बाढ ला दूँगा। तुमको अब छोडूगा नही। तुमने जो सोच रखा है कि दो दिनम चला जाऊगा—सो नही होगा।"

देबूने कहा, म जाऊँगा नही डॉक्टर। उसीके लिए तो लौटा। तुमसे तो मने बताया—इन कई महीनोमें बहुत घूमा। छब्बीस जनवरीको म इलाहाबादमें था। वहा उस दिन जवाहरलालजीने झण्डा फहराया मैंने देखा। उस रोज गाँवके लिए मेरा जी टन टन् कर उठा था। मै उस दिन रोया था। जीमें हुआ सभी जगह झण्डा फहरा, शायद हमारे पचग्राममें ही नही फहरा। वहाँ छातीमें दुख छिपाये लोग सिर झुकाकर घरमें ही बठे रहे। लौट आनेकी भी इच्छा हुई थी। पर मनको जबरदस्ती समझाया नही जिस रास्ते निकला हू उसीपर चलू। उसके बाद कुछ दिन तक त्रिवेणी सगमपर झापडा डाला। रात दिन बिलू और मुन्नेको पुकारता था। अच्छा नही लगा। काशी आया। हरिश्चन्द्र घाटपर जाकर बठा रहता था। इसी श्मशानमें हरिश्चन्द्रका रोहिताश्व जी गया था। लेकिन—"

कुछ देर चुप रहकर देबूने आगे कहा 'शायद हो कि तुम्हारी बात झूठ नही हो। प्राणोंसे पुकारनेपर परलोकका आदमी आकर मिलता है। हो सकता है म हृदयसे पुकार नही सका। न्यायरत्नजी तो वहा थे। उन्होंने मुझसे कहा, तुम लौट जाओ गुरुजी। तुम्हारा यह रास्ता नही है। इसमें तुम शान्ति नही पाओगे। और ध्यानम भगवान् मिलता है। लेकिन मरा हुआ आदमी नही मिलता,

वह फिर नही लौटता। बाहर देखनेकी बात तो पागलकी ह, मनमें भी नहीं मिलता। जितना ही दिन बीतता है, वह और खोता चला जाता ह। नही तो मौतके डरसे लोग अमृत क्या ढूँढते? अपने शशिको मैं भूल गया हूँ गुरुजी। म तुमसे सच कहता हूँ उसका चेहरा भी मेरे सामने धुँधला हो गया है। नही तो म भला विश्वनाथके बेटे अजयको लेकर फिर गिरस्ती बसाता?"

"इसके सिवा"—देवूने कहा, "यायरत्नने एक बात और कही, कि जो मर जाता ह, उसे फिर दुनियामें खोजकर नही पाया जाता, वह आदमीके मनमें भी नही रहता। रहता वह उसीमें ह जो वह दे जाता ह। शशि मुझे सहनशीलता दे गया ह। मुझमें वह उसीमें जिन्दा ह। तुम्हारी स्त्रीको मैंने एक दिन देखा था। शान्त, हँसमुख। तुम्हें मैंने बचपनसे देखा है। तुम बडे उग्र थे। बडे असहिष्णु। आज तुम ऐसे सहनशील हो गये हो अपनी स्त्रीकी बदौलत। तुम जिसे बाहर खोज रहे हो, वह वे नही, तुम्हारी घर गिरस्तीकी कामना ह!" देवू चुप हो गया। जगन भी कोई जवाब नही दे सका।

कुछ देर चुप रहकर उसने कहा, "म आज भी ठीक-ठीक समझ नही सका डॉक्टर कि मेरा मन वास्तवमें चाहता क्या ह! जिलू मुनेको सोचने बठता हूँ तो उसीमें गायकी, तुम लोगोंकी याद आ जाती है। तुम्हारी, दुर्गाकी, चौधरी की याद आती ह। गौरकी—खर, वह गतान आ गया!"

डाक्टरने कहा, "अनोखा उत्साह ह गौरमें। उसकी बहन सोना भी खूब काम करती है। चरखेका स्कूल चलाती ह। बहुत बढिया धागा कातती ह।

"सोना! वह पढती ह न? नौकरी कर रही ह?"

हाँ। लेकिन नौकरी अब रहेगी या नही, सन्देह ह।"

देवू कुछ देर चुप रहकर बोला, "नही रहेगी, न सही। यही तो मैं सोचता था डाक्टर। जब चारो तरफ जुलूस बठक होते देखता था—शराबीने शराब छोड़ दी, नशेबाजोंने नशा छोड दिया, व्यापारीने लोभ छोडा, धनी, जमींदार, प्रजा, खेतिहर, मजूर एक साथ मिलकर चल रहे ह—तो मेरी आँखोंमें आँसू आ जाता था। सच कहता हूँ डॉक्टर, आँसू आ जाता था। लगता, हमारे पचग्राममें कोई परिवर्तन नही हुआ—कुछ नहीं। और अन्त तक म नही रह सका—भागा आया।

डॉक्टरने कहा 'चलो दगना, बहुत काम हुआ है।' फिर हँसकर पीठपर थपकी देकर बोला, "जो गौर चेलाको छोड गये हो!'

गौर दीयेकी लौ-सा जल उठा—"देबू भैया !" सोनाने बहुत करीबसे प्रणाम करके कहा, 'लौट आये !"

दुगाने जिसे कोई लाज सकोच नही, गाढे स्वरसे सबके सामने ही कहा, "जी जुडाया जमाई-गुरुजी ! '

गौरने कहा, "यही मीटिंग होगी आज । सबको यही बुलाओ, खबर कर दो । कहो, देबू भया आये हैं ।" फिर वह बाहर निकल पडा ।

देबूके ही घरमे काग्रेस कमिटीका दफ्तर था । अपने ओसारेपर बैठकर देबूने देखा—गौरने तयारीमें कोई कसर नही रखी । सोनाने देबूको बुलाया—आइए भया, हाथ मुह धो लीजिए ।

घरके अन्दर जानेपर देबू चकित रह गया । घरकी शक्ल सूरत बदल गयी थी । जतनसे चारो तरफ घर झकमक कर रहा था । देबूने कहा, ' वाह ! कौन करता है इसकी देखभाल ?"

सोना बोली, "म । हम लोग तो यही रहते ह ।"

देबूने पूछा, ' चाचीजी कहां है ? '

सोनाने कहा, मा नही रही देबू भया !

देबू चौंक उठा—' चाचीजी नही रही !

'नही । दो एक महीना हुआ गुजर गयी ।"

दबूने लम्बा नि श्वास छोडा । चाची बडी दुखिया थी । हाथ मुँह धोकर देबूने सूटकेससे शहरकी एक साडी निकाली— यह तुम्हारे लिए लाया हूँ ।'

सोनाका चेहरा दमक उठा । लेकिन तुरत वह चमक फीकी हो गयी । म्लान मुखसे बोली, यह ता लाल चौडी कोरकी साडी ह भैया ।

देबूको खयाल आया, अरे हा, सोना तो विधवा ह । इस बातकी याद ही नही थी उसे । जरा देर चुप रहकर बोला, "तो क्या हुआ । तुम पहनना । म कहता हूँ, पहनना ।"

गौरने आकर कहा, ' चलिए देबू भैया, सब लोग आ गये । '

देबू बाहर निकला । सारे गावके लोग आये थे । देबूको देखकर सबका चेहरा खिल उठा । दुबले भूखसे सूखे हुए चेहरोंपर दो आखें जलने लगी । जिस दिन देबू जा रहा था, उस दिन यही आँखें बुझते हुए दीयेकी लौ-सी थी । प्राणकी हविके योगसे आज वही आँखें फिर दमक लिये जल उठी । उच्छ्वास, जोश, जागृतिकी चचलतामे व दुबले लोग दृढ होकर रीढ़ सीधी किये बठे थे ।

देवू अवाक हो गया। वह यह सोचकर चला गया था कि पंचग्राममें लोगोंका विनाश निश्चित है—वे लोग फिर सिर ताने खड़े हो गये, उनके गलेमें स्वर जागा, आंखोंमें दमक आयी, कलेजेमें एक नयी आशा उगी।

ओसारेपर-से देवू लोगोंके बीचमें पहुँचा।

सत्ताईस

तीन सालके बाद। सन उन्नीस सौ तैंतीस।

जिला जेलका फाटक खुल गया। सुबहका समय। सूरज नहीं उगा था, महज चारों ओरके अँधेरेको मिटाकर भोरकी रोशनी जाग रही थी। पूरब क्षितिजपर ज्योतिलेखाके औचक क्रम विकासकी रेखाएँ भी नहीं शुरू हुई थी। सिर्फ चिड़ियाँ लगातार चहक रही थी।

जेलका फाटक खुल गया। देवू बाहर निकला। कानून भंग आन्दोलनमें वह गिरफ्तार हुआ था। डेढ़ सालकी सजा हुई थी। सन तीसके जूनमें जिले भरमें सभा और जुलूसकी मनाहीका आदेश जारी हुआ था। उस आदेशको तोड़कर उसने जुलूस निकाला था, सभा की थी। उसे न केवल सजा हुई थी, माथेपर चोट भी आयी थी। डेढ़ साल पूरा होनेके पहले ही—गान्धी इरविन समझौतेके मुताबिक—उसके छूटनेकी ही बात थी। गिरफ्तार किये गये अधिकाश लोग ही छूटे, लेकिन देवू छूटते ही नजरबन्द कर लिया गया। फिर जेलमें रहा। और छुटकारेका आदेश आनेपर आज वह जेलसे छूटा। गाड़ी बहुत तड़के ही थी। छुटकारेका आदेश आनेपर पहले दिन साँझको देवूका मन बड़ा चंचल हो उठा था। उसने अधिकारियोंसे कहा था—"यदि कृपा करके ऐसा कर दें कि मैं सुबहकी गाड़ी पकड़ सकूँ तो बड़ा अच्छा हो।'

अधिकारियोंने उसकी बात मान ली। स्टेशन जानेके लिए तड़के मोटरका भी इंतजाम कर दिया था। देवू जेलसे निकलकर बाहर खड़ा हुआ। दूरपर मोटरका भोंपू सुनाई पड़ रहा था। जेलकी चहारदीवारीके चारों ओर जेलके खेत। खेतके चारों तरफ ऊँचा और चौड़ा अड्डा। अड्डेपर घने ऊँचे पेड़ोंकी कतार। उस कतारमें झाऊके कई ऊँचे ऊँचे पेड़ खड़े थे और सुबहकी हवामें सन्-सन् कर रहे थे। तुरत जेलसे छूटे हुए देवूको वह आवाज बड़ी रहस्यमय

लगी। लगा, उन पेडाकी चोटीपर दूरके किसी आह्वानकी गूँज हो रही है। दूसरे ही क्षण उसे हसी आयी—उसे कौन बुलायेगा ?

फिर जीमें हुआ, क्या नही, पचग्रामके लोगोके हृदयमें वह बसा उछाह देख आया ह—सागरके ज्वार-जसा ज्वार—उनके उन उमगे प्राणोमें उसके लिए कितनी ममता ह ! वही लोग उसे बुला रहे हैं। गौर, जगन, हरेन, सतीश, ताराचरण, भवश, हरीश, इरशाद, रामनारायण, अटल, दुर्गा दुर्गाकी मा—सभी उसकी राह देख रहे ह, सभी उसे बुला रहे हैं ! सोना—सोना उसकी राह देख रही ह। अब तो शायद वह मट्रिककी परीक्षा देनेकी कोशिश कर रही होगी। जेलम उसे खबर भी मिली कि वह पढ रही ह। सोनाने खुद भी उसे चिट्ठी दी ह। उसकी लिखावट, उसके पत्रकी भाषासे देबूको बडी खुशी हुई। कभी-कभी हरत भी हुई।

इस लम्बी सजाने अरसेम उसमें भी बहुत परिवतन हुआ। सजाके कष्टके बावजूद बहुतेरे नजरबन्दोके रहनके सुयागको वह जीवनका एक आशीर्वाद मानता ह। इस बीच उसने काफी पढा भी। एक लम्बे अरसेके बाद खुली धरतीपर खडा होकर उसने अनुभव किया कि धरतीका रग मानो बदल गया ह। सुर बदल गया ह। पहले एसे जेल जानके पहले उस झाऊके पेडकी आवाज कानामें आनेपर भी वह इस ढगस पकडम नही आती और आती भी तो लगता कि यह उस पारकी पुकार ह—मयूराक्षीक किनारे बिल्व और मुनेकी पुकार ह, साझके बाद ताडके पत्तापर हवाके एक शब्दने जिस पुकारका इशारा देकर उसे देश-देशान्तरम भटकाया था—वही पुकार।

बस आयी। देबू उसपर सवार हो गया।

बस सामने चल पडी। शहरके प्रान्तसे प्रान्तरमें लाल धूलिसे भरी सडक। सामने पूरब क्षितिज। क्षितिजपर ज्योतिर्लेखा—रह रहकर रगोकी छटाका रूपान्तर ! धीरे धीरे रक्तराग घना हो रहा था। सूरजके उगनमें देर न थी। देबू गाँवके ही बारमें सोच रहा था। जेलमें उसने बहुत सोचा विचारा, बहुतरी किताबें पढी। फलस्वरूप वह एक बडी अच्छी योजना लिये लौट रहा था। अब वह गाँवको बड अच्छे ढगस गढेगा। जो उत्साह, जो जागृति उन हड्डिया के ढाँचामें जिस महासजीवनीका सचार वह देखकर आया, उससे वह कल्पना कर रहा था कि पचग्रामक लोग जुलूस निकालकर चल रहे हैं। टूटे रास्तोका सुधार करके, नदी-नालापर पुल बाधकर, काँटेकी झाडियाको साफ सुथरा करके, श्मशानकी हड्डियाको हटाकर वे उन्नतिकी राहपर बढ रहे ह।

बस स्टेशनपर रुकी।

देवू उतर पडा। एक छोटा सा बक्स और हल्का-सा बिछौनेके सिवा और कोई सामान नही था। दोनोको अपने ही हाथमें लेकर उतर पडा।

स्टेशनका प्लेटफार्म उत्तर-दक्षिन है। सामने पूरब। सूरज उग रहा था। स्टेशनके प्रान्तरके उस छोरपर पास-पास कई बस्तियाँ थी। उन बस्तियोमें ढाक बज रहा था। आश्विनका महीना। पूजाका ढाक बज रहा था। प्लेटफार्म पर घूमते घूमते उसे मीठी-सी खुशबू मिली। उसको सदाकी जानी चीन्ही—हरसिंगारकी खुशबू थी। उसने चारो ओर नजर दौडायी। प्लेटफार्मकी रेलिंग के उस पार रेल-कर्मचारियोके क्वाटरोके पास हरसिंगारका एक बडा-सा पेड नजर आया। नीचे बेशुमार फूल बिछे थे। सवेरेकी हवामें अभी भी टुपटाप् फूल चू रहे थे। उसे अपने घरके सामनेवाले पेडकी याद हो आयी। सुबहकी हवाने भी उसका सर्वांग मानो बसा तो कर उठा—आँखें स्वप्निल हो आयीं।

टिकिटकी घण्टी बजी तो उसे खयाल हुआ।

टिकिट कटाकर वह फिर प्लेटफार्मपर खडा हुआ।

प्लेटफार्मपर धीरे धीरे भीड बढने लगी। यहा-वहा अपनी अपनी गठरी मोटरी लिये मुसाफिर कुछ बठे थे—कुछ खडे। दो चार चीन्हे चहरे भी नजर आये। सब शहरी लोग—कोई वकील, कोई सुनार कोई व्यापारी। देवू उन्हें पहचानता था। उस युगमें देवूको लगता था ये लोग मान्य व्यक्ति हैं। इसीलिए वे उसके मनपर परिचयकी एक छाप छोड गये थे। वे देवूको नही पहचानते। अचानक उसे नजर आया, कंकनाके एक जमीदार बाबू भी है। मचेमें दरी डालकर प्लेटफार्मपर जम गये हैं—गुडगुडीसे तम्बाकू पी रहे है। उनकी पुरानी चाल अभी भी बरकरार है। चाहे जहाँ जायें गुडगुडी-तम्बाकू और गगाजलकी सुराही साथ जाती है। गगाजल छोडकर वे दूसरा पानी नहीं पीते। उस समय गगाजलके इस प्रेमके लिए देवू इस भलेमानसकी खातिर करता था। जो भी हो अपनी यह निष्ठा उन्होने कायम रखी है।

"आपसे एक बात पूछूँ?'

देवूने मुँह घुमाकर देखा—"उसके पास ही मस्ते साहजी पोशाकमें एक भला आदमी खडा है। साहबी पोशाकके बावजूद भला आदमी अधभरे धोती-कुरता वाले बगाली बाबू-सा ही लगा। मध्यवित्त। उसने पूछा—'मुझसे कह रहे हैं?'

'जी हाँ। आपका घर क्या शिवकालीपुर है?"

'जी। क्यों?'—देवूने समझा वह सी॰ आइ॰ डी॰का आदमी है।

'आपका नाम शायद देवनाथ घोष है?'

"हाँ।"—देवूका स्वर जरा सख्त हो आया।

"जरा इधर आइएगा?"

"क्या?"

"जरूरत है।"

"आपका परिचय पूछ सकता हूँ?"

"बेशक। मेरा नाम है जोसेफ नगेन्द्र राय। मैं ईसाई हूँ। पहले यही घर था। लेकिन पाँच छह सालसे आसनसोलमें रह रहा हूँ। यहाँ अपने एक आत्मीयके पास आया था। आज आसनसोल वापस जा रहा हूँ। मेरी स्त्रीने कहा—'वे हमारे गुरुजी देवनाथ घोष हैं।' मैंने आपके बारेमें उनसे बहुत-बहुत सुना है। आपकी सजा और नजरबन्दीके समय भी खोज पूछ की थी। शायद आज छूटे हैं?"

देवू अवाक हो गया। कुछ समझ नहीं सका। उसने सिर्फ 'हाँ' कहा।

"मेरी स्त्री आपसे जरा मिलना चाहती है।"

"आपकी स्त्री?"

"जी। आपको कृपा करके जरा चलना ही पड़ेगा। वहाँ खड़ी है।"

देवूने देखा—"लम्बी साँवली-सी एक औरत जूता और आधुनिक रुचिकी साफ-सफेद साड़ी पहने उन्हीं लोगोंकी तरफ ताक रही थी। बगलमें उँगली पकड़े ढाई-तीन सालका एक लड़का। उसके मुन्ने-जैसा।

उसे देखकर देवूके मनमें चौंक-सी हुई। कौन है यह? चेहरा तो चीन्हा हुआ सा लगता है! बड़ी-बड़ी आँखोंमें उज्ज्वल अपलक दृष्टि नुकीली नाक बहुत ही पहचानी-सी! बहुत ही जानी चीन्ही स्त्री अनपहचाने परिवेशमें नये ढंग नयी साज सज्जामें खड़ी है जिसमें उसका नाम और परिचय दब गया है। हैरान और थिर आँखों ताकता हुआ देवू बढ़ा जा रहा था—वह औरत भी कई कदम बढ़ आयी शायद बहुत करीब और आमने-सामने खड़ी होनेमें देर उसे सही नहीं जा रही थी। हँसकर वह बोली 'मितवा!'

पद्म! लुहार-बहू! देवूके अचरजकी सीमा नहीं रही। अशेष आश्चर्यसे वह पद्मकी ओर ताकता रह गया। वही पद्म? आँखोंमें अस्वस्थ जलती-सी नजर, पागल अपराधी-से कदम फटे कपड़े दुबली देह स्वरमें ऊष्मा तीखापन, बातोंमें रुखाई—वही लुहार-बहू?

पद्मने फिर कहा मितवा! कुशल है न?"

देवूने आगेमें आकर कहा 'मितनी? तुम?"

"हाँ। पहचान नहीं सके, क्यों?'

देवूने मान लिया, "नहीं। नहीं पहचान सका। मगर मन कह रहा था, चीन्हता हूँ यह हँसी पहचानी-सी है यह खिंची हुई आँखें जानी-सी यह बनावट चीन्ही हुई—फिर भी ठीक नहीं कर पा रहा था कि कौन है!'

पदमका चेहरा अनोखी हँसीसे खिल उठा। उसने बच्चेको अपनी गोदमें उठाकर कहा "मेरा लड़का!"

पलमें देवूकी आँखें भर आयीं। क्यों सो नहीं मालूम। दोनों आँखें मानो स्पर्श कातर हो—रस भरे फल से पद्मके उन दो शब्दोंको छूअनसे फट गयीं!

पद्मने फिर कहा "इसका नाम क्या रखा है, मालूम है?"

देवूने पूछा, 'क्या?'

"डेविड देवनाथ राय!"

बगलमें नगेन्द्र रायने कहा 'आपके नामपर नाम रखा है। ये कहती हैं, हमारा बच्चा गुरुजी-जैसा आदमी बनेगा।"

देवू चुपचाप हँसा।

पद्मने गाँवके लोगोंकी खोज-पूछ शुरू की। सबसे पहले उसने दुर्गाके बारेमें पूछा।

देवूने कहा 'अच्छी ही होगी। मैं तो आज तीन सालके बाद लौट रहा हूँ मितनी!"

पद्मने कहा "लक्ष्मी-पूजाके दिन दुर्गाकी याद आती है। लक्ष्मी-पूजा तो अपने यहाँ होती नहीं लेकिन हमें सेन है। नया धान होता है तो चावलका पकवान बनाती हूँ। उस दिन याद आती है। षष्ठीके दिन याद आती है।"

देवू हँसा। खुशीसे उसका हृदय मानो भर गया। पद्मका यह रूप देखकर उसका तसिकी सीमा नहीं रही!

'ऐ मारो घण्टी ट्रेन आता है।

देवूने मुड़कर देखा, लाइन क्लियरवाला लोहेका गोल फ्रेम लिये नीला पाजामा पहने एक आदमी आ रहा है। उसे तुरत अपनी भाईकी याद आ गयी। वह किसी भी प्रकारसे अपनेको सँभाल नहीं सका। बोल पड़ा—'बीचमें अपनी भाई आया था मितनी!"

पद्म स्थिर दृष्टिसे देवूको देखती रही।

देवूने कहा 'कलकत्तेमें मिस्त्रीका काम करके वह बहुत रुपया ले आया था।'

बाधा देकर पद्मने कहा, उसकी बात रहने दो। अब तो मैं तुम्हारी वह लुहार-बहू नहीं हूँ।'

उसकी बात सुनकर देवू हरान रह गया। उसकी बातचीत तकका ढग बदल गया है!

पदम बोली "उसे अभावो कष्टोसे छुटकारा मिला, उसने सुखका मुँह देखा, सुनकर मुझे सुशी हुई। लेकिन मैं इसीम सबसे ज्यादा सुखी हूँ गुरुजी। मेरा मुना मेरा घर—गुरुजी मो इन्हें बडे कष्टसे बनाया ह! पर काल?'— कहकर वह हस उठी— 'पर काल मेरे माथेपर रहे। मैंन इसी कालमें स्वग पाया ह। मेरा मुन्ना! —और फिर उसने बच्चेको छातोसे ज़ोरोसे चिपका लिया।

ठग ठग-ठनन-नन—गाडीकी घण्टी बजी।

नगेन्द्र रायने देवूका हाथ दबाकर कहा 'लेकिन म आज आपसे बात नही कर पाया!"

देवूने कहा, "अपने बेटेके ब्याहमें न्योता दीजिएगा मं आऊँगा।

पद्मने कहा आओगे गुरुजी?"

क्या नही आऊँगा मितनी।

गाडीपर बठकर आँखें बन्द करके वह पद्मकी उस अपरूप छविका मन ही मन ध्यान करने लगा। उसकी छवि अकस्मात गायब हो गयी और सोनाकी याद आयी। पत्र लिखकर सोना क्या ऐसी ही सार्थक नही हो उठी होगी! ज़रूर हुई होगी।

वह जब जक्शनमें उतरा तो दस बज रहे थे।

शरदकी साफ और चमकती धूप चारो तरफ मलमला रही थी। आसमान गहरा नीला—बीच-बीचम सफेद हल्के मेघोके टुकडे तेजीसे भाग रहे थे। मयूराक्षीके किनारेम बगुलोकी उजली पात देवलोककी फूलमाला-सी तिरती जा रही थी। प्लेटफार्मसे मयूराक्षीका पाट दिखाई द रहा था। नदीका पानी अब कमा कँगार नही भरी हुइ नदीम नाव उस पारसे इस पारको आ रही थी। जक्शनकी कुछ चिमनियोमे धुआँ उठ रहा था।

प्लेटफार्मसे बाहर निकलकर अपनेको छिपाते हुए उसने एक सूनी पगडण्डी पकडी। यहाँके प्राय सभी उसके जाने-पहचाने हैं। उसपर नज़र पडनेपर उसे सहज ही नही छोडेंगे। लोग उसे प्यार करते ह।

वह मयूराक्षीके घाटपर उतरा। नाव इस पार आ रही थी। इस पारके घाटपर बहुतोंसे मुलाक़ात हुई। उस पारके घाटपर भी बहुतसे लोग खड थे।

उद्यान भी देवूको देखा ! कुछ लड़के खड़े थे। वे उसी पारसे चिल्ला उठे—"देवू भैया ! देवू भैया !' उनमें से दो गाँवकी तरफ दौड़ पड़े। देवूने मुसकराकर हाथ उठाते हुए इशारा किया।

नावका मल्लाह शशी मल्लाने मुसकराते हुए कहा, "गुरुजी ! लौट आये आप !'

'हाँ। तुम अच्छे हो ?'

शशीने एक लम्बा निःश्वास छोड़ा, 'हमारा अच्छा रहना भी क्या है गुरुजी ! किसी तरह जिन्दा हैं। अदरिस्ट (अदृष्ट) का लिखा भाग रहे हैं। और क्या !"

देवूके हृदयमें शशीकी जो ज्योति थी, वह उसके बोलनेके स्वरसे फीकी हो गयी। अगल-बगल और भी जो लोग खड़े थे—वे भी कैसे बुझे-बुझे-से—मौन। मामूली दो-एक बातें पूछकर चुप हो गये। लेकिन शशीके साथ-साथ लम्बा निःश्वास सबने छोड़ा।

देवूने पूछा "बच्चे-बच्चे सब अच्छे हैं ?'

'जी हाँ। जी रहे हैं किसी तरह। सर्दी-बुखार। घरमें खानेको नहीं कपड़े नसीब नहीं। यह भादोंका महीना है—समझिए कि तकलीफकी हद नहीं।'

वही पुरानी बात—"अनाज नहीं, कपड़ा नहीं ! अनाहार, रोगसे पंचग्राम फिर मरने मरनेको है।"

देवूने दिलासा दिया अबकी बारिश अच्छी है। फसल भी अच्छी हुई है। कुछ दिनोंमें ही धान तैयार हो जायेगा। अभाव जाता रहेगा। चिन्ता क्या है ?"

शशी एक अजीब हँसी हँसा 'चिन्ता क्या है ? अब कोई भरोसा नहीं गुरुजी। सब गया !'

'देवू भाई ! देवू !" बाँधपर-से कोई चिल्ला उठा। देवूने उलटकर देखा। जगन डॉक्टर उसे पुकार रहा है। सुनते ही दौड़ा आया है। नावपर खड़े होकर हाथ उठाते हुए बोला, "जगन भाई !'

डॉक्टर चिल्ला उठा 'वन्दे मातरम !" साथ ही सभी लड़कोंने दोहराया—"वन्दे मातरम !'

देवूने भी हँसकर कहा 'वन्दे मातरम !"

डॉक्टर हाँफ रहा था। शायद दौड़ता ही आया था वह। देवूने खूब समझा कि सारे गाँवके लोग कनार बाँधकर निकलते आ रहे हैं।

शिवकालीपुरके घाटपर उतरते ही डाक्टरने उसे छातीसे लगा लिया।

लडकोंके चेहरे दमकने लगे। पहले प्रणाम करनेकी उनमें होड लग गयी। मुसकराते हुए देवूने उनके सिरपर हाथ रख रखकर कहा 'हा, हा, चलो हो गया।'

मगर फिर भी वे माननेवाले न थे। किशोर प्राणकी आवग चचलतासे वे अधीर हो उठे थे। देवूके हाथके सूटकेस और बिछौनेको यपटकर उन्होने अपने माथेपर रख लिया। कतार बाधकर पगडण्डीपर किशोरोकी सेना चली—गर्वित और उल्लास भरे कदम बढाती हुई। लेकिन तो भी देवूको इस सनामें एक अभाव खटका। कहा, गौर कहाँ ह? सबसे आग जिसे चलना चाहिए, वह कहा ह? देवूने पूछा 'डाक्टर, गौर कहाँ है?"

'गौर? —डाक्टरन कहा 'जेलस आनेके बादसे वह एक तरहस यहासे चला ही गया ह।"

"चला गया ह?

"हा। कलकत्तेमे कहीं रहता ह। बीच-बीचमें आता ह दा एक दिन रहकर चला जाता ह। अभी कुछ रोज पहले तो आया था।"

'नौकरी करता ह?

'नही, वालण्टियरी। क्या करता ह, वही जाने भया।"

अबतक लोग बाधपर पहुँच गये थे।

देवूने पूछा, "और सोना? सोना कसी ह डॉक्टर? वह—वह शायद जक्शनमें ही रहती ह न?"

"हा। उसी समयसे जक्शनमें मास्टरी करती ह। वही रहती है। बहुत ही अच्छी लडकी ह। इस बार मट्रिक देगी।"

देवूने पीछे पलटकर जक्शनकी ओर देखा। लेकिन खडे रहनेकी फुरसत नही थी। किशोर सना बढी जा रही थी—रुकना नही चाह रही थी।

सामने ही पचग्रामकी बैहार थी। आश्विनका आरम्भ। बारिश भी इस बार अच्छी हुई थी। फसल अच्छी थी। धानके पौधे खासे बढे और फले थे। नये धानके पौधे काल मेघ-से गाढे। कही-कही खेतोकी मेंडपर मसालक माथे पर सादे-सादे फूल थे। कतिकी धानम बालियाँ फूट आयी थी। यह रहा केकना वह कुसुमपुर और यह, वहाँ उसका शिवकालीपुर। वह रहा महाग्राम! महाग्रामकी तरफ़ नजर जाते ही वह जसे चोट खाकर खडा हो गया। क्षण भर-के लिए उसने आँखें बन्द कर ली। उसकी शिरा शिरामें एक दुसह मार्मिक वन्नारा प्रवाह बह गया। जगनन पीछेसे कहा, 'देवू!"

एक दीर्घ नि श्वास छोडकर देवू फिर बढा। कहा, 'डाक्टर।"

डाक्टरने कहा "क्या हो गया भाई ? रुक क्यों गये थे ?

देबूने उसकी बातका जवाब नहीं दिया। पूछा, 'न्यायरत्नजी फिर आये थे ?'

डाक्टरने उदास स्वर कहा, 'नहीं।' फिर जरा देर चुप रहकर बोला, 'विश्वनाथके बारेमें मालूम है ?'

"मालूम है। जेलमें ही खबर मिली थी।'

विश्वनाथ नहीं रहा। वह जेलमें ही मर गया।

कुछ देरके बाद अपनेको जब्त करके देबूने सिर उठाया। विश्वनाथके लिए अँधेरी रातें उसने जेलके झरोखेपर खड़े होकर रो रोकर गुजारी हैं। अब उसे रोना नहीं आता।

वह है देबुड़िया। दूर तक फैली हुई बहारमें झूमते हुए धानके सब्ज पौधे। हवाके झोंकेमें उनमें लहरपर लहर उठ रही थी। लेकिन कहीं किसी आदमीकी आहट नहीं। पास-पास आधे बादल आकाशमें पाँच गाँव—बुझे हुए-से स्तब्ध।

देर तक देबू चुपचाप चलता रहा। उसके बाद बोला, तो, जगन भाई क्या हाल हैं यहाँके ?"

'अपने यहाँके ? सब मर गये, सब खत्म हो गया। अधपेटा खाते हैं और सोते हैं। बस! वह सब-कुछ अब नहीं रहा।'

"ऐं! कह क्या रहे हो ?'

चलो, देखना।"

वे फिर चुपचाप चलने लगे। लड़के शोरगुल कर रहे थे। देबूकी वह शक्ल देखकर उनका कलरवका उत्साह ठण्डा पड़ गया। धानके खेतोंमें लबालब पानी भर लिया गया था। आश्विनका महीना—कन्याराशि। इसमें खेतोंमें पानी भर देना चाहिए।

खेतोंमें निराई चल रही थी। देबूको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सारे लोग अपरिचित हैं—सब सन्थाल हैं।

उसने पूछा, 'ये लोग कहाँसे आ गये डाक्टर ?'

जगनने कहा श्रीहरि और फेलू चौधरी इन्हें दुमकासे ले आये हैं।'

देबू और भी हैरान होकर डॉक्टरकी ओर देखने लगा।

डाक्टरने कहा ये सारे ही खेत करीब-करीब श्रीहरि और फेलू चौधरीके जबड़ेमें घुस गये हैं।

देबू सन्न रह गया पंचग्राम तबाह हो गया!'

शिवपुर बगलमें छोड़ते हुए चौधरी-तालाबको दायें छोड़ते हुए दोनों ओर बँसवारीके बीचमें कालीपुर जानेका रास्ता है।

डाक्टरने कहा, 'चौधरीजीको जिंदगीसे मुक्ति मिल गयी।'

देवू एक उदास हँसी हँसा !— 'हाँ, मुक्ति ही मिल गयी !"

लडकोंकी जमातने गावमें घुसते वक्त नही माना। वे जय-जयकार कर उठे—'जय, देवू घोषकी जय !'

गावकी ओरसे कोई दौडी आ रही थी।

अपनी आँखोंपर देवूको विश्वास नही हो रहा था ! दुर्गा है ? हा, वही तो है ! क्षारसे धायी सादी पारकी धोती, निराभरण, दुबला शरीर, चेहरेपर वह कोमल कान्ति नही—बालोंकी वह सँवार भी नही थी। वह दुर्गा यह हो क्या गयी है !

देवूने कहा, 'दुर्गा ! अरी, तू ऐसी क्या हो गयी ! तेरे शरीरकी यह दशा !"

दुर्गाका सब जा चुका था लेकिन दोनों बडी-बडी आखें रह गयी थी। उन दोनों आखोंमें तुरत पानी भर आया।

डाक्टरने कहा "दुर्गा अब वह दुर्गा नही है। दान ध्यान टोलेमें सुख दु ख हो तो सेवा—"

दुर्गा शरमाकर बोली, 'आप रुकिए भी डॉक्टर भया !'—उसके बाद बोली 'ओह, कितने दिनोंके बाद आये जमाई !"

रास्तेमें चण्डीमण्डपमें श्रीहरि दिखाई पडा। उसके कपालपर तिलक था। जगनने कहा, "श्रीहरि अब बडा धरम-करम कर रहा है।"

अट्ठाईस

दुर्गाने घर खोल दिया। घर द्वार वह साफ-सुथरा रखा करती थी—फिर भी उसने बुहारकर पानी छींट दिया।

रास्तेपर खडे होकर देवू चारो तरफ देख रहा था। सद्गोपोंके टोलेकी हालत देखकर आँखोंमें आँसू आना चाह रहा था। हर घरमें टूटन शुरू हो गयी थी। टूटे छप्परोंकी सूराखसे बहनेवाली बरसातकी जलधाराने दीवारोंको सूअर जानवरोंके नाखून-सा नछार दिया था। जगह-जगहकी मिट्टी धँस रही थी।

जगनने बहुत बढा चढाकर नही कहा पचग्रामका सब खतम हो गया।

इन कई वर्षोंमें कितने लोग जो मरे, इसका हिसाब एक आदमी नही दे सका। एकको विसुधि दूसरेने याद दिला दी। वे लोग ऐसे मरे कि मरकर खो गये। जो जिन्दे थे उनका शरीर दुबल, उस दुबलतापर अभाव और रोगके पीडनकी साफ छाप थी। गलेकी आवाज बुझी-बुझी आखोका सफेद हिस्सा पीला, निगाहें वेदना भरी। उन कालेकाले लोगोंके रगोपर और अधिक कालिमा आ गयी थी। जवानो तकके चमडेमे सिकुडनकी जजरता झलक रही थी। यही नही, लोग मानो गूगे हो गये हो।

देवूको इसका क्यास तक न था।

वह जिस दिन जेल जा रहा था उस दिनके इनके मुखडेकी याद आयी।

उफ कैसा उत्साह था। जीवनकी कसी प्रेरणामयी उमग। उस दिनकी याद से ता आज यही लगता ह कि सब खत्म हो गया।

एक एक करके बहुत-से लोग आये। धीमे धीमे कुशल क्षेम पूछा। देवूने जब उनका हाल पूछा तो उदास हो कष्टकी हँसी हँसते हुए कहा, "अरे हमारा भला-बुरा क्या!"

उनकी इस बातसे देवूको एक बातकी याद आ गयी।

सन तीसके आन्दोलनके वक्त एक रोज इन लोगोने उससे पूछा था, 'अच्छा, यह तो कहो कि इससे होगा क्या?'

उस समय देवूको भी यह सब मालूम नही था बडी धुँधली-सी धारणा थी। उसे अपनी ही एक अनोखी कल्पना थी, इसीलिए उसने लोगोको बडी आवगमयी भाषामें बताया था। वह अनोखी कल्पना अकेले उसीकी नहीं थी, पचग्रामके सभी लोगोने वैसी ही एक काल्पनिक अनोखी व्यवस्थाकी कामना की।

उस रोज देवूने कहा था, 'हमारी जो जो भी कामनाएँ ह सब इसीमे पूरी होगी—सुख, स्वतन्त्रता, अन्न-वस्त्र औषध-पथ्य आरोग्य, स्वास्थ्य, शान्ति निर्भयता। उम्मीद की थी कि अब कोई किसीपर अत्याचार नहीं करेगा। पीडन नहीं रहेगा, कोई आदमी अब जुल्म नहीं करगा लोगोके हृदयसे बुरी भावनाएँ दूर हो जायेंगी लोगोको शान्ति मिलेगी फुरसत मिलेगी उस फुरसतके समय वह खुशिया मनायेगा—हसेगा गायेगा, नाचेगा—लोगो राम देवताका स्मरण करेगा।

लोगोने स्तब्ध होकर वही सुना था।

एक आदमीने कहा था "सुनता तो कबसे यही आ रहा हूँ कि एक दिन ऐसा होगा। जसा—सतयुगमे था। बाप-दादे यही कहते आये हैं।

और इसपर देवूने आवुकतासे कहा, 'मगर अब वही होगा।

लोगोने उस वातपर यकीन कर लिया था। सतयुगकी बातपर। सतयुग क्या उतना ही होगा। गाय मोस्का रग कतई सफेद होगा—ऊँचाई होगी आदमीसे ज्यादा। गायें बेहिसाब दूध देंगी—दूध बरतनसे छलकेगा और जमीन भीगेगी। सादे पहाड-जैसे वलाका एक ही बारकी जुताईसे खेती होगी। माटीकी उपजाऊ शक्ति बेहद बढ जायेगी, हर बीयेसे पौधा होगा, नाजका कोई दाना कमजोर नही होगा। बादल नियमित पानी देंगे। पोखरे तालाव भरे रहेंगे। आदमी ऐसे दुवले और आकारमें छोटे नही होंगे—वे लम्बे तगडे और बलवान होकर दुनियामें बेखौफ घूमा करेंगे।

लम्बे अरस तक जेलमें रहनके वाद देवू दूसरा ही आदमी बन गया ह। उसकी नजरमें दुनियाकी सूरत बदल गयी ह। उसने समझा कि इस देशके लोग मरेंगे नही। वे मगलकी मूर्ति होकर नया जावन पायेंगे। बार हजार सालसे बार बार सकट आते रहे हैं—विनाशके सामने खडा होना पडा ह, उस सकट उस ध्वसकी सम्भावना जाती रही ह। लोग नये जीवनसे जाग पडे ह। इन बातोको याद करके इनमें सिर्फ बाप दादोकी ही नही युग-युगके मानवीय इतिहासके साथ उसके नये मनकी कल्पना-कामनामें एक अनोखा सामञ्जस्यका उसने प्रत्यक्ष रूपस अनुभव किया। न केवल यही बल्कि मनुष्यकी जीवनी शक्तिमें उसने अमरताका पता पाया है। अमर ही तो। मनुष्यकी छातीपर दिन दिन मनुष्यके अन्यायका बोझा बढता चला जा रहा ह, वह बोझा विन्ध्य पहाड सा बनता जा रहा ह—लोग बेदम हो रहे ह। मगर ये आदमी भी कसे अजीब हैं अजीब है उनकी सहन शक्ति कि बेदम होते हुए भी वे चुपचाप उस बोझाको ढोते चल रहे हैं। अदभुत ह उनकी आशा अद्भुत ह उनका विश्वास। वह आज भी वही कह रहा ह दिन गिन रहा ह—कब वह दिन आयेगा। आदमी—यहाँके आदमी मरेंगे नही। वे रहेंगे। वे रहेंगे। जबतक यह चाद सूरज ह।

रामनारायण यूनियन बोर्डके प्रायमरी स्कूलका शिक्षक ह। देवूकी पाठशाला उठ जानेके वादसे वही यहाँका शिक्षक ह। देवूका जाति भाई ह। उसने आकर मुसकराते हुए पूछा अच्छे हो देवू भाई ?"

उसे देखते ही देवूको इरशादकी याद आयी, वह कसा ह ? इरशाद भाई। कसा ह वह ? यही ह न ?

हाँ। पाठशाला छोडकर वह मुख्तारी पढ़ता ह और किसान-समिति बनाये हुए ह।"

"अच्छा ! इरशाद किसान-समिति बनाये हुए है ! उसके भी दिमागमें कीड़ा घुसा है ?"

"हाँ, दौलत शेखने लोग शुरू की है, तो इरशादने किसान समिति।"

"लगता है, ससुरालसे इरशादका झगडा निबटा नहीं ?" देवू हँसा।

'नहीं। लेकिन उसने फिरसे शादी की है।'

'शादी करनेके बाद भी वह किसान-समिति कर रहा है ?'—देव फिर हँसा।

लेकिन रामनारायण मजाकको समझ नहीं सका। बोला, सो तो मैं नहीं जानता भाई !"—इतना कहकर वह दूसरे प्रसंगपर आ गया—कहा ' लेकिन रहम चाचा फाँसी लगाकर मर गया देवू भाई !"

देवू चौंक उठा, "फाँसी लगाकर मर गया ?"

रामनारायण बोला 'क्षोभसे उसने गलेमें रस्सी लगा ली। बाबुओंने उसकी वह जमीन नीलाम कर ली। उसी क्षोभसे— रामनारायणने अपनी गरदन उलट ली।

देवूको काठ-सा मार गया। रहम चाचाने फाँसी लगा ली !

जगनने आकर कहा, ' खाना रखी है देवू भाई नहा लो। सब कोई जाओ अभी, अब शामको।

शामको देवू अकेला बैठा सोच रहा था।

सामनेके उस हरसिंगार पेड़की तरफ देखते हुए सोच रहा था। बिखरी बिखरी बातें। पेड़के नीचे झर धूपमें मलीन हुए फूलोंसे एक भीनी सी, बड़ी ही करुण गंध आ रही थी। शरद्की दोपहरीकी धूप झलमला रही थी। पूजा आसन्न है। कमजोर शरीर लिये भी लोग-बाग अपने अपने घरोंकी मरम्मत में लग गये हैं। वर्षाके पानीसे दीवारोंपर जो दाग पड़ गये हैं उन्हें गोबर माटीसे लीप रहे हैं। जगनने देवूसे कहा था—सब खत्म हो गया। लेकिन नहीं। लोग जी रहे हैं—जिन्दा हैं। जिन्दा रहना चाहते हैं। वे मरेंगे नहीं। वे सुख चाहते हैं स्वच्छन्दता चाहते हैं घर-द्वार चाहते हैं—और भी बहुत-कुछ चाहते हैं। सुख शान्ति स्वच्छन्दतासे परिपूर्ण नया जीवन चाहते हैं। खुद न पा सकें तो बेटे-पोतेको छोड़ जाना चाहते हैं—वे पायेंगे।

हवाका एक झोंका उधर हरसिंगारके पेड़को झकझोर गया। जो झरे हुए फूल पेड़पर अटके थे चू पड़े।

लोगोने उस बातपर यकीन कर लिया था। सतयुगकी बातपर। सतयुग क्या उतना ही होगा! गाय गोरूका रंग कतई सफेद होगा—ऊँचाई होगी आदमीसे ज्यादा। गायें बेहिसाब दूध देंगी—दूध बरतनसे छलकेगा और जमीन भीगेगी। सादे पहाड जसे बैलोंकी एक ही बारकी जुताईसे खेती होगी। माटीकी उपजाऊ शक्ति बेहद बढ़ जायेगी हर बीयेमे पौधा होगा नाजका कोई दाना कमजोर नही होगा। बादल नियमित पानी देंगे। पोखरे तालाब भरे रहेंगे। आदमी ऐसे दुबले और आकारमें छोटे नही होंगे—वे लम्बे तगड़े और बलवान् होकर दुनियामें बेखौफ घूमा करेंगे।

लम्बे अरसे तक जेलमें रहनेके बाद देवू दूसरा ही आदमी बन गया है। उसकी नजरमें दुनियावी सूरत बदल गयी है। उसने समझा कि इस देशके लोग मरेंगे नही। वे मंगलकी मूर्ति होकर नया जीवन पायेंगे। चार हजार सालसे बार बार सकट आते रहे हैं—विनाशके सामने खड़ा होना पड़ा है, उस सकट उस ध्वसकी सम्भावना जाती रही है। लोग नये जीवनसे जाग पड़े है। इन बातोंको याद करके इनमें सिर्फ बापदादोंकी ही नही युग-युगके मानवीय इतिहासके साथ उसके नये मनकी कल्पना कामनामें एक अनोखा सादृश्यका उसने प्रत्यक्ष रूपसे अनुभव किया। न केवल यही, बल्कि मनुष्यकी जीवनी शक्तिमें उसने अमरताका पता पाया है। अमर हा तो! मनुष्यकी छातीपर दिन दिन मनुष्यके अन्यायका बोझा चढ़ता चला जा रहा है वह बोझा विन्ध्य पहाड़ सा बढ़ता जा रहा है—लोग बेदम हो रहे हैं। मगर ये आदमी भी कैसे अजीब हैं अजीब है उनकी सहन शक्ति कि बेदम होते हुए भी वे चुपचाप उस बोझाको ढोते चल रहे हैं। अद्भुत है उनकी आशा अदभुत है उनका विश्वास! वह आज भी वही कह रहा है दिन गिन रहा है—कब वह दिन आयेगा! आदमी—यहाँके आदमी मरेंगे नही। वे रहेंगे। वे रहेंगे। जबतक यह चाँद-सूरज है!

रामनारायण यूनियन बोर्डके प्रायमरी स्कूलका शिक्षक है। देवूकी पाठशाला उठ जानेके बादसे वही यहाँका शिक्षक है। देवूका जाति भाई है। उसने आकर मुसकराते हुए पूछा "अच्छे हो देवू भाई?"

उसे देखते ही देवूको इरशादकी याद आयी, वह कैसा है? इरशाद भाई! कैसा है वह? यहीं है न?

हाँ! पाठशाला छोडकर वह मुख्तारी करता है और किसान समिति बनाये हुए है।"

"अच्छा! इरशाद किसान समिति बनाये हुए है! उसके भी दिमागमें कीड़ा घुसा है?"

"हाँ, दौलत शेखने लीग शुरू की है, तो इरशादने किसान समिति।"

"लगता है ससुरालसे इरशादका झगड़ा निबटा नहीं?" देवू हँसा।

"नहीं। लेकिन उसने फिरसे शादी की है।"

"शादी करनेके बाद भी वह किसान समिति कर रहा है?"—देवू फिर हँसा।

लेकिन रामनारायण मजाकको समझ नहीं सका। बोला, "सो तो मैं नहीं जानता भाई!"—इतना कहकर वह दूसरे प्रसंगपर आ गया—कहा "लेकिन रहम चाचा फाँसी लगाकर मर गया देवू भाई!"

देवू चौंक उठा, "फाँसी लगाकर मर गया?"

रामनारायण बोला, "क्षोभसे उसने गलेमें रस्सी लगा ली। बानुओने उसकी वह जमीन नीलाम कर ली। उसी क्षोभसे—" रामनारायणने अपनी गर्दन उलट ली।

देवूको काठ-सा मार गया। रहम चाचाने फाँसी लगा ली!

जगनने आकर कहा, "खाना रेडी है देवू भाई, नहा लो। सब कोई जाओ अभी, अब शामको।"

दोपहरको देवू अकेला बैठा सोच रहा था।

सामनेके उस हरसिंगार पेड़की तरफ देखते हुए सोच रहा था। बिखरी बिखरी बातें। पेड़के नीचे झरे धूपमें मलीन हुए फूलोंकी एक भीनी सी बड़ी ही करुण गंध आ रही थी। शरदकी दोपहरीकी धूप झलमला रही थी। पूजा आसन्न है। कमजोर शरीर लिये भी लोग-बाग अपने अपने घरोंकी मरम्मत में लग गये हैं। वर्षाके पानीसे दीवारोंपर जो दाग बन गये हैं उन्हें गोबर माटीसे लीप रहे हैं। जगनने देवूसे कहा था—सब खतम हो गया। लेकिन नहीं। लोग जो रहे हैं—जिन्दा हैं। जिन्दा रहना चाहते हैं। वे मरेंगे नहीं। वे सुख चाहते हैं स्वच्छन्दता चाहते हैं घर-द्वार चाहते हैं—और भी बहुत-कुछ चाहते हैं। सुख शान्ति, स्वच्छन्दताका परिपूर्ण नया जीवन चाहते हैं। खुद न पा सकें, तो बेटे-पोतोंको छोड़ जाना चाहते हैं—वे पायेंगे।

हवाका एक झोंका उधर हरसिंगारके पेड़को झकझोर गया। जो झर हुए फूल पत्थर अटके थे चू पड़े।

देबूने गौर नहीं किया। वह सोच रहा था सभी रहेंगे, एक वही मरेगा। उसकी जिंदगीमें तो यह सब आनेसे रहा। और बाल बच्चोंमें भी वह नहीं रहनेका। उसका सारा कुछ तो उसीके साथ खतम हो जायेगा!

इसी वक्त उसे हरसिंगारकी महक मिली। चौंककर उसने चारों तरफ देखा। लगा जैसे बिलूके बदनकी महक आयी। लेकिन दूसरे ही क्षण समझ गया नहीं। हरसिंगारकी ही महक है।

मगर गजब यह कि बिलूका चेहरा ठीक-ठीक याद नहीं आ रहा था। याद करते ही—कोड़ा खाये घोड़की तरह सारा हृदय चौंक उठा।

हाय रे आदमी!

ओसारेपर से वह प्राय कूदकर उतर पड़ा और चलना शुरू कर दिया। अचानक ठिठक गया। फिर हरसिंगारके पास आया। कुछ फूल चुने और चलने लगा।

तीन साल हो गये, बिलू और मुनेकी चितापर वह नहीं जा सका है। फूल हाथमें लिये वह मरघटकी तरफ चल पड़ा।

दोपहर भर चिताके ही पास बैठा रहा।

तीरथमें जानेसे पहले उसने बिलू और मुनाकी चिताको बँधवा दिया था। लगातार मयूराक्षीकी माटी पड़ते पड़ते वह चिता जाने कहाँ गुम गयी थी। पाँच-सात जगह कोड़नेके बाद आखिर उसे खोज निकाला। धोतीका छोर मयूराक्षीमें भिगोकर उसे पोंछा साफ सुथरा किया। लेकिन बार बार पोंछकर उसे मन मुताबिक नहीं चमका सका। लाचार थककर उसने उसपर उन फूलोंको सजा दिया।

बड़ी देर तक बैठनेके बाद वह हँसा। हरसिंगारके उन फूलोंसे ही उसकी तुलना चल सकती है। अबतक एकाग्र ध्यान करनेके बावजूद वह बिलू और मुनेको स्पष्ट रूपसे याद नहीं कर सका। खयाल आया—'न्यायरत्नने कहा था, अपने बेटे शशिशेखरको वे भी नहीं याद कर सकते थे। कहा भी था कि शशिशेखर उनके अन्दर उन्हीं चीजोंमें जिन्दा है जो वह दे गया है। बिलू मुना भी उसमें ठीक उसी तरहसे हैं। उनके रूप खो गये हैं। एकाएक याद हो आते हैं और फौरन गायब हो जाते हैं। अँधेरी रातमें मरघटकी हवासे उनकी अशरीरी आत्मायें हरसतका अनुमान करके गिराएँ शून्य और बेबस हो जाती हैं!'—देबू हँसा।

वेला झुक आयी। वह बस्तीको लौटा।

उसके ओसारेपर गावके लोग आकर बठे थे। कोई जोशोली चर्चा चल रही थी। इरशाद भी आया था। जगन भी आकर बठा था। देवू आकर खडा हुआ।

इरशादने उसे जकड लिया, 'आह, देवू भाई। कितने दिनोंके बाद।" गरम गरम बहस चल रही थी नवीनकृष्णकी जोतकी नीलामीपर। रामनारायण कह रहा था, "नये कानूनसे भी डिग्री रद्द नहीं होगी।"

प्रजाके अधिकार सम्बन्धी नये कानूनकी आलोचना हो रही थी। नवीन जोशमें आकर कह रहा था—"क्यों नही रद्द होगी जरूर होगी।'

जगन ध्यानसे डिग्रीको पढ रहा था। देवूको देखकर उस फसलेके कागजको रखकर बोला, 'यहाँ भी किसान-समिति कायम की जाय देवू भाई!"

इरशाद उत्साहित हो उठा। देवूने कहा, 'ठीक तो ह। कल ही करो।"

उसका मन मानो ऐसा ही कुछ चाह रहा था। जगन फौरन कागज-कलम लेकर बैठ गया। ऐन वक्तपर चीखता हुआ घोपाल आ पहुँचा—"ब्रम्र, तुम्हारी ही राह देख रहा था। मेरी तो कोई सुनता नही। अब जुट ही पडना ह।'

जगनने कहा, "तुम रुको भी घोपाल।"

देवूने हँसकर कहा 'माजरा क्या ह?'

घोपालने कहा, 'सार्वजनीन दुर्गापूजा। अबकालमें होती है। मै कबसे कह रहा हूँ। अबकी उसपर पड जाना ह।"

देवूने कहा, "हर्ज क्या है। हो।

घोपाल तुरत कागज-कलम लेकर बठ गया।

शामसे पहले बाउरी और मोची लोग पहुँचे। मिल्स काम करके लौटे थे। लौटते ही उन्हे देवूके आनेकी खबर मिली। और वे सुनते ही चले आये। उन सबका नेता वही सतीश था। वह भी आजकल मिलमें ही काम करता ह। खेती भी ह। खेतीके दिनो खेती करता हैं। मिलमें मजदूरी मिली थी। इसलिए सबने शराब पी थी। सतीशने हाथ जोडकर प्रणाम किया। कहा, 'आप लौट आये। जी जुडा गया।"

अटलने कहा, 'एक बार हमारे टोलेमें चरण रखना पडेगा।"

'क्यो? क्या बात ह?"

'गीत होगा।"

"काहेका गीत।'

"हम लोगोंका गीत।'

लिहाजा चरण रखना ही पडेगा।

देखने गौर नहीं किया। वह सोच रहा था सभी रहेंगे, एक वही मरेगा। उसकी जिन्दगीमें तो यह सब आनेसे रहा। और बाल-बच्चोंमें भी वह नहीं रहनेका। उसका सारा कुछ तो उसीके साथ खतम हो जायेगा!

इसी वक्त उसे हरसिंगारकी महक मिली। चौंककर उसने चारों तरफ देखा। लगा जैसे बिल्लूके बदनकी महक आयी। लेकिन दूसरे ही क्षण समझ गया नहीं। हरसिंगारकी ही महक है!

मगर गजब यह कि बिल्लूका चेहरा ठीक-ठीक याद नहीं आ रहा था। याद करते ही—कोड़ा खाये घोड़ेकी तरह सारा हृदय चौंक उठा।

हाय रे आदमी!

आमारेपर-से वह प्राय कूदकर उतर पड़ा और चलना शुरू कर दिया। अचानक ठिठक गया। फिर हरसिंगारके पास आया। कुछ फूल चुने और चलने लगा।

तीन साल हो गये बिल्लू और मुन्नेकी चितापर वह नहीं जा सका है। फूल हाथमें लिये वह मरघटकी तरफ चल पड़ा।

दोपहर भर चिताके ही पास बैठा रहा।

तीरथमें जानेसे पहले उसने बिल्लू और मुन्नाकी चिताको बँधवा लिया था। लगातार मयूराक्षीकी माटी पड़ते पड़ते वह चिता जाने कहाँ गुम गयी थी। पाँच-सात जगह कोड़नेके बाद आखिर उसे खोज निकाला। धोतीका छोर मयूराक्षीमें भिगोकर उसे पोंछा साफ-सुथरा किया। लेकिन बार बार पोंछकर उसे मन मुताबिक नहीं चमका सका। लाचार थककर उसने उसपर उन फूलोंको सजा दिया।

बड़ी देर तक बैठनेके बाद वह हँसा। हरसिंगारके उन फूलोंसे ही उसकी तुलना चल सकती है। अबतक एकाग्र ध्यान करनेके बावजूद वह बिल्लू और मुन्नेको स्पष्ट रूपसे याद नहीं कर सका। खयाल आया—'न्यायरत्नने कहा था, अपने बड़े नागिनिवरको वे भी नहीं याद कर सकते थे। कहा भी था कि हाँनागिनिपर उनके अन्दर उन्हीं चीजोंमें जिन्दा है जो वह दे गया है। बिल्लू मुन्ना भी उसमें ठीक इसी तरहसे हैं। उनके रूप खो गये हैं। एकाएक याद हो आते हैं और फौरन गायब हो जाते हैं। अँधेरी रातमें मरघटकी हवास उनकी अशरीरी आत्माकी हरकतका अनुमान करके निराएँ शून्य और बेजस हो जाती हैं!—देबू हँसा।

वेला थुक आया। वह बस्तीको लौटा।

उसके ओसारेपर गाँवके लोग आकर बैठे थे। कोई जोशीली चर्चा चल रही थी। इरशाद भी आया था। जगन भी आकर बैठा था। देवू आकर खड़ा हुआ।

इरशादने उसे जकड़ लिया, "वाह, देवू भाई। कितने दिनोंके बाद!" गरम-गरम बहस चल रही थी नवीनकृष्णकी जोतकी नीलामीपर। रामनारायण कह रहा था, "नये कानूनसे भी डिग्री रद्द नहीं होगी।"

प्रजाके अधिकार सम्बन्धी नये कानूनकी आलोचना हो रही थी। नवीन जोशमें आकर कह रहा था—'क्या नहीं रद्द होगी ज़रूर होगी।'

जगन ध्यानसे डिग्रीको पढ़ रहा था। देवूको देखकर उस फ़सलेके कागजको रखकर बोला, "यहाँ भी किसान-समिति कायम की जाये देवू भाई!"

इरशाद उत्साहित हो उठा। देवूने कहा 'ठीक तो है। कल ही करो।"

उसका मन मानो ऐसा ही कुछ चाह रहा था। जगन फौरन कागज-कलम लेकर बैठ गया। ऐन वक्तपर चीखता हुआ घोषाल आ पहुँचा—"ब्रदर, तुम्हारी ही राह देख रहा था। मेरी तो कोई सुनता नहीं। अब जुट ही पड़ना है।"

जगनने कहा, "तुम रुको भी घोषाल।"

देवूने हँसकर कहा "माजरा क्या है?"

घोषालने कहा, सार्वजनीन दुर्गापूजा। जंक्शनमें होती है। मैं कबसे कह रहा हूँ। अबकी उसपर पड़ जाना है।"

देवूने कहा "हर्ज क्या है। हो।

घोषाल तुरत कागज कलम लेकर बैठ गया।

गाँमसे पहले बाउरी और मोची लोग पहुँचे। मिलसे काम करके लौटे थे। लौटते ही उन्हें देवूके आनेकी खबर मिली। और वे सुनते ही चले आये। उन सबका नेता वही सतीश था। वह भी आजकल मिलमें ही काम करता है। खेती भी है। खेतीके दिनों खेती करता है। मिलमें मजदूरी मिली थी। इसलिए सबने शराब पी थी। सतीशने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। कहा, "आप लौट आये। जी जुड़ा गया।"

अटलने कहा, "एक बार हमारे टोलेमें चरण रखना पड़ेगा।"

'क्यों? क्या बात है?'

"गीत होगा।"

"काहेका गीत।'

"हम लोगोंका गीत।'

लिहाजा चरण रखना ही पड़ेगा।

देबूने हँसकर इरशाद और जगनसे कहा, "चलो, इनका गीत सुन आयें।"

वे लोग कुछ बुरे नहीं थे। मिलम काम करते, खानेकी खास तकलीफ नहीं। वेश भूषामें गरीबी होने हुए भी शहरी छाप है। लेकिन घर द्वारकी हालत अच्छी नहीं। जाने कैसी एक श्रीहीनता है। जाते-जाते देबूने पूछा, 'ये घर गिर कैसे गये सतीश ?

सतीशने कहा "जोगी कुजो, शम्भू—ये लोग साहबगंज चले गये। कहते गये—रहने दो। जब लौटेंगे तो फिरसे बना लेंगे।'

उधर ढोल बजने लगा। सतीश गाने लगा—

देबू घोष गुरुजी ने दिखलाया खूब मजा,

हुकुम किया जारी शराब पीने से बडी सजा!

देबूने कहा "सतीश, दूसरा गीत गाओ। यह गीत नहीं सुनूँगा।"

'क्यों गुरुजी ?'

'हाँ। दूसरा गीत गाओ—फुल्लराका बारहमासा।'

गीतकी महफिल काफी रात हुए टूटी।

देबू इरशादको वहाँसे रुखसत करके ही लौटा। जगनको कहींसे बुलाहट आयी, वह बीचमें ही उठकर चला गया था। बाउरी टोलेके बाद थोडी-सी खुली जगह मिलती है। शरदके घने नीले आसमानमें पूरबकी ओरसे थोडी-सी छटा पड रही थी प्रकाशकी। अँधेरिया पाखकी सातवींका चाँद उग रहा था। देबू रुक गया। घर लौटनेकी खास गरज नहीं थी। आज इस जूनके भोजनकी व्यवस्था करना भी भूल गया था। दुर्गाको भी शायद याद नहीं रहा। होता तो अबतक वह निश्चयसे तकाजा करती! आजकल वह और ही तरहकी हो गयी है। और फिर कमजोर भी है। हो सकता है—उसे बुखार आ गया हो बिस्तरसे उठ न सकी हो।

दूरपर तीन-जसी चाँदनीमें पंचग्रामकी बहार किसी नम काली चीज-सी दिखाई पड रही थी। बाँधपर के खडे पेड भी काले-काले लग रहे थे। शरपतकी घनी झाडियाँ बाँधपर वाली दीवार-जसी नजर आ रही थीं। वह रही उस अर्जुनके पेडकी चोटी! उसी पेडके नीचे मरघट है। आज ही वह वहाँ बिलू और मुन्नेकी चितापर फूल बिखेर आया है। अजीब है, उनकी कमी है। वहीं सो गये हैं! ऐसे ही वक्त खानेकी याद आती है—घर लौटकर खायेगा क्या, इसका भी ठिकाना नहीं। पहले तो हँसी आयी। उसके बाद खयाल आया

खिल रही होती तो पत्ता चुभाकर उसका इंतजार करती होती। लम्बी उसास ली उसने।

फिर चलने लगा।

उसने सोच लिया था, फिरसे पाठशाला चलायेगा। लडकोंका पढायेगा लिखायेगा। उनसे वेतन लिया करेगा। विनिमय। सेवा नहीं दान नहीं। लेन देन। पढाने लिखानेमें वह उन्हें जीवनके भरोसेकी बात बता-बता जायेगा। बता जायेगा, समझा जायेगा कि तुम लोग आदमी हो, तुम लोग मरोगे नहीं। मनुष्य मरता नहीं है। वह जीते-जी दुःख-कष्टका बोझा ढोता चल रहा है—पीठ धनुष की तरह झुक गयी है लगता है, कलेजेमें हृत्पिण्ड फटा जा रहा है—फिर भी वह उस अच्छे दिनकी आशामें चला जा रहा है। उस दिन मनुष्यका जो वाजिब पावना है, वह पावना तुम लोग पाओगे। सुख, स्वच्छन्दता अन्न, वस्त्र औषध पथ्य, आरोग्य-अभय—यह सब तुम्हारा पावना है। मैंने जो सीखा है, सो सुन लो—मैं किसीसे बडा नहीं हूँ किसीसे छोटा नहीं। न तो किसीको वंचित करने का अधिकार मुझे है, न मुझको वंचित करनेका किसी दूसरेको। मनुष्यकी चरम कामनाकी वह मुक्ति एक दिन जरूर आयेगी। उसी दिनकी ओर निहारते हुए आदमी दुवह बोझा ढोता चला जा रहा है। अपनी वंश परम्पराको जतनसे रखता, पालता चला जा रहा है। उसे विश्वास है वह दिन आकर ही रहेगा और जिस समय वह आयेगा, उस समय पंचग्रामके जीवनमें ज्वार आयेगा। वह फिर फूलकर गरज उठेगा। पंचग्राम ही नहीं, पंचग्रामसे सप्तग्राम, सप्तग्रामसे नवग्राम, नवग्रामसे विंशति, पंचविंशति ग्राम, शत और सहस्रग्राममें जीवनका कलरव जागेगा। शायद हो कि उस दिन देबू न रहे अपने वंशानुक्रम में भी वह नहीं रहेगा।

चलते चलते वह फिर ठिठक गया। उसमें मनकी इस अवस्थाका मानो सहसा ही एक रूपान्तर हो गया। सर्वांगकी शिराओंमें एक आवेगका संचार हुआ। पागल हो गया वह? जीवनकी सारी अवसन्नता एक पलमें किस चीजने खत्म कर दी? यह मधुर सजीवनी गन्ध है क्या? हवाके झोंकेमें उडकर आयी हरसिंगारकी महकने उसका कलेजा भर लिया। वह इस समझ नहीं पाया था औचक हो अभिभूत हो गया था। उस महकमें माना कुछ है। दमसे दम उसने लिए है। उसका सारा शरीर सिहर उठा, सर्दी खाये हुएकी तरह बदनमें रोमांच जागा। मन्त्रमुग्धकी नाई वह उस गन्धका अनुसरण करता हुआ अपने

घरके सामनेवाले हरसिंगारके पास जा खडा हुआ। देखा, टुपटाप करके एक एक फूल डालसे जमीनपर गिर रहा है। पखडियोंमें अभी भी बाकपन है। फूल ही रहा है। अभी-अभी फूली शेफालीकी महकमें वह खोया खडा रहा। मनमें एकके बाद दूसरी—कितनी ही छवियाँ जागी! हृदय मचलने लगा।

कौन? कौन है वहाँ?'—नारी कण्ठने पूछा।

उसी विभारतामें देवूने कहा, 'मैं हूँ।'

देवूके ओसारेसे एक औरत उतर आयी। चाँदनीमें सफेद कपडोंमें वह अजीब लग रही थी—कोई अशरीरी हो जैसे। वह कौन निकली घरसे? बिलू? नही। इस डावाडोल हालतमें भी उसे एक दिनके धोखेकी बात याद आ गयी।

बाप रे! साँससे ही आकर बैठी हूँ'—कहते-कहते वह देवूके बिलकुल करीब आकर खडी हो गयी। वह कुछ और भी कहने जा रही थी—लेकिन कह नही सकी। देवूने झुककर उसे देखा। वह औरत हैरान रह गयी। सचमुचमें ही क्या देवू उसे पहचान नही सका? दूसरे ही दम उसकी ठोढी पकडकर उसने उसके मुँहको खिली चाँदनीकी ओर उठाया। यही तो—यही तो वह नव जीवन है। वह मानो इसीको चाह रहा था! समझ नही पा रहा था!

उस औरतने कहा, 'मुझे पहचान नही रहे हैं? मैं सोना हूँ।"

सोना?'

सोना चकित रह गयी थी। बोली हाँ। और फिर उसने झुककर देवूको प्रणाम किया। बोली, "तीसरे पहर खबर मिली। शामको आयी हूँ। आप तो जबदानसे ही आये। खबर नही भिजवायी?'

देवूने कोई जवाब नही दिया। वह एक अजीब ही दृष्टिसे उसे देख रहा था। सोना! तीन सालमें यह कैसा परिपूर्ण रूप लेकर आज उसके सामने खडा हुई है? शरदकी लबालब मयूराक्षी-जैसी! चेहरेपर, आँखोंमें ज्ञानकी दमक, अंग-अंगमें तरुण स्वस्थताकी निर्दोष पुष्टि गोरे रंगपर लहूके उच्छ्वासकी आभा। एक क्षणके लिए उसे पद्मकी याद आ गयी।

सोनाने आवाज दी 'देवू भैया!'

'कहो सोना।

चलिए, अन्दर चलिए। रसोई किये बैठी हूँ। जाने कितनी बार दुर्गासे बुलानेके लिए कहा। वह हरगिज नही गयी।

'तुम मेरे लिए रसोई किये बैठी हो?'—अवाक् हो गया वह।

'हाँ। आयी तो देखा रसोई-बसोईका कोई इन्तजाम नही है। आप भी खूब हैं! —देवू एकटक उसे देख रहा था।

पदमने सोनाका अतर है। पदममें उल्लासकी उमग है, सोनामें नही। उसे देखते हुए उसकी पलकें गिर नही रही थी।

सोनाने फिर पुकारा, 'देवू भया, आप ऐसे ताक क्यो रहे है ?'

गाढे स्नेह और सम्भ्रमके साथ हाथ बढाकर उसने सोनाका हाथ पकडा। कहा, "तुमसे मुझे बहुत-कुछ कहना है सोना !"

उसके स्पर्शसे सोना थर थर काप उठी। ज्वरके उत्तापसे जलते आदमीकी तरह देवका हाथ गरम था। सोनाने अपना हाथ खीच लेनेकी कोशिश की—देवूकी मुट्ठी और भी सख्त हो उठी। गाढे स्वरमें देवूने कहा, "डर रही हो सोना ? तुम्हें डर लग रहा है ?"

"देवू भया !"—निरी विह्वल-सी सोनाने निरर्थक उत्तर दिया।

"डरो मत। आखिर तुम किसानके घरकी 'काला अच्छर भैंस बराबर लडकी नही हो ! डरो मत। यह पल बीत जानेसे शायद मेरा कहना हो नही पायगा। सोना, मैंने आज समझा है कि मने तुम्हें प्यार किया है।

सोना काप रही थी। वह देवूको ही पकडकर किसी तरह खडी रही।

क्षणके पलनेवाले डने फैलाये रात जा रही थी। आसमानमें ग्रह-नक्षत्रोंकी जगहें बदल रही थी। कृष्णपक्षकी सप्तमीके चादने अपना पहला पहर पार करके दूसरा पहर भी थोडा-सा पार किया। ध्रुवताराको केन्द्रमें रखकर सप्त भयाका घूमना समाप्त हो चला। चादनीकी ज्योतिसे आलोकित आकाशमें व्योम प्रवाही नदी जसा एक छोरसे दूसरे छोर तक फैला छायापथ ! सफेद झागकी ढेरी-सा वह नीहारिकापुज। क्षण-क्षण उनमें परिवर्तन हो रहा था। आखोसे देखकर समझमें नही आता।

देवूको जो कहना था सोनासे कहता चला जा रहा था। अपनी बात, पचग्रामकी बात, भविष्यकी योजना। वही पुरानी बात। नये युगका आमन्त्रण नयी भरोसे, नयी भाषा, नयी आशाए, नये परिवेशमें। सुख-स्वच्छन्दता भरी घमकी गिरस्ती—

देवूने कहा, "मेरी-तुम्हारी उस गिरस्तीमें समानाधिकार होगा। पति प्रभु नही, पत्नी दासी नही—कमके पथपर दोनो एक-दूसरेसे कन्धा मिलाकर चलेंगे। तुम यहाकी लडकियो, बच्चोको पढाओगी, मैं पढाऊँगा लडकोको, युवकोको। तुम्हारी और मेरी, दोनोकी कमाईसे हमारा घमकी गिरस्ती चलेगी।"

दुर्गा उन दोनोके पास ही बठी थी सब सुनकर अवाक रह गयी वह।

उन्हीका नहीं केवल, पचग्रामका प्रत्येक घर न्यायका होगा, सुख-स्वच्छन्दतासे भरा, अभाव नहीं, अभियोग नही—अन्न-वस्त्र, औषधि-पथ्य, स्वास्थ्य

शक्ति, साहस-अभयमें उज्ज्वल, भरा पूरा। आनन्दमें मुखर शान्तिसे स्निग्ध। देशमें भूखा कोई नही रहेगा—भोजन और ओषधिमें पचग्राम शक्तिशाली और नीरोग होगा। मनुष्य स्वस्थ-सबल होगा। ऐसी चौडी होगी छाती, अदम्य साहससे निर्भय चला फिरा करेगा। नये सिरेसे घर बनायेगा। राह घाट बनायेगा। चकमकाते घर मुक्त प्रकाशसे उज्ज्वल होंगे, मुक्त हवासे निर्मल और स्निग्ध होंगे। सुदर, चौडी, समतल सडकें घरके सामनेसे बँहार होती दूर-दूर तक चली जायेंगी—शिवकालीपुरसे देखुडिया, देखुडियासे महाग्राम, महाग्रामसे कुसुमपुर, कुसुमपुरसे कंकना, कंकनासे मयूराक्षी पार होकर जक्शन। ग्रामसे ग्रामान्तर, देशसे देशान्तर। उसी रास्तेसे चलेंगे पचग्रामके लोग—यहाकी अन्न लदी गाडिया देशान्तर जायेंगी!

सोना अपलक आखो देबूकी ओर देखती हुई चुपचाप सुन रही थी! शर्म नही, सकोच नही। चेहरा जरा लाल हो उठा था सिर्फ! दुर्गा सारी बातें समझ नही रही थी, फिर भी एक आवेगसे उसका कलेजा भर उठता था। आखोसे आँसू बहने लगा था।

देबूने कहा, उस दिनके सवेरसे धन्य होंगे लोग। सजल आँखें ऊपर उठाये पुरखोको याद करेंगे। हमारी सन्तान हमें याद करेगी—उन्हीकी आँखो हम उस दिनके सूर्योदयको देखेंगे, पायेंगे।'

दुर्गा हठात पूछ बठी, उससे रहा नही गया— जमाई!"

देबूने उसकी ओर देखकर पूछा बोल' कुछ कहना चाहती ह?'

दुर्गा जसी प्रगल्भ औरत भी कहना चाहते हुए नही कह पा रही थी। आखिर भरोसा पाकर बोली, 'हम-जसे पापियाका क्या होगा? हम नरकमें जायेंगे?"

देबूने हसकर कहा, "नही नरक अब नही रहेगा दुर्गा। सब स्वग हो जायेगा। छोटा-बडाका छोटा नही रहेगा, छूत-अछूतका अछूत नही रहेगा, भला-बुराका बुरा नही रहेगा—'

'ऐसा भी होता है? कह क्या रहे हो?'

'ठीक ही कह रहा हू ठीक। मनुष्य चार युगसे तपस्या कर रहे है इसी नय युगके लिए। इसी उम्मीदके नियमसे रातके बाद दिन आता ह। दिनके बाद महीना, महीनेके बाद वरस और फिर बरसपर बरस गुजर जाता ह! मनुष्य वही उम्मीद लिये बठा ह। उस दिनको आना ही पड़गा।"

दुर्गाने मन ही मन कहा, उस दिन जिसम म तुम्ह पाऊ जमाई! बिलू दीदीको मुक्ति मिली म जानती हूँ। सोना भी जिसमें उस दिन मुक्ति पाये—नारायणकी दासी बने। मं मत्यम आऊँगी, तुम्हार लिए आऊँगी—तुम आना।

मेरे लिए एक जनमके लिए आना ! तुम्हारी बातका म विश्वास नही करती, महज इसीलिए करती हूँ—तुम्हें पानेके लिए।"

कृष्ण सप्तमीका चाद बीच आसमानपर पहुँच रहा था। उसका पाण्डुर वण बुझता आ रहा था। रात बीतनेमें देर नही थी।

क्वारकी शुरुआतमें खेतिहरोंको काम बहुत रहता ह। निराईका काम। कुछ धान पके ह काटना है। सुबह-सुबह ही वे खेतोंको जायेंगे। औरतें घर द्वारमें गोबरके छींटे दे रही थी। घरोंको भाड पोछकर चूना पोता हुआ-सा साफ सुथरा करना ह, आल्पना आँकना ह। पूजाके लिए मुरमुरे भूँजना ह लड्डू बनाना ह—बहुत-बहुत काम ह। तीज त्योहारोंपर इसी तरहसे घरको लीप पोतकर, आल्पना आँककर श्रीसम्पन्न करना होता ह। महापूजा आ रही है। मयूराक्षीके उस पार मिलोंके एक साथ दस-बारह भापू बज रहे थे। सतीशके टोलेमें हलचल-सी हो रही थी—मिल जानेकी तयारी! कितना काम! कितना काम!! कितना काम!!! पेडोंपर चिडियाँ चहक उठी। आसमानकी ओर देखकर दुर्गाने कहा, "सवेरा हो गया? चलूँ म, घर द्वारमें पानीके छींटे दूँ। सोना उठी। गलेमें अँचरा डालकर उसने देवूको प्रणाम किया। बोली "तुम आकर मुझे लिवा आना। जिस दिन लाओगे म आऊँगी।" दुर्गाकी आँखोंसे पानीकी दो धाराएँ बह चलीं—होठोंके किनारे किनारे जाग पडी हँसीकी रेखा!

अँधेरेको मिटाकर सूरज उगने लगा। क्षण, पल, प्रहर, दिन, रातकी राहसे सवेरा उम्मीदोंके उस सवेरेकी ओर चल पडा।